ॐ शान्ति

परमपिता परमात्मा शिवबाबा याद है।

बाप के साकार पार्ट के प्रति प्रूफ एवं प्रमाण

(मुरली या अ. वा. से)

अव्यक्त वाणि

(नया प्रिन्ट - १९६९ रजिस्टर से फोटो कापि किया है।)

१. गुलजार दादी द्वारा दिव्य संदेश (ट्रान्स) (पृ. नं. 22)

a) फिर मैं ने बाबा से पूछा कि-पिछली बार आपने वतन में जो एडवांस पार्टी में गये हूए बच्चों का इतना बड़ा संगठन दिखाया था, इसका रहस्य क्या था ? बाबा ने कहा - "पूरा राज़ बाद में चलकर सुनायेंगे, ------"।

b) तो मैं भी मुरब्बी बच्चे की राय बिना कुछ नहीं कर सकता हूँ।

c) संगमयुग पर बाप - दादा दोनों को अलग नहीं होना है।

२. अ. वा. 21-1-69 (पृ. 25)

a) जब आप शुरू में यज्ञ की स्थापना में आये थे तो आप सभी से निश्चय के पत्र लिखाये थे। अगर ब्रह्मा चला जाए, तब भी हमारी अवस्था, हमारा निश्चय अटल रहेगा। वह निश्चय - पत्र याद है ?

b) पहले तो वह (ब्रह्मा) अपने को निरहंकारी, नम्रचित कहते हूए कई बच्चों को यह सुनाते थे कि - ''मैं भी अभी सम्पूर्ण नहीं बना हूँ। मैं भी अभी निरन्तर देही - अभिमानी नहीं बना हूँ।''

c) अभी भी स्थापना का कार्य ब्रह्मा का है, न कि हमारा। अभी भी आप बच्चों की पालना ब्रह्मा द्वारा ही होगी। स्थापना के अन्त तक ब्रह्मा का ही पार्ट है।

d) जो ब्रह्मा का तन मुकरर है, तो मुरली उसी के तन द्वारा जो चली है, वही मुरली है। और सन्देशियों द्वारा थोड़े समय के लिए जो सर्विस करते हैं, उनको मुरली नहीं कहा जाता है।

e) १०० वर्ष ब्रह्मा की स्थापना का पार्ट है, वह तो १०० वर्ष पूरा होना ही है।

f) बाकी आज से सभी के लिए कौन निमित्त है, वह तो आप जानते ही हैं - दीदी तो है, साथ में कुमारका मददगार है।

g) अब ऐसे समझो कि बाप रिटायर अवस्था में भी आपके साथ है।

h) बापदादा की लास्ट मुरली में जो शिक्षा मिली है कि यह ध्यान दीदार ज्यादा चलाना समय व्यर्थ गंवाना है। यह भी डायरेक्शन था कि भोग के समय वैकुण्ठ आदि में जाना व्यर्थ समय गंवाना है।

i) यह भी एक छिपने का खेल है। तो विचार सागर मंथन करो, हलचल का मंथन न करो।

३. अ. वा. 23-1-69 (पृ. नं. 32)

a) रूह-रूहान करने मीठे-मीठे बाबा ने आप सभी बच्चों से मिलने भेजा है। जो थे वही अब भी हैं।

b) साथ ही हैं, साथ ही रहेंगे - जन्म जन्मान्तर तक। हम दोनों एक-दो से एक पल भी अलग नहीं हो सकते।

c) जब ब्रह्मा, विष्णू और शंकर तीनों को देखते हो तो आपके भी त्रिमूर्ति की याद अर्थात् अपना स्वरूप और बापदादा की याद, त्रिमूर्ति की स्थिति मशहूर है।

d) व्यक्त रूप से अभी तो और ही स्पष्ट रूप से व्यक्त रूप की तुलना में देखते हैं।

e) शरीर की बात दूसरी है, सर्विस वही है।

४. <u>अ. वा. : 2-2-69 (पृ. नं. 38)</u>

a) अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर रूह-रूहान करो तो अनुभव करेंगे कि-सचमुच, बाप के साथ बातचीत कर रहे हैं।

b) इस साकार वतन में रहते हूए भी फरिश्ते बन सकते हो। जो बाप का कार्य है वह बाप ही करते हैं। बापदादा तो है ही गुप्त।

c) आप बच्चों में इतनी शक्ति है जो अव्यक्त वतन को भी व्यक्त में खींचकर ला सकते हो।

d) कई बच्चे मूँझते है कि - साकार द्वारा तो यह कहा कि सुक्ष्म वतन है ही नहीं, तो बाबा कहाँ गये ? कहाँ से मिलने आते हैं ?

ॐ शान्ति

परमपिता परमात्मा शिवबाबा याद है।

बाप के साकार पार्ट के प्रति प्रूफ एवं प्रमाण

(मुरली या अ. वा. से)

अव्यक्त वाणि

(नया प्रिन्ट - १९६९ रजिस्टर से फोटो कापि किया है।)

१. गुलजार दादी द्वारा दिव्य संदेश (ट्रान्स) (पृ. नं. 22)

a) फिर मैं ने बाबा से पूछा कि-पिछली बार आपने वतन में जो एडवांस पार्टी में गये हूए बच्चों का इतना बड़ा संगठन दिखाया था, इसका रहस्य क्या था ? बाबा ने कहा - "पूरा राज़ बाद में चलकर सुनायेंगे, ------"।

b) तो मैं भी मुरब्बी बच्चे की राय बिना कुछ नहीं कर सकता हूँ।

c) संगमयुग पर बाप - दादा दोनों को अलग नहीं होना है।

२. अ. वा. 21-1-69 (पृ. 25)

a) जब आप शुरू में यज्ञ की स्थापना में आये थे तो आप सभी से निश्चय के पत्र लिखाये थे। अगर ब्रह्मा चला जाए, तब भी हमारी अवस्था, हमारा निश्चय अटल रहेगा। वह निश्चय - पत्र याद है ?

b) पहले तो वह (ब्रह्मा) अपने को निरहंकारी, नम्रचित कहते हूए कई बच्चों को यह सुनाते थे कि - ''मैं भी अभी सम्पूर्ण नहीं बना हूँ। मैं भी अभी निरन्तर देही - अभिमानी नहीं बना हूँ।''

c) अभी भी स्थापना का कार्य ब्रह्मा का है, न कि हमारा। अभी भी आप बच्चों की पालना ब्रह्मा द्वारा ही होगी। स्थापना के अन्त तक ब्रह्मा का ही पार्ट है।

d) जो ब्रह्मा का तन मुकरर है, तो मुरली उसी के तन द्वारा जो चली है, वही मुरली है। और सन्देशियों द्वारा थोड़े समय के लिए जो सर्विस करते हैं, उनको मुरली नहीं कहा जाता है।

e) १०० वर्ष ब्रह्मा की स्थापना का पार्ट है, वह तो १०० वर्ष पूरा होना ही है।

f) बाकी आज से सभी के लिए कौन निमित्त है, वह तो आप जानते ही हैं - दीदी तो है, साथ में कुमारका मददगार है।

g) अब ऐसे समझो कि बाप रिटायर अवस्था में भी आपके साथ है।

h) बापदादा की लास्ट मुरली में जो शिक्षा मिली है कि यह ध्यान दीदार ज्यादा चलाना समय व्यर्थ गंवाना है। यह भी डायरेक्शन था कि भोग के समय वैकुण्ठ आदि में जाना व्यर्थ समय गंवाना है।

i) यह भी एक छिपने का खेल है। तो विचार सागर मंथन करो, हलचल का मंथन न करो।

३. अ. वा. 23-1-69 (पृ. नं. 32)

a) रूह-रूहान करने मीठे-मीठे बाबा ने आप सभी बच्चों से मिलने भेजा है। जो थे वही अब भी हैं।

b) साथ ही हैं, साथ ही रहेंगे - जन्म जन्मान्तर तक। हम दोनों एक-दो से एक पल भी अलग नहीं हो सकते।

c) जब ब्रह्मा, विष्णू और शंकर तीनों को देखते हो तो आपके भी त्रिमूर्ति की याद अर्थात् अपना स्वरूप और बापदादा की याद, त्रिमूर्ति की स्थिति मशहूर है।

d) व्यक्त रूप से अभी तो और ही स्पष्ट रूप से व्यक्त रूप की तुलना में देखते हैं।

e) शरीर की बात दूसरी है, सर्विस वही है।

४. <u>अ. वा. : 2-2-69 (पृ. नं. 38)</u>

a) अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर रूह-रूहान करो तो अनुभव करेंगे कि-सचमुच, बाप के साथ बातचीत कर रहे हैं।

b) इस साकार वतन में रहते हूए भी फरिश्ते बन सकते हो। जो बाप का कार्य है वह बाप ही करते हैं। बापदादा तो है ही गुप्त।

c) आप बच्चों में इतनी शक्ति है जो अव्यक्त वतन को भी व्यक्त में खींचकर ला सकते हो।

d) कई बच्चे मूँझते है कि - साकार द्वारा तो यह कहा कि सुक्ष्म वतन है ही नहीं, तो बाबा कहाँ गये ? कहाँ से मिलने आते हैं ?

b) बाप कहते हैं तुम शायद साजन को भूल जाते हो। साजन को भूल जाना माना उनसे विदाई देना।

c) बाप को तो जरूर आना ही है तब तो नॉलेज दे।

d) वह बाप को तो जानते ही नहीं हैं।

e) अपने को इन आरगन्स से सिर्फ डिटैच करने से ही फायदा नहीं होगा।

f) मम्मा ने तो कुछ भी साक्षात्कार नहीं देखा। मम्मा देखो बिगर ध्यान के कितने आगे नम्बर लेती है।

g) 'वह' है मनुख्य सृष्टि का बीज रूप। ऐसे नहीं की ब्रह्म परमात्मा है।

h) वास्तव में भारतविासियों और और धर्मों में कनवर्ट होने कारण उनकी जनसंख्या कम हो गये हैं। बाप कहते हैं मैं आता ही तब हूँ जब मुझे ब्रह्मा द्वारा देवी-देवता धर्म की स्थापना और शंकर द्वारा विनाश -----।

39) मुरली : 6-8-98

a) कोई फिर फेल होंगे तो राम बनेंगे। गाते हैं राम राजा राम प्रजा, धर्म का उपकार है। फिर यह सब बातें कहाँ से आई ?

b) २५-३० वर्ष वाले भी इतना नहीं याद रखते कि 'वह' बेहद का बाप है, जिससे वर्सा पाते हैं।

c) तो अलौकिक सम्बन्ध में भी ऐसा होता है - ७ रोज वाला बच्चा २५ वर्ष वाले से तीखा चला जाता है। नम्बरवार तो होते ही हैं।

d) पूजा ल. ना. की करते हैं। उन्हों का बाल चरित्र कुछ भी है नहीं। राधे कृष्ण कोई आपस में भाई-बहन नहीं थे।

40) मुरली : 2-10-98

a) मैं हूँ निराकार, मुझे भी कल्प में एक ही बार रथ चाहिए, मैं ब्रह्मा का अनुभवी वृद्ध रथ आधार लेता हूँ।

b) ब्रह्मा विष्णु शंकर का भी सूक्ष्म शरीर है ना। मनुष्यों की ही बात समझाई जाती है, जानवरों की बातें जानवर जानें। डायरेक्ट पूछते हैं तुम हर एक को अपना अपना शरीर है ना।

c) तो बाप समझाते है मुझे भी जरूर रथ तो चाहिए ना। सुप्रीम फादर 'यही' है। बाहर वाले मनुष्य यह नहीं जानते।

d) पहले तो मुझे प्रजापिता चाहिए। सुक्ष्मवतनवासी को यहाँ कैसे ले आ सकता ?

e) मुझे तो चाहिए ब्रह्मा का रथ, उनको ही प्रजापिता कहेंगे। कृष्ण को तो प्रजापिता नहीं कहेंगे।

f) वह मुक्ति के लिए हठयोग की तपस्य करते हैं, तुम जीवनमुक्ति, राजाई के लिए राजयोग की तपस्य कर रहे हो।

g) मुझे प्रजापिता ब्रह्मा जरूर चाहिए। इस दिलवाडा मन्दिर के जो ट्रस्टी लोग है वह भी यह नहीं जानते कि आदिदेव है कौन ?

h) सरस्वती है ब्रह्मा मुख वंशावली। वह कोई ब्रह्मा की यूगल नहीं है , ब्रह्मा की बेटी है। उनको फिर जगत अम्बा क्यों कहते हो ?

i) बाप कहते है मुझे इस ब्रह्मा का शरीर लोन लेना पडता है। आधार पर तो बहुत लेते हैं।

j) ऐसे नहीं कि आत्मा शरीर छोड़कर आयेगी। नहीं, यह तो बच्चों को समझाया गया है कि ड्रामा में साक्षात्कार की रस्म-रिवाज़ पहले से नूँध है।

k) सूक्ष्म वतन में शंकर के पास बैल कहाँ से आया ? वहाँ तो है ही ब्रह्मा विष्णु शंकर और वह यूगल दिखाते हैं।

l) ब्रह्मा को भी बतलाता हूँ। सदैव भी तो सवारी नहीं कर सकता हूँ।

m) श्री श्री तो है शिवबाबा। फिर सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा विष्णु शंकर फिर श्री लक्ष्मी नारायण। यह समझने कि बातें हैं। (लक्ष्मी नारायण जुने चित्र से संबन्धित)

n) मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भी कट जायोंगे और मेरे पास भी आ जायेंगे। याद नहीं करेंगे तो पाप भी नही कटेंगे और साथ भी नहीं ले जाऊँगा।

e) लेकिन अब सूक्ष्मवतन में आने-जाने के बजाए स्वयं ही सुक्ष्म वतन-वासी बनना है।

f) कई बच्चों के मन में यह भी प्रश्न है कि- मालूम जो बापदादा कहते थे कि सभी को साथ में ले जायेंगे, अब वह तो चले गये। लेकिन वह चले गये हैं ? मुक्तिधाम में जा नहीं सकते - सिवाय बरात व बच्चों के।

g) जब तक स्थापना का पार्ट है तब तक बापदादा अव्यक्त रूप से आप सभी के साथ ही हैं। समझ गये ?

h) आप सभी के मन में तो होगा ही कि - हमारी मम्मा कहाँ गई ? स्थापना के कार्य में भी मददगार है लेकिन भिन्न नाम, रूप से।

5) अ. वा. : 6-2-69 (पृ. नं: ४५)

a) अब त्रिमूर्ति शब्द को भी याद करके धारणा में चलेंगे - तो वह बन जायेंगे जो शक्तियों का गायन है, जो प्रभाव है वह देखने में आयेगा। अभी गुप्त है।

b) अभी शिवरात्रि का जो पर्व आ रहा है उनको और भी धुमधाम से मनाना है। बडे उमंग उल्लास से परिचय देना है।

c) लेकिन बीज रूप स्थिति में स्थिति रहेंगे तो अनेक आत्माओं में समय की पहचान और बाप की पहचान का बीज पडेगा।

6) अ. वा. : 15-2-69 (पृ. नं: ४९)

a) परन्तु कई बच्चे अपने को भी भूले हूए हैं तो बाप को भी भुला दिया है। सदा सौभाग्यशाली उनको कहा जाता है जिनका बाप, टीचर और सतगुरू से पूरी कनेक्शन, पूरी लगन है।

b) जब तक विनाश नहीं तब तक बाप साथ है। इसमें न कोई विदाई है, न जुदाई। जुदाई लगती है ? तुमने विदाई दी थी ?

c) अभी तो सभी को म्यूज़ियम की सर्विस करनी है। सबको बाप का परिचय देना है। बाप ने जो सर्विस के चित्र बनावाये हैं, उस पर सर्विस करनी है।

7) अ. वा. : 20-3-69 (पृ. नं: ५७)

a) अव्यक्त रूप को व्यक्त में लाने के लिए कितना समय चाहिए ? सम्पूर्ण स्थिति को इस साकार रूप में लाने के लिए कितना समय चाहिए ?

b) जैसे हैं, जो भी सामने हैं वैसी ही हालतों में, इस ही शरीर में हमको सम्पूर्ण बनना है - यह लक्ष्य रखना है। (१७-४-६९)

c) ऊपर से सारा खेल देखते रहते हैं। आप भी देख सकते हो। अगर अपनी ऊँच अवस्था में स्थित होकर देखो तो अपने सहित ओरों का भी खेल देखने में आयेगा। (१७-४-६९)

d) साकार के साथ स्नेह है तो जल्दी - जल्दी इस पुरानी दूनिया से चलने की तैयारी करो। (१८-५-६९)

8) अ. वा. : 18-6-69 (पृ. नं: ८४)

a) संगम युग पर ही सभी संस्कारों का बीज पड़ता है। यहाँ के बीज के सिवाए भविष्य का वृक्ष पैदा हो नहीं सकता है।

9) अ. वा. 26-6-69 (पृ. नं: ८६)

a) टीचर रूप का पार्ट अभी चल रहा है या पूरा हो चुका है ? रिवाइज़ कोर्स टीचर करा रहे हैं या अपने आप कर रहे हो ?

b) एक प्रश्न पूछा था कि - अब जो बापदादा अन्य तन में आते हैं, तो जैसे साकार रूप में मुरली चलाते थे वैसे ही क्यों नहीं चलाते ? बाकी एक कार्य रहा हूआ है - साथ ले जाने का।

c) यह जो पार्ट भावी प्रमाण हूआ है, उस साकार रूप को अव्यक्त क्यों बनाया ? इसके भी कई गुह्य रहस्य हैं। इसकी गहराई में जाना।

10) अ. वा. : 6-7-69 (पृ. नं: ९०)

a) अब वह दो कौन ? अव्यक्त बतन-वासी वा व्यक्त वतन वासी ? अगर आप जिज्ञासु को आने से ही अव्यक्त वतन का ठिकाना देंगे जो रास्ता कब देखा ही नहीं तो पहुँचेगा कैसे ?

b) बीज किसने बोया ? आप बीज को भूल जायेंगे तो फिर रास्ता कैसे बतायेंगे। बीज कौनसा है ?

c) आप सबको भी अव्यक्त वतन वासी बनना है (साकार सृष्टि में)। आप अपना ठिकाने को भूल जायेंगे तो फिर क्या होगा ? ठिकाना देनेवाला ही भूल जायेगा।

d) बाप सेवा करते हैं। आप सब बच्चों का शुरू से लेकर अन्त तक बाप सेवक है। सेवा करने के लिए सदैव तैयार है।

11) अ. वा. : 24-7-69 (पृ. नं: १११)

a) बाप तो बच्चों के सामने ही है, दूर नहीं। दूर हुई चीज़ को भूल जाते हो।

b) हाँ परिचय देने के लिए तो ज़रूर बोलना पड़ता है कि मेरा नाम, रूप, गुण, कर्तव्य क्या है और मैं 'फिर' कब आता हूँ, किस तन में आता हूँ।

c) बाप तुम बच्चों को अकेला नहीं छोडता है। जो बाप का और तुम बच्चों का घर है , वहाँ पर साथ में ही लेकर जायेंगे। सब इकट्ठा चलने ही हैं।

अव्यक्त वाणी

(पुराना मोटा बुक अ. वा. (1969 से 1972 तक) कापी किया है)

12) (a) अ. वा. : 25-10-69 (पृ. नं: १२७)

a) विनाश की दस वर्षीय घोषणा (१९६६ से) के बारे में (पुराना अ. वा. पृ. नं.130)। (यह भाग नया अव्यक्त वाणी रजिस्टर (अ. वा. १९६९ - पृ. नं.143) में कट किया हूआ है। प्रूफ एटाच किया है।)

(b) अ. वा. : 9-11-69 (पृ. नं: १३६)

b) मधुरता से ही मधुबन का नाम बाला करेंगे। यह मधुबन नाम है।

c) 'कमला देवी दीक्षित (मम्मी) के बारे में (जो भाग दिया है वह भी नया प्रिन्टींग किया हूआ (अ. वा. १९६९-पृ. नं.140) अ. वा. में कट किया है - प्रूफ एटाच किया है।)

13) अ. वा. : 9-10-71 (पृ. नं: १८८)

a) शंकर का पार्ट प्रैक्टिकल तो बजना है लेकिन शक्तियाँ ही सहार का पार्ट बजाती हैं, शंकर को नहीं बजाना है।

b) यह संगठन बीज-रूप है ना। सृष्टि का बीज-रूप नहीं हो लेकिन अपनी रचना के तो बीज-रूप हो ना।

(जनवरी १९७३ से फरवरी १९७६ तक के वाणीयाँ – पुराना मोटा बुक से कापी किया है)

14) अ. वा. 30-5-73 (पृ. नं: ७७)

a) क्योंकि आत्मा के हर प्रकार के धर्म की, राज्य की, श्रेष्ठ संस्कारों की, श्रेष्ठ सम्बन्धों की और श्रेष्ठ गुणों की सर्व-श्रेष्ठता अभी रिकार्ड के समान भरता जाता है।

b) जस्टिस के आगे चाहे कितना भी स्नेही सम्बन्ध हो लेकिन लॉ इज लॉ,अभी लव का समय है फिर लॉ का समय होगा।

c) हरेक को अपनी जिम्मेवारी आप उठानी है। अगर यह सोचेंगे कि दीदी, दादी व टीचर जिम्मेवार हैं तो इससे सिध्द होताहै कि आप को भविष्य में उन ही की प्रजा बनना है, राजा नहीं बनना है।

15) अ. वा. : 13-6-73 (पृ. नं: ९५)

a) ब्राह्मणों के लिए इतने बड़े विश्व के अन्दर अपना ही छोटा-सा संसार है ------।

b) एक ही यह ब्राह्मण जन्म है जो परम पिता परमात्मा द्वारा डायरेक्ट जन्म होता है। देवता जन्म श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा ही होता है। परमात्मा द्वारा नहीं।

c) जैसे अन्य आत्माओं को कहते हो कि परमात्मा की सन्तान हो कर और बाप को नहीं जानते हो तो कौड़ी तुल्य हो।

16) अ. वा. : 21-7-73 (पृ. नं: १३६)

a) बाप या आप ? बाप तो बैकबोन है, लेकिन निमित्त, शक्ति सेना और पाण्डव सेना ही है।

b) जब तक बाप की संम्पूर्ण प्रत्यक्षता नहीं हो जाती तब तक बच्चों और बाप का मिलन तो होना ही है। लेकिन चाहे व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन और चाहे अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन, लेकिन मिलन तो अन्त तक है ना ?

17) अ. वा. : 2-8-73 (पृ. नं: १५१)

a) विनाश के घोषणे के बारे में --------।

b) एड़वान्स पार्टी का क्या कार्य चल रहा है ?

c) लेकिन जब तक उनको बाप क्या चीज़ है, हम आत्मा हैं और वह परमात्मा है, जब तक यह अनुभव नहीं कराओ तब तक यह बात (गीता का भगवान कौन है ?) सिद्ध भी कैसे होगी ?

18) अ. वा. 3-2-74 (पृ. नं: १७६)

a) जैसे बाप-दादा को साकार, आकार और निराकार अनुभव करते हो, क्या वैसे ही अपने को भी बाप - समान साकार होते हूए आकारी और निराकारी सदा अनुभव करते हो ?

b) क्या ऐसे भी आप स्थापना के और विनाश का कार्य करानेवाले **दो वर्ष** के अन्दर अपने कार्य को और अपनी स्टेज व स्थिति को सम्पन्न बनाने के इन्तज़ाम में लगे हूए हो ?

c) विनाश ज्वाला प्रज्ज्वलित कब और कैसे हूई ? कौन निमित्त बना ? क्या शंकर निमित्त बना या यज्ञ रचनेवाले बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने ?

d) इसी प्रकार अब इस मुक्ति और जीवनमुक्ति के गेट्स खोलने की जिम्मेदारी बाप के साथ-साथ आप सबकी है।

19) अ. वा. : 28-4-74 (पृ. नं:१९१)

a) टीचर्स से भी पहले यह जिम्मेवारी आप निमित्त बने हूए पाण्डवों की है क्योंकि विश्व के आगे चैलेन्ज की हूई कि घर गृहस्थ में रहते कमल-पुष्प समान न्यारे और प्यारे रहने की।

b) फर्स्ट वायदा कौन-सा है ? वह यही है न कि ''और संग तोड एक संग जोड़ेंगे अथवा तुम्ही से खाऊँ, तुम्ही से ---- अथवा मेरा तो एक, दूसरा न कोई।

c) संकल्पों को व कर्मों को भी करने के लिए आपके पीछे सी. आई.डी. होंगे। बिना प्रूफ और प्रमाण के बुद्धिमान लोग मानने के लिए तैयार नहीं होते।

d) ब्राह्मण जीवन के जीदान का आधार कौन-सा है ? - मुरली। पढ़ाई का भी आधार है - मुरली।

20) अ. वा.: 30-6-74 (पृ. नं: २४१)

a) अब समझा, कि बाप सारे दिन क्या करते हैं ? साकार बाप भी अब अव्यक्त होने के कारण क्विक-स्पीड में निराकार बाप के साथी व सहयोगी सदाकाल के लिए बनने का पार्ट बजा सकते हैं।

b) जैसे विनाश के अर्थ, निमित्त बनी हूई आत्माओं की गति, सूक्ष्म और तीव्र होती जा रही है ----।

c) ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में, अन्त तक नूँधा हूआ है। सिर्फ स्थिति, स्थान और गति का परिवर्तन हूआ है, लेकिन पार्ट ब्रह्मा का अभी तक वही है।

d) कईयों के संकल्प पहूँचते है, कि इतना समय हमारा बाबा क्या कर रहा है ? बतन का पार्ट इतना समय क्यों और कैसे ? यह भी एक गुप्त रहस्य है।

e) ब्राह्मण बच्चों के साथ जो बाप का वायदा है, कि साथ चलेंगे, साथ मरेंगे और साथ जियेंगे अर्थात पार्ट समाप्त करेंगे; ब्रह्मा बाप ने बच्चों के साथ जो कान्ट्रैक्ट विश्व परिवर्तन का उठाया है, वह आधे में छोड सकते है क्या ?

२१. अ. वा. 16-1-75 (पृ. नं. 311)

a) नयनों के सम्मुख हो या नयनों में समाये हूए हो ? सम्मुख वाले के बीच में कुछ-न कुछ दूरी रह जाती है।

b) आधार मूर्त आत्माओं का संकल्प ही विनाश अर्थ निमित्त बनी हूई आत्माओं की प्रेरणा का आधार है। जैसे यज्ञ रचने के निमित्त ब्रह्मा बाप के साथ ब्राह्मण बने, तो यज्ञ से प्रज्ज्वलित हूई जो विनाश ज्वाला है ----।

c) इसलिए घबराओ मत। बैक-बोन बापदादा, सामना करने के लिए किसी भी **'व्यक्ति द्वारा'** (पुराना पन्नावाला वाणी में **व्यक्त तन द्वारा** लिखा है, **व्यक्ति द्वारा** करके इसलिए चेंज किया की गुलज़ार दादी को लागू किया जाए।) समय पर प्रत्यक्ष हो ही जावेंगे और अब भी हो रहा है।

अव्यक्त वाणी (नया प्रिन्ट २०००-२००१) से फोटो कापी किया है।

२२. अ. वा. 25-11-2000 (पृ. नं. 12)

a) आज बाप दादा अपना प्यारे ते प्यारे, मीठे ते मीठे छोटे से ब्राह्मण संसार कहो, उसको ही देख रहे हैं।

b) बाप दादा भी साकार में दूर बैठे हूए बच्चों को सम्मुख ही देख रहे हैं।

c) चाहे अव्यक्त बाप के, चाहे ब्रह्मा बाप के, जहाँ-तहाँ चित्र ही चित्र दिखाई देते हैं। जहाँ-तहाँ ब्रह्मा बाप के चित्र बहुत रखे हुए हैं।

d) तो एड्वांस पार्टी की तैयारी हो रही है क्योंकि सभी मातायें पक्की थी। **'साकार बाप'** की पालना लेने वाली, तो पालना तो देंगी ना।

२३. अ. वा. 16-12-2000 (पृ. नं. 20)

a) जिस बाप को ऋषि, मुनि, तपस्वी नेती-नेती कहके चले गये, उस बाप को ब्राह्मण संसार की भोली-भाली आत्माओं ने जान लिया, पा लिया।

b) बापदादा सोचते हैं - हँसी की बात है कि विनाश को सोचना अर्थात बाप को विदाई देना क्योंकि विनाश होगा तो बाप तो परमधाम में चले जायेंगे ना।

c) तो बाप दादा तो अविनाशी है, वह तो विनाश नहीं होता।

d) प्रत्यक्ष किसको करना है ? बच्चों को या बाप को ? बाप को भी बच्चों द्वारा करना है क्योंकि अगर ज्योतिर्बिन्दु का साक्षात्कार भी हो जाए तो कई तो बिचारे ----, बिचारे हैं ना। तो समझेंगे ही नहीं कि यह क्या है।

e) फरिश्ता अर्थात पुराने संसार और पुराने संस्कार से नाता नहीं। ऊपर चले गये अर्थात ऊँची स्मृति में चले गये।

मुरली

(मु. 19-08-68 से 19-01-2002 तक)

1968

२४. मुरली : 19-08-68

a) ब्रह्मा तो गाया हूआ है। प्रजापिता ब्रह्मा **'भी'** है जैसे निराकार शिव बाबा कहते हैं। उनका बाप बताओ ? फिर साकार प्रजापिता ब्रह्मा का बाप बताओ ?

b) शंकर फिर कहाँ से आया ? उनकी रचना कहाँ है ? ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा तो दो मूर्ती हो गया ना।

२५. मुरली : 08-09-68

a) तुमको इनको याद नहीं करना है। यह तो देहधारी है। तुमको याद करना है विदेही को।

b) बाप ने समझाया है जो अपने को परमात्मा कहलाये अपन को पूजा कराते हैं वह हिरण्यकश्यिपु जैसे दैत्य है।

c) राधे-कृष्ण ही स्वयंवर बाद फिर ल. ना. बनते हैं। दोनों **अलग-अलग** महाराजाओं के है।

d) सन्यासियाँ प्रवृत्ति मार्ग वालों को ज्ञान दे न सके, पवित्र बनने के लिए।

e) बाप कहते हैं मैं हर कल्प के पुरूषोत्तम संगम युग पर आता हूँ। ५०-६० वर्ष में बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं।

f) अभी तो सभी यहाँ हैं। बाकी भी जो रहे हूए हैं वह आते रहते हैं। इनको कहा ही जाता है रूहानी कालेज।

g) **'वह है'** ज्ञान सागर, मनुष्य सृष्टि का बीज रूप। तुम जानते हो वह है वृक्षपति।

1987

26) मुरली : 13-9-87

a) अन्तिम प्रत्यक्षता के समय की सीन क्या होगी ? एक ओर विनाश की आग लगेगी दूसरी ओर -----। ---------- बाप भी वापस चले जायेगा।

b) वाणी से परे अर्थात् घर। वानप्रस्थ का आर्थ न गुरू लोग जानते न फालोअर्स जानते हैं।

c) कहते हो आओ माना पतितों का विनाश करो। पावन की स्थापना करो। गुप्त वेश में शान्तिधाम सुखधाम की स्थापना हो रही है।

d) कहा भी जाता है ना कुम्भकरण की नींद में सोये पड़े हैं। यह नहीं जागेंगे। नहीं जागेंगे।

e) मुक्ति में तो सब जायेंगे, बाकी जीवनमुक्ती में जाना कोई मासी का घर थोडेही है।

f) कितने महल बनते रहते। बाम्बे पहले क्या थी। समुद्र को सुखाया है।

g) बाप भी विनाश के लिए आये हैं तो आधे पर थोडेही जायेंगे। आग लगकर जब पूरी होगी तब चले जायेंगे।

h) विनाश का समय भी तो जरूर आना ही है। जब तक विनाश न हो, शान्ति कहाँ से आये।

27) मुरली : 14-9-87

a) कृष्ण को कब बेहद का बाप नहीं समझा जा सकता। यह गीत तो यहाँ के नाटक वालों ने बनाए हूए हैं।

b) बेहद का बाप गरीब निवाज जरूर है। भारत को गॉड फादर का बर्थ प्लेस कहेंगे। हाँ मरण से बेशक न्यारा है। बाकी जन्म तो हाता है ना।

c) ऐसे नहीं कि ध्यान कोई अच्छा है, नहीं। योग को ध्यान नहीं कहा जाता है। वैकुण्ठ में जाकर रास विलास करते हैं, वह कोई कमाई नहीं है।

d) कोई मरता है तो कहते हैं फलाना स्वर्ग पधारा, उनसे पूछना चाहिए कि जब वह स्वर्ग में गया तो फिर तुम उन्हें नर्क में बुलाकर ब्राह्मण आदि क्यों खिलाते हो। यह भोग आदि तो एक रस्म रिवाज है, ड्रामा अनुसार। यहाँ से जाकर सूक्ष्मवतन में खिलाते हैं।

e) समझाया जाता है आत्मा है तो निराकार। तुम्हारा गुरू तो साकार है। निराकार का बाप साकार कैसे होगा। समझाने की प्रैक्टिस पर सारा मदार है।

1989

28) मुरली : 19-9-89

a) तुम जानते हो कि राम कि आत्मा तो जरूर पुनर्जन्म लेती रहती होगी। यहाँ इम्तहान में नापास होती है। परन्तु कोई न कोई रूप में होगी तो जरूर ना।

b) मैं भी इस ब्रह्मा के तन में आता हूँ। टैम्प्ररी इनकी आत्मा को भी समझाते है।

c) ऐसे नहीं कि मन्त्र देकर चला जाता हूँ। नहीं। बच्चों को देखना भी पड़ता है कि कहाँ तक सुधार हुआ है।

d) अब कैसे याद करते हो, क्या यह समझते हो कि बाबा परमधाम में है ? नहीं। बाबा तो यहाँ रथ में बैठे है।

e) तुम जानते हो हमको ब्रह्मा को याद नहीं करना है।

f) ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना यह भी लिखते हैं।

g) बाकी सूक्ष्मवतन क्या है, कुछ भी नहीं। यह सिर्फ साक्षात्कार होता है।

h) शंकर का कुछ है नहीं। तो उनको लगा दिया है विनाश के लिए।

i) मैं जो हूँ, जैसा हूँ, कोटो में कोई ही मुझे पहचान सकते हैं।

j) थोडा ज्ञान मिला तो समझते हैं हम शिवबाबा के भी बाबा बन गये। पहचान तो है नहीं कि कौन नालेज देते हैं।

1993

29) मुरली : 11-1-93

a) पूरा सरेन्डर वह जिनकी बुध्दि में रहता कि हम ईश्वरीय माँ बाप से पलते हैं।

b) अब तुम मात पिता के साथ कुटुम्ब में बैठे हो। श्रीकृष्ण और राधे को मात-पिता नहीं कहेंगे क्योंकि वह तो प्रिन्स-प्रिन्सेज़ है।

c) यह तो सारे जगत का एक ही मात पिता है। तुम सभी जानते हो कि हम उनके मुख से एडाप्ट हूए है।

d) परमधाम से बाप आये हैं। वह है ग्रैन्ड फादर। और यह है दादा-बड़ा भाई। (वह कहकर दूर कर दिया।)

e) राज माता भी कहते हैं तो राज पिता भी कहते हैं। यह फिर है बेहद के। हम मात पिता के साथ बैठे है।

f) शिवबाबा कहते हैं तुम ब्रह्मा द्वारा हमारी ब्रह्मा मुखवंशावली बने हो।

g) यहाँ शिवबाबा खुद आते है परमधाम से।

h) रचना द्वारा जो रचता और रचना को जानते है उनको ज्ञानी कहा जाता है।

i) जैसे फरूखाबाद वाले कहते है हम उस मालिक की याद करते है। निराकार शिवबाबा तो विश्व के मालिक बनते नहीं।

j) कैसे देवी देवता धर्म का कलम लग रहा है। झाड़ में क्लियर है।

k) रावण ने तुमको रोगी बना दिया है।

30) मुरली : 12-1-93

a) रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों से रूहानी बातें करते है।

b) इस पुरानी दुनिया से मैं बच्चों को घर ले जाने के लिए आया हूँ।

c) इन देवताओं को किसने पढ़ाया, यह तो जरूर याद आना चाहिए ना।

d) मनुष्य सृष्टि का **'वह'** बीजरूप है और चैतन्य है।

e) अच्छा अगर बाप याद नहीं पड़ता है तो टीचर को याद करो। टीचर कभी भूलेगा क्या।

f) इसमें कोई किताब आदि पढ़ने की जरूरत ही नहीं। उस पढ़ाई में कितने किताब आदि पढ़ना पड़ता है।

g) वो लोग चाहते है मुक्ति को पायें। यहाँ तुम्हारी एम् आबजेक्ट है जीवन मुक्ति को पाने की।

h) बैठे कितना साधारण में है। बच्चों का मुखड़ा देखने के लिए थोडा सा ऊपर बैठते हैं। मददगार बच्चों के बिगर हम स्थापना कैसे कर सकते हैं।

i) बाप ही स्वर्ग की स्थापना करते हैं। बाप से ही हमको वर्सा मिलता है। वाप ही हमको राजयोग सिखलाते है। बाप ही हम सबको साथ भी ले जाते हैं।

31) मुरली : 8-8-93

a) बहूत गई थोडी रही ---- इसिलिए अब जल्दी - जल्दी पुरूषार्थ कर बेहद के बाप से वर्सा लो, जैसे सब ले रहे है।

b) बाप कहते हैं - मैं कल्प - कल्प, कल्प के संगमयुगे आता हूँ। पुरानी दुनिया का विनाश कराता हूँ। जब तक नई दुनिया स्थापन हो जाए तब तक इस पुरानी दुनिया में रहना पड़े।

c) निराकार कैसे सिखलायें, इसलिए आरगन्स द्वारा पढ़ाते हैं। सभी भक्तों का बाप वह भगवान है - परमपिता परमात्मा।

d) ब्रह्मा, विष्णु, शंकर है सूक्ष्मवतन वासी। बस, और कोई चीज़ ही नहीं है, फिर ८-१० भुजा वाले कहाँ से आये। फिर किस्म-किस्म के चित्र बैठ बना देते हैं।

e) कहेंगे - देखो कुमारका, मनोहर कितने अच्छे-अच्छे फूल हैं। बाबा इस बगीचे को देखते 'फिर उस बगीचे में' जाकर फूलों को देखते हैं।

f) वह तो घरबार छोड देते हैं। तुम घर में रहते सारी दुनिया को त्याग करते हो। घर-घर में तुम यह रूहानी हॉस्पीटल अथवा कॉलेज खोल सकते हो। इसमें खर्चा कुछ भी नहीं। सिर्फ तीन पैर पृथ्वी के चाहिए।

1995

32) मुरली : 5-2-95

a) बाप वर्सा देता, रावण श्राप देता - यह भी दुनिया नहीं जानती।

b) तुम हो प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे ब्राह्मण और ब्राह्मणियाँ। वह ब्राह्मण ब्रह्मा बाप को जानते ही नहीं है। बाप जब आते हैं तो ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी जरूर चाहिए। कहते ही है त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच।

c) पुकारते भी है - 'तुम मात पिता ---' परन्तू इसका अर्थ तो कोई भी नहीं समझते। निराकार बाप के लिए समझ लेते हैं।

d) तुम अभी ब्रह्मा द्वारा देवता बन रहे हो।

e) तुम सभी हो मुझ माशूक के आशिक।

f) अभी तुम बाप के सम्मुख बैठे हो। सम्मुख मुरली सुनने में कितना फर्क है। जैसे यह टेप मशीन निकली है, सबके पास एक दिन आ जायेंगी।

33) मुरली : 2-12-95

a) ऐसे कोई कहेंगे कि प्रजापिता ब्रह्मा को सन्तान नहीं है ? इनकी सन्तान तो सारी दुनिया है। सब धर्म वाले इनको मानेंगे जरूर। एडम्-ईव, आदिदेवी-आदि देव, यह प्रजापिता ब्रह्मा के लिए ही कहेंगे।

b) यह तो मात-पिता दोनों हूए ना। तुम बच्चे सामने बैठे हो और पुरूषार्थ भी करते हो।

c) ब्रह्मा विष्णु शंकर का भी राज बाप ने समझाया है। सुक्ष्मवतन का सिर्फ तुम बच्चों को अभी साक्षात्कार होता है।

d) बाप कहते हैं जब जड़ जड़ीभूत अवस्था, वानप्रस्थ होती है तब मैं 'ईनमें' प्रवेश करता हूँ।

e) शुरू में तो बच्चों को बहुत साक्षात्कार होते थे। भक्ति मार्ग में जब नौधा भक्ति करते हैं तब साक्षात्कार होता है।

f) सूक्ष्मवतन में ब्रह्मा विष्णू शंकर, वह भी सिर्फ साक्षात्कार होता है। बाकी है कुछ नहीं।

34) मुरली : 15-10-95

a) यह लक्ष्मी नारायण कितने समझदार थे, राज्य करते थे। बाप कहते हैं तत् त्वम।

b) यह बेहद की बातें बेहद का बाप ही समझाते हैं। हठयोग का भी पार्ट आत्मा बजाती है। यह बातें भी जो समझदार हैं वही समझ सकते हैं।

c) भगवान को कोई रूप में आना है। भगवान को आना ही है पुरानी दुनिया को नया बनाने।

d) ब्रह्मा विष्णु शंकर तीनों का जन्म इकट्ठा है। सिर्फ शिवजयन्ती नहीं है। परन्तू त्रिमूर्ति शिवजयन्ती है।

1996

35) मुरली : 5-11-96

a) मीठे-मीठे रूहानी बच्चों से बाबा सम्मुख बात कर रहे हैं। तुम उनके सम्मुख बैठे हो। यहाँ तो एक से ही तीनों मिलता है।

b) तुम जानते हो बेहद का बाप जिसको पतित-पावन कहा जाता है, 'वही' मनुष्य सृष्टि का बीज रूप है। यह है चैतन्य।

c) यह ल. ना. को देखो कितने उत्तम पुरूष हैं। ऐसा उत्तम दोनों को किसने बनाया ?

d) अब तुम जानते हो बाबा आया है बच्चों को 'फिर से' स्वर्ग के मालिक बनाने।

e) कौरव और पाण्डव एक ही घर के थे।

f) ड्रामा में एक एक सेकन्ड का एक्ट समझाया है, इसको स्वदर्शन चक्र कहा जाता है।

g) इस महाभारी लडाई से ही स्वर्ग के गेट खुलने वाले हैं। बाबा आकर राजयोग सिखलाते हैं तो जरूर स्वर्ग चाहिए।

h) अब शंकर तो है सूक्ष्मवतन वासी। सूक्ष्म वतन में बैल आदि तो होते है नहीं।

i) राम और रावण भारत में ही होता है। अब तुम जानते हो रावण क्या चीज़ है। कब आते हैं।

j) यहाँ तुम सम्मुख बैठे हो। मम्मा बाबा भी है।

k) सतगुरू के रूप में साथ ले जायेंगे। गुरू का काम है फॉलोअर्स को साथ ले जाना।

36) मुरली : 16-11-96

a) भारतवासियों का हिन्दु धर्म है वा देवी-देवता ? यह किसने और कब स्थापन किया ? यह बिल्कुल जरूरी बात है समझाने की।

b) जब से देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं तो अपने को हिन्दु कहलाना शुरू करते हैं।

c) विकर्म संवत तो रावण ने स्थापन किया।

d) नई दुनिया का धर्म पुरानी दुनिया में स्थापन हो रहा है।

e) बाप कहते है मैं ८४ जन्मों की कहानी सुनाने आता हूँ तो जरूर पिछाड़ी में ही आकर सुनायेंगे ना।

f) भगवान ब्रह्मा द्वारा मनुष्य सृष्टि रचते हैं। ब्राह्मणों को फिर देवता बनाते हैं।

g) जब तक अल्फ बे बुध्दि में नहीं हो तो और क्या समझेंगे। तुम जानते हो अल्फ बे किसको समझाना बड़ा सहज है।

h) इस समय मनुष्यों की हैं विनाश काले विपरीत बुध्दि। वह है आसुरी सम्प्रदाय, तुम हो राम सम्प्रदाय।

i) बाप कहते हैं - हम कोई कमाई नहीं करते। हम तो तुमको सिखलाकर अपने घर ले जाते हैं।

j) यहाँ बाप सम्मुख बैठा है। बाबा सब कुछ बच्चों को समझाते है।

1998

37) अ॰ वा॰-17-5-98

a) जैसे विनाशकारी ग्रुप बहूत तीव्र गति से अपने कार्य को आगे बढ़ाते जा रहे हैं। विनाशकारी ग्रूप अब भी एवरेडी है, सिर्फ आर्डर की देरी है।

b) जिन्हों का आदि से यही संकल्प है कि साथ जियेंगे, साथ मरेंगे .... किसी भी भिन्न रूप वा संबन्ध में साथ रहेंगे, उन्हों से किये हूए वायदे प्रमाण साथियों के बिना चाबी कैसे लगायेंगे ?

c) अब शंकर कौन हूआ ? यह भी गुह्य रहस्य है। जब ब्रह्मा ही विष्णु है तो शंकर कौन ? इस पर रूह रिहान करना। रूहानी सोशल वर्कर ग्रूप अभी पर्दे के अन्दर है।

d) विदेशी बच्चों ने अपने असली बाप को बहुत अच्छी तरह से पहचान लिया है। ऐसे मणकों द्वारा बाप अभी प्रत्यक्ष हो रहे हैं।

e) लेकिन बाप के सामने कौन बैठ सकेंगे ? जिन्होंने बाप को जो है, जैसे है, वैसे दिव्य चक्षु द्वारा, बुद्धि द्वारा जान लिया और देख लिया।

38) मुरली : 22-5-98

a) वास्तव में शिवबाबा है पतियों का पति। अमरनाथ है ना, तुमको भी अमरनाथ, अमरपुरी का मालिक बनाते हैं। तुम जो वर्शन्स सुनते हो वह एक-एक वर्शन्स लाख रूपये का है।

41) मुरली : 30-12-98

a) अभी तुम सम्मुख बैठे हो। बाबा कहते हैं आगे कभी मिले थे ? तुम ही कहते हो-बाबा, ५ हजार वर्ष पहले हम आपसे वर्सा लेना आये थे।

b) यह भी नहीं समझते हैं कि ब्रह्मा ज़रूर साकार में होना चाहिए, जिस द्वारा परमपिता परमात्मा सृष्टि रचते हैं।

c) ७ रोज़ निर्जल रहती थी, कितनी मेहनत करती थी। वास्तव में ७ रोज़ का अर्थ क्या है सो तुम अभी जानते हो।

d) मैं आया हूँ तुमको ले जाने। शिवजयन्ती भी मनाते है ना। परन्तु वह भारत में कैसे आते हैं - यह किसको पता नहीं हैं।

1999

42) मुरली : 30-1-99

a) पिछाड़ी में आने वाले पुरानों से भी तेखे जा रहे हैं।

b) यह टेप रखी है। यह बहुत सर्विस देती है। बच्चे समझते हैं तुम्हारे द्वारा सुनने से इनडायरेक्ट हो जाता है फिर यहाँ आता है डायरेक्ट सुनने के लिए।

c) बाप खुद कहते हैं मैं भी ड्रामा के बंधन में बाँधा हूआ हूँ।

43) मुरली : 14-3-99

a) तुमको सिर्फ एक ईश्वर से ही पढ़ना है। बाप जो पढ़ाए, सिखाए-ओरली पढ़ना है। वह तो अनेक प्रकार की किताब लिखते हैं, जो सारी दुनिया पढ़ती है।

b) यह पढ़ाई इस जन्म के लिए है। यह अमरकथा भी है। नर से नारायण बनने की शिक्षा भी बाप देते हैं नई दुनिया के लिए।

c) अब माला के राज़ को **तुम बच्चे** ही जानते हो। रूद्र माला कैसे बनी है ? रूण्ड माला किसका नाम है ?

d) भगवान खुद कहता है - मैं कुछ नहीं कर सकता हूँ। ड्रामा में नूँध है, मैं क्या कर सकता हूँ।

e) यह बाप का पार्ट और प्रजापिता ब्रह्मा का पार्ट वन्डरफुल है। यह बाप विचार सागर मंथन कर तुमको सुनाते रहते हैं।

44) मुरली : 3-7-99

a) शिवबाबा तो बच्चा बना नहीं है। वह तो बुढ़े वानप्रस्थ अवस्था में आया है। कब आया उसकी डेट है नहीं।

b) यह (ब्रह्मा) तो कुछ नहीं जानते थे। शुरू में बनारस गये तो दीवारों पर गोले आदि निकालते रहते थे। क्योंकि यह तो जैसे बेबी बन गये।

c) ल. ना. कहने से तुम चले जाते हो सतयुग में। यह है नर से ना¯रायण बनने की कथा। कृष्ण बनने की कथा नहीं कहते, इसको सत्य नारायण की कथा कहेंगे।

d) मै तुमको माया रावण से लिबरेट कर साथ ले जाऊँगा, तुमको फिर राजाई देकर मैं निर्वाणधाम में बैठ जाऊँगा।

e) विष्णु का साक्षात्कार हूआ और दिल में बहुत खुशी हूई। फिर विनाश का साक्षात्कार भी हूआ।

f) ऐसे तो नहीं बाप जब प्रवेश करते हैं तब समझता हूँ बाबा आया है, याद रहती है, बाबा चला जाता है तो भूल जाता है।

g) पहले है शिवजयन्ती फिर गीता जयन्ती फिर कृष्ण जयन्ती।

45) मुरली : 1-9-99

a) ऐसे नहीं मेरे अन्दर शिव की प्रवेशता है। ऐसे हो नहीं सकता। बाप कहते हैं मैं कोई में जाता नहीं हूँ।

b) जो भाषा इनकी होगी, उसमें ही समझायेंगे ना। ऐसे नहीं कि भाषा बदल सकती है। हिन्दी ही होनी चाहिए।

c) हमारा बाबा, बाबा भी हैं, टीचर भी हैं, प्रिसेप्टर भी है। बच्चे तो हो ही , तब तो यहाँ बैठे हो। टीचर से पढ़ रहे हो।

d) वास्तव में उद्घाटन तो हो ही गया है। फाऊन्डेशन लगाने के लिए भी बुलाया जाता है। तो यह भी बाप ने स्थापना कर दी है।

e) सतयुग की स्थापना बाप ने की है। बाकी ओपनिंग सेरीमनी कौन करेगा ? बाप तो स्वर्ग में आते नहीं।

f) बाप कहते हैं मैं हूँ गरीब निवाज। भारत बहुत गरीब खण्ड है।

g) बाप ने खुद परिचय दिया है। वह है मैजारिटी, तुम्हारी है मैनारिटी।

2001

46) मुरली : 19-1-01

a) विष्णु के दो रूप हैं - ल. ना., देवी देवता। यह कोई कॉमन सतसंग नहीं है। यहाँ बैठे हो समझते हो सत बाबा जिसको शिव कहा जाता है, उनके संग में बैठे हैं।

b) हमको पढ़ाने वाला बिल्कुल न्यारा विचित्र है। उनको यह साकार चित्र नहीं है। वह है ही निराकार।

c) मोह भी रखना चाहिए अविनाशी चीज़ में, न कि विनाशी चीज़ में। इतना समय तुम विनाशी शरीर में मोह रखते आये। (दादा लेखराज का शरीर विनाशी थे - इशारा)।

d) अब बाप समझाते हैं - बहुत बच्चे हैं जो और और धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं।जो देवी-देवता धर्म छोड़ दूसरे धर्म में गये है, वह सब पत्ते लौटकर आ जायेंगे, अपनी जगह पर।

e) पहले-पहले बाप का परिचय देना है। इनमें ही सब मूँझ पडे है। कृष्ण तो देहधारी है। इनको (ब्रह्मा को) दादा कहेंगे।

f) शिवबाबा के अवतरण में तो बिलकुल फर्क नहीं पड़ सकता। पता भी नहीं पड़ता है कि कब आया। ऐसे भी नहीं साक्षात्कार हूआ तब आया। नहीं, अन्दाज़ से कह देते हैं। बाकी ऐसे नहीं उस समय प्रवेश हूआ।

47) मुरली : 6-2-01

a) यहाँ तुम्हारा सब कुछ गुप्त है। बाबा ने जिसमें प्रवेश किया है वह भी कितना साधारण रहते हैं।

b) रूहानी बच्चे भी कहते हैं कि बाबा। **'उनको'** सब बेहद के बच्चे, आत्मायें याद करते रहते हैं।

c) परमपिता, उनको फिर सर्वव्यापी कहना यह तो रॉंग हो जाता है इसलिए फिर ईश्वर वा परमात्मा कह देते।

d) वह समझते हैं ब्रह्म की याद में रहने से, शरीर छोड़ने से ब्रह्म में लीन हो जायेंगे। गृहस्थ धर्म वाले कहते भगवान किसी न किसी रूप में पतितों को पावन बनाने आयेंगे।

e) ऐसे नहीं कि ऊपर से प्रेरणा द्वारा ही सिखलायेंगे। प्रेरणा अक्षर है नहीं। भल शंकर की प्रेरणा द्वारा विनाश कहा जाता है -------।

f) बाप कहते हैं मैं कोई इन्हों के पुकारने पर नहीं आता हूँ। मैं अपने समय पर आपेही आता हूँ।

g) उन्हों से पूछो तो सही कि हिन्दु धर्म कहाँ से आया ? तो कोई को पता नहीं है सिर्फ कह देते हमारा धर्म कृष्ण ने स्थापन किया।

h) पढ़ाने वाला टीचर तो आया है पढ़ाने। इनको अमरकथा, सत्यनारायण की कथा, तीजरी की कथा भी कहते हैं।

48) मुरली : 14-2-01

a) जिससे तुम वर्सा ले रहे हो, जो अब नीचे आये हूआ है। कहते हैं मुझे आना पड़ता है।

b) यह है बेहद के वैराग्य ? उन्हों का है हद का वैराग्य।

c) बेहद का बाप कहते हैं अभी तुमको स्वर्ग रूपी घर बनाकर देता हूँ। यही जमुना का कण्ठा होगा।

d) तो तुम एक बाप से ही ज्ञान सुनते हो। बाप कहते है और कोई से न सुनो।

e) शिवजयन्ती से फिर झट गीता जयन्ती हो जाती है। उनसे ही ज्ञान शुरू कर देते है। फिर कृष्ण जयंती।

f) रावण कोई हद में नहीं रहता।

g) कृष्ण है सतयुग का फर्स्ट प्रिन्स। स्कूल में पढ़ने जाते हैं, जब बड़ा होता है तब गद्दी का मालिक बनता है।

h) यह है शिवबाबा का बेहद का यज्ञ, जिसमें मनुष्य से देवता बनते है। गाया हूआ भी है - ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रज्ज्वलित हूई।

i) किसको भी समझाओ तो पहले बोलो स्थापना फिर विनाश फिर पालना।

j) प्रजापिता ब्रह्मा तो मशहूर है ना। आदि देव और आदिदेवी। तुम हो जगत अम्बा के बच्चे।

k) तुमने बुलाया ही है, हे पतित-पावन आओ, आकर हमको पावन बनाओ। अच्छा बच्चे आया हूँ तो सर्वेन्ट हूआ ना।

l) ब्रह्मा से योग लगाने से पावन तो बनेंगे नहीं। वापस एक भी जा न सके। पुनर्जन्म तो लेना ही है।

m) सचखण्ड सच्चा बाबा स्थापन करते हैं। रावण आकर झूठ खण्ड बनाते हैं।

49) मुरली : 17-2-01

a) भारत में गली-गली में सतसंग है। वहाँ तो सब मनुष्य देखने में आते है। यहाँ तो सुप्रीम बाप है, जिसको निराकार गॉड फाँदर कहा जाता है, वह निराकार साकार में बैठ पढ़ाते है।

b) अब देही - अभिमानी इस जन्म में बनना है। तुम्हारी देह में रहनेवाली जो आत्मा है उनको परमात्मा बैठ समझाते है।

c) यह एक जन्म अभी तुम्हारा सबसे अच्छा जन्म है। तुम हो प्रजापिता ब्रह्मा मुख वंशावली।

d) शिवबाबा 'फिर' आया हूआ है। इसको कहा जाता है राजस्व अश्वमेध अविनाशी रूद्र ज्ञान यज्ञ।

e) परंतु विष्णु को जो शंख चक्र दे दिया है वह देवताओं को नहीं था।

f) भक्ति मार्ग में बहुतों को साक्षात्कार होता है। आत्मा कोई शरीर छोड जाती नहीं है। यह साक्षात्कार की बात है।

g) बाप कहते हैं मैं ब्रह्मा द्वारा आकर आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करता हूँ। यहाँ ही करेगा ना। सूक्ष्म वतन में तो नहीं करेंगे।

h) भारत का कभी विनाश नहीं होता और न कभी प्रलय होती है।

i) वह है मृत्युलोक की यात्रायें, अमरलोक की यात्रा यह है।

50) मुरली : 24-3-01

a) वह निराकार बाबा है, आकर पतितों को पावन बनाते हैं। बाप ही बताते हैं कि मैं कौन से भाग्यशाली रथ में आता हूँ।

b) अब जयन्ती मनाते हो-लिखते हो ६५ वी शिवजयन्ती, बाबा की पधरामणी हूए ६५ वर्ष हूए। फिर साथ साथ ब्रह्मा विष्णु शंकर की भी पधरामणी है।

c) मनुष्य के शरीर की भी पूजा करते है। सन्यासी लोग अपने को शिवोहम् कह बैठ जाते हैं फिर मातायें जाकर उनकी पूजा करती हैं।

d) बाप को कहा जाता है मनुष्य सृष्टि का बीज रूप। वो कब विनाश नहीं होता। ज़रूर उनसे वर्सा मिलना चाहिए। इसलिए तुमको 'प्रजापिता ब्रह्माकुमार्स-कुमारियाँ' कहा जाता है।

e) वापिस जाना तो सबको है। इसको लिबरेटर, गाईड कहा गया है। बेहद का बाप ले जाता है। ब्रह्मा विष्णु शंकर का तो सूक्ष्म शरीर है। बच्चे कहते हैं , है मात-पिता हम आपके बालक बने हैं।

51) मुरली : 26-3-01

a) सन्यासी ब्रह्म को याद करते हैं। समझते है हम जाकर ब्रह्म में लीन होंगे।

b) तुमको रावण से राज्य लेना है। वह तो सबका दुशमन है।

c) बाबा की बुद्धि में तो यह सीढ़ी का चित्र बहुत रहता है। इसको बड़ा महत्व देते हैं।

d) बच्चों के लिए मैगज़ीन निकलती है लेकिन बी. के. इतना पढ़ते नहीं हैं। समझते हैं कि हमको थोडेही पढ़ना है, यह बाहर वालों के लिए है। बाबा कहते हैं वाहर वाले तो कुछ समझते नहीं है, बिगर टीचर के।

52) मुरली : 28-3-01

a) पहले कड़े ते कड़ी भूल इन रावण मत वालोंने की है। पतित बनाने वाला ओर है, पावन बनाने वाला ओर है।

b) बाबा ने समझाया था कि शिवबाबा और ब्रह्मा दादा दोनों इकट्ठे हैं।

c) जब मुरली चलती है तो बाबा खुद कहते हैं कि समझो कि शिवबाबा इन द्वारा सुना रहे हैं। यह ब्रह्मा भी जरूर सुनता होगा।

d) मुरली चलाकर फिर यात्रा पर लग जाओ क्यों कि वह **वाणी से परे वानप्रस्थ** अवस्था है।

e) अरे जो सबका माशूक है, वह फिर तुम आशिकों को याद कैसे कर सकेंगे ? 'वह' है ही माशूक।

f) उनको यह पता होना चाहिए कि इन लक्ष्मी-नारायण को बादशाही मिली कहाँ से ?

g) वह है दैवी सृष्टि। मैं रचता हूँ तो ज़रूर मुझे संगम पर आना पड़े।

h) आगे चलकर आबू तक क्यू लग जायेगी। बाबा से कोई भी मिल नहीं सकेंगे।

53) मुरली : 9-4-01

a) बाप कहते हैं बच्चे, तुम आज से ५ हजार वर्ष पहले स्वर्ग में थे।

b) शिवबाबा भारत में ही दिव्य जन्म लेते हैं। शिवजयन्ती के बाद फिर चाहिए गीता जयन्ती। फिर साथ-साथ होनी चाहिए कृष्ण जयन्ती।

c) शिव ठहरा सब आत्माओं का बाप।

d) बाप के सिवाए बाकी सब रचता और रचना के लिए झूठ ही बोलते हैं क्योंकि यह है माया का राज्य।

e) गॉड ईज़ वन। उनकी रचना भी एक है।

f) उनकी महीमा अलग है। मनुष्य सृष्टि का चैतन्य बीज रूप होने के कारण **'उनमें'** सारा ज्ञान है।

g) अभी तुम बाप द्वारा बगेर टू प्रिन्स बन रहे हो अथवा नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनते हो।

h) स्वर्ग के द्वार बाप खोलते हैं, नर्क के द्वार रावण खोलते हैं।

i) परन्तु तुम हो गुप्त। तुमको पहचानते ही नहीं है। कृष्ण को तो सभी बाप नहीं कहेंगे। 'उस' बाप को याद करना है।

54) मुरली : 27-4-01

a) तुम बच्चे पुनर्जन्म में आते हो, मैं नहीं आता।

b) यह मेरा रथ है। शंकर से अगर पूछेंगे, पूछ तो नहीं सकते परन्तु समझो सूक्ष्मवतन में जाकर कोई पूछे तो कहेंगे यह सूक्ष्म शरीर हमारा है।

c) पहली-पहली मुख्य बात समझानी है कि पतित-पावन, ज्ञान का सागर श्रीकृष्ण नहीं है। वह पहले प्रिन्स बनते हैं फिर महाराजा बनते हैं। श्रीकृष्ण को रचना कहा जाता है।

d) सागर और ब्रह्मपुत्रा दोनों कम्बाइन्ड है। यह है ज्ञान मार्ग, वह है भक्ति मार्ग।

e) शिवबाबा सभी सीताओं का राम है। उनको हिंसक बाण दिखाना रांग है। सिर्फ लिखना है चन्द्रवंशी।

f) तुम्हें सबको बाप का परिचय भी सुनाना है। आज नहीं सुनेंगे तो कल सुनेंगे।

g) वृक्षपति बाप आते हैं तो ब्रहस्पति और शुक्र की दशा होती है। रावण आते है तो राहू की दशा हो जाती है।

55) मुरली : 28-4-01

a) तुम बच्चे जानते हो कि हम चैतन्य में बहुत हीरे जवाहरों से सजे हुए थे। चैतन्य रूप में भी पहने फिर जड़ रूप में भी पहने।

b) कृष्ण की गाऊ बहुत अँच्छी दिखाते हैं। विचार करो - गाऊएँ तो जरूर होनी चाहिए।

c) बच्चियाँ सूक्ष्मवतन में जाती थी। यह साक्षात्कार होता है। वैकुण्ठ तो फिर भी यहाँ होगा ना।

d) जयपूर में बहुत अच्छे-अच्छे महल बने हूए हैं। सिर्फ महल देखने के लिए मनुष्य जाते हैं।

e) हिन्दु धर्म किसने स्थापन किया ? देवि देवता धर्म किसने स्थापन किया ?

f) शंकर तो सिर्फ सूक्ष्म रूप धारण करते हैं। शंकर को बाबा कहते शोभता नहीं है।

g) भगवान ने जिन्हों को डायरेक्ट सुनाया, उन्होंने ही सुना फिर तो यह ज्ञान रहता नहीं।

h) संगम युग की विशेषता है अभी अभी पुरूषार्थ अभी-अभी प्रत्यक्षफल।

56) मुरली : 30-4-01

a) व्यास ने गीता बनाई अर्थात स्टोरी बनाई। सच्ची बात तो बाप द्वारा तुम अभी सुन रहे हो।

b) आत्मा का बाप कौन है ? उनका नाम रूप क्या है ? तो कह देते है सर्वव्यापी है।

c) शिवजयंती भी मनाते हैं। अब निराकार की जयन्ती कैसे हो सकती ?

d) बाप समझाते है - यह रावण तुम्हारा पुराना दुशमन है।

e) शिवबाबा, मीठा बाबा फिर से आओ। अरे तुम कहते हो गॉड फादर फिर नाम रूप से न्यारा कह देते हो।

f) श्रीकृष्ण है स्वर्ग का प्रिन्स। राधेकृष्ण ही स्वयंवर के बाद ल. ना. बनते है।

g) भगवान तो एक ही है, ब्रह्मा विष्णु शंकर भी देवता है। उनका भी बाप शिव है।

h) प्रजापिता ब्रह्मा तो यहाँ ही होगा ना। प्रजा यहाँ है। वर्सा दादे से मिलता है।

i) ऊँच ते ऊँच है शिवबाबा, फिर है ब्रह्मा विष्णु शंकर सूक्ष्मवतन वासी। फिर यह दुनिया।

57) मुरली : 13-6-01

a) प्रजापिता ब्रह्मा की मत मशहूर है। सब धर्म वालों का तो एक ही बाप है। कृष्ण को तो सब नहीं मानेंगे।

b) भल कोई ३५-४० वर्ष से रहते हैं परन्तु बहुत हैं जो इन गम्भीर बातों को समझते नहीं है।

c) कराची से लेकर मुरली निकलती आई है। पहले बाबा मुरली चलाते नहीं थे। रात को २ बजे उठकर १०,१५ पेज लिखते थे। बाबा लिखवाते थे।

d) तुम तो मुरली पढ़कर फेंक देते हो। नहीं तो यह वर्शन्स रखने चाहिए **ड्रमेशा** के लिए।

e) बाप - बैठ समझाते हैं - मैं भक्ति मार्ग में क्या करता हूँ। भक्ति मार्ग में भी इन्श्योरेन्स करता हूँ।

f) मैं हूँ गरीब निवाज़। मम्मा के पास तो कुछ भी नहीं था। गरीब के घर की थी फिर नम्बर वन चली गयी।

g) कृष्ण फर्स्ट प्रिन्स है। कृष्ण का नाम देते है, नारायण का क्यों नहीं।

h) तुम ब्राह्मण हो ईश्वरीय सन्तान। सतयुग में ईश्वरीय सन्तान नहीं कहेंगे।

i) भगवान ने जरूर भगवान-भगवती पैदा किये। गॉड ईज़ वन। इन ल. ना. को निराकार ने ऐसा बनाया।

j) ऐसा बाबा कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे एक ही बार आते हैं।

k) यह सब शिवबाबा करते हैं इनके द्वारा, करन करावर हैं। निराकार, निरहंकारी **'वह'** है।

l) बाप कहते हैं - मैं **'फिर'** से आया हूआ हूँ।

m) ब्रह्म तो बाबा नहीं, यह उन बिचारों का भ्रम हैं।

58) मुरली : 21-6-01

a) वास्तव में ज्ञान का तीसरा नेत्र तुम ब्राह्मणों को मिलता है। जिससे तुम बाप को और बाप की रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो

b) परमात्मा थोड़ेही पुनर्जन्म में आते हैं।

c) गाया जाता है - तुम मात पिता हम बालक तेरे ----। तुम मात पिता किसको कहते हो ? यह कौन कहते हो ? कहते हैं स्वर्ग में भी कंस, जरासन्धी, हिरण्यकश्यप आदि थे।

d) मैं सिर्फ बुढ़े वानप्रस्थ तन का आधार लेता हूँ। ब्रह्मा विष्णु शंकर का अपना अपना पार्ट है।

e) इस समय हम हैं इश्वरीय औलाद प्रैक्टिकल में। सारी किंगडम अभी स्थापन हो रही है।

f) कोई से भी पूछो - क्रियेटर कौन है ? कहेंगे परमात्मा। वह कहाँ है ? वह तो सर्वव्यापी है।

g) बाप कहते हैं - गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान रहना है। दोनों तरफ निभाना है। मैं कालों का काल सबको वापिस ले जाना वाला हूँ

h) यहाँ तो है बाप। तो पहले बाप का बच्चा बनना पड़े।

59) मुरली 22-6-01

a) मैं ही एक निष्काम सेवा करता हूँ। बच्चों को सुखी करके, सुखधाम का मालिक बनाए २१ जन्मों का सुख दे मैं अपने निर्वाणधाम में वानप्रस्थ अवस्था में बैठ जाता हूँ।

b) देवी-देवता धर्म वाले फिर और और धर्मो में कनवर्ट हो गये हैं। पहले-पहले बहुत मुसलमान बन गये फिर बौध्दि भी बन गये हैं।

c) वह लौकिक बाप, वह पारलौकिक बाप और यह है बीच में अलौकिक बाप। वास्तव में कृष्ण को गाली नहीं मिलती है। बीच में फँसा है यह।

d) बाप कहते हैं - मैं आया हूँ सबको वापिस ले जाने। विनाश तो जरूर चाहिए।

e) भक्ति मार्ग मैं मुझे काम करना पड़ता है, जो जिसकी पूजा करता है उनकी मनोकामना पूरी करता हूँ।

f) शंकर (राम वाली आत्मा) के बारे में इशारा।

g) रावण की प्रवेशता होने के कारण मनुष्य जो भी कर्म करते हैं, वह विकर्म हो जाते है।

h) गीता धर्म शास्त्र है, जिससे ३ धर्म अभी स्थापन होते है; न कि सतयुग में। यह धर्म अभी स्थापन कर रहे हैं फिर इस्लामी, बौद्धी और क्रिश्चियन।

60) मुरली : 26-6-01

a) ब्रह्मा द्वारा स्थापना नई दुनिया की, शंकर द्वारा अनेक धर्मो का विनाश करते हैं।

b) सृष्टि का चक्र यहाँ फिरता है। यह कोई सूक्ष्मवतन व मूलवतन में नहीं होते। यह यहाँ ही है।

c) तुम हो ब्रह्मा कुमार - कुमारियाँ। बि. के तो यहाँ ही होंगे ना। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे तो जरूर ब्रह्मा के साथ ही होंगे।

d) परमपिता परमात्मा भी शरीर में आकर ज्ञान सुनाते है। शरीर बिगर थोडेही सुनायेंगे। न मैं पुनर्जन्म में आता हूँ। यह भी नहीं जानते कि बाबा ने कब प्रवेश किया। कोई तिथि तारिख नहीं।

61) मुरली : 11-8-01

a) अब बाप भी गुप्त तो पढ़ाई भी गुप्त है। सेन्टर्स तो बहुत है।

b) माया, राम की सन्तान को बेहोश कर देती है। लव-कुश की कहानी भी है।

c) इस समय सब मनुष्य कुम्भकरण की नींद में सोये हुए हैं। वे यह भी नहीं जानते कि परमपिता परमात्मा आया है - बच्चों को वर्सा देने।

d) प्रेरणा से थोडेही स्थापन करेंगे। प्रेरणा में कोई आवाज नहीं होता।

e) शंकर तो सूक्ष्मवतन में है। शिवशंकर कह देते है। शंकर तो कोई काम नहीं करते तो शिव से मिला दिया है।

f) चित्रों में कितना अच्छी तरह दिखाया है कि परमात्मा कौन है।

g) भारतवासियों के लिए मुख्य है सीढ़ी का चित्र। यह है सबसे अच्छी चीज़।

h) तुम जानते हो सेन्टर्स पर भी, ऐसे माया के विघ्न बहुत पड़ते है। एक दो के नाम रूप से फंस पडते है।

62) मुरली : 6-10-01

a) बाबा अब बच्चों के आगे बोल रहे है। सम्मुख होने बिगर तो सुन नहीं सकते। दूर से भल सुनते है परन्तु निश्चय नहीं होता।

b) तुम बच्चे भी जानते हो बाबा आया है हमको ले जाने। हम भी बाबा के साथ वापिस जायेंगे।

c) हम बड़े ते बड़ा इम्तिहान पास करेंगे। एक कॉलेज छोड दूसरे, तीसरे में जायेंगे।

d) तुम जानते हो **'वह'** हमारा बाप, टीचर, सतगुरू है। उनकी मत पर जरूर चलना है।

e) बाबा बच्चों से पूछते हैं - शिवबाबा बोलते हैं ? शंकर बोलते हैं ? ब्रह्मा बोलते है ? विष्णु बोलते हैं ? विष्णु के दो रूप ल. ना. कहते है तो फिर क्या बोलते नहीं है ? गुँगे है ?

f) अब प्यार प्रेरणा से तो होता नहीं है, वह भी इसमें प्रवेश कर बच्चों को प्यार कर सकते हैं ना। बस बाबा तुम्ही से खाऊँ, तुम्ही से सुनूँ -----। बुद्धी उस तरफ चली जाती है।

g) परन्तु यह किसकी बुद्धि में नहीं है - बाबा कहाँ है ? बाबा परमधाम से आते हैं, हमको पढ़ाते हैं। सिवाए इस ज्ञान के बाकी सब हैं सत्यनाश करनेवाली बातें।

h) बाप ही आकर अपना जीवन कहानी बताते हैं।

63) अ. वा. : 4-11-2001

a) बाप जिम्मेवार है बच्चों को सम्पन्न बनाए साथ ले जाने के लिए। जिम्मेवार है बाप।

b) तो प्रकृति बाप से पूछती है कि, मैं तैयारी करती हूँ, सफाई करने की ----।

c) अभी भी करा रही है लेकिन स्थापना के निमित्त बनी हूई आत्माओं को अभी किसी भी बातों में चाहे स्व. प्रति, चाहे ओर के प्रति सोचने में समय नहीं लगाना चाहिए।

d) अभी सभी हद की बातों से ऊँचे हो जाओ। हद की बातों में हद के संस्कारों में समय नहीं गवाओ।

e) अभी तो सिर्फ बाप का रूप चल रहा है, शिक्षक और सतगुरू तो है ही। अभी तक बापदादा रहमदिल है इसिलिए देखते हूए भी, सुनते हूए भी रहम कर रहा है।

f) अनुभव करनेवाले अर्थात् बाप से डायरेक्ट सम्बन्ध रखने वाले। ---- इससे ही साक्षात्कार भी होंगे और साक्षात बाप प्रत्यक्ष होंगे।

2002

64) मुरली : 2-1-2002

a) इसलिए बोर्ड पर नाम भी ऐसा लिखना चाहिए ' ब्रह्माकुमारीज़ रूहानी ईश्वरीय विश्व विद्यालय'। रूहानी अक्षर जरूर डालना है। मैं रूहों को पढ़ाने वाला हूँ।

b) मुख्य चित्र है शिवबाबा और ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का। शंकर का पार्ट अलग है। उन द्वारा तो विनाश होता है। शंकर का इतना कर्तव्य नहीं है।

c) रावण से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है ? **'इस'** रावण से बाबा ही आकर छुड़ाते है और कोई छुडा न सके। इनके लिए तो सर्वशक्तिमान् ही चाहिए।

d) जगत अम्बा को भी बहूत बच्चे हैं और प्रजापिता ब्रह्मा को भी बहुत बच्चे हैं। प्रजापिता ब्रह्मा और जगत अम्बा का आपस में क्या कनेक्शन हैं ?

e) बाबा ने मकान भी रूहानी हॉस्पिटल और कॉलेज के ढंग से बनवाया है। कालेजों में कोई श्रृंगार नहीं होता है, सिम्पल होता है।

65) मुरली : 12-2-2002

a) तुम ईश्वर के बच्चे बने हो, बाप के साथ वापिस जाना है।

b) यह साजन भी बड़ा विचित्र है। विचित्र होने के कारण उनको पूरा याद नहीं कर सकता।

c) अभी तुमको सिखलाने वाला बाप मिला है। ईश्वर जो अपने साथ योग लगाना सिखलाते है, ज्ञानेश्वर माना ईश्वर में ही ज्ञान है।

d) हमारे मम्मा-बाबा भी जाकर प्रिन्स - प्रिन्सेज बनेंगे।

e) जो गृहस्थ व्यवहार में रहकर सर्वीस कर रहे हैं, वह यहाँ रहने वालों से अच्छा पद पा सकते हैं। और देखने में आता है - वह बहुत तीखे जा रहे हैं।

f) यहाँ जो पढ़ते हैं तो उससे इस जन्म में ही मिलता है।

g) पहले-पहले बाप का परिचय देना है। परमपिता परमात्मा से आपका क्या सम्बन्ध है ? उनका नाम ही है गॉड फादर।

h) तुम कहते हो प्रजापिता ब्रह्मा। तो तुम्हारा पिता हूआ ना। वह (शिव) भी पिता है। प्रजापिता ब्रह्मा और जगदम्बा दो है मुख्य।

66) मुरली : 19-1-2002

a) भगवान क्या बनाते है ? भगवान और भगवती। परन्तु हम देवी-देवता कहते हैं, क्यों कि भगवान एक है।

b) यही ल. ना. जो अब जगत-अम्बा, जगत-पिता हैं, इनको पता पड़ता है कि हम दूसरे जन्म में यह बनेंगे।

c) तो महिमा सारी संगमयुग की है जबकि शिवबाबा के अवतरण होता है। --- फिर कलियुग और सतयुग का संगम तो चार संगम हो गये। तो अवतार भी चार चाहिए।

d) बाबा ने बड़ा सहज रीति से लिखवाया है कि परमपिता परमात्मा से आपका क्या सम्बन्ध है ? परमपिता कहते हैं तो जरूर दो बाप हैं।

e) गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है, यह है पवित्र प्रवृत्ति मार्ग, कोई मनुष्य ईश्वर को न जानने के कारण स्वयं को ही ईश्वर समझ बैठे हैं।

f) ज्ञान की मालिस से लक्ष्म-नारायण को देखो कितने रमणीक हैं।

६७. **प्रुफ – (एक अनोखा अनुभव – बी. के. दादा विश्व रतन की जीवित चरित्र से)**

a) ब्रह्मा बाबा (दादा लेखराज), १८ जनवरी १९६९ में हार्ट फेल होकर शरीर छोड़े थे, क्योंकि **कोरामिन की इन्जेक्शन** हार्ट संबन्ध बिमारी के लिए यूज़ करते है।

मु. १४-१०-२००२ [ब्रह्मा बाबा शरीर छोडनेसे एक महीने पहले (१७-१२-१९६८) चलाया है।]

b) बाप समझाते हैं बच्चे, हार्ट फेल का मौत बहुत मीठा है।

६८. **प्रूफ – (ज्ञानामृत पुस्तिका – १९८६)**

a) १९३६ में दादा लेखराज का उम्र ५० साल के थे।

b) ~~सन १८७६ में सिन्ध में लेखराज ने जन्म लिया। (ज्ञानामृत पुस्तिका-१९९२)~~

(ज्ञानामृत पुस्तिका – १९९१)

b) मिस्टर सेवाकरम (भागीदार, कलकत्ता) के बारे में .....।

c) दादा लेखराज साहूकार और पावन थे (इशारा)।

d) दादा लेखराज में शिवबाबा की प्रवेशता कराची में हूई थी।

६९. **प्रूफ – (ज्ञानामृत पुस्तिका – १९९१)**

a) बी. के. वेदान्ती बहन (आफ्रीका), का परिचय .....।

अव्यक्त वाणी 1970 – (नया प्रिन्ट)

70) a) व्यक्त में अब भी सहारा है। जैसे पहले भी निमित्त बना हूआ **'साकार तन'** सहारा था वैसे ही अब भी ड्रामा में **निमित्त बने हूए साकार** में सहारा है।

b) साकार से स्नेह अर्थात् सारे सिजरे से स्नेह। साकार अकेला नहीं है। प्रजापिता ब्रह्मा तो उनके साथ परिवार है।

अ. वा. 3-11-97 (रिवाइज- 18-1-78)

71) a) वर्तमान (राम-चरित) को भूल बीती (ब्रह्मा की बातें) को याद करती हैं। लेकिन बापदादा सदा बच्चों के आगे प्रत्यक्ष है, बच्चों से छिप नहीं सकते।

b) बाप का वायदा है साथ चलेंगे। तो पहले ही बाप् को क्यों भेज देतो हो ? सिर्फ पार्ट परिवर्तन हूआ है।

c) हजार भुजावाले ब्रह्मा के रूप का वर्तमान समय पार्ट चल रहा है, तब तो साकार सृष्टि में इस रूप का गायन और यादगार है।

d) बाप देख रहे हैं कि बच्चे मेरे साथी हैं लेकिन बच्चे जुदाई का पर्दा डाल देखते रहते हैं। हाजिर-हजूर को भी छिपा देते।

संदेश के लिए इशारा

१) रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों से रूहानी बातें करते हैं।
34 (b), 64 (a), 30 (a)

२) बाप है गुप्त-----। बच्चे भी गुप्त है -----।
61 (a), 47 (a) , 53 (i)

३) सिर्फ शिवजयन्ती नहीं है, परन्तु त्रिमूर्ति शिवजयन्ती है।
34 (d), 56 (c)

४) शिवबाबा त्रिमूर्ति (ब्र.वि.श.) द्वारा ही आदि से लेकर अन्त तक कार्य कराते है।
32 (b), 50 (b), 33 (c), 64 (b), 34 (d), 31 (d), 3 (c), 62 (e), 58 (d), 60 (a), 5(a), 40 (m), 50 (e), 56 (g), 56 (i)

५) ब्राह्मण जीवन के जीदान का आधार है - मुरली।
19 (d), 2 (d), 9 (b), 57 (d), 38 (a)

६) बिना प्रूफ एवं प्रमाण बुद्धिमान लोग मानने के लिए तैयार नहीं होते है।
19 (c)

७) संगमयुग में बाप और दादा दोनों इकट्ठे हैं। एक पल भी अलग नहीं हो सकता।
3 (b), 52 (b), 1 (c), 54 (d)

८) ब्रह्मा की पार्ट साकार में चल रहा है और अन्त तक चलेगा।
20 (c), 41 (b), 2 (c), 49 (g), 32 (d), 4 (g), 71(c)

९) बाबा गरीब निवाज़ है।
45 (f), 27 (b), 30 (h), 57 (f)

१०) मैं तुम बच्चों को साथ ले जाने के लिए आया हूँ। मैं कल्प में एक ही बार आता हूँ।
30 (i), 62 (b), 35 (k), 63 (a), 65 (a), 41 (d), 59 (d)

११) ब्राह्मणों के लिए इतने बड़े विश्व के अन्दर अपना ही छोटा सा संसार है।
15 (a), 22 (a)

१२) अब कैसे याद करते हो, क्या यह समझते हो कि बाबा परमधाम में है ? नहीं। बाबा तो यहाँ रथ में बैठे हैं।
28 (d)

१३) तुम मेरे डायरेक्ट बच्चे हो ---- यह नहीं। तुम्ही से खाऊँ -----, तुम्ही से पीऊँ----।
15 (b), 62 (f), 55 (g), 49 (c)

१४) सूक्ष्मवतन में कुछ नहीं होता। सूक्ष्म वतन तो है ही नहीं।
4 (d), 28 (g), 33 (f), 34 (g), 49 (g), 55 (c), 60 (b), 33 (c)

१५) वायदा है ना साथ रहेंगे, साथ पियेंगे, वापस साथ ही जायेंगे -----।
20 (e), 37 (b), 11 (c), 4 (f), 71(b)

१६) मैं भी सृष्टि बन्धन में बान्धा हूआ हूँ।
43 (d), 42 (c)

१७) जो कुछ भी होता है, वह साकार में ही होता है।
60 (b), 25 (f), 31 (c)

१८) गृहस्थ व्यवहार में रहनेवाले अन्दर वालों से भी तीखे चले जायेंगे।
65 (e), 58 (g)

१९) ७ रोजवाला २५ साल वालों से तीखे चले जाते है (लास्ट सो फास्ट)
39 (c), 42 (a), 39 (b), 57 (b)

२०) प्रेरणा से कुछ होता नहीं है, प्रेरणा अक्षर है नहीं।
61 (d), 47 (e), 62 (f)

२१) आत्मा, शरीर बिगर कार्य नहीं कर सकता।
38 (e), 31 (c), 40 (j),

२२) बाबा तुम बच्चों के सम्मुख बैठे है।
62 (a), 32 (f), 41 (a), 37 (e), 35 (a)

२३) ट्रान्स(ध्यान-संदेश) नहीं जाना है।
27 (c), 2 (h)

२४) भोग डायरेक्शन अनुसार देना चाहिए।
27 (d), 2 (h)

२५) ब्रह्मा और प्र. ब्रह्मा अलग अलग है।
24 (a)

३१) व्यक्त में अब भी सहारा है। जैसे पहले भी निमित्त बना हूआ **'साकार तन'** सहारा था वैसे ही अब भी ड्रामा में **निमित्त बने हूए साकार** में सहारा है।
70 (ब)

२६) तुमको इनको (ब्रह्मा को) याद नहीं करना है। इस ब्रह्मा का फोटो भी रखना मना है।
25 (a), 28 (e), 22 (c)

२७) हरेक को अपने जिम्मेवारी अपने आप उठानी है। अगर दीदी-दादी जिम्मेवार हैं तो, आपको भविष्य में उन ही की प्रजा बनना है।
14 (c)

२८) मैं जो हूँ, जैसा हूँ, कोटों में कोई ही मुझे पहचान सकते हैं।
28 (i)

२९) तुम जानते हो कि राम कि आत्मा तो जरूर पुनर्जन्म लेती रहती होगी। यहाँ इम्तहान में नापास होती है।
28 (a)

३०) मैं भी इस ब्रह्मा के तन में आता हूँ। 'टेम्प्ररी' इनकी आत्मा को भी समझाते हैं।
28 (b)

माऊंट आबू में शिव बाबा नहीं आता।

१) रूह - रूहान करने मीठे मीठे बाबा ने आप सभी बच्चों से मिलने भेजा है।
3 (a)

२) मैं कब आता, कब जाता,किस तन में आता किसी को पता नहीं पड़ता। कोई तिथी तारिख नहीं।
46 (f), 60 (d), 44 (ब)

३) पहले तो मुझे प्रजापिता चाहिए। सूक्ष्मवतन वासी को यहाँ कैसे ले आ सकता ?
40 (d)

४) जब मुरली चलता था तो ब्रह्मा बाबा भी सुनता था।
52 (c)

५) मैं कोई पुकारने से नहीं आता हूँ।
47 (f)

६) मैं पुनर्जन्म नहीं लेता हूँ।
54 (a), 58 (b), 60 (ब)

७) मैं पतित कामी काटे ६० साल बाला बुढ़े वानप्रस्थी का तन आधार लेता हूँ।
33 (d), 44 (a), 52 (d)

एडवान्स धारणा के लिए पाईन्टस

१) निश्चय पत्र के बारे में ------।

2 (a)

२) स्थापना अर्थ और विनाश अर्थ निमित्त बने हूए आत्मायें गुप्त रूप में तैयारी कर रहा है। (एडवान्स पार्टि)

37 (a), 20 (b), 63 (c), 21 (b), 37 (c)

३) शिवबाबा ब्रह्मा तन द्वारा माँ का पार्ट बजा रहा था। बाप का पार्ट भविष्य में आने वाला है।

29 (c), 62 (d), 53 (i), 59 (c)

४) मम्मा के बारे में -----।

4 (h), 57 (f), 35 (j)

५) अल्फ और बे ----।

36 (g)

६) एडवान्स पार्टि का कार्य तीव्र गति से साकार में चल रहा है।

17(b),22 (d), 1 (a)

७) पहले स्थापना फिर विनाश फिर पालना ------।

48 (i), 28 (f)

८) मम्मा बाबा है सतयुग के प्रिन्स-प्रिन्सेज़।

65 (d), 54 (c), 48 (g), 56 (f), 57 (g)

९) जो कुछ भी इधर कर रहा है, उसका फल इस ही जन्म में मिलना चाहिए।

7 (b), 65 (f), 55 (h)

१०) घरघर में (सिर्फ तीन पैर पृथ्वी में) तुम यह रूहानी हॉस्पिटल और कोलेज खोल सकते हो।

31 (f), 64 (e), 62 (c)

११) सुक्ष्म वतन वासी माना सूक्ष्म मनन चिन्तन में रहना।

4 (e), 23 (e), 10 (c), 4(c), 4 (b)

१२) ब्रह्मा एक नहीं है।

40 (i)

१३) बाकी आज से सभी के लिए कौन निमित्त है - दीदी तो है, साथ में कुमरका मददगार है।

2 (f)

१४) टेप मशीन के बारे में --------।

42 (b), 32 (f)

१५) बाप ने समझाया है जो अपने को परमात्मा कहलाये अपन को पूजा कराते हैं वह हिरण्यकशिपू जैसे दैत्य है।

25 (b), 45 (a), 28 (j), 66(e)

१६) फरिस्ता अर्थात पुराने संसार और पुराने संस्कार से नाता नहीं। ऊपर चले गये अर्थात ऊँची स्थिती में चले गये।

23 (e), 4(c)

१७) सरस्वती है ब्रह्मा मुख वंशावली। वह कोई ब्रह्मा की यूगल नहीं है, ब्रह्मा की बेटी है। उनको फिर जगत अम्बा क्यों कहते हो ?

40 (h)

१८) तुमको नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी हस जन्म में बनना है, नहीं की सतयुग में।

44 (c)

१९) राधे - कृष्ण कोई आपस में भाई-बहन नहीं थे।

39 (d), 25 (c)

२०) बच्चों के लिए मागज़िन निकलते है तो बि. के. वाले इतने पढ़ते नहीं है।

51 (d)

२१) पाण्डव और कौरव एक ही घर के थे।

35 (e)

२२) वानप्रस्थ माना वाणी से परे अवस्था।

52 (d)

२३) ऐसे ऐसे बच्चियाँ थी, जो मम्मा-बाबा को भी डायरेक्शन देते थे - टीचर बनकर बैठते थे ----।

57 (c)

२४) परम पिता परमात्मा से आपका क्या सम्बन्ध है ? परम पिता कहते है तो जरूर दो बाप है।

66(d)

बाप (रामवाली आत्मा) का पार्ट (मात-पिता,साथ-साथ) शंकर के रूप में अभी प्राक्टिकल में चल रहा है। और उसी रूप में सारे विश्व के सामने प्रत्यक्ष होनेवाला है।

१) ब्रह्मा की पार्ट साकार में चल रहा है और अन्त तक चलेगा।

71(c),20 (c), 28 (c), 41 (b), 2 (c), 49 (g), 32 (d), 4 (g)

२) शिवबाबा साकार रूप में (प्र. ब्रह्मा द्वारा) हम बच्चों के साथ प्राक्टिकल पार्ट (बाप, टीचर, सतगुरू का) बजा रहा है। →70(a)

71(a),23 (b), 16 (b), 26 (a), 23 (c), 31 (b), 60 (c), 22 (b), 19 (b), 6 (b), 44 (d), 3 (e), 63 (e)
59 (a), 11 (a), 2 (g), 7 (d), 9 (a), 10 (d), 70(b)

३) शिवबाबा त्रिमूर्ति (ब्र. वि. श.) द्वारा ही आदि से लेकर अन्त तक कार्य कराते है।

32 (b), 33 (c), 64 (b), 60 (b), 34 (d), 14 (b), 31 (d), 3 (c), 62 (e), 58 (d), 60 (a), 5 (a), 40 (m), 50 (e), 56 (g), 56 (i)

४) बाबा (प्रजापिता) साकार मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है।

50 (d), 53 (f), 10 (b), 35 (b), 30 (d), 38 (g)

५) बाबा साकार रूप में दुनिया के सामने प्रत्यक्ष होनेवाला है।

23 (d), 21 (c), 16 (b), 63 (f), 26 (a)

६) प्रजापिता और जगदम्बा (मात-पिता,आदिदेव-आदिदेवि) के बारे में -----।

40 (h), 33 (a), 29 (b), 29 (c), 29 (e), 64 (d), 33 (b), 65 (h), 48 (j), 32 (c)

७) रचयिता और रचना के बारे में -------।

29 (h), 53 (d)

८) शिवबाबा ब्रह्मा तन द्वारा माँ की पार्ट बजा रहा था। बाप का पार्ट भविष्य में आनेवाला है।

29 (c), 62 (d), 53 (i), 59 (c)

९) फरूखाबाद के तरफ मालिक को बहुत मानते है।

29 (i)

१०) अभी जो शिवरात्री का पर्व आ रहा है, उसको धुमधाम से बनाओ।
5 (b)

११) जो इनकी भाषा है, वही (हिन्दी) होनी चाहिए।
45 (b)

१२) शंकर के बारे में ------।
37 (c), 13 (a), 54 (b), 24 (b), 64 (b), 55 (f), 61 (e), 40 (k), 38 h, 35 (h), 38 (a), 47 (e)

१३) गॉड ईज़ वन उनका रचना भी एक है।
53 (e)

१४) शिवबाबा सभी सीताओं का राम है। उनको हिंसक बाण दिखाना रांग है। सिर्फ लिखना है चन्द्रवंशी।
54 (e), 39 (a)

कोर्स करते वक्त ...

a) त्रिमूर्ति

१) चित्रों में कितना अच्छी तरह दिखाया है कि परमात्मा कौन है।
61 (f)

२) विनाश ज्वाला यज्ञ कुण्ड से ही प्रज्ज्वलित हूई।
18 (c), 21 (b), 4 h

३) पहले शिवजयन्ती, फिर गीता जयन्ती, फिर कृष्ण जयन्ती।
53 (b), 48 (e), 44 (g), 41 (d)

४) कराची से लेकर मुरली निकलती आई है। यह ब्रह्मा रात को २ बजे उठकर १०-१५ पेज लिखते थे। बाबा लिखवाते थे।
57 (c), 68 (d)

५) ऐसे ऐसे बच्चियाँ थी, जो मम्मा-बाबा को भी डायरेक्शन देते थे , टीचर बनकर बैठते थे ----।
57 (c)

६) ब्रह्मा है बेबी बुद्धि (मुरब्बी बच्चा)
44 (b), 1 (b)

७) ब्रह्मा की आयू सौ साल -----।
2 (e)

८) साक्षात्कार से कोई मतलब नहीं।
33 (e), 38 (f), 49 (f), 55 (c), 33 (f)

९) सन १९६६ में किया हूआ विनाश का घोषणा के बारे में -----
12 (a), 18 (b)

१०) ब्रह्मा का साक्षात्कार के बारे में (साक्षात्कार अलग बात है और प्रवेश करना अलग बात है)
46 (f), 44 (b), 44 (c)

११) यह ब्रह्मा शुरू में बनारस जाते थे।
44 (b)

१२) अल्फ और बे -----।
36 (g)

१३) अभी जो शिवरात्री का पर्व आ रहा है, उसको धुमधाम से बनाओ।
5 (b)

१४) फरूखाबाद के तरफ मालिक को बहुत मानते हैं।
29 (i)

१५) पहले स्थापना फिर विनाश फिर पालना ----- ।
48 (i)

१६) ब्रह्मा बाबा १८ जनवरी १९६९ में हार्ट फेल होकर शरीर छोडे थे।
प्रूफ : 67 (a), 67 (b)

१७) १९३६ में दादा लेखराज का उम्र ५० साल के थे।
प्रूफ : 68 (a), ~~68 (b)~~

१८) मिस्टर सेवाकरम और दादा लेखराज के बारे में -------।
प्रूफ : 68 (b), (c), (d)

१९) बी के वेदान्ती बहन का परिचय .....।
प्रुफ : 69

b) सृष्टीचक्र

१) संगमयुग में ही (आत्मा का) ५००० साल का शूटिंग चलता है।
14 (a), 8 (a), 35 (f)

२) ऐसा बाबा कल्प, कल्प, कल्प के संगमयुगे एक ही बार आते है।
57 (j), 66(c)

३) ब्रह्मा की आयू सौ साल -------।
2 (e)

४) मैं फिर से आया हूआ हूँ।
56 (e), 41 (a), 49 (d), 57 (l), 35 (d)

५) महाभारी लड़ाई ब्राह्मण कुल से ही शुरू होगा।
35 (g), 35 (e), 35 (i)

६) राधे-कृष्ण कोई आपस में भाई बहन नहीं थे।
39 (d), 25(c)

७) ५०-६० वर्ष में बाप आकर तुमको पढ़ाते है।
25 (e)

c) लक्ष्मी - नारायण

१) ल. ना. चित्र के प्रति क्लियर इशारा।
40 (m)

२) यह ल. ना. कितने समझदार है। इनको ऐसे कौन बनाया ?
35 (c), 66(f)

३) यह एक जन्म अभी तुम्हारा सबसे अच्छा जन्म है (नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी)। देवता धर्म सर्वोत्तम धर्म नहीं कहेंगे।
49 (c), 15(b), 44(c)

४) भगवान क्या बनाते है भगवान और भगवती । परन्तु हम देवी देवता कहते है।
66(a), 57(i)

d) सीढ़ी

१) भारतवासियों के लिए मुख्य हैं सीढ़ी का चित्र। यह है सबसे अच्छी चीज़।
61 (g), 51 (c), (50 (c)

e) कल्प-वृक्ष

१) सब धर्म वाले (बीजरूप और आधार मूर्त-कनवर्ट होनेवाले) ब्राह्मण कुल में मशहूर है।
59 (b), 59 (h), 46 (d), 36 (b), 38 (h)

२) रावण ब्राह्मण कुल में ही मशहूर है।
44 (d), 48 (f), 64 (c), 35 (i), 32 (a), 36 (c), 29 (k), 56 (d)

३) वास्तव में आदि देवी-देवता सनातन धर्म और हिन्दु धर्म किसने स्थापन किया ?
36 (a), 55 (e)

४) बाकी आज से सभी के लिए कौन निमित्त है- दादी तो है, साथ में कुमारका मददगार है।
2 (f)

५) पाण्डव और कौरव एक ही घर के थे।
35 (e)

६) बाबा (प्रजापिता) साकार मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है।
50 (d), 53 (f), 10 (b), 35 (b), 30 (d), 38 (g)

ओरीजनल और कटिंग वाणी
अ वा : 12(a) और 12 (c)

॥ ओम् शान्ति ॥ परमपिता परमात्मा शिवबाबा याद है।

आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्व विद्यालय

(A. I. V. V)

गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए भी,



कमल पुष्प समान पवित्र बनो ...।

5/26 A, सिकत्तरबाग,
जिला : फर्रूखाबाद - 209 625 (यू.पी)
फोन नं. : (05692) 228930

विषय – मुरली सेट, खंड-२

१९-८-६८ तारीख से

१९-१-२००२ तारीख तक

आध्यात्मिक सच्ची गीता पाठशाला,

पता _____

_____

मूल्य : रू. 75/- (रूपया पचहत्तर मात्र)

"अभी नहीं तो, कभी नहीं"

मीठे रूप से सुनते हो उसी मीठे रूप से धारण भी करना है। मीठापन चिपकता बहुत जल्दी है। जो ऐसे मीठा बनेंगे तो बाप से चिपक जायेंगे। याद और मीठापन नहीं होगा तो अलग-अलग रहेंगे। जैसे नमकीन चीज़ आपस में कभी नहीं मिलती है। तो जो ऐसे होंगे उनकी अवस्था योगयुक्त नहीं रहेगी। अब जैसे बच्चों ने सुना वैसे ही धारण करेंगे तो बहुत बल मिलेगा।"

१३. अन्तिम विनाश की सीन देखने के लिए अडोल स्थिति बनाओ

आज जब मैं वतन में गई तो बाप और दादा – दोनों सामने खड़े थे। जाते ही नयनों की मुलाकात से सभी को जो याद-प्यार ले गई थी वह दी। जैसे ही मैं याद दे रही थी तो साकार बाबा ने मेरा हाथ पकड़ा। उस हाथ पकड़ने में ना मालूम क्या जादू था – ऐसे अनुभव हुआ जैसे सागर में कोई स्नान करता है, ऐसे थोड़े समय के लिए मैं प्रेम के सागर में लीन हो गई। उसके बाद हमने आलमाइटी बाबा की तरफ देखा। तो बाबा ने कहा – "बच्ची, बाप में जो मुख्य दो गुण हैं वह बच्चों ने साकार रूप में अनुभव किए हैं। वह दो गुण कौनसे हैं? जितना ही ज्ञान-स्वरूप उतना ही प्रेम-स्वरूप। तो बच्चों को भी यह दो गुण अपनी हर चलन में धारण करने हैं।" फिर मैंने बाबा से पूछा कि – पिछली बार आपने वतन में जो एडवांस पार्टी में गये हुए बच्चों का इतना बड़ा संगठन दिखाया था, इसका रहस्य क्या था? बाबा ने कहा – "पूरा राज़ तो बाद में चलकर सुनायेंगे; लेकिन साकार रूप से जो बच्चे कोई सर्विस अर्थ या कुछ हिसाब-किताब चुक्तू करने अर्थ चले गये हैं, उन बच्चों से मुलाकात करने के लिए बुलाया था। बाबा उनसे हालचाल पूछ रहे थे कि कौन-कौन, किस रीति से, किस रूप से क्या-क्या कर रहे हैं। हमने कहा – बाबा, यह किस रूप से स्थापना के कार्य में बिज़ी हैं? तो बाबा बोले – बच्ची, यह आगे चलकर स्पष्ट करेंगे; फिर भी शार्ट में सुनाते हैं। बाबा ने कहा – "बच्ची, जब लड़ाई होती है तो किसी भी लश्कर को जब जीतना होता है तो सिर्फ एक तरफ से नहीं, चारों तरफ से लश्कर भेजकर पूरा घेराव डाल देते हैं। इस संगठन से यह मालूम हुआ कि जो भी बच्चे गये हैं वे चारों ओर फैल गये हैं। अभी चारों तरफ स्थापना की नींव पड़ गई है। बाकी अब आर्डर

(a) (a)

'अटल और अखण्ड' – यह सौगात बुद्धि रूपी तिजोरी में सम्भालकर रखना

आज जब वतन में गई तो सभी वच्चों की ओर से वावा को याद-प्यार दी और अर्जी डाली। ब्रह्मा वावा को भी अर्जी डाली। तो ब्रह्मा वावा यही वोले कि मेरा हाथ तो शिव वावा के पास है, जो करायेंगे हम वही करेंगे। हमने शिव वावा से वोला – वावा, इतने सभी आपके वच्चे आए हुए हैं, आप सभी की आशायें पूर्ण करने वाले हो। वावा, एक आश हमारी पूर्ण कर दो। तो वावा ने फौरन एक डाल दिखाई जिसके वीच में लिखा हुआ था – 'भावी टाले नाहिं टले'। तो हमने वावा को कहा – अगर यही भावी है तो सभी वच्चे जो इक्ट्ठे हुए हैं वे शिव वावा और ब्रह्मा वावा – दोनों से मिलना चाहते हैं। वापदादा ने कहा – जैसे हमेशा वापदादा वच्चों से मिलते हैं वैसे आज भी वच्चों से मिलेंगे। फिर शिव वावा ने ब्रह्मा वावा से कहा कि आपकी क्या राय है। (b) शिव वावा ने कहा कि जव वच्चा वड़ा हो जाता है तो वाप और वच्चा समान होता है। तो मैं भी मुरव्वी वच्चे की राय विना कुछ नहीं कर सकता हूँ। पहले वाप फिर वच्चा, अभी है पहले वच्चा फिर वाप (b) तो यही वतन में देखा – दोनों ही एक समान और एक दो के वहुत स्नेह और प्रेम में थे। जैसे दो मित्र मिलते हैं, ऐसे ही वाप-दादा दोनों की आपस में रूहरूहान की सीन दिखाई दे रही थी। ब्रह्मा वावा कहे 'जो आज्ञा' और शिव वावा कहे 'जो वच्चे की राय'। दोनों ही मुस्करा रहे थे। हमने कहा एक सेकेण्ड के लिए वच्चों से मुलाकात करके आइये। उस समय दोनों की तरफ देखा तो आंखों से ऐसा लगा कि जो शिव वावा ने कहा वह ब्रह्मा वावा को मंजूर था।

तत्पश्चात् वापदादा
गुलजार सन्देशी के तन में पधारे और वोले –

("आपको आकारी वनाने वापदादा अभी भी कायम है और कायम रहेगा।)
अभी वापदादा आप रूहानी रत्नों से मिल विदाई लेते हैं फिर मिलेंगे। जो

होता है उसमें कल्याण है। बापदादा और कल्याण। और कोई शब्द नहीं।"
वस, बापदादा ने यही दो मधुर बोल बोले और वापस अव्यक्त वतन में जाकर सन्देशी से कहा – "प्यार और याद – जैसे इस समय हर एक के अन्दर बाबा देखकर आये हैं, ऐसे ही याद और प्यार हमेशा कायम रखेंगे। यह याद और प्यार जैसे कि एक रस्सी है। इस रस्सी को कायम रखना है। इस रस्सी के जरिये बीच में मिलते रहेंगे"। बाबा ने कहा -- "स्थापना का कार्य जो और जैसे आदि से चला है अन्त तक ऐसे ही चलेगा, अन्तर नहीं। जिन बच्चों को बाबा निमित्त रखते हैं उन्हों द्वारा बापदादा सभी बच्चों को डायरेक्शन देते रहेंगे और बच्चे अनुभव करते रहेंगे कि कैसे बापदादा की इक्टठी डायरेक्शन होगी। संगमयुग पर बाप-दादा दोनों को अलग नहीं होना है।"
बाबा ने कहा "सभी को दो शब्द कहना। 'अटल और अखण्ड'। यह बापदादा दोनों की सौगात है। जैसे कोई बड़े लोग कहाँ जाते हैं तो सौगात देते हैं। ऐसे बापदादा दोनों ही दो शब्दों की सौगात देते हैं अटल और अखण्ड। इसे बुद्धि रूपी तिजोरी में ऐसा रखें जो कितना भी कोई चुराने की कोशिश करे, तो भी सौगात साथ रहे।" फिर बाबा ने कहा, "अब थोड़े समय के लिए विदाई लेता हूँ। फिर जैसे-जैसे कार्य होगा डायरेक्शन देता रहूँगा।"

२१.१.६१

शरीर छूटा परन्तु हाथ और साथ नहीं

सभी अव्यक्त मूर्त हो बैठे हो ? व्यक्त रूप में रहते अव्यक्त स्थिति में रहना है। जब अव्यक्त स्थिति में स्थित हो जायेंगे, तो उस अव्यक्त स्थिति में कोई उलझन नहीं रहेगी। वर्तमान समय चल रहे सभी पार्ट आप बच्चों को अति शीघ्र अव्यक्त बनाने के साधन हैं। डगमग होने की ज़रूरत नहीं। शुरू में यज्ञ की स्थापना भी अनायास ही हुई थी। जब आप शुरू में यज्ञ की स्थापना में आये थे तो आप सभी से निश्चय के पत्र लिखाये थे। यही निश्चय लिखाते थे कि – अगर बाबा चला जाए, तब भी हमारी अवस्था, हमारा निश्चय अटल

रहेगा। वह निश्चय-पत्र याद है? निश्चय उसको कहा जाता है जिसमें किसी भी प्रकार का, किसी भी स्थिति अनुसार, विघ्न के समय संशय नहीं आता। (a) परिस्थितियां तो बदलनी ही हैं, बदलती ही रहेंगी। लेकिन आप जैसे गीत गाते हो ना – वदल जाए दुनिया न बदलेंगे हम_ ।) तो ऐसे ही आप सभी निश्चयबुद्धि आज के संगठन में बैठे हुए हो। आपकी मम्मा आप सबको कहा करती थी कि निश्चय के जो भी आधार अब तक खड़े हैं वह सब आधार निकलने ही हैं और निकलते हुए भी उसकी नींव मजबूत है। अगर नींव मजबूत नहीं तो आधार की आवश्यकता है। आधार कौनसा? वाबा का आधार, संगठन का आधार, परिवार के नियमों का आधार नहीं छोड़ना। परन्तु परीक्षा के समय जो सीन सामने आती है उसमें निश्चय तो नहीं टूटा। निश्चय अटूट होता है, वह तोड़ने से टूटता नहीं। ऐसे निश्चयबुद्धि ही गले के हार हैं।

क्या ब्रह्मा आपका बहुत प्यारा है? (था नहीं; परन्तु है) तो क्या वह नहीं कहा करते थे! बातें तो सभी वोली हुई हैं, समय पर याद आना ही तीव्र पुरुषार्थ है। याद करो। वह भी आप बच्चों को मजबूत बनाने के लिए कहते थे – "बापदादा ने वच्चों का इतना श्रृंगार किया है, तो बच्चे इतना श्रृंगार धारी नहीं बने हैं। एक दिन ऐसा समय आयेगा जो इस वापदादा के श्रृंगार को याद करेंगे।" तो अभी वह समय है। (पहले तो वह अपने को निरहंकारी, नम्रचित कहते हुए कई बच्चों को यह सुनाते थे कि – "मैं भी अभी सम्पूर्ण नहीं बना हूँ। मैं भी अभी निरन्तर देही-अभिमानी नहीं बना हूँ।" लेकिन आपने अपने (b) अनुभव के आधार से तीन-चार मास के अन्दर ध्यान दिया होगा, सम्मुख मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ होगा तो अनुभव किया होगा कि यह ब्रह्मा अव साकारी नहीं लेकिन अव्यक्त आकारी रूपधारी है।) कुछ वर्ष पहले ब्रह्मा छोटी-छोटी बातें सुनते थे, समय देते थे। लेकिन अव क्या देखा? इन छोटी-छोटी बातों को न सुनने का कारण यही था कि यह समय निरन्तर याद में वीते। क्या आप वच्चों ने उनके तन द्वारा कभी नोट नहीं किया कि उनके मस्तक में सितारा चमकता हुआ नज़र आता था? अव्यक्त स्थिति में जो होंगे उन्होंने अव्यक्त मूर्त को जाना, पहचाना। जो खुद अव्यक्त अवस्था में

नहीं रहते थे उन्होंने अमूल्य रत्न को पूरी रीति नहीं पहचाना।

अभी भी स्थापना का कार्य ब्रह्मा का है, न कि हमारा। अभी भी आप बच्चों की पालना ब्रह्मा द्वारा ही होगी। स्थापना के अन्त तक ब्रह्मा का ही पार्ट है। अभी आप सभी बच्चे सोचते होंगे कि – ब्रह्मा द्वारा पढ़ाई कैसे होगी? यूँ तो वास्तव में अवस्था के प्रमाण 'कैसे', 'क्यों' के क्वेश्चन उठने नहीं चाहिएं। लेकिन कई बच्चों के अन्दर प्रश्न तो क्या लेकिन काफी हलचल का सागर शुरू हो गया है। यह पहला पेपर बहुत थोड़ों ने पास किया। कुछ तो धैर्य रखो। जब अविनाशी ज्ञान है, अविनाशी पढ़ाई – है तो फिर यह प्रश्नों की हलचल क्यों? फिर भी उसी हलचल को शान्त करने के लिए समझा रहे हैं। ड्रामा जैसे चलती है वैसे ही चलेगी। क्या सुनायेंगे? जो ब्रह्मा का तन मुकरर है, तो मुरली उसी के तन द्वारा जो चली है, वही मुरली है। और सन्देसियों द्वारा थोड़े समय के लिए जो सर्विस करते हैं, उनको मुरली नहीं कहा जाता है। उस मुरली में जादू नहीं है। बापदादा की मुरली में ही जादू है। इसलिए जो भी मुरलियां चल चुकी हैं, वह सभी रिवाइज करनी हैं। जैसे पहले पोस्ट जाती थी वैसे ही मुख्य सेवाकेन्द्र पर आबू से जाती रहेंगी। क्या आपको एक वर्ष पहले जो मुरली चली थी वह याद है? कल जो पढ़ी होगी वह भी याद नहीं होगी। कई प्वाइंट्स ऐसी हैं जो कई बार पढ़ने से भी बुद्धि में नहीं ठहरतीं। इसलिए मुरली और पत्र का जैसे कनेक्शन होता है वैसे ही होगा। जैसे आप मधुवन में रिफ्रेश होने आते हो वैसे ही आयेंगे। क्या करें, किससे मिलने आवें? – अब फिर यह प्रश्न उठता है। किससे रिफ्रेश होंगे? जो लक्की सितारे हैं अर्थात् जो निमित्त मुख्य हैं उनके साथ पूरा सम्बन्ध जोड़कर जो भी आपके सेवाकेन्द्र की रिजल्ट है, समस्यायें हैं, जो भी सेवाकेन्द्रों की उन्नति है, जो भी नये-नये फूल उस फुलवाड़ी से खिलते हैं – उनको भी संगठन का साक्षात्कार कराने मधुवन में ले आना है। साथ-साथ ऐसे संगठन के बीच बापदादा निमित्त बनी हुई सन्देशी द्वारा पूरी सेवा करेंगे।

अभी कोई और प्रश्न रहा? आप सोचते होंगे कि लोग पूछेंगे कि आपका ब्रह्मा बाबा १०० वर्ष से पहले ही चला गया। यह तो बहुत सहज प्रश्न है, कोई मुश्किल नहीं। १०० के नजदीक ही तो आयु थी। यह जो १०० वर्ष

कहे हुए हैं — यह गलत नहीं है। अगर कुछ रहा हुआ है तो आकार द्वारा पूरा करेंगे। १०० वर्ष ब्रह्मा की स्थापना का पार्ट है, वह तो १०० वर्ष पूरा होना ही है। लेकिन बीच में ब्रह्मा के बाद ब्राह्मणों का जो पार्ट है वह अब चलना है। ब्रह्मा ने ब्राह्मण किसलिए रचे? क्या ब्रह्मा अपनी रचना को देखेंगे नहीं? क्या आपको अब संगम पर जिम्मेवारी का ताज नहीं देंगे? तो सतयुग में देवता कैसे बनेंगे। यहाँ की जिम्मेवारी ही वहाँ की नींव डालती है। इसलिए जो भी आप बच्चों से प्रश्न करते हैं उन्हें यही उत्तर दो कि ब्रह्मा की स्थापना तो चलनी ही है।

अभी बच्चों की पढ़ाई का समय बिल्कुल ही नजदीक है। यह तो हरेक मुरली में अम्मा के बाद इशारा दिया है। क्या पेपर में तिथि-तारीख बताई जाती है? जो पहले से ही बताया जाए उसको क्या पेपर कहेंगे? पेपर वह होता है जो अचानक होता है। किसके मन में जो होता है वह अचानक नहीं कहलाता। रिजल्ट में क्या देखा? पूरे पास नहीं हुए, कुछ न कुछ कमी एक-एक में देखी। फिर भी बहुत अच्छा, क्योंकि समय पुरुषार्थ का है। उस प्रमाण रिजल्ट अच्छी ही कहेंगे। बाकी तो बाप और दादा — दोनों ही एक बात पर खुश थे। वह कौनसी? बच्चों ने संगठन और स्नेह —दोनों का सबूत दिया। ब्रह्मा वतन से देख रहे थे कि कैसे-कैसे कोई आता है, कब-कब आता है, किस रूहाब से आता है, किस स्थिति से मिलते हैं! यह रिजल्ट भी बाप, दादा — दोनों ही इकट्ठे देखते रहे। तो हरेक खुद को देखे और खुद में जो कमी हो उसको भरे।

बाकी आज से सभी के लिए कौन निमित्त है, वह तो आप जानते ही हैं — दीदी तो है, साथ में कुमारका मददगार है। जैसे और सभी लिखा-पढ़ी चलती थी वैसे ही हेड-क्वार्टर से चलती रहेगी। यह दोनों आप सभी की देखरेख करती रहेंगी। अगर आवश्यकता हुई तो आप सभी के सेवाकेन्द्रों पर चक्कर लगाती रहेंगी। लेकिन अब का पेपर क्या है? यह तो अचानक पेपर निकला, परन्तु जो आने वाला पेपर है वह बताते हैं। अब एकमत, अन्तर्मुख और अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर सम्बन्ध में आओ। बापदादा जो पेपर बता रहे हैं उसकी रिजल्ट देखेंगे। पिछाड़ी के समय ब्रह्मा तन द्वारा जो शिक्षा दी है वह तो सभी ने सुनी ही होगी और याद भी होगी।

आज के दिन इस संगठन के बीच कुछ देने भी आये हो, तो कुछ लेने भी आये हो। तो जो लेंगे वह देने के लिए तैयार हैं? जिसके दिल में कुछ संकल्प आया हो कि मालूम क्या हो, ऐसी तो कोई बात नहीं होगी — वह हाथ उठायें? अगर सभी सन्तुष्ट हैं तो जो लेंगे उसको देने में भी सन्तुष्ट रहेंगे। दो बातों का आज इस संगठन के बीच दान देना है। कौनसी दो बातें? एक मुख्य बात कि आज से आपस में एक-दो का अवगुण न देखना, न सुनना, न मित्र पर रखना। अगर कोई बहन या भाई की कोई भी बात देखने में आये, तो निमित्त बने हुए जो हैं उनके द्वारा उनको इशारा दिला सकते हो।

दूसरी बात — कई लोग आपके निश्चय को डगमग करने के लिए बातें बोलेंगे, आवाज फैलायेंगे कि अब देखें यह संस्था कैसे चलती है। लेकिन उन लोगों को यह मालूम नहीं कि इनका आधार अविनाशी है। दूसरा — यह भी ध्यान में रखना कि कोई भी हिलाने की कोशिश करे, तो जैसे आप बच्चों का कल्प पहले का गायन है, अंगद के समान पांव को नहीं हिलाना है। ऐसे निश्चयबुद्धि अडोल, एकरस ही, जो आने वाले लास्ट पेपर हैं, उनमें पास होंगे। और ही ब्रह्मा द्वारा जो इतने ब्राह्मण रचे हैं, तो क्या बाप के जब इतने बच्चे हो जाते हैं तो बाप रिटायर नहीं होता? अब ऐसे समझो कि बाप रिटायर अवस्था में भी आपके साथ है। आप बच्चों को कार्य देकर देखते रहेंगे। शरीर छूटा परन्तु हाथ-साथ नहीं छूटा। बुद्धि का साथ-हाथ नहीं छूटा वह तो अविनाशी कायम रहेगा। यह दो बातें जो सुनाई (१) डगमग न होने का दान देना है, (२) अवगुण न देखने का दान देना है। अब सभी बच्चे यह दान दें जबकि संकल्प कर चुके अर्थात् दे चुके। संकल्प की हुई चीज कभी वापस नहीं ली जाती। अगर माया वापस लेने की कोशिश कराये भी, तो यदि अपने ऊपर जांच होगी तो पास हो जावेंगे।

अभी एक और बात आप सबके ध्यान पर दे रहे हैं। बापदादा की लास्ट मुरली में जो शिक्षा मिली है कि यह ध्यान-दीदार ज्यादा चलाना समय व्यर्थ गंवाना है। इसलिए यह नहीं होना चाहिए। ऐसे न हो — सन्देशियों द्वारा सेन्टर पर जो पार्ट चले, उसे आप चेक न कर पाओ। इसलिए यह निमित्त बनी हुई दीदी,

और कुमारका जिस सन्देशी को मुक़र्रर करेगी उन्हों के द्वारा डायरेक्शन मिलेंगे। इस पार्ट के लिए भी यह जिसको निमित्त बनायेंगी उस द्वारा ही रहस्य स्पष्ट होंगे। जैसे पिछाड़ी की मुरली में यह भी डायरेक्श्न था कि भोग के समय वैकुण्ठ आदि में जाना व्यर्थ समय गंवाना है। क्योंकि यह घूमना-फिरना अब शोभता नहीं। अब तो निरन्तर याद की यात्रा और जो शिक्षा मिली है उसे प्रैक्टिकल लाइफ में धारण करने का सबूत देना है।

अगर ब्रह्मा बाबा के साथ स्नेह है तो स्नेह की निशानी क्या है? स्नेह यह नहीं कि दो आंसू बहा दिये। परन्तु स्नेह उसको कहा जाता है – जिस चीज़ से उसका (ब्रह्मा बाबा का) स्नेह था उससे आपका हो। उसका स्नेह था सर्विस से! पिछाड़ी में भी सर्विस का सबूत दिया ना। तो स्नेह कहा जाता है – सर्विस से प्यार, उसकी आज्ञाओं से प्यार। बाकी कोई भी ऐसा न समझे कि ना मालूम बिना हम बच्चों की छुट्टी के साकार बाबा को वतन में क्यों बुलाया। लेकिन छुट्टी दिलाते तो आप देते? इसीलिए ड्रामा में पहले भी देखा कि जो भी गये छुट्टी लेकर नहीं गये। इसलिए यह समझो कि ब्राह्मण कुल की ड्रामा में यह रस्म है। जो ड्रामा में नूंधी हुई है वह रस्म चली। यूँ तो समझते हैं कि आप सभी का बहुत प्यार साकार के साथ था। था नहीं, है भी। प्यार नहीं होता तो इस सभा में कैसे होते। साकार में फॉलो करने के लिए इनका ही तन था, तो प्यार क्यों नहीं होगा। स्नेह था और है भी। यह बाप-बच्चों की निशानी है। इससे साकार भी वतन में मुस्करा रहे हैं। बच्चों का स्नेह है तो क्यों मेरा नहीं। लेकिन वह जानते हैं कि ड्रामा में जो भी पार्ट होता है वह कल्याणकारी है। वह विचलित नहीं होते। वह तो सम्पूर्ण अचल, अडोल, स्थिर था और है भी। लेकिन आप बच्चों से हजार गुणा स्नेह उनमें जास्ती है। अब स्नेह का सबूत देना है। यह भी एक छिपने का खेल है। तो विचार सागर मंथन करो, हलचल का मंथन न करो। जो शक्ति ली है उनको प्रत्यक्ष में लाओ। "भारत माता शक्ति अवतार" – अन्त का यही नारा है। 'सन शोज़ फादर'। ड्रामा की नूंध करायेगी। साकार बाबा ने कहा मैं बच्चों से मिलन मनाने आऊंगा। अगर आज आ जाता तो बच्चे आंसू बहा देते। अच्छा –

रखा वहाँ की लहर शान्त होती गई। फिर देखा कि बापदादा दोनों ने छोटी-छोटी नावें उस सागर के बीच में डाली। लेकिन कोई नाव तो सागर की लहर आने से गायब हो गई। कोई तो लहर से इधर-उधर होती रही और कोई तो जैसी थी वैसे ही रही। हम यह देखने में ही बिजी हो गई। फिर वह सीन खत्म हो गई।

बापदादा ने कहा कि यह खेल बाप ने प्रैक्टिकल में रचा है। जिन बच्चों की जीवन रूपी नैया बाप के साथ में होगी वह हिलेगी नहीं। अभी तुम परीक्षाओं रूपी सागर के बीच में चल रहे हो। तो जिनका कनेक्शन अर्थात् जिनका हाथ बापदादा के हाथ में होगा उनकी यह जीवन रूपी नैया न हिलेगी, न डूबेगी। तुम बच्चे इसको ड्रामा का खेल समझकर चलेंगे तो डगमग नहीं होंगे। और जिनका बुद्धि रूपी हाथ-साथ ढीला होगा वह डोलते रहेंगे। इसलिए बच्चों को बुद्धि रूपी हाथ मजबूत रखने का खास ध्यान रखना है।

२३.१.६९

अस्थियां हैं स्थिति की स्मृति दिलाने वाली

आज मैं आप सभी बच्चों से अव्यक्त रूप में मिलने आया हूँ। जो मेरे बच्चे अव्यक्त रूप में स्थित होंगे वही इसको समझ सकेंगे। आप सभी बच्चे अव्यक्त रूप में स्थित हो किसको देख रहे हो? व्यक्त रूप में या अव्यक्त रूप में? आप व्यक्त हो या अव्यक्त? अगर व्यक्त में देखेंगे तो बाप को नहीं देख सकेंगे। आज अव्यक्त वतन से मुलाकात करने आया हूँ। अव्यक्त वतन में आवाज नहीं परन्तु यहाँ आवाज में आया हूँ। आप सभी बच्चों के अन्दर में कौनसा संकल्प चल रहा है? अभी यह अव्यक्त मुलाकात है। जैसे कल्प पहले मिसल बच्चों से रूहरूहान चल रही है। रूह-रूहान करने मीठे-मीठे बाबा ने आप सभी बच्चों से मिलने भेजा है। जो थे वही अब भी हैं। दो तीन दिन पहले मीठे-मीठे बाबा से रूह-रूहान चल रही थी। रूह-रूहान क्या है, मालूम है? बाबा ने बोला – वतन का अनुभव करने के लिए तैयार

हो ? क्या जवाब दिया होगा ? यही कहा कि जो बाप की आज्ञा – जैसे चलायेंगे, जहाँ बिठायेंगे जिस रूप में बिठायेंगे।

बच्चों के अन्दर यही संकल्प होगा कि बापदादा ने छुट्टी क्यों नहीं ली ? बाबा को भी यह कहा। बाबा ने कहा – अगर सभी बच्चों को बिठाकर छुट्टी दिलाऊं तो छुट्टी देंगे ? आप भी बच्चों को देख, सर्विस को देख बच्चों के स्नेह में आ जायेंगे। इसलिए जो बाप ने कराया वही ड्रामा की भावी कहेंगे। व्यक्त रूप में नहीं, तो अव्यक्त रूप से मुलाकात कर ही रहे हैं। सर्विस की वृद्धि वैसे ही है, बच्चों की याद वैसे ही है। लेकिन अन्तर यह है कि वह व्यक्त में अव्यक्त था और यह अव्यक्त ही है। जो नयनों की मुलाकात जानते होंगे वह नयनों से इस थोड़ीसी मुलाकात में अपने प्रति शिक्षा, डायरेक्शन ले लेंगे। आप सभी को वतन में तो आना ही है। बच्चों से मुलाकात करने के लिए हर वक्त, हर समय तैयार ही रहते हैं। अब जहाँ तक बच्चों की जितनी बुद्धि क्लीयर होगी, उसी अनुसार ही अव्यक्त मिलन का अनुभव कर सकेंगे। शक्ति-स्वरूप में स्थित हैं ? (दीदी से) जैसे साथ थे वैसे ही हैं, अलग नहीं। अभी शक्ति-स्वरूप का पार्ट प्रत्यक्ष में दिखाना है। जो बाप की शिक्षा मिली है, वह प्रैक्टिकल में करके दिखाना है। शक्ति सेना बहुत है, अभी पूरा शक्ति स्वरूप बन जाना। अभी तक बच्चे और बाप के स्नेह में चलते रहे। अब फिर बाप से जो शक्ति मिली है उस शक्ति से औरों को ऐसा शक्तिवान् बनाना है। वही बाप के स्नेही बाप के साथ अन्त तक रहेंगे।

अभी मीठे-मीठे बाबा दृश्य दिखला रहे हैं – आप सभी बच्चों का, आप अस्थियां उठा रहे थे। अस्थियों को नहीं देखना, स्थिति को देखना। यह अस्थियां स्थिति-स्वरूप हैं। एक-एक रग में स्थिति थी। तो बाहर से वह अस्थियों को रखा है, परन्तु इसका अर्थ भक्ति मार्ग का नहीं उठाना। इन अस्थियों में जो स्थिति भरी हुई है – हमेशा उसको देखना है। साधारण मनुष्यों को यह बातें इतना समझ में नहीं आयेंगी। बच्चों का स्नेह है और सदा रहेगा, २१ जन्म तक रहेगा। आप सभी सतयुगी दुनिया में साथ नहीं चलेंगे ? राज्य साथ नहीं पायेंगे ? साथ ही हैं, साथ ही रहेंगे – जन्म जन्मान्तर तक। कभी भी ऐसा नहीं समझना – बाप है, दादा नहीं या दादा है तो बाप

नहीं। हम दोनों एक-दो से एक पल भी अलग नहीं हो सकते। ऐसे ही आप अपने को त्रिमूर्त्ति ही समझो। इसीलिए कहते हैं त्रिमूर्त्ति का बैज हमेशा साथ रखो। जब ब्रह्मा, विष्णु और शंकर – तीन को देखते हो तो आपके भी त्रिमूर्त्ति की याद अर्थात् अपना स्वरूप और बापदादा की याद, त्रिमूर्त्ति की स्थिति मशहूर है। इसमें ही आप सभी बच्चों का कल्याण है। कल्याणकारी बाप जो कहते हैं, जो कराते हैं – उसमें ही कल्याण है। इस एक-एक महावाक्य में, एक-एक नज़र में बहुत कल्याण है। लेकिन स्थूल को परखने वाले कोई कोई अनन्य और महारथी बच्चे हैं। अब आप भी इतना ही शीघ्र कर्मातीत स्थिति में स्थित रहने का पुरुषार्थ करो। जैसे यहाँ हर समय बापदादा के साथ व्यतीत करते थे, वैसे ही हर कर्म में, हर समय अपने को साथ ही रखा करो। बच्चे, यही शिक्षा याद रखना, कभी नहीं भूलना। सम्बन्ध, स्नेह, स्मृति-स्वरूप, साथ-साथ सरलता-स्वरूप, समर्पण और एक-दो के सहयोगी बन सफलता को पाते रहना। सफलता आप सभी बच्चों के मस्तक के बीच चमक रही है। अब बहुत समय हुआ है, और कुछ कहना है? सूक्ष्मवतन में बैठे भी हर बच्चे की दिनचर्या, हर बच्चे का चार्ट सामने रहता है। व्यक्त रूप से अभी तो और ही स्पष्ट रूप से व्यक्त रूप की तुलना में देखते हैं। इसलिए सभी की रिजल्ट देखते रहते हैं।

जितना अव्यक्त स्थिति में स्थित होंगे उतना उस अव्यक्त स्थिति से कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म ऐसा होगा जैसे श्रीमत राय दे रही है – यह अनुभव बच्चे पायेंगे। अब अपनी अव्यक्त स्थिति के आधार से ऐसा काम करना, जैसे श्रीमत के आधार से हर काम होता रहा है। जिस चीज के साथ बाप का स्नेह है उससे उतना स्नेह रखना ही अपने को सौभाग्यशाली बनाना है। रग-रग में किसके साथ स्नेह था? ५ तत्वों से नहीं, स्नेह गुणों से ही होता है। स्नेह था – नहीं, है और रहेगा। जब तक भविष्य नई दुनिया न बनी है तब तक यह अटूट स्नेह रहेगा। स्नेह आत्मा के साथ और कर्त्तव्य के साथ ही है। तो फिर शरीर क्या! अन्त तक साथी रहेंगे। जिसका बाप के साथ स्नेह है वही अन्त तक स्थापना के कार्य में मददगार रहेंगे। इसलिए स्नेही होने की कोशिश करो। कैसी भी माया आवे – मायाजीत बनना। जैसे बैज लगाते हो वैसे मस्तक पर यह

विजय का बैज लगाओ। मधुबन का नक्शा सारे वर्ल्ड के सामने म्युज़ियम के रूप में होना चाहिए। अविनाशी भण्डारा है – इसका और भी ज्यादा शो करना है। जैसे सभी बच्चे पत्र लिखते थे वैसे ही लिखते रहना। जैसे डायरेक्शन लेते थे वैसे ही लेना। शरीर की बात दूसरी है, सर्विस वही है। इसलिए जो भी बात हो मधुबन में लिखते रहना। अपना पूरा कनेक्शन रखना। दूसरों को भी अपनी अवस्था का सबूत देना। आपको देख और भी ऐसे करेंगे।

(विदाई के समय)

बाबा बोले यह तो आप बच्चे जानते हो कि जो भी ड्रामा का पार्ट है इसमें कोई गुप्त रहस्य भरा हुआ है। क्या रहस्य भरा हुआ है वह समय प्रति समय सुनाते जायेंगे। अब तो आपका वही यादगार जो आकाश में है, दुनिया वाले इन आंखों से देखेंगे कि यह धरती के सितारे किसकी श्रीमत से चल रहे हैं। बाबा ने कहा है – ज्यादा समय वहाँ नहीं बैठना।

२५.१.६९

समर्पण की ऊंची स्टेज – श्वांसों-श्वांस स्मृति

अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर अव्यक्त को व्यक्त में देखो। आज एक प्रश्न पूछ रहे हैं। सर्व समर्पण बने हो? (सर्व समर्पण हैं ही) यह सभी का विचार है या और कोई का कोई और विचार है? सर्व समर्पण किसको कहा जाता है? सर्व में यह देह का भान भी आता है। देह ले लेंगे तो देनी भी पड़ेगी। लेकिन देह का भान तोड़कर समर्पण बनना है। आप क्या समझते हो, देह के अभिमान से भी सम्पूर्ण समर्पण बने हो? मर गयें हो वा मरते रहते हो देह के सम्बन्ध और मन के संकल्पों से भी? तुम देही हो? यह देह का अभिमान बिल्कुल ही टूट जाए, तब कहा जाए सर्व समर्पणमय जीवन। जो सर्व त्यागी, सर्व समर्पण जीवन वाला होगा उनकी ही सम्पूर्ण अवस्था गाई जायेगी और जब सम्पूर्ण बन जायेंगे तो साथ जायेंगे। आपने शुरू में संकल्प

(4) (४)

२.२.६९

अव्यक्त मिलन के अनुभव की विधि

प्रेम-स्वरूप बच्चे, ज्ञान सहित प्रेम जो होता है वही यथार्थ प्रेम होता है। आप सभी का प्रेम-रस बापदादा को भी खींच लाता है। सभी बच्चों के दिल के अन्दर एक आशा दिखाई दे रही है। वह कौनसी ? कई बच्चों ने सन्देश भेजा कि आप हमें भी अपने अव्यक्त वतन का अनुभव कराओ। यह सभी बच्चों की आशायें अब पूर्ण होने का समय पहुंच ही गया है। आप कहेंगे कि – सभी सन्देशी बन जायेंगे ? लेकिन नहीं। अव्यक्त वतन का अनुभव भी बच्चे करेंगे। लेकिन दिव्यबुद्धि के आधार पर जो अब अलौकिक अनुभव कर सकते हो वह दिव्य दृष्टि द्वारा करने से भी बहुत लाभदायक, अलौकिक और अनोखा है। (इसलिए जो भी बच्चे चाहते हैं कि अव्यक्त बाप से मुलाकात करें, वे कर सकते हैं। कैसे कर सकते हैं, इसका तरीका सिर्फ यही है कि – अमृतवेले याद में बैठो और यही संकल्प रखो कि अब हम अव्यक्त बापदादा से मुलाकात करें। जैसे साकार में मिलने का समय मालूम होता था तो नींद नहीं आती थी और समय से पहले ही बुद्धि द्वारा इसी अनुभव में रहते थे। वैसे अब भी अव्यक्त मिलन का अनुभव प्राप्त करना चाहते हो तो उसका बहुत सहज तरीका यह है – अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर रूह-रूहान करो तो अनुभव करेंगे कि – सचमुच, बाप के साथ बातचीत कर रहे हैं। और इसी रूह-रूहान में, जैसे सन्देशियों को कई दृश्य दिखाते हैं, वैसे ही बहुत गुह्य, गोपनीय रहस्य बुद्धियोग से अनुभव करेंगे।) लेकिन एक बात यह अनुभव करने के लिए आवश्यक है। वह कौनसी ? मालूम है ? अमृतवेले भी अव्यक्त स्थिति में वही स्थित हो सकेंगे जो सारा दिन अव्यक्त स्थिति में और अन्तर्मुख स्थिति में स्थित होंगे। वही अमृतवेले यह अनुभव कर सकेंगे। इसलिए अगर स्नेह है और मिलने की आशा है तो यह तरीका बहुत सहज है। करने वाले कर सकते हैं और मुलाकात का अनोखा अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।

(a) (a)

वतन में बैठे-बैठे कई बच्चों के दिलों की आवाज पहुंचती रहती है। आप सोचते होंगे – शिव बाबा बहुत कठोर है। लेकिन जो होता है उसमें रहस्य

और कल्याण है। इसलिए जो आवाज पहुंचती है वह सुनकर के हर्षाता रहता हूँ। क्या बापदादा निर्मोही हैं? आप सभी बच्चे निर्मोही हो? निर्मोही बने हो? तो बापदादा निर्मोही और बच्चों में शुद्ध मोह तो मिलन कैसे होगा। बापदादा में शुद्ध मोह है? (साकार बाबा का बच्चों में शुद्ध प्यार था) शिव बाबा का नहीं है? बापदादा का है? (जैसा हमारा है वैसा नहीं) शुद्ध मोह बच्चों से भी जास्ती है, लेकिन बापदादा और बच्चों में एक अन्तर है। वह शुद्ध मोह में आते हुए भी निर्मोही हैं और बच्चे शुद्ध मोह में आते हैं तो कुछ स्वरूप बन जाते हैं। या तो प्यारे बनते, या तो न्यारे बनते। लेकिन बापदादा न्यारे और प्यारे साथ-साथ बनते हैं। यह अन्तर जो रहा हुआ है, इसको जब मिटायेंगे तो क्या बनेंगे? अन्तर्मुख, अव्यक्त, अलौकिक। अभी कुछ-कुछ लौकिकपन भी मिल जाता है। लेकिन जब यह अन्तर खत्म कर देंगे तो बिल्कुल अलौकिक और अन्तर्मुखी, अव्यक्त फरिश्ते नजर आयेंगे। (इस साकार वतन में रहते हुए भी फरिश्ते बन सकते हो। आप फिर कहेंगे – आप वतन में जाकर फरिश्ता क्यों बने? यहाँ ही बनते। लेकिन नहीं। जो बच्चों का काम वह बच्चों को साजे। जो बाप का कार्य है वह बाप ही करते हैं। (b) बच्चों को अब पढ़ाई का शो दिखाना है। टीचर को पढ़ाई का शो नहीं दिखाना है। टीचर को पढ़ाई पढ़ानी होती है। स्टूडेन्ट को पढ़ाई का शो दिखाना होता है। शो-केस में शक्तियों को, पाण्डवों को आना है। बापदादा तो है ही गुप्त।) (b)

अभी सभी के दिल में यही संकल्प है कि – अब जल्दी-जल्दी ड्रामा की सीन पूरा कर खत्म हो। लेकिन जल्दी होगी? हो सकती है? होगी या हो सकती है? भावी जो बनी हुई है – वह तो बनी हुई बनी ही रहेगी। लेकिन बनी हुई भावी में यह इतना नज़र आता है कि अगर कल्प पहले माफिक संकल्प आता है तो संकल्प के साथ-साथ अवश्य पहले भी पुरुषार्थ तीव्र किया होगा, तब तो यह भी संकल्प आता है कि ड्रामा का सीन जल्दी पूरा कर सभी अव्यक्त वतन-वासी बन जाएं। (बनना तो है। लेकिन आप बच्चों में इतनी शक्ति है जो अव्यक्त वतन को भी व्यक्त में खींचकर ला सकते हो, (c) अव्यक्त वतन का नक्शा व्यक्त वतन में बना सकते हो)। आशायें तो हरेक की बहुत हैं। ऐसे ही पहुंचती हैं जैसे इस साकार दुनिया में बहुत बड़ी आफिस (c)

होती है टेलीफोन और टेलीग्राफ की, वैसे ही बहुत शुद्ध संकल्पों की तारें वतन में पहुंचती रहती हैं। अभी क्या करना है?

कई बच्चों के कुछ लोक-संग्रह प्रति प्रश्न भी हैं, वह भी पहुंचते हैं। कई बच्चे पूंछते हैं कि – साकार द्वारा तो यह कहा कि सूक्ष्मवतन है ही नहीं, तो बाबा कहाँ गये? कहाँ से मिलने आते हैं? कहाँ यह सन्देश भेजते हैं? क्यों भोग लगाते हो? इसका भी राज़ है। क्यों कहा गया था? इसका मूल कारण यही है कि जैसे आप लोगों ने देखा होगा कि कभी-कभी छोटे बच्चे जब कोई चीज़ के पीछे लग जाते हैं, तो वह चीज भल अच्छी भी होती है, लेकिन हद से ज्यादा उस अच्छी चीज के पीछे पड़ जाते हैं तो बच्चों से क्या किया जाता है? वह चीज उनकी आंखों से छिपाकर यह कहा जाता है कि है ही नहीं। इसलिए ही कहा जाता है कि इसकी जो एकस्ट्रा लग्न लग गई है, वह कुछ ठीक हो जाए। इसी रीति से वर्तमान समय कई बच्चे इन्हीं बातों में कुछ चटक गये थे। तो उनको छुड़ाने के लिए साकार में कहते थे कि – यह सूक्ष्मवतन है ही नहीं। तो यह भी बच्चों की इस बात से बुद्धि हटाने के लिए कहा गया था। लेकिन इसका भाव यह नहीं है कि अगर बच्चों से चीज़ छिपाई जाती है तो वह चीज खत्म हो जाती है। नहीं। यह एक युक्ति है – चटकी हुई चीज से छुड़ाने की। तो यह भी युक्ति थी। अगर सूक्ष्मवतन नहीं तो भोग कहाँ लगाते हो? इस रस्म रिवाज को कायम क्यों रखा? कोई भी ऐसा कार्य होता है, तो खुद भी सन्देश क्यों पुछवाते थे? तो ऐसे नहीं कि सूक्ष्मवतन नहीं है। सूक्ष्मवतन है लेकिन अब सूक्ष्मवतन में आने-जाने के वजाए स्वयं ही सूक्ष्मवतन-वासी बनना है। यही वापदादा की बच्चों में आशा है। आना-जाना ज्यादा नहीं होना चाहिए। यह यथार्थ है। कमाई किसमें है? तो बाप बच्चों की कमाई को देखते हैं और कमाई के लायक बनाते हैं। इसलिए यह सभी रहस्य बोलते रहे। अभी समझा कि क्यों कहा था और अब क्या है? सूक्ष्मवतन के अव्यक्त अनुभव को अनुभव करो। सूक्ष्म स्थिति को अनुभव करो। आने जाने की आशा अल्पकाल की है। अल्पकाल के बजाए सदा अपने को सूक्ष्मवतनवासी क्यों नहीं बनाते? और सूक्ष्मवतनवासी बनने से ही बहुत वन्डरफुल अनुभव करेंगे। खुद आप लोग वर्णन करेंगे कि – यह

अनुभव और सन्देशियों के अनुभव में कितना फर्क है। वह कमाई नहीं, यह कमाई भी है और अनुभव भी। तो एक ही समय दो प्राप्ति हों – वह अच्छा या एक ही चाहते हो?

कई बच्चों के मन में यह भी प्रश्न है कि – ना मालूम जो बापदादा कहते थे कि सभी को साथ में ले जायेंगे, अब वह तो चले गये। लेकिन वह चले गये हैं? मुक्तिधाम में जा नहीं सकते – सिवाए बारात वा बच्चों के। बारात के बिगर अकेले जा सकते हैं? बारात तैयार है? यही सुना है अब तक कि बारात के साथ ही जायेंगे। जब बारात ही सज़ रही है तो अकेले कैसे जायेंगे। अभी तो सूक्ष्मवतन में ही अव्यक्त रूप से स्थापना का कार्य चलता रहेगा। जब तक स्थापना का कार्य समाप्त नहीं हुआ है तब तक बिना कार्य सफल किये हुए घर नहीं लौटेंगे। साथ ही चलेंगे और फिर चलने के बाद क्या करेंगे? मालूम है, क्या करेंगे? साथ चलेंगे और साथ रहेंगे। फिर साथ-साथ ही सृष्टि पर आयेंगे। आप बच्चों का जो गीत है – कभी भी हाथ और साथ न छूटे, तो बच्चों का भी वायदा है तो बाप का भी वायदा है। बाप अपने वायदे से बदल नहीं सकते। और भी कोई प्रश्न है? यूं तो समय प्रति समय सब स्पष्ट होता ही जायेगा। कइयों के मन में यह भी है ना कि – ना मालूम जन्म होगा वा क्या होगा? जन्म होगा? जैसे आप की मम्मा का जन्म हुआ वैसे होगा? आप बच्चों का विवेक क्या कहता है? ड्रामा की भावी को देख सकते हो? थोड़ा-थोड़ा देख सकते हो? जब आप लोग सबको कहते हो कि – हम त्रिकालदर्शी बाप के बच्चे हैं, तो आने वाले काल को नहीं जानते हो? आपके मन के विवेक अनुसार क्या होना चाहिए? अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर 'हाँ' वा 'ना' कहो – तो जवाब निकल आयेगा। (इस रीति से बापदादा ने दो-चार से पूछा।) बहुत करके सभी का यही विचार था कि नहीं होगा। आज ही उत्तर चाहते हो या बाद में? हलचल तो नहीं मच रही है। यह भी एक खेल रचा जाता है – छोटे-छोटे बच्चे तालाब में पत्थर मारकर उनकी लहरों से खेलते हैं। तो यह भी एक खेल है। (बाप तुम सभी के विचार सागर में प्रश्नों के पत्थर फेंक कर तुम्हारे बुद्धि रूपी सागर में लहर उत्पन्न कर रहे हैं। उन्हीं लहरों का खेल बापदादा देख रहे हैं। अभी आप सबके साथ

ही अव्यक्त रूप से स्थापना के कार्य में लगे रहेंगे। जब तक स्थापना का पार्ट है तब तक अव्यक्त रूप से आप सभी के साथ ही हैं। समझ गये?)

(वतन में मम्मा को भी इमर्ज किया था। पता है, क्या बात चली? जैसे साकार रूप में साकार वतन में मम्मा बोलती थी कि – बाबा, आप बैठे रहिये, हम सभी काम कर लेंगे। इसी ही रीति से वतन में भी यही कहा कि – हम सभी कार्य स्थापना के जो करने हैं वह करेंगे। आप बच्चों के साथ ही बच्चों को बहलाते रहिये। ऐसे ही साकार में कहती थी। वही वतन में रूह-रूहान चली। आप सभी के मन में तो होगा ही कि – हमारी मम्मा कहां गई? अभी यह राज़ इस समय स्पष्ट करने का नहीं है। कुछ समय के बाद सुनायेंगे कि वह कहां और क्या कर रही है। स्थापना के कार्य में भी मददगार है लेकिन भिन्न नाम, रूप से। अच्छा! अब तो टाइम हो गया है।)

आज वतन में दूर से ही सवेरे से खुशबू आ रही थी। देख रहे थे – कैसे स्नेह से चीजें बना रहे हैं। (दादी जी से) आपने देखा, भण्डारे में चक्र लगाया? बाबा को खुशबू नहीं, स्नेह की खुशबू आ रही थी। यह स्नेह ही अविनाशी बनाता है। अविनाशी स्नेह है ना? याद हरेक की पहुंचती है – उसका रेसपान्ड लेने के लिए अवस्था चाहिए। रेसपान्ड फौरन मिलता है। जैसे साकार में बच्चे 'बाबा' कहते थे तो बच्चों को रेसपान्ड मिलता था। तो रेसपान्ड अब भी फौरन मिलता है, लेकिन बीच में व्यक्त भाव को छोड़ना पड़ेगा तब ही उस रेसपान्ड को सुन सकेंगे। अब तो और ही ज्यादा चारों ओर सर्विस करने का अनुभव कर रहे हैं। अब अव्यक्त होने के कारण एक और क्वालिटी बढ़ गई है। कौनसी? मालूम है? वह यह है – पहले तो बाहर्यामी था, अभी अन्तर्यामी हो गया हूँ। अव्यक्त स्थिति में जानने की आवश्यकता नहीं रहती। स्वत: ही एक सेकेण्ड में सभी का नक्शा देखने में आ रहा है। इसलिए कहते हैं कि पहले से एक और गुण बढ़ गया है। अव्यक्त स्थिति में तो खुशबू से ही पेट भर जाता है। आप लोगों को मालूम है?

एक मुख्य शिक्षा बच्चों के प्रति दे रहे हैं। अब सर्विस तो करनी ही है – यह तो सभी बच्चों की बुद्धि में लक्ष्य है और लक्ष्य को पूर्ण भी करेंगे। लेकिन

इस लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए बीच में एक मुख्य विघ्न आयेगा। वह कौनसा, पता है? मुख्य विघ्न सर्विस में बाधा डालने के लिए कौनसा आयेगा? सभी के आगे नहीं, मैजारिटी के आगे आयेगा! वह कौनसा विघ्न है – पहले से ही बता देते हैं। सर्विस करते-करते यह ध्यान रखना कि – मैंने यह किया, मैं ही यह कर सकता हूँ। यह मैं-पन आना – इसको ही कहा जाता है ज्ञान का अभिमान, बुद्धि का अभिमान, सर्विस का अभिमान। इन रूपों में आगे चलकर विघ्न आयेंगे। लेकिन पहले से ही इस मुख्य विघ्न को आने नहीं देना। इसके लिए सदा एक शब्द याद रखना कि – 'मैं निमित्त हूँ'। निमित्त बनने से ही निराकारी, निरहंकारी और नम्रचित्त, निःसंकल्प अवस्था में रह सकते हैं।

अगर मैंने किया, मैं-मैं आया, तो मालूम है क्या होगा? जैसे निमित्त बनने से निराकारी, निरहंकारी, निर्संकल्प स्थिति होती है, वैसे ही 'मैं-मैं' आने से मगरूरी, मुरझाइस, मायूसी आ जायेगी। उसकी फिर रिजल्ट क्या होगी? आखरीन अन्त में उसकी रिजल्ट यही होती है कि चलते-चलते जीते हुए भी मर जाते हैं। इसलिए इस मुख्य शिक्षा को हमेशा साथ रखना कि – 'मैं निमित्त हूँ'। 'निमित्त' बनने से कोई भी अहंकार उत्पन्न नहीं होगा। नहीं तो अगर 'मैं-पन' आ गया तो मतभेद के चक्र में आ जायेंगे। इसलिए इन अनेक व्यर्थ के चक्करों से बचने के लिए स्वदर्शन-चक्र को याद रखना। क्योंकि जैसे-जैसे महारथी बनेंगे वैसे ही माया भी महारथी रूप में आयेगी। साकार रूप में अन्त तक कर्म करके दिखाया। क्या कर्म करके दिखाया? याद है, क्या शिक्षा दी? यही कि निरहंकारी और निर्माणचित्त होकर एक-दो में प्रेम प्यार से चलना है। एक माताओं का संगठन बनाना। जैसे कुमारियों का ट्रेनिंग क्लास किया है, वैसे ही माताएं जो मददगार बन सकती हैं और हैं – उन्हों का मधुबन में संगठन रखना। कुमारियों के साथ माताओं का संगठन हो। संगठन के समय फिर आना होगा।

स्नेह को देखते हैं तो ड्रामा याद आ जाता है। ड्रामा जब बीच में आता है तो साइलेन्स हो जाते हैं। स्नेह में आये तो क्या हाल हो जायेगा। नदी बन जायेंगे। लेकिन नहीं, ड्रामा। जो कर्म हम करेंगे वह फिर सभी करेंगे, इसलिए

साइलेन्स। अगर सभी साथ होते तो जो अन्तिम कर्मातीत अवस्था का अनुभव था वह ड्रामा प्रमाण और होता। लेकिन था ही ऐसे, इसलिए थोड़े ही सामने थे। सामने होते भी जैसे सामने नहीं थे। स्नेह तो वतन में भी है और रहेगा। अविनाशी है ना। लेकिन जो सुनाया कि स्नेह को ड्रामा साइलेन्स में ले आता है और यही साइलेन्स, शक्ति को लायेगी। फिर वहाँ साकार में मिलन होगा। अभी अव्यक्त रूप में मिलते हैं, फिर साकार रूप में सतयुग में मिलेंगे। वह सीन तो याद आती है ना – खेलेंगे, पाठशाला में आयेंगे, मिलेंगे। आप नूरे रत्न सतयुग की सीनरी वतन में देखते रहते हो। जो बाप देखते हैं वह बच्चे भी देखते रहते हैं और देखते जायेंगे।

अब तो ज्वाला रूप होना है। आपका ही ज्वाला रूप का यादगार है। पता है, ज्वाला देवी भी है, वह कौन है? यह सभी शक्तियों को ज्वालारूप देवी बनना है। ऐसी ज्वाला प्रज्वलित करनी है, जिस ज्वाला में यह कलियुगी संसार जलकर भस्म हो जायेगा। अच्छा!

विदाई के समय बापदादा बोले –

सभी सेन्टर्स के अव्यक्त स्थिति में स्थित हुए नूरे रत्नों को बाप व दादा का अव्यक्त याद-प्यार स्वीकार हो। साथ-साथ जो इशारा दिया है उसको जल्दी से जल्दी जीवन में लाने का तीव्र पुरुषार्थ करना है। अच्छा, गुडनाईट। सभी शिव शक्तियों और पाण्डवों प्रति बाप की नमस्ते।

६.२.६१

महिमा सुनना छोड़ो, महान् बनो

सभी याद की यात्रा में बैठे हो ? पढ़ाई का सार तो समझ में आ गया । उस सार को जीवन में लाकर के दुनिया को वह राज़ सुनाना है । रचयिता और रचना की नालेज को तो समझ गये हो । सुना तो बहुत है, लेकिन अब जो सुना है वह स्वरूप बनके सभी को दिखाना है । कैसे दिखायेंगे ? आपकी हर चलन से बाप और दादा के चरित्र नजर आवें, आपकी आंखों में उस ही बाप को देखें । आपकी वाणी से उन्हीं की नालेज को सुनें । हर चलन में हर चरित्र समाया हुआ होना चाहिए । सिर्फ बाप के चरित्र नहीं, लेकिन बाप के चरित्र देख बच्चे भी चरित्रवान बन जाएं । आपके चित्र में उसी अलौकिक चित्र को देखें । आप के व्यक्त रूप में अव्यक्त मूर्त नजर आवे । ऐसा पुरुषार्थ करके, जो बापदादा ने मेहनत की है उसका फल स्वरूप दिखाना है । जैसे अज्ञान काल में भी कोई-कोई बच्चों में जैसे कि बाप ही नज़र आता है, उनके बोल-चाल से अनुभव होता है — जैसे कि बाप है । इसी रीति से जो अनन्य बच्चे हैं उन एक एक बच्चे द्वारा बाप के गुण प्रत्यक्ष होने चाहिएं और होंगे । कैसे होंगे ? इसका मुख्य प्रयत्न क्या है ? मुख्य बात यही है जो साकार रूप से भी सुनी है कि — याद की यात्रा, अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर हर कर्म करना है ।

अब तो बच्चों को बहुत सामना करना है । लेकिन समर्थ साथ है, इसलिए कोई चिन्ता की बात नहीं है । सिर्फ एक बात सभी को ध्यान में रखनी है कि सामना करने के लिए बीच में रुकावट भी आयेगी । सामना करने में रुकावट कौनसी आयेगी, मालूम है ? (देह-अभिमान) देह-अभिमान तो एक मूल बात है । लेकिन सामना करने के लिए बीच में कामना विघ्न डालेगी । कौनसी कामना ? "मेरा नाम हो, मैं ऐसा हूँ, मेरे से राय क्यों नहीं ली, मेरा मूल्य क्यों नहीं रखा ?" — यह अनेक प्रकार की कामनाएं सामना करने में विघ्न रूप में आयेंगी । यह याद रखना है — हमको कोई कामना नहीं करनी है, सामना करना है । अगर कोई कामना की तो सामना नहीं कर सकेंगे । और अव्यक्त स्थिति में स्थित होने के लिए एक बात जो कहते रहते हैं — वह धारण कर

ली तो बहुत जल्दी और सहज अव्यक्त स्थिति में स्थित हो जायेंगे। वह कौनसी बात? हम अभी मेहमान हैं। क्योंकि आप सभी को भी वाया सूक्ष्मवतन होकर घर चलना है। हम मेहमान हैं — ऐसा समझने से महान् स्थिति में स्थित हो जायेंगे। 'मेहमान' के बजाए जरा भी एक शब्द में अन्तर कर लिया तो गिरावट भी आ जायेगी। वह कौनसा शब्द? मेहमान समझना है लेकिन महिमा में नहीं आना है। अगर महिमा में आ गये तो मेहमान नहीं बनेंगे। मेहमान समझेंगे तो महान् बनेंगे। है जरा-सा अन्तर — मेहमान और महिमा। लेकिन जरा-सा अन्तर भी अवस्था को बहुत नीचे-ऊपर कर देता है।

तुम सभी को ज्ञान कौनसा देते हो? त्रिमूर्ति का। जैसे त्रिमूर्त्ति का ज्ञान औरों को देते हो वैसे अपने पास भी तीन बातों का ज्ञान रखना है। तीन बातें छोड़ो और तीन बातें धारण करो। जब यह तीन बातें छोड़ेंगे तब ही स्वरूप में स्थित होंगे, सर्विस में सफलता भी होगी। बताओ कौनसी तीन बातें छोड़नी हैं जो सर्विस में विघ्न डालती हैं? एक तो कभी भी कोई बहाना नहीं देना, दूसरा — कभी भी किससे सर्विस के लिए कहलाना नहीं, तीसरा — सर्विस करते कभी मुरझाना नहीं। बहाना, कहलाना और मुरझाना — यह तीन बातें छोड़नी हैं। और, फिर कौनसी तीन बातें धारण करनी हैं? त्याग, तपस्या और सेवा — यह तीन बातें धारणा में चाहिएं। तपस्या अर्थात् याद की यात्रा और सर्विस के बिना भी जीवन नहीं बन सकती। इन दोनों बातों की सफलता त्याग के बिना नहीं हो सकती। इसलिए तीन बातें छोड़नी हैं और तीन बातें धारण करनी हैं। अगर इन तीनों बातों की धारणा हुई तो क्या बन जायेंगे? जो आपका गायन है ना, वही स्वरूप बन जायेंगे। यहाँ आबू में भी आपका गायन है — किस रूप में और कौनसा रूप यादगार का है? तपस्या के साथ-साथ और भी कोई मुख्य रूप का यादगार है। जिन्होंने देलवाड़ा मन्दिर ध्यान से देखा होगा उन्हें याद होगा। जैसे तपस्वी हैं, तो त्रिनेत्री भी हैं। त्रिनेत्री के साथ-साथ याद त्रिमूर्त्ति की है। तो जैसा यादगार है त्रिनेत्री का — ऐसा बनना है। तीसरा नेत्र कौनसा है? ज्ञान का। ज्ञान का तीसरा नेत्र ही यादगार के रूप में दिखाया है। तपस्वी और त्रिनेत्री। तीसरा नेत्र कायम होगा तब ही तपस्वी

बन सकेंगे ।(अगर ज्ञान का नेत्र गायब हो जाता है तो तपस्या भी नहीं रह सकती । इसलिए अब त्रिमूर्त्ति शब्द को भी याद करके धारणा में चलेंगे – तो वह बन जायेंगे जो शक्तियों का गायन है, जो प्रभाव है वह देखने में आयेगा । अभी गुप्त है । अभी तक शक्तियां गुप्त क्यों हैं ? क्योंकि अभी तक अपने स्वमान, अपनी सर्विस और अपनी श्रेष्ठताएं अपने से ही गुप्त हैं । अपने से ही गुप्त होने कारण सृष्टि से भी गुप्त हैं । जब अपने में प्रत्यक्षता आयेगी तब सृष्टि में भी प्रत्यक्षता होगी ।)

(अभी शिवरात्रि का जो पर्व आ रहा है उनको और भी धूमधाम से मनाना है । बड़े उमंग और उल्लास से परिचय देना है । क्योंकि बाप के परिचय में बच्चों का परिचय भी आ जाता है । बच्चे बाप का परिचय देंगे, तो बाप फिर अव्यक्त में बच्चों का परिचय, बच्चों का साक्षात्कार आत्माओं को कराते रहेंगे । तो इस शिवरात्रि पर कुछ नवीनता करके दिखानी है ।) क्या नवीनता करेंगे ? अब तक जो भाषण किये हैं वह यथा योग, यथा शक्ति तो करते रहते हो, लेकिन अब खास शक्ति-रूप से भाषण करने हैं । शक्ति-रूप का भाषण क्या होता है ? ललकार करना । क्या ललकार करेंगे ? और ही जोर-शोर से समय की पहचान दो और उन्हों को बार-बार सुनाओ कि – "यह बाप का कर्त्तव्य अब जास्ती समय नहीं है । कुछ तो हाथ से गंवा दिया, लेकिन जो कुछ थोड़ा समय रहा है उनको भी गंवा न दो ।" ऐसे फोर्स से समय की पहचान दो । जैसे आजकल साइंस वाले ऐसे-ऐसे बाम्बस बना रहे हैं, जो अपने स्थान पर बैठे हुए भी, जहाँ बम लगाना होगा वहाँ का निशाना दूर बैठे भी कर सकते हैं । तो साइंस की शक्ति से तो श्रेष्ठ साइलेन्स है । जैसे वह साइंस के लोग गोले बनाते हैं, वैसे अब शक्तियों को साइलेन्स की शक्ति से गोले फेंकने हैं । शुरू-शुरू में शक्तियों की ललकार ही चलती थी । अभी शुरू जैसी ललकार नहीं है ।(अभी विस्तार में पड़ गये हैं । विस्तार में पड़ने से ललकार का रूप गुप्त हो गया है । अभी फिर से बीजरूप अवस्था में स्थित होकर ललकार करो । उस ललकार से कइयों में बीज पड़ सकता है । लेकिन बीजरूप स्थिति में स्थिति रहेंगे तो अनेक आत्माओं में समय की पहचान और बाप की पहचान का बीज पड़ेगा । अगर बीजरूप स्थिति में स्थित न रहे,

सिर्फ विस्तार में चले गये – तो क्या होगा ? ज्यादा विस्तार से भी वैल्यु नहीं रहेगी, व्यर्थ हो जायेगा । इसलिए बीजरूप स्थिति में स्थित हो बीजरूप की याद में स्थित हो, फिर बीज डालो । फिर देखना, यह बीज का फल कितना अच्छा और सहज निकलता है ! अभी तक मेहनत जास्ती की है, प्रत्यक्षफल कम है । अभी मेहनत कम करो, प्रत्यक्षफल ज्यादा दिखाओ । स्नेह तो सभी का है ही, लेकिन स्नेह का स्वरूप भी कुछ दिखाना है । यूं तो सदैव इस स्थिति में रहना चाहिए, लेकिन खास शिवरात्रि तक हरेक बच्चे को ऐसा समझना चाहिए जैसे शुरू में आप बच्चों की भट्ठी के प्रोग्राम चलते थे, इसी रीति से हरेक को समझना चाहिए – शिवरात्रि तक हमको याद की यात्रा की भट्ठी में ही रहना है, बिल्कुल अव्यक्त स्थिति में स्थित रहना है । अपनी चेकिंग करने का ध्यान रखो । फिर इस अव्यक्त स्थिति का कितना प्रभाव निकलता है ! मुश्किल नहीं है, बहुत सहज है । कारोबार में आते हुए भी भट्ठी चल सकती है । यह तो आन्तरिक स्थिति है । आन्तरिक स्थिति का प्रभाव जास्ती पड़ता है ।

सभी अमृतवेले मुलाकात करते हो ? अभी तक ऐसा वायुमण्डल नहीं पहुंचा है । अब तक मधुबन वालों ने भी स्नेह का सबूत नहीं दिया है । चारों ओर से बहुत कम बच्चे हैं जिन्होंने स्नेह का सबूत दिया है । बाप का बच्चों से कितना स्नेह था ! स्नेह का सबूत प्रैक्टिकल में कितना समय दिया ! क्या दिया था ? याद है, खास अपनी तबियत को भी न देखकर क्या सबूत दिया था ? अपनी शारीरिक स्थिति को न देखते भी कितना समय खास सर्च-लाइट देते थे ! कितना समय स्नेह का सबूत दिया ! आप कहते थे – शरीर पर इफेक्ट आता है । लेकिन बाबा ने अपने शरीर को देखा ? यह स्नेह का सबूत था । अब बच्चों को भी रिटर्न में स्नेह का सबूत देना है । जो कर्म करके दिखाया वही करना है । अमृतवेले जैसे साकार रूप में करके दिखाया वैसे ही बच्चों को करना चाहिए । नहीं तो, अब तक यही रिजल्ट देखी है – "इस बात में अपने दिल को खुश कर लेते हैं – उठे और बैठे ।" लेकिन वह रूहाव, शक्ति-स्वरूप की स्मृति नहीं रहती । शक्ति-रूप के बदले क्या मिक्स हो गया है ? सुस्ती । तो सुस्ती मिक्स होने से मुलाकात करते हैं लेकिन लाइन क्लीयर नहीं होती

है, इसलिए मुलाकात से जो अनुभव होना चाहिए वह नहीं कर पाते हैं। मिक्सचर (Mixture) है। यहाँ शुरू करेंगे तो मधुबन-वासियों को देख सब करेंगे। मधुबन निवासी जो खास स्नेही हैं उनको खास सैक्रीफाइस (बलिदान) करना है। स्नेह में हमेशा सेक्रीफाइस किया जाता है। अच्छा !

१५.२.६९

शिवरात्रि के अवसर पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्य

(सन्तरी दादी के तन द्वारा)

आज किसके स्वागत का दिन है ? (बाप और बच्चों का) परन्तु कई बच्चे अपने को भी भूले हुए हैं तो बाप को भी भुला दिया है। आज के दिन वह स्वागत है जैसे पहले होती थी ? कितनी तारें आती थीं ! तो भूला ना। बाप जब है ही तो फिर भुलाना कहाँ तक ! यह है निश्चय, यह है पढ़ाई। जब पढ़ाई कायम है तो वह कार्य भी जैसा का वैसा चलता रहेगा। वह निश्चय नहीं तो कार्य में भी जरा__। बच्चे अपने मर्तबे को समझते हैं कि — मैं किसका बच्चा हूँ ! बाप सदा है तो बच्चे भी सदा हैं। परन्तु देह-अभिमान अपने स्वधर्म को भुला देता है। भूलने से कार्य कैसे चलेगा। आगे कैसे बढ़ेंगे ? जबकि बाप ने अपना परिचय दिया है, बच्चों को भी अपना परिचय मिला हुआ है। कितना समय इसी लक्ष्य को पक्का कराने के लिए मेहनत की गई है ! उस मेहनत का फल कहाँ तक ? सिर्फ याद कराने के लिए यह कह रहा हूँ। मुरली तो चलानी नहीं है, सिर्फ बच्चों से मिलने आया हूँ। बच्ची ने कहा — "बहुत याद कर रहे हैं। बाबा, आप चलेंगे तो रिफ्रेश करेंगे।" रिफ्रेश तो हो ही — अगर निश्चय है तो। फिर भी बच्चों से मिलने के लिए आना पड़ा, थोड़े समय के लिए। स्वमान की स्मृति दिलाने के लिए आये हैं — बच्चे ! सदैव अपने को सौभाग्यशाली समझें। सदा सौभाग्यशाली उनको कहा जाता है जिनका बाप, टीचर और सतगुरु से पूरा कनेक्शन, पूरी लग्न है।

कन्या की सगाई के बाद क्या होता है ? पति के साथ लग्न लग जाती है। तब उसको कहते हैं सदा सुहागिन। परन्तु वह कहाँ तक सुहागिन है ? अन्दर

में क्या भरा पड़ा है ! कन्या सौ ब्राह्मणों से उत्तम गिनी जाती है । सगाई करने के बाद अशुद्ध बनने कारण आन्तरिक अभागिन है — यह किसको भी पता नहीं है । बाप ही बतलाते हैं — सदा सुहागिन कौन है । सदा के लिए परमात्मा से पूरी लग्न रहे, वो सदा सुहागिन हैं ।

यह तो अभी पढ़ाई का समय है । बाप अपना कर्त्तव्य कर रहे हैं, डायरेक्शन देते, पढ़ाते रहते हैं । जब तक पढ़ाना है, पढ़ाते रहेंगे । विनाश सामने खड़ा है, उसका कनेक्शन बाप के साथ है । ऐसे मत समझो — बाप की जुदाई है । जुदाई भी नहीं, विदाई भी नहीं । जब तक विनाश नहीं तब तक बाप साथ है । वतन में बाप गया है कोई कार्य के लिए । समय अनुसार वह सब-कुछ होता रहेगा । इसमें न कोई विदाई है, न जुदाई । जुदाई लगती है ? तुमने विदाई दी थी ? अगर विदाई दी होगी तो जुदाई भी होगी । विदाई नहीं दी होगी तो जुदाई भी नहीं होगी । यह ड्रामा के अन्दर पार्ट चलता रहता है । बाप का खेल चल रहा है । खेल में खेल चलता रहेगा । आगे तो बहुत ही खेल देखने हैं । इतनी हिम्मत है ? जब हिम्मत रखेंगे तब बहुत देखेंगे । आगे बहुत-कुछ देखना है । परन्तु कदम को सम्भाल-सम्भाल कर चलाना है । अगर सम्भल कर नहीं चलेंगे तो कहाँ खड्डा भी आ जायेगा, एक्सीडेंट भी हो पड़ेंगे । बच्चों से मिलने के लिए थोड़े समय के लिए आया हूँ । बहुत कार्य करना है । वतन से बहुत-कुछ करना पड़ता है । बच्चों की भी दिल पूरी करनी पड़ती है तो भक्तों की भी दिल पूरी करनी पड़ती है । सभी कार्य संगम पर ही होते हैं । बाप का परिचय मिला — खजाना, लाटरी मिली । अभी बच्चों की सर्विस पूरी की । बाकी से अभी सबकी करनी है । बच्चे सगे भी हैं तो लगे भी हैं । सर्विस तो सबकी करनी है । सबेरे भी आकर दृष्टि से परिचय दे दिया । दृष्टि द्वारा सर्च-लाइट दे सभी को सुख देना बाप का कर्त्तव्य है ।

अभी तो सभी को म्युज़ियम की सर्विस करनी है । सबको बाप का परिचय देना है । बाप ने जो सर्विस के चित्र बनवाये हैं, उस पर सर्विस करनी है । **अंगुली देने से पहाड़ उठता है ना । यही गायन है — गोप-गोपियों ने अंगुली** से पहाड़ उठाया । अंगुली नहीं देंगे तो पहाड़ नहीं उठेगा । सृष्टि पर आत्माओं का उद्धार कर, वह पहाड़ उठाकर फिर साथ ले जाना है । समूह होता है ना ।

अन्त में समूह बनकर सभी के साथ रहना है। पहले-पहले साक्षात्कार में लाल-लाल समूह देखा था; तब तो समझ में नहीं आया, परन्तु अब वही आत्माओं का समूह है, जिनको साथ ले जाने का ड्रामा के अन्दर प्रोग्राम है। सभी की सर्विस करनी है। अच्छा !

सवेरे उठकर बाप की याद में रहो, क्योंकि उस समय बाप सभी को याद करते हैं। उस समय कोई-कोई बच्चे दिखाई नहीं पड़ते हैं, ढूंढ़ना पड़ता है। भल अकेले रीति याद करते हैं, परन्तु संगठन के साथ भी जरूर चलना है। जितना याद में रहेंगे उतना ही बाप के नजदीक होते जायेंगे। बाप को भुलाने से मूंझते हैं। बाप को सदैव साथ रखेंगे तो भूल नहीं सकते।

४.३.६९

होली के शुभ अवसर पर

आज आपकी खास होली है क्या? होली कैसे मनाई जाती है? होली मनाने आती है? संगम की होली कौनसी है? वर्तमान पार्ट अनुसार होली कैसे मनायेंगे? वर्तमान समय कौनसी होली मनाने की आवश्यकता है? होली में कई बातें करनी होती हैं। रंगा भी जाता है, जलाया भी जाता है, साथ-साथ श्रृंगारा भी जाता है और कुछ मिटाना भी होता है। जो भी बातें होली में करनी हैं वह सभी इस समय चल रही हैं। जलाना क्या है, मिटाना क्या है, रंगना क्या है और श्रृंगारना क्या है? यह सभी कर लेना — इसको कहा जाता है मनाना। अगर इन चारों बातों में से कुछ कमी है तो मनाना नहीं कहेंगे। होली के दिनों में बहुत सुन्दर सजते हैं। कैसे सजते हैं? देवताओं के समान। आप सभी सजे हुए हैं? सजावट में कोई कमी तो नहीं है? सजावट में मुख्य होली का श्रृंगार कौनसा होता है? सांग जो बनाते हैं उन्हों को पहले-पहले मस्तक में वल्ब लगाते हैं। यह भी इस समय की कॉपी (नकल) की हुई है। आप का भी संगम का मुख्य श्रृंगार है मस्तक पर आत्मा का दीपक जलाना। इसकी निशानी वल्ब जलाते हैं। लेकिन यह सभी बातें होने लिए

भी करना है। जल्दी भी हो और सम्पूर्ण भी हो — तो कमाल है! अगर कोई भी कमी रही तो उस कमी की तरफ सभी की नजर जायेगी। ऐसी कमी न हो। सभी के मुख से 'कमाल है!' — ऐसा निकलना चाहिए। सारा दैवी परिवार आपका चेहरा म्युजियम के दर्पण में देखेंगे। अच्छा!

२०.३.६९

सात बातें छोड़ो और सात बातें धारण करो

सभी किस स्मृति में बैठे हैं? किस देश में बैठे हैं — व्यक्त देश में हैं वा अव्यक्त देश में? अव्यक्त को व्यक्त में लाया है वा तुम अव्यक्त हुए हो? अभी की मुलाकात कहाँ कर रहे हो? अव्यक्त को व्यक्त देश में निमन्त्रण दिया था, तो अव्यक्त बापदादा व्यक्त देश में अव्यक्त रूप से मुलाकात कर रहे हैं। अव्यक्त रूप को व्यक्त में लाने के लिए कितना समय चाहिए? (अभी तैयारी है, पुरुषार्थ चल रहा है) कितने समय की आवश्यकता है? सम्पूर्ण स्थिति को इस साकार रूप में लाने लिए कितना समय चाहिए? दर्पण में देख तो सकते हो ना। सम्पूर्ण स्थिति का चित्र साकार में देखा है। साकार तन जो था वह सम्पूर्ण कर्मातीत स्थिति नहीं थी? उसकी भेंट में बताओ। उन जैसा तो बनना ही है। गुणों को ही धारण करना है। तो उनके अन्तिम स्थिति और अपने वर्तमान स्थिति में कितना फर्क समझते हो? उसके लिए कितना समय चाहिए? साकार का सबूत तो इन आंखों से देखा। उनके हर गुण, हर कर्म को अपने कर्म और वाणी से भेंट करो तो मालूम पड़ जायेगा (अभी समय के हिसाब से २५% भी बहुत है। समय पुरुषार्थ का बहुत कम है) इसलिए जैसे याद का चार्ट रखते हो, साथ-साथ अब यह भी चार्ट रखना चाहिए। साकार जो कर्म कर रहे थे, जो स्थिति, जो स्मृति थी — उन सभी से भेंट करनी है। अच्छा!

आज कुमारियों का इम्तहान लेते हैं। सभी जो पुरुषार्थ कर रहे हैं उसमें मुख्य सात बातें धारण करनी हैं और सात बातें छोड़नी हैं। वह कौनसी? (हरेक

कुमारी ने अपना-अपना सुनाया) छोड़ने का तो सभी को सुनाते हो। ५ विकार और उनके साथ छठा है आलस्य और सातवां है भय। यह भय भी बड़ा विकार है। शक्तियों का मुख्य गुण ही है निर्भय। इसलिए भय को भी छोड़ना है। अच्छा ! अब धारण क्या करना है ? अपने स्वरूप को जानना; तो स्वरूप, स्वधर्म, स्वदेश, सुकर्म, स्व-लक्ष्य, स्व-लक्षण और स्वदर्शन चक्रधारी बनना — यह ७ बातें धारण करनी हैं। इनको धारण करने से क्या बनेंगे ? शीतला देवी। काली नहीं बनना है, अभी शीतला देवी बनना है। काली बनना है विकारों के ऊपर। असुरों के सामने काली बनना है। लेकिन अपने ब्राह्मण कुल में शीतला बनना है। अच्छा !

१७.४.६१

आबू 'आध्यात्मिक संग्रहालय' का उद्घाटन

सर्व स्नेही बच्चों को बाप की नमस्ते। आपका स्नेह किससे है ? (कोई ने कहा बाप से, कोई ने कहा सर्विस से) और भी किससे स्नेह है ? अभी भी एक बात रह गई है। बापदादा से तो स्नेह है, लेकिन साथ-साथ 'पुरुषार्थ' से भी ज्यादा स्नेह रखना चाहिए। दैवी परिवार से स्नेह, सर्विस से स्नेह, बापदादा से स्नेह — यह तो है ही। लेकिन वर्तमान समय पुरुषार्थ से ज्यादा स्नेह रखना चाहिए। जो पुरुषार्थ के स्नेही होंगे वो सबके स्नेही होंगे। पुरुषार्थ से हरेक का कितना स्नेह है वो हरेक को चेक करना है। बापदादा से भी स्नेह इसलिए है कि वो पुरुषार्थ कराते हैं; प्रालब्ध से भी स्नेह तब होगा जब पहले पुरुषार्थ से स्नेह होगा; दैवी परिवार का भी स्नेह तब तक ले अथवा दे नहीं सकते जब तक पुरुषार्थ से स्नेह नहीं; अगर पुरुषार्थ से स्नेह है तो वो एक-दो के स्नेह के पात्र बन सकते हैं। स्नेह के कारण ही यहाँ इकट्ठे हुए हो। लेकिन बापदादा के स्नेह में रहते हो। अब पुरुषार्थ से भी स्नेह रखना है। क्योंकि यही पुरुषार्थ ही तुम बच्चों को सारे कल्प की प्रालब्ध बनाता है।

जितना बच्चों का स्नेह है उतना उससे बहुत अधिक बापदादा का भी है।

जितना जो स्नेही है उतना उसको स्नेह का रेसपान्ड मिलता रहता है। अव्यक्त रूप से स्नेह को लेना है। अव्यक्त स्नेह का पाठ कहाँ तक पढ़ा है? वर्तमान समय का पाठ यही है – अव्यक्त रूप से स्नेह को लेना और स्नेह से सर्विस का सबूत देना है। यह अव्यक्ति स्नेह का पाठ कहाँ तक पक्का किया है? अब क्या रिजल्ट समझते हो? आधे तक पहुंचे हो? मैजारिटी की रिजल्ट पूछते हैं। (कोई ने कहा २५%, कोई ने कहा ७५%) २५% और ७५% में कितना फर्क है! मैजारिटी २५% समझते हैं, ऐसी रिजल्ट क्यों है? इसका कारण क्या है? २५% अव्यक्त स्नेह है तो वाकी ७५% कौनसा स्नेह है? मैजारिटी की अगर २५% रिजल्ट रही, तो जो भविष्य समय आने वाला है उसमें पास मार्क्स कैसे होंगी? अब तो अव्यक्त स्नेह ही मुख्य है। अव्यक्त स्नेह ही याद की यात्रा को बल देता है। अव्यक्त स्नेह ही अव्यक्ति स्थिति बनाने की मदद देता है। २५% – यह रिजल्ट क्यों? कारण सोचा है? समय अनुसार अब तक यह रिजल्ट नहीं होनी चाहिए। समय के प्रमाण तो ७५% होनी चाहिए। फिर ऐसी रिजल्ट बनाने के लिए क्या करेंगे? उसका तरीका क्या है? (अन्तर्मुखता) यह तो सदैव कहते हो 'अन्तर्मुख होना है'। लेकिन ना होने का कारण क्या है?

वापदादा से, सर्विस से स्नेह तो है ही। लेकिन पुरुषार्थ से स्नेह कम है। इसका भी कारण यह देखा जाता है कि – बहुत करके परिस्थितियों को देख परेशान हो जाते हैं, परिस्थितियों का आधार ले स्थिति को वनाते हैं। स्थिति से परिस्थिति को वदलते नहीं। समझते हैं कि जव परिस्थिति को बदलेंगे तव स्थिति होगी। लेकिन होनी चाहिए स्व-स्थिति की पावर, जिससे ही परिस्थितियां बदलती हैं। वो परिस्थिति है, यह स्व-स्थिति है। परिस्थिति में आने से कमजोरी में आ जाते, स्व-स्थिति में आने से शक्ति आती है। तो परिस्थिति में आकर ठहर नहीं जाना है। स्व-स्थिति की इतनी शक्ति है जो कोई भी परिस्थिति को परिवर्तन कर सकती है। स्व-स्थिति की कमजोरी होने के कारण कहाँ-कहाँ परिस्थिति प्रबल हो जाती है। मैजारिटी बच्चे यही कहते रहते हैं – "वावा। इस वात को ठीक करो तो हम ऐसे वनें। इस बात की रुकावट है।" ऐसे कोई विरले हैं जो अपनी हिम्मत दिखाते हैं कि इस

परिस्थिति को पार करके ही दिखायेंगे। अर्जी डालते हैं, यह भी ठीक है। लेकिन अर्जी के साथ-साथ जो शिक्षा मिलती है, उसको स्वरूप में लाते नहीं। सबकी अर्जियों की फ़ाइल बहुत इकट्ठी हो गई है। जैसे धर्मराज के चौपड़े होते हैं ना। वैसे वर्तमान समय बापदादा के पास बच्चों की अर्जियां बहुत हैं। हरेक का फाइल है। मुख्य बात तो सुनाई कि पुरुषार्थ से स्नेह रखना है। अपने को आप क्या कहते हो? (पुरुषार्थी हैं) आप पुरुषार्थी हो; फिर पुरुषार्थ को नहीं जानते हो? अपनी फाइल को जानते हो? अपना पुरुषार्थ क्या है, उसका पता है? साकार रूप में फाइनल स्थिति देखी ना। तो साकार रूप में कर्म करके दिखाया तो उससे फाइनल स्टेज का पता पड़ा ना। फाइनल स्टेज के प्रमाण जो कुछ कमी देखने में आती है, उस कमी को शीघ्र निकालना ही पुरुषार्थ से प्यार है। धीरे-धीरे नहीं करना चाहिए। साकार का भी मुख्य गुण देखा – वह कोई भी बात को पीछे के लिए नहीं छोड़ते थे, अभी ही करना है। जैसे वो 'अभी' करते थे वैसे ही 'अभी' करना है। ऐसे नहीं कि कब कर लेंगे। १० व १५ दिन के बाद कर लेंगे, मधुबन जाकर पिछाड़ी को प्रैक्टिस कर लेंगे – ऐसे इन्तजार बहुत करते हैं। इन्तजाम को भूल जाते हैं। इन्तजाम नहीं करते, बातों का इन्तजार बहुत करते हैं। इन्तजार को निकाल इन्तजाम में लग जायेंगे – फिर ७५% रिजल्ट हो जायेगी।

वर्तमान समय मैजारिटी के पुरुषार्थ की रिजल्ट ७५% से कम नहीं होनी चाहिए। (कारण भी सुना रहे हैं – कोई समय का इन्तजार कर रहे हैं, कोई समस्याओं का, कोई सम्बन्धों का, कोई फिर अपने शरीर का। लेकिन जैसे हैं, जो भी सामने हैं वैसी ही हालतों में, इस ही शरीर में हमको सम्पूर्ण बनना है – यह लक्ष्य रखना है। अभी कुछ आधार होने के कारण अधीन बन जाते हैं। बातों के अधीन हैं।) हरेक अपनी-अपनी कहानी अमृतवेले सुनाते हैं। कोई कहते हैं – शरीर का रोग ना हो तो हम बहुत पुरुषार्थ करें; कोई कहते – बन्धन हटा दो। लेकिन यह तो एक बन्धन हटेगा, दूसरा आयेगा। तन का बन्धन हटेगा, मन का आयेगा, धन का आयेगा, सम्बन्ध का आयेगा – फिर क्या करेंगे? यह खुद नहीं हटेंगे, अपनी ही शक्ति से हटाने हैं। कई समझते हैं – बापदादा हटायेंगे या समय प्रमाण हटेंगे। परन्तु यह नहीं समझना है।

अभी तो समय नजदीक पहुंच गया है, जिसमें अगर ढीला पुरुषार्थ रहा तो यह पुरुषार्थ का समय हाथ से खो देंगे। अभी तो एक-एक सेकेण्ड, एक-एक श्वास; मालूम है कितने श्वास चलते हैं? अनगिनत हैं ना। तो एक-एक श्वास, एक-एक सेकेण्ड सफल होना चाहिए — अभी ऐसा समय है। अगर कुछ भी अलबेलापन रहा तो जैसे कई बच्चों ने साकार मधुर मिलन का सौभाग्य गंवा दिया, वैसे ही यह पुरुषार्थ के सौभाग्य का समय भी हाथ से चला जायेगा। इसलिए पहले से ही सुना रहे हैं। पुरुषार्थ से स्नेह रख पुरुषार्थ को आगे बढ़ाओ। ऊपर से सारा खेल देखते रहते हैं। आप भी देख सकते हो। अगर अपनी ऊंच अवस्था में स्थित होकर देखो तो अपने सहित औरों का भी खेल देखने में आयेगा। बापदादा तो देखते रहते हैं। हंसी का खेल है। बड़े-बड़े महारथी शेर से नहीं डरते, मगर चींटी से डर जाते हैं। शेर से बड़ा सहज मुकाबला कर लेते, लेकिन चींटी को कुचलने का तरीका नहीं जानते। यह है महारथियों का खेल। घोड़ेसवार पता है क्या करते हैं? (गैलप करते हैं) घोड़ेसवारों का भी खेल देखते हैं। महारथियों का तो सुनाया। घोड़ेसवार जो हैं — उन्हों में हिम्मत-उत्साह बहुत है, पुरुषार्थ में कदम भी बढ़ाते हैं। लेकिन गैलप करते-करते (फिसल जाते हैं) फिसलते भी नहीं, गिरते भी नहीं, थकते भी नहीं, अथक भी हैं, चलते भी बहुत अच्छे हैं, लेकिन जो मार्ग की सीन-सीनरियां हैं उनमें आकर्षित हो जाते हैं। अपने पुरुषार्थ को चलाते भी रहते हैं लेकिन देखने के संस्कार जास्ती हैं। यह क्या कर रहे हैं, यह कैसे करते हैं — तो हम भी करें। रीस करते हैं। तो घोड़ेसवारों में देखने का आकर्षण ज्यादा है। प्यादों की एक हंसी की बात है। खेल सुना रहे हैं ना। वो क्या करते हैं? होती है बहुत छोटी-सी बात, लेकिन उसको इतना बड़ा पहाड़ बना देते! पहाड़ को राई नहीं, राई को पहाड़ बनाकर उसमें खुद ही परेशान हो जाते हैं। है कुछ भी नहीं, उनको सब-कुछ बना देते। ऊंचा-ऊंचा देख हिम्मतहीन हो जाते हैं। फिर भी वर्तमान समय जो भी तीनों ही हैं उनमें से आधा क्वालिटी ऐसी है जो अपने को कुछ बदल रहे हैं। इसलिए फिर भी बापदादा हर्षित होते हैं उन्हों की हिम्मत-उल्लास, कदम आगे बढ़ता हुआ देख। हरेक से पूछें कि कौन-कौन महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे हैं — तो बता सकेंगे? अच्छा!

१८.५.६९

रूहानी ज्ञान-योग के ज्योतिषी

आप सभी ने बुलाया या बापदादा ने आप सभी को बुलाया है? किसने किसको बुलाया है? जो बच्चे बाप के कर्त्तव्य में निमित्त बने हुये हैं – उन्हों को यह बात हर वक्त याद रखनी है कि हमें हर समय हर हालत में एवररेडी और आलराउन्ड होना है। अगर यह दो बातें सभी में आ जायें तो सर्विस का सबूत श्रेष्ठ निकल सकता है। लेकिन नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार यह बातें हैं। आप निमित्त बने हुए बच्चों को यह सलोगन याद रखना चाहिये कि – हम जो कर्म करेंगे, मुझे देख और सभी करेंगे। हर समय अपने को ऐसा समझो – जैसे ड्रामा की स्टेज पर सभी के सामने हम पार्ट बजा रहे हैं। एक होता है अपने आप से रिहर्सल; एक होता है स्टेज पर सभी के सामने पार्ट बजाना। तो स्टेज पर ऐक्ट करने वाले का अपने ऊपर कितना ध्यान रहता है! एक-एक ऐक्ट पर हर समय अटेन्शन रहता है। हाथों पर, पांवों पर, आंखों पर – सभी पर ध्यान रहता है। अगर कोई भी बात नीचे-ऊपर होती है तो ऐक्टर के ऐक्ट में शोभा नहीं देती। तो ऐसे अपने को समझकर चलना है।

तीन मिनट का रिकार्ड जब भरते हैं तो कितना ध्यान देते हैं! आप सभी भी अपने २१ जन्मों का रिकार्ड भर रहे हो। तो भरते समय बहुत ध्यान रखना है। रिकार्ड में जरा भी नीचे-ऊपर हो जाता है तो वह रिकार्ड हमेशा के लिये रद्दी हो जाता है। तुम्हारा भी २१ जन्मों के लिये सतयुगी राज़धानी का जो रिकार्ड भरता है – तो वह रद्द न हो जाये। रद्द हुआ तो फिर दूर हो जाते हैं। तो यह सोचना चाहिए – हमारे हर कर्म के ऊपर सभी की आंख है। ऐक्टर्स जब देखते हैं कि हमको सभी देख रहे हैं – तो खास अटेन्शन रहता है। कोई देखने वाला नहीं होता है तो अलबेलापन रहता है। तो हमेशा समझना चाहिए – हम भले अकेलेपन में कुछ करते, तो भी सृष्टि के सामने हैं, सारी सृष्टि की आत्माएं चारों ओर से हमें देख रही हैं।

अगर एक-एक फूल ऐसा सम्पूर्ण और सुन्दर हो जाये तो इस बगीचे की खुशबू कितनी फैल जाती! लेकिन क्यों नहीं फैलती, उसका कारण क्या? खुशबू

के साथ-साथ कहाँ-कहाँ बीच में और बातें भी आ जाती हैं। भले खुशबू कितनी भी हो – लेकिन खुशबू से भी जल्दी फैलने वाली बदबू होती है, जो ज़रा-सी बात सारी खुशबू को समाप्त कर देती है। अविनाशी खुशबूदार जिसको सदा गुलाब कहते हैं। एक होता है सदा गुलाब, दूसरा होता है गुलाब, तीसरा होता है रूहे गुलाब। पहला नम्बर है रूहे गुलाब। वह रूह की स्थिति में रहता है और रूहानी रूह के हमेशा नजदीक है। ऐसे हैं रूहे गुलाब। और दूसरी क्वालिटी जो है वह फिर सर्विस में बहुत अच्छे रहते हैं, बाकी रूहानी स्थिति में कमी है। सर्विस में, धारणा में अच्छे हैं, संस्कार शीतल हैं। खुद अपने को क्या समझते हो, किस नम्बर का फूल समझते हो? कांटे तो यहाँ हो भी न सकें। हैं तो सभी गुलाब, लेकिन गुलाब में भी फर्क है। जो रूहे गुलाब होंगे उनकी निशानी क्या होगी?

आप लोगों को मस्तक की रेखा परखने आती है? ज्योतिषी बने हो वा नहीं? बापदादा जो ज्ञान और योग की ज्योतिष दिखाते हैं उनसे क्या देखते हो? हरेक के मुखड़े से, नयनों से, मस्तक से मालूम पड़ता है। इसमें भी विशेष मस्तक और नयनों से मालूम पड़ता है। आप ज्योतिषी बनकर हरेक को परख सकते हो? नयनों में और मस्तक में वह रेखायें ज़रूर रहती हैं। किसको परखना – यह भी ज्योतिष विद्या है। तो यह जो विद्या है परखने की – यह कइयों में कम है। ज्ञान और योग सीखते हैं लेकिन यह परखने की ज्योतिष-विद्या भी जाननी है। कोई भी व्यक्ति सामने आए तो आप लोगों को तो एक सेकेण्ड में उनके तीनों कालों को परख लेना चाहिए – एक तो पास्ट में उनकी लाइफ क्या थी और वर्तमान समय उनकी वृत्ति-दृष्टि और भविष्य में कहाँ तक यह अपनी प्रारब्ध बना सकते हैं। यह जानने की प्रैक्टिस चाहिए। यह परखने की जो नालेज है वह बहुत कम है। यह कमी अभी भरनी चाहिए।

वर्तमान समय जो आने वाला है उसमें, अगर यह गुण नहीं होगा, कमी होगी तो धोखे में आ जायेंगे। कई ऐसी आत्माएं आपके सामने आयेंगी जो अन्दर एक और बाहर से दूसरी होंगी। परीक्षा के लिए आयेंगी। क्योंकि कई समझते हैं कि यह सिर्फ रटे हुए हैं। तो कई रंग-रूप से, आर्टिफीसियल रूप

में भी परखने लिए आयेंगे, भिन्न-भिन्न रूप से। इसलिये यह ध्यान रखना है कि – "यह किसलिये आया है? उनकी वृत्ति क्या है?" और अशुद्ध आत्माओं की भी बड़ी सम्भाल करनी है। ऐसे-ऐसे केस भी बहुत होंगे। दिन-प्रतिदिन पाप आत्मायें तो बहुत होते हैं। आपदायें, अकाले मृत्यु, पाप कर्म बढ़ते जाते हैं। तो उन्हों की वासनाएं जो रह जाती हैं वह फिर अशुद्ध आत्माओं के रूप में भटकती हैं। इसलिये यह भी बहुत बड़ी सम्भाल रखनी है। कोई में अशुद्ध आत्मा की प्रवेशता होती है तो उनको भगाने लिए एक तो धूप जलाते हैं और आग में चीज को तपाकर लगाते हैं और लाल मिर्ची भी खिलाते हैं। तो आप सभी को फिर योग की अग्नि से काम लेना है। हर कर्मेन्द्रिय को योगाग्नि में तपाना है। फिर कोई वार नहीं कर सकेंगे। थोड़ा भी कहाँ ढीलापन हुआ, कोई भी कर्मेन्द्रिय ढीली हुई तो फिर प्रवेशता हो सकती है। वह अशुद्ध आत्माएं भी बड़ी पावरफुल होती हैं। वह माया की पावर भी कम नहीं होती। यह बहुत ध्यान रखना है। और कई प्राकृतिक आपदाएं भी अपना कर्तव्य करेंगी। उसका सामना करने लिये अपने में ईश्वरीय शक्ति धारण करनी है। उस समय स्नेह नहीं रखना है, उस समय शक्तिरूप की आवश्यकता है। किस समय स्नेहमूर्त, किस समय शक्तिरूप बनना है – यह भी सोचना है। इन सभी बातों में शक्तिरूप की आवश्यकता है। अगर कोई ऐसा आया और उनको ज्यादा स्नेह दिखाया तो कहाँ नुकसान भी हो सकता है। स्नेह बापदादा और दैवी परिवार से करना है, बाकी सभी से शक्तिरूप से सामना करना है। कई बच्चे गफ़लत करते हैं जो उन्हों के स्नेह में आ जाते हैं। वह स्नेह वृद्धि होकर कमज़ोर कर देता है। इसलिये अब शक्तिरूप की आवश्यकता है।

अन्तिम नारा भी 'भारत माता शक्ति अवतार' का गायन है। गोपी माता थोड़ेही कहते हैं। अब शक्ति रूप का पार्ट है। गोपीकाओ का रूप साकार में था। अब अव्यक्त रूप से शक्ति का पार्ट है। हरेक जब अपने शक्तिरूप में स्थित होंगे तो इतने सभी की शक्ति मिला कर कमाल कर दिखायेगी! यादगार रूप में अन्तिम चित्र कौनसा दिखाया हुआ है? पहाड़ को अंगुली देने का। अंगुली – यह शक्ति की देनी है। इससे ही कलियुगी पहाड़ खत्म

होगा। इसमें हरेक की अंगुली की दरकार है। अभी वह अंगुली पूरी रीति नहीं दी है। उठाते जरूर हैं – परन्तु कोई की कभी सीधी, कोई की कभी टेढ़ी हो जाती है। जब पूरी अंगुली होगी तब प्रभाव निकलेगा। एक जैसे अंगुली देनी है। इस कलियुगी पहाड़ को जल्दी अंगुली देकर फिर सतयुगी दुनिया को लाना है। साकार के साथ स्नेह है तो जल्दी-जल्दी इस पुरानी दुनिया से चलने की तैयारी करो। आप कहेंगे – अभी सर्विस कहाँ हुई है। लेकिन सर्विस भी किसके लिये रुकी है? अगर आप हरेक शक्तिरूप में स्थित हो जाओ तो आपके जो भूले-भटके भक्त हैं, न चाहते भी चक़मक़ (चुम्बक) के आगे आ जायेंगे, देरी नहीं लगेगी। अच्छ

२६.५.६९

सम्पूर्ण स्नेही की परख

सभी किस स्थिति में बैठे हो? लग्न में बैठे या मग्न अवस्था में? किस अवस्था में हो? ज्यादा समय लग्न लगाने में जाता है या मग्न रूप में हो? अपनी चेकिंग तो करते होंगे। अच्छा! सभी की यही इच्छा है कि हमारे पेपर की रिजल्ट का मालूम पड़े। विशेष सभी के दिलों में यही संकल्प चलता रहता है। तो आज रिजल्ट भी सुना देते हैं। सभी ने जो भी लिखा है यथा योग्य, यथा शक्ति – टोटल रिजल्ट यही कहेंगे कि बाप में निश्चयबुद्धि तो हैं; लेकिन जितना ही बाप में निश्चय है उतना ही बाप के महावाक्यों में, फरमान में निश्चयबुद्धि होकर चलना – वह अभी पुरुषार्थ में ५०% देखने में आता है। बाप में निश्चय तो १००% है; लेकिन बाप के फरमान और आज्ञाओं में निश्चयबुद्धि होकर के जो फरमान मिला और किया – ऐसे फरमान में निश्चयबुद्धि मैजारिटी ५०% की रिजल्ट में हैं। ऐसे ही टीचर में निश्चय है; लेकिन उनकी पूरी पढ़ाई जो है उसमें पूर्ण रीति से चलना – वह भी अपनी-अपनी परसेन्टेज की रिजल्ट है। ऐसे ही गुरु रूप में भी 'सद्गुरु' है – यह पूरा निश्चय है; लेकिन उनकी श्रीमत पर चलना – उसकी टोटल

की इन कुमारियों में बहुत उम्मीद है। उम्मीदवार रत्नों को बापदादा नयनों में समाते हैं। अच्छा !

१८.६.६१

पार्टियों के साथ

(१) पाठशाला में जाते हो। पाठशाला का पहला पाठ क्या है ? अपने को मरजीवा बनाना। मरजीवा अर्थात् अपनी देह से, मित्र-सम्बन्धियों से, पुरानी दुनिया से मरजीवा। यह पहला पाठ पक्का किया है ? (संस्कार से मरजीवा नहीं हुए हैं) जब कोई मर जाता है तो पिछले संस्कार भी खत्म हो जाते हैं। तो यहाँ भी पिछले संस्कार क्यों याद आने चाहिएं ! जबकि जन्म ही दूसरा; तो पिछली बातें भी खत्म होनी चाहिएं। यह पहला पाठ है मरजीवा बनने का। वह पक्का करना है। पिछले पुराने संस्कार ऐसे लगने चाहिएं जैसे और कोई के थे, हमारे नहीं। पहले शूद्रों के थे, अभी ब्राह्मणों के हैं। तो पुराने शूद्रों के संस्कार नहीं होने चाहिएं। पराये संस्कार अपने क्यों बनाते हो। जो पराई चीज़ को अपना बनाते हैं उनको क्या कहेंगे ? चोर। तो यह भी चोरी क्यों करते हो ? यह तो शूद्रों के संस्कार हैं, ब्राह्मणों के नहीं। शूद्र की चीज़ को ब्राह्मण स्वीकार क्यों करते हैं ! अछूत के साथ कपड़ा भी लग जाये तो नहाते हैं। तो शूद्रपने का संस्कार ब्राह्मणों को लग जाये तो क्या करना चाहिए ? उसके लिए पुरुषार्थ करना चाहिए। जैसे गन्दी चीज़ को नहीं छूते हैं, वैसे पुराने संस्कारों से बचना है, छूना नहीं है। इतना जब ध्यान रखेंगे तो औरों को भी ध्यान दिला सकेंगे।

(२) सर्विस की सफलता का मुख्य गुण कौनसा है ? नम्रता। जितनी नम्रता उतनी सफलता। नम्रता आती है निमित्त समझने से। निमित्त समझकर सर्विस करना। नम्रता के गुण से सब आपके आगे नमन करेंगे। जो खुद झुकता है उसके आगे सभी झुकते हैं। निमित्त समझकर कार्य करना है। जैसे बाप शरीर का आधार निमित्त मात्र लेते हैं, वैसे आप समझो कि निमित्त-मात्र शरीर का आधार लिया है। एक तो शरीर को निमित्त-मात्र समझना है और दूसरा सर्विस

में अपने को निमित्त समझना, तब नम्रता आयेगी। फिर देखो, सफलता आपके आगे चलेगी। जैसे बापदादा टेम्परेरी देह में आते हैं, ऐसे देह को निमित्त आधार समझो। बापदादा की देह में अटैचमेन्ट होती है क्या? आधार समझने से अधीन नहीं होंगे। अभी देह के अधीन होते हो, फिर देह को अधीन करेंगे।

(३) गायन है – दृष्टि से सृष्टि बनती है। कौनसी सृष्टि बनती है और कब बनती है? दृष्टि और सृष्टि का ही गायन क्यों है, मुख का गायन क्यों नहीं है? संगम पर पहले-पहले क्या बदली करते हैं? पहला पाठ क्या पढ़ाते हैं? भाई-भाई की दृष्टि से देखो। भाई-भाई की दृष्टि अर्थात् पहले दृष्टि को बदलने से सब बातें बदल जाती हैं। इसलिए गायन है कि दृष्टि से सृष्टि बनती है। जब आत्मा को देखते हैं तब यह सृष्टि पुरानी देखने में आती है। पुरुषार्थ भी मुख्य इस चीज का ही है – दृष्टि बदलने का। जब यह दृष्टि बदल जाती है तो स्थिति और परिस्थिति भी बदल जाती है। दृष्टि बदलने से गुण और कर्म आपेही बदल जाते हैं। यह आत्मिक दृष्टि नैचुरल हो जाये।

(४) जो संगमयुग पर अपना राजा बनता है वह प्रजा का भी राजा बन सकता है। जो यहाँ अपना राजा नहीं वह वहाँ प्रजा का राजा भी नहीं बन सकता। संगमयुग पर ही सभी संस्कारों का बीज पड़ता है। यहाँ के बीज के सिवाए भविष्य का वृक्ष पैदा हो नहीं सकता है। यहाँ बीज न डालेंगे तो फूल कहाँ से निकलेगा! यहाँ अपना राजा बनने से क्या होगा? अपने को अधिकारी समझेंगे। अधिकारी बनने के लिए उदारचित का विशेष गुण चाहिए। जितना उदारचित्त होंगे उतना अधिकारी बनेंगे।

(५) ब्राह्मणों का मुख्य कर्त्तव्य है पढ़ना और पढ़ाना। इसमें बिजी रहेंगे तो और बातों में बुद्धि नहीं जायेगी। तो अपने को पढ़ने और पढ़ाने में बिजी रखो। बापदादा ने सुनाया है कि मन की वृत्ति और अव्यक्त दृष्टि से सर्विस कर सकते हो। अपनी वृत्ति-दृष्टि से सर्विस करने में कोई बन्धन नहीं है। जिस बात में स्वतन्त्र हो वह सर्विस करनी चाहिए।

२६.६.६९

(१)

शिक्षा देने का स्वरूप – अपने स्वरूप से शिक्षा देना

बाप किसको देख रहे हैं ? बच्चों को देख रहे हैं ? आज मुरली में क्या सुना था। आप सभी किसको याद करते हो ? (बाप, टीचर, सद्गुरु को) तो बापदादा भी सिर्फ बच्चों को नहीं लेकिन तीनों सम्बन्धों से तीनों रूप से देखते हैं। बच्चे तो सभी हैं लेकिन टीचर रूप में क्या देखते हैं ? नम्बरवार स्टूडेंट को देखते हैं। और गुरू रूप से किसको देखते हैं, मालूम है ? नम्बरवार फॉलो करने वालों को। जिन्होंने फॉलो किया है और जिन्हों को अभी करना है – दोनों को देखते हैं। मुख्य फॉलो कौनसा है ? गुरु रूप से जो शिक्षा देते हैं, उसमें मुख्य फॉलो किसको करना है ? गुरु रूप से मुख्य फॉलो क्या है ? (याद की यात्रा) याद की यात्रा तो एक साधन है। लेकिन वह भी किसलिये कराते हैं ? (दूसरों की सद्गति करने लिए) पहले अपने को क्या फालो करना पड़ेगा ? याद की यात्रा भी किसलिये सिखाई जाती है ?

गुरु रूप से मुख्य फालो यही करना है – अशरीरी, निराकारी, न्यारा बनना। याद की यात्रा भी इसलिये करते हैं कि साकार में रहते निराकार और न्यारे अशरीरी हो रहें। जब अशरीरी बनेंगे तब तो गुरु के साथ जा सकेंगे। मुख्य रूप से तो यही फालो कर रहे हो और करना है।

टीचर रूप का पार्ट अभी चल रहा है या पूरा हो चुका है ? रिवाइज़ कोर्स टीचर करा रहे हैं या अपने आप कर रहे हो ? (उनकी मदद है) पढ़ाई पढ़ाते नहीं हैं लेकिन मदद है। रिवाइज़ कोर्स के लिये स्कूल से छुट्टी ली जाती है, जिसको होमवर्क कहा जाता है। लेकिन टीचर का कनेक्शन रहता है। साथ नहीं रहता, सिर्फ कनेक्शन रहता है। कनेक्शन तब तक है जब तक फाइनल पेपर हो। रिवाइज कोर्स के लिये टीचर हर वक्त साथ नहीं रहता है। तो अभी टीचर दूर से ही देखरेख कर रहे हैं। कहाँ भी कोई मुश्किलात हो तो पूछ सकते हो। लेकिन जैसे पढ़ाई के समय साथ रहते थे वैसे अब साथ नहीं। अभी ऊपर से बैठ अच्छी रीति देख रहे हैं कि रिवाइज कोर्स में कौन-कौन कितनी शक्ति से, कितनी मेहनत से, उमंग-उत्साह से कोर्स को पूरा कर रहे हैं। ऊपर से बैठ

दृश्य कितना अच्छा देखने का रहता है ! जैसे यहाँ ऊपर (संदली पर) बैठ देखने में और नीचे बैठ देखने में फर्क होता है ना । इनसे भी ऊपर कोई बैठकर देखे तो कितना फर्क होगा ! बुद्धिबल से महसूस कर सकते हो)क्या अनुभव होता है ? आज अनुभव सुनाते हैं । अनुभव सुनने और सुनाने की तो परम्परा से रीत है । तो वतन में रहते क्या अनुभव करते हैं ? वतन में होते भी टीचर का कनेक्शन होने कारण देखते हैं — कोई-कोई बहुत अलौकिकपन से पढ़ाई को रिवाइज कर रहे हैं, कोई समय गंवा रहे हैं, कोई समय सफल कर रहे हैं । जब देखते हैं कि समय को गँवा रहे हैं; तो मालूम क्या होता है ? तरस तो आता है लेकिन तरस के साथ-साथ जो सम्बन्ध है, वह सम्बन्ध भी खिंचता है । फिर दिल होती है कि अभी-अभी बाबा से छुट्टी लेकर साकार रूप में उन्हों का ध्यान खिंचवायें । लेकिन साकार रूप का पार्ट तो पूरा ही हुआ । इसलिए दूर से ही सकाश देते हैं । बाबा जैसे साकार रूप में लाल झण्डी दिखाते थे ना, वैसे ही वतन में भी । लेकिन देखने में आता है कि अव्यक्त रस को, अव्यक्त मदद को बहुत थोड़े ले पाते हैं ।

जो भी रास्ता तय करते विघ्न आते हैं उन विघ्नों को पार करने के लिये मुख्य कौनसी शक्ति चाहिए ? (सहनशक्ति) सहनशक्ति से पहले कौनसी शक्ति चाहिए ? विघ्न डालने वाली कौनसी चीज है ? (माया) सुनाया था कि — विघ्नों का सामना करने के लिये पहले चाहिए परखने की शक्ति, फिर चाहिए निर्णय करने की शक्ति । जब निर्णय करेंगे — यह माया है वा यथार्थ है, फायदा है वा नुकसान, अल्पकाल की प्राप्ति है वा सदाकाल की प्राप्ति है ? **जब निर्णय करेंगे तो निर्णय के बाद ही सहनशक्ति को धारण कर सकेंगे ।** पहले परखना और निर्णय करना है । जिसकी निर्णय शक्ति तेज होती है वह कब हार नहीं खा सकता । हार से बचने के लिये अपनी निर्णय शक्ति और परखने की शक्ति को बढ़ाना है । निर्णय शक्ति बढ़ाने के लिये पुरुषार्थ कौनसा करना है ? याद की यात्रा तो आप झट कह देते हो । लेकिन याद की यात्रा को भी बल देने वाला कौनसा ज्ञान अर्थात् समझ है, वह भी स्पष्ट बुद्धि में होना चाहिए । टोटल तो रखा है; लेकिन टोटल में कहाँ-कहाँ फिर टोटा (घाटा) पड़ जाता है । स्कूल में कई बच्चे एक, दो को देख टोटल तो निकाल

देते हैं, लेकिन जब मास्टर पूछता – टोटल कैसे किया है ? तो मूंझ जाते हैं। तो आप टोटल याद की यात्रा कह देते हो; लेकिन वह टोटल किस तरीके से होगा, वह भी जानना है। तो निर्णय शक्ति को वढ़ाने लिये मुख्य किस वात की आवश्यकता है ? (विचार सागर मंथन) विचार सागर मंथन करते-करते सागर में ही डूव जाये तो ? कई वैठते हैं विचार सागर मंथन करने, लेकिन कोई-कोई लहर ऐसी आती है जो साथ ले जाती है। जैसे कोई भी स्थूल शारीरिक ताकत कम होती है तो ताकत की खुराक दी जाती है। वैसे ही निर्णय शक्ति को बढ़ाने लिये मुख्य खुराक यही है, जो पहले भी सुनाया – अशरीरी, निराकारी और कर्म में न्यारे। निराकारी वा अशरीरी अवस्था तो हुई बुद्धि तक, लेकिन कर्म से न्यारा भी रहे और निराला भी रहे, जो हर कर्म को देखकर के लोग भी समझें कि – यह तो निराला है, यह लौकिक नहीं, अलौकिक है। तो निर्णय शक्ति को वढ़ाने के लिये यह वहुत आवश्यक है। जितना इन वातों को धारण करेंगे उतना ही अपने विघ्नों को भी मिटा सकेंगे और जो सृष्टि पर आने वाले विघ्न हैं, उन्हों से वच सकेंगे। शिक्षा तो बहुत मिलती है, लेकिन अव क्या करना है ? शिक्षा-स्वरूप वनना है। शिक्षा और आपका स्वधर्म अलग नहीं होना चाहिए। आपका स्वरूप ही शिक्षा होना चाहिए। स्वरूप से शिक्षा दी जाती है। कई वातों में वाणी से शिक्षा नहीं दी जाती है लेकिन अपने स्वरूप से शिक्षा दी जाती है। तो अब शिक्षा-स्वरूप बनकर के अपने स्वरूप से शिक्षा देनी है। शिक्षा तो वहुत मिली। कोर्स तो पूरा हुआ ना।

(एक प्रश्न पूछा था कि – अव जो बापदादा अन्य तन में आते हैं, तो जैसे साकार रूप में मुरली चलाते थे वैसे ही क्यों नहीं चलाते ? क्या वैसे ही मुरली नहीं चला सकते हैं ? क्यों भाषा वदली, क्यों तरीका वदला ? ऐसे प्रश्न वहुतों को उठते हैं। जबकि तुम भाषण कर सकते हो तो वापदादा को कोई भी तन द्वारा मुरली चलाना मुश्किल है ? लेकिन क्यों नहीं चलाते हैं ? (दो-चार ने अपने विचार सुनाये) जिस तन द्वारा पढ़ाने का पार्ट था, वह पढ़ाई का कोर्स तो पूरा हुआ। अव फिर पढ़ाई-पढ़ाने लिये नहीं आते। वह कोर्स था, उसी तन द्वारा पूरा हो चुका है। अभी तो आते हैं मिलने के लिये, वहलाने के लिये।

और मुख्य बातें कौनसी हैं? जैसे – अशरीरी, कर्मातीत बनकर के क्या किया? एक सेकेण्ड में पंछी बन उड़ गया। साकार शरीर से एक सेकेण्ड में उड़े ना। तो अब पढ़ाई पूरी हुई। बाकी एक कार्य रहा हुआ है – साथ ले जाने का। इसलिए अब सिर्फ मिलने, अव्यक्त शिक्षाओं से बहलाने और उड़ाने लिये आते हैं। पढ़ाई के प्वाइन्ट्स, पढ़ाई का रूप अब नहीं चल सकता है। अभी कोर्स रिवाइज़ हो रहा है। लेकिन कितने समय में रिवाइज़ करेंगे? कितने तक कोर्स पूरा हुआ है? अभी यह सभी को निर्णय करना है कि – कहाँ तक रिवाइज कोर्स हुआ है, कितना समय अब चाहिए? साकार तन के हर कर्म, हर स्थिति से अपने को भेंट करना। यह लक्ष्य रखते अपने को देखो। फिर पता पड़ेगा कि कहाँ तक हैं। लक्ष्य तो बता दिया कि कैसे अपने को परखना, फिर उत्तर देना।

दूसरा प्रश्न यह देते हैं। होमवर्क तो तुम्हारा चल ही रहा है, उसमें विशेष ध्यान खिंचवाते हैं। यह जो पार्ट भावी प्रमाण हुआ है, उस साकार रूप को अव्यक्त क्यों बनाया? इसके भी कई गुह्य रहस्य हैं। इसकी गहराई में जाना। सागर की लहरों में नहाने नहीं लग जाना लेकिन सागर के तले में जाना। फिर जो रत्न मिलें वह ले आना। यह सोचना – इनका गुह्य रहस्य ड्रामा में क्या नूंधा हुआ है? ऊपर कोई गुह्य रहस्य है। बिना रहस्य के तो कोई भी चलन हो ही नहीं सकती। अच्छा, अभी टाइम हो गया है।

१०

६.७.६९

टीचर्स के प्रति अव्यक्त बापदादा के महावाक्य

(सभी किसकी याद में बैठे हो ? एक की याद थी या दो की ? जो एक की याद में थे वह हाथ उठायें । और जो दो की याद में थे वह भी हाथ उठायें । अब वह दो कौन ? अव्यक्त वतन-वासी वा व्यक्त वतन-वासी ? आप सब टीचर्स हैं ना । आपके पास कोई जिज्ञासु आवे तो उनको कौनसा ठिकाना देंगे ? सबको टीचिंग क्या देंगे ? आप टीचर्स हो ना । टीचर्स अपने टीचर का शो निकालते हैं । जिज्ञासु को जिस रीति परवरिश करेंगे और ठिकाना देंगे; वह टीचर का शो निकलता है । अगर आप जिज्ञासु को आने से ही अव्यक्त वतन का ठिकाना देंगे जो रास्ता कब देखा ही नहीं तो पहुंचेगा कैसे ? पहले एड्रेस कौनसी दी जाती है ? आप संग्रहालय में क्या समझाते हो ? जिज्ञासु को क्या परिचय देते हो ? उनको कौनसा रास्ता, कौनसा ठिकाना देते हो ? बीज किसने बोया ? बीज तो बीज ही है । वह बीज भल सड़ भी जाए, तो भी समय पर कुछ न कुछ टालियां आदि निकलती रहती हैं, बरसात पड़ती है तो निकल आता है । आप बीज को भूल जायेंगे तो फिर रास्ता कैसे बतायेंगे ! बीज कौनसा है ?)

टीचर्स को युक्तियुक्त बोलना चाहिए । छोटे बच्चे तो नहीं हो ना । छोटे बच्चों को पहले से सिखलाया जाता है । आप तो सीखकर, इतनी परवरिश लेकर यही इम्तहान देने आये हो । पढ़ेंगे भी, साथ में इम्तहान भी देंगे । दोनों कार्य इक्ट्ठे चलेंगे । (बाप अव्यक्त वतन-वासी बना, तो आप सबको भी अव्यक्त वतन-वासी बनना है । वह किस सृष्टि पर खड़े होकर अव्यक्त बने ? आपको कहाँ बनना है ? (साकार सृष्टि में) सृष्टि तो आलराउन्ड गोल है । सृष्टि में सारा झाड़ समाया हुआ है । परन्तु सृष्टि का ठिकाना संगम है । संगम की बलिहारी है, जिसने आप सबको यहाँ पहुंचाया । आप अपने ठिकाने को भूल जायेंगे तो फिर क्या होगा ? ठिकाना देने वाला ही भूल जायेगा । ठिकाना पक्का याद करो और बापदादा की जो पढ़ाई मिली है उनको धारण करो ।) धारणा से धैर्यवत, अन्तर्मुख होंगे । उससे कलियुगी रावण राज्य को खत्म कर देंगे । तो अब पढ़ाई का समय और साथ-साथ इम्तहान देने का भी समय

है। यह हुई एक वात।

दूसरी वात – जरा ध्यान में रखो इतना समय जो वापदादा की गोद में पले और उसमें जो भी कुछ कर्त्तव्य किया। ऐसे भी है – कोई-कोई ने लज्जा के मारे वापदादा से छिपाया है। ऐसे नहीं बाप को पहचान कर सब बाप के आगे रखा है। नहीं। जो समझते हैं – ऐसी भी भूल हुई है। जैसे कोई अपनी दिल से भूल नहीं करते हैं, परन्तु अलबेलाई से हो जाती है। तो यह सबको लिखना है। वापदादा से जिन्होंने वात की है, उन्हों को भी लिखनी है सारी जन्म-पत्री। यह अन्त का समय है ना। ८४ का हिसाब-किताब यहाँ ही चुक्तू होता है। 'सच्चाई' और 'सफाई' अक्षर तो कहते हैं, परन्तु सच्चाई और सफाई में भी अन्तर क्या है – उस अर्थ को नहीं समझा है। अब उसकी गहराई में जाकर सारा लिखना है।

अव्यक्त वतन से वापदादा वच्चों की सर्विस करने और साफ वनाने लिए आये हैं। वाप सेवा करते हैं। आप सब वच्चों का शुरू से लेकर अन्त तक वाप सेवक है। सेवा करने लिए सदैव तैयार है। वाप को कितना फखुर रहता है – हमारे वच्चे सिरमौर हैं, आंखों के सितारे हैं! जिन्हों के लिए स्वर्ग स्थापन हो रहा है, उस स्वर्ग के वासी वनाने के लिए तैयार कर रहे हैं! जो समझते हैं – हम लक्ष्मी-नारायण वनेंगे। इतना लक्ष्य पकड़कर फिर भी गफलत करते रहते हैं। इसलिए वापदादा फिर भी सेवा करने आये हैं। अन्त मति सोगति। समय नहीं है। समय वहुत नजदीक आने वाला है। आप शेरनी शक्तियों को भुजायें तैयार करनी हैं। तव तो दुश्मन से लड़ सकेंगे। अगर अपने में फेथ नहीं, वापदादा का पूरा परिचय नहीं – तो न शक्ति सेना वन सकेंगे, न वह शक्तिपने के अलंकार आयेंगे। अगर शक्ति अपने में धारण की, तो फिर आने वालों को भी पूरा ठिकाना मिलेगा और वे सव शक्ति-सेना में दाखिल हो जायेंगे। तो अपने को सच्चा जेवर वनाने के लिए सब खामियां निकाल स्वच्छ वनना है। सोना कितने किस्म का होता है! कोई ९ कैरेट कोई १२—। प्योअर तो प्योअर ही है। कैरेट अक्षर निकल जाना चाहिए। अपने को करेक्ट करना है। अब करेक्शन करने का समय मिला है। यह वात अच्छी रीति ध्यान पर रखना।

(२) (२)

धरत परिये धर्म न छोड़िये । कौनसा धर्म, कौनसा धरत ? मालूम है ? एक बार वायदा कर लिया, बापदादा को हाथ दे दिया; फिर धर्म को नहीं छोड़ना है । पतिव्रता नारी जो होती है वह अपने धर्म में बहुत पक्की रहती है । आप सच्ची-सच्ची सीता, सच्ची लक्ष्मी हो जो महालक्ष्मी बनने वाली हो । अपने लक्ष्य से अगर उतर गये हो तो फिर जम्प मार लक्ष्य पर बैठ जाओ । बापदादा आप बच्चों की सेवा करने के लिए सेवक बनकर शिक्षा दे रहे हैं । फरमान नहीं करते हैं परन्तु शिक्षा देते हैं । क्योंकि बाप टीचर भी है, सतगुरु भी है । अगर बच्चों को फरमान करें और न मानें, तो वह भी अच्छा नहीं । इसलिए शिक्षा देते हैं ।

आज फाउन्डेशन पड़ता है । छोटे बच्चों को तो टीका लगाया जाता है, उनको रास्ता बताना होता है — क्या करना है, कैसे बनना है । आप सबको रास्ता तो मिल ही गया है । आप औरों को रास्ता बताने के निमित्त बने हो । अगर उस रास्ते में कोई गड़बड़ है, अगर-मगर है; तो वह निकालनी है । अब भी नहीं निकलेगी तो आगे के लिए जो शक्तियों को बल मिला है, वह खलास समझो । ऐसा बापदादा को कहाँ-कहाँ दिखाई दे रहा है । इसलिए संगठन में सबके दिलों को एक दिल बनाने, पूरा रास्ता बताने लिए आप को बुलाया है । आप सबको खुशी होगी । छोटे-छोटे बच्चों को कहाँ फंक्शन आदि पर ले जाना होता है तो बहुत खुशी होती है ना — वहाँ जायेंगे, नया कपड़ा पहनेंगे ! आप सबको नया कपड़ा श्रृंगार आदि कौनसा करना है ? एक तरफ सेवक भी बनना है । सेवक अर्थात् पतित आत्माओं का उद्धार करना । उस सेवा को कायम रखो । आप सबको आने वाली आत्माओं का कैसे उद्धार करना है ? कैसे विघ्नों को हटाना है ? तीर में जौहर भरा हुआ होगा तो एक ही बार में पूरा तीर लग जायेगा, उस आत्मा का भी उद्धार हो जायेगा । छोटी-छोटी बच्चियां किसका उद्धार करेंगी ? कौनसा पहाड़ उठाया है ? पहाड़ उठाने के कौन निमित्त है ? गोप-गोपिकायें । गोपिका भी तब हो सकती जब पूरा कर्त्तव्य करे । पहाड़ भी तब उठा सकते जब इतना बल हो । तो इन सब बातों की रोशनी देने लिए बाप को आना पड़ा है ।

बाकी टीका तो एक ही बार बापदादा ने लगा दिया है। लाल टीका है या चन्दन का? लाल टीका है सूरत की शोभा, चन्दन है आत्मा की शोभा। तुमको जेवर भी सूरत की शोभा के लिए नहीं पहनने हैं, वस्त्र भी दुनिया को दिखाने लिए नहीं पहनने हैं। परन्तु आन्तरिक अपने को ऐसा श्रृंगारना है, जेवर ऐसा पहनना है जो लोक-पसन्द हो वा दिल-पसन्द हो। लोक-पसन्द है बाहर मुख, दिल-पसन्द है अन्तर्मुख। तो अन्तर्मुख होकर अपने को सजाना है। लोक-पसन्द भाषण किया, खुश किया। परन्तु भाषा का जो रहस्य, तन्त है वह एक-एक अपनी कर्मेन्द्रियों में बस जाए, तब ही शोभा हो। कर्त्तव्य से दैवी गुणों का शो हो। दैवी गुणों का क्लास होता है सज़ने के लिए। ऐसे ही सज-सज कर संगम से पार होना है। फिर अपने घर जाना है। फिर घर से कहाँ जाना है? ससुर-घर। कन्या ससुर-घर जाती हैं अगर पढ़ी-लिखी-अक्लमंद नहीं होती तो सासु-ससुर कहते हैं – इनमें चलने, उठने-बैठने का अक्ल नहीं है। अब तुमको ससुर-घर चलना है। तो बाप कदम-कदम को नहीं देखते, परन्तु एक-एक कर्मेन्द्रियों को देखेंगे। कदम अक्षर मोटा है। कदम से पदम मिलता है, वह अपने कल्याण के लिए है। परन्तु कर्मेन्द्रियों को सजाना है। गहना पहनकर चलना है। अब सजने के लिए किसके पास आये हो? बापदादा के घर सो अपने घर आये। सजाने वाले कौन हैं? जब सगाई होती है तो गहना बनाने वाला एक होता है, पहनाने वाला दूसरा होता है। तो अब सज़कर चलना है। समझा?

समझू-सयानी टीचर तो हो ही। १५ दिन की रिजल्ट मानो अन्त की रिजल्ट है! इतना पुरुषार्थ कर प्रवीण टीचर सबको बनना है। फिर जब अपना सेन्टर जाकर सम्भालेंगे तो आने वाले को दृष्टि से सतयुगी सृष्टि दिखा सकेंगे। वह तब होगा जब गहने अच्छी रीति पहनेंगे। अगर लापरवाही से कोई गहना गिर गया तो नुकसान भी होगा और सजावट की शोभा भी चली जायेगी। इसलिए न शोभा को हटाना है, न गहनों को उतारना है। बड़ी बात नहीं है। छोटी समझेंगे तो सहज समझ आयेगी। अगर कहेंगे – बहुत बड़ा ऊंचा ज्ञान है; तो कोई नहीं आयेगा। कहेंगे – ७ दिन में जीवन-मुक्ति की प्राप्ति होती है; तो लाटरी लेने सब आयेंगे। लाटरी सब डाल देते हैं। फिर लाटरी में

किसको कुछ मिल जाता है तो नसीब मानते हैं। चांस है, देखें, नसीब किसका लगता है। किसको बड़ी लाटरी मिलती है, किसको छोटी। पेपर लास्ट में होगा। ३ नम्बर निकलेंगे। जितना जो पुरुषार्थ करेंगे उतना नम्बर मिलेगा। नसीब को बनाना खुद के हाथ में है। तो अब की इन्तजार में नहीं रहना, इन्तजाम करते रहना। अच्छा !

बहुत कुछ खजाना मिला। अब उसको अपने पास जमा करो और गऊ मिसल उगारना है। आप सब गायें भी हो, गोपियां भी हो। पहाड़ को कैसे उठाना है, गऊ बन कैसे उगारना है – यह कर्त्तव्य इस भट्टी में करना है। बहु रूप धारण कर बहु कर्त्तव्य बजाना है। भट्टी के अन्दर सब अनुभव करना है। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतनी रिजल्ट निकलेगी। सम्पूर्ण अवस्था को प्राप्त करने का लक्ष्य क्या है, साधन क्या है; उसको जानना है। साधन मिल जायेंगे तो लक्ष्य को पकड़ लेंगे। रत्नों की भी परख चाहिए ना। पूरी वैल्यू रखनी है। जेवर की वैल्यू जवाहरी ही परख सकेगा। जिनको परख नहीं उनके पास वैल्यू नहीं रहेगी। परख तब होगी जब जेवर पर पालिश हो, चमक हो। तब वैल्यू भी होगी और पहचानने वाले पहचान लेंगे। चमकदार नहीं होगा तो खरीद कौन करेंगे ! समझेंगे – "पता नहीं सच्चा है वा झूठा जेवर है। पैसा भी देवें, जेवर भी काम का न हो; इससे क्या फायदा।" तो आप सबकी पूरी सज़ावट हो जायेगी, तो खरीददार भी निकलेंगे और आप वतन-वासी बनते जायेंगे।

"बाप अव्यक्त वतन-वासी बना, तो आप सबको भी अव्यक्त वतन-वासी बनना है। वह किस सृष्टि पर खड़े होकर अव्यक्त बने ? आपको कहाँ बनना है ? (साकार सृष्टि में) सृष्टि तो आलराउन्ड गोल है। सृष्टि में सारा झाड़ समाया हुआ है। परन्तु सृष्टि का ठिकाना संगम है। संगम की बलिहारी है, जिसने आप सबको यहाँ पहुंचाया। आप अपने ठिकाने को भूल जायेंगे तो फिर क्या होगा ? ठिकाना देने वाला ही भूल जायेगा। ठिकाना पक्का याद करो और बापदादा की जो पढ़ाई मिली है उनको धारण करो। धारणा से धैर्यवत, अन्तर्मुख होंगे।"

२४.७.६९

११

बिन्दु रूप की प्रैक्टिस

मीठे-मीठे बच्चे किसके सामने बैठे हो और क्या होकर बैठे हो ? बाप तो तुम बच्चों को बिन्दी रूप बनाने आये हैं। मैं आत्मा बिन्दु रूप हूँ। बिन्दी कितनी छोटी होती है और बाप भी कितना छोटा है ! इतनी छोटी सी बात भी तुम बच्चों की बुद्धि में नहीं आती है ? बाप तो बच्चों के सामने ही है, दूर नहीं। दूर हुई चीज को भूल जाते हो। जो चीज़ सामने ही रहती है उस चीज को भूलना — यह तुम बच्चों को तो शोभा नहीं देता है। बच्चे ! अगर बिन्दी को ही भूल जायेंगे; तो बोलो, किस आधार पर चलेंगे ? आत्मा के ही तो आधार से शरीर भी चलता है। मैं आत्मा हूँ। यह नशा होना चाहिये कि मैं बिन्दु, बिन्दु की ही संतान हूँ। संतान कहने से ही स्नेह में आ जाते हैं। तो आज तुम बच्चों को बिन्दु रूप में स्थित होने की प्रैक्टिस करायें ? मैं आत्मा हूँ — इसमें तो भूलने की ही आवश्यकता नहीं रहती है। जैसे मुझ बाप को भूलने की ज़रूरत पड़ती है ? हां, परिचय देने के लिये तो जरूर बोलना पड़ता है कि मेरा नाम, रूप, गुण, कर्त्तव्य क्या है और मैं फिर कब आता हूँ, किस तन में आता हूँ। तुम बच्चों को ही अपना परिचय देता हूँ। तो क्या बाप अपने परिचय को भूल जाते हैं ? बच्चे उस स्थिति में एक सेकेण्ड भी नहीं रह सकते हैं ? तो क्या अपने नाम, रूप, देश को भी भूल जाते हैं ? यह पहली-पहली बात है जो कि तुम सभी को बताते हो कि — मैं आत्मा हूँ, ना कि शरीर। जब आत्मा होकर बिठाते हो तभी उनको फिर शरीर भी भूलता है। अगर आत्मा होकर नहीं बिठाते, तो क्या फिर देह सहित देह के सभी सम्बन्ध भूल जाते ! जब उनको भुलाते हो, तो क्या अपने शरीर से न्यारा होकर, जो न्यारा बाप है उनकी याद में नहीं बैठ सकते हो ?

अब सब बच्चे अपने को आत्मा समझ कर बैठो। सामने किसको देखें ? आत्माओं के बाप को। इस स्थिति में रहने से व्यक्त से न्यारे होकर अव्यक्त स्थिति में रह सकेंगे। 'मैं आत्मा बिन्दु रूप हूँ' — क्या यह याद नहीं आता है ? बिन्दी रूप होकर बैठना नहीं आता ? ऐसे ही अभ्यास को बढ़ाते जाओगे तो एक सेकेण्ड तो क्या, कितने ही घण्टे इसी अवस्था में स्थित होकर इस

अवस्था का रस ले सकते हो ! इसी अवस्था में स्थित रहने से फिर बोलने की ज़रूरत ही नहीं रहेगी । बिन्दु होकर बैठना कोई जड़ अवस्था नहीं है । जैसे बीज में सारा पेड़ समाया हुआ है, वैसे ही मुझ आत्मा में बाप की याद समाई हुई है । ऐसे होकर बैठने से सब रसनायें आयेंगी और साथ ही यह भी नशा होगा कि – "हम किसके सामने बैठे हैं ! बाप हमको भी अपने साथ कहाँ ले जा रहे हैं !" बाप तुम बच्चों को अकेला नहीं छोड़ता है । जो बाप का और तुम बच्चों का घर है, वहाँ पर साथ में ही लेकर जायेंगे । सब इकट्ठा चलने ही हैं । आत्मा समझकर फिर शरीर में आकर कर्म भी करना है, परन्तु कर्म करते हुये भी न्यारा और प्यारा होकर रहना है । बाप भी तुम बच्चों को देखते हैं । देखते हुए भी तो बाप न्यारा और प्यारा है ना ! अच्छा !

मैं बिन्दु आत्मा हूँ।

"बच्चे ! अगर बिन्दी को ही भूल जायेंगे; तो बोलो, किस आधार पर चलेंगे ? आत्मा के ही तो आधार से शरीर भी चलता है । मैं आत्मा हूँ । यह नशा होना चाहिये कि मैं बिन्दु, बिन्दु की ही संतान हूँ । संतान कहने से ही स्नेह में आ जाते हैं । तो आज तुम बच्चों को बिन्दु रूप में स्थित होने की प्रैक्टिस करायें ? मैं आत्मा हूँ – इसमें तो भूलने की ही आवश्यकता नहीं रहती है । जैसे मुझ बाप को भूलने की ज़रूरत पड़ती है ? हां, परिचय देने के लिये तो जरूर बोलना पड़ता है कि मेरा नाम, रूप, गुण, कर्त्तव्य क्या है और मैं फिर कब आता हूँ, किस तन में आता हूँ । तुम बच्चों को ही अपना परिचय देता हूँ । तो क्या बाप अपने परिचय को भूल जाते हैं ?

बच्चे उस स्थिति में एक सेकेण्ड भी नहीं रह सकते हैं ? तो क्या अपने नाम, रूप, देश को भी भूल जाते हैं ? यह पहली-पहली बात है जो कि तुम सभी को बताते हो कि – मैं आत्मा हूँ, ना कि शरीर । जब आत्मा होकर बिठाते हो तभी उनको फिर शरीर भी भूलता है । अगर आत्मा होकर नहीं बिठाते, तो क्या फिर देह सहित देह के सभी सम्बन्ध भूल जाते ! जब उनको भुलाते हो, तो क्या अपने शरीर से न्यारा होकर, जो न्यारा बाप है उनकी याद में नहीं बैठ सकते हो ?"

ओरिजिनल, पृ-५२

पुराना अव्यक्त वाणी (मोटा बुक) - पुराना प्रिन्ट किया हुआ...

१२

देखते हो तो हरेक की तस्वीर से उनकी तदवीर, उनके पुरुषार्थ का जो विशेष गुण हैं, वही देखना है। हरेक के पुरूषार्थ में विशेष गुण जरूर होता है। उस गुण को देखना है। एक होता है गुण और गुण के साथ-साथ फिर होता है गुणा। शब्द कितना नजदीक है लेकिन वह क्या, वह क्या। अगर गुण नहीं देखते हो तो गुणा लग जाता है। तो हरेक के गुण को देखना है तो गुणा जो लगता है वह खत्म हो जावेगा। पटनावासी अति स्नेही और अति प्रिय हैं जो एक दो के स्नेही होते हैं। ऐसे स्नेही बच्चों से बाप-दादा का भी अति स्नेह है, स्नेह ही समीप लाता है। जितना स्नेही उतना समीप तो पटना निवासी एक दो में स्नेही हैं ऐसे स्नेही बच्चे ही समीप भी आ सकते हैं अब भी और भविष्य में भी। विशेष स्नेही हैं इसलिये आज विशेष डबल टीका लगा रहे हैं लेकिन अनोखा, लौकिक रीति का टीका नहीं। डबल टीका कौन सा है ? एक तो निराकारी दूसरा न्यारापन। यह डबल टीका हरेक के मस्तिष्क पर अविनाशी स्थित कराने के लिये अविनाशी रूप से ही लगा रहे हैं। यह अविनाशी टीका सदा कायम रहता है ? तिलक को सुहाग की निशानी कहा जाता है इस तिलक को सदा कायम रखने की कोशिश करनी है। जितना-जितना परिपक्व रहेंगे उतना पद पा सकेंगे। हरेक यही सोचे कि हम ही नम्बर वन हैं। अगर हरेक नम्बर वन होंगे तो नम्बर टू कौन आवेंगे ? बाप की क्लास में कब भी नम्बर नहीं निकल सकती। टीचर भी नम्बर वन स्टूडेन्ट भी नम्बर वन। तो एक-एक नम्बरवन। तो ऐसी क्लास का तो मधुबन में चित्र होना चाहिये। अच्छा-ओमशान्ति।

माला का मणका बनने के लिए विजयी बनो

25-10-69

बाप-दादा जब बच्चों को देखते हैं तो मुख्य बात क्या देखते हैं ? आज यही देखने आये हैं कि हरेक रत्न अपने में क्या-क्या परिवर्तन लाया है तो आज परिवर्तन देखने लिये आये हैं। हरेक ने यथाशक्ति परिवर्तन तो लाया ही है। लेकिन बाप-दादा कौन सा परिवर्तन देखने चाहते हैं ? उसको

भी जानते हो ना! बाप-दादा परिवर्तन के साथ परिपक्वता भी देखने चाहते हैं। परिवर्तन तो देखा लेकिन परिवर्तन के साथ अपने में परिपक्वता भी लाई? बाप को अविनाशी सत्य बोलते हो ना। तो ऐसे ही बाप के साथ अविनाशी परिवर्तन लाया है? जो खजाना मिलता है वह भी अविनाशी है, जो प्रालब्ध मिलती है वह भी अविनाशी है तो परिवर्तन भी अविनाशी लाया है वा सोचते हो कि जाने वाद मालूम पड़ेगा। न मालूम कौन सी परिस्थितियां आयें, न मालूम परिपक्व रह सकें वा नहीं, वायदा तो करके जाते हैं लेकिन कहां तक निभा सकते हैं वह देखेंगे। एक तो यह सोचते हैं। फिर दूसरी है निश्चय बुद्धि जिन्हों को बाप के साथ अपने में भी पूरा निश्चय है कि जो परिवर्तन लाया है वह सदा कायम रखेंगे। और जो वायदा करके जाते हैं वह करके दिखायेंगे। वह है सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि और कोई तो विचारे हिम्मत धारण करने की कोशिश करते हैं, लेकिन अब तक अगर ऐसे ही करते चलेंगे तो अन्त तक भी क्या कोशिश करते रहेंगे? ऐसे पुरुषार्थी को झाटकू कहेंगे? देवियों पर जब बलि चढ़ते हैं तो शक्तियां वा देवियां ही बिगर झाटकू स्वीकार नहीं करती हैं तो क्या बाप-दादा ऐसे को स्वीकार करता है। अगर यहां स्वीकार न किया तो स्वर्ग में ऊंच पद की स्वीकृति नहीं मिलेगी। इसलिये सुनाया था कि जो सोचना है वही कहना है, जो कहना है वही करना है। सोचना, कहना, करना तीनों ही एक होना चाहिये। लेकिन वर्तमान समय कई ऐसे बच्चे हैं जो सोचते बहुत हैं कहते भी बहुत हैं लेकिन करने के समय कम रह जाते हैं। इसलिये कहा था इस भट्ठी में पक्का कर जाना अर्थात् पक्का वायदा करके जाना है। पहले तो वायदा करने लिये हिम्मत है कि हिम्मत धारण करेंगे? जो हिम्मतवान बच्चे हैं उनकी निशानी क्या है? वह कब हार नहीं खाते। अगर आप सभी हिम्मतवान हैं तो जरूर आज से कब हारेंगे नहीं। बहुत समय से जो विजयी बनते हैं वही विजय माला के मणके बनते हैं। अगर विजय माला में पिरोने चाहते हैं तो विजयी बनने का परिवर्तन लाना पड़ेगा। परिवर्तन में मुख्य-मुख्य बातें चेक करनी हैं। बहुत सहज है। दो शब्द याद रखना है। एक तो आकर्षण मूर्त बनना है और दूसरा हर्षित मुख। आकर्षण करने वाला है रूह। रुहानी स्थिति में ही एक दो को आकर्षण कर सकेंगे। अगर यह दोनों बातें अपने में धारण कर ली तो

सम्पूर्ण विजयी हैं ही। मैजारटी बच्चों में मुख्य कौन-सी बात है वह भी आज सुना रहे हैं। निश्चय बुद्धि तो हो तब तो यहां आये हो। बाप में निश्चय है, ज्ञान में भी निश्चय है लेकिन अपने में निश्चय कहां-कहां डगमगा देता है। मुख्य कमी यह है जो कंट्रोलिंग पावर नहीं है। यह न होने कारण समझते हुये, सोचते हुये अपने को कोसते भी हैं लेकिन फिर भी वही बात कर लेते हैं। इसका कारण कि कंट्रोलिंग पावर की आवश्यकता है। मनसा में, वाचा में और कर्मणा में भी और साथ-साथ लौकिक सम्बन्धियों अथवा दैवी परिवार के सम्बन्ध में आने में भी। कहां तक क्या करना है, क्या कहना है। क्या नहीं कहना है। और जो न करना है उसको कंट्रोल करना यह पूरी पावर न होने कारण सफल नहीं होते हो। तो कंट्रोलिंग पावर की कमी कैसे मिटावेंगे ? कई बार आप गोपों ने देखा होगा कोई भी चीज को कहां बहुत जोर से कंट्रोल करना होता है तो कंट्रोल करने लिये भी कई चीजों को हल्का छोड़ना पड़ता है। पतंग कब उड़ाया है? पतंग को कंट्रोल करने और ऊंचा उड़ाने लिये क्या किया जाता है ? यह भी ऐसे हैं। अपनी बुद्धि को कंट्रोल करने लिये कई बातों को हल्का करना पड़ता है। सभी से हल्की क्या चीज होती है? आत्मा (विन्दी)। तो जब अपने को कंट्रोल करना हो तो अपने को बिल्कुल हल्का विन्दू रूप में स्थित करना है। कंट्रोल करने लिये फुलस्टाप करना होता है। तो आप भी विन्दी लगा दो। जो बीत चुका उसको बिल्कुल भूल जाओ। देखा, किया लेकिन फिर एकदम उसको समाप्त कर दो। समाप्त करना अर्थात् विन्दी, फुलस्टाप करना। कोमा (,) लगाने आती है, क्वेश्चन (?) करने भी आता है। अजब की निशानी ! भी लगाने आती है लेकिन फुल स्टाप लगाना नहीं आता है। कागज पर निशानियां लगाना तो सहज है लेकिन अपने कर्मों के ऊपर यह निशानियां लगाना इसमें मुश्किल क्यों? कागज पर निशानियां लगाते हो ना। और जो निशानी जहां लगानी है वहां ही लगती है इसको कहा जाता है प्रवीन। अगर कोमा के बदली कोई फुलस्टाप लिख दे तो प्रवीन नहीं कहा जाएगा। जहां क्वेश्चन करना है वहां क्वेश्चन न करें तो भी प्रवीन नहीं कहेंगे। यहां भी क्वेश्चन किस बात में, अजब किस बात में, फुलस्टाप किस बात में देना है, यह पूरी पहचान न होने कारण प्रवीन नहीं बनते हैं। अब समझा। कंट्रोल क्यों नहीं कर पाते क्योंकि उस समय ज्ञान का

पैट्रोल कम हो जाता है। अगर ज्ञान का पैट्रोल है तो कंट्रोल है। इसलिये अपने बुद्धि रूपी टंकी में पैट्रोल को जमा रखो। माइनस और प्लस का हिसाब सीखे हो? और बैलेन्स निकालना भी सीखे हो? ऐसे तो नहीं सिर्फ जोड़ किया, कट किया लेकिन जमा करने भी सीखो। अगर जमा नहीं होगा तो न औरों को दे सकेंगे न अपने को आगे बढ़ा सकेंगे। जमा किया जाता है दूसरों को देने के लिये, अपनी आवश्यकता के समय काम में लाने के लिये। तो यह भी देखना है कितना जमा किया है। सिर्फ कमाना और खाना है वा जमा भी होता है? कब हिसाब किया है? २५ प्रतिशत जमा तो बहुत कम है। अगर २५ प्रतिशत जमा किया है तो अभी के हिसाब से बाप-दादा भी कौन सी जिम्मेवारी देंगे? यहां से जास्ती याद कितने दिनों में करेंगे? विनाश कब होना है? सात वर्ष में ७५ प्रतिशत जमा करेंगे? अगर उनसे पहले ही विनाश हो जाए तो क्या करेंगे? अपना-अपना प्लैन तो सात वर्ष के हिसाब से बनाया। अगर पांच वर्ष में ही हो जाए तो क्या होगा? जब दूसरों को कहते हो कि आज का काम कल पर न रखो तो सात वर्ष का क्यों सोच लिया है। फाइनल है सृष्टि के बदलने की बात। लेकिन आप के बदलने लिये तो सात वर्ष नहीं कहा। सात वर्ष तो सृष्टि की बात है या आपके बदलने की बात है। कब भी यह न सोचना है कि सात वर्ष में बदलेंगे। तीव्र पुरुषार्थी कब ऐसे नहीं कहेंगे। बहुत समय से अगर सम्पूर्णता के संस्कार होंगे तो अन्त में भी सम्पूर्ण हो सकेंगे। अगर सात वर्ष के अंत में बनेंगे तो फिर बाप दादा भी अंत में थोड़ा दे देंगे। जो अभी करते हैं उनको बाप-दादा भी सतयुग के आरंभ में कहते—आओ। जो सात वर्ष कहते तो पद भी कम हो पड़ेगा। यह तो लक्ष्य नहीं है?

बाप-दादा तो हरेक रत्न में उम्मीद रखते हैं कि यह अनेकों को उम्मीदवार बनायेंगे। जो अनेकों के उम्मीदवार हैं वह अपने लिये फिर अंत की उम्मीद कैसे रख सकते हैं। अच्छा। इस ग्रुप की भट्ठी भी समाप्त हुई। समाप्त हुई वा आरंभ हुई? इस ग्रुप का एग्जामिन (परीक्षा) नहीं लिया है। जो एग्जाम्पल देखा उसको सदा काल के लिये कायम रखते आवेंगे तो फिर इम्तिहान लेंगे। कोई भी चीज को मजबूत करना होता है तो क्या किया जाता है? फाउंडेशन मजबूत रखने के लिये घेराव की आवश्यकता होती है।

जितना-जितना घेराव में जावेंगे इतना मजबूती होगी। ऊपर-ऊपर से नींव लगाने से मजबूती नहीं होगी। जितना गहराई से ज्ञान को धारण किया होगा उतना ही अपनी मजबूती लाई होगी। परिवर्तन तो सभी ने कुछ न कुछ लाया ही है लेकिन कुछ न कुछ क्यों कहते हैं। क्योंकि फाइनल सर्टिफिकेट प्रैक्टिकल लाने के बाद देंगे। अभी सर्टिफिकेट नहीं देंगे अभी हर्षित होते हैं कि हरेक बच्चा उमंग उत्साह से अपने पुरुषार्थ को आगे बढ़ाने में बहुत तत्पर है। लेकिन सर्टिफिकेट तब मिलेगा जब प्रैक्टिकल में रिजल्ट आउट होगी। ऐसे नहीं समझना कि भट्ठी समाप्त हुई, लेकिन आरंभ हुई है। अभी सुनना हुआ, फिर करना है। करने के बाद सर्टिफिकेट मिलेगा।

इस ग्रुप की मुख्य खूबी यह देखी कि एकता है। लेकिन एकता के साथ-साथ अब दूसरा शब्द भी एड करना है। एकता के साथ एकांतप्रिय बनना है। जैसे एकता में नम्बरवन है वैसे एकान्त में भी नम्बर वन आना है। यह धारण कर लो तो यह ग्रुप बहुतों से आगे जा सकता है। एकता के साथ एकान्तवासी कैसे बनें यह भी अपने में भरना है। एकान्तप्रिय वह होगा जिनका अनेक तरफ से बुद्धि योग टूटा हुआ होगा और एक का ही प्रिय होगा। एक प्रिय होने कारण एक ही की याद में रह सकता। अनेक के प्रिय होने के कारण एक की याद में रह नहीं सकता अनेक तरफ से बुद्धियोग टूटा हुआ हो। एक तरफ जुटा हुआ हो अर्थात् एक के सिवाय दूसरा न कोई। ऐसी स्थिति वाला जो होगा वह एकान्त प्रिय हो सकता है। नहीं तो एकान्त में बैठने का प्रयत्न करते हुए भी अनेक तरफ बुद्धि भटकेगी। एकान्त का आनंद अनुभव कर न सकेंगे। सर्व सम्बन्ध, सर्व रसनाएं एक से लेने वाला ही एकान्त प्रिय हो सकता है। जब एक द्वारा सर्व रसनाएं प्राप्त हो सकती हैं। तो अनेक तरफ जाने की आवश्यकता ही क्या ? लेकिन जो एक द्वारा सर्व रसनाओं को लेने के अभ्यासी नहीं होते वह अनेक तरफ रस लेने की कोशिश करते। तो फिर एक भी प्राप्ति नहीं होती। और एक बाप साथ लगाने से अनेक प्राप्तियां होती हैं। सिर्फ एक शब्द भी याद रखो तो उसमें सारा ज्ञान आ जाता। स्मृति भी आ जाती। सम्बन्ध भी आ जाता। स्थिति भी आ जाती। और साथ-साथ जो प्राप्ती होती है वह भी उस एक शब्द से स्पष्ट हो जाती। एक की याद, स्थिति एकरस और ज्ञान भी सारा एक की याद का ही मिलता है। प्राप्ति भी जो होती

भविष्य को जानने की युक्तियां

9.11.69

"दीपावली के शुभ दिवस पर प्राणप्रिय अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य"

बापदादा एक-एक दीपक को एक काल (समय) की दृष्टि से देख रहे हैं या तीनों कालों की? बाप तो त्रिकालदर्शी है वा दादा भी त्रिकालदर्शी है? आप भी त्रिकालदर्शी हो या बन रहे हो? अगर त्रिकालदर्शी हो तो अपने भविष्य को देखते हो व जानते हो? जानते हो मैं क्या बनूंगा? पाण्डव सेना में अपना भविष्य जानते हो या स्पष्ट है कि क्या बनोगे और कौनसी राजधानी में? ल०ना० भी किस नम्बर में? (हरेक ने अपना विचार बताया) जैसे आप आगे बढ़ते जायेंगे वैसे अपना भविष्य नाम-रूप-देश-काल यह चारों ही स्पष्ट होते जायेंगे कि किस देश में राज्य करना है किस नाम से, किस रूप से और किस समय, पहले राजधानी में भी क्या बनेंगे। दूसरी राजधानी में क्या बनेंगे। यह पूरी जन्मपत्री एक-एक को अपने अन्दर स्पष्ट होगी। बापदादा अब भी किसी को देखते हैं तो तीनों कालों को देखते हैं। पहले क्या था अब क्या है फिर भविष्य में क्या बनने वाले हैं। तो एक-एक दीप में यह तीनों काल देखते हैं। आप दो काल तो स्पष्ट जानते हो। पहले क्या थे और अब क्या हैं लेकिन भविष्य में क्या होना है, उसको जितना-जितना योगयुक्त होंगे उतना भविष्य भी स्पष्ट हो जाएगा। जैसे वर्तमान स्पष्ट है। वर्तमान में कब भी संकल्प नहीं उठता है कि हैं या नहीं हैं। ना मालूम क्या हैं यह कब संकल्प नहीं उठेगा। इसी रीति से भविष्य भी स्पष्ट होगा। ऐसा स्पष्ट नशा हर एक को बुद्धि में नम्बरवार आता जाएगा। जैसे साकार रूप में मां-बाप दोनों को अपना भविष्य स्पष्ट था। नाम भी, रूप भी स्पष्ट, देश भी स्पष्ट और काल भी स्पष्ट था। इतना स्पष्ट है कि किस सम्बन्ध में आयेंगे? वा सम्बन्ध भी स्पष्ट किस रूप में सामने आयेगा। अभी दिल में थोड़ा बहुत किस-किस को आ सकता है। लेकिन कुछ समय बाद ऐसे ही निश्चय बुद्धि होकर कहेंगे कि यह होना ही है। अभी अगर आप कहेंगे भी तो दूसरे निश्चय करें या न करें। लेकिन थोड़े समय में आपकी चलन, आपकी तदबीर जो है वह आपके

है—कहां तक हम समानता में समीप आये हैं? जितना-जितना समानता में समीप होंगे उतना ही समझो कर्मातीत अवस्था के समीप पहुंचेंगे। यही समानता का भी अर्थ है। अपनी कर्मातीत अवस्था परखना है। सिर्फ स्नेह रखने से भी सम्पूर्ण नहीं बनेंगे। स्नेह के साथ-साथ शक्ति भी होगी तो खुद सम्पूर्ण बन औरों को भी सम्पूर्ण बनायेंगे। क्योंकि शक्ति से वह संस्कार भर जाते हैं। तो अब स्नेह के साथ शक्ति भी भरनी है।

सभी के दिलों पर विजय किन गुणों से पहन सकते हो? सभी को सन्तुष्ट करना। बाप में यह विशेष गुण था। वही फालो करना है। कमला तुम किस लिस्ट में हो? मधुबन की लिस्ट में हो या आलराउन्डर की लिस्ट में हो? एक है हद की लिस्ट, दूसरी है बेहद की लिस्ट। आलराउन्डर और एवररेडी। इसी लिस्ट में मालूम है क्या करना होता है? एक सेकण्ड में तैयार। संकल्पों को भी एक सेकण्ड में बन्द करना है। मिलिट्री वालों का हर समय बिस्तरा तैयार रहता है। यह संकल्पों का बिस्तरा भी बन्द करना है। बिस्तरा भी एवररेडी रहना चाहिए। एवररेडी बनने वालों का संकल्पों का बिस्तरा तैयार रहना चाहिए। कोई भी परिस्थिति हो उसका सामना करने के लिए पेटी+बिस्तरा तैयार हो। अच्छा।

रूहानी बच्चो! तुम आत्माओं को वाणी से परे अपने घर जाने के लिए पुरुषार्थ करना है। इसलिए इस पुरानी दुनिया में रहते देह और देह के सम्बन्धों से उपरामचित होना है। पतित दुनिया में रहते हुए बाप पवित्र बनने की शक्ति देते हैं। पुरुषार्थ करके तुम को सदा पवित्र बनना है।

बच्चे! सदैव गुणग्राहक बनना है। स्तुति-निन्दा, लाभ-हानि, जय-पराजय सभी में सन्तुष्ट होकर चलना है और रहमदिल बनना है। अच्छा।

नया अ० वा रजिस्टर से (नया प्रिन्ट)

(12)

२५.१०.६१

माला का मणका बनने के लिए विजयी बनो

बाप-दादा जब बच्चों को देखते हैं तो मुख्य बात क्या देखते हैं ? आज यही देखने आये हैं कि हरेक रत्न अपने में क्या-क्या परिवर्तन लाया है । तो आज परिवर्तन देखने लिये आये हैं । हरेक ने यथाशक्ति परिवर्तन तो लाया ही है । लेकिन बाप-दादा कौनसा परिवर्तन देखने चाहते हैं ? उसको भी जानते हो ना । बाप-दादा परिवर्तन के साथ परिपक्वता भी देखने चाहते हैं । परिवर्तन तो देखा, लेकिन परिवर्तन के साथ अपने में परिपक्वता भी लाई ? बाप को 'अविनाशी सत्य' बोलते हो ना । तो ऐसे ही बाप के साथ अविनाशी परिवर्तन लाया है ? जो खजाना मिलता है वह भी अविनाशी है, जो प्रालब्ध मिलती है वह भी अविनाशी है । तो परिवर्तन भी अविनाशी लाया है ? वा सोचते हो कि — जाने के बाद मालूम पड़ेगा, न मालूम कौनसी परिस्थितियां आयें, न मालूम परिपक्व रह सकें वा नहीं । वायदा तो करके जाते हैं लेकिन कहाँ तक निभा सकते हैं, वह देखेंगे । एक तो यह सोचते हैं । फिर दूसरे हैं निश्चयबुद्धि, जिन्हों का बाप के साथ अपने में भी पूरा निश्चय है कि जो परिवर्तन लाया है वह सदा कायम रखेंगे और जो वायदा करके जाते हैं वह करके दिखायेंगे । वह हैं सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि । और कोई तो बिचारे हिम्मत धारण करने की कोशिश करते हैं । लेकिन अब तक अगर ऐसे ही करते चलेंगे तो अन्त तक भी क्या कोशिश करते रहेंगे ? ऐसे पुरुषार्थी को झाटकू कहेंगे ? देवियों पर बलि चढ़ते हैं तो शक्तियां वा देवियां ही बिगर झाटकू स्वीकार नहीं करती हैं । तो क्या बाप-दादा ऐसे को स्वीकार कर सकता है ? अगर यहाँ स्वीकार न किया तो स्वर्ग में ऊंच पद की स्वीकृति नहीं मिलेगी । इसलिये सुनाया था कि जो सोचना है वही कहना है, जो कहना है वही करना है । सोचना, कहना, करना — तीनों ही एक होना चाहिये । लेकिन वर्तमान समय कई ऐसे बच्चे हैं जो सोचते बहुत हैं, कहते भी बहुत हैं लेकिन करने के समय कम रह जाते हैं । इसलिये कहा था — इस भट्ठी में पका कर जाना अर्थात् पक्का वायदा करके जाना है । पहले तो, वायदा करने लिये हिम्मत है कि हिम्मत धारण करेंगे ? जो हिम्मतवान बच्चे हैं उनकी निशानी क्या है ? वह

कभी हार नहीं खाते । अगर आप सभी हिम्मतवान हैं तो जरूर आज से कभी हारेंगे नहीं । बहुत समय से जो विजयी बनते हैं वही विजय-माला के मणके बनते हैं । अगर विजय माला में पिरोने चाहते हैं तो विजयी बनने का परिवर्तन लाना पड़ेगा । परिवर्तन में मुख्य-मुख्य बातें चेक करनी हैं । बहुत सहज है । दो शब्द याद रखना है । एक तो आकर्षण मूर्ति बनना है और दूसरा हर्षित मुख । आकर्षण करने वाला है रूह । रूहानी स्थिति में ही एक-दो को आकर्षण कर सकेंगे । अगर यह दोनों बातें अपने में धारण कर लीं तो सम्पूर्ण विजयी हैं ही । मैजारिटी बच्चों में मुख्य कौनसी बात है, वह भी आज सुना रहे हैं । निश्चयबुद्धि तो हो, तब तो यहाँ आये हो । बाप में निश्चय है, ज्ञान में भी निश्चय है लेकिन अपने में निश्चय कहाँ-कहाँ डगमगा देता है । मुख्य कमी यह है जो कंट्रोलिंग-पावर नहीं है । यह न होने कारण समझते हुए, सोचते हुए, अपने को महसूस करते हुए भी फिर वही बात कर लेते हैं । इसका कारण यह है । कंट्रोलिंग पावर की आवश्यकता है । मन्सा में, वाचा में और कर्मणा में भी और साथ-साथ लौकिक सम्बन्धियों अथवा दैवी परिवार के सम्बन्ध में आने में भी कहाँ तक क्या करना है, क्या कहना है, क्या नहीं कहना है और जो नहीं करना है उसको कंट्रोल करना — यह पूरी पावर न होने कारण सफल नहीं होते हो । तो कंट्रोलिंग पावर की कमी कैसे मिटावेंगे ? कई बार आप गोपों ने देखा होगा — कोई भी चीज को कहाँ बहुत जोर से कंट्रोल करना होता है तो कंट्रोल करने लिये भी कई चीजों को हल्का छोड़ना पड़ता है । पतंग कब उड़ाया है ? पतंग को कंट्रोल करने और ऊंचा उड़ाने लिये क्या किया जाता है ? यह भी ऐसे है । अपनी बुद्धि को कंट्रोल करने के लिये कई बातों को हल्का करना पड़ता है । सभी से हल्की क्या चीज होती है ? आत्मा (बिन्दी) । तो जब अपने को कंट्रोल करना हो तो अपने को बिल्कुल हल्का बिन्दु रूप में स्थित करना है । कंट्रोल करने लिये फुलस्टाप करना होता है । तो आप भी बिन्दी लगा दो । जो बीत चुका उसको बिल्कुल भूल जाओ । देखा, किया लेकिन फिर एकदम उसको समाप्त कर दो । समाप्त करना अर्थात् बिन्दी, फुलस्टाप करना । कोमा (,) लगाने आता है, या क्वेश्चन (?) करने भी आता है, अजब की निशानी (!) भी लगाने आती है, लेकिन फुलस्टाप

लगाना नहीं आता है। कागज पर निशानियां लगाना तो सहज है। लेकिन अपने कर्मों के ऊपर यह निशानियां लगाना – इसमें मुश्किल क्यों ? कागज पर निशानियां लगाते हो ना। और जो निशानी जहाँ लगानी है वहाँ ही लगती है, इसको कहा जाता है प्रवीण। अगर कोमा के बदली कोई फुलस्टाप लिख दे तो प्रवीण नहीं कहा जायेगा। जहाँ क्वेश्चन करना है वहाँ क्वेश्चन न करे तो भी प्रवीण नहीं कहेंगे। यहाँ भी क्वेश्चन किस बात में, अजव किस बात में, फुलस्टाप किस बात में देना है – यह पूरी पहचान न होने कारण प्रवीण नहीं बनते हैं। अब समझा, कंट्रोल क्यों नहीं कर पाते ? क्योंकि उस समय ज्ञान का पैट्रोल कम हो जाता है। अगर ज्ञान का पैट्रोल है तो कंट्रोल है। इसलिये अपने बुद्धि रूपी टंकी में पैट्रोल को जमा रखो। माइनस और प्लस का हिसाव सीखे हो ? और वैलेन्स निकालना भी सीखे हो ? ऐसे नहीं – सिर्फ जोड़ किया, कट किया। लेकिन जमा करना भी सीखो। अगर जमा नहीं होगा तो न औरों को दे सकेंगे, न अपने को आगे वढ़ा सकेंगे। जमा किया जाता है दूसरों को देने के लिये, अपनी आवश्यकता के समय काम में लाने के लिये। तो यह भी देखना है – कितना जमा किया है, सिर्फ कमाना और खाना है वा जमा भी होता है ? कब हिसाब किया है ? २५ प्रतिशत जमा तो बहुत कम है। अगर २५ प्रतिशत जमा किया है तो अभी के हिसाव से बाप-दादा भी कौनसी ज़िम्मेवारी देंगे ? यहाँ से जास्ती याद कितने दिनों में करेंगे ? तीव्र पुरुषार्थी कभी विनाश की डेट का नहीं सोचते। वहुत समय से अगर सम्पूर्णता के संस्कार होंगे तो अन्त में भी सम्पूर्ण हो सकेंगे। अगर अंत में बनेंगे तो फिर वापदादा भी अंत में थोड़ा दे देंगे। जो अभी करते हैं उनको वापदादा भी सतयुग के आरंभ में कहते – 'आओ !' बाप-दादा तो हरेक रत्न में उम्मीद रखते हैं कि यह अनेकों को उम्मीदवार बनायेंगे। जो अनेकों के उम्मीदवार हैं वह अपने लिये फिर अंत की उम्मीद कैसे रख सकते हैं। अच्छा !

इस ग्रुप की भट्ठी भी समाप्त हुई। समाप्त हुई वा आरंभ हुई ? इस ग्रुप का इग्ज़ैमिन (परीक्षा) नहीं लिया है। जो इग्ज़ैम्पल देखा उसको सदा काल के लिये कायम रखते आयेंगे। तो फिर इम्तिहान लेंगे। कोई भी चीज़ को मज़बूत करना होता है तो क्या किया जाता है ? फाउन्डेशन मज़बूत रखने के लिये

गहराव की आवश्यकता होती है। जितना-जितना गहराई में जायेंगे उतना मज़बूती होगी। ऊपर-ऊपर से नींव लगाने से मजबूती नहीं होती। जितना गहराई से ज्ञान को धारण किया होगा, उतना ही अपनी मज़बूती लाई होगी। परिवर्तन तो सभी ने 'कुछ-न-कुछ' लाया ही है? लेकिन कुछ न कुछ क्यों कहते हैं। क्योंकि फाइनल सर्टिफिकेट प्रैक्टिकल लाने के बाद देंगे। अभी सर्टिफिकेट नहीं देंगे। अभी हर्षित होते हैं कि हरेक बच्चा उमंग-उत्साह से अपने पुरुषार्थ को आगे बढ़ाने में बहुत तत्पर है। लेकिन सर्टिफिकेट तब मिलेगा जब प्रैक्टिकल में रिजल्ट आउट होगी। ऐसे नहीं समझना कि भट्ठी समाप्त हुई, लेकिन आरंभ हुई है। अभी सुनना हुआ, फिर करना है। करने के बाद सर्टिफिकेट मिलेगा।

इस ग्रुप की मुख्य खूबी यह देखी कि एकता है। लेकिन एकता के साथ-साथ अब दूसरा शब्द भी एड करना है। एकता के साथ एकांतप्रिय बनना है। जैसे एकता में नम्बरवन हैं वैसे एकान्त में भी नम्बरवन आना है। यह धारण कर लो तो यह ग्रुप बहुतों से आगे जा सकता है। एकता के साथ एकान्तवासी कैसे बनें – यह भी अपने में भरना है। एकान्तप्रिय वह होगा जिसका अनेक तरफ से बुद्धि-योग टूटा हुआ होगा और एक का ही प्रिय होगा। एक-प्रिय होने कारण एक ही की याद में रह सकता। अनेक के प्रिय होने के कारण एक ही याद में रह नहीं सकता। अनेक तरफ से बुद्धियोग टूटा हुआ हो। एक तरफ जुटा हुआ हो अर्थात् 'एक के सिवाय दूसरा न कोई' – ऐसी स्थिति वाला जो होगा वह एकान्तप्रिय हो सकता है। नहीं तो एकान्त में बैठने का प्रयत्न करते हुए भी अनेक तरफ बुद्धि भटकेगी, एकान्त का आनंद अनुभव कर नहीं सकेंगे। सर्व सम्बन्ध, सर्व रसनाएं एक से लेने वाला ही एकान्त-प्रिय हो सकता है। जब एक द्वारा सर्व रसनाएं प्राप्त हो सकती हैं। तो अनेक तरफ जाने की आवश्यकता ही क्या। लेकिन जो एक द्वारा सर्व रसनाओं को लेने के अभ्यासी नहीं होते वह अनेक तरफ रस लेने की कोशिश करते, तो फिर एक भी प्राप्ति नहीं होती। और एक बाप के साथ लगाने से अनेक प्राप्तियां होती हैं। सिर्फ 'एक' शब्द भी याद रखो तो उसमें सारा ज्ञान आ जाता, स्मृति भी आ जाती, सम्बन्ध भी आ जाता, स्थिति भी आ जाती। और साथ-साथ जो

प्राप्ति होती है वह भी उस 'एक' शब्द से स्पष्ट हो जाती। एक की याद, स्थिति एकरस और ज्ञान भी सारा एक की याद का ही मिलता है। प्राप्ति भी जो होती है वह भी एक-रस रहती है। आज बहुत खुशी, कल गुम हो जाती – इसमें प्राप्ति नहीं होती। जो अतीन्द्रिय सुख मिलता है वह भी एकरस नहीं रहता। कभी बहुत, तो कभी कम। अब तो एकरस अवस्था में स्थित होने का पेपर देने लिये जा रहे हो। देखेंगे, पेपर में कितने मार्क्स लेते हैं। हमेशा यह कोशिश करो कि – हम औरों को करके दिखायें, हमारे कर्म और हमारी चलन औरों की पढ़ाई कराये। कोई भी बात में फेल न हों, इसके लिये सहज बात सुना रहे हैं। तो कोई भी बात में फेल न हों इसके लिये एक बात याद रखना – 'फालो फादर'। साकार रूप में जो करके दिखाया वह फालो करो तो कोई भी बात में फेल नहीं हो सकते। कहाँ भी जब फेल होने की बात सामने आये तो यही याद रखना कि फालो फादर कर रहा हूँ? जो इतने वर्ष साकार रूप में कर्म किये, वह एक एक सीन भी सामने आ जाता है। तो जब फालो फादर करेंगे तो जो भी कोई ऐसे कार्य होंगे तो वह करने में ब्रेक आ जायेगी, जज करेंगे – यह कर्म हम कर सकते हैं? फालो फादर। फादर कहने में दोनों ही आ जाते हैं। फालो फादर याद आने से फेल नहीं होंगे, फ्लालेस (दाग़ रहित) बन जायेंगे। बाप-दादा बच्चों को फ्लालेस बनाना चाहते हैं। माला में नजदीक लाने लिये यह सहज युक्ति बता रहे हैं। देखना, आप को सुनाई युक्ति आप से पहले और कोई प्रयोग न कर ले। बापदादा तो हरेक सितारे में उम्मीद रखते हैं। इसलिए कहते हैं उम्मीदवार सितारे।

विशेष स्नेह है तब तो ऐसे समय भी आये हैं। त्याग भी किया है ना। अपनी नींद का त्याग किया है, तो यह भी स्नेह दिखाया। बापदादा अभी स्नेह का रिटर्न देते हैं। अभी जाने के बाद रिजल्ट देखेंगे। जाते हो आने के लिये। जाना और आना। जाना तो है ही, लेकिन जाना है आने के लिये। जितना-जितना अव्यक्त स्थिति के अनुभवी होते जायेंगे उतना ही अव्यक्त मधुबन में आकर्षित हो आयेंगे। अब व्यक्त मधुबन नहीं है। अच्छा!

१.११.६९

भविष्य को जानने की युक्तियां

"दीपावली के शुभ दिवस पर प्राणप्रिय अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य"

बापदादा एक-एक दीपक को एक काल (समय) की दृष्टि से देख रहे हैं या तीनों कालों की ? बाप तो त्रिकालदर्शी हैं । वा दादा भी त्रिकालदर्शी हैं ? आप भी त्रिकालदर्शी हो या बन रहे हो ? अगर त्रिकालदर्शी हो तो अपने भविष्य को देखते वा जानते हो ? जानते हो, मैं क्या बनूंगा ? पाण्डव सेना में अपना भविष्य जानते हो ? यह स्पष्ट है कि क्या बनोगे और कौनसी राजधानी में ? लक्ष्मी-नारायण भी किस नम्बर में ? (हरेक ने अपना विचार बताया) जैसे आप आगे बढ़ते जायेंगे वैसे अपना भविष्य नाम, रूप, देश, काल — यह चारों ही स्पष्ट होते जायेंगे कि किस देश में राज्य करना है, किस नाम से, किस रूप से और किस समय । पहले राजधानी में भी क्या बनेंगे, दूसरी राजधानी में क्या बनेंगे — यह पूरी जन्मपत्री एक-एक को अपने अन्दर स्पष्ट होगी । बापदादा जब भी किसी को देखते हैं तो तीनों कालों को देखते हैं — पहले क्या था, अब क्या है, फिर भविष्य में क्या बनने वाले हैं । तो एक-एक दीपक में यह तीनों काल देखते हैं । आप दो काल तो स्पष्ट जानते हो — पहले क्या थे और अब क्या हैं । लेकिन भविष्य में क्या होना है — उसको जितना-जितना योगयुक्त होंगे उतना भविष्य भी स्पष्ट जान जायेंगे । जैसे वर्तमान स्पष्ट है, वर्तमान में कभी भी संकल्प नहीं उठता है कि है या नहीं है । ना मालूम क्या है — यह कभी संकल्प नहीं उठेगा । इसी रीति से भविष्य भी स्पष्ट होगा । ऐसा स्पष्ट नशा हर एक की बुद्धि में नम्बरवार आता जायेगा । जैसे साकार रूप में मां-बाप दोनों को अपना भविष्य स्पष्ट था — नाम भी, रूप भी स्पष्ट, देश भी स्पष्ट और काल भी स्पष्ट था । इतना स्पष्ट है कि किस सम्बन्ध में आयेंगे वा सम्बन्ध भी स्पष्ट किस रूप में सामने आयेगा ? अभी दिल में थोड़ा-बहुत किस-किस को आ सकता है । लेकिन कुछ समय बाद ऐसे ही निश्चयबुद्धि होकर कहेंगे कि यह होना ही है । अभी अगर आप कहेंगे भी तो दूसरे निश्चय करें या न करें । लेकिन थोड़े समय में आपकी चलन,

आपकी तदबीर जो है वह आपके भविष्य तस्वीर को प्रसिद्ध करेगी। अैव तदवीर और भविष्य में कुछ फर्क है। लेकिन जैसे-जैसे समय और आपका पुरुषार्थ समान होता जायेगा, तो फिर कोई को संकल्प नहीं उठेगा।

आप सभी ने दीपमाला मनाई। दीपमाला पर क्या करते हैं? एक दीप से अनेक दीप जगाते हैं। तो अनेकों का एक के साथ लगन लगता है, यही दीपमाला है। अगर एक-एक दीपक की एक दीपक के साथ लगन है – तो यही दीपमाला है। दीपक में क्या है? अग्नि। तो लगन होगी तो अग्नि भी होगी। लगन नहीं तो अग्नि भी नहीं। यही देखना है कि हम दीपक लगन लगाकर अग्नि बने हैं? दीपक कितने प्रकार के होते हैं, जो दुनिया में भी प्रसिद्ध हैं? (हरेक ने अपना-अपना विचार सुनाया) एक है अंधियारे को मिटाकर रोशनी करने वाला मिट्टी का स्थूल दीपक और दूसरा है आत्मा का दीपक, तीसरा है कुल का दीपक और चौथा कौन सा है? आशाओं का दीपक कहते हैं ना। बाप को बच्चों में आशा रहती है। तो चौथा है आशाओं का दीपक। यह चार प्रकार के दीपक गाये जाते हैं। अब इन चार दीपकों में से हरेक ने कितने दीपक जगाये हैं? बापदादा की आशायें जो बच्चों में रहती हैं – वह दीपक जगाया है? मिट्टी के दीपक तो कई जन्म जगाये हैं। आत्मा का दीपक जगा है? यह चारों प्रकार के दीपक जब जग जाते हैं तब समझो दीपमाला मनाई। ऐसा कोई कर्म न हो जो कुल का दीपक बुझ जाये। ऐसी कोई चलन न हो जो बापदादा बच्चों में आशाओं का दीपक जगाते वह बुझ जाये। एकरस और अटल-अडोल। यह सभी दीपक जग रहे हैं? जिसका दीपक खुद जगा हुआ होगा वह औरों का दीपक जगाने बिगर रह नहीं सकता। बापदादा की बच्चों में मुख्य आशायें कौनसी रहती हैं? बापदादा की हर एक बच्चे में यही आशा रहती है कि एक-एक बच्चा पहले नम्बर में जाये अर्थात् हरेक विजयी रत्न बने। विजयी रत्न की निशानियां क्या होंगी? जो आप सभी ने सुनाया वह तो जो सुना है वही बोला। इसलिए ठीक ही है। जो विजयी होगा उनके लक्षण तो आप सभी ने सुनाये, लेकिन साथ-साथ विजयी उनको कहा जाता है – जो खुद तो विजय प्राप्त किया हुआ हो लेकिन औरों को भी अपने से आगे विजयी बनाये। जैसे बापदादा बच्चों को अपने से

भी आगे रखते थे ना ! वैसे ही जो विजयी रत्न होंगे उनकी विजय की निशानी यह है कि वे अपने संग का रंग सभी को लगायेंगें । जो भी सामने आये वह विजयी बनकर ही निकले । ऐसे विजयी रत्न विजय-माला के किस नम्बर में आते हैं? खुद तो विजयी बने हो लेकिन और भी आपके संग के रंग से विजयी बन जायें । यही सर्विस रही हुई है । ऐसे नहीं कि कोटों में कोई ही विजयी बनेंगे । लेकिन जो जैसा होता है वैसा ही बनाता है । ऐसे विजयी रत्न जो अनेकों को विजयी बना सकें, वही माला के मुख्य मणके हैं । तो विजयी की निशानी है आप समान विजयी बनाना । अभी यह सर्विस रही हुई है । अनेकों को विजयी बनाना है, सिर्फ खुद को नहीं बनाना है । दीपमाला में पूरी दीपमाला जगी हुई होती है । जब दीपमाला कहा जाता है; तो अनेक जगे हुए दीपकों की माला हरेक ने गले में डाली है ? ऐसे जगे हुए दीपकों की माला हरेक रत्न अपने गले में जब डालेंगे तब विजय का नगाड़ा बजेगा । जैसे दिव्य गुणों की माला अपने में डाली है, वैसे अनेक जगे हुए दीपकों की माला अपने गले में डालनी है । जितनी यहाँ दीपकों की माला अपने गले में डालोगे उतनी वहाँ प्रजा बनेगी । कोई-कोई माला बहुत लम्बी-चौड़ी होती है, कोई सिर्फ गले में पहनने तक होती है । तो माला कौनसी पहननी है ? बहुत बड़ी । ऐसी माला से अपने आपको श्रृंगार करना है । कितने दीपकों की माला अब तक डाली है ? गिनती कर सकते हो वा अनगिनत हैं ? दीपक भी अच्छे वह लगते हैं जो तेज जगे हुए होते हैं । टिम-टिम करने वाले अच्छे नहीं लगते । अच्छा !

मधुवन के फूलों में विशेषतायें क्या होनी चाहिएं ? नाम ही है मधुवन । तो पहली विशेषता है मधुरता । मधुरता ऐसी चीज है जो कोई को भी हर्षित कर सकते हैं । मधुरता को धारण करने वाला यहाँ भी महान् बनता है और वहाँ भी मर्तबा पाता है । मधुरता वालों को सभी महान रूप से देखते हैं । तो यह मधुरता का विशेष गुण होना चाहिए (मधुरता से ही मधुसूदन का नाम वाला करेंगे । वह मधुवन नाम है । मधु अर्थात् मधुरता और वन में क्या विशेषता होती है ? वन में वैराग्य वृत्ति वाले जाते हैं । तो बेहद की वैराग्य बुद्धि भी चाहिए) फिर हलचल सारी जायें आ जायेंगी । और आप सभी को कॉपी करने

के लिए यहाँ आयेंगे। सभी सोचेंगे – यह कैसे ऐसे बने हैं! सभी के मुख से निकलेगा कि मधुवन तो मधुवन ही है। तो यह दो विशेषतायें धारण करनी हैं – मधुरता और बेहद की वैराग्य वृत्ति। दूसरे शब्दों में कहते हैं 'स्नेह और शक्ति'। आप सभी का सभी से जास्ती स्नेह है ना बापदादा से। और बापदादा का मधुबन वालों से विशेष स्नेह रहता है। क्योंकि भले कैसे भी हैं लेकिन सर्वस्व त्यागी हैं। इसलिए आकर्षित करते हैं। लेकिन सर्वस्व त्यागी के साथ अब स्नेह और शक्ति भी भरनी है। समझा किस विशेषता को भरना है?

कुमारियों को कमाल कर दिखानी है। कुमारियों का हर कर्त्तव्य कमाल योग्य होना चाहिए। संकल्प और वाणी तथा कर्म कमाल का होना चाहिए। कुमारियां पवित्र होने के कारण अपनी धारणा को तेज बना सकती हैं। ऐसे कमाल का कर्त्तव्य कर दिखाना है, जो हर एक के मुख से यही निकले कि इन्हों का कर्त्तव्य कमाल का है। जैसे बापदादा के हर बोल सुनते हैं तो मुख से निकलता है ना कि आज की मुरली तो कमाल की है। तो कुमारियों के हर कर्म ऐसे कमाल के होने चाहिएं। बापदादा को फालो करना है। ऐसे नहीं कहना कि कोशिश करेंगे। जब तक कोशिश करेंगे तब तक कशिश नहीं होगी। अगर कशिश धारण करनी है तो कोशिश शब्द को खत्म कर दो। अभी कशिश रूप बनना है। फालो फादर करना है। बापदादा कब कहते थे कि कोशिश करेंगे? फिर आप क्यों कहती हो कि कोशिश करेंगी? कुमारियां कमाल करेंगी तो साथी साथ भी देगा। नहीं तो साथी साक्षी हो जायेगा। इसलिए साथी को साथ रखना है। नहीं तो साक्षी बन जायेंगे। साक्षी अच्छा लगता है या साथी? जो मेहनत करते हैं उसका फल भी यहाँ ही मिलता है। यह स्नेह और भविष्य पद मिलता है। सभी का स्नेही बनने के लिए मेहनत करनी है। जो जितनी मेहनत करते हैं वह उतने ही स्नेही बनते हैं। समय पर स्नेही की ही याद आती है। कोई बात में मेहनत की याद आती है। बाबा भी क्यों याद आते हैं? मेहनत की है तब स्नेह है। मेहनत से स्नेही बनना है। जितना जास्ती मेहनत उतना सर्व के स्नेही बनेंगे। मेहनत का फल ही स्नेह है। जो मेहनत करते हैं उनको हरेक स्नेह की नज़र से देखेंगे। जो

मेहनत नहीं करेंगे उनको स्नेह की नजर से नहीं देखेंगे। स्टूडेन्ट को टीचर के गुण जरूर धारण करने हैं। स्नेह ही सम्पूर्ण बनाता है। स्नेह के साथ फिर शक्ति भी चाहिए। दोनों का जब मिलन हो जाता है तो स्नेह और शक्ति वाली अवस्था अति न्यारी और अति प्यारी होती है। जिसके लिए स्नेह है उसके समान बनना है। यही स्नेह का सबूत है। इसमें अपने को चेक करना है—कहाँ तक हम समानता में समीप आये हैं? जितना-जितना समानता में समीप होंगे उतना ही समझो कर्मातीत अवस्था के समीप पहुंचेंगे। यही समानता का मीटर है। अपनी कर्मातीत अवस्था को परखना है। सिर्फ स्नेह रखने से भी सम्पूर्ण नहीं बनेंगे। स्नेह के साथ-साथ शक्ति भी होगी तो खुद सम्पूर्ण बन औरों को भी सम्पूर्ण बनायेंगे। क्योंकि शक्ति से वह संस्कार भर जाते हैं। तो अब स्नेह के साथ शक्ति भी भरनी है।

सभी के दिलों पर विजय किन गुणों से प्राप्त कर सकते हो? सभी को सन्तुष्ट करना। बाप में यह विशेष गुण था। वही फालो करना है। सभी मधुबन की लिस्ट में हो या आलराउन्डर की लिस्ट में हो? एक है हद की लिस्ट, दूसरी है बेहद की लिस्ट। आलराउन्डर और एवररेडी। इस लिस्ट में मालूम है क्या करना होता है? एक सेकेण्ड में तैयार। संकल्पों को भी एक सेकेण्ड में बन्द करना है। मिलिट्री वालों का हर समय बिस्तरा तैयार रहता है। यह संकल्पों का बिस्तरा भी बन्द करना है। बिस्तरा भी एवररेडी रहना चाहिए। एवररेडी बनने वालों का संकल्पों का बिस्तरा तैयार रहना चाहिए। कोई भी परिस्थिति हो उसका सामना करने के लिए पेटी-बिस्तरा तैयार हो। अच्छा!

रूहानी बच्चो! तुम आत्माओं को वाणी से परे अपने घर जाने के लिए पुरुषार्थ करना है। इसलिए इस पुरानी दुनिया में रहते देह और देह के सम्बन्धों से उपराम-चित होना है। पतित दुनिया में रहते हुए बाप पवित्र बनने की शक्ति
के तुमको सदा पवित्र बनना है।

एक बनना है। स्तुति-निन्दा, लाभ-हानि, जय-पराजय —
चलना है और रहमदिल बनना है। अच्छा!

(६५)

(१३)

पावरफुल वृत्ति से सर्विस में वृद्धि

9.10.71

आज यह संगठन किस लक्ष्य से इकट्ठा हुआ है ? संगठन में प्राप्ति तो होती है लेकिन आपस में मिलने का भी लक्ष्य क्या रखा है ? कुछ नया प्लैन सोचा है ? क्योंकि यह संगठन है सर्वश्रेष्ठ आत्माओं का वा समीप आत्माओं का। सभी की नजर समीप और श्रेष्ठ आत्माओं के ऊपर है। तो श्रेष्ठ आत्माओं को सर्विस में वा अपने संगठन में श्रेष्ठता और नवीनता कैसे लावें यह सोचना है, नवीनता किसको कहा जाता है? नवीनता अर्थात् ऐसा कोई सहज लेकिन पावरफुल प्लैन बनाओ जो वह पावरफुल प्लैन पावर द्वारा आत्माओं को आकर्षित करे। ऐसा प्लैन बनाओ जो दूर से ही आत्माओं को आकर्षण हो। जैसे परवाने होते हैं तो शमा की आकर्षण परवानों को चाहे कितना भी दूर हो, खैंच लेती है। वा कोई तेज अग्नि जगी हुई होती है तो दूर से ही उसका सेक अनुभव होता है। समझते हैं यहां कोई अग्नि है। वा कोई बिल्कुल ठण्डी चीज कहीं भी होती है तो दूर से ही उसकी शीतलता का अनुभव और आकर्षण होता है। इसी रीति से ऐसा अपना रूप और सर्विस की रूपरेखा बनाओ जो दूर से ही आकर्षण होती आत्मायें समीप आती जाएं। जैसे वायुमण्डल में कोई चीज फैल जाती है तो सारे वायुमण्डल में काफी दूर तक उनका प्रभाव छाया होता है। इसी रीति से इतने सब सहज योगी वा श्रेष्ठ आत्मायें अपने वायुमण्डल को ऐसा रूहानी बनावें जो आसपास का वायुमण्डल रूहानियत के कारण आत्माओं को अपने तरफ खैंच ले। वायुमण्डल को बनाने के लिए मुख्य कौनसी युक्ति है ? वायुमण्डल कैसे बन सकता है ? वृत्ति से वायुमण्डल बनाना है। जैसे देखो कोई के अन्दर किसके प्रति वृति में कोई बात आ जाती है तो आप लोग क्या कहते हो ? वायुमण्डल में मेरे प्रति यह बात है। वायुमण्डल का फाउन्डेशन वृत्ति है। तो वृतियों को जब तक पावरफुल नहीं बनाया है तब तक वायुमण्डल में रूहानियत वा सर्विस में वृद्धि जो चाहते हैं वह नहीं हो सकती। अगर बीज पावरफुल होता तो वृक्ष भी पावरफुल होता है। तो बीज है वृत्ति। उससे ही अपनी वा सर्विस की वृद्धि कर सकते हो। वृद्धि का आधार वृत्ति है। और वृत्ति में क्या भरना है, जिससे वृत्ति पावरफुल हो जाए ? तो यह एक ही बात है कि वृत्ति में हर

आत्मा के प्रति रहम वा कल्याण की वृति रहे,तो ऑटोमेटिकली आत्माओं के प्रति यह वृति होने के कारण उन आत्माओं को आप लोगों के रहम वा कल्याण का वॉयब्रेशन पहुंचेगा। जैसे रेडियो का आवाज कैसे आता है, वायुमण्डल में जो वॉयब्रेशन होते हैं उनको कैच करते हैं। वायरलेस द्वारा वॉयब्रेशन कैच करते हैं। तो यह सब साइंस द्वारा एक दो के आवाज को कैच कर सकते हैं वा सुन सकते हैं। तो वह है वायरलेस द्वारा और यह है रूहानी पावर द्वारा। यह भी अगर वृति पावरफुल है तो वृति द्वारा वॉयब्रेशन जो होगा वह उस आत्मा को ऐसे ही स्पष्ट अनुभव होगा जैसे रेडियो का स्वीच खोलने से स्पष्ट आवाज सुनने में आता है। आजकल टेलीवीजन द्वारा भी एक्ट, आवाज को स्पष्ट जान सकते हैं। ऐसे ही अब वृतियों द्वारा बहुत सर्विस कर सकते हो। जैसे टेलीवीजन वा रेडियो की स्टेशन एक ही स्थान पर होते हुए भी कहां-कहां वह पहुंचता है। ऐसे ही वृति में इतनी पावर होनी चाहिए जो कहां भी बैठें लेकिन जितनी पावरफुल स्टेज उतना दूर तक पहुंच जाता है। इसी रीति से जिस आत्मा की वृति जितनी पावरफुल है उतना एक स्थान पर चारों ओर वृति द्वारा आत्माओं को आकर्षण करेंगे। अभी यह सर्विस चाहिए। वाणी और वृति दोनों साथ-साथ चाहिएं। होता क्या है— जब वृति द्वारा सर्विस करते हो तो वाणी नहीं चलती और जब वाणी द्वारा सर्विस करते हो तो वृति की पावर कम होती। लेकिन होना क्या चाहिए ? जैसे आजकल सिनेमा अथवा टी.वी. में एक्ट भी, आवाज भी दोनों साथ-साथ चलता है। दोनों कार्य साथ-साथ चलते हैं ना। इसमें भी प्रैक्टिस हो तो वृति और वाणी दोनों की इकट्ठी-इकट्ठी सर्विस हो। ज्यादा वाणी में आने के कारण जो वृति द्वारा वायुमण्डल को पावरफुल बना सकते हैं वह नहीं कर पाते। सिर्फ वाणी होने के कारण उसकी पावर इतने समय तक चलती है जितना समय सम्मुख वा समीप हैं। वृति वाणी से सूक्ष्म है ना। तो सूक्ष्म का प्रभाव जास्ती पड़ेगा। मोटे रूप का प्रभाव कम होगा। तो सूक्ष्म पावर भी हो और स्थूल भी हो। दोनों पावर्स से वृति हो ऐसा कुछ अनोखापन दिखाई दे। अभी महान अन्तर दिखाई नहीं देता है। एक ही स्टेज पर दोनों प्रकार की आत्मायें इकट्ठी विराजमान हों तो जनता को महान अन्तर दिखाई देवे। साक्षी होकर देखो तो महान अन्तर दिखाई देता है ? जैसे कोई बहुत पावरफुल चीज होती है तो दूसरी चीजों का इफेक्ट उसके ऊपर नहीं होता है। यहां भी अगर स्थूल स्टेज पर अपनी सूक्ष्म पावरफुल स्टेज है तो दूसरे भल कितना भी पावरफुल बोले लेकिन वायुमण्डल में उनका प्रभाव नहीं पड़ सकता। जैसे यादगार रूप में दिखाते हैं स्थूल युद्ध का रूप एक तरफ तीर आया और

रास्ते में उसको कट कर दिया। तीर निकला और वहां ही खत्म कर दिया। यह वृत्ति से ही वायुमण्डल को पावरफुल बना सकते हो। अभी कहां-कहां अपनी स्टेज की कमी होने के कारण,अपनी स्टेज पर अन्य आत्माओं का प्रभाव वायुमण्डल पर पड़ता है, क्यों ? कारण क्या है ? वृत्ति द्वारा आत्माओं को रूहानियत का घेराव नहीं डाल सकते हो। जैसे कोई भी आत्मा को पकड़ना होता है तो घेराव ऐसा डालते हैं जो निकल ही नहीं सके। वृत्ति द्वारा रूहानियत का घेराव वायुमण्डल में डालने से कोई भी आत्मा रूहानी आकर्षण से बाहर नहीं निकल सकती। अभी ऐसी सर्विस चाहिए। क्योंकि वह करामात देखने को हिरे हुए हैं ना,तो सब सोचते हैं कोई करामात दिखावे लेकिन यहां करामात के बजाए कमालियत दिखानी है। उन्हों की है रिद्धि सिद्धि द्वारा करामात। और आप लोगों का है वृत्ति द्वारा कमालियत दिखाना। अभी कोई कमालियत दिखाते हैं, उन्हों को विशेषता का अनुभव जरूर होना चाहिए। होता क्या है कि आत्माओं का अल्पकाल का प्रभाव कहां-कहां पड़ जाता है—उन्हों को नोट करते हो यह कैसे करते हैं, यह कैसे बोलते हैं, इसी कारण अपनी अथार्टी का जो फोर्स होना चाहिए वह दूसरे तरफ दृष्टि जाने से कमजोर हो जाता है क्योंकि यह भी बड़ा सूक्ष्म नियम है। जबकि वायदा है कि वृत्ति में, सुनने में, देखने में, सोचने में एक के सिवाए और कोई नहीं। आत्माओं के प्रभाव को बुद्धि में रखते हुए या आत्माओं के प्रभाव को देखते हुए करना, यह भी सूक्ष्म में लिंक टूट जाती है और लिंक टूटने के कारण जो आलमाइटी अथार्टी की लेवल होनी चाहिए वह बदल जाती है । जैसे शुरू-शुरू में मस्त फकीर रमतायोगी थे । अपनी नॉलेज की पावर को प्रत्यक्ष करने में समर्थ थे। वह समर्थी होने के कारण फर्स्ट रचना भी समर्थ हुई और अबकी रचना फर्स्ट रचना के माफिक समर्थ है ? चाहे कितने भी उमंग आते हैं लेकिन पहली रचना जो समर्थ थी अब वह नहीं है। नॉलेज के अनुभवी तो आप दिन प्रतिदिन बन रहे हो लेकिन पावरफुल स्टेज जो पहले थी वह है ? वह निर्भयता है ? वह अथार्टी के बोल पहले जैसे अभी हैं ? जैसे कभी-कभी कोई चीज को ज्यादा रिफाइन करते हैं—तो रिफाइन मल हो जाती है लेकिन पावर-लेस हो जाती है। आजकल की चीजों में रिफाइन होते भी फोर्स है ? तो यह भी नॉलेज का रूप रिफाइन हो गया है, टैक्ट रिफाइन हो गई है लेकिन फोर्स कम है। पहली बातें अगर स्मृति में लाओ तो वह खुमारी कितनी थी ? नॉलेज की आकर्षण नहीं थी लेकिन मस्तक और नयनों में आकर्षण थी। नयनों से सब अनुभव करते थे कि यह कोई अलबेले लोग आए हैं। अभी मिक्स होने के कारण मिक्सड दिखाई देते हैं।

बहुत मिक्स वाली चीज जो होती है वह अल्पकाल के लिए रसना बहुत देती है लेकिन उसमें ताकत नहीं होती। जैसे चटनी कितनी चटपटी होती है लेकिन उसमें पावर है? सिर्फ अल्पकाल के लिए जीभ का रस आकर्षण करता है। तो यह भी बहुत मिक्स करने से अल्पकाल के लिए सुनने में बहुत अच्छा लगता है। परन्तु पावर नहीं। जैसे ताकत की चीज एनर्जी को बढ़ाती है और एनर्जी सदाकाल का साथी बन जाती है—इसी रीति से जो अथार्टी और ओरीजनल्टी के बोल हैं वह सदाकाल के लिए शक्ति रूप बना देता है; और जो रमणीक रूप वा मिक्स रूप करते हैं तो वह सिर्फ अल्पकाल के लिए रुचि में लाते हैं। आत्माओं को रुचि में लाना है वा शक्ति भरनी है? क्या करना है? शक्ति उन्हों को सदाकाल के लिए आकर्षित करती रहेगी और रुचि अभी है फिर दूसरी कोई बात सुनी तो उस तरफ रुचि होने के कारण वहां ही खत्म हो जायेगी। तो ऐसा अभी रमतायोगी बनो। ऐसे अनुभव होने चाहिएं। जैसे कोई बड़े-बड़े महात्मायें होते हैं—बहुत समय गुफाओं में रहने के बाद सृष्टि पर आते हैं सेवा के लिए। ऐसे जब स्टेज पर आते हो तो यह अनुभव होना चाहिए कि यह आत्मायें बहुत समय के अन्तर्मुखता, रूहानियत की गुफा से निकल कर सेवा के लिए आई हैं। तपस्वी रूप दिखाई दे। बेहद के वैराग की रेखायें सूरत से दिखाई दें। कोई थोड़ा-सा वैरागी होता है तो उनकी झलक सिद्ध करती है ना कि यह वैरागी हैं तो बेहद की वैराग वृत्ति दिखाई देनी चाहिए। स्टेज पर जब सर्विस पर आते हो तो आपकी सूरत ऐसे अनुभव होनी चाहिए जैसे प्रोजेक्टर की मशीन होती है—उसमें स्लाईड्स चेंज होती जाती हैं। कितना अटेन्शन से देखते हैं। वह सीन स्पष्ट दिखाई देती है वैसे जब सर्विस की स्टेज पर आते हो—एक-एक की सूरत प्रोजेक्टर-शो की मशीन माफिक दिखाई दे। रहमदिल का गुण सूरत से दिखाई देना चाहिए। बेहद के वैरागी हो तो बेहद वैराग की रेखायें सूरत से दिखाई देनी चाहिएं। आलमाइटी अथार्टी द्वारा निमित्त बने हुए हो तो अथार्टी का रूप दिखाई देना चाहिए। जैसे उसमें भी स्लाईड्स भर लेते हैं फिर एक-एक स्पष्ट दिखाई देता है। इसी रीति से आत्मा में जो सर्व-गुणों के वा सर्व-शक्तियों के संस्कार भरे हुए हैं वह एक-एक संस्कार सूरत से स्पष्ट दिखाई दे। इसको कहा जाता है सर्विस। जैसे साकार रूप का एक्जैम्पुल देखा, सूरत से हर गुण का प्रत्यक्ष सा० किया फालोफादर। कैसी भी अथार्टी वाला आवे वा कैसे भी मूड वाला आये लेकिन गुणों की पर्सनैलिटी, रूहानियत की पर्सनैलिटी सर्व-शक्तियों की पर्सनैलिटी के सामने क्या

करेंगे ? झुक जायेंगे । अपना प्रभाव नहीं डाल सकेंगे । यह वृत्ति द्वारा वायुमण्डल पावरफुल बनाने के कारण उन्हों की वृत्ति वा उन्हों के अंदर के वॉयब्रेशन बदल जायेंगे । सबके मुख से वृत्ति की पावर का वर्णन होता था ना । तो वृत्ति और वाणी की अथार्टी का प्रत्यक्ष सबूत देखा, तो फालो करना चाहिए ना । अब स्नेह रूप में तो पास हो गये । अब किस में पास होना है ? क्योंकि अंतिम स्वरूप है ही शक्ति का । कोई भी आत्मा आप लोगों के पास आती है तो पहले जगत-माता का स्नेह रूप धारण करते हो लेकिन जब वह चलना शुरू करता है और माया का सामना करना पड़ता है तो सामना करने में सहयोगी बनने के लिए शक्ति रूप भी धारण करना पड़े ।

जहां देखेंगे निमित्त बनी हुई आत्मायें सिर्फ स्नेह मूर्त हैं तो उन्हों की रचना में भी समस्याओं को सामना करने की शक्ति कम होगी । यज्ञ वा दैवी परिवार के स्नेही, सहयोगी होंगे लेकिन सामना नहीं कर सकेंगे । कारण ? रचता का प्रभाव रचना पर पड़ता है । अभी जो भी आत्मायें आगे बढ़ते-बढ़ते अब जहां तक पहुंच गई हैं उससे आगे बढ़ाने के लिए विशेष आत्माओं को विशेष क्या करना है ? जिन आत्माओं के निमित्त बने हो उन आत्माओं में भी शक्ति रूप से शक्ति भरने की आवश्यकता है । वर्तमान समय के मैजारटी आत्माओं की रिजल्ट क्या दिखाई देती है ? पीछे हटेंगे भी नहीं और आगे बढ़ेंगे भी नहीं । अटके हुए भी नहीं हैं, लटके हुए भी नहीं हैं लेकिन शक्ति नहीं है जो जम्प दे सकें । एक्स्ट्रा फोर्स चाहिए । जैसे राकेट में फोर्स भरकर इतना ऊपर भेजते हैं ना, तो अभी आत्माओं को परवरिश चाहिए—अपनी यथाशक्ति से जम्प नहीं दे सकते । विशेष आत्माओं को विशेष शक्ति भरकर के हाई जम्प दिलाना है । चाहते हैं, पुरुषार्थ भी करते हैं लेकिन अभी फोर्स चाहिए । वह फोर्स कैसे देंगे ? जब पहले अपने में इतना फोर्स हो जो अपने को तो आगे बढ़ा सको लेकिन शक्ति का दान भी कर सको । जैसे ज्ञान का दान करते हो वैसे अभी चाहिए शक्ति का बल । अभी वरदाता-पन का कर्तव्य करना है । ज्ञानदाता बन बहुत किया, अब शक्तियों का वरदाता बनना है । इसलिए शक्तियों के आगे सदैव वर मांगते हैं । शक्तियों से सदैव शक्ति का वर मांगते हैं । शक्तियों से सदैव सिद्धि लेने के लिए मांगते हैं । सिद्धि कैसे मिलेगी शक्तियों द्वारा ? अभी कौन-सी सर्विस करनी है ? वरदानी बनकर सर्व-शक्तियों का अपनी निमित्त बनी हुई रचना को वरदान देना है । विशेष आत्मायें जो निमित्त बनी हुई हों वो ही ज्यादा यह सर्विस कर सकती हैं ।

यह ग्रुप विशेष आत्माओं का है ना । जैसे सुनाया माइक बनना बहुत सहज है लेकिन आप लोगों की सर्विस-माइक तो बहुत बन जायेंगे लेकिन माइट भरने वाले आप हो । अभी यह आवश्यकता है । अभी अपने ही पुरुषार्थ में रहने का समय नहीं है, अब अपने पुरुषार्थ द्वारा प्रत्यक्ष होकर प्रभाव निकालने का समय है और वह प्रभाव ही आत्माओं को ऑटोमेटिकली आकर्षण करेगा । पाण्डवों का गायन क्या है ? गुप्त रहने के बाद प्रत्यक्ष हुए ना । अभी प्रत्यक्ष होना चाहिए । जैसे स्थूल स्टेज पर प्रत्यक्ष होते जा रहे हो, अब अपनी सूक्ष्म स्टेज को प्रत्यक्ष करो । गर्जना की रचना करो । अगर कमजोर रचना करेंगे तो कमजोर रचना को सम्भालने में भी समय लगेगा । पावरफुल रचना होने से सहयोगी बनेंगे । अभी ललकार करनी चाहिए । देवियों के पूजन में ललकार का ही पूजन होता है । यह पावर की निशानी यादगार रूप में है । जोर-जोर-से चिल्लाते हैं । अपने अन्दर के फोर्स को इस रीति प्रसिद्ध करते हैं । देवियों का पूजन चुपचाप नहीं करेंगे । जोर-शोर-से करते हैं । तो अब शक्तियों को ललकार और गर्जना करनी चाहिए अपने सिद्धांतों को सिद्ध करने में तब सिद्धि को प्राप्त करेंगे । जब रिवाजी आत्मायें भी निर्भय होकर अपने सिद्धांत को सिद्ध करने का कितना पुरुषार्थ करती हैं तो आप लोगों को सिद्धांतों को सिद्ध करने का कितना जोश होना चाहिए । आप वायुमण्डल के होश में आ जाते हो । आदि का पार्ट फिर से अन्त में गुह्य और गोपनीय रूप से रिपीट करना है । रिवाजी करामात दिखाने वालों की देखो—खुमारी कितनी होती है ! अन्दर में समझते हैं कि यह अल्पकाल का है फिर भी खुमारी कितनी रखते हैं ! लेकिन जो सत्य खुमारी है वह कितनी कमालियत दिखा सकती है ? उसके आगे उन्हों की खुमारी क्या है ? अभी लास्ट फोर्स कौन-सा रहा है ? फोर्सरूप बनना है । अभी जगत-माता बहुत बने, अब शक्तिरूप से स्टेज पर आना है । शक्तियां आसुरी संस्कारों को एक धक-से खत्म करती हैं और स्नेही मां जो होती है वह धीरे-धीरे प्यार से पालना करती है । पहले वह आवश्यकता थी लेकिन अभी आवश्यकता है शक्ति-रूप बन आसुरी संस्कारों को एक धक से खत्म करना । जैसे वह बलि चढ़ाते हैं तो पहले शृंगार करते हैं, उसमें समय लगता है । लेकिन जब बलि चढ़ती है तो एक सेकेंड में । शृंगार बहुत किया अब एक धक से वायुमण्डल से भी आसुरी संस्कारों को खत्म करने का फोर्स होना चाहिए । रहमदिल के साथ-साथ शक्ति रूप का रुहाब भी होना चाहिए । सिर्फ रहमदिल भी नहीं । जितना ही अति रुहाब उतना ही अति रहम ।

शब्दों में भी रहमदिल का भाव हो, ऐसी सर्विस का अभी समय है । यह जो गायन है नज़र से निहाल करने का, वह किसका गायन है ? शक्तियों के चित्रों में सदैव नयनों की शोभा आप देखेंगे । और कोई इतनी आकर्षण वाली चीज़ नहीं होती है, नयनों द्वारा ही सब भाव प्रसिद्ध करते हैं । तो यह नज़र से निहाल करना यह सर्विस भी शक्तियों की गाई हुई है । नयनों की आकर्षण हो, नयनों में रूहानियत हो, नयनों में रूहाब हो, नयनों में रहमदिली हो, ऐसा प्लैन बनाना है ।

यहां मधुबन से जो विशेष आत्मायें निकलें तो आपकी रचना को अनुभव हो कि यह शक्ति-सेना अपने में शक्ति को प्रत्यक्ष करने का प्रभाव भरकर आई है । प्रभावशाली चलन, प्रभावशाली वृत्ति अनुभव करें । आपके ऊपर सारे दैवी परिवार की प्रोग्रेस का आधार है । सब समझते हैं इस प्रोग्राम के बाद हम आत्माओं में वा सर्विस में प्रोग्रेस होगी । अगर ऐसे ही साधारण प्रोग्राम समाप्त किया तो सभी सोचेंगे । सबकी नजरों में है कि इन विशेष आत्माओं का संगठन क्या जलवा दिखाता है । तो इतना ही अटेन्शन देना पड़े ।

एक तो सर्विस में नवीनता, दूसरा निमित्त बनी हुई आत्माओं में नवीनता दिखाई दे क्योंकि सर्विस का सारा आधार विशेष आत्माओं पर है । अभी तो सब समझते हैं । जैसे साइंस वाले पावरफुल इन्वेन्शन निकाल रहे हैं वैसे यह शक्ति ग्रुप भी पावरफुल साइलेन्स का श्रेष्ठ शस्त्र तैयार कर दिखायेंगे । आपस में सिर्फ मिलना नहीं है लेकिन मिल करके कोई पावरफुल शस्त्र तैयार करना है । जो अति पावरफुल चीज होती है वह अन्डरग्राउण्ड होती है । तो यह संगठन भी अन्डरग्राउण्ड है । अन्तर्मुखता में अन्दर जाकर सोचने का है । कोई कमालियत दिखानी है । कामन संगठन तो सब करते रहते हैं । आप लोगों ने भी कामन बातें ही की तो कमालियत कौन करेगा ? ऐसे शस्त्र बनाना । इसलिए ही शक्तियों को शस्त्र ज़रूर दिखाते हैं । अब संहारी बनो । अपने संस्कारों के भी संहारी और आत्माओं के तमोगुणी संस्कारों के भी संहारी । (शंकर का पार्ट प्रैक्टिकल तो बजना है लेकिन शक्तियां ही संहार का पार्ट बजाती हैं, शंकर को नहीं बजाना है । शक्तियों को संहारी रूप धारण करना है जिससे संहार करना है ।) कर्त्तव्य किया है, अब यह रूप दिखाओ । इस रूप को धारण करने से रिज़ल्ट क्या होगी ? आपकी जो रचना है वह अनुभव करेगी कि दिन-प्रतिदिन एक्स्ट्रा लिफ्ट मिलती जा रही है । यथाशक्ति अपना फोर्स तो लगाया, अपनी मेहनत से अभी नहीं चल सकते, अभी उन्हों को

चाहिए वरदान की लिफ्ट । आज दिन तक जो बातें उन्हों को मुश्किल पड़ती हैं, तो आप लोगों की इस पावरफुल सर्विस से उन्हों के मुख से मुश्किल शब्द खत्म हो जाए । सब बात में सहज का अनुभव करें । यह जब अपनी रचना में देखेंगे तब समझना संहारी रूप बने हैं । स्पष्ट रिजल्ट दिखाई दे । फिर तूफान, तूफान नहीं तोफा लगेगा । ऐसा रूप चेंज हो जायेगा तब समझो कि अपनी ओरीजनल स्टेज का सा॰ करा रहे हैं ।

सभी धारणाओं की बातों में से मुख्य धारणा की कौन-सी बात सभी को देते हो ? अव्यक्त बनने के लिए भी प्वाइंट कौन-सी देते हो ? बाप को याद करने अथवा रूह-रूहान करने का भी उमंग कैसे उठेगा ? उसके लिए मुख्य बात है सच्चाई और सफाई । आपस में एक-दो के भाव को सफाई से जानना आवश्यक है । विशेष आत्माओं के लिए सच्चाई-सफाई शब्द का अर्थ भी गुह्य है । एक-दो के प्रति दिल में बिल्कुल सफाई हो । जैसे कोई बिल्कुल साफ चीज़ होती है तो उनमें सब-कुछ स्पष्ट दिखाई देता है ना । वैसे ही एक-दो की भावना, भाव-स्वभाव स्पष्ट दिखाई दें । जहां सच्चाई-सफाई है वहां समीपता होती है । जैसे बापदादा के समीप हैं। राज्य सिर्फ एक से तो नहीं चलता है ना, आपस में भी संबंध में आना है । यहां भी आपस में समीप संबंध में कैसे आयेंगे ? जब यहां दिल समीप होगी । यहां के दिल की समीपता वहां संबंध में समीपता लायेगी । एक-दो में स्वभाव, मन के भाव दोनों में समीपता होनी चाहिए । स्वभाव की भिन्नता के कारण ही समीपता नहीं होती है । कोई रमणीक होगा तो समीपता होगी, कोई आफीसर होगा तो समीपता नहीं । लेकिन यहां तो सर्वगुण सम्पन्न, १६ कला सम्पूर्ण बनना है ना । यह कला भी कम क्यों ? समझो, आपके ओरिजनल संस्कार आफीसर हैं लेकिन समय, संगठन रमणीकता लाता है, तो यह भी कला होनी चाहिए जो स्वभाव को मिला सकें । ऐसे ही १६ कला सम्पन्न बन सकेंगे । तो मन के भाव को भी मिलाना है और स्वभाव को भी मिलाना है तब समीप आयेंगे । अभी भिन्नता महसूस होती है । एक-एक के ओरिजनल स्वभाव अभी फर्क में दिखाई देते हैं, यह सम्पूर्णता की निशानी नहीं है । सब कलायें भरनी चाहिए । फलाने का स्वभाव सीरियस है, यह भी समझो कला कम है । फलाने से यह बात नहीं कर सकते—यह भी कला कम । तो १६ कला सम्पूर्ण अर्थात् जो सम्पूर्ण स्टेज है वह सर्व कलायें स्वभाव में होनी चाहिएं । उसको कहते हैं १६ कला सम्पूर्ण । इस संगठन में स्वभाव को और भाव को समीप लाना है ।

कभी-कभी कहते हैं ना—यह मेरा स्वभाव है, मेरा कोई यह भाव नहीं है । तो यह मन की भावनायें भी एक-दो में मिलनी चाहिएं । जब सम्पूर्णता एक ही है तो भाव और स्वभाव भी मिलने चाहिएं । जैसे गायन है कि यह एक ही सांचे में से निकले हुए एक ही भाषा बोलते हैं, एक ही ढंग है यह प्रसिद्ध है ना । वैसे अब यह प्रसिद्ध दिखाई देना चाहिए । सर्वश्रेष्ठ आत्माओं के मन की भावना और स्वभाव एक ही सांचे से निकले हुए हों, ऐसा दिखाई दे । सच्चाई-सफाई का कोई साधारण अर्थ नहीं उठाना । जितनी सफाई होगी उतना हल्कापन भी होगा । जितना हल्के होंगे उतना एक-दो के समीप आयेंगे और दूसरों को भी हल्का बना सकेंगे । हल्कापन होने के कारण चेहरे से लाइट दिखाई देगी । तो अभी यह चेंज लाओ । पहले-पहले आपकी सूरत से सा अधिक होते थे । लाइट दिखाई देती थी । शुरू के सर्विस की स्मृति लाओ, बहुत सा होते थे, देवी का रूप अनुभव करते थे । अभी स्वीकर लगते हो, नॉलेजफुल लगते हो लेकिन पावरफुल नहीं लगते हो । यह इस संगठन में भरना है । बिल्कुल ऐसे दिखाई दे जैसे अभी सब अनुभव करते हैं कि यह दो निमित्त हैं । परंतु यह दो नहीं, एक दिखाई देते हैं । सब प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं । एक-दो के समीप आते-आते समान होते जाते हैं, तो जैसे यह दो,एक दिखाई देते हैं वैसे यह सब एक दिखाई दें तब कहेंगे अब माला तैयार है । स्नेह का धागा तैयार हो गया तो मणके सहज पिरो जायेंगे । स्नेह के धागे से मोती अति समीप होते हैं तब ही माला बनती है । समीपता ही माला बनाती है । तो स्नेह का धागा तैयार हुआ लेकिन अभी मणकों को एक-दो के समीप मन की भावना और स्वभाव मिलाना है तब माला प्रत्यक्ष दिखाई देगी। यह जरूर करना है। ऐसा कमाल कर दिखाना।

इतना दूर-दूर,कहां-कहां से सर्विस छोड़कर आये हो ना तो उसका सबूत जरूर दिखाना । दूर से चलकर आये हो, दूरी को मिटाने के लिए । समझा ? सर्वश्रेष्ठ आत्माओं के साथ बापदादा भी है ना । जिन समीप आत्माओं के साथ बापदादा है ऐसे ग्रुप का सब इंतज़ार कर रहे हैं कि कब इस संगठन का जलवा देखेंगे । विशेष आत्माओं का साधारण कर्तव्य भी विशेष माना जाता है । रिवाजी रीति आपस में बैठेंगे तो भी लोग उस विशेषता से देखेंगे । सभी चाहते हैं अभी कोई ऐसा फोर्स मिले जो नवीनता का अनुभव हो ।

सबको फोर्स देने के निमित्त आत्मायें हो । उन्हों को अव्यक्ति स्थिति में ऐसा चढ़ा दो जो इस धरती की छोटी-छोटी बातों की आकर्षण उन्हों को खींच न सकें ।

माया प्रूफ बनाओ । माया प्रूफ बनाने का प्रूफ दिखाना है । आप हो प्रूफ, विजयी रत्न क्या होते हैं उनका प्रूफ हो । तो जो प्रूफ हैं उन सबको माया प्रूफ बनना है । तो इस संगठन का आप क्या रहेगा ? १६ कला सम्पूर्ण बनना है । एक भी कला कम न हो । जो ओल्ड-गोल्ड हैं वह गोल्ड सहज हो सकते हैं । कला न होने के कारण ही गोल्ड नहीं हो सकते । सम्पूर्ण, फुल परसेन्टेज का गोल्ड हो इसलिए सर्व विशेषतायें भरकर जाना । अभी देखो हरेक की अपनी-अपनी विशेषता होती है । जब कोई विशेष कार्य होता है तो उसके लिए विशेष आत्मा की याद आती है लेकिन अब कोई भी कार्य हो तो सर्व विशेष आत्माओं की स्मृति आये । तो एक-दो में सहयोग देना और लेना । (जब बीज-रूप ग्रुप ऐसे बनेंगे तो बीज से वृक्ष तो ऑटोमेटिकली निकलेंगे ही । यह संगठन बीज-रूप है ना । सृष्टि के बीज-रूप नहीं हो लेकिन अपनी रचना के तो बीज-रूप हो ना। तो अगर बीज -रूप संगठन १६ कला सम्पूर्ण बन जायेगा तो वृक्ष भी ऐसे निकलेंगे । अभी समय नहीं है जो छोटी-सी कमी के कारण कम रह जाएं) अगर कमी रह गई तो नम्बर में भी कम रह जायेंगे । छोटी-छोटी कमियों के कारण इस संगठन को नम्बर में कम नहीं आना है ।

तो सच्चो दीपावली मनाना । पुराने संस्कार, पुराने संकल्प, पुरानी भावनायें, पुराने स्वभाव सब खत्म और सम्पूर्णता का, सर्व विशेषताओं का खाता शुरू कर जाना । दीपावली, जब पहले विशेष आत्मायें मनायेंगी तब फिर और मनायेंगे । यह सारी भट्ठी ही टीचर्स की है, हरेक के फीचर से यह फ्यूचर दिखाई दे । तो क्या हो जायेगा ? फ्यूचर प्रेजेन्ट हो जायेगा । अच्छा – □

३०-५-७३

(१४)

संगम युग—पुरुषोत्तम युग

निर्बल को बल देने वाले, विश्व का मालिक बनाने वाले, विश्व-कल्याणकारी विश्व का परिवर्तन करने वाले बाबा बोले :—

सभी अपने को पाण्डव सेना के महावीर या महावीरनियाँ समझते हो ? महावीर अर्थात् अपने को शक्तिशाली समझते हो ? कोई निर्बल आत्मा सामने आये तो क्या निर्बल को बल देने वाले बने हो, या अभी तक स्वयं में ही बल भरते जा रहे हो ? दाता हो या लेने वाले बने हो ? सर्व-शक्तियों का वरसा प्राप्त कर चुके हो या अभी प्राप्त करना है ? अभी तक प्राप्ति करने का समय है या कराने का समय है ? महान् बनने के लिये मेहनत लेने का समय है या बाप से ली हुई सेवा का रिटर्न (return) करने का समय है ? अगर अन्त तक किसी भी द्वारा किसी भी प्रकार की सेवा लेते रहेंगे तो सेवा का रिटर्न क्या भविष्य में करेंगे ? भविष्य में प्रारब्ध भोगने का समय है या रिटर्न का फल देने का समय है ? ये सभी बातें बुद्धि में रखते हुए अपने आप को चैक (check) करो की हमारा अन्तिम पार्ट (part) व भविष्य क्या होगा ? जब अभी से सर्व-आत्माओं को बाबा का खजाना देने वाले दाता बनेंगे, अपनी शक्तियों द्वारा प्यासी व तड़पती हुई आत्माओं को जी-दान देंगे, वरदाता बन प्राप्त हुए वरनानों द्वारा उन्हें भी बाप के समीप लावेंगे और बाबा के सम्बन्ध में लावेंगे, तब यहाँ के दातापन के संस्कार भविष्य में इक्कीस जन्मों तक राज्यपद अर्थात् दातापन के संस्कार भर सकेंगे। (इस संगमयुग को पुरुषोत्तम संगमयुग व

सर्वश्रेष्ठ युग क्यों कहते हो ? क्योंकि आत्मा के हर प्रकार के धर्म की राज्य की, श्रेष्ठ संस्कारों की, श्रेष्ठ सम्बन्धों की और श्रेष्ठ गुणों की सर्व-श्रेष्ठता अभी रिकार्ड (record) के समान (a) भरता जाता है। चौरासी जन्मों की चढ़ती कला और उतरती कला उन दोनों के संस्कार इस समय आत्मा में भरते हो। रिकार्ड भरने का समय अभी चल रहा है। (a)

जब हद के रिकार्ड भरते हैं तो भी कितना अटेन्शन (attention) रखते हैं। हद का रिकार्ड भरने वाले भी तीन बातों का ध्यान रखते हैं। वह कौनसी हैं? वह लोग वायुमण्डल, अपनी वृत्ति और वाणी इन तीनों के ऊपर अटेन्शन देते हैं। अगर वृत्ति चंचल होती है और वह एकाग्र नहीं होती है तो भी वाणी में आकर्षण करने का रस नहीं रहता। जिस प्रकार का गीत गाते हैं, उसी रूप में स्थित होकर गाते हैं। अगर कोई दुःख का गीत होता है तो दुःख का रूप धारण कर गीत न गाये तो सुनने वालों को उस गीत से कोई रस नहीं आयेगा। जब हद का गीत गाने वाले व रिकार्ड भरने वाले भी इन सभी बातों का ध्यान देते हैं तो आप बेहद का रिकार्ड भरने वाले, सारे कल्प का रिकार्ड भरने वाले क्या हर समय इन सभी बातों के ऊपर अटेन्शन देते हो ? यह अटेन्शन रहता है कि हर सेकेण्ड रिकार्ड भर रहा हूँ ? क्या इतना अटेन्शन रहता है ? रिकार्ड भरते-भरते अगर उल्लास के बजाय आलस्य आ जाय तो रिकार्ड कैसे भरेगा रिकार्ड भरने के समय क्या कोई आलस्य करता है ? तो आप लोग भी जब रिकार्ड भर रहे हो तो भरते-भरते आलस्य आता है या सदैव उल्लास में रहते हो ? कभी अपने भरे हुए सारे दिन के रिकार्ड को साक्षी होकर देखते हो कि आज का रिकार्ड कैसा भरा है ?

जैसे टेप (tape) में भी पहले भर कर फिर देखते हैं और

सुनते है कि देखें कैसा भरा है ठीक है या नहीं ? वैसे ही क्या आप भी साक्षी हो कर देखते हो ? देखने से क्या लगता है ? अपने आप को जंचता है कि ठीक भरा है ? या अपने आपको देखते हुए सोचते हो की इससे अच्छा भरना चाहिए। रिजल्ट तो देखने हो ना ? जो समझते हैं कि सदैव अपने आप को साक्षी होकर रोज़ चेक (check) करते हैं कि कभी भी चैक करना मिस (miss) नहीं होता है वह हाथ उठाओ (थोड़ों ने हाथ उठाया) अभी चैकर (checker) ही नहीं बने हो ? जो चैकर (checker) न बना है वह मेकर (maker) क्या बनेंगे ? भूल जाते हो क्या ? टाईम (time) ऊपर-नीचे हो जाये यह हो सकता है लेकिन भूल जाय यह हो नहीं सकता। तो आत्मा को दिनचर्या जो अमृतबेले ब्रताते हो, फ़िक्स (fix) करते हो वह चैक करना क्यों भूल जाते हो ? या फ़िक्स करना ही नहीं आता है ? आत्मा को दिनचर्या फ़िक्स करनी आती है ? यह तो बहुत कॉमन (common) बात है। इस कॉमन नियम पर भी अगर विस्मृत है तो इससे क्या सिद्ध होता है कि आत्मा अभी तक भी निर्बल है। जो अपने आपको ईश्वरीय नियम, ईश्वरीय मर्यादाओं में नहीं चला सकते वह क्या विश्व की मर्यादापूर्वक लाफ़ुल (lawful) राज्य को चला सकेंगे ? जो संगमयुगीय राज्य-पद के अधिकारी न बने हैं वह भविष्य राज्य-पद कैसे पा सकते हैं ? इस संगठन को टीचर्स (teachers) कौन हैं ? इतनी कम रिजल्ट (result) की ज़िम्मेवार कौन ? क्या आये हुए टीचर स्वयं चैकर हैं ? कोई हिम्मत से नहीं उठाती है। अगर अभी-अभी विश्व-युद्ध छिड़ जाय तो ? किसी ने कहा कि उसी समय खड़े हो जावेंगे, अगर समय पर खड़े हो जायेंगे तो इसको क्या कहा जायेगा ? प्रकृति के आधार पर जो पुरुष चले तो उस पुरुष को क्या कहा जाता है ? समय भी प्रकृति है ना ? तो यदि पुरुष प्रकृति के आधार पर चलने वाला हो तो उसको

क्या पास विद् ऑनर (pass with honour) कहा जायेगा ? समय का धक्का लगने से जो चल पड़े उसको क्या कहा जायेगा? क्या यही सोचा है, कि धक्के से चलने वाले बनेंगे ? वर्तमान संगठन तो बहुत कमज़ोर है। मैंज़ॉरिटो (majority) कमज़ोर है। अच्छा फिर भी बीती सो बीती, लेकिन अभी से आप अपने आप को परिवर्तन कर लो। अभी फिर भी समय है बहुत थोड़ा। अभी तो बाप-दादा और सहयोगी श्रेष्ठ आत्मायें आप पुरुषार्थी आत्माओं को एक का हज़ार गुना सहयोग देकर, सहारा देकर, स्नेह देकर और सम्बन्ध के रूप में बल देकर आगे बढ़ा सकते हैं। लेकिन थोड़े समय के बाद यह बातें अर्थात् लिफ़्ट (lift) का मिलना भी बन्द हो जायेगा। इसलिए अभी जो-कुछ भी लेना चाहो वह ले सकते हैं। फिर बाद में बाप के रूप का स्नेह बदल कर सुप्रीम जस्टिस (supreme justice) का रूप हो जावेगा।

(जस्टिस (justice) के आगे चाहे कितना भी स्नेही सम्बन्धी हो लेकिन लॉ इज लॉ (law is law) अभी लव का समय है फिर लॉ का समय होगा। फिर उस समय लिफ्ट नहीं मिल सकेगी। अभी है प्राप्ति का समय और फिर थोड़े समय के बाद प्राप्ति का बदल कर पश्चात्ताप का समय आयेगा। तो क्या उस समय जागेंगे ? बाप-दादा फिर भी सभी बच्चों को कहेंगे कि थोड़े समय में बहुत समय की प्रालब्ध बना लो। समय के इन्तज़ार में अलबेले न बनो। सदैव यह स्मृति में रखो कि हमारा हर कर्म चौरासी जन्मों के रिकार्ड भरने का आधार है। अपनी वृत्ति, अपने वायुमण्डल और अपनी वाणी को यथार्थ रूप में सैट (set) करो। जैसे वह लोग भी वातावरण को बनाते हैं ऐसे आप लोग भी अपने वातावरण को, अपनी अन्तर्मुखता की शक्ति से श्रेष्ठ बनाओ। वृत्ति को श्रेष्ठ और वाणी को भी राज़-युक्त और युक्ति-युक्त बनाओ तब ही यह रिज़ल्ट बदल

सकेगी। बदलता तो है ना? क्या ऐसे ही मन्जूर है? चैलेन्ज़ (challenge) तो बहुत बड़ी करते हो कि हम पाँच तत्वों को भी बदलेंगे। तो बिना चेंकर के मेकर कैसे बनेंगे? अभी से कम्पलेन्ट कम्पलीट (complaint complete) हो जानी चाहिये। जो समझते हैं कि अभी से यह कमजोरी छुट फिर अन्त तक कभी भी यह न रहेगी वह हाथ उठाव। इसकी जिम्मेवारी किस पर (कोई ने कहा दीदीपर, कोई ने कहा बाप-दादा पर)। बाप-दादा करेंग तो बाप-दादा पावेंग। करने के समय बाप-दादा पर और पाने के समय? भविष्य पद पाने का त्याग करो तो फिर करने का भी त्याग करो। लेकिन वह कर नहीं सकते क्योंकि मुक्ति-धाम के हो ही नहीं। हरेक को अपनी जिम्मेवारी आप उठानी है। अगर यह सोचेंगे कि दीदी, दादी व टीचर जिम्मेवार हैं तो इससे सिद्ध होता है कि आप को भविष्य में उन ही की प्रजा बनना है, राजा नहीं बनना है। यह भी अधीन रहने के संस्कार हुए न? जो अधीन रहने वाला है वह अधिकारी नहीं बन सकता। विश्व का राज्यभाग्य नहीं ले पाता। इसलिये स्वयं के जिम्मेवार, फिर सारे विश्व की जिम्मेवारी लेने वाले विश्व महाराजन् बन सकते हैं। विश्व-कल्याणकारी बाप की सन्तान होकर और अपना कल्याण नहीं कर सकते हो? क्या यह शोभता है? यह तो कलियुग के कर्मभोग की निशानी बताते हो कि कोई लखपति है लेकिन एक रुपये का भी सुख स्वयं नहीं ले सकता। तो सर्व-शक्तियों के खज़ाने का मालिक हो लेकिन स्वयं के प्रति एक छोटी-सी शक्ति भी यूज़ (use) नहीं कर पाते हो इसको क्या कहा जाये? संगमयुग पर ब्राह्मणों की क्या यह निशानी है? अभी संगम-युगी हो या एक पाँव कलियुग में रख दिया है कि कहीं संगम-युग पर न टिक सकेंगे, तो कहाँ चले जावेंगे? संगमयुग की यह निशानी नहीं है। इसलिए अभी से तीव्र पुरुषार्थी बन दृढ़-संकल्प

लो कि करना ही है और बनना ही है। करेंगे और प्लैन (plan) बनायेंगे इसको भी तीव्र पुरुषार्थी नहीं कहा जाता। क्या प्लैन बनावेंगे ? क्या बना हुआ नहीं है ? त्रिकालदर्शी को तो प्लैन बनाने में समय नहीं लगेगा क्योंकि उसको तो तीनों ही काल स्पष्ट हैं। सभी कार्य सेकेण्ड में हों ऐसी तीव्र-गति अपनी बनाओ, तीव्र-गति वाले क्या सद्गति को पावेंगे ?

अच्छा ऐसे उम्मीदवार, बाप-दादा के श्रेष्ठ संकल्प को साकार करने वाले हर संकल्प, कर्म और बोल को चैक करने वाले, हर सेकेन्ड में, हर संकल्प में स्वयं का कल्याण और विश्व का कल्याण करने वाले, विश्व-कल्याणकारी, विश्व-परिवर्तक आत्माओं को बाप-दादा का याद-प्यार और नमस्ते।

इस वाणी का सार

१. अभी जो समय चल रहा है वो है रिकार्ड (record) भरने का। रिकार्ड भरते समय विशेष तीन बातों पर अटेन्शन दिया जाता है—वातावरण, वृत्ति और वाणी। जब हद का रिकार्ड भरने वाले ही इतना अटेन्शन रखते हैं तो हमको भी बहुत ध्यान रखना चाहिए। वातावरण को अपनी अन्तर्मुखता की शक्ति से श्रेष्ठ बनाओ; वृत्ति को श्रेष्ठ और वाणी को भी राजयुक्त एवं युक्तियुक्त बनाओ। ऐसा करने से ही रिज़ल्ट बदल सकता है।

२. स्वयं का स्वयं चैकर (checker) बन कर हर रोज़ ये चैक करो कि जो मेरा रिकार्ड भर गया है क्या वह ठीक है या नहीं ? अपने आपको जंचता है या नहीं ? क्योंकि चैकर ही मेकर बन सकता है। यदि इस कॉमन (cammon) नियम पर अभी तक भी विस्मृत हैं तो सिद्ध है आत्मा अभी तक निर्बल है।

१३-६-७३

(१५)

रूहानी योद्धा

सर्व बधंन मुक्त, त्रिकालदर्शी, सर्वशक्तिदान्, विश्व-कल्याण-कारी, श्रेष्ठ कर्म सिखाने वाले और श्रेष्ठ जीवन बनाने वाले बाबा बोले :—

अपने को रूहानी सेना के महारथी समझते हो ? सेना के महारथी किसको कहा जाता है ? उनके लक्षण क्या होते हैं ? महारथी अर्थात् इस रथ पर सवार, अपने को रथी समझे। मुख्य बात कि अपने को रथी समझ कर इस रथ को चलाने वाले अपने को अनुभव करते हो ? अगर युद्ध के मैदान में कोई महा-रथी अपने रथ अर्थात् सवारी के वश हो जाए तो क्या वह महा-रथी, विजयी बन सकता है या और ही अपनी सेना के विजयी-रूप बनने की बजाय विघ्न-रूप बन जाएगा। हलचल मचाने के निमित्त बन जाएगा। तो जो भी यहाँ इस रूहानी सेना के योद्धा हो, क्या वही इस रथ के रथी बने हो ?

जैसे योद्धे सर्व व्यक्तियों, सर्व-वैभवों का किनारा कर युद्ध और 'विजय'—इन दो बातों को सिर्फ़ बुद्धि में रखते हुए अपने लक्ष्य को पूर्ण करने में लगे हुए होते हैं। वैसे ही अपने-आप से पूछो कि इन दो बातो का लक्ष्य है ? या और भी कई बातें स्मृति में रहती हैं। ऐसे योद्धे बने हो ? कहीं भी रहो लेकिन सदैव यह स्मृति रहे कि हम युद्ध के मैदान पर उपस्थित हुए योद्धे हैं। योद्धे कभी भी आराम पसन्द नहीं होते हैं। योद्धे कभी भी आलस्य और अलबेलेपन की स्थिति में नहीं रहते, योद्धे कभी भी शस्त्रों के बिना नहीं रहते, सदैव शस्त्रधारी होते हैं, योद्धे कभी भी भय से वशीभूत नहीं होते, निर्भय होते हैं, योद्धे कभी भी सिवाय

युद्ध के और कोई बातें बुद्धि में नहीं रखते। सदैव योद्धेपन की वृत्ति और विजयी बनने की स्मृति में रहते हैं। क्या हम सभी भी एक-दूसरे के साथ विजयी रहते हैं? इस दृष्टि से एक-दूसरे को देखते हैं। ऐसे ही रूहानी योद्धों की सदैव दृष्टि में यह रहता है कि हम सभी एस-दूसरे के साथी महावीर हैं, विजयी है। हम हर सेकेण्ड हर कदम में युद्ध के मैदान पर उपस्थित हैं। सिर्फ़ एक ही लगन विजयी बनने की रहती है। सर्व सम्बन्ध वा सर्व प्रकृति के साधनों से अपनी बुद्धि को डिटैच (detach) कर दिया है? किनारा कर लिया है? या युद्ध के मैदान में हो लेकिन बुद्धि की तारें, सम्बन्ध वा कोई भी प्रकृति के साधनों में लगी हुई है? अपने को सम्पूर्ण स्वतन्त्र समझते हो? या कोई बात में परतन्त्र भी हो?

सम्पूर्ण स्वतन्त्र अर्थात् जब चाहो इस देह का आधार लो, जब चाहो इस देह के भान से ऐसे न्यारे हो जाओ जो ज़रा भी यह देह अपनी तरफ़ खींच न सके। ऐसे अपनी देह के भान अर्थात् देह के लगाव से स्वतन्त्र। अपने कोई भी पुराने स्वभाव से भी स्वतन्त्र, स्वभाव से भी बन्धयमान न हो। अपने संस्कारों से भी स्वतन्त्र। अपने सर्व लौकिक सम्पर्क वा अलौकिक परिवार के सम्पर्क के बन्धनों से भी स्वतन्त्र। ऐसे स्वतन्त्र बने हो? ऐसे को कहा जाता है— सम्पूर्ण स्वतन्त्र। ऐसी स्टेज पर पहुंचे हो वा अभी तक एक छोटी-सी कर्मेन्द्रिय भी अपने बंधन में बाँध लेती है।

अगर छोटी-सी चींटी शेर को अथवा महारथी को हैरान कर दे तो ऐसे महारथी व शेर को क्या कहेंगे? शेर कहेंगे? एक व्यर्थ संकल्प मास्टर सर्वशक्तिमान को हैरान कर दे या एक पुराने ८४ जन्मों का जड़जड़ी भूत संस्कार, मास्टर सर्वशक्तिवान, महावीर, विघ्न-विनाशक, त्रिकालदर्शी, स्वदर्शन चक्रधारी को परेशान कर ले, पुरुषार्थ में कमज़ोर बना दे, ऐसे मास्टर सर्व-

शक्तिवान को क्या कहेंगे जिस समय इस स्थिति में होते हो उस समय अपने ऊपर आश्चर्य नहीं लगता। यह शब्द निकलना कि मुझे व्यर्थ संकल्प आते हैं वा पुराने संस्कार वा स्वभाव अपने वशीभूत बना लेते हैं वा बाप की याद का अनुभव नहीं है, बाप द्वारा कोई प्राप्ति नहीं है वा छोटे-से विघ्न से घबरा जाते हैं, निरन्तर अति इन्द्रियसुख वा हर्ष नहीं रहता, खुशी का अनुभव नहीं होता, क्या वह बोल ब्राह्मण कुल भूषण के है ऐसे ब्राह्मणों को कौन से ब्राह्मण कहेंगे। 'नामधारी ब्राह्मण।' अगर सच्चे ब्राह्मण कहलाते और यह बोलते तो द्वापर युगी ब्राह्मणों और ऐसे कहलाने वाले ब्राह्मणों में क्या अन्तर है

वर्तमान समय ब्राह्मण बनने वाली आत्माएँ अपने-आप को देखें कि क्या ब्राह्मणपन का पहला लक्षण अपने जीवन में लाया है। ब्राह्मणपन का पहला लक्षण कौन सा है ? और संग तोड़े एक संग जोड़। अगर अपनी कर्मेन्द्रियों की तरफ़ भी जोड़ है तो क्या यह ब्राह्मणों का पहला लक्षण है ? जब पहले-पहले प्रतिज्ञा वा पहला-पहला मर जीवा जन्म का बोल ब्राह्मणों का यही है कि एक बाप दूसरा न कोई। यही पहली प्रतिज्ञा है। अथवा पहला लक्षण है। तो पहले इस लक्षण वा प्रतिज्ञा को वा पहले बोल को निभाया है या एक कहते हुए भी अनेकों तरफ़ जुटा हुआ है। तो क्या ऐसा नामधारी ब्राह्मण विजयी कहलायेगा ब्राह्मणों के लिये इतने बड़े विश्व के अन्दर अपना ही छोटा-सा संसार है ऐसे छोटे-से संसार में हर कार्य करते ऐसे ब्राह्मण विश्व के जिन भी आत्माओं को देखते हैं उन को सिर्फ़ एक कल्याण की ही भावना से देखते हैं। सम्बन्ध और लगाव की भावना से नहीं। लेकिन सिर्फ़ ईश्वरीय सेवा के भाव से। पाँच तत्वों को देखते हुए, प्रकृति को देखते हुए प्रकृति के वश नहीं होंगे। लेकिन प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाने के कर्त्तव्य में स्थित होंगे। जो स्वयं

प्रकृति को परिवर्तन करने वाले हैं क्या वह स्वयं प्रकृति के वश होंगे जो अभी प्रकृति को वश नहीं कर सकते वह भविष्य में सतोप्रधान प्रकृति के सुख को नहीं पा सकते। तो प्रकृति के वश तो नहीं होते हो? यह तो ऐसा होगा जैसे कोई डॉक्टर रोगी को बचाने जावे लेकिन स्वयं रोगी बन जाए। कर्त्तव्य है प्रकृति को परिवर्तन करने का और उसके बजाय प्रकृति के वश हो जाए तो क्या उनको ब्राह्मण कहेंगे? ब्राह्मण तो सभी बने हो न? कोई कहेगा क्या कि मैं ब्राह्मण नहीं हूं। ब्राह्मण बनना अर्थात् ऐसे लक्षण धारण करना। तो ऐसे लक्षणधारी हो या नामधारी हो? यह अपने आप से पूछेंगे।

ब्राह्मण जन्म की विशेषता क्या है जो और कोई जन्म में नहीं होती? (ब्राह्मण जन्म कि विशेषता यह है कि अन्य सर्व जन्म, आत्माओं द्वारा आत्माओं के होते हैं लेकिन एक ही यह ब्रह्मण जन्म है जो परम पिता परमात्मा द्वारा डायरेक्ट (direct) जन्म होता है। देवता जन्म भी श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा ही होता है। परमात्मा द्वारा नहीं। तो ब्राह्मण-जन्म की विशेषता जो सारे कल्प के अन्य कोई जन्म में नहीं है। ऐसी विशेषता सम्पन्न जन्म है तो उन आत्माओं की भी विशेषता क्या होनी चाहिए जो बाप के गुण हैं, वही ब्राह्मण आत्माओं के गुण होने चाहिएँ। वह गुण भी इस ब्राह्मण जन्म के सिवाय और कोई जन्म में नहीं आ सकते। जैसे इस ब्रह्मण जीवन में त्रिकालदर्शी, त्रिनेत्री ज्ञान स्वरूप बनते हो वैसे और जन्म में बनेंगे क्या? तो जो सिर्फ़ ब्राह्मण जीवन के गुण हैं यह विशेषताएँ हैं उसको इस ब्राह्मण जीवन में अनुभव न किया तो फिर कब करेंगे? ब्राह्मण बन और ब्राह्मण जीवन की विशेषता का अनुभव ना किया तो ब्राह्मण बन कर किया क्या?

(जैसे अन्य आत्माओं को कहते हो कि परमात्मा की सन्तान

हो कर और बाप को नहीं जानते हो तो कौड़ी तुल्य हो। आप ऐसे कहते हो न सभी को। लेकिन कोई हीरे तुल्य जन्म लेकर भी हीरे समान जीवन नहीं बनाते हैं। हीरा हाथ में मिले और उसको पत्थर समझ उसका मूल्य न जाने, ऐसे को क्या कहा जाता है? महान् समझदार। दूसरा शब्द तो नहीं बोलना चाहिए उल्टे रूप के महान् समझदार कभी ऐसे तो नहीं बन जाते हो? तो ब्राह्मण जन्म के मूल्य को जानो। साधारण बात नहीं है। बस हम भी ब्राह्मण बन गए। सदैव अपने को चेक करो कि ब्राह्मण जीवन को निभा रहा हूँ। अच्छा।

ऐसे श्रेष्ठ जन्म, श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ जीवन, श्रेष्ठ सेवा में सदा चलने वाले श्रेष्ठ आत्माओं, विश्व-कल्याणकारी आत्माओं और सर्व-बन्धनों से सम्पूर्ण स्वतन्त्र आत्माओं की बाप-दादा का याद-प्यार, नमस्ते।

इस वाणी का सार

१. जैसे योद्धे सर्व-व्यक्तियों, सर्व वैभवों से किनारा कर केवल दो बातों को बुद्धि में रखते हैं—'युद्ध' और 'विजय। वैसे ही अपने-आप से पूछो कि इन दो बातों का लक्ष्य रखा हैं या और भी कई बातें स्मृति में रहती हैं। सदैव याद रखो कि हम हर सेकेण्ड, हर कदम युद्ध के मैदान पर उपस्थित हैं।

२. अगर छोटी-सी चींटी शेर को अथवा महारथी को हैरान कर दे तो ऐसे महारथी व शेर को महारथी कहेंगे? क्या इसी प्रकार अगर एक व्यर्थ संकल्प मास्टर सर्वशक्तिवान को हैरान कर दे या पुरुषार्थ में कमजोर बना दे तो ऐसे को मास्टर सर्वशक्तिवान कहेंगे?

२१-७-७३

(१६)

रूहानी जज और जिस्मानी जज

सदा सफलतामूर्त्त बनाने वाले, शक्तियों से सम्पन्न कर मास्टर सर्वशक्तिवान् बनाने वाले, सर्व धारणायें कराके धारणा मूर्त्त बनाने वाले, सुप्रीम जस्टिस प्यारे बाबा बोले :— अपने को जस्टिस (Justice) समझते हो ? क्या अपने आपको और सर्व-आत्माओं को जज (judge) कर सकते हो ? वह जस्टिस तो सिर्फ़ बोल और कर्म को ही जज करते हैं लेकिन आप तो संकल्प को भी जज कर सकते हो। ऐसे जस्टिस जो अपने और दूसरी आत्माओं के भी संकल्प को जज कर सकें व परख सकें, ऐसे बन गये हो ? ऐसा जस्टिस कौन बन सकता है ? जिसकी बुद्धि का काँटा एकाग्र हो। जैसे तराजू की सही परख तब होती है जब काँटा एकाग्र हो जाता है, हलचल बन्द हो जाती है और दोनों तरफ़ समान हो जाती है। ऐसे ही जिसका बुद्धि योग-रूपी काँटा एकाग्र है जिसकी बुद्धि में कोई हलचल नहीं, और निर्विकल्प स्टेज व स्थिति है और जिसके बोल और कर्म में, लव (love) और लॉ (law) में, और स्नेह और शक्ति में अर्थात् इन दोनों का बैलेन्स है तो ऐसा जस्टिस यथार्थ जजमेन्ट (judgement) दे सकता है, ऐसी आत्मा सहज ही किसी को परख सकती है। क्या ऐसी परखने की शक्ति व जजमेन्ट करने की शक्ति अपने में अनुभव करते हो ?

लौकिक जज अगर जजमेन्ट रॉंग (wrong) करते हैं तो किसी आत्मा का एक जन्म व्यर्थ गँवा सकते हैं या उसका कुछ समय व्यर्थ गँवा सकते हैं अथवा उसको कई प्रकार के नुकसान

पहुँचाने के निमित्त बन सकते हैं, लेकिन आप रूहानी जस्टिस अगर किसी को परख न सकें तो आत्मा के अनेक जन्मों की तकदीर को नुकसान पहुँचाने के निमित्त बन जायेंगे क्या अपने ऊपर ऐसी ज़िम्मेवारी महसूस करते हो ? जब आप लोग सर्व-आत्माओं के कल्याण के निमित्त बनते हो, अनेक आत्माओं का बाप से मिलन मनाने के निमित्त बनते हो, तो ऐसी आत्माओं को अपने ऊपर कितनी बड़ी ज़िम्मेवारी महसूस करनी चाहिए। यदि कोई तड़पती हुई प्यासी आत्मा आपके सामने आये, उनकी तड़प या प्यास को समाप्त कर उसकी प्यास मिटाने के निमित्त कौन हैं ? बाप या आप ? बाप तो बैकबोन (Backbone) है, लेकिन निमित्त शक्ति सेना और पाण्डव सेना ही है। तो निमित्त बनने वालों के ऊपर इतनी बड़ी ज़िम्मेवारी है जो किसी भी आत्मा को किसी भी बात से या किसी प्रॉपर्टी (property) से भी वंचित नहीं कर सकते क्या ऐसे सर्व के महादानी और वरदानी बने हो ? क्या एक सेकेण्ड में किसी को परख सकते हो ? अगर किसी को आवश्यकता हो शान्ति की और आप उसको सुख का रास्ता बताओ (परखने की शक्ति कम होने के कारण) तो भी वह सन्तुष्ट नहीं होगा। इसलिये हरेक की प्राप्ति की इच्छा को परखने वाला ही सम्पूर्ण और यथार्थ जजमेन्ट कर सकता है। ऐसी सर्व की इच्छाओं को जानने वाले की विशेष क्वॉलिफ़िकेशन्स (qualifications) कौन-सी होगी कि जिससे बुद्धि रूपी कांटा एकाग्र हो ? लव और लॉ का बैलेन्स हो उसके लिये मुख्य विशेष धारणा क्या होगी ? (सभी ने बताया) बातें तो बहुत अच्छी अच्छी सुनाईं। इन सभी का सार हुआ कि स्वयं जो इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्थिति में स्थित होगा वही किसी की भी इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है।

अगर स्वयं में ही कोई इच्छा रही होगी तो वह दूसरे की

इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर सकते। 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्टेज तब रह सकती है जब स्वयं युक्ति-युक्त सम्पन्न, नॉलेजफ़ुल (Knowledgeful) और सदा सक्सेसफ़ुल (Successful) अर्थात् सफलता-मूर्त्त होंगे। जो स्वयं सफलता-मूर्त्त नहीं होगा तो वह अनेक आत्माओं में संकल्प को भी सफल नहीं कर सकता। इसलिये जो सम्पन्न नहीं तो उसकी इच्छायें ज़रूर होंगी क्योंकि सम्पन्न होने के बाद ही 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की स्टेज आती है। तब कोई अप्राप्त वस्तु नहीं रह जाती तो ऐसी स्टेज को ही कर्मातीत अथवा फ़रिश्तेपन की स्टेज कहा जाता है। ऐसी स्थिति वाला ही हर आत्मा को यथार्थ परख सकता है और दूसरों को प्राप्ति करा सकता है। तो ऐसी स्टेज अपने समीप अनुभव करते हो या कि अभी तक यह स्टेज बहुत दूर है? सामने है या समीप है? इतने समीप है कि अभी-अभी चाहो तो वहाँ पहुंच जाओ अथवा उसको भी अभी समीप ला रहे हो? विनाश की ताली व सीटी बजे और आप अपनी स्टेज पर स्थित हो जाओ जैसे कि सिंहासन पर समीप आ गये और सिर्फ़ चढ़कर बैठना ही बाकी रह जाये अर्थात् सीटी बजे और सीट पर बैठ जाओ।

जैसे चेयर्स (Chairs) का खेल होता है ना? दौड़ते रहते हैं, सीटी-बजी और कुर्सी पर बैठ गये। जिसने कुर्सी ली वह विजयी, नहीं तो हार। यह भी कुर्सी का खेल चल रहा है। तो इसमें आप क्या समझते हो? अभी तीन तालियाँ बजेंगी और तीसरी पर चेयर पर बैठ जाओ क्या इतनी तैयारी है? लेकिन ये तीन तालियाँ जल्दी-जल्दी बजती हैं उनके बीच में ज्यादा टाईम नहीं होता है। तो क्या इतनी तैयारी है कि जो तीसरी पर झट चेयर पर बैठ जाओ ऐसी गॉरन्टी (guarantee) है ना? 'कोशिश' शब्द कहना तो मानो कि शक है कोई। कल्प पहले सीट पर नहीं बैठे थे

क्या ? कोई-न-कोई कुर्सी लेना—वह कोई बड़ी बात नहीं है। कोई-न-कोई कुर्सी तो प्रजा को भी मिलेगी। जब सोलह हज़ार को सीट मिलेगी तो ६ लाख वालों को भी सीट मिलेगी। लेकिन फ़र्स्ट सीट के लिये सदा अपने को एवर-रेडी बनाना पड़े। अगर निमित्त बनने वाले ही सेकेण्ड स्टेज तक पहुंचे तो जिनकी आप निमित्त बनेंगी वह कहाँ तक पहुंचेंगे ? इसलिये जो अपने को विश्व-कल्याणकारी समझ कर चल रहे हैं, उनको तो सदैव ताली अथवा सीटी का इन्तज़ार करना चाहिए। इन्तज़ार वह करेगा जिसका पहले से ही अपना इन्तज़ाम हुआ पड़ा होगा। अगर इन्तज़ाम नहीं है तो वह इन्तज़ार नहीं कर सकता। तो पहले से ही इन्तज़ाम करना—यह है महारथियों की व महावीरों की निशानी। तो अभी एवर-रेडी बनने के लिये अभी से ही अपनी चैकिंग करो।

जैसे सारी नॉलेज का रिवाइज़ कोर्स कर रहे हो, वैसे ही अपनी प्राप्ति व पुरुषार्थ का चार्ट भी शुरू से रिवाइज़ करके देखो। उसमें मुख्य चार सब्जेक्ट्स हैं। चारों को सामने रखो और हर सबजेक्ट् में कितने प्रतिशत में पास हो उसको देखो। जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं—ज्ञान, योग, दैवी गुणों की धारणा और ईश्वरीय सेवा—वैसे ही यहाँ चार सम्बन्ध भी हैं। तीन सम्बन्ध तो स्पष्ट हैं—सत् बाप, सत् शिक्षक और सद्गुरू परन्तु चौथा सम्बन्ध है साजन और सजनी का। यह भी एक विशेष सम्बन्ध है—आत्मा-परमात्मा का मिलन अर्थात् सगाई। यह सम्बन्ध भी पुरुषार्थ को सहज कर देता है। जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं, वैसे ही चार सम्बन्ध सामने लाओ और इन चार सम्बन्धों के आधार से मुख्य चार धारणायें हैं। एक तो बाप के सम्बन्ध में—**'फरमान बरदार'**, शिक्षक के सम्बन्ध में—**'ईमानदार'** और गुरू के सम्बन्ध में—**'आज्ञाकारी'** और साजन के सम्बन्ध में—

'वफ़ादार'। जो यह चारों सम्बन्ध और चार विशेष धारणायें इन सभी को रिवाइज़ करके देखो।

इसके साथ-साथ चार सलोगन्स (slogans) भी स्मृति में रखो—वह कौन-से ? बाबा के सम्बन्ध में सलोगन है—'सन शोज़ फादर', अर्थात् 'सपूत बन सबूत देना है'। शिक्षक के रूप में सलोगन है—'जब तक जीना है तब तक पढ़ना है', अर्थात् 'लास्ट घड़ी तक पढ़ना है'। यह लक्ष्य अगर मज़बूत है तो फिर सर्व प्राप्तियाँ स्वतः ही होती हैं। और गुरू के रूप में सलोगन है—'जहाँ बिठाये, जैसे बिठाये, जो सुनाये, जैसे सुनावें, जैसे चलावे और जैसे सुलावे, अर्थात् जैसे कि सभी हुकमी हुकम चला रहा है'—यह है सद्गुरू का स्लोगन। अभी साजन के रूप में क्या सलोगन है—'तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से खाऊँ और तुम्हीं से स्वाँसों-स्वाँस साथ रहूँ'। यह है साजन के रूप का सलोगन। यह सभी बातें अपने सामने लाकर अपने पुरुषार्थ को चैक करो। इन सभी को रिवाईज़ करना है।

यह भी चैक करना है कि बहुत समय से और एक-रस अर्थात् लगातार क्या चारों ही सम्बन्ध निभाते रहे हैं या बीच-बीच में कट हुआ है ? अगर बीच में कुछ मार्जिन रह गयी है तो बार-बार कटी हुई चीज़ कमज़ोर होती है। इसलिये अपने जीवन को इन चारों ही बातों के आधार पर रिवाईज़ कर के देखो। इस चैकिंग को करके अपने-आप को परख सकेंगे कि मेरी प्राप्ति व प्रारब्ध क्या है ? सूर्यवंशी है या चन्द्रवंशी है ? सूर्यवंशी में राजाई फैमिली में हैं या स्वयं महाराजा महारानी बनने वाले हैं ? अभी जबकि समय नज़दीक है फाइनल पेपर का तो जैसे लौकिक पढ़ाई में भी सभी सबजेक्ट्स को रिवाइज़ किया जाता है और एक-एक सबजेक्ट्स को रिवाइज़ कर अपनी कमी को सम्पन्न करते हैं, इसी प्रकार सभी को अपने पुरुषार्थ को इसी रीति रिवाइज़ करना

है। कैसे स्वयं का जस्टिस बनो अभी वह तरीका सुना रहे हैं। जब स्वयं को जज करना आ जावेगा तो फिर दूसरों को भी सहज ही परख सकेंगे। जब स्वयं प्राप्ति-सम्पन्न होंगे तो दूसरों को भी प्राप्ति करा सकेंगे। यह चैक करना तो सहज है ना ? एक सब्जेक्ट् अथवा एक सम्बन्ध व एक धारणा व एक सलोगन में भी कमी नहीं होनी चाहिए।

जबकि अभी रिज़ल्ट आउट (out) होने का समय आ रहा है तो रिज़ल्ट आउट होने से पहले कम्पलेन्ट्स (Complaints) को कम्पलीट (Complete) करो। अपनी कम्लेन्ट भी आप स्वयं ही करते हो। अमृत वेले से अपनी कम्पलेन्ट करते हो। जब तक अपनी कम्पलेन्ट्स हैं, तब तक कम्पलीट नहीं हो सकेंगे। इसलिये स्वयं ही मास्टर सर्वशक्तिवान् बन अपनी कम्पलेन्ट को कम्पलीट करो। अभी फिर भी लास्ट चॉन्स का समय है। फिर नहीं तो टू लेट (Too late) का बोर्ड लग जावेगा। अभी प्राप्ति का समय भी —'बहुत गई, थोड़ी रही है' नहीं तो फिर पश्चात्ताप का समय आ जावेगा फिर पश्चात्ताप के समय प्राप्ति नहीं कर सकेंगे। इसलिये अभी जो थोड़ी रही हुई है, यह चॉन्स भी चाहे किसी और के निमित्त आप लोगों को भी यह चॉन्स मिला है। फिर भी किसी प्रकार का चॉन्स तो है ना ? तो चॉन्स को गंवाना व लेना, अपने प्रयत्न से आप जो चाहो वह कर सकते हो। इसलिये अभी से रिवाइज़ करो। यह तो सुना दिया कि जब रिवाइज़ करो व जज करो तो किस रूप में करना है। विधि तो सुना ही दी है। क्योंकि **विधि-पूर्वक करने से सिद्धि की प्राप्ति तो हो ही जावेगी।**

जो सम्पूर्ण स्टेज के अति नज़दीक होंगे उनके संकल्प में, बोल में और कर्म में एक नशा रहेगा। वह कौन-सा ? ईश्वरीय नशा तो सबको है ही। ईश्वरीय नशे का वरसा तो ईश्वरीय गोद ली और प्राप्त हुआ। वह तो है ही। लेकिन वह विशेष

(१६)

क्या नशा रहेगा ? उनके संकल्प में, बोल में नशे की कौन-सी बात होगी ? नशा यह होगा कि जो भी कुछ कर रहा हूँ उसमें सम्पूर्ण सफलता हुई ही पड़ी है । 'होनी है' व 'होगी' ऐसा नहीं, परन्तु 'हुई ही पड़ी है' । संकल्प में भी यह नशा होगा कि मेरे हर संकल्प की सिद्धि 'हुई ही पड़ी है' । कर्म में भी यह नशा होगा कि मेरे हर कर्म के पीछे सफलता मेरी परछाईं की तरह है । मेरे बोल की सिद्धि हुई ही पड़ी है । सफलता मेरे पीछे-पीछे आने वाली है । सफलता मुझसे अलग हो ही नहीं सकती । ऐसा नशा हर संकल्प में, हर बोल और हर कर्म में जब होता है, तब समझो अति समीप हैं । 'होना तो चाहिए,' 'लॉ (law) तो ऐसे कहता है' व 'कर्म की फिलॉसफी (Philosophy) व ज्ञान तो यह कहता है'—यह है समीप । अभी इससे जज करो तो अति समीप हैं या समीप हैं या सामने हैं । ये तीन स्टेज़िस (Stages) हो गईं न ? अच्छा ।

सभी के अन्दर एक संकल्प की हलचल है—वह कौन-सी ? तो न मालूम यह मिलन भी कब तक ? इस हलचल का रेसपॉन्स कौन-सा है ? देखो पहले भी सुनाया कि प्राप्ति का समय अभी बहुत गया, थोड़ा रहा, थोड़े का भी थोड़ा है । जबकि प्राप्ति का समय थोड़ा है और कई आत्मायें आने वाली हैं जिनके निमित्त आप लोगों को भी चॉन्स है । ऐसी आत्माओं के प्रति अभी बाप भी बन्धन में बन्धे हुए हैं । इसलिये जब नये-नये रत्न आ रहे हैं अपना कल्प पहले का हक नम्बरवार ले रहे हैं तो बाप-दादा को भी हक देने आना ही पड़े ना ? तो ऐसी हलचल नहीं मचाओ कि न मालूम क्या होना है ? लेकिन अव्यक्त मिलन का अव्यक्त रूप से अनुभव कराने के लिये बीच-बीच में मार्जिन दी जाती है व समय दिया जाता है कि जिससे कभी अचानक व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन का पार्ट समाप्त हो तो अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन का अनुभव कर सको (जब तक बाप की सम्पूर्ण प्रत्यक्षता

नहीं हो जाती तब तक बच्चों और बाप का मिलन तो होना ही है। लेकिन चाहे व्यक्त द्वारा अव्यक्त मिलन और चाहे अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन, लेकिन मिलन तो अन्त तक है ना? इसलिये ऐसा समय आने वाला है कि जिसमें अव्यक्त स्थिति द्वारा अव्यक्त मिलन का अनुभव न होगा तो बाप के मिलन का, प्राप्ति का और सर्वशक्तियों के वरदान का जो सुन्दर मिलन का अनुभव है, उससे वंचित रह जावेंगे। इसलिये यह दोनों मिलन अभी तक तो साथ-साथ चल रहे हैं लेकिन लास्ट स्टेज क्या है? लास्ट स्टेज की तैयारी कराने के लिये बाप को ही समय देना पड़ता है और सिखलाना पड़ता है। अभी समझा क्या होने वाला है। अभी इतने हलचल में नहीं आओ। जब होने वाला होगा तो अव्यक्त स्थिति में स्थित रहने वालों को स्वयं ही आवाज आवेगा, टचिंग होगी, सूक्ष्म संकल्प होगा, तार पहुंचेगी या ट्रंक-काल होगा। समझा? जब लाइन क्लियर होगी तभी तो पकड़ सकेंगे। जब अव्यक्त मिलन का अनुभव होगा तब तो पहँचानेंगे व पहुंचेंगे। इसके बीच-बीच में यह चॉन्स दे अभ्यास कराते हैं। बाकी घबराने की कोई बात नहीं। समझा। अच्छा।

ऐसे सदा सफलता-मूर्त, ज्ञान स्वरूप, शक्ति-सम्पन्न, दिव्य-धारणा सम्पन्न, योग-युक्त, युक्ति-युक्त संकल्प और कर्म करने वाले, परखने की शक्ति को हर आत्मा के प्रति कर्म में लाने वाले, सेवा में तत्पर श्रेष्ठ आत्माओं को सदा वरदानी मूर्त आत्माओं को और बाप-दादा के न्यारे रत्नों को याद-प्यार और नमस्ते।

महावाक्यों का सार

(१) स्वयं जो 'इच्छा मात्रम अविद्या' की स्थिति में स्थित होगा वो ही किसी भी इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है।

(२) इन्तज़ार वह करेगा जिनका पहले से ही अपना इन्तज़ाम हुआ पड़ा होगा।

चलेन्ज किया → है ना दो वर्ष का ? जब यह बातें सुनते हो तो थोड़ा-बहुत संकल्प चलता है कि अगर सचमुच नहीं हुआ तो ? यह भी हो सकता है कि 'दो वर्ष में न हो' यह संकल्प-रूप में क्या नहीं चलता है ? चलो सामना कर लेंगे, वह दूसरी बात है। इसका मतलब हुआ कि संकल्प में कुछ है तब तो आता है ना? विल्कुल आपको पक्का है कि दो वर्ष में होगा ? अच्छा समझो आप लोगों से कोई पूछते हैं कि विनाश न हो तो क्या होगा? फिर आप क्या कहेंगे ? जिस समय समझाते हो तो यह स्पष्ट समझाना चाहिए कि ऐसे नहीं कि दो वर्ष में कम्पलीट विनाश हो जावेगा, नहीं। दो वर्ष में ऐसे नज़ारे हो जावेंगे कि जिससे लोग यह समझेंगे कि बराबर यह विनाश हो रहा है और विनाश शुरू हो गया है। एक बात सहज लग गई तो दूसरी बात सहज लगेगी ही। विनाश में समय तो लगेगा ना ? जब स्वयं सम्पूर्ण हो जावेंगे तो कार्य भी सम्पूर्ण होगा कि सिर्फ़ स्वयं ही सम्पूर्ण होंगे ?

(a) (a)

(एडवान्स पार्टी का क्या कार्य चल रहा है ? आप लोगों के लिये आज सारी फील्ड तैयार कर रहे हैं। उनके परिवार में जाओ, न जाओ लेकिन जो स्थापना का कार्य होना है उसके लिये वह निमित्त बनेंगे। कोई पॉवरफ़ुल स्टेज लेकर निमित्त बनेंगे। ऐसे पॉवर्स लेंगे जिससे स्थापना के कार्य में मददगार बनेंगे। आजकल आप देखेंगे दिन-प्रतिदिन न्यु-ब्लड (New-Blood) का रिगार्ड ज्यादा है। जितना आगे बढ़ेंगे, उतना छोटों की बुद्धि काम करेगी जो की बड़ों की नहीं। बड़ी आयु की तुलना में फिर भी छोटेपन में सतोप्रधानता रहती है। कुछ-न-कुछ प्युरिटी की पॉवर होने के कारण उनकी बुद्धि जो काम करेगी वह बड़ों की नहीं करेगी। यह चेंज होगी। बड़े भी बच्चों की राय को रिगार्ड देंगे। अब भी जो बड़े हैं वह समझते हैं कि हम तो पुराने ज़माने के हैं। यह आजकल के हैं उनको रिगार्ड न देंगे और उन्हें बड़ा

(b) (b)

अगला पन्ना → अगला पन्ना

स्लो सो फास्ट → फास्ट सो स्लो

समझ नहीं चलावेंगे तो काम नहीं चलेगा। पहले बच्चों को रोब से चलाते थे। अभी ऐसे नहीं। बच्चों को भी मालिक समझ कर चलाते हैं। तो यह भी ड्रामा में पार्ट है। छोटे ही कमाल कर दिखावेंगे। एडवान्स पार्टी का तो अपना कार्य चल रहा है लेकिन वह भी आपकी स्थिति एडवान्स में जाने के लिए रुके हुए हैं। उनका कार्य भी आपके कनेक्शन से चलना है।

सारे कार्य का आधार आप विशेष आत्माओं के ऊपर है। चलते-चलते ठंडाई हो जाती है। आग लगती है फिर शीतल हो जाती है। लेकिन शीतल तो नहीं होना चाहिए ना? बाहर का जो रूप है, मनुष्य वह देखते हैं, समझते हैं यह तो चलता आता है; बड़ी बात क्या है? परम्परा से खेल चलता ही आ रहा है। लेकिन यह चलते-चलते शीतलता क्यों आती है? इसका कारण क्या है? परसेन्टेज बहुत कम है, लेक्चर्स (Lectures) तो करते हैं, लेकिन लेक्चर्स के साथ-साथ फ़ीचर्स (Features) भी अट्रेक्ट (attract) करें तब लेक्चर्स का इफ़ेक्ट हो। तो अपने को हर सब्जेक्ट में चैक करो। आजकल लेक्चर्स में आप कम्पीटीशन (Competition) करो तो इसमें कई और भी जीत लेंगे लेकिन जो प्रैक्टिकल में है उसमें सभी आपसे हार जायेंगे।

मुख्य विशेषता प्रैक्टिकल लाइफ़ की है। प्रैक्टिकल कोई भी बात आप बताओ तो वे एकदम चुप हो जावेंगे। तो जब लेक्चर्स से प्रैक्टिकल का भाव प्रगट हो, तब वह लेक्चर्स देने से न्यारा दिखाई दे। जो शब्द बोलते हो वह नयनों से दिखाई दे कि यह जो बोलते हैं वह प्रैक्टिकल है। यह अनुभवी मूर्त हैं तब उसका प्रभाव पड़ सकता है। बाकि सुन-सुन कर तो सभी थक गये हैं, बहुत सुना है। अनेक सुनाने वाले होने के कारण सुनने से सभी थके हुए हैं। कहते हैं सुना तो बहुत है, अब अनुभव करना चाहते हैं और अब कोई प्राप्ति कराओ। तो लेक्चर में ऐसी पॉवर

होनी चाहिए जो वह एक-एक शब्द अनुभव कराने वाला हो। जैसे आप समझाते हो ना कि अपने को आत्मा समझो न कि शरीर। तो इन शब्दों को बोलने में भी इतनी पॉवर होनी चाहिए जो सुनने वालों को आपके शब्दों की पॉवर से अनुभव हो। एक सेकेण्ड के लिए भी यदि उनको अनुभव हो जाता है तो अनुभव को वह कभी छोड़ नहीं सकते, आकर्षित हुआ आपके पास पहुँचेगा।

जैसे आप बोच-बो : में भाषण करते-करते उनको सायलेन्स में ले जाने का अनुभव कराते हो तो इस प्रैक्टिस को बढ़ाते जाओ। उन को अनुभव में लाते जाओ। इस पुरानी दुनिया से बेहद का वैराग्य दिलाना चाहते हो तो भाषण में जो प्वायन्ट्स देते हो, वह देते हुए वैराग्य वृत्ति के अनुभव में ले आओ। वह फ़ील करे सचमुच यह सृष्टि जाने वाली है, इससे तो दिल लगाना व्यर्थ है। तो जरूर प्रैक्टिकल करेंगे। उन पण्डितों आदि के बोलने में भी पॉवर होती है। एक सेकेण्ड में खुशी दिला देते और एक सेकेण्ड में रुला देते। तब कहते हैं इनका भाषण इफ़ेक्ट करने वाला है। सारी सभा को हँसाते भी हैं, सभी को श्मशानी वैराग्य में लाते तो हैं ना? जब उनके भाषण में भी इतनी पॉवर होती है तो क्या आप लोगों के भाषण में वह पॉवर नहीं हो सकती? अशरीरी बनाना चाहो तो क्या वह अनुभव करा सकते हैं कि वह लहर छा जावे? सारी सभा के बीच बाप के स्नेह की लहर छा जावे। इसको कहा जाता है—प्रैक्टिकल अनुभव कराना।

अब ऐसे भाषण होने चाहिए तब कुछ चेन्ज होगी। वे समझें कि इन के भाषण तो दुनिया से न्यारे हैं। वह भले भाषण में सभा को हँसा लेते या रुला लेते, लेकिन अशरीरीपन अनुभव नहीं करा सकते और न बाप से ही स्नेह पैदा करा सकते।

कृष्ण से स्नेह करा सकते है लेकिन बाप से नहीं करा सकते। उन को पता ही नहीं है तो निराली बात होनी चाहिए। अच्छा समझो गीता के भगवान् पर प्वायन्ट्स देते हो। लेकिन जब तक उनको बाप क्या चीज है, हम आत्मा हैं और वह परमात्मा है, जब तक यह अनुभव नहीं कराओ तब तक यह बात सिद्ध भी कैसे होगी? ऐसा कोई भाषण करने वाला हो जो उनको अनुभव करावे आत्मा और परमात्मा में रात और दिन का अन्तर है। जब अन्तर महसूस करेंगे तो गीता का भगवान् भी सिद्ध हो ही जावेगा। सिर्फ प्वायन्ट्स से उनकी बुद्धि में नहीं बैठेगा उससे तो और ही लहरें उत्पन्न होने लगेंगी। लेकिन अनुभव कराते जाओ तो अनुभव के आगे कोई बात जीत नहीं सकती। भाषण में अब यह तरीका चेंज करो। अच्छा।

अ० वाणी

मुरली का सार

(१) बाप को शक्ति द्वारा ऑब्जेक्ट प्राप्त होती है। योगी जो भी संकल्प करेंगे वह समर्थ होंगे। जो भी कोई समस्या आने वाली होगी, उनका पहले ही योग की शक्ति से अनुभव होगा कि यह होने वाला है। तो पहले ही से पता होने के कारण कभी भी हार नहीं खायेगा।

(२) जो आधार-मूर्त हैं यदि उनके संकल्प में समर्थ (सामर्थ्य) नहीं तो उनके समय के परिवर्तन में भी कमजोरी पड़ जाती है। जितना-जितना स्वयं समर्थ बनेंगे, उतना ही सृष्टि को परिवर्तन करने का समय समीप ला सकेंगे।

३-२-७४

(१८)

उपरामवृत्ति व ज्वाला रूप के दृढ़-संकल्प से विनाश का कार्य सम्पन्न करो

मुक्ति और जीवन्मुक्ति का गेट्स खोलने वाले, तड़फ़ती हुई आत्माओं को शीतल, शान्त, आनन्दमूर्त्ति बनाने वाले, और सदा सर्व कर्म-बन्धनों से मुक्त, सर्व का कल्याण करने वाले निराकार पिता शिव बोले :—

("जैसे बाप-दादा को साकार, आकार और निराकार अनुभव करते हो, क्या वैसे ही अपने को भी बाप-समान साकार होते हुए आकारी और निराकारी सदा अनुभव करते हो ? यह अनुभव निरन्तर होने से इस साकारी तन और इस पुरानी दुनिया से स्वतः ही उपराम हो जावगे।) ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कि ऊपर-ऊपर से साक्षी हो इस पुरानी दुनिया को खेल सदृश्य देख रहे हैं। ऐसी पॉवरफ़ुल (power-full; शक्तिशाली) स्टेज अभी सदाकाल की होनी चाहिए। ऐसी स्टेज पर स्थित हुई आत्मा में देखने से ही क्या दिखाई देगीं ? लाइट हाउस (Light-house) और पॉवर हाउस। (power-house) ऐसी आत्मायें बाप-समान विश्व-कल्याणकारी कहलाई जाती हैं। जो भी सामने आये हरेक लाइट और माइट को प्राप्त करती जाय, क्या ऐसे भण्डार बने हो ? ऐसे नहादानी, वरदानी, सर्वगुण दानी, सर्वशक्तियों के दानी, संग से रूहानी रंग लगाने वाले, नज़र से निहाल करने वाले, अन्धों को तीसरा नेत्र देने वाले, भटकी हुई आत्माओं को मंजिल बतलाने वाले, तड़पती हुई आत्माओं को शीतल, शान्त और आनन्दमूर्त्ति बनाने वाली आत्मा क्या बने हो ? क्या इस

निशाने के नशे में रहते हो? इसको ही बाप-समान कहा जाता है।

जैसे समय की समीपता दिखाई देती है क्या वैसे ही अपनी स्थिति की समीपता व समानता दिखाई देती है? जैसे दुनिया के लोग आपके सुनाये हुए समय प्रमाण दो वर्ष का इन्तज़ार कर रहे हैं, क्या ऐसे भी आप स्थापना के और विनाश का कार्य कराने वाले दो वर्ष के अन्दर अपने कार्य को और अपनी स्टेज व स्थिति को सम्पन्न बनाने के इन्तज़ाम में लगे हुए हो? या इन्तज़ाम करने वाले अलबेले और इन्तज़ार करने वाले तेज़ हैं, आप क्या समझते हो? क्या इन्तज़ाम ज़ोर-शोर से कर रहे हो या जैसे दुनियावी लोग कहते हैं, कि जो होगा सो देखा जावेगा, ऐसे ही आप इन्तज़ाम करने के निमित्त बनी हुई आत्माएँ भी, यह तो नहीं सोचती हो, कि जो होगा सो देखा जावेगा? इसको ही अलबेलापन कहा जाता है। अब तो इतना बड़ा कार्य करने के लिए खूब तैयारी चाहिए, पता है कि क्या तैयारी चाहिए? क्या शंकर को कार्य कराना है? उसको ही तो नहीं देखते हो कि कब शंकर विनाश करावेंगे? विनाश ज्वाला प्रज्ज्वलित कब और कैसे हुई? कौन निमित्त बना? क्या शंकर निमित्त बना या यज्ञ रचने वाले बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने? जब से स्थापना का कार्य-अर्थ यज्ञ रचा तब से स्थापना के साथ-साथ यज्ञ-कुण्ड से विनाश की ज्वाला भी प्रगट हुई। तो विनाश को प्रज्ज्वलित करने वाले कौन हुए? बाप और आप साथ-साथ हैं न? तो जो प्रज्ज्वलित करने वाले हैं तो उन्हों को सम्पन्न भी करना है, न कि शंकर को? शंकर समान ज्वाला-रूप बन कर प्रज्ज्वलित की हुई विनाश की ज्वाला को सम्पन्न करना है। जब कोई एक अर्थी को भी जलाते हैं तो जलाने के बाद बीच-बीच में अग्नि को तेज़ किया जाता है, तो यह विनाश ज्वाला कितनी बड़ी अग्नि है। इनको भी सम्पन्न करने के लिए

निमित्त बनी हुई आत्माओं को तेज करने के लिए हिलाना पड़े—कैसे हिलावें ? हाथ से व लाठी से ? संकल्प से इस विनाश ज्वाला को तेज करना पड़े, क्या ऐसा ज्वाला रूप बन, विनाश ज्वाला को तेज करने का संकल्प इमर्ज (emerge) होता है या यह अपना कार्य नहीं समझते हो ?

ड्रामा के अनुसार निश्चित होते हुए भी निमित्त बनी हुई आत्माओं को पुरुषार्थ करना ही पड़ता है। इसी प्रकार अब इस मुक्ति और जीवन्मुक्ति के गेट्स खोलने की जिम्मेदारी बाप के साथ-साथ आप सबकी है।) वह विनाश सर्व-आत्माओं की सर्व-कामनाएं पूर्ण करने का निमित्त साधन है। यह साधन आपको साधना द्वारा पूरा होगा। ऐसा संकल्प इमर्ज (emerge) होना चाहिए कि अब सर्व-आत्माओं का कल्याण हो। सर्व तड़पती हुई, दुःखी और अशान्त आत्मायें वरदाता बाप और बच्चों द्वारा वरदान प्राप्त कर सदा शान्त और सुखी बन जाएं और अब घर चलें। यह स्मृति समय की समीपता प्रमाण तेज होनी चाहिए।) क्योंकि इस संकल्प से ही और इस स्मृति से ही विनाश ज्वाला भड़क उठेगी और सर्व का कल्याण होगा।

अब जितना ही, बेहद के विशाल स्वरूप की सर्विस तीव्र रूप से करते जा रहे हो इतना ही बेहद की उपराम वृत्ति तीव्र चाहिए। आपकी बेहद की उपरामवृत्ति अथवा वैराग्य वृत्ति विश्व की आत्माओं में अल्पकाल के लिए होगी। तो अपने सुख से वैराग्य उत्पन्न करेगी। तब ही वैराग्य के बाद समाप्ति होगी अपने आप से पूछो कि क्या हमारे अन्दर बेहद की वैराग्य वृत्ति रहती है ? जो गायन है कि करते हुए अकर्त्ता, सम्पर्क-सम्बन्ध में रहते हुए कर्मातीत, क्या ऐसी स्टेज रहती है ? कोई भी लगाव न हो और सर्विस भी लगाव से न हो लेकिन निमित्त भाव से हो; इससे ही कर्मातीत बन जायेंगे। अब अपने कार्य

को समेटना शुरू करो। जब अभी से समेटना शुरू करेंगे तब ही जल्दी सम्पन्न कर सकेंगे। समेटने में भी टाइम लगता है। जब कोई कार्य अथवा दुकान आदि समेटनी शुरू करते हैं, तो क्या किया जाता है?—सेल (sale) करते हैं। जब 'सेल' लिख देते हैं तो वह सामान जल्दी-जल्दी समाप्त हो जाता है। तो यह फ़ेयर (fare) भी क्या है? यह भी 'सेल' लगाया है ना, ताकि जल्दी-जल्दी सबको सन्देश मिल जाए। जो खरीदना है, वह खरीद लो, नहीं तो उल्हाना न रह जाए। अभी क्या करना है? कार्य समेटना अर्थात् स्वयं के लगाव को समेटना है। अगर स्वयं को सर्व तरफ़ से समेट कर एवर-रेडो बनाया तो आपके एवर-रेडी बनने से विनाश भी रेडी हो जायेगा। जब आग प्रज्ज्वलित करने वाले ही शीतल हो बैठ जावेंगे तो आग क्या होगी? तो आग मध्यम पड़ जावेगी ना? इसलिए अब ज्वाला रूप हो अपने एवर-रेडी बनने के पॉवरफ़ुल संकल्प से विनाश ज्वाला को तेज़ करो। जैसे दुःखी आत्माओं के मन से यह आवाज़ शुरू हुआ है कि अब विनाश हो, वैसे ही आप विश्व-कल्याणकारी आत्माओं के मन से यह संकल्प उत्पन्न हो कि अब जल्दी ही सर्व का कल्याण हो तब ही समाप्ति होगी, समझा?

पालना तो की, अब कल्याणकारी बनो और सबको मुक्त कराओ। विनाशकारियों को कल्याणकारी आत्माओं का सहयोग चाहिए। उनके संकल्प का इशारा चाहिये। जब तक आप ज्वालारूप न बने, तब तक इशारा नहीं कर सकते। इसलिये अब स्वयं की तैयारी के साथ-साथ विश्व के परिवर्तन की भी तैयारी करो। यह है आपका लास्ट कर्त्तव्य क्योंकि यही शक्ति स्वरूप का कर्त्तव्य है। (स्वयं तो नहीं घबराते हो न? विनाश होगा कि नहीं होगा, क्या होगा और कैसे होगा? यह समझने के बजाए अब ऐसा समझो कि यह हमारे द्वारा होना है। यह जानकर अब स्वयं को शक्ति स्वरूप बनाओ,

स्वयं को लाइट हाउस और पॉवर हाउस बनाओ। अच्छा, क्या हर बात में आप निश्चय बुद्धि हो ?

ऐसे सदा अचल, अडोल, निर्भय, शुद्ध संकल्प में स्थित रहने वाले, संकल्प की सिद्धि प्राप्त करने वाले, सदा सर्व कर्म-बन्धनों से मुक्त, कर्मातीत स्थिति में स्थित रहने वाले और बाप-दादा के श्रेष्ठ कार्य में सदा सहयोगी आत्माओं को बाप-दादा का याद-प्यार और नमस्ते।"

अ. बापजी

मुरली का सार

(१) बाप समान सदा अपने को आकारी व निराकारी अनुभव करते रहने से इस पतित तन और इस पुरानी दुनिया से उपराम हो जायेंगे।

(२) आपकी बेहद की उपरामवृत्ति अर्थात् वैराग्यवृत्ति ही विश्व की आत्माओं में अल्प काल के सुख से वैराग्य उत्पन्न करेगी और इस वैराग्य के बाद ही समाप्ति होगी।

(३) अब शंकर समान ज्वाला रूप बन कर प्रज्ज्वलित की हुई विनाश की ज्वाला को सम्पन्न करना है।

(४) मुक्ति और जीवन्मुक्ति के गेट्स खोलने की जिम्मेवारी रूहानी बाप के साथ-साथ आप बच्चों की भी है।

(५) अब घर चलने की स्मृति समय की समीपता प्रमाण तेज होनी चाहिये, क्योंकि इस संकल्प से ही और इस स्मृति से ही विनाश ज्वाला भड़क उठेगी और सर्व का कल्याण होगा।

(६) विनाशकारियों को कल्याणकारी आत्माओं के संकल्प के इशारे का सहयोग चाहिये।

२८-४-७४

स्थूल के साथ-साथ सूक्ष्म साधनों से ईश्वरीय-सेवा में सफलता

लास्ट सो फास्ट सर्विस के साधन बतलाते हुए मुरली मनोहर शिव बाबा सर्विसएबुल पाण्डवों से बोले :—

"आज के इस संगठन* को कौन-सा संगठन कहेंगे ? इस संगठन की जिम्मेवारी की विशेषता क्या है ? क्या आपने इन सब बातों को अपने संगठन में स्पष्ट किया है ? क्या जिम्मेवारी मिली है या ली है ? क्या अपनी स्थिति को उच्च और परिपक्व बनाने की जिम्मेवारी मिली है या ली नहीं है ? क्या ऐसा मानते हो कि मेमोरेण्डम बनाने की जिम्मेवारी तो है और अपनी स्थिति बनाने की जिम्मेवारी मिली है।

आजकल के समय के अनुसार मुख्य जिम्मेवारी कौन-सी है ? ईश्वरीय सेवा के तो भिन्न-भिन्न साधन और स्वरूप होते जा रहे हैं और आगे चलकर और भी होंगे। लेकिन 'लास्ट इज़ फ़ास्ट' का साधन और स्वरूप कौन-सा है ? विचार तो बहुत अच्छे निकाले हैं—बोर्ड भी लगावेंगे फ़िल्म भी बनावेंगे,

---

* ईश्वरीय सेवा में लगे हुए कुछेक भाइयों की एक विचार गोष्ठी मधुबन में हुई थी। यह मुरली उस अवसर से सम्बन्धित है।

उस अवसर पर कुछ भाइयों ने इस विषय पर ज्ञापन अथवा मेमोरेण्डम तैयार करने की जिम्मावारी ली थी कि शास्त्रों में देवी-देवताओं की जो ग्लानि लिखी है, वह निराधार और हानिकारक है।

मेमोरेण्डम भी बनावेंगे, श्मशान और गाँवों में भी जावेंगे—यह सब (ज्ञापन) तो करेंगे ही, लेकिन अपने मस्तक पर कौन-सा बोर्ड लगावेंगे ? अपने इस मुख द्वारा व स्वरूप द्वारा विश्व की हर आत्मा को कौन-सा और कैसे मेमोरेण्डम (ज्ञापन) देंगे ? अपने दिव्य अलौकिक चरित्र और शुभ चिन्तन द्वारा और हर्षित मुख के चित्र द्वारा कौन-सी अलौकिक फ़िल्म दिखावेंगे? क्या आप एक ही फ़िल्म तैयार करेंगे या ये इतने सब (संगठन में आये हुए ब्रह्माकुमार) मधुवन वरदान भूमि से चेतन एवं अलौकिक फिल्म बन निकलेंगे ? अगर इतनी सब फ़िल्म हर स्थान पर लोगों को दिखा सको तो क्या यही लास्ट सो फ़ास्ट सर्विस नहीं ? गाँव-गाँव में अथवा हर स्थान में सदाकाल की शान्ति व आनन्द का अनुभव एक सेकेण्ड में अपनी अनुभवी-मूर्त द्वारा दिखाओ व कराओ तो क्या यह 'कम खर्च वाला नशीन' (ऊँचो परन्तु कम खर्च वाली) सर्विस नहीं ? सपूत बच्चों का, सहयोगी बच्चों का और सर्विसएबुल बच्चों का हर संकल्प, हर बोल और हर कर्म में यही फर्ज़ और यही एक सबसे बड़ी ज़िम्मेवारी है। (आप पाण्डवों का संगठन अथवा निमित्त बनी हुई आत्माओं का संगठन सिर्फ़ स्थूल सर्विस के साधन इकट्ठे करने या उन्हें प्रैक्टिकल में लाने तक ही नहीं है। स्थूल साधनों के साथ-साथ सूक्ष्म साधन और प्लैन (plan) के साथ-साथ प्लेन (plain) स्थिति और स्मृति रहे—इन बातों को अपनी ज़िम्मेवारी समझ कर चलना अर्थात् कर्म करना है) जो भी यहाँ बैठे हैं—वे सब इन बातों की ज़िम्मेवारी अपने को निमित्त समझ उठावेंगे तो क्या विहंग मार्ग की सर्विस का रूप नहीं दिखाई देगा।

जैसे ईश्वरीय सेवा-केन्द्रों पर टीचर्स (शिक्षिकाएं) और मुख्य आत्मायें हर कार्य की ज़िम्मेवारी के लिये निमित्त हैं, वैसे ही क्या आप अपने को इतना ज़िम्मेवार या निमित्त समझते

हो ? जैसे हर ईश्वरीय मर्यादा को पालन करना और कराना टीचर्स की एक ज़िम्मेवारी है क्या आप अपने को हर ईश्वरीय मर्यादा के अन्दर चलने के निमित्त समझते हो या ऐसा मानते हो कि यह टीचर्स और दीदी-दादी ही का काम है? टीचर्स से भी पहले यह ज़िम्मेवारी आप निमित्त बने हुए पाण्डवों की है क्योंकि विश्व के आगे चैलेन्ज की हुई है कि घर गृहस्थ में रहते कमल-पुष्प के समान न्यारे और प्यारे रहने की। कीचड में रहते कमल अथवा कलियुगी सम्पर्क में रहते ब्राह्मण इस चैलेन्ज को प्रैक्टिकल रूप में लाने के निमित्त है; न कि टीचर्स। यह पार्ट पाण्डवों का है अथवा प्रवृत्ति में रहने वालों का है। टीचर्स के पास पहुंचने से पहले सैम्पल (sample) के रूप में आप हो। सैम्पल को देखकर ही व्यापार करने की हिम्मत व उल्लास आता है। ऐसे ही हर बात में निमित्त बन चलनेका क्या अपना पार्ट समझ कर चलते हो ? कई टीचर्स के पास आते हैं, सुनने के बाद पूछते हैं, कि ऐसा कोई प्रत्यक्ष रूप दिखाओ, यह सम्भव है अथवा नहीं, इसकी मिसाल माँगते हैं। तो टीचर्स से ज्यादा रेस्पॉन्सिबल (responsible) कौन हुए ? टीचर्स की मर्यादाये अपनी हैं, लेकिन आप लोगों की मर्यादायें टीचर्स से कोई कम नहीं हैं। अमृत वेले से लेकर जो सर्व-मर्यादायें स्मृति, वृत्ति, दृष्टि और कृति सबके प्रति बनी हुई हैं तो क्या वे सबकी बुद्धि में सदा स्पष्ट रहती हैं ? क्या हर संकल्प को मर्यादा प्रमाण प्रैक्टिकल में लाते हो ? यह है प्रैक्टिकल स्वरूप में लास्ट और फास्ट सर्विस का साधन।

पहली-पहली चैलेन्ज (Challenge) जो आज तक न कोई कर सकते हैं और न करेंगे, वह फ़र्स्ट चैलेन्ज कौन-सी है ? फर्स्ट चैलेन्ज है प्यूरिटी (purity) की। सम्पर्क और सम्बन्ध में रहते संकल्प में भी इसी फ़र्स्ट चैलेन्ज को कमज़ोरी न हो। फर्स्ट वायदा कौन-सा है ? वह यही है ना कि "और संग तोड़

एक संग जोड़ेंगे अथवा तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से...अथवा मेरा तो एक, दूसरा न कोई।" बात तो एक ही है। जो फ़र्स्ट वायदा और फ़र्स्ट चैलेन्ज है वे दोनों एक-दूसरे से सम्बन्ध रखते हैं। इन दोनों के ऊपर कितना अटेन्शन रहता है? इस पहली बात का ही टेन्शन रहता है। इसी युद्ध में तो महारथी नहीं हो ना? महारथी का अर्थ टेन्शन में रहना नहीं है, बल्कि सदा अटेन्शन रहे। सबसे पहला प्रभाव इस विशेष बात पर है, क्योंकि यही असम्भव को सम्भव करने वाली एक बात है। क्या पहला प्रभाव करने की प्वॉइन्टस मजबूत है? या अब तक भी संस्कारों से मजबूर हैं? जो स्वयं के भी संस्कारों से मजबूर हैं वे अन्य को उनकी मजबूरियों से स्वतन्त्र कर सकें, यह सदाकाल के लिए नहीं हो सकता। टेम्प्रेरी (Temporary) प्रभाव तो पड़ सकता है। लेकिन चलते-चलते फिर उन आत्माओं में भी मजबूरियों की लहर उत्पन्न होगी। इसलिए इस संगठन की ज़िम्मेवारी सबसे पहली यह है कि किसी भी मजबूरियों को हटाना है--पहले स्वयं की और फिर संसार की, फ़र्स्ट चैलेन्ज में इन्चार्ज बनो। यह है ज़िम्मेवारी। बाप-दादा भी और संसार की सर्व-आत्मायें भी यही नवीनता व विशेषता देखना चाहती हैं।

आगे चल कर जितने सर्विस के साधनों द्वारा सर्विस को बढ़ावेंगे व मैदान में प्रसिद्ध होते जावेंगे, वैसे हर प्रकार के लोग आपकी हर बात को मन्त्रों द्वारा व अपनी सिद्धियों द्वारा चैक (check) करने की चैलेन्ज करेंगे। संकल्पों को व कर्मों को भी करने के लिए आपके पीछे सी०आई०डी० (C.I.D; गुप्तचर) होंगे। ऐसे ही सहज थोड़े ही मानेंगे? बिना प्रूफ़ (proof) और प्रमाण के बुद्धिमान लोग मानने के लिये तैयार नहीं होते। चैलेन्ज करने के साथ-साथ व सर्विस के स्थूल साधनों के साथ-साथ क्या ऐसी तैयारी कर रहे हो? माइण्ड-कन्ट्रोल (Mind

control; मस्तिष्क नियन्त्रण) का एग्जैमिनेशन (examination; परीक्षा) लेंगे। ऐसे नहीं योग में बैठते समय चैक करेंगे, विशेष परिस्थिति के समय माइण्ड-कन्ट्रोल व स्थिति की चैकिंग करेंगे। माया के सी० आई० डी० ऑफिसर कम नहीं होते। तो ऐसी तैयारी करने की जिम्मेवारी व स्वरूप बन सैम्पल रूप में आगे आने की जिम्मेवारी इस ग्रुप (group) की है। तब तो पाण्डवों की यादगार ऊँची दिखाई है। ऊँची स्थिति का प्रमाण—यादगार है। दूसरी बार जब आओ तो इस बात में पास विद ऑनर (pass with honour) बनकर आओ, तब कहेंगे—पाण्डव सेना। अभी तो एक ही टॉपिक (topic) और एक ही सबजेक्ट दे रहे हैं। इसको ही एक-रस स्टेज तक लाओ तो ऑकरीन देंगे। सहज है ना?

कितने समय से मेहनत कर रहे हो?—जन्म से? जो जन्म से ही प्रयत्न में लाने वाली बात है क्या वह मुश्किल लगती है? औरों को कहते हो अपना जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त करना क्या मुश्किल है? ऐसे ही ब्राह्मणों का पहला धर्म और कर्म जो है वह करना क्या ब्राह्मणों के लिये मुश्किल है? मरजीवा बन गए हो न, या कि मर कर जिन्दा हो जाते हो? मरना शूद्रपन से है, जीना ब्राह्मणपन में है। यह ब्राह्मणों का अलौकिक जीवन है। ब्राह्मणों को कुछ मुश्किल होता है क्या? ब्राह्मण जीवन के जी-दान का आधार कौन-सा है?—मुरली। पढ़ाई का भी आधार है, मुरली। तो जी-दान का आधार अच्छी तरह से स्नेह से प्रयत्न में लाते हो। नियम प्रमाण नहीं, लेकिन जी-दान का आधार समझ स्नेह रूप से स्वीकार करते हो। जितना स्नेह जी-दान से होगा उतना ही स्नेह, जीवनदाता से होगा। ऐसा स्नेही, अन्य आत्माओं को भी सदा स्नेही व निर्विघ्न बना सकेंगे। अब ऐसे आधार रूप समझ सबके आगे उदाहरण रूप बनो। यह भी जिम्मेवारी है। पाण्डवों के मुख से चलते-फिरते मुरली को रूह-रूहान व चर्चा

कम सुनाई पड़ती है। गोपियों के मुख से मुरली की चर्चा अधिक सुनने में आती है। क्यों ? आपस में ज्ञान की चर्चा करना, यह तो ब्राह्मणों का कर्त्तव्य है। जिस बात में जिसकी जो लगन होती है, उसके लिए समय की कमी कभी नहीं हो सकती।

तो इन दो बातों पर ध्यान रखो एक तो है—प्युरिटि, दूसरा जी-दान का महत्त्व। सूक्ष्म साधन के लिए अलग समय की आवश्यकता नहीं है। जैसे दुनिया के लोगों ने गृहस्थ और आश्रम को अलग कर दिया है और आप लोग दोनों को मिला कर एक करते हो, वैसे स्थूल और सूक्ष्म साधनों को अलग करते हो, इसलिये प्रत्यक्ष फल नहीं मिलता। दोनों ही साथ-साथ होने से प्रत्यक्ष फल देखेंगे। वाणी के साथ-साथ मनसा चाहिए और कर्म के साथ-साथ भी मनसा चाहिए क्योंकि अभी लास्ट टाइम है ना ? लास्ट टाइम में जो भी श्रेष्ठ अस्त्र-शस्त्र होते हैं, वे सब यूज़ किये जाते हैं। अगर यह सब पीछे करेंगे तो टाइम बीत जावेगा। जब अष्ट शक्तियों को साथ-साथ सर्विस में लाओगे तब ही अष्ट-देवता प्रसिद्ध हो जावेंगे अर्थात् स्थापना का स्वरूप स्पष्ट दिखाई देगा। ऐसे नहीं कि पहले स्थूल करके फिर पीछे सूक्ष्म करेंगे। नहीं, साथ-साथ के सिवाय सफ़लता नहीं। अच्छा !"

(इस मुरली का सार)

(१) स्थूल साधनों के साथ-साथ सूक्ष्म साधन अपनाने से और प्लैन के साथ-साथ प्लैन-स्थिति और स्मृति रहने से लास्ट इज़ फास्ट जा सकेंगे।

(२) ईश्वरीय मर्यादाओं का पालन करने और कराने की जिम्मेवारी टीचर्स के साथ-साथ ब्राह्मणों अर्थात् पाण्डवों की भी है।

अ.वा.न.-(20)

३०-६-७४

अव्यक्त स्थिति में स्थित होने से पुरुषार्थ की गति में तीव्रता

प्रकृति के और विकारों के आकर्षण से सदा परे रहने वाले, विश्व की सर्व-आत्माओं की सेवा करने वाले और सदा विदेही परम पिता परमात्मा शिव बोले :—

"आज सभी बच्चों को सूक्ष्म वतन का समाचार सुनाते हैं। आप सबकी रुचि होती है ना, कि सूक्ष्म वतन की सैर करें अर्थात् एक बार वतन को जरूर देखें ? पता है, कि यह इच्छा व संकल्प क्यों होता है ? क्योंकि बाप-दादा, सूक्ष्म वतन-वासी बन, पार्ट बजाते हैं, इसलिए संकल्प आता है कि हम भी एक बार बाप-दादा के साथ, यह अनुभव करें। इसलिए बाप-दादा ही, अपना अनुभव सुना देते हैं। यह तो मालूम है ना कि सबसे मुख्य अनुभव करने व सुनने का दृश्य किस समय होता है? विशेष बच्चों के प्रति अमृत वेले का समय ही निश्चित है। फिर तो, विश्व की अन्य आत्माओं के प्रति, यथा-शक्ति भावना का फल व कोई भी रजो-प्रधान कर्म, अल्पकाल के लिये जिन आत्माओं द्वारा होते रहते हैं, उनको भी उनके कर्मों के अनुसार अल्पकाल के लिये फल देने के प्रति; साथ-साथ सच्चे भक्तों की पुकार सुनने और भक्तों की भिन्न-भिन्न प्रकार की भावना के अनुसार साक्षात्कार कराने और अब तक भी चारों ओर कल्प पहले वाले छुपे-हुए ब्राह्मण-आत्माओं को सन्देश पहुंचाने के लिए, बच्चों को निमित्त बनाने के कार्य में; पुरानी दुनिया को समाप्त कराने-अर्थ निमित्त बने हुए, वैज्ञानिकों की देख-रेख करने, ज्ञानी तू आत्मा, स्नेही व सह-

योगी बच्चों को, सारे दिन के अन्दर ईश्वरीय सेवा का कार्य करने व मायाजीत बनने में हिम्मते बच्चे, मददे बाप के नियम के अनुसार, उनको भी मदद देने के कर्त्तव्य में, ड्रामानुसार निमित्त बने हैं। अब समझा, कि बाप सारे दिन क्या करते हैं? साकार बाप भी अब अव्यक्त होने के कारण क्विक-स्पीड (quick-speed) में निराकार बाप के साथी व सहयोगी सदाकाल के लिए बनने का पार्ट बजा सकते हैं।

ब्रह्मा बाबा, अव्यक्त शरीरधारी, शरीर के बन्धन में न होने के कारण, जैसे अब क्विक-स्पीड में, बाप-समान साथी बने हैं, वैसे व्यक्त में, साथी नहीं बन सकते थे, क्यों नहीं बन सकते थे? कारण क्या है? जो व्यक्त और अव्यक्त रूप में, अन्तर पड़ जाता है कि व्यक्त शरीर में फिर भी व्यक्त शरीर के प्रति, समय देना पड़ता है। और कभी-कभी, कर्मभोग के प्रति भी, अपने निमित्त सर्व-शक्तियों को यूज़ करना पड़ता है। तो व्यक्त शरीर में स्वयं के प्रति, बच्चों के प्रति और विश्व के प्रति इन तीनों में ही, समय देना पड़ता है और व्यक्त शरीरधारी होने के कारण व्यक्त साधनों के आधार पर सर्विस करनी पड़ती है। लेकिन अव्यक्त रूप में स्वयं के प्रति भी साधनों का आधार नहीं लेना पड़ता। इस प्रकार, एक तो सम्पूर्ण होने के नाते, सम्पूर्णता की तीव्रगति है, दूसरा स्वयं पर, समय व शक्तियाँ यूज़ न करने के कारण सेवा में भी तीव्र गति है। तीसरा विनाशी साधनों का आधार न होने के कारण, संकल्प की गति भी तीव्र है। संकल्प द्वारा कहीं भी पहुंचने और विनाशी शरीर द्वारा कहाँ पहुंचने में, समय और शक्ति का कितना अन्तर पड़ जाता है! ऐसे ही व्यक्त और अव्यक्त की गति में भी अन्तर है।

साइंस वाले, समय को और अपनी एनर्जी (energy) अर्थात् मेहनत को, साधनों के विस्तार को, सूक्षम और शार्ट (short)

कर रहे हैं। कम-से-कम, एक सेकेण्ड तक पहुंचने का तीव्र पुरुषार्थ कर रहे हैं और सफलता को पा रहे हैं जैसे विनाश के अर्थ, निमित्त बनी हुई आत्माओं की गति, सूक्ष्म और तीव्र होती जा रही है तो ऐसे ही स्थापना के अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं की स्थिति और गति भी सूक्ष्म और तीव्र होनी चाहिये ना ?) तभी तो दोनों कार्य सम्पन्न होंगे। तो अब व्यक्त शरीर में और अव्यक्त शरीर में अन्तर समझा ? अव्यक्त होना ड्रामा अनुसार किस सेवा के निमित्त बना हुआ है, क्या इस रहस्य को समझा? ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में, अन्त तक नूंधा हुआ है। जब तक, स्थापना का कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है, तब तक निमित्त बनी हुई आत्मा (ब्रह्मा) का पार्ट समाप्त नहीं होना है। वह तब तक दूसरा पार्ट नहीं बजा सकते। जगत-पिता का नये जगत की रचना सम्पन्न करने का पार्ट ड्रामा में नूंधा हुआ है। मनुष्य-सृष्टि की सर्व-वंशावली रचने का सिर्फ़ ब्रह्मा के लिए ही गायन है ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फ़ादर (Great-great grand father) इसीलिये गाया हुआ है। सिर्फ़ स्थिति, स्थान और गति (स्पीड) का परिवर्तन हुआ है, लेकिन पार्ट ब्रह्मा का अभी तक वही है।)

(कइयों के संकल्प पहुंचते हैं, कि इतना समय हमारा बाबा क्या कर रहा है ? बाप भी प्रश्न पूछते हैं, कि क्या ब्रह्मा के साथ ब्राह्मणों का, सर्व-आत्माओं के कल्याण-अर्थ निमित्त बनने का पार्ट व नई सृष्टि की स्थापना का नूंधा हुआ पार्ट समाप्त हुआ है ? जब पार्ट समाप्त नहीं हुआ और सृष्टि का परिवर्तन ही नहीं हुआ, तो ब्रह्मा का पार्ट समाप्त कैसे होगा ? स्नेह के कारण ही संकल्प आता है, कि बतन में इतना समय क्या करेंगे ? बतन का पार्ट इतना समय क्यों और कैसे, यह संकल्प कब आता है ? यह भी एक गुप्त रहस्य है।) कर्म-बन्धन से मुक्त, सम्पन्न हुई आत्मा, इस कल्प के जन्म-मरण के चक्र को समाप्त करने वाली

आत्मा, निराकार बाप की फ़र्स्ट नम्बर साथी आत्मा, विश्व के कल्याण प्रति निमित्त बनी हुई फर्स्ट आत्मा, स्वयं के प्रति और विश्व के प्रति सर्व-सिद्धि प्राप्त की हुई आत्मा, जहाँ चाहे और जितना समय चाहे, वह वहाँ स्वतन्त्र रूप में पार्ट बजा सकती है। जब अल्पकाल की सिद्धि प्राप्त करने वाली आत्माएं, अपनी सिद्धि के आधार पर अपने रूप परिवर्तन कर सकती हैं, तो सर्व-सिद्धि-प्राप्त हुई आत्मा अव्यक्त रूपधारी बन कर, जितना समय चाहे क्या वह उतना समय ड्रामा-अनुसार नहीं रह सकती ?

आत्मा को निराकारी व अव्यक्त स्टेज से व्यक्त में लाने का कारण क्या होता है ? एक कर्मों का बन्धन, दूसरा सम्बन्ध का बन्धन, तीसरा व्यक्त सृष्टि के पार्ट का बन्धन और और देह का बन्धन—चोला तैयार होता है और आत्मा को पुराने से नये में आकर्षित करता है—तो इन सब के बन्धनों को सोचो। स्थापना के पार्ट का जो बन्धन है, वह व्यक्त से अव्यक्त रूप में और ही तीव्र गति से हो रहा है। इस कल्प के अन्दर अब अन्य देह के आकर्षण का बन्धन नहीं, देहधारी बन कर्म-बन्धनों में आने का बन्धन समाप्त कर लिया। जब सर्व-बन्धनों से मुक्त आत्मा बन गई, तो यह व्यक्त देह व व्यक्त देश आत्मा को खींच नहीं सकते। (जैसे साइन्स द्वारा भी स्पेस (space) में चले जाते हैं और धरनी के आकर्षण से परे हो जाते हैं, तो धरनी उनको खींच नहीं सकती। ऐसे ही जब तक नये कल्प में, नये जन्म और नई दुनिया में पार्ट बजाने का समय नहीं आया है, तब तक यह आत्मा स्वतन्त्र है और वह व्यक्त-बन्धनों से मुक्त है। समझा ?)

(इसलिए, अब भिन्न-भिन्न प्रकार के संकल्प नहीं करना। ब्राह्मण बच्चों के साथ जो बाप का वायदा है, कि साथ चलेंगे, साथ मरेंगे और साथ जियेंगे अर्थात् पार्ट समाप्त करेंगे; ब्रह्मा बाप ने बच्चों के साथ जो कॉन्ट्रैक्ट (Contract) विश्व-परिवर्तन

का उठाया है, वह आधे में छोड़ सकते हैं क्या ? स्थापना के कार्य में निमित्त बनी हुई नींव (फाउण्डेशन) बीच से निकल सकती है क्या ? 'जो कर्म मैं करूँगा, मुझे देख सब करेंगे', यह स्लोगन (slogan) कर्म - अर्थ निमित्त बनी हुई आत्मा समाप्त नहीं करेगी। अभी सेवा का कर्म बाप को देखते हुए कर रहे हो ना ? कर्म करके दिखाने के निमित्त बनी हुई आत्मा, अन्त तक साथी और सहयोगी अवश्य बनती है। अच्छा, यह हुआ संकल्प का रेसपान्स। अमृतवेले का समाचार फिर दूसरी बार सुनावेंगे। क्यों कि वह विशेष तौर से बाप और बच्चों का ही समाचार है और उसका तो विस्तार होगा। अच्छा।

ऐसे गुह्य राजों को समझने वाले राज-युक्त, योग-युक्त, ज्ञान-युक्त, युक्ति-युक्त, सर्वगुणों से युक्त, प्रकृति और विकारों के आकर्षण से सदा परे रहने वाले, बाप के साथ स्थापना के कार्य में तीव्रगति से सहयोगी बनने वाले और सदा स्नेही आत्माओं को बाप-दादा का याद-प्यार, गुडनाइट और नमस्ते।"

अ.वा

—: इस मुरली का सार :—

१. सूक्ष्म वतन में रहते हुए भी अव्यक्त बाप-दादा भक्तों की पुकार सुनने, वैज्ञानिकों की देख-रेख करने, छिपे हुये बच्चों को खोज निकालने और ब्राह्मण बच्चों की, पुरुषार्थ और सेवा में मदद करने का कार्य करते हैं।

२. अव्यक्त शरीरधारी होने से एक तो सम्पूर्ण होने के कारण सम्पूर्णता की तीव्रगति है, दूसरे स्वयं पर समय व शक्ति यूज न करने के कारण सेवा में तीव्र गति है और तीसरे विनाशी साधनों का आधार न होने के कारण संकल्प की गति भी तीव्र है।

१६-१-७५

२१

उबाला रूप अवस्था

विश्व-परिवर्तन के आधारमूर्त, सर्व सम्बन्धों तथा प्रकृति के सर्व आकर्षणों से उपराम, आकर्षण मूर्त बाप-दादा ज्ञान-रत्न बच्चों से बोले—

अपने को नयनों में समाये हुए, नैनों के नूर व नूरे-रत्न समझते हो ? स्वयं को बाप-दादा के नयनों के सितारे समझते हो ? नयनों के सम्मुख हो या नयनों में समाये हुए हो ? दो प्रकार के सितारे इस समय चमक रहे हैं। हर-एक स्वयं से पूछे कि मैं कौनसा सितारा हूँ ? समाये हुए की क्वॉलिफ़िकेशनस (Qualifications) और सम्मुख वाले की क्वॉलिफ़िकेशन्स् में क्या अन्तर है ? उस को जानते हो ? सम्मुख वाले के बीच में कुछ-न-कुछ दूरी रह जाती है। सम्मुख वाले के बीच, दो के बीच में तीसरे के आने की मार्जिन रहती है, अर्थात् कोई-न-कोई विघ्न निरन्तर में अन्तर कर सकता है। लेकिन जो 'नयनों में समाये हुए हों' वे बाप के समान होते हैं; कोई परिस्थिति व प्रकृति, अर्थात् पाँच तत्त्व, भी बाप से उन्हें अलग नहीं कर सकते। गोया वे सदा-विजयी, निरन्तर एक-रस और एक की लगन में मग्न होंगे। एक बाप और बाप-समान सदा ईश्वरीय सेवा। बस, इसके सिवा उन्हें और कुछ दिखाई नहीं देगा। उनकी दृष्टि, वृत्ति और स्मृति ये तीनों ही सदा समर्थ रहती हैं अर्थात्, व्यर्थ समाप्त हो जाता है। ऐसे बने हो या बनना है ?

विश्व-परिवर्तन के आधारमूर्त स्वयं को परिवर्तन किया हुआ अनुभव करते हो ? अगर आधार-मूर्त सम्पूर्ण परिवर्तन की अभी स्वयं में कमी महसूस करते हैं तो फिर विश्व-परिवर्तन कैसे होगा ?

आधारमूर्त स्वयं अपने लिये ही कुछ समय की आवश्यकता समझते हैं या विश्व-परिवर्तन के लिये अभी समय चाहिए। यह संकल्प उत्पन्न होता है? आधार-मूर्त के दृढ़ संकल्प में कभी हलचल के संकल्प रहते हैं तो विनाश-अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं में कभी जोश, कभी होश आ जाता है। आधार-मूर्त आत्माओं का संकल्प ही विनाश-अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं को प्रेरणा का आधार है। तो अपने-आप से पूछो, कि प्रेरक शक्ति-सेना का संकल्प दृढ़ निश्चय-बुद्धि है और स्वयं एवर रेडी (Ever-ready) हैं? जैसे यज्ञ रचने के निमित्त ब्रह्मा बाप के साथ ब्राह्मण बने, तो यज्ञ से प्रज्ज्वलित हुई यह जो विनाश-ज्वाला है, इसके लिए भी जब तक ज्वाला रूप नहीं बनते, तब तक यह विनाश की ज्वाला भी सम्पूर्ण ज्वाला रूप नहीं लेती है। यह भड़कती है, फिर शीतल हो जाती है। कारण? क्योंकि ज्वाला मूर्त और प्रेरक आधार-मूर्त आत्माएँ अभी स्वयं ही सदा ज्वाला रूप नहीं बनी हैं। ज्वाला-रूप बनने का दृढ़ संकल्प स्मृति में नहीं रहता है।

ज्वाला-रूप बनने का मुख्य और सहज पुरुषार्थ कौनसा है? ('मेरा तो एक शिव बाबा')। यह स्मृति सदा रहे, इसके लिए भी कौनसा पुरुषार्थ है? अब लास्ट विशेष पुरुषार्थ कौन-सा रह गया है? ('उपराम अवस्था')। यह तो है रिज़ल्ट। लेकिन उसका भी पुरुषार्थ क्या है? (न्यारापन) न्यारापन भी किससे आवेगा—कौन-सी धुन में रहने से? धुन यही रहे कि अब वापिस घर जाना है—जाना है अर्थात् उपराम। जाना है—जहाँ जाना है वैसा पुरुषार्थ स्वतः ही चलता है। जब अपने निराकारी घर जाना है तो वैसा अपना वेश बनाना होता है। तो इस नये वर्ष का विशेष पुरुषार्थ यही होना चाहिए कि वापिस जाना है और सबको ले जाना है। इस स्मृति से स्वतः ही सर्व-सम्बन्ध, सर्व प्रकृति के

आकर्षण से उपराम, अर्थात् साक्षी बन जावेंगे। साक्षी बनने से सहज ही बाप के साथी बन जावेंगे व बाप-समान बन जावेंगे। सर्व को सदा ज्वाला-रूप दिखाई देंगे, तब ही यह विनाश ज्वाला भी आपके ज्वाला-रूप के साथ-साथ स्पष्ट दिखाई देगी। (जितना स्थापना के निमित्त बने ज्वाला-रूप होंगे उतना ही विनाश-ज्वाला रूप में प्रत्यक्ष होगा।) इस दृढ़ संकल्प की तीली लगाओ तब विनाश-ज्वाला भड़केगी। अभी शीतल रूप में है क्योंकि आधार-मूर्त भी पुरुषार्थ में शीतल हैं। संगठन रूप का ज्वाला-रूप विश्व के विनाश का कार्य सम्पन्न करेगा।

अल्प आत्माओं का दृढ़ संकल्प अल्पकाल के लिये कहीं-कहीं विनाश-ज्वाला भड़काने के निमित्त बना है। लेकिन महाविनाश, और विश्व-परिवर्तन—संगठन के एक श्रेष्ठ संकल्प के सिवाय सम्पन्न नहीं हो सकता। इसलिये इस वर्ष में अपनी लास्ट स्टेज, सर्व कर्म-बन्धनों से मुक्त, कर्मातीत अवस्था, न्यारे और प्यारेपन का बैलेन्स सदा ठीक रहे। ऐसी निराकारी स्टेज संगठन रूप में बनाओ। तब विनाश के नज़ारे और साथ-साथ नई दुनिया के नज़ारे स्पष्ट दिखाई देंगे। सबको इस वर्ष यह पुरुषार्थ करना है। इस लास्ट पुरुषार्थ से ही स्वयं की और विनाश की गति फ़ास्ट होगी।

संकल्प चलता है या समाप्त हो गया है? घबराते तो नहीं हो कि क्या होगा, कैसे होगा? अगर और मगर तो नहीं आता? अगर न हुआ तो?—कोई कहता है 'मगर' होना ही है; कोई 'अगर' कहता है। लेकिन होगा क्या? (कई समझते हैं कि बाप तो अव्यक्त हो गया, व्यक्त में सामना करने वाले तो हम ही हैं। लेकिन आप भी अव्यक्त हो जाओ, अर्थात् कोई भी सामने आये तो व्यक्त भाव की बात उन्हें दिखाई न दे या करने की हिम्मत न हो।) औरों के भी व्यक्त भाव को मिटाने वाले अव्यक्त फ़रिश्ते

बन जाओ। ऐसी अव्यक्त-स्थिति व वायुमण्डल, अर्थात् पाण्डवों का क़िला बनाओ तो यह हलचल समाप्त हो जावेगी। (बाप-दादा अन्त तक आपके साथ हैं और सदा बच्चों के ऊपर स्नेह और सहयोग की छत्र-छाया के समान हैं। इसलिये घबराओ मत। बैक-बोन (Back-bone) बाप-दादा, सामना करने के लिए किसी भी व्यक्ति द्वारा, समय पर प्रत्यक्ष हो ही जावेंगे और अब भी हो रहे हैं। अच्छा।)

ऐसे सदा हिम्मत और उल्लास में रहने वाले, हर परिस्थिति में श्रेष्ठ स्थिति में रहने वाले, प्रकृति के सर्व आकर्षणों से परे रहने वाले, रूहानी बाप के रूहानी आकर्षण में रहने वाले, रूहानी आकर्षण-मूर्त सदा-निश्चिन्त और निश्चय-बुद्धि, बाप के सदा साथी, सर्व के सदा स्नेही और सहयोगी आत्माओं को बाप-दादा का याद प्यार और नमस्ते !

(अव्यक्त वाणी) की कुछ मुख्य बातें

१. इस नये वर्ष का विशेष पुरुषार्थ यही होना चाहिये कि वापिस घर जाना है और सब को साथ ले जाना है। इस स्मृति से प्रकृति के सभी आकर्षणों से तथा सभी सम्बन्धों से उपराम हो जाओगे और साक्षी एवं निराकारी बन जाओगे।

२. साक्षी होने से सहज ही बाप के साथी बन जाओगे और समान बन जाओगे।

३. जो बच्चे बाप-दादा के नयनों में समाये हुए होते हैं, वे बाप समान होते हैं। कोई भी परिस्थिति और प्रकृति का कोई भी रूप उन्हें बाप से अलग नहीं कर सकता। वे सदा एक की लगन में मग्न होते हैं।

४. किसी भी परिस्थिति में घबराओ मत क्योंकि बाप-दादा का स्नेह छत्र-छाया के समान है और वे कभी भी किसी व्यक्ति द्वारा प्रत्यक्ष हो जायेंगे।

(२२) 25.11.2000

बाप समान बनने के लिए दो बातों की दृढ़ता रखो - स्वमान में रहना है और सबको सम्मान देना है

(आज बापदादा अपने प्यारे ते प्यारे, मीठे ते मीठे छोटे से ब्राह्मण परिवार को, ब्राह्मण संसार को, उसको ही देख रहे हैं। यह छोटा सा संसार कितना न्यारा भी है (a) तो प्यारा भी है। क्यों प्यारा है? क्योंकि इस ब्राह्मण संसार की हर आत्मा विशेष आत्मा है। देखने में तो अति साधारण आत्मायें आती हैं लेकिन सबसे बड़े से बड़ी विशेषता हर एक ब्राह्मण-आत्मा की यही है जो परम-आत्मा को अपने दिव्य बुद्धि द्वारा पहचान लिया है। चाहे 90 वर्ष के बुजुर्ग हैं, बीमार हैं लेकिन परमात्मा को पहचानने की दिव्य बुद्धि, दिव्य नेत्र सिवाए ब्राह्मण आत्माओं के नामीग्रामी वी.वी.आई.पी. में भी नहीं है। यह सभी मातायें क्यों यहाँ पहुँची हैं? टाँगें चलें, नहीं चलें लेकिन पहुँच तो गई हैं। तो पहचाना है तब तो पहुंची हैं ना! यह पहचानने का नेत्र, पहचानने की बुद्धि सिवाए आपके किसी को भी प्राप्त नहीं हो सकती। सभी मातायें यह गीत गाती हो ना - हमने देखा, हमने जाना....। माताओं को यह नशा है? हाथ हिला रही हैं, बहुत अच्छा। पाण्डवों को नशा है? एक दो से आगे हैं। न शक्तियों में कमी है, न पाण्डवों में कमी है। लेकिन बापदादा को यही खुशी है कि यह छोटा सा संसार कितना प्यारा है। जब आपस में भी मिलते हो तो कितनी प्यारी आत्मायें लगती हैं!

बापदादा देश-विदेश की सर्व आत्माओं द्वारा आज यही दिल का गीत सुन रहे थे - बाबा, मीठा बाबा हमने जाना, हमने देखा। यह गीत गाते-गाते चारों ओर के बच्चे एक तरफ खुशी में, दूसरे तरफ स्नेह के सागर में समाये हुए थे (जो भी चारों ओर के यहाँ साकार में नहीं हैं लेकिन दिल से, दृष्टि से बापदादा के सामने हैं और बापदादा भी साकार में दूर बैठे हुए बच्चों को सम्मुख ही देख रहे हैं। चाहे देश है, चाहे विदेश (b) है, बापदादा कितने में पहुँच सकते हैं? चक्कर लगा सकते हैं? बापदादा चारों ओर के बच्चों को रिटर्न में अरब-खरब से भी ज्यादा याद-प्यार दे रहे हैं) चारों ओर के बच्चों को देख-देख सबके दिलों में एक ही संकल्प देख रहे हैं, सभी नयनों से यही कह रहे हैं कि हमें परमात्म 6 मास का होम वर्क याद है। आप सबको भी याद है ना? भूल तो नहीं गया? पाण्डवों को याद है? अच्छी तरह से याद है? बापदादा बार-

बार क्यों याद दिलाता है? कारण? समय को देख रहे हो, ब्राह्मण आत्मायें स्वयं को भी देख रही हैं। मन जवान होता जाता है, तन बुजुर्ग होता जाता है। समय और आत्माओं की पुकार अच्छी तरह से सुनने में आ रही है! तो बापदादा देख रहे थे – आत्माओं की पुकार दिल में बढ़ती जा रही है – 'हे सुख-देवा! हे शान्ति-देवा! हे सच्ची खुशी-देवा थोड़ी सी अंचली हमें भी दे दो। सोचो, पुकार करने वालों की लाइन कितनी बड़ी है! आप सभी सोचते हो - बाप की प्रत्यक्षता जल्दी से जल्दी हो जाए लेकिन प्रत्यक्षता किस कारण से रुकी हुई है? जब आप सभी भी यही संकल्प करते हो और दिल की चाहना भी रखते हो, मुख से कहते भी हो – हमें बाप समान बनना है। बनना है ना? है बनना? अच्छा, फिर बनते क्यों नहीं हो? बापदादा ने बाप समान बनने को कहा है, क्या बनना है, कैसे बनना है, 'समान' शब्द में यह दोनों क्वेश्चन उठ नहीं सकते। क्या बनना है? उत्तर है ना - बाप समान बनना है। कैसे बनना है?

फ़ालो फ़ादर – फुटस्टैप फ़ादर मदर। निराकार बाप, साकार ब्रह्मा मदर। क्या फ़ालो करना भी नहीं आता? फालो तो आजकल के जमाने में अंधे भी कर लेते हैं। देखा है, आजकल वह लकड़ी के आवाज़ पर, लकड़ी को फ़ालो करते-करते कहाँ के कहाँ पहुँच जाते हैं। आप तो मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, त्रिनेत्री हैं, त्रिकालदर्शी हैं। फ़ालो करना आपके लिए क्या बड़ी बात है! बड़ी बात है क्या? बोलो, बड़ी बात है? है नहीं लेकिन हो जाती है। बापदादा सब जगह चक्कर लगाते हैं, सेन्टर पर भी, प्रवृत्ति में भी। तो बापदादा ने देखा है, हर एक ब्राह्मण आत्मा के पास, हर एक सेन्टर पर, हर एक की प्रवृत्ति के स्थान पर जहाँ-तहाँ ब्रह्मा बाप के चित्र बहुत रखे हुए हैं। चाहे अव्यक्त बाप के, चाहे ब्रह्मा बाप के, जहाँ तहाँ चित्र ही चित्र दिखाई देते हैं। अच्छी बात है। लेकिन बापदादा यह सोचते हैं कि चित्र को देख चरित्र तो याद आते हैं ना! या सिर्फ चित्र ही देखते हो? चित्र को देख प्रेरणा तो मिलती है ना? तो बापदादा और तो कुछ कहते नहीं हैं सिर्फ एक ही शब्द कहते हैं - 'फ़ालो करो', बस। सोचो नहीं, ज़्यादा प्लैन नहीं बनाओ, यह नहीं वह करें, ऐसा नहीं वैसा, वैसा नहीं ऐसा। नहीं। जो बाप ने किया, कापी करना है, बस। कापी करना नहीं आता? आजकल तो

साइन्स ने फोटो कापी की भी मशीनें निकाल ली हैं। निकाली है ना! यहाँ फोटो कापी है ना? तो यह ब्रह्मा बाप का चित्र रखते हैं। भले रखो, अच्छी तरह से रखो, बड़े बड़े रखो। लेकिन फोटो कापी तो करो ना!

तो बापदादा आज चारों ओर का चक्कर लगाते यह देख रहे थे, चित्र से प्यार है या चरित्र से प्यार है? संकल्प भी है, उमंग भी है, लक्ष्य भी है, बाकी क्या चाहिए? बापदादा ने देखा, कोई भी चीज़ को अच्छी तरह से मजबूत करने के लिए चार ही कोनों से उसको पक्का किया जाता है। तो बापदादा ने देखा तीन कोने तो पक्के हैं, एक कोना और पक्का होना है। संकल्प भी है, उमंग भी है, लक्ष्य भी है, किसी से भी पूछो क्या बनना है? हर एक कहता है – बाप समान बनना है। कोई भी यह नहीं कहता है - बाप से कम बनना है, नहीं। समान बनना है। अच्छी बात है। एक कोना मजबूत करते हो लेकिन चलते-चलते ढीला हो जाता है, वह है दृढ़ता। संकल्प है, लक्ष्य है लेकिन कोई पर-स्थिति आ जाती है, साधारण शब्दों में उसको आप लोग कहते हैं बातें आ जाती हैं, वह दृढ़ता को ढीला कर देती हैं। दृढ़ता उसको कहा जाता है - 'मर जायें, मिट जायें लेकिन संकल्प न जाये'। झुकना पड़े, जीते जी मरना पड़े, अपने को मोड़ना पड़े, सहन करना पड़े, सुनना पड़े लेकिन संकल्प नहीं जाये। इसको कहा जाता है – 'दृढ़ता'। जब छोटे-छोटे बच्चे ओम निवास में आये थे तो ब्रह्मा बाबा उन्हों को हँसी-हँसी में याद दिलाता था, पक्का बनाता था कि इतना-इतना पानी पियेंगे, इतनी मिर्ची खायेंगे, डरेंगे तो नहीं। फिर हाथ से ऐसे आँख के सामने करते हैं.....। तो ब्रह्मा बाप छोटे-छोटे बच्चों को पक्का करते थे, चाहे कितनी भी समस्या आ जाए, संकल्प की आँख हिले नहीं। वह तो लाल मिर्ची और पानी का मटका था, छोटे बच्चे थे ना। आप तो सभी अभी बड़े हो, तो बापदादा आज भी बच्चों से पूछते हैं कि आपका दृढ़ संकल्प है? संकल्प में दृढ़ता है कि 'बाप समान' बनना ही है? बनना है नहीं, बनना ही है। अच्छा - इसमें हाथ हिलाओ। टी.वी. वाले निकलो। टी.वी. काम में आनी चाहिए ना! बड़ा-बड़ा हाथ करो। अच्छा - मातायें भी उठा रही हैं। पीछे वाले और ऊँचा हाथ करो। बहुत अच्छा। कैबिन वाले नहीं उठा रहे हैं। कैबिन वाले तो निमित्त हैं। अच्छा। थोड़ी घड़ी के लिए तो हाथ उठाके बापदादा को खुश कर दिया।

अभी बापदादा सिर्फ एक ही बात बच्चों से कराना चाहते हैं, कहना नहीं चाहते, कराना चाहते हैं। सिर्फ अपने मन में दृढ़ता लाओ, थोड़ी सी बात में संकल्प को ढीला नहीं कर दो। **कोई इनसल्ट करे, कोई घृणा करे, कोई अपमान करे, निंदा करे, कभी भी कोई दु:ख दे लेकिन आपकी शुभ भावना मिट नहीं जाए।** आप चैलेन्ज करते हो कि हम माया को, प्रकृति को परिवर्तन करने वाले विश्व परिवर्तक हैं, अपना आक्यूपेशन तो याद है ना? विश्व परिवर्तक तो हो ना! अगर कोई अपने संस्कार के वश आपको दु:ख भी दे, चोट लगाये, हिलाये, तो क्या आप दु:ख की बात को सुख में परिवर्तन नहीं कर सकते हो? इनसल्ट को सहन नहीं कर सकते हो? गाली को गुलाब नहीं बना सकते हो? समस्या को बाप समान बनने के संकल्प में परिवर्तन नहीं कर सकते हो? आप सबको याद है - जब आप ब्राह्मण जन्म में आये और निश्चय किया, चाहे आपको एक सेकण्ड लगा या एक मास लगा लेकिन जब से आपने निश्चय किया, दिल ने कहा "मैं बाबा का, बाबा मेरा।" संकल्प किया ना, अनुभव किया ना! तब से आपने माया को चैलेन्ज किया कि मैं मायाजीत बनूंगा, बनूंगी। यह चैलेन्ज माया को किया था? मायाजीत बनना है कि नहीं? मायाजीत आप ही हैं ना या अभी दूसरे आने हैं? जब माया को चैलेन्ज किया तो यह समस्यायें, यह बातें, यह हलचल माया के ही तो रॉयल रूप हैं। माया और तो कोई रूप में आयेगी नहीं। इन रूपों में ही मायाजीत बनना है। बात नहीं बदलेगी, सेन्टर नहीं बदलेगा, स्थान नहीं बदलेगा, आत्मायें नहीं बदलेंगी, हमें बदलना है। आपका स्लोगन तो सबको बहुत अच्छा लगता है - **बदलके दिखाना है, बदला नहीं लेना है, बदलना है।** यह तो पुराना स्लोगन है। नये-नये रूप, रॉयल रूप बनके माया और भी आने वाली है, घबराओ नहीं। बापदादा अण्डरलाइन कर रहा है - माया ऐसे, ऐसे रूप में आनी है, आ रही है। जो महसूस ही नहीं करेंगे कि यह माया है, कहेंगे नहीं दादी, आप समझती नहीं हो, यह माया नहीं है। यह तो सच्ची बात है। और भी रॉयल रूप में आने वाली है, डरो मत। क्यों? देखो, कोई भी दुश्मन चाहे हार खाता है, चाहे जीत होती है, जो भी उनके पास छोटे मोटे शस्त्र अस्त्र होंगे, यूज़ करेगा या नहीं करेगा? करेगा ना? तो माया की भी अन्त तो होनी है लेकिन जितना अन्त समीप आ

रहा है, उतना वह नये-नये रूप से अपने अस शक्ति यूज़ कर रही है, करेगी भी। फिर आपके पाँव में झुकेगी। पहले आपको झुकाने की कोशिश करेगी, फिर खुद झुक जायेगी। सिर्फ इसमें आज बापदादा एक ही शब्द बार-बार अण्डरलाइन करा रहा है। ''बाप समान बनना है'' - अपने इस लक्ष्य के स्वमान में रहो और सम्मान देना अर्थात् सम्मान लेना, लेने से नहीं मिलेगा, देना अर्थात् लेना है। सम्मान दे – यह यथार्थ नहीं है, सम्मान देना ही लेना है। स्वमान वॉडी कान्सेस का नहीं, ब्राह्मण जीवन का स्वमान, श्रेष्ठ आत्मा का स्वमान, सम्पन्नता का स्वमान। तो स्वमान और सम्मान लेना नहीं है लेकिन देना ही लेना है - इन दो बातों में दृढ़ता रखो। आपकी दृढ़ता को कोई कितना भी हिलाये, दृढ़ता को डोला नहीं करो। मजबूत रहो, अचल रहो। तब यह जो बापदादा से प्रॉमिस किया है, 6 मास का। प्रॉमिस तो याद है ना। यह नहीं देखते रहना कि अभी तो 15 दिन पूरा हुआ है, साढ़े पाँच मास तो पड़े हैं। जब रूहरिहान करते हैं ना - अमृतवेले रूहरिहान तो करते हैं, तो बापदादा को बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुनाते हैं। अपनी बातें जानते तो हो ना? तो अब 'दृढ़ता' को अपनाओ। उल्टी बातों में दृढ़ता नहीं रखना। क्रोध करना ही है, मुझे दृढ़ निश्चय है, ऐसे नहीं करना। क्यों? आजकल बापदादा के पास रिकार्ड में मैजारिटी क्रोध के भिन्न-भिन्न प्रकार की रिपोर्ट पहुँचती है। महारूप में कम है लेकिन अंश रूप में भिन्न-भिन्न प्रकार का क्रोध का रूप ज्यादा है।

इस पर क्लास कराना - क्रोध के कितने रूप हैं? फिर क्या कहते हैं, हमारा न भाव था, न भावना थी, ऐसे ही कह दिया। इस पर क्लास कराना।

टीचर्स बहुत आई हैं ना? (1200 टीचर्स हैं) 1200 ही दृढ़ संकल्प कर लें तो कल ही परिवर्तन हो सकता है। फिर इतने एक्सीडेंट नहीं होंगे, बच जायेंगे सभी। टीचर्स हाथ उठाओ। बहुत हैं। टीचर अर्थात् निमित्त फाउण्डेशन। अगर फाउण्डेशन पक्का अर्थात् दृढ़ रहा तो झाड़ तो आपेही ठीक हो जायेगा। आजकल चाहे संसार में, चाहे ब्राह्मण संसार में हर एक को हिम्मत और सच्चा प्यार चाहिए। मतलब का प्यार नहीं, स्वार्थ का प्यार नहीं। एक सच्चा प्यार और दूसरी हिम्मत, मानो 95 परसेंट किसने संस्कार के वश, परवश होके नीचे-ऊपर कर भी लिया लेकिन 5 परसेन्ट

अच्छा किया, फिर भी अगर आप उसके 5 परसेन्ट अच्छाई को लेकर पहले उसमें हिम्मत भरो, यह बहुत अच्छा किया फिर उसको कहो बाकी यह ठीक कर लेना, उसको फील नहीं होगा। अगर आप कहेंगी यह क्यों किया, ऐसा थोड़ेही किया जाता है, यह नहीं करना होता है, तो पहले ही बिचारा संस्कार के वश है, कमजोर है, तो वह नरवश हो जाता है। प्रोग्रेस नहीं कर सकता है। 5 परसेन्ट की पहले हिम्मत दिलाओ, यह बात बहुत अच्छी है आपमें। यह आप बहुत अच्छा कर सकते हैं, फिर उसको अगर समय और उसके स्वरूप को समझकर बात देंगे तो वह परिवर्तन हो जायेगा। हिम्मत दो, परवश आत्मा में हिम्मत नहीं होती है। बाप ने आपको कैसे परिवर्तन किया? आपकी कमी सुनाई, आप विकारी हो, आप गन्दे हो, कहा? आपको स्मृति दिलाई आप आत्मा हो और इस श्रेष्ठ स्मृति से आपमें समर्थी आई, परिवर्तन किया। तो हिम्मत से स्मृति दिलाओ। स्मृति समर्थी स्वत: ही दिलायेगी। समझा। तो अभी तो समान बन जायेंगे ना? सिर्फ एक अक्षर याद करो - 'फ़लो फ़दर-मदर'। जो बाप ने किया, वह करना है। बस। कदम पर कदम रखना है। तो समान बनना सहज अनुभव होगा।

ड्रामा छोटे-छोटे खेल दिखाता रहता है। आश्चर्य की मात्रा तो नहीं लगाते? अच्छा।

अनेक बच्चों के कार्ड, पत्र, दिल के गीत बापदादा के पास पहुँच गये हैं। सभी कहते हैं हमारी भी याद देना, हमारी भी याद देना। तो बाप भी कहते हैं हमारी भी यादप्यार दे देना। याद तो बाप भी करते, बच्चे भी करते, क्योंकि इस छोटे से संसार में है ही बापदादा और बच्चे और विस्तार तो है ही नहीं। तो कौन याद आयेगा? बच्चों को बाप, बाप को बच्चे। तो देश-विदेश के बच्चों को बापदादा भी बहुत-बहुत-बहुत-बहुत याद-प्यार देते हैं।

यह माताओं का झुण्ड बहुत अच्छा आया है। सदैव बुजुर्ग मातायें यही सोचकर आती हैं, अभी एक बार तो मिलकर आयें, फिर देखा जायेगा। ऐसे सोचते-सोचते भी कई बार आ चुकी हैं। अच्छा करती हैं। बापदादा माताओं की हिम्मत देखकर खुश होते हैं। ताली बजाओ हाजिर हो जाती हैं। (सभी ने खूब तालियाँ बजाई) अच्छा है ताली बजाने में खुशी होती है। माताओं की भी रौनक अच्छी है। देखो, ड्रामा में

माताओं से बाप का, परिवार का प्यार है इसलिए पहला चांस माताओं को ही मिला है। माताओं के टर्न में पानी भी पहुँच गया है। कोई तकलीफ हुई क्या! नहीं ना! एकानामी की या नहीं? एकानामी किया? सबकी दिल बड़ी है ना। जब दिल बड़ी होती है तो सब ठीक चलता है। थोड़ी बहुत खिटखिट तो होती है, वह कोई बड़ी बात नहीं। ठीक है ना - मधुबन के, शान्तिवन के पाण्डव। मजबूत हैं ना, तोड़ निभायेंगे ना? कहो दादी अगर पानी नहीं आया तो हम बाल्टियाँ भरकर भी आयेंगे। पानी कैसे नहीं हाज़िर होगा, जब इतने बच्चे हाज़िर हो जायेंगे तो पानी कैसे नहीं हाज़िर होगा। अच्छा।

चारों ओर के ब्राह्मण संसार की विशेष आत्माओं को, सदा दृढ़ता द्वारा सफलता प्राप्त करने वाले सफलता के सितारों को, सदा स्वयं को सम्पन्न बनाए आत्माओं की पुकार को पूर्ण करने वाली सम्पन्न आत्माओं को, सदा निर्बल को, परवश को अपने हिम्मत के वरदान द्वारा हिम्मत दिलाने वाली, बाप के मदद के पात्र आत्माओं को, सदा विश्व-परिवर्तक बन स्व-परिवर्तन से माया, प्रकृति और कमज़ोर आत्माओं को परिवर्तन करने वाली परिवर्तक आत्माओं को, बापदादा का चारों ओर के छोटे से संसार की सर्व आत्माओं को सम्मुख आई हुई श्रेष्ठ आत्माओं को अरब-खरब गुणा यादप्यार और नमस्ते।

कर्नाटक के सेवाधारी आये हैं:- अच्छा पार्ट बजा रहे हैं, सभी को अच्छी सैलवेशन दी है। तो कर्नाटक निवासियों को सेवा के सन्तुष्टता की बहुत-बहुत मुबारक हो। आलराउण्ड पार्ट अच्छा बजाया। सन्तुष्टता का सबसे सहज आधार है "पहले आप"। पहले आप कहते जाओ, साथी बनाते जाओ और आगे बढ़ते जाओ। पहले मैं नहीं, पहले आप। तो कर्नाटक वालों ने भी हिम्मत अच्छी दिखाई है। परिवार भी खुश, बापदादा भी खुश, सेवाधारी हाथ उठाओ। सर्व के सहयोग से सन्तुष्टता का वरदान ले लिया, अच्छा।

दादी जी से – आपको बापदादा ने मेहनत बहुत दी है। मुहब्बत के कारण मेहनत नहीं लगती है। (बाबा आप बैठे हैं हम तो कठपुतलियाँ हैं) फिर भी अच्छा, बहुत अच्छा पार्ट बजा रही हो। (सुनने में नहीं आ रहा है) कोई बात नहीं, जब कान ढीले होते हैं ना तो नयनों की भाषा से जल्दी कैच करते हैं। प्यार तो सभी से है। आप सभी दादियों में जैसे सभी की जान है। अच्छा है। जो भी निमित्त बने हैं ना, चाहे गुप्त

रूप में, चाहे प्रत्यक्ष रूप में सहयोग देना - यह पार्ट बहुत अच्छा बजा रही हो, देखने में भले यह दो दादियां आती हैं लेकिन आप लोग समाये हुए हैं। आप लोगों का मधुबन में हाजिर होना ही मदद है, जो भी निमित्त बने हुए हैं, आप लोगों में रग-रग में हजूर हाज़िर है। जब हजूर हाज़िर है, तो आपका हाज़िर होना ही सब कुछ है। पालना ली हुई है। ऐसा भाग्य कितने थोड़ों का है। एक पालना लेना और दूसरा निमित्त बनना, यह भी एक ड्रामा में हीरो पार्ट है। रिटर्न कर रहे हो ना! तो रिटर्न करने का गुप्त में जमा होता रहता है। सुना।

(24 तारीख को मधुबन आते समय आगरा सेवाकेन्द्र की माताओं की गाडी एक ट्रक से टकरा गई, जिसमें करीब ६ मातायें, एक टीचर तथा ड्राइवर टोटल - 8 ने अपना पुराना शरीर छोड़ दिया और एक दिल्ली की पुरानी माता ने शान्तिवन में शरीर छोड़ा है, यह समाचार बापदादा को सुना रहे हैं)

यह कोई-कोई होता है। उन्हों को दिल में उस समय भी बाबा ही बाबा था। बाबा-बाबा ही कर रहे थे। सभी को बाबा-बाबा ही याद था। नज़दीक आकर ऊपर चली गई। पुरानी-पुरानी थी ना इसलिए उन्हों को बाबा-बाबा ही याद था और बाबा-बाबा कहते ही गई हैं। अवस्था अच्छी रही, चिल्लाया नहीं। दर्द तो काफी हुआ है। फिर भी अवस्था अच्छी रही। देखो, एडवांस पार्टी में सब चाहिए। अभी आप लोग जायेंगे तो एडवांस पार्टी भी तैयार चाहिए ना। इतने सारे चाहिए। तो एडवांस पार्टी की तैयारी हो रही है क्योंकि सभी मातायें पक्की थी। साकार बाप की पालना लेने वाली, तो पालना तो देंगी ना। (एक कुमारी 18 साल की थी) वह भी लगन वाली थी। एडवांस पार्टी में अपना पार्ट बजायेंगे। समय नजदीक आ रहा है तो तैयारी सब चाहिए ना।

अच्छा - ओम् शान्ति।

(२३) 16-12-2000

साक्षात् ब्रह्मा बाप समान कर्मयोगी फ़रिश्ता बनो तब साक्षात्कार शुरू हो

आज ब्राह्मण संसार के रचता बापदादा अपने ब्राह्मण संसार को देख-देख हर्षित हो रहे हैं। कितना छोटा सा प्यारा संसार है। हर एक ब्राह्मण के मस्तक पर भाग्य का सितारा चमक रहा है। नम्बरवार होते हुए भी हर एक के सितारे में भगवान को पहचानने और बनने के श्रेष्ठ भाग्य की चमक है। जिस बाप को ऋषि, मुनि, तपस्वी नेती-नेती कहके चले गये, उस बाप को ब्राह्मण संसार की भोली-भाली आत्माओं ने जान लिया, पा लिया। यह भाग्य किन आत्माओं को प्राप्त होता है? जो साधारण (a) आत्मायें हैं। बाप भी साधारण तन में आते हैं, तो बच्चे भी साधारण आत्मायें ही (a) पहचानती हैं। आज की इस सभा में देखो, कौन बैठे हैं? कोई अरब-खरबपति बैठे हैं? साधारण आत्माओं का ही गायन है। बाप गरीब-निवाज़ गाया हुआ है। अरब-खरबपति निवाज़ नहीं गाया हुआ है। बुद्धिवानों का बुद्धि क्या किसी अरब-खरबपति की बुद्धि को नहीं पलटा सकता? क्या बड़ी बात है! लेकिन ड्रामा का बहुत अच्छा कल्याणकारी नियम बना हुआ है, परमात्म कार्य में फुरी-फुरी (बूंद-बूंद) तलाव होना है। अनेक आत्माओं का भविष्य बनना है। 10-20 का नहीं, अनेक आत्माओं का सफल होना है। इसीलिए गायन है - 'बूँद-बूँद से तलाब'। आप सभी जितना तन-मन-धन सफल करते रहते हो उतना ही सफलता के सितारे बन गये हो। सभी सफलता के सितारे बने हो? बने हो या अभी बनना है, सोच रहे हो? सोचो नहीं। करेंगे, देखेंगे, करना तो है ही....यह सोचना भी समय गँवाना है। भविष्य और वर्तमान की प्राप्ति गँवाना है।

बापदादा के पास कोई-कोई बच्चों का एक संकल्प पहुँचता है। बाहर वाले तो विचारे हैं लेकिन ब्राह्मण आत्मायें विचारे नहीं, विचारवान हैं, समझदार हैं। लेकिन कभी-कभी कोई-कोई बच्चों में एक कमजोर संकल्प उठता है, बतायें। बतायें? सभी हाथ उठा रहे हैं, बहुत अच्छा। कभी-कभी सोचते हैं कि क्या विनाश होना है या होना नहीं है! 99 का चक्कर भी पूरा हो गया, 2000 भी पूरा होना ही है। अब कब तक? (b) बापदादा सोचते हैं - हँसी की बात है कि विनाश को सोचना अर्थात बाप को विदाई (b)

देना क्योंकि विनाश होगा तो बाप तो परमधाम में चले जायेंगे ना! तो संगम से थक गये हैं क्या? हीरे तुल्य कहते हो और गोल्डन को ज़्यादा याद करते हो, होना तो है लेकिन इन्तजार क्यों करते? कई बच्चे सोचते हैं सफल तो करें लेकिन विनाश हो जाए कल परसों तो, हमारा तो काम में आया ही नहीं। हमारा तो सेवा में लगा नहीं। तो करें, सोच कर करें। हिसाब से करें, थोड़ा-थोड़ा करके करें। यह संकल्प बाप के पास पहुँचते हैं। लेकिन मानों आज आप बच्चों ने अपना तन सेवा में समर्पण किया, मन विश्व-परिवर्तन के वायब्रेशन में निरन्तर लगाया, धन जो भी है, है तो प्राप्ति के आगे कुछ नहीं लेकिन जो भी है, आज आपने किया और कल विनाश हो जाता है तो क्या आपका सफल हुआ या व्यर्थ गया? सोचो, सेवा में तो लगा नहीं, तो क्या सफल हुआ? आपने किसके प्रति सफल किया? बापदादा के प्रति सफल किया ना? तो बापदादा तो अविनाशी है, वह तो विनाश नहीं होता! अविनाशी खाते में, अविनाशी बापदादा के पास आपने आज जमा किया, एक घण्टा पहले जमा किया, तो अविनाशी बाप के पास आपका खाता एक का पदमगुणा जमा हो गया। बाप बंधा हुआ है, एक का पदम देने के लिए। तो बाप तो नहीं चला जायेगा ना! पुरानी सृष्टि विनाश होगी ना! इसीलिए आपका दिल से किया हुआ, मजबूरी से किया हुआ, देखा-देखी में किया हुआ, उसका पूरा नहीं मिलता है। मिलता ज़रूर है क्योंकि दाता को दिया है लेकिन पूरा नहीं मिलता है। इसलिए यह नहीं सोचो – अच्छा, अभी विनाश तो 2001 तक भी दिखाई नहीं देता है, अभी तो प्रोग्राम बन रहे हैं, मकान बन रहे हैं। बड़े-बड़े प्लैन बन रहे हैं, तो 2001 तक तो दिखाई नहीं देता है, दिखाई नहीं देगा। कभी भी इन बातों को अपना आधार बनाके अलबेले नहीं होना। अचानक होना है। आज यहाँ बैठे हैं, घण्टे के बाद भी हो सकता है। होना नहीं है, डर नहीं जाओ कि पता नहीं एक घण्टे के बाद क्या होना है! सम्भव है। इतना एवररेडी रहना ही है। शिवरात्रि तक करना है, यह सोचो नहीं। समय का इन्तजार नहीं करो। समय आपकी रचना है, आप मास्टर रचता हो। रचता – रचना के अधीन नहीं होता है। समय रचना आपके ऑर्डर पर चलने वाली है। आप समय का इन्तजार नहीं करो, लेकिन अभी समय आपका इन्तजार कर रहा है। कई बच्चे सोचते हैं, 6 मास के लिए बापदादा

ने कहा है तो 6 मास तो होगा ही। होगा ही ना! लेकिन बापदादा कहते हैं यह हद की बातों का आधार नहीं लो, एवररेडी रहो। निराधार, एक सेकण्ड में जीवनमुक्ति। चैलेन्ज करते हो एक सेकण्ड में जीवनमुक्ति का वर्सा लो। तो क्या आप एक सेकण्ड में स्वयं को जीवनमुक्त नहीं बना सकते हैं? इसलिए इन्तजार नहीं, सम्पन्न बनने का इन्तजाम करो।

बापदादा को बच्चों के खेल देख करके हँसी भी आती है। कौन से खेल पर हंसी आती है? बतायें क्या? आज मुरली नहीं चला रहे हैं, समाचार सुना रहे हैं। अभी तक कई बच्चों को खिलौनों से खेलना बहुत अच्छा लगता है। छोटी-छोटी बातों के खिलौने से खेलना, छोटी बात को अपनाना, यह समय गँवाते हैं। यह साइडसीन्स हैं। भिन्न-भिन्न संस्कार की बातें वा चलन यह सम्पूर्ण मंजिल के बीच में साइडसीन्स हैं। इसमें रुकना अर्थात् सोचना, प्रभाव में आना, समय गँवाना, रुचि से सुनना, सुनाना, वायुमण्डल बनाना.... यह है रुकना, इससे सम्पूर्णता की मंजिल से दूर हो जाते हैं। मेहनत बहुत, चाहना बहुत "बाप समान बनना ही है", शुभ संकल्प, शुभ इच्छा है लेकिन मेहनत करते भी रूकावट आ जाती है। दो कान हैं, दो आँखें हैं, मुख है तो देखने में भी आता, सुनने में भी आता, बोलने में भी आता, लेकिन बाप का बहुत पुराना स्लोगन सदा याद रखो - 'देखते हुए नहीं देखो, सुनते हुए नहीं सुनो। सुनते हुए नहीं सोचो, सुनते हुए अन्दर समाओ, फैलाओ नहीं।' यह पुराना स्लोगन याद रखना जरूरी है क्योंकि दिन-प्रतिदिन जो भी सभी के जैसे पुराने शरीर के हिसाब चुक्तू हो रहे हैं, ऐसे ही पुराने संस्कार भी, पुरानी बीमारियाँ भी सबकी निकलके खत्म होनी है, इसीलिए घबराओ नहीं कि अभी तो पता नहीं और ही बातें बढ़ रही हैं, पहले तो थी नहीं। जो नहीं थी, वह भी अभी निकल रही हैं, निकलनी हैं। आपके समाने की शक्ति, सहन करने की शक्ति, समेटने की शक्ति, निर्णय करने की शक्ति का पेपर है। क्या 10 साल पहले वाले पेपर आयेंगे क्या? बी.ए. के क्लास का पेपर, एम.ए. के क्लास में आयेगा क्या? इसलिए घबराओ नहीं, क्या हो रहा है। यह हो रहा है, यह हो रहा है.. खेल देखो। पेपर तो पास हो जाओ, पास-विद्-आनर हो जाओ।

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि पास होने का सबसे सहज साधन है, बापदादा

के पास रहो, जो आपके काम का नज़ारा नहीं है, उसको पास होने दो, **पास रहो, पास करो, पास हो जाओ।** क्या मुश्किल है? टीचर्स सुनाओ, मधुबन वाले सुनाओ। मधुबन वाले हाथ उठाओ। होशियार हैं मधुबन वाले आगे आ जाते हैं, भले आओ। बापदादा को खुशी है। अपना हक लेते हैं ना? अच्छा है, बापदादा नाराज नहीं है, भले आगे बैठो। मधुबन में रहते हैं तो कुछ तो पास खातिरी होनी चाहिए ना! लेकिन पास शब्द याद रखना। मधुबन में नई-नई बातें होती हैं ना, डाकू भी आते हैं। कई नई-नई बातें होती हैं, अभी बाप जनरल में क्या सुनायें, थोड़ा गुप्त रखते हैं लेकिन मधुबन वाले जानते हैं। मनोरंजन करो, मूंझो नहीं। या है मूंझना, या है मनोरंजन समझकर मौज में पास करना। तो मूंझना अच्छा है या पास करके मौज में रहना अच्छा है? पास करना है ना! पास होना है ना! तो पास करो। क्या बड़ी बात है? कोई बड़ी बात नहीं। बात को बड़ा करना या छोटा करना, अपनी बुद्धि पर है। जो बात को बड़ा कर देते हैं, उनके लिए अज्ञानकाल में भी कहते हैं कि यह रस्सी को सांप बनाने वाला है। सिन्धी भाषा में कहते हैं कि "नोरी को नाग" बनाते हैं। ऐसे खेल नहीं करो। अभी यह खेल खत्म।

आज विशेष समाचार तो सुनाया ना; बापदादा अभी एक सहज पुरुषार्थ सुनाते हैं, मुश्किल नहीं। सभी को यह संकल्प तो है ही कि 'बाप समान बनना ही है।' बनना ही है, पक्का है ना! फारेनर्स बनना ही है ना? टीचर्स बनना है ना? इतनी टीचर्स आई हैं! वाह! कमाल है टीचर्स की। बापदादा ने आज खुशखबरी सुनी, टीचर्स की। कौन सी खुशखबरी है, बताओ। टीचर्स को आज गोल्डन मैडल (बैज) मिला है। जिसको गोल्डन मैडल मिला है, हाथ उठाओ। पाण्डवों को भी मिला है? बाप की हमजिन्स तो रहनी नहीं चाहिए। पाण्डव ब्रह्मा बाप की हमजिन्स हैं। (उन्हों को और प्रकार का गोल्डन मैडल मिला है) पाण्डवों को रायॅल गोल्ड मैडल है। गोल्डन मैडल वालों को **बापदादा की अरब-खरब बारी मुबारक है, मुबारक है, मुबारक है।**

बापदादा, जो देश-विदेश में सुन रहे हैं, और गोल्डन मैडल मिल चुका है, वह सभी भी समझें हमें भी बापदादा ने मुबारक दी है, चाहे पाण्डव हैं, चाहे शक्तियाँ हैं, किसी भी कार्य के निमित्त बनने वालों को खास यह दादियाँ, परिवार में रहने वालों

को भी कोई विशेषता के आधार पर गोल्डन मैडल देती हैं। तो जिसको भी जिस भी विशेषता के आधार पर चाहे सरेण्डर के आधार पर, चाहे कोई भी सेवा में विशेष आगे बढ़ने वाले को दादियों द्वारा भी गोल्डन मैडल मिला है, तो दूर बैठे सुनने वालों को भी बहुत-बहुत मुबारक है। आप सब दूर बैठकर मुरली सुनने वालों के लिए, गोल्डन मैडल वालों के लिए एक हाथ की ताली बजाओ, वह आपकी ताली देख रहे हैं। वह भी हँस रहे हैं, खुश हो रहे हैं।

बापदादा सहज पुरुषार्थ सुना रहे थे - अभी समय तो अचानक होना है, एक घण्टा पहले भी बापदादा अनाउन्स नहीं करेगा, नहीं करेगा, नहीं करेगा! नम्बर कैसे बनेंगे? अगर अचानक नहीं होगा तो पेपर कैसे हुआ? पास विद आनर का सर्टीफिकेट, फाइनल सर्टीफिकेट तो अचानक में ही होना है। इसलिए दादियों का एक संकल्प बापदादा के पास पहुँचा है। दादियाँ चाहती हैं कि अभी बापदादा साक्षात्कार की चाबी खोले, यह इन्हों का संकल्प है। आप सब भी चाहते हो? बापदादा चाबी खोलेंगे या आप निमित्त बनेंगे? अच्छा, बापदादा चावी खोले, ठीक है। बापदादा हाँ जी करते हैं, (ताली बजा दी) पहले पूरा सुनो। बापदादा को चाबी खोलने में क्या देरी है, लेकिन (ज) (ज) करायेगा किस द्वारा? प्रत्यक्ष किसको करना है? बच्चों को या बाप को? बाप को भी बच्चों द्वारा करना है क्योंकि अगर ज्योतिबिन्दु का साक्षात्कार भी हो जाए तो कई तो बिचारे..., बिचारे हैं ना! तो समझेंगे ही नहीं कि यह क्या है। अन्त में शक्तियां और पाण्डव बच्चों द्वारा बाप को प्रत्यक्ष होना है। तो बापदादा यही कह रहे हैं कि जब सब बच्चों का एक ही संकल्प है कि बाप समान बनना ही है, इसमें तो दो विचार नहीं हैं ना! एक ही विचार है ना। तो ब्रह्मा बाप को फ़ालो करो। अशरीरी, बिन्दी ऑटोमेटिक्ली हो जायेंगे। ब्रह्मा बाप से तो सबका प्यार है ना! सबसे ज़्यादा देखा गया है, वैसे तो सभी का है लेकिन फारेनर्स का ब्रह्मा बाप से बहुत प्यार है। इस नेत्र द्वारा देखा नहीं है लेकिन अनुभव के नेत्र द्वारा फारेनर्स ने मैजॉरिटी ब्रह्मा बाबा को देखा है और बहुत प्यार है। ऐसे तो भारत की गोपिकायें, गोप भी हैं फिर भी बापदादा फारेनर्स की कभी-कभी अनुभव की कहानियाँ सुनते हैं, भारतवासी थोड़ा गुप्त रखते हैं, वह ब्रह्मा बाबा के प्रति सुनाते हैं तो उन्हों की कहानियाँ बापदादा भी सुनते हैं और औरों

को भी सुनाते हैं, मुबारक हो फ़ारेनर्स को। लंदन, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका, एशिया, रशिया, जर्मनी... मतलब तो चारों ओर के फ़ारेनर्स को जो दूर बैठे भी सुन रहे हैं, उन्हों को भी बापदादा मुबारक देते हैं, खास ब्रह्मा बाबा मुबारक दे रहे हैं। भारत वालों का थोड़ा गुप्त है, प्रसिद्ध इतना नहीं कर सकते हैं, गुप्त रखते हैं। अभी प्रत्यक्ष करो। बाकी भारत में भी बहुत अच्छे-अच्छे हैं। ऐसी गोपिकायें हैं, अगर उन्हों का अनुभव आजकल के प्राइममिनिस्टर, प्रेजीडेंट भी सुनें तो उनकी आँखों से भी पानी आ जाए। ऐसे अनुभव हैं लेकिन गुप्त रखते हैं इतना खोलते नहीं हैं, चांस भी कम मिलता है। तो बापदादा यह कह रहे हैं कि ब्रह्मा बाप से सबका प्यार तो है, इसीलिए तो अपने को क्या कहलाते हो? ब्रह्माकुमारी या शिव कुमारी? ब्रह्माकुमारी कहलाते हो ना, तो ब्रह्मा बाप से प्यार तो है ही ना। तो चलो अशरीरी बनने में थोड़ी मेहनत करनी भी पड़ती है लेकिन ब्रह्मा बाप अभी किस रूप में है? किस रूप में है? बोलो? (फ़रिश्ता रूप में है) तो ब्रह्मा से प्यार अर्थात् फ़रिश्ता रूप से प्यार। चलो बिन्दी बनना मुश्किल लगता है, फ़रिश्ता बनना तो उससें सहज है ना! सुनाओ, बिन्दी रूप से फ़रिश्ता रूप तो सहज है ना! आप एक्युन्ट का काम करते बिन्दी बन सकते हो? फ़रिश्ता तो बन सकते हो ना! बिन्दी रूप में कर्म करते हुए कभी-कभी व्यक्त शरीर में आ जाना पड़ता है लेकिन बापदादा ने देखा कि साइंस वालों ने एक लाइट के आधार से रोबट बनाया है, सुना है ना! चलो देखा नहीं सुना तो है! माताओं ने सुना है? आपको चित्र दिखा देंगे। वह लाइट के आधार से रोबट बनाया है और वह सब काम करता है। और फास्ट गति से करता है, लाइट के आधार से। और साइंस का प्रत्यक्ष प्रमाण है। तो बापदादा कहते हैं क्या साइलेन्स की शक्ति से, साइलेन्स की लाइट से आप कर्म नहीं कर सकते? नहीं कर सकते? इन्जीनियर और साइंस वाले बैठे हैं ना! तो आप भी एक रूहानी रोबट की स्थिति तैयार करो। जिसको कहेंगे रूहानी कर्मयोगी, फ़रिश्ता कर्मयोगी। पहले आप तैयार हो जाना। इन्जीनियर हैं, साइंस वाले हैं तो पहले आप अनुभव करना। करेंगे? कर सकते हैं? अच्छा, ऐसे प्लैन बनाओ। बापदादा ऐसे रूहानी चलते फिरते कर्मयोगी फ़रिश्ते देखने चाहते हैं। अमृतवेले उठो, बापदादा से मिलन मनाओ, रूह-रूहान करो, वरदान लो।

जो करना है वह करो। लेकिन बापदादा से रोज़ अमृतवेले 'कर्मयोगी फ़रिश्ता भव' का वरदान लेके फिर कामकाज में आओ। यह हो सकता है?

आप लोगों की डिपार्टमेंट (एकाउन्ट की) सबसे दिमाग चलाने वाली है, हो सकता है? मधुबन वाले हाथ उठाओ। जो समझते हैं हो सकता है वह बड़ा हाथ उठाओ। मधुबन की बहनों ने उठाया! मधुबन का वायब्रेशन तो चारों ओर फैलेगा ही। इसमें फ़रिश्ते स्वरूप में कर्मयोगी, डबल लाइट, लाइट के शरीर से, लाइट बन कर्म कर रहे हैं। बोलो तो भी फ़रिश्ते रूप में, काम करो फ़रिश्ते रूप में। जिससे काम है वही एक सुने दूसरा सुने ही नहीं। वातावरण क्यों बनता है?

बापदादा ने देखा है कोई भी छोटी बात का वातावरण बनने का कारण जो बात करते हैं ना, वह ऐसे करते हैं जो ज़िसका उस बात से सम्बन्ध ही नहीं है, उनके भी कानों में पड़ती है। उनका भी व्यर्थ संकल्प चलना शुरू हो जाता है। इसलिए फ़रिश्ता अर्थात् जिसका काम वही सुने। जितना काम है उतना ही बोले, कहानी बनाके नहीं बोले। कथा नहीं करो। कथा हमेशा मिक्स भी होती है और लम्बी भी होती है। तो ब्रह्मा बाप के प्यार का रिटर्न है - **ब्रह्मा बाप समान कर्मयोगी फ़रिश्ता भव।**

बापदादा यही कह रहे हैं - इस स्थिति की धरनी तैयार करो तो बापदादा साक्षात बाप बच्चों द्वारा साक्षात्कार अवश्य करायेगा। 'साक्षात् बाप और साक्षात्कार' - यह दो शब्द याद रखना। बस हैं ही फ़रिश्ते। सेवा भी करते हैं, ऊपर की स्टेज से फ़रिश्ते आये, सन्देश दिया फिर ऊपर चले गये अर्थात् ऊँची स्मृति में चले गये।

अभी समय अनुसार जैसे कहाँ-कहाँ पानी के प्यासी हैं, ऐसे वर्तमान समय शुद्ध, शान्तिमय, सुखमय वायब्रेशन के प्यासी हैं। फ़रिश्ते रूप से ही वायब्रेशन फैला सकते हो। फ़रिश्ता अर्थात् सदा ऊँच स्थिति में रहने वाले। फ़रिश्ता अर्थात् पुराने संसार और पुराने संस्कार से नाता नहीं। अभी संसार परिवर्तन आप सबके संस्कार परिवर्तन के लिए रुका हुआ है।

इस नये वर्ष में लक्ष्य रखो - संस्कार परिवर्तन, स्वयं का भी और सहयोग द्वारा औरों का भी। कोई कमजोर है तो सहयोग दो, न वर्णन करो, न वातावरण बनाओ। सहयोग दो। इस वर्ष की टॉपिक "संस्कार परिवर्तन"। फ़रिश्ता

ॐ शान्ति

परमपिता परमात्मा शिवबाबा याद है।

मुरली

(मु. 19-08-68 से 19-01-2002 तक)

संस्कार, ब्रह्मा बाप समान संस्कार। तो सहज पुरुषार्थ है या मुश्किल है? थोड़ा-थोड़ा मुश्किल है? कभी भी कोई बात मुश्किल होती नहीं है, अपनी कमज़ोरी मुश्किल बनाती है। इसीलिए बापदादा कहते हैं "हे मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चे, अभी शक्तियों का वायुमण्डल फैलाओ।" अभी वायुमण्डल का आपकी बहुत-बहुत-बहुत आवश्यकता है। जैसे आजकल विश्व में पोल्यूशन की प्रावलम है, ऐसे विश्व में एक घड़ी मन में शान्ति सुख के वायुमण्डल की आवश्यकता है क्योंकि मन का पोल्यूशन बहुत है, हवा की पोल्यूशन से भी ज्यादा है। अच्छा।

चारों ओर के बापदादा समान बनना ही है, लक्ष्य रखने वाले, निश्चय बुद्धि विजयी आत्माओं को, सदा पुराने संसार और पुराने संस्कार को दृढ़ संकल्प द्वारा परिवर्तन करने वाले मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं को, सदा किसी भी कारण से सरकमस्टांश से स्वभाव-संस्कार से, कमजोर साथियों को, आत्माओं को सहयोग देने वाले, कारण देखने वाले नहीं, निवारण करने वाले ऐसे हिम्मतवान आत्माओं को, सदा ब्रह्मा बाप के स्नेह का रिटर्न देने वाले कर्मयोगी फ़रिश्ते आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

सेवा का टर्न पंजाब का है, पंजाब वालों का
ब्रह्मा बाप से अच्छा प्यार है।

अच्छा है, ब्रह्मा बाप की पालना भी ली है, तो जैसे आजकल प्राइज देने का प्रोग्राम बना रहे हैं, तो बापदादा समझते हैं कि जैसे कल्चर आफ पीस में नम्बरवन प्राइज कोई भी ज़ोन वाले ने लिया है, सेन्टर ने लिया है, ऐसे यह कर्मयोगी फरिश्ते स्वरूप की स्टेज में नम्बरवन प्राइज़ पंजाब लेवे। हो सकता है? पंजाब वाले हाथ उठाओ। लेंगे फर्स्ट प्राइज? पंजाब वाले जो फर्स्ट प्राइज लेंगे वह एक हाथ की ताली बजाओ। पंजाब की टीचर्स एक हाथ की ताली बजाओ। बहुत समय बैठे हो, ड्रिल करो, उठो। और सेन्टर से जो मुख्य पाण्डव हैं वह भी उठो। फर्स्ट प्राइज़ लेंगे? अच्छा, अभी देखेंगे तीन प्राइज़ कौन लेता है। फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड, तीन प्राइज़ बापदादा देंगे। कितने टाइम में प्राइज़ देंगे? (दादी ने कहा मई तक) (बापदादा पंजाब की अचल बहन से पूछ रहे हैं? (६ मास में पूरा पुरुषार्थ रहेगा) टीचर्स बताओ ६

general मुरलीयाँ

मुरली न०- (२४)

19-8-68 ओम शान्तिः प्रात: क्लास

बच्चों को रोज-2 याद दिलाते है कि देही-अभिमानी बनो क्योंकि बुधी इधर उधर चली जाती है। अज्ञान काल में भी क्या वार्ता सुनते है तो भी बुधी भटकती रहती है। यहां पर भी भटकती है इसलिये ही रोज-2 कहते है कि देहीअभिमनी बनो। वो तो कहेंगे हम जो सुनाते है उनपर ध्यान दो। धारणा करो। शास्त्र जो सुनाते है वो भी ध्यान मे रखो। यहां पर तो बाप सभी आत्माओं को समझाते है कि तुम सभी स्टुडण्टस देही-अभिमानी होकर बैठे हो। शिव बाबा आते है पढ़ाने लिये। ऐसा कोई और कालेज नही होगा जहां पर समझेंगे कि शिव बाबा हमको पढ़ाने आते है। ऐसा स्कूल होना ही चाहिये पुरुषोत्तम संगम युग पर। स्टुडण्टस बैठे है और समझते है कि परमपिता परमात्मा हमको आते है पढ़ाते है। पहली-2 बात समझाते है कि तुमको पावन बनना है तो मामेकम याद करो। परन्तु माया बार-2 भुला देती है। इसलिये ही बाप खबरदार करते है। कोई को समझाना है तो भी पहले-2 यही बाते कि भगवान कौन है? भगवान जो पतित पावन दुःख हर्ता सुख कर्ता है। वो कहां है। उनको याद तो सब करते है। जब कोई भी आफते आता है तो कहते है हे भगवान रहम करो। किसीको बचाना होता है तो भी कहते है हे भगवान। ओ गाड फादर हमको दुःख से लिबरेट करो। दुःख तो सबको ही है। पक्का मालूम है कि सतयुग को सुखधाम और कलयुग को दुःखधाम कहा जाता है। तुम बच्चे जानते भी हो फिर भी माया भुला देती है। यह याद मे बिठाने की रस्म भी ड्रामा मेही है। क्योंकि बहुत है जो कि सारा दिन भर भी याद नही करते है। एक मिन्ट भी याद नही कर सकते है तो ही याद करने के लिये यहां पर बिठाया जाता है याद मे बैठने की युक्ति बताते है कि यह पक्का हो जावे कि बाप की याद से ही हम को सतोप्रधान बनना है। हम सतोप्रधान थे अब तमोप्रधान है। बाप ने तो फर्स्ट क्लास सच्ची युक्ति बताई है। पतित पावन तो एक ही है वो ही आकर युक्ति बताते है। यहां पर भी शान्तिः मे तभी बैठे हो जबकि बाप के साथ योग है। अगर बुधी का योग कहीं उधर ईधर लटक गया होगा तो शान्तिः आ ही नही सकते है। गोया कि अशान्तिः मे है। जितना समय इधर ऊधर बुधी का योग गया उतना ही समय निशफल गया। क्योंकि पाप तो कटे ही नही है। दुनियां यह भी नही जानती है कि पाप कैसे कटते है। यह बड़ी महिमा भरी बाते है। बाप ने कहा है कि मेरी याद मे बैठो। तो जब तक योग की तार जुटी हुई नही है तो तो तार जुट नही सकते है। तो इतना समय असफल किया। जरा भी बुधी इधर उधर गई वेस्ट हो गया2असफल हुआ। बाप का डोसेशन्स है नां। इससे भला क्या होगा? इससे तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान जल्दी नही बनोगे। फिर वो ही आदत पड जावेगी। यह होता रहता है। बाप कहते है कि आत्म का जो मूल घर है बाप कहते है कि आत्म का मन जो बार-2 बाहर भागता है उनको फिर याद मे लगाओ तो जन्म जन्म के पाप भस्म हो जावेंगे। इस जन्म के पापों को तो हर एक कोई जानता है। इस जन्म के पाप तो अपने हर कोई जानता है। कई कहते है कि हमको याद नही है। 3-4वर्ष से लेकर बातें सभी याद रहती है। शुरू से इतने पाप इकटे नही होते है। जितना पीछे होते जाते है दिन प्रदिन क्रिनमल आये हेसते जाती है त्रेता मे भी दो कलायें कम हो जाती है। चन्द्रमा की दो कलायें कितने मे ही खत्म === खत्म हो जाती है। रोज-2 कम होती है। 15 रोज मे कलायें कम हो जाती है। चन्द्रमा को लाह तो को भी 16 कला सूर्पण कि जाता है। सूर्य कोई नही कहते है। एक का ही मिसाल देते है। चन्द्रमा की तो है एक मास की बात। यह है फिर कल्प की बात। दिन प्रति दिन नीचे उतरते ही जाते है। फिर याद की यात्रा से ऊपर चढ़ सकते है। फिर तो कायदा ही नही है कि यादकरे और ऊपर चढ़ सकें। सतयुग के बाद तो फिर नीचे ही उतरना है। वहां भी याद करते तो नीचे उतरते ही नही। ड्रामा अनुसार उतरना ही है तो फिर याद भी नही करते है। उतरना भी जरूर है फिर याद करने का ऊपास बाप ही बताते है। जबकि ऊपर जाना है। संगम पर ही आकर बाप बताते है कि अब चढ़ती कला शुरू होती है। हमको तो फिर अपने सुखधाम मे जाना होता है। बाप कहते है कि अब सुखधाम मे जाना है तो मुझे याद करो तो तुम्हारी आत्म पावन बन जावेगी। रचता-

और रचना की आ॰ म॰ अ॰ को तो तुम जान ही गये हो। आगे तुम भी कहते थे कि परमात्मा सर्वव्यापी जो ही दुनियां कहती थी। अभी तुम ऐसे नहीं कहते हो। तुम दुनियां से निराले हो। वैकुण्ठ दुनियां के बिलकुल ही निराले हो। वैकुण्ठ था। अब नहीं है। कल्प की आयु बहुत लम्बी कर दी है। इसी कारण भूल गये हैं। अभी तुम बच्चों को तो वैकुण्ठ बहुतनजदीक दिखाई पड़ता है बाकी थोड़ा समय है। याद की यात्रा में कमी है इसलिये ही समझते हैं कि अभी समय है। याद की यात्रा जितनी होनी चाहिये उतनी नहीं है। तुम पैगाम पहुंचाते जाते हो ड्रामा के प्लान अनुसार। कोई को भी पैगाम नहीं देते हैं तो गोया सर्विस नहीं कर सकते हैं। सारी दुनियां में पैगाम तो पहुंचना ही है कि बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। गीता पढ़ने वाले जानते हैं कि एक ही गीता शास्त्र है जिसमें यह महावाक्य है। परन्तु उसमें तो कृष्ण भगवानोवाच लिख दिया है तो याद किसको करें? भल शिव की भक्ति करते हैं परन्तु यथार्थ ज्ञान नहीं है जो कि श्रीमत पर चलें। इस समय तुमको मिलती है ईश्वरीय मत। इसके पहले थी मानव मत। ईश्वरीय मत और मानव मत में रात-दिन का फर्क है। मानव मत कहती है कि ईश्वर सर्वव्यापी है। ईश्वर की मत कहती है कि नहीं बाप कहते हैं कि मैं आया हूं स्वर्ग की स्थापना करने तो जरूर यह नर्क है। यहां पर पांच विकार ही सबमें प्रवेश है। विकारी दुनियां है तो ही तो मैं आता हूं निरविकारी बनाने। सबमें पांच विकार प्रवेश है। जो ईश्वर के बने वो जिनके पास ईश्वर है उनमें तो विकार हो नहीं सकते हैं। ईश्वर को भी निर्विकारी ही कहेंगे। ईश्वर की जो पहली रचना है स्वर्ग उनको भी निर्विकारी ही कहेंगे। रावण को तो निर्विकारी नहीं कहेंगे। रावण का तो चित्र ही दस सिरों वाला दिखाते हैं। कब कोई कह नहीं सकते हैं कि रावण की सिष्टी भी कब निर्विकारी हो सकती है। अब है कलयुगी राज्य का रावण। सतयुग है राम राज्य। कोई विकार नहीं। हर साल [illegible] दुःखी है शरीर की कितने दुःख लगते हैं। समझा जाता है कि यह दुःखधाम है। इनको कोई भी सुखधाम नहीं कहेंगे। सुखधाम में तो शारीरिक दुःख भी नहीं होता है। यहां पर तो कितने हास्पिटल आदि भरे हुये हैं। इसको स्वर्ग कहना यह तो बड़ी भूल है। यह बाप तुम बच्चों को समझाते हैं। औरों को समझाने लिये। वो पढ़ाई कोई को समझाने लिये नहीं होती है। पढ़ाई से तो नौकरी मिली। यहां पर तो तुमको सभी को पैगाम देना है। सिर्फ एक बाप ही थोड़ी ही देंगे। जो बहुत होशियार है उनको टीचर कहा जाता है। जो कम होशियार है उनको स्टुडण्ट कहा जाता है। सबको पैगाम देना है। पूछना है कि भगवान को जानते हो? वो तो बाप है नाम रूपा। उनको ही परमपिता परमात्मा कहा जाता है। मूल है ही परमात्मा का परिचय देने का। क्योंकि कोई भी नहीं जानते हैं। ऊंच ते ऊंच बाप है। उनका कर्तव्य भी ऊंच है। सारी विश्व को पावन बनाने वाला है। वैराकर सारी विश्व पावन थी। नई दुनियां में जरूर भारत ही था। और कोई धर्म वाला कह नहीं सकेंगे कि हम नई दुनियां में आवेंगे। वो तो समझते हैं यह तो और से आगे कोई होकर गये हैं। क्राईस्ट भी कोई में आवेंगे तो जरूर उनके आगे भी कोई था नां। यह किसीको भी पता नहीं है कि नई दुनियां में यह राज्य कैसे स्थापन हुआ। बाप बैठ समझाते हैं कि मैं इस ब्रह्मा तन में प्रवेश करता हूं। यह भी कोई मानते नहीं हैं कि इस ब्रह्मा के तन में आते हैं। और ब्राह्मण तो जरूर चाहिये नां। ब्राह्मण कहां से आवेंगे। जरूर ब्रह्मा से ही आवेंगे। अच्छा ब्रह्मा का बाप कब सुना? कोई बता नहीं सकेंगे। ब्रह्मा तो गाया हुआ है। प्रजापिता भी है। जैसे निराकार शिव बाबा कहते हैं। उनका बाप बताओ। फिर साकार प्रजापिता ब्रह्मा का बाप बताओ? शिव बाबा तो रेडापीटड किया हुआ नहीं है। यह तो रेडापीटड किया हुआ है। कहेंगे कि इनको तो शिव ने रेडाप्ट किया है। विष्णु को शिव बाबा ने रेडाप्ट किया है ऐसा भी नहीं कहेंगे। यह तो तुम जानते हो ब्रह्मा ही तो फिर (ल-न) विष्णु बनते हैं। रेडापीटड तो हुआ ही नहीं। शंकर के लिये भी बताया है कि इनका तो कोई भी गति के ही नहीं। [illegible] कि तो ब्रह्मा की सदृश 84 का चक्र है। शंकर फिर कब

19-8-88 शंकर का कोई पैसे नहीं (२४)

से आया? उनकी रचना कहां है? बाप की तो रचना है। सब आत्माओं का बाप वो ही है। और ब्र. की रचना है यह सब मनुष्य। शंकर की रचना कहां है? शंकर से मनुष्यों की दुनियां नही रची जाती है। पिछाडी मे फिर गाली देते है। शंकर पार्वती पिछाडी फिदा हुआ। फिर बिच्छु-टिण्डन पैदा हुये यह कलंक लगा दिये है। क्या बिच्छु टण्डन पैदा किये वां आरेब खेवाली तो विनाश हो गया। जैसे और अनेक बाते बनाई है वैसे ही यह भी बात बनाई है। त्रिमूर्ती ब्रहमा भी हो नही सकता है। ब्रहमा सो विष्णु विष्णु सो ब्रहमा तो दो मूर्ती हो गया नां। यह बाते भी सिवाय बाप के कोई समझा नही सकते है। बाप ही आकर समझाते है। फिर भी बाप-2 भूल जाते है। नम्बरवार बुधियां है नां। जितनी बुधी उतनी ही टीचर की पढ़ाई धारन कर सकते है। यह है बेहद की पढ़ाई। पढ़ाई अनुसार ही फिर सम्बरवार पद पाते है। भल पढ़ाई एक ही है मनुष्य से देवता बनने की। परन्तु राजधानी है नां। यह भी बुधी मे आना चाहिये कि हम कौनसा पद पावेंगे है। राजा बनना तो बहुत मेहनत का काम है। राजाओंके पास तो फिर दास दासियां भी चाहिये। प्रिन्स-प्रिन्सेज की शादी होती है तो पार्चेचार अपनी ही दासियां दे देते है। क्योंके अगर वहां पर नई दासियां मिलेंगी तो उनसे माथा मारना पड़े। सरवलाने के लिये। इसलिये ही अन्नय दासियां दे देते है कि कोई भी तकलीफ वो फील नां करे। सतयुग मे तो भाव-सब्भाव होता ही नही है। दासियां ही अण-बण वाली होगी तो लडती रहेगी। यह बाते वहां होती नही है। घिसी-पिटी दासियां मिलती है। तो सतयुग मे भी ऐसे ही होना चाहिये। कौन दासियां ही बनने है वो भी समझ सकते है। ज्ञान से जिसे पिट नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार मिलते होगें। तो ऐसा तो नही पढ़ना चाहिये जो कि जन्मजन्मान्तर दास-दासी ही बनना पडे। पुरुषार्थ करना है ऊंच बनने का। तो सच्ची-2 शान्ति तो बाप को याद करने मे ही है। जो भी बुधी इधर उधर गई तो समय वेस्ट हो जावेगा। कमाई कम होगी। सतोप्रधान बन नही सकेंगें। यह भी [illegible] परन्तु बुधी मे बाप की याद ही रहे। अगर साथी हो तो भी झरमुई-झगंमुई नही करनी है। यह तो हर एक की दिल गवाही देती होगी। बाबा समझा देते है कि ऐसी अवस्था मे चक्र लगाओं। पादरी लोग जाते है एकदम शान्त में। तुम लोग भी ज्ञान की बाते ही तो सारा समय नही करेंगें। फिर जवान को शान्ति मे लाने के लिये शिव बाबा की याद की रेस करते रहो। जैसे खाने समय भी बाबा कहते है नां याद मे बैठ कर खाओं। अपना चार्ट देखो। बाबा अपना तो बताते है कि हम भूल जाते है। कोशिश करता हूं पुरा ही समय याद मे रहने की। बाबा को कहता हूं कि बाबा हम पुरा समय याद मे रहेंगें आप हमारी खासी बन्द कर देना। शुगर बन्द कर देना। अपने ही साथ जो मेहनत करता हूं वो बताता हूं। परन्तु मै तो खुद ही भूल जाता हूं फिर खासी वां शूगर कैसे होगी। जो-2 बाते बाबा साथ करता हूं वो सत्य-2 बताता हूं। बाप बच्चों को बता देते है बच्चे बाप को नही बताते है। लज्जा आती है। झाड़ू लगाऊं, खाना पकाऊं तो भी शिव बाबा की याद मे ही रह कर फिर उसमे भी ताकत आ जाती है। यह भी युक्ति है। इससे तुम्हारा ही कल्याण होगा। फिर तुम याद मे बैठेगे तो औरो को भी कशिश होगी। एक दो को कशिश तो होती है नां। जितना तुम जास्ती याद मे रहेंगें उतना ही सन्नाटा अच्छा हो जावेगा। एक दो का प्रभाव ड्रामा अनुसार पड़ता है। याद की यात्रा तो बहुत ही कल्याणकारी है। इसमे झूठ बोलने की दरकार ही नही। सच्चे बाप के बच्चे हो तो सच्चा बन कर चलना चाहिये बच्चो को तो सबकुछ मिलता है। विश्व की बादशाही मिलती है फिर हवा करके 10-20 साड़ियां आद क्यो इक करते हो? अगर इकठी करते ही रहेंगें तो मरते समय भी कपडे साडियां आद ही याद आवेंगें। इसलिये ही उनका मसाल भी देते है कि स्त्री ने कहा था कि लाठी भी छोड़ो। नही तो वो भी याद आवेगी। कुछ भी रहना नही चाहिये नही तो अपने लियेही मुसीबत लाते हो। बाप के पास बैठे हो बाप के पास आने पर वां लिखने पर बाबा शैक्शन कर देंगें। झूठ बोलने से तो सौणा पाप चढ़ जावेगा। शिव बाबा का तो भण्डारा सदैव भरा रहता है

17-8-68 ओम् शान्तिः रात्री क्लास

मूल बात है सबको बाप की पहचान मिले तो बाप से वर्सा लेने पुरुषार्थ करें। और बाप का वर्सा मिले तो सब दुःख दूर हो जावें।(बाम्बे मे जो सेमीनार हुआ था उसमे कुमारका उषा आद ने जो भाषण किया था वो टेप क्लास मे चल रही है)उषा ने ठीक बताया है।हमको पढ़ाने वाला कौन है वो भी ठीक ही रीती बताया है फिर कुमारका का काम था इस ही पुआईन्ट पर उठाना कि हमको पढ़ाने वाला शिव बाबा है।और यह हमारी ऐ आः है। चित्र ल-न और शिव का वहां पर ले गये थे। तो उस पर ही समझाना चाहिये थां।यह विश्व मे शान्तिः स्थापन हो रही है। बाप कहते है काम महा शत्रु है इस पर ही जीत पहनो तो जगत जीत बनोंगें। बाप की महिमा करनी चाहिये कि सर्व की सदगति करने वाला बाप है। हम सब पतित है।बाप कहते है कि मामस्कम् याद करो तो पाप भस्म हो जावेंगें।और सुखधाम चले जाओंगें।अभी है दुःखधाम। अपरमअपार दुःख है।सतयुग मे सुखधाम था।क्रिश्चयन्स भी कहते है 5000साल पहले सुखधाम था। फिर से वो स्थापन हो रहा है।उषा ने अच्छे पुआईन्ट पर लाया है। उसकी ही कुमारका उठाती थी। अच्छी रीती विस्तार से समझाना चाहिये नां। उषा ने तो ईशारा ठीक ही दिया है।यह हम सबआत्माओं का बाप है।इनको याद करने से पवित्र बन जावेंगें।यह बेहद के बाप की लाट्री है।हम ब्रः कुः कुः का जोर ही सारा पवित्रता पर है। अब पवित्र दुनियां स्थापन होनी है।हमको वो ही पढ़ाते है।कोई मनुष्य नही पढ़ाते है भगवान ने ही स्वर्ग की स्थापना की है।भारत सोने की चिडियां था। कोई भी दुःख नही था। अब तो अथाह दुःख है।ऐसे-2 समझाती तो किसको भी टच हो सकता था।परन्तु ड्रामा मे ही ऐसा नही होना था। वर्णन ही इन ल-न का करना है।यही राज्य अब फिर से स्थापन हो रहा है।हमारी यह पाण्डव सेना है। हमको श्रीमत देने वाला बाप है जिसेस ही हम श्रेष्ट बनते है। सर्विस का शौक होना चाहिये। परन्तु देह-अभिमानी से देही-[illegible] नही सकते है।देही-अभिमानी शान्त हो जावेंगें। वो हो ऐ आः तो बच्चों को है। समय लगता है। रात-दिन का फर्क रहता है। फर्स्ट-सेकिंण्ड थर्ड तो होते ही है नां। इस बेहद की पढ़ाई मे भी नम्बरवार है। समझाना चाहिये नां कि वो हमसे बहुत ऊंचे है। ऐसा ही हमको भी बनना है।राजयोग की तपस्या पर भी समझाया जा सकता है। तुम बच्चे तो रचता और रचना की आः मः अः को जानते हो। इसमे सिर्फ माताओं की ही बात नही है दोनो की जरूरत है। दोनो ही श्रीमत पर अपने जीवन को ऊंच बनाते है। पवित्र दुनियां की स्थापना हो रही है। इसमे तो मेल फीमले दोनो ही चाहिये नां।जानते हो कि हर बात 5000साल पहले भी हुई थी।सूरत का कोई भी ब्रकुः लिखे कि यह नई बात नही है।5000वर्ष पहले भी यह सब हुआ था। 5000वर्ष पहले मुअ राम राज्य था।फिर से स्थापन हो रहा है। वो तो दुनियां ही पवित्र होती है।अब है विकारी दुनियां। फिर सतयुगी पावन दुनियां कैसे बने सो तो बाप ही सुनाते है। ईश्वरिय मत ले रहे है। कलयुग मे तो है मनुष्य सतयुग मे है ही दे बताये। उनको तो मत की दरकार ही नही। आगे चल कर बच्चे ऐसे ही भाषण करेंगें जिनके कि सर्विस का शौक है। इसमे तो बहुत रायल चलना चाहिये। कल्प पहले जो बने थे वो पुरुषार्थ करते रहते है। बाप डायरेक्शन्स भी देते रहते है।गुड नाईट(19-8-68प्रातः का खासजोरदार पुआईन्ट——) किसीकी भी चोरी हो जाती है तो सब कुछ दे दिया जाता है।तुम बच्चो को बाप से राजाई आद मिलती है तो क्या कपडे आद नही मिलेंगें। सिर्फ फाल्टु खर्चा नही करना है। क्योकि अबलाये ही मदद करती है। स्वर्ग की स्थापना के काम में। उनके पैसे फिर यु ही बरबाद भी नही करने चाहिये। वो तुम्हारी परवरिश [illegible] है तो फिर तुम्हारा काम है उनकी परवरिश करना। नही तो फिर वो सौगा पाप होकर सिर पर चढ़ता है। बाप तो कहेंगें नां पुरुषार्थ करके ऊंच पद पाओं। रहम दिल भी बनो। पैगाम देते रहो। कि बाप कहते है कि मुझे याद करो तो पावन बनोंगें। अब नर्क है तो जरूर कभी स्वर्ग भी होगा नां।अब स्वर्ग मे जाने लिये बाप को याद करो। सभी को यही बाप को पैगाम देते रहो। बच्चो से बाप दादा की गुडमानिम

प्रातः क्लास 8-9-68 ओमशान्ति प्रतीक्षा शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बच्चे बैठे हुये हैं। इसको कहा जाता है याद की यात्रा। याद कहते हैं योग अक्षर काम में लाओ नहीं। बाप को याद करो। यह है आत्माओं का बाप, पतित पावन परमपिता। उस पतित पावन बाप को ही याद करना है। बाप कहते हैं देह के सभी धर्म छोड़ एक बाप की याद करो। कहते हैं ना आप मुये तो मर गई दुनिया। देह सहित देह के जो भी सम्बन्ध हैं, जो भी देखने में आते हैं उनको याद न करो। एक बाप को ही याद करो तो तुम्हारे पाप जल जायेंगे। तुम जन्म-जन्मान्तर के पापात्मायें हो ना। यह है ही पापात्माओं की दुनिया। सतयुग है पुण्यात्माओं की दुनिया। अभी पाप सभी कट कर खत्म कैसे जमा हो। बाप की याद से ही जमा होगा। आत्मा में मन बुद्धि है ना। तो आत्मा को बुद्धि से याद करना है। बाप कहते हैं तुम्हारे जो भी मित्र-सम्बन्धी आदि हैं उन सब को भूलो। वह सब एक दो को दुःख देने वाले हैं। एक तो विकारी कांटा बनते हैं जो काम कटारी चलाते हैं। दूसरा फिर पाप क्या करते हैं, बाप को कुले विल्ले ठिकरे-भित्तर में कह देते। जो बाप सर्व का सद्गति दाता है, बच्चों को बेहद का सुख देते हैं अर्थात स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। यह पाठशाला है ना। तुम आते ही हो पढ़ने। यह है तुम्हारी एमआब्जेक्ट। और कोई ऐसे कह न सके। तुम जानते हो अभी हमको पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बनना है। हम ही विश्व के मालिक थे। पूरे 5000 वर्ष हुये। देवी-देवतायें विश्व के मालिक थे ना। कितना ऊंच पद है। जरूर यह बाप ही बनायेंगे। बाप को ही परमात्मा भी कहते हैं। उनका असली नाम है शिव। फिर बहुत नाम रख दिये हैं जैसे बम्बई में बंबुल नाथ कहते हैं। अर्थात कांटों के जंगल को फूलों का बगीचा बनाने वाला। नहीं तो असली नाम उनका है ही 'शिव'। इनमें प्रवेश करते हैं तब भी नाम शिव ही है। तुमको इनको याद नहीं करना है। यह तो देहधारी है। तुमको याद करना है विदेही को। तुम्हारी आत्मा जो पतित बनी है उनको पावन बनाना है। कहते भी हैं महानआत्मा, पापआत्मा। महान परमात्मा नहीं कहते हैं। अपने को परमात्मा या ईश्वर कोई कह न सके। कहते ही हैं महात्मा। अर्थात पवित्र आत्मा। सन्यासी सन्यास करते हैं इसीलिए पवित्र आत्मा हैं। बाप ने समझाया है वह भी पुनर्जन्म सब लेते हैं। देहधारियों को पुनर्जन्म जरूर लेना ही है। विष्णु से जन्म है फिर जब बड़े बालग बन जाते हैं तो सन्यास कर लेते हैं। देवतायें तो ऐसे नहीं करते हैं। वह तो स्वर पवित्र हैं। उनको तो गृहस्थ घर में जन्म लेना पड़े। उनको कहा ही जाता है बेद के सन्यासी। महान-आत्मा। न कि महान परमात्मा। बाप ने समझाया है जो अपने को परमात्मा कहलाते अपने को पूजा कराते हैं वह हिरण्यकशिपु जैसे दैत्य हैं। यह है आसुरी सम्प्रदाय। अभी तुमको आसुरी से दैवी सम्प्रदाय बनाते हैं। दैवीगुण धारण करने से ही दैवी सम्प्रदाय बनेंगे। आसुरी गुणों वाला है आसुरी सम्प्रदाय। दैवी सम्प्रदाय रहते हैं सतयुग में। आसुरी सम्प्रदाय रहते हैं कलियुग में। अभी है संगम युग। अभी तुमको बाप मिला है, कहते हैं अब फिर तुमको दैवी सम्प्रदाय बनना है जरूर। तुम यहां आये ही हो दैवी सम्प्रदाय बनने लिये। दैवी सम्प्रदाय है अर्थात सुख है। वह है सुख की दुनिया, कलियुग है दुःख की दुनिया। पहला नम्बर दुःख है एक दो को काम कटारी चलाना। काम कटारी से कोम करना। इस आसुरी दुनिया को कहा ही जाता है वेस्ट-पार। हिंसा करते हैं ना। देवतायें तो हैं अहिंसक। हिंसक बनते हैं तो बाप को भूल जाते हैं। बाप कहते हैं मीठे रूहानी बच्चों बाप को याद करो। तुम्हारे जो भी पुराने हैं वह सभी देहधारी हैं। अभी तुम आत्माओं को बाप परमात्मा को याद करना है। वह बाप है परम सुख देने वाला, दुःख हर्ता सुखकर्ता। सुख तब मिलेंगे जब तुम पुण्यात्मा बनेंगे। 84 जन्मों के बाद ही तुम पापात्मा बन जाते हो। अभी तुम जमा करते हो, याद की रकम करते हो योगबल से। इस याद की यात्रा से ही तुम विश्व के मालिक बनते हो। तुम विश्व के मालिक तो थे ना। फिर वह कहां गये। यह भी बाप ही बताते हैं तुमने 84 जन्म लिये हैं सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी, वैश्यवंशी, शूद्रवंशी। कहते भी हैं भक्त को फल भगवान देते हैं। भगवान कोई किसी को नहीं कहा जाता। भगवान् तो है ही निराकार शिव। उनको शिवजयन्ति शिवरात्रि भी मनाते हैं तब जरूर आते हैं ना। परन्तु कहते हैं मैं तुम्हारे शरीर में

जन्म नहीं लेता हूँ। मुझे शरीर का लोन लेना पड़ता है। मुझे अपना शरीर नहीं है। अगर होता तो उनका नाम होता। ब्रह्मा नाम तो इनका अपना है ना। इन्होंने संन्यास किया है तब इनका नाम ब्रह्मा रखा है। तुम भी ब्रह्मा-कुमार-कुमारियां। नहीं तो ब्रह्मा कहां से आया। ब्रह्मा बच्चा= बच्चा? क्योंकि ब्रह्मा भी प्रजापति है ना। क्रियेटर तो एक ही है। ब्रह्मा बच्चा शिव। शिव बाबा अपने बच्चे में प्रवेश कर इन द्वारा तुमको ज्ञान देते हैं। ब्र०कु० शि० भी इनके बच्चे हैं। निराकार बाप के सभी बच्चे निराकार आत्मायें। जो फिर यहां शरीर धारण कर पार्ट बजाते हैं। बाप कहते हैं मैं आता हूं पतितों को पावन बनाने। मैं इस शरीर का लोन लेता हूं। गीता भगवानुवाच है ना। कृष्ण को भगवान नहीं कह सकते। भगवान तो एक ही है। कृष्ण की महिमा ही अलग है। उनको कहा जाता है सर्वगुण सम्पन्न। 16 कला सम्पूर्ण 100 परसेन्ट पुरुषोत्तम अहिंसा परमोधर्म वाला पहला नम्बर का देवता। राधे कृष्ण है जो स्वयंवर याद ल०ना० बनते हैं। परन्तु यह कोई भी नहीं जानते हैं। राधे कृष्ण का किसको भी पता नहीं है। वह फिर कहां चले गये। राधे कृष्ण ही स्वयंवर याद फिर ल०ना० बनते हैं। दोनों अलग2 महाराजाओं के हैं। वहां अपवित्रता का नाम नहीं। क्योंकि 5 विकारों रूपी रावण ही नहीं। है ही रामराज्य। इनको कहा जाता है रावण राज्य।

अभी बाप आत्माओं को कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कटजायेंगे। तुम सतोप्रधान थे, अभी तमोप्रधान हो। घाटा पड़ा है। फिर जमा करना है। भगवान को भी व्यापारी कहा जाता है। कोई दिवाला उनसे व्यापार करे। जादूगर भी उनको कहते हैं, कमाल करते हैं जो सारी दुनिया की सदगति कर देते हैं। सभी मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं। जादू का खेल है ना। मनुष्य मनुष्य को दे न सके। तुम 63 जन्म भक्ति करते आये हो। कोई ने सदगति को पाया है ? कोई है जो सदगति दे? हो नहीं सकता। एक भी वापिस जा नहीं सकता। वेहद का बाप ही आकर सभी को वापस ले जाते हैं। कलियुग में अनेक धर्म हैं। सभी तो तुम थोड़े ही सब्य करते हो। सभी सभी आत्मायें मुक्तिधाम में चली जाती हैं। तुम जाते हो जीवन मुक्ति धाम। बाकी सभी मुक्ति में। यह चक्र फिरता रहता है। अभी तुम आत्माओं को दर्शन हुआ है इस सृष्टि चक्र का। रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का। और कोई भी इस ज्ञान को नहीं जानते हैं। तुम ही इस ज्ञान से नर से नारा० बनते हो। देवताओं की राजधानी स्थापन हो गई फिर है तुमको ज्ञान की दरकार नहीं रहती। आधा कल्प ज्ञान आधा कल्प है भक्ति। भक्तों को भगवान ने पता दिया है आधा कल्प का सुख का फिर रावण-राज्य में दुःख शुरू होता है। आस्ते2 सीढ़ी उतरते हैं। तुम सतयुग में हो तो भी एक दिन जो बीता सीढ़ी नीचे उतरनी ही होता है। तुम 16 कला सम्पूर्ण बनते हो। फिर त्रेता में दो कला कम हो जाती है। सीढ़ी उतरते ही रहते हैं। सेकण्ड व सेकण्ड टिक2 होतीजाती है। सेकण्ड, मिनट, घंटे, दिन, वर्ष बीतते2 इस जगह आकर पहुंचे हो। कहां भी तो रेगे हो ना घोड़ायें बीतती जायेंगी। हम सीढ़ी चढ़ते हैं फट मेरे भाग्य सर्व का भला। फिर सीढ़ी उतरते हैं जूं कि बाप कहते हैं मैं सभी को सदगति करने वाला हूं। मनुष्य मनुष्य को गति-सदगति कर न सके। क्योंकि वह विष से पैदा होते हैं। पतित हैं। यहां तो पतित कोई होता ही नहीं। वास्तव में कृष्ण को ही सच्चा महात्मा कह सकते हैं। यह महात्मा लोग फिर भी विष से जन्म लेते हैं पीछे सन्यास करते हैं। वह तो है देवता। देवतायें तो सदैव पावन हैं। उनमें कोई विकार नहीं होता। उनको ही कहा जाता है निर्विकारी दुनिया। इनको कहा जाता है विकारी दुनिया। नो प्योरिटी। चलन कितनी खराब है। देवताओं के चलन तो बड़े ही अच्छे होते हैं। सभी उनको नमते आये हैं। सिक्ख उनकी जो अच्छी है तब तो अपोजिट मनुष्य उन पर फिदा देवताओं पे आये गाते हैं। अभी तो भारत में सभी कैरेक्टर खराब हैं। लड़ना-झगड़ना क्या2 लगा पड़ा है। बड़ा हंगामा है। अभी तो रहने की जगह भी नहीं। चाहते हैं मनुष्य कम हों। परन्तु यह तो बाप का काम है। सतयुग में बहुत ही थोड़े मनुष्य होते हैं। इतने सभी आत्मों की इति= होकर को जाती। बस सभी आत्मायें चली जाती हैं। अपने स्वीटहोम। सजा तो नम्बरवार भोगते हैं। जो पूरा पुरुषार्थ कर विजय माला का दाना बनते हैं वह सजाओं से छूट जाते हैं।

माला एक की तो नहीं होता है ना। जिसने उन्हों को ऐसा बनाया है वह एक है। फिर है मेरा प्रवृति मार्ग है ना। तो जोड़ियों की माला है। सिंगल की माला नहीं होता। सन्यासियों की माला होती नहीं। वह है ही निवृत्ति मार्ग वाले। वह प्रवृति मार्ग वालों को ज्ञान दे न सके। पवित्र बनने लिये। उनका है ही हद का सन्यास। वह है ही हठयोग। यह है राजयोग। राजाई प्राप्त करने लिये तुमको बाप सिखलाते हैं। हर 5000 वर्ष बाद बाप आते हैं। आधा कल्प तुम राज्य करते हो सुख में। फिर रावण-राज्य होता है तो तुम आस्ते2 दुःखी होते जाते हो। इनको कहा ही जाता है सुख दुःख का खेल। बाप आकर पाण्डवों की जीत बहनाते हैं। अभी तुम हो पण्डे घर जाने का यात्रा कराते हो। वह यात्रा तो मनुष्य जन्म-जन्मान्तर करते आये हैं। अभी तुम्हारी यात्रा है घर जाने की। बाप आकर सभी को मुक्ति जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं। तुम जीवनमुक्ति में जाते हो बाकी सभी मुक्ति में चले जाते हैं। हाहाकार के बाद फिर जयजयकार होंगी। रक्त की नदियां बहकर फिर घी की नदियां बहती हैं। अभी है ही कलियुग का अन्त। आफतें तो बहुत ही आनी हैं। तुम फिर उस समय यादकी यात्रा में रह नहीं सकेंगे। क्योंकि हंगामा बहुत हो जावेगा। इसलिए बाप कहते हैं अभी याद की यात्रा को बढ़ाते रहो तो पाप भस्म हो जावे। और फिर जमा भी करो। सतोप्रधान तो बनो। सतोप्रधान बनने की युक्ति पतितपावन परमपिता परमात्मा ही आकर बताते हैं। बाप कहते हैं मैं हर कल्प के पुरुषोत्तम संगम युग पर आता हूं। यह तो बहुत छोटा तुम ब्राह्मणों का युग है। ब्राह्मणों की निशानी चोटी होती है। ब्राह्मण देवता... यह चक्र फिरता ही रहता है। ब्राह्मणों का बहुत छोटा कुल होता है। 50-60 वर्ष में बाप आकर तुमको पढ़ाते हैं। तुम बच्चे भी हो, स्टुडन्ट भी हो, फ्लोअर्स भी हो। एक के ही। ऐसा कोई मनुष्य होता नहीं जो बाप भी हो शिक्षा देने वाला टीचर भी हो। सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान देता हो फिर साथ भी ले जावे। ऐसा कोई मनुष्य हो न सके। यह बातें अभी तुम समझते हो। सतयुग में भी पहले2 तो बहुत छोटा झाड़ होता है। बाकी सभी शान्तिधाम में चले जावेंगे। बाप को ही कहा जाता है सर्व की सदगति दाता। बाप को बुलाते भी हैं कि हे पतितपावन आओ। और दूसरे तरफ फिर कहते हैं परमात्मा सर्वव्यापी है। ठिक्कर भितर में है। बेहद के बाप को अपकार करते हैं ना। उनको सर्वव्यापी कहना, कच्छ अवतार-मच्छअवतार कह देते। 84 लाख जन्म तो छोड़ो। परन्तु उन में भी जाकर कण2 में भितर2 में कह देते। उनको तो कोई हिसाब ही न हो सके। यह तो पाप करते हैं ना। बाप जो विश्व का मालिक बनाते हैं उनकी ग्लानी करते हैं। उनको पत्थर भितर में कह देते। तब बाप कहते हैं यदा यदा... भारत में ही धर्म की ग्लानी होती है। बाप को भितर ठिक्कर में डाल दिया है तो तुम्हारी भी बुधि पत्थर हो गई है। मुझे सभी गाली देते हैं। यह है रावण का संगदोष। सत का संग तारे, कुसंग बोरे। रावण राज्य शुरू होता है तो गिरने लग पड़ते हो। बाप आकर तुम्हारी चढ़ती कला करते हैं। बाप आकर मनुष्यों को देवता बनाते हैं। तो सर्व का भला हो जाता है। अभी तो सभी यहां हैं। बाकी भी जो रहे हुये हैं वह आते रहते हैं। जब तक निराकारी दुनिया से सब आत्माएं आ जावेंगी, तब तक तुम इम्तहान में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पास हो जावेंगे। इनको कहा ही जाता है रूहानी कालेज। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को पढ़ाने आते हैं। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। रावण राज्य आया तो फिर शरीर छोड़ कोई अपवित्र राजा बने। और पवित्र देवताओं के माथा झुकने लगे। आत्मा ही पतित अथवा पावन बनती है। आत्मा पतित है तो शरीर भी पतित मिलता है। सच्चा सोना में खाद पड़ती है तो खाद का जेवर हो जाता है। अभी आत्मा से खाद निकले कैसे। योगाग्नि चाहिए ना। उन से ही तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। चांदी तांबा लोहा पड़ गई है यह है खाद। गोल्डेन एज से आयरन एज में आगये। वह खाद निकले कैसे। यह है योगाग्नि। ज्ञान चिक्षा पर बैठते हो। आगे थे काम चिक्षा पर। बाप ज्ञानचिक्षा पर बिठाते हैं। सिवाय ज्ञान सागर बाप के और कोई ज्ञानचिक्षा पर बिठा न सके। मनुष्य भक्ति में अन्धश्रधा से कितनी पूजा आदि करते हैं। किसको भी जानते नहीं। अभी तुम सभी को ज्ञान गये हो। तुम सो देवता बनते हो फिर पूजा की बात ही खत्म हो जाती है। जब रावण राज्य शुरू होता है तो भक्ति शुरू होती है। तुमको कहते हैं—

तुम शास्त्रों को नहीं मानते हो। भोले और हम तो सब से ज्यादा शास्त्र पढ़े हैं। सब से ज्यादा भक्ति की है। पहले2 शिव की भक्ति की। फिर सभी को करते आये। जिसकी शुरू में पूजा करते थे वही अभी आया है भक्ति का फल देने। जिन्होंने शुरू से लेकर पूरी भक्ति की है वही फिर ज्ञान उठायेंगे। तो नब्ज देख सकते हो पुराने भक्त वा बीच का है या लास्ट का भक्त है। पहले2 भक्ति तुमने शुरू की है। तो जरूर ज्ञान भी पहले2 तुम ही लेंगे। जो सतयुग त्रेता में देवी देवतायें थे वही फिर अभी बनेंगे। तुमही स्वर्ग में थे। अभी नर्क में हो। तुम ने ही सबसे ज्यादा जन्म लिये हैं। इसलामी वोयो आदम कम जन्म लेंगे। हिसाब है ना। सभी तो 84 जन्म नहीं लेंगे। मनुष्य तो कितना झूठ बोलते हैं। यह झूठ कहां से आई? भक्ति मार्ग के शास्त्रों से। मेरे हाथों में तो कोई शास्त्र है नहीं। वह है ही ज्ञान सागर, मनुष्य सृष्टि का बीज रूप। वह यहां बुद्धि को पाता रहता है। तुम जानते हो वह है वृक्षपति। वह तुमको पढ़ा रहे हैं। वह है ज्ञान का सागर शान्ति का सागर। ल0ना0 को महिमा अलग है। इनको सर्व गुण सम्पन्न ... कहा जाता है। इनमें कोई ज्ञान नहीं है। ज्ञान से यह बने हैं। फिर जब 84 का चक्र पूरा हो तब ज्ञान लेते। इस समय सभी काम चिता पर बैठ काले बन पड़े हैं। पावन बन फिर पतित बन पड़ते। गुरूनानक ने भी कहा है ना अंतिम चोर हरामखोर ... बाप कहते हैं सच्चे बाप को याद करो। जप साहब को तो पढ़ा लेते। साहब तो सदैव सुखधाम का मालिक बना देंगे। मामेकं याद करो तो विश्व का मालिक बनेंगे। दुःख हर्ता सुख कर्ता भी वह एक है ना। तुम जानते हो हम बेहद के सुख का वरसा लेते हैं फिर दुःख खत्म हो जावेगा। बाकी थोड़ा समय है। यह वही समय है जिसका जिक्र शास्त्रों में भी है। (मुसलों की बात) बाप कहते हैं यह हीरे हैं झूठी दुनिया। सच्च की रती नहीं। गीता को भी झूठा कर दो। पहले2 झूठ बाप कहते हैं शिवभगवानुवाच, वह कहते कृष्णभगवानुवाच। अब मैं बाप वह बच्चा। मैंने बायोग्राफी में बच्चे का नाम डाल दिया है। इस भूल के कारण ही भारत कंगाल बन गया है। गीता पढ़ते2 ब्र नीचे ही गिरते जाते हैं। फिर गालियां भी देते हैं कि ठिक्कर भित्तर में है। कण2 में है। पहले तो कहते थे युगे2 अवतार लेते हैं। फिर 24 अवतार। कहां-कहां अवतार परशुराम अवतार अभी तो कितने तमोप्रधान बन गये हैं। इसलिए बाप आकर ऐसा पढ़ा देते हैं। तुम मुझे भी गालियां दे कितना अपकार करते हो। फिर तुम मुझे गालियां देंगे। मैं आकर उपकार करूंगा। यह ड्रामा बना हुआ है। उनको मालूम नहीं है। इनकी आयु ही 5000 वर्ष है। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। यह पढ़ाई है। एम आब्जेक्ट ही है यह बनना। सत्य ना0 की कथा सुनते हैं ना। यह है नर से ना0 बनने की कथा। तुम सच्च2 नर से ना0 बनते हो। बाकी वह तो है भक्ति मार्ग की झूठी कथायें। शास्त्र पढ़ते2 आकर इस हालत में पहुंचे हैं। वहां तो शास्त्र होते ही नहीं। भक्ति का नाम निशान नहीं। आधा कल्प है ज्ञान दिन, आधा कल्प है भक्ति रात। बहुत कर के तुमको कहते हैं ब्रह्मा को क्यों बिठाया है। ओ भगवानुवाच में उन में प्रवेश करता हूं वह बहुत जन्मों के अन्त वाला है। पूरे 84 जन्म लिये हैं। इनको ही पहले जन्म में जाना है। भगवान तो मनुष्य को क्या देवताओं को भी नहीं कह जाता। घोर अंधियारे में मनुष्य कितना है। बाप आयाहुआ है संगम पर और वह लोग समझते हैं कलियुग अभी 40 हजार वर्ष पड़े हैं। तब बाप कहते हैं कौरव कांग्रेस कुम्भ करण के नींद में सोये पड़े हैं। यहां बाप आ गया है। कल्प पहले भी आया था। अज्ञान की कुम्भ करण के नींद में ही खत्म हो जावेंगे। बेहद के बाप का निश्चय हुआ तो वरसे के भी हकदार होंगे। परन्तु माया हरा देती है। युध है ना। तुम याद करते हो माया भूला देती है। बाप को भूलने से ही पाप हो जाते हैं। नीचे ऊपर होते रहते हैं। क्रिमनल दृष्टि न हो। सतोप्रधान रहो। भाई2 समझे। यह है मेहनत। कोई भी पाप न करना है। मेहनत बिगर विश्व की बादशाही मिलेगी कैसे। यह गुप्त मेहनत है। भल गृहस्थ व्यवहार में रहो परन्तु कमल फूल समान पवित्र रहो। फिर मुझे याद करेंगे तो विकर्माजीत के पाप कट जायेंगे। इसको योगबल कहा जाता है। योग से तुम विश्व के मालिक बनते हो। दूसरों से लेकर का मालिक बन न सको। बाकी सोच से अपना ही विनाश करते हैं। वह भी कहते हैं हमको कोई प्रेम से खिलाये तो हम अपने मौत के लिए बनाते हैं। यह भी ड्रामा में पार्ट है। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग।

(२६)

13.9.87 प्रातः क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-इस दुख के घाट पर बैठे शान्तिधाम और सुखधाम को याद करो, इस दुखधाम को भूल जाओ, यहाँ बुद्धि नहीं भटकनी चाहिए"

प्रश्नः-अन्तिम प्रत्यक्षता के समय की सीन क्या होगी? उत्तरः-एक ओर विनाश की अग्नि लगेगी दूसरी ओर अखबारों द्वारा चारों ओर बाप का सन्देश पहुँचेगा कि भगवानुवाच-मामेकं याद करो तो तुम्हारे पाप कटें। सब धर्मों में सन्देश अखबारों द्वारा जायेगा। सबके अन्दर बाप की याद होगी, मुख से निकलेगा अहो प्रभु तेरी लीला... बाप भी वापस चला जायेगा।

प्रश्नः-तुम्हारे पुरूषार्थ का आधार क्या है? उत्तरः-निश्चय। तुम्हे निश्चय है बाप नई दुनिया की सौगात लाये हैं, इस पुरानी दुनिया का विनाश होना ही है। इसी निश्चय से तुम मु०खड़े हो।

यह आफ़ साइलेन्स और टावर आफ़ सुख। तुम बच्चे यहाँ बैठे हो तो तुम्हारी बुद्धि घर में आनी चाहिए। वह शान्ति का टावर, ऊंचे ते ऊंचे का टावर कहा जाता है। तुम शान्ति के टावर हो। घर में जाने लिए तुम पुरूषार्थ कर रहे हो। कैसे जाते हो? जो टावर में रहने वाला बाप है वह शिक्षा देते हैं कि मुझे याद करो तो शान्ति के टावर में आ जायेंगे। इसको घर भी कहा जाता है, शान्तिधाम भी कहा जाता है। यह बातें समझाई जाती है। अपने शान्तिधाम, सुखधाम में रहो। न रह सकते हो तो गोया जंगल के काटे हो। इसलिए दुख भासता है। अपने को शान्तिधाम का निवासी समझो। अपने घर को याद करना है ना। भूलना नहीं है। घर है ही बाप का। यह है ही दुख का घाट। यहाँ बैठे भी जिनको बाहर की बातें याद आती हैं तो ऐसे नहीं कहेंगे कि इनको अपना घर याद है। इसलिए बाप रोज़2 शिक्षा देते रहते हैं-बच्चे घड़ी2 शान्तिधाम को याद करो। सुखधाम को याद करो। गीता में भी बाप के महावाक्य हैं कि मुझे याद करो। भगवान क्या बनायेंगे? स्वर्ग का मालिक बनायेंगे और क्या। जब स्वर्ग का मालिक बन बैठे हो तो घर के लिए स्वर्ग के लिए जो बाप श्रीमत देते हैं वह सारी दुनिया से न्यारी है। कितने ढेर के ढेर गुरू हैं, बाप ने समझाया है कि कोई भी धर्म स्थापक को गुरू नहीं कहा जाता। सद्गति के लिए एक सद्गुरू के सिवाए दूसरा कोई हो नहीं सकता। सब आत्मायें निर्वाणधाम वानप्रस्थ ले जाऊं। परन्तु एक भी गुरू वापिस ले जाने वाला है नहीं। कोई भी निर्वाणधाम में जाते नहीं। वाणी से परे अर्थात् घर। वानप्रस्थ का अर्थ न गुरू लोग जानते हैं फालोअर्स ही जानते हैं। तो बच्चों को कितना समझाया जाता है। यह चित्र है सतयुग का और वह चित्र है त्रेता का। उन्हों को भगवान नहीं कहा जाता। लक्ष्मी नारायण को भी भगवान भगवती नहीं कहा जाता। आदि सनातन है ही देवी देवता धर्म। सिवाए देवी देवता धर्म के कोई भी स्थाई पवित्र होते नहीं। 2। जन्म पवित्र सिर्फ एक ही धर्म रहता है। फिर अपवित्रता2 अवस्था कम होती जाती है। त्रेता में दो कला कम तो सुख भी कम हो जाता है। उसको कहा जाता है त्रेता युग। 14 कला। अभी तुमको बाप का परिचय है और सृष्टि चक्र का ज्ञान है। इसको ही तुम्हें याद करना है। परन्तु याद नहीं करते हो। कहाँ बुद्धि जाती रहती है। अच्छा और कुछ भी न समझ सको यह तो बुद्धि में याद रखो, आस्तिक बनकर बाप और रचना के आदि मध्य अन्त को तो जानते हो ना। उस झाड़ का आदि मध्य अन्त नहीं कहा जाता है। इस झाड़ का आदि मध्य अन्त है। क्योंकि मध्य में रावण राज्य शुरू हो जाता है। कांटा बनना शुरू होता है। बगीचा जंगल बनना शुरू होता है। इस समय सारे झाड़ की जड़जड़ीभूत अवस्था हो गई है। सारा झाड़ सूखकर तमोप्रधान हो गया है। सारा सूखा हुआ झाड़ है फिर कलम लगाना पड़े। इसका कलम लगता है। कलम न लगे तो प्रलय हो जाए। प्रलय अर्थात् सारी जलमई नहीं होती है। भारत रह जाता है। परन्तु जलमई नाम तो है ना। मीठे2 बच्चे जानते हैं कि चारों ओर ही जलमई हो जाती है। भारत सिर्फ रह जाता है। जैसे वीर। बाढ़। चढ़ती है फिर उतरती भी तो है ना। तो अभी बहुत भारी वीर चढ़नी है। मनुष्य कहते भी हैं कि ब्रह्माकुमारियां तो सारा दिन मौत ही कहती रहती। बस मौत आने वाला है, मौत ही मौत कहती रहती है। तो समझते हैं कि यह तो अशुभ बोलती हैं। बोलो नहीं, हम कोई विनाश के लिए नहीं कहते हैं, हम तो कहते हैं पवित्रता सुख शान्ति का धर्म स्थापन हो रहा है। विनाश न हो तो शान्ति कैसे होगी। गुप्त वेश में शान्तिधाम सुखधाम की स्थापना हो रही है। यह तो हम शुभ बोलते हैं। अशुभ थोड़ेही बोलते हैं। तुम भी बाप को कहते हो ना हे पतित पावन आओ, हमको पावन बनाकर घर ले चलो। तुम

खुद कहते हो ना कि हमको ले चलो। हम भी शुभ बोलते हैं तुम भी शुभ बोलते हो। तुम कहते हो हमको पावन बनाकर इस दुखधाम की दुनिया से शान्तिधाम में ले चलो तो यह शुभ बोलते हो ना। कहते हो आओ माना पतितों का विनाश करो। पावन की स्थापना करो। मांगते हो ना आकर विश्व में शान्ति स्थापन करो। शान्ति तो सतयुग में ही होती है। हो तो गुप्तवेश में शान्ति स्थापन हो रही है। जब तक अर्थ न समझाओ तब तक समझ न सकें। सिवाए बाप के मौत तो कोई दे न सके। बाप को कालों का काल कहा जाता है। सबको मौत देते हैं। कितने ढेर के ढेर को मौत देते हैं। सतयुग में कितने थोड़े मनुष्य होंगे। बाकी सबको मौत मिल जाता है। बुलाते ही हो कि पावन दुनिया में ले चलो। तो पावन दुनिया जरूर नई ही होगी। यह थोड़ेही होगी। पुरानी दुनिया में फिर पावन कैसे रहेंगे। मनुष्य तो कुछ भी अर्थ नहीं समझते पावन दुनिया और पतित दुनिया का भी अर्थ नहीं समझते। पावन दुनिया में बहुत थोड़े मनुष्य रहते हैं। शान्ति रहती है। यह बातें समझने और समझाने में कितना सहज है। परन्तु बुद्धि में बैठता ही नहीं, क्योंकि समय ही नहीं है, बुद्धि में बैठने का। नहीं बैठने का है, कटोचित नहीं बैठने का है। कहा भी जाता है ना कुम्भकरण की नींद में सोये पड़े हैं। यह नहीं जागेंगे। नहीं जागेंगे। यह ड्रामा बड़ा विचित्र है। तो यह सारा चक्र बुद्धि में फिरना चाहिए। बाप आकर सारा ज्ञान देते हैं, उनको कहते ही हैं नालेजफुल ज्ञान का सागर। ज्ञान का सागर एक ही बाप है। तुम जानते हो पानी के सागर कितने हैं। जितने नाम हैं उतने सागर हैं। वा सागर एक ही है, यह तो अलग2 पार्टीशन कर नाम रख दिये हैं। बाकी सागर तो एक ही है ना। वास्कोडिगामा भी सारा चक्र लगाकर फिर वहाँ ही आकर खड़ा हो गया। तो सागर एक ही है। बीच2 में टुकड़ा2 कर अलग2 बना दिया है। धरनी भी सारी एक ही है। परन्तु टुकडा2 कर दी है। तुम्हारा राज्य होता है तो धरनी भी एक ही होती है, राज्य भी एक होता है, नो टुकड़ा। बाप आकर राज्य देते हैं। सारे सागर पर, सारी धरनी पर, सारे आसमान पर तुम्हारा राज्य होता है। मुक्ति में तो सब जायेंगे, बाकी जीवनमुक्ति में जाना कोई मासी का घर थोड़ेही है। वह तो कामन है। सब का पिस लौटेंगे। जहाँ से आये हैं फिर वहाँ जायेंगे जरूर। बाकी नई दुनिया में सब थोड़ेही आयेंगे। तुम्हारा ही राज्य है। कोई2 तो इतना देरी से आते हैं जो पुरानी दुनिया शुरू होने से थोड़े ही पहले यानी दो चार सौ वर्ष पहले आते हैं। वह क्या हुआ। जो अच्छी रीति नहीं पढ़ेंगे तो त्रेता में भी पिछाड़ी का थोड़ा समय रहेंगे। 16कला तो कब बन नहीं सकती। 14कला के भी पिछाड़ी में आयेंगे। उनको सामने दुख की दुनिया देखने में आयेगी। कांटो की दुनिया के नजदीक आ जायेंगे। वहाँ कोई यह मालूम नहीं पड़ता है, सारी नालेज अभी है जो बुद्धि में धारण करनी होती है। इस समय मनुष्यों के पास पैसे देखो कितने होंगे। कितने महल बनते रहते। कितनी ऊँची2 माड़िया बनाते रहते। समझते हैं सतयुग से भी भारत अभी ऊँच है। अभी ही 18-20 मंजिल बनाते रहते तो अन्त में कितनी मंजिल बनायेंगे। दिनप्रतिदिन मंजिलें चढ़ाते रहते हैं। सतयुग त्रेता में तो यह मंजिलें होती नहीं। द्वापर में भी नहीं होती यह तो कलियुग में जब आकर बहुत मनुष्य हो जाते हैं तो मंजिले बनाते हैं। क्योंकि मनुष्य बहुत हो गये हैं। तो वे जावें कहाँ, धन्धाधोरी बहुत है तो बड़े2 मकान भी बनाते रहते हैं। शोभा के लिए। जंगल से मंगल होता जाता है। कितने अच्छे2 मकान बनते रहते हैं। जमीन लेते रहते हैं। बाम्बे पहले क्या थी। 80-90 वर्ष में देखो क्या हो गई है। पहले तो कितने थोड़े मनुष्य थे अभी तो देखो कितने मनुष्य हो गये हैं। समुद्र को सुखाया है। पानी जैसे कमती होता जाता है। मनुष्य वृद्धि को पाते जाते तो पानी कहाँ से आयेगा। पानी खर्च होता जाता है। समुद्र मिटता जायेगा। आपेही नीचे होता जाता। धरती छोड़ते हैं तो मकान बना देते हैं। कराची में देखा है ना- किलिफ्टन के भी पार समुद्र का पानी चला जाता है फिर पानी चढ़ जायेगा तो कराची का तो बहुत हिस्सा, बम्बई का भी बहुत हिस्सा पानी में चला जायेगा। तो और सभी खण्ड खत्म हो जायेंगे। आफतें आने वाली हैं इसलिए बाप कहते हैं जल्दी2 तैयार होते रहो। जैसे शमशान में जब आग जलकर खत्म होती है तब लौटते हैं। बाप भी विनाश के लिए आये हैं तो आये पर थोड़ेही जायेंगे। आग लगकर जब पूरी होगी तब चले जायेंगे। फिर बैठकर क्या करेंगे। आग बुझेगी नहीं। सभी चले जायेंगे, सबको साथ ले जायेंगे। होना तो जरूर है। समझते भी सब हैं लेकिन समय का गमोड़ा बहुत बड़ा लगा दिया है। बच्चों को समझाना भी

गीता पर है, यह गीता एपीसोड है ना। जिसमें देवी देवता धर्म की स्थापना हो रही है। वहाँ एक ही धर्म होगा। बाकी सब धर्म विनाश हो जाते हैं। सिर्फ यह गीता ही है जिसको भगवान ने गाई है। मनुष्यों ने भक्ति मार्ग के लिए बैठ बनाई है। जिसने गाई उस द्वारा स्थापना हुई। बाकी तो सब पुरानी कथायें आदि पढ़ते रहते हैं। ऐसी2पाइंट धारण तर फिर सुनानी चाहिए। कहते हैं बाबा भूल जाते हैं।धारणा नहीं होती है।बाबा कहते फिर क्या करें। राजधानी स्थापन होती है इसमें नम्बरवार तो सब चाहिए। सबके ऊपर कृपा करने की ताकत हो तो बाप सबको स्वर्ग का मालिक बना दें। लेकिन नहीं, यह तो बनने ही ऐसे नम्बरवार हैं। यह तो कोई भी समझ सकते हैं कि शिवबाबा भगवान आया हुआ है। भगवान जरूर स्वर्ग की सौगात ले आयेंगे। नई दुनिया स्थापन करने आते हैं ना। तो जरूर संगम पर ही आयेंगे। नई दुनिया स्थापन करने। तुम सुनते हो और निश्चय से पुरुषार्थ करते हो। जिनको निश्चय ही नहीं वह कभी सुधरेंगे ही नहीं। भल कितना भी माथा मारो तो बाबा की पंधरामनी का पैगाम सबको देना है, मैसेज देना है। आगे चल अखबारों में पड़ ही जायेगा। जैसे तुम्हारा नाम बदनाम भी अखबारों द्वारा हुआ फिर नाम बाला भी अखबारों द्वारा ही होगा। भारत तो अथाह है, सब जगह तुम बच्चियां तो जा नहीं सकेंगी। कितने शहर हैं।कितनी ढेर भाषायें हैं। अखबारों द्वारा सब जगह आवाज पहुंच जाता है। सभी धर्मों में आवाज जाता है। कोई भी आयेगा कहेगा हाँ अखबारों द्वारा आवाज सुना है कि तुम भाई बहन बनाते हो, भगाते हो।कहाँ भी जाओ तो यह आवाज सुनेंगे। फिर तुम्हारा नाम भी अखबारों द्वारा ही होगा। ऐसा न समझो कि सब तरफ तुमको जाना पड़ेगा। फिर तो पता नहीं, कितना समय लग जावे। अखबारों द्वारा ही एक्यूरेट सुनेंगे। तुम कहते हो कि बाप को याद करो तो पाप कट जायेंगे। गीता वाले जानते हैं कि भगवानुवाच है कि मामेकम् याद करो तो पाप कट जायेंगे। अखबारों में तो पड़ना ही है, तब तुम्हारा नाम बाला होगा। तो फिर पड़ता ही जायेगा। जैसे कल्प पहले पड़ा होगा। वैसे ही समय पर पड़ेगा। सभी को मैसेज मिलेगा। युक्तियां चल रही है। बहुत अखबार वाले डालेंगे। किसको बुद्धि में बैठा और डाल देंगे। सब धर्म वालों को मालूम पड़ जायेगा। तब तो कहेंगे अहो प्रभू तेरी लीला... पिछाड़ी में बाप की याद सभी को आयेगी। परन्तु कुछ भी कह नहीं सकेंगे। कहेंगे अहो प्रभू तेरी लीला.. यह खेल है ना। खेल को जान जायेंगे। 84चक्र का खेल सब अखबारों में पड़ जायेगा।जहाँ भी जाओ अखबार जरूर निकलती है। अखबार द्वारा सबको आवाज तो पहुँचता है ना। फलाने2 शहर का प्रेजीडेंट बना। अखबार द्वारा सब जगह आवाज फैल गया। तो तुम्हारी बातें तो सबसे ऊँची हैं ना। विनाश का समय भी तो जरूर आना ही है। ड्रामा प्लैन अनुसार। जैसे कल्प पहले मालूम पड़ा होगा, अब भी पड़ेगा। धीरे2स्थापना होती है ना। सतयुग है ही स्वर्ग।संगमयुग याद पड़े तो स्वर्ग भी याद पड़े। स्वर्ग को भी याद करो और मनमनाभव को भी याद करो तो बेड़ा पार हो।हम विश्व के मालिक बनते हैं तो जरूर स्वर्ग में बनेंगे ना।नर्क में थोड़ेही बनेंगे। जब तक विनाश न हो, शान्ति कहाँ से आये। विनाश का नाम ही कड़ा है। मनुष्य सुनकर बहुत डरते हैं। यह तो राइट बात है ना। बाप के आने बाद फिर तुम स्वर्ग में ही पुनर्जन्म लेंगे फिर रावण के राज्य में आयेंगे तो पुनर्जन्म नर्क में ही लेंगे। वह है पतित, वह है पावन।पतित दुनिया में अनेक दुख है, पावन दुनिया में अनेक सुख हैं। बाप देखो सौगात कैसे लाते हैं। अच्छा-

मीठे2सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग।
रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

स्वउन्नति के लिए दृढ संकल्प:- ।।। पढ़ाई को अच्छी तरह पढ़ ऊंच पद पाना है, नालेज को बुद्धि में धारण करना है। आफतें आने के पहले नई दुनिया के लिए तैयार होना है।
।2। अपने को सुधारने के लिए निश्चयबुद्धि बनना है। वाणी से परे वानप्रस्थ में जाना है इसलिए इस दुखधाम को भूल शान्तिधाम और सुखधाम को याद करना है।

(२७)

14.9.87 प्रात:क्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-जितना समय मिले, सच्ची कमाई करो-चलते फिरते कर्म करते बाप की याद में रहना ही सच्ची कमाई का आधार है, इसमें कोई डिफीकल्टी नहीं है

प्रश्न:-जिन बच्चों में ज्ञान की प्राकाष्ठा होगी उनकी निशानी सुनाओ?उत्तर:-ज्ञान की प्राकाष्ठा होने से यह कर्मइन्द्रियां शीतल हो जायेंगी, चंचलता समाप्त हो जायेगी।अवस्था एकरस हो जायेगी। मैनर्स सुधरते जायेंगे।

प्रश्न:-शिवबाबा की याद बुद्धि में यथार्थ नहीं है तो रिजल्ट क्या होगी? उत्तर:-कोई न कोई विकर्म जरूर होगा। बुद्धि इतना भी काम नहीं करेगी कि हमारे द्वारा कोई विकर्म हो रहा है। बाप का फरमान न मानने के कारण धोखा खाते रहेंगे।

गीत:-आखिर वह दिन आया आज...ओमशान्ति। बच्चों को खातिरी होगई है कि बेहद का बाप आया हुआ है। कृष्ण को कब बेहद का बाप नहीं समझा जा सकता।यह गीत तो यहाँ के नाटक वालों ने बनाये हुए हैं।महाराज अधिराज कृष्ण के लिए कहते हैं। बाप कहते हैं मैं तो नहीं बनता हूँ। तुम बच्चों को बनाता हूँ। तो इन गीतों से भी कुछ न कुछ अच्छा अर्थ निकलता है। बेहद का बाप गरीब निवाज जरूर है। जिस भारत को साहूकार बनाते हैं वह भारत अब गरीब बन गया है। भारत में ही उनका जन्म होता है और कहीं नहीं उनका जन्म गाया हुआ है।भल पूजा करते हैं, कोई भी नेशन में यह चित्र हैं परन्तु जन्म तो यहाँ हुआ है ना। जैसे क्राइस्ट का जन्म और कोई जगह है परन्तु चित्र तो यहाँ भी हैं ना।तो भारत को गाड फादर का बर्थ प्लेस कहेंगे। मनुष्य तो कुछ समझते नहीं। वह तो ईश्वर को सर्वव्यापी कह देते हैं। आगे तुमको भी पता नहीं था, अभी जानते हो कि भारत पतित पावन परमपिता परमात्मा का बर्थप्लेस है। मनुष्य तो समझते हैं कि परमात्मा तो जन्म मरण से न्यारा है। हाँ मरण से बेशक न्यारा है, क्योंकि उनको अपना शरीर तो है नहीं। बाकी जन्म तो होता है ना। बाप कहते हैं मैं आया हूँ मेरा दिव्य जन्म है और मनुष्य तो गर्भ में प्रवेश कर फिर छोटे से बड़ा बनते हैं। मैं ऐसा नहीं बनता हूँ।हाँ कृष्ण माँ के गर्भ में जाते हैं, छोटे से बड़ा बनते हैं। हर एक अपनी माँ के गर्भ में प्रवेश कर जन्म लेते हैं ना।यह मनुष्य मात्र की बात है। मनुष्य ही कंगाल, मनुष्य ही सिरताज बनते हैं। भारत सतयुग आदि में डबल सिरताज था, पवित्रता की निशानी रहती है ना। पवित्रता का ताज और रतन जड़ित ताज था ना। पवित्रता गुम हो जाने बाद सिर्फ एक ताज रहता है। विश्व के मालिक थे फिर पुनर्जन्म लेते2एक ताज गुम हो गया। फिर सिंगल ताज वाले बने। यह ज्ञान की बातें हैं। पूज्य से पुजारी बनने के कारण एक ताज गुम हो जाता है। राजायें पतित होते आये हैं और जो पावन राजायें सूर्यवंशी चन्द्रवंशी पास्ट हो गये हैं, उनके चित्रों की पूजा करते आये हैं। जो पवित्र पूज्य थे वही फिर पुजारी बने हैं। उनको ही 84 जन्म भोगने पड़ते हैं। जो भारत कल पूज्य था सो अब पुजारी बना है। फिर पुजारी गरीब से पूज्य साहूकार बनना है। अब तो कितना गरीब है। कहाँ हीरो के महल थे, मन्दिर के ऊपर भी कितने हीरे जवाहरात जड़े हुए थे। तो वे अपना महल तो और ही अच्छा बनाते होंगे ना। अभी तो कितना गरीब है। गरीब से साहूकार अभी तुम फिर से बनते हो। पुरूषार्थ तुम बच्चों को करना है। युक्तियां रोज बतलाते रहते हैं। जितना टाइम फुर्सत मिले यह याद की कमाई करनी है। ऐसे बहुत काम होते हैं जिनमें बुद्धि नहीं लगानी होती है। कोई2काम में बुद्धि लगानी पड़ती है। तो जब फुर्सत मिलती है घूमने फिरने जाते हो तो बाप की याद में रहो यह कमाई बहुत करनी है। यह है सच्ची कमाई। बाकी तो वह है अल्पकाल के लिए झूठी कमाई। यह शिक्षा तुम बच्चों को अभी ही मिलती है। तुम जानते हो कि हमको बेहद के बाप से बेहद का वर्सा लेना है। इसमें कोई भी डिफीकल्टी नहीं हैं। घरबार भी नहीं छुड़ाते हैं। सिर्फ विष नहीं पीना है। इस पर ही अक्सर करके झगड़ा चलता है और सतसंगों में ऐसे झगड़े थोड़ेही होते हैं। वहाँ तो जो सुनाया वह सत2 कहकर चले जाते हैं। झगड़ा यहाँ होता है। इस रूद्र ज्ञान यज्ञ में असुरों के विघ्न जरूर पड़ेंगे। अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। जैसे द्रोपदी को भी दिखाते हैं, पुकारा है कि बाबा यह हमको नंगन करते हैं। इनसे आकर बचाओ। बाप की जो शिक्षा है कि कब भी नंगन नहीं होना है। जबकि एकरस अवस्थाहो जाए तब तक कोई न कोई चंचलता चलती रहेगी। जब तक ज्ञान की प्राकाष्ठा हो। बुद्धि में यह ख्याल रहे कि हमको कम्पेनियन हो रहना है। विलायत में भी बहुत बूढ़े वानप्रस्थी होते हैं समझते हैं पिछाड़ी में कौन मालिक बनेंगे, बाल बच्चे तो है नहीं तो

पिछाड़ी में कम्पेनियन बना देते हैं। फिर सब कुछ उनको देकर चले जाते हैं। तुम लोग तो अखबारे पढ़ते नहीं हो ना। अखबारों में बहुत समाचार होते हैं। तुम बच्चों को कोई वह पढ़ना नहीं है। बाबा तो कहते हैं कुछ भी न पढ़े हो तो अच्छा है। जो कुछ भी पढ़े हो वह भूल जाओ। हमको बाप ऐसा पढ़ाते हैं जो हम सच्ची कमाई कर विश्व के मालिक बन जाते हैं। बाबा कहते हैं हियर नो ईविल, सी नो ईविल..यह तुम्हारे लिए है। तुम सुन्दर भी बन रहे हो। दूसरे तो हैं ही शूद्र सम्प्रदाय। वह तो फालतू बातें सुनते ही रहते हैं। तुमको कहते हैं ऐसी बातें मत सुनो। तुमको बाप ज्ञान सागर मिला है तो उनको ही सुनना पड़े। दूसरे की तुमको क्या सुनने की दरकार है। मनुष्य टीचर के पास, गुरू के पास जाते हैं। गुरू कब ऐसे कहते हैं क्या कि काम विकार में न जाओ। वह तो पावन बनने की शिक्षा देते नहीं। कोई को वैराग आता है तो वह घरबार छोड़ भाग जाते हैं। बाप जो शिवाचार्य है यह ज्ञान का जलप तुम माताओं के सिर पर रखते हैं। बाकी इस पतित दुनिया में लक्ष्मी कहाँ से आई। लक्ष्मी नारायण तो सतयुग में होते हैं। अभी शिवबाबा इनके द्वारा बैठ समझाते हैं, शिवाचार्य ब्रह्मा मुख से.... तुम बरोबर सतयुग के द्वार खोलती हो। तो जरूर तुम ही मालिक बनेंगे। स्वर्ग का द्वार खोलते हो गोया स्वर्गवासी बनने का पुरूषार्थ करते हो। तुम्हारा पुरूषार्थ ही है नर्कवासी मनुष्य को स्वर्गवासी बनाना। बाप भी यह सेवा करते हैं ना। पतित से पावन बनाना तुम्हारा भी यही धन्धा रहा। जो बाप का धन्धा। आत्माओं को स्वर्गवासी बनाओ। स्वर्ग की चाहना तो सब रखते हैं ना। कोई मरता है तो कहते हैं फलाना स्वर्ग पधारा, उनसे पूछना चाहिए कि जब वह स्वर्ग में गया तो फिर तुम उन्हें नर्क में बुलाकर ब्राह्मण आदि क्यों खिलाते हो। फिर तो यह अज्ञान अन्धियारा हुआ ना। तुम यहाँ से सूक्ष्मवतन में ले जाकर खिलाते हो। क्योंकि तुम जानते हो यह पवित्र भोजन है। वह जो मर जाते हैं तो उनको पवित्र भोजन थोड़ेही मिलता होगा। कहते हैं बाबा फलाने का भोग लगाओ तो उनको पवित्र भोजन मिले। गाया हुआ है कि देवतायें भी ब्रह्मा भोजन को पसन्द करते हैं। बरोबर तुम्हारी महफिल सूक्ष्मवतन में लगती है। ऐसे नहीं कि ध्यान कोई अच्छा है, नहीं। योग को ध्यान नहीं कहा जाता है। और ध्यानको योग नहीं कहा जाता है। बाप कहते हैं मेरे साथ बुद्धि का योग लगाओ तो विकर्म विनाश होंगे। बैकुण्ठ में जाकर रास विलास करते हैं, वह कोई कमाई नहीं है। मुरली तो सुन न सकें। यह भोग आदि तो एक रसम रिवाज है, ड्रामा अनुसार। कोई अनन्य अच्छे घर के होते हैं। ज्ञान में आये हुए हैं तो उनको हम ब्रह्मा भोजन खिलाते हैं। कहेंगे मनुष्यों की रसम रिवाज और संगमयुगी ब्राह्मणों की रसम रिवाज में रात दिन का फर्क है। यहाँ से जाकर सूक्ष्मवतन में खिलाते हैं। इन बातों को जब तक नये समझें नहीं तब तक संशय उठता है। हम कहेंगे ड्रामा अनुसार इनकी तकदीर में नहीं हैं। तो संशय पड़ा और चला गया। फिकर की बात नहीं। इनकी तकदीर में नहीं था। पहली बात भूल जाते हैं कि हमको बाप से वर्सा लेना है। कोई बात में संशय बुद्धि बन पड़ते हैं। अरे हमारा काम है वर्से से। हम पढ़ाई फिर क्यों छोड़ें। मुरली तो सुननी है ना। निराकार बाप तुमको डायरेक्शन कैसे सुनायेंगे। उनको मुख जरूर चाहिए। ब्रह्मा मुख से अथवा ब्रह्माकुमार कुमारियों से सुनना ही है। कोई बाहर में दूर चले जाते हैं, मुरली भी नहीं मिल सकती है तो बाप कहते हैं कोई हर्जा नहीं है। तुम याद में रहो और स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। यह बाप की श्रीमत मिली हुई है। कहाँ भी हो, तुम लड़ाई के मैदान में हो। बाप लड़ाई वालो को भी समझाते हैं कि तुमको भी सर्विस तो करनी ही है। यह तो तुम्हारा धन्धा है, शहर की सम्भाल करनी है। शिवबाबा की याद में रहना है। तुम पधार लेते हो, एग्रीमेंट की हुई है तो सम्भाल भी करनी है। बुद्धि में लक्ष्य तो बैठा हुआ है। बेन्ड का बाप स्वर्ग का रचयिता है, मेरी याद में रहने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। शिवबाबा की याद में रह करके खाओ तो कोई ऐसी चीज होगी तो पवित्र हो जायेगी जितना हो सके परहेज रखनी है। लाचारी हालत में बाप को याद करके खाओ। इसमें ही मेहनत है। ज्ञान को युद्ध नहीं कहा जाता है। याद में ही युद्ध होती है। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। माया का थप्पड़ नहीं लगेगा। देह अभिमानी नहीं बनेंगे। तुम अपने को आत्मा समझो। तुम शरीर को याद करते रहते हो, आत्मा को भूल गये हो इसलिए पूछा जाता है- आत्मा का बाप कौन है? उनको जानते हो? उनका नाम रूप देश काल लिखो। उनमें भी

वैराग्यवती लिखते हैं। कोई लिखते हैं आत्मा का बाप हनुमान है। कोई क्या लिखते कोई क्या लिखते। कितना अज्ञान है तो फिर समझाया जाता है आत्मा है तो निराकार। तुम्हारा गुरू तो साकार है। निराकार का बाप साकार कैसे होगा। समझाने की प्रैक्टिस पर सारा मदार है। और साथ2 मैनर्स भी अच्छे चाहिए। बहुत अच्छे2 बोलने वाले हैं, दूसरों को तीर अच्छा लग जाता है। खुद में मैनर्स न होने के कारण उन्नति नहीं होती है। याद बहुत अच्छी चाहिए। कोई तो ज्ञान बहुत अच्छा सुनाते हैं, योग कुछ भी नहीं है। ऐसे नहीं कि योग बिगर ज्ञान की धारणा नहीं हो सकती है। धारणा तो हो जाती है। समझो किसको हिस्ट्री जाग्राफी सुनाते हैं वह तो झट बुद्धि में बैठ जायेगा। बाबा की याद का कुछ भी बुद्धि में नहीं होगा। मास-मदिरा आदि भी खाते होंगे। यह तो एक कहानी है, वह याद पड़ना तो बहुत सहज है। हिस्ट्री जाग्राफी बुद्धि में आ जाती है, याद की बात ही नहीं है। पवित्रता की भी बात नहीं। ऐसे भी बहुत हैं, शिवबाबा को याद नहीं करते तो विकर्म विनाश नहीं होते और ही जास्ती विकर्म करते रहते हैं, इतना भी बुद्धि काम नहीं करती कि यह विकर्म है। फरमान न मानना यह तो बड़ा पाप है। शिवबाबा का फरमान है ना- यह करो। उनका नहीं मानेंगे तो बड़ा धोखा खायेंगे। बाकी हिस्ट्री जाग्राफी सुनाना तो बड़ी सहज बात है। बाबा ने समझाया है तुम स्कूलों में भी जाकर समझा सकते हो। यह तुम हद की हिस्ट्री जाग्राफी पढ़ते हो, बेहद की तो तुम पढ़ते नहीं हो। लक्ष्मी नारायण का राज्य बताओ कहाँ गया। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी जो डिनायस्टी चली वह फिर कहाँ गई। उन्हों का राज्य किसने छीना? किसने चढ़ाई की? तुम बच्चे ही जानते हो कि यह चक्र कैसे फिरता है। यह किसको भी समझाओ तो 7 रोज में बुद्धि में आ जायेगा। परन्तु मैनर्स नहीं। ऐसे नहीं कि विकार में जाने से हिस्ट्री जाग्राफी को भूल जायेंगे। सारी बात योग की मुख्य है। योग में ही माया धोखा देती है। तुमको सर्वगुण सम्पन्न... यहाँ ही बनना है। कई प्रतिज्ञा करके भी फिर ठहर नहीं सकते हैं। माया बड़ी प्रबल है ना। बाप को पूरा याद नहीं करते हैं तो विकर्म विनाश नहीं होते हैं। और ही डबल विकर्म करते रहते हैं। उनको पता भी नहीं पड़ता और कहने में भी समझ नहीं सकते। तुम बच्चे जानते हो कि बाप गरीब निवाज रहमदिल है। हम बच्चों को खास और आम सबको समझाते रहते हैं। इनफीरियर हम सुखधाम में जाते हैं, इनजनरल मुक्तिधाम में जाते हैं। सतयुग में बरोबर इन लक्ष्मी नारायण का ही राज्य था, फिर चन्द्रवंशी उनके बाद इस्लामी बौद्धी आदि आये हैं। तो वह आदि सनातन धर्म गुम हो गया है। बड़ का झाड़ कलकत्ते में जाकर देखो। फाउन्डेशन है नहीं, सारा झाड़ खड़ा है। यहं भी ऐसे है। अब फिर से स्थापना हो रही है। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

स्वउन्नति के लिए दृढ संकल्प:-

॥1॥ किसी भी बात में संशय उठाकर पढ़ाई नहीं छोड़नी है। बाप और वर्से को याद करते रहना है।

॥2॥ एक बाप से ही सुनना है, बाकी जो पढ़ा है वह सब भूल जाना है। हियर नो ईविल, सी नो ईविल, टाक नो ईविल.....

एडवान्स
राम आंधी में फेल हुआ

(२८)

19.9.89 प्रात:क्लास ओम्शान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे- अपनी बैटरी चार्ज करने का ख्याल करो, अपना टाइम पर चिंतन में वेस्ट मत करो, अपनी घोट तो नशा चढ़े"

प्रश्न:-ज्ञान एक सेकेण्ड का होते हुए भी बाप को इतना डिटेल से समझाने वा इतना समय देने की आवश्यकता क्यों? उत्तर:-क्योंकि ज्ञान देने के बाद बच्चों में सुधार हुआ है या नहीं, यह भी बाप देखते हैं। और फिर सुधारने के लिए ज्ञान देते ही रहते हैं। सारे बीज और झाड़ का ज्ञान देते- जिस कारण उन्हें ज्ञान सागर कहा जाता। अगर एक सेकेण्ड का मंत्र देकर चले जाएं तो ज्ञान सागर का टाइटिल भी न मिले।

ओम्शान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। भक्ति मार्ग में परमपिता परमात्मा शिव को यहाँ ही पूजते हैं। भल बुद्धि में है कि यह होकर गये हैं। जहाँ पर लिंग देखते हैं तो उनकी पूजा करते हैं। यह तो समझते हैं शिव परमधाम में रहने वाला है। होकर गये हैं, इसलिए उनका यादगार बनाकर पूजते हैं। जिस समय याद किया जाता है तो बुद्धि में जरूर आता है कि निराकार है, जो परमधाम में रहने वाला है। उनको शिव कह पूजते हैं क्योंकि परमात्मा है। अभी तुम्हारे आगे तो परमात्मा है नहीं। भक्ति मार्ग वालों के आगे परमात्मा है, मन्दिर में जाकर माथा टेकते हैं, शिव कहकर पूजा करते हैं और उन पर दूध फल, जल आदि चढ़ाते हैं। परन्तु वह तो जड़ है। जड़ की भक्ति ही करते हैं। अभी तुम जानते हो वह है चैतन्य। उनका निवास स्थान परमधाम है। वह लोग जब पूजा करते हैं तो बुद्धि में रहता है कि परमधाम निवासी है- होकर गये हैं तब यह चित्र बनाये गये हैं, जिसकी पूजा की जाती है, वह चित्र कोई शिव नहीं है, उनकी प्रतिमा है। वैसे ही देवताओं को भी पूजते हैं, जड़ चित्र हैं, चैतन्य नहीं हैं। परन्तु वह चैतन्य जो थे वह कहाँ गये, यह नहीं समझते। जरूर पुनर्जन्म ले नीचे आये होंगे। अभी तुम बच्चों को ज्ञान मिल रहा है। समझते हो जो भी पूज्य देवता थे वह पुनर्जन्म लेते आये हैं। आत्मा वही है, आत्मा का नाम नहीं बदलता। बाकी शरीर का नाम बदलता है। वह आत्मा कोई न कोई शरीर में है। पुनर्जन्म तो लेना ही है। तुम पूजते हो जो पहले2 शरीर वाले थे। सतयुगी लक्ष्मी नारायण को पूजते हो। [illegible] देते हैं। तुम समझते हो जिस चित्र की पूजा करते हैं वह पहले नम्बर वाला है। यह लक्ष्मी नारायण चैतन्य थे। यहाँ ही भारत में थे, अभी नहीं हैं। मनुष्य यह नहीं समझते कि वह पुनर्जन्म लेते2 भिन्न नाम रूप लेते 84जन्मों का पार्ट बजाते रहते हैं। यह किसके ख्याल में भी नहीं आता। सतयुग में थे तो जरूर परन्तु अब नहीं है। यह भी किसको समझ नहीं आती। अभी तुम जानते हो- ड्रामा के प्लैन अनुसार फिर चैतन्य में आयेंगे जरूर। मनुष्यों की बुद्धि में यह ख्याल ही नहीं आता। बाकी इतना जरूर समझते हैं कि यह थे। अब इनका जड़ चित्र है, परन्तु वह चैतन्य चित्र कहाँ चले गये। यह किसकी बुद्धि में नहीं आता है। मनुष्य जो 84लाख पुनर्जन्म कह देते हैं, यह भी तुम बच्चों को मालूम पड़ा है कि 84जन्म ही लेते हैं न कि 84 लाख। अब रामचन्द्र की पूजा करते हैं, उनको यह भी पता नहीं है कि राम कहाँ गया। तुम जानते हो कि राम की आत्मा तो जरूर पुनर्जन्म लेती रहती होगी। यहाँ इम्तहान में नापास होती है। परन्तु कोई न कोई रूप में होगी तो जरूर ना। यहाँ ही पुरूषार्थ करते रहते हैं। इतना नाम बाला है राम का, तो जरूर आयेंगे, उनको नालेज लेनी पड़ेगी। अभी कुछ मालूम नहीं पड़ता है तो उस बात को छोड़ देना पड़ता है। इन बातों में जाने से भी टाइम वेस्ट होता है। इससे तो क्यों न अपना टाइम सफल करें। अपनी उन्नति के लिए बैटरी चार्ज करें। वह फिर हो गया पर चिंतन। अभी तो अपना चिंतन करना है। हम बाप को याद करें। वह तो जरूर पढ़ते होंगे। अपनी बैटरी चार्ज करते होंगे। परन्तु तुमको अपनी करनी है। कहा जाता-अपनी घोट तो नशा चढ़े। बाप ने कहा है- जब तुम सतोप्रधान थे तो तुम्हारा बहुत ऊँच पद था। अब फिर पुरूषार्थ करो, मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो, मंजिल है ना। यह चिंतन करते2 सतोप्रधान बनेंगे। नारायण का ही सिमरण करने से हम नारायण बनेंगे। अन्तकाल में जो नारायण सिमरे... तुमको बाप को याद करना है, जिससे पाप कटें। फिर नारायण बनें। यह नर से नारायण बनने की हाइएस्ट युक्ति है। एक नारायण तो नहीं बनेंगे ना। यह तो सारी डिनायस्टी बनती है। बाप हाइएस्ट पुरूषार्थ करायेंगे। यह है ही राजयोग की नालेज, सो भी पूरे विश्व का मालिक बनना है। जितना पुरूषार्थ

करेंगे, उतना जरूर फायदा है। एक तो अपने को आत्मा जरूर निश्चय करो। कोई2 लिखते भी ऐसे हैं, फलानी आत्मा आपको याद करती है। आत्मा शरीर के द्वारा लिखती है। आत्मा का कनेक्शन है शिवबाबा साथ। मैं आत्मा फलाने शरीर के नाम रूप वाली हूँ। यह तो जरूर बताना पड़े ना। क्योंकि आत्मा के शरीर पर ही भिन्न2 नाम पड़ते हैं। मैं आत्मा आपका बच्चा हूँ। मुझ आत्मा के शरीर का नाम फलाना है। आत्मा का नाम तो कभी बदलता नहीं। मैं आत्मा फलाने शरीर वाली। शरीर का नाम तो जरूर चाहिए। नहीं तो कारोबार चल न सके। (यहाँ बाप कहते हैं मैं भी इस ब्रह्मा के तन में आता हूँ। टैम्पेरी इनकी आत्मा को भी समझाते हैं। (b) मैं इस शरीर से तुमको पढ़ाने आया हूँ। यह मेरा शरीर नहीं है। मैंने इनमें प्रवेश किया है। फिर चले जायेंगे अपने धाम। मैं आया ही हूँ तुम बच्चों को यह मन्त्र देने। ऐसे नहीं कि मन्त्र देकर चला जाता हूँ। नहीं। बच्चों को देखना भी पड़ता है कि कहाँ तक सुधार हुआ है। फिर सुधारने की शिक्षा देते रहते हैं। सेकेण्ड का ज्ञान देकर चले जाएं तो फिर ज्ञान का सागर भी न कहा जाए। कितना समझ हुआ है, तुमको समझाते ही रहते हैं। झाड़ की, भक्ति मार्ग की सब बातें समझने की डिटेल हैं। डिटेल में समझाते हैं। होलसेल माना मनमनाभव। परन्तु ऐसे कह, चले (c) तो नहीं जायेंगे। ताइना (देख-रेख) भी करनी पड़े।) कई बच्चे बाप को याद करते2 फिर गुम हो जाते हैं। फलानी आत्मा जिसका नाम फलाना था, बहुत अच्छा पढ़ता था। स्मृति तो आयेगी ना। पुराने2 बच्चे कितने अच्छे थे, उनको माया ने हप कर लिया। शुरू में कितने आये। फट से आकर बाप की गोद ली। भटठी बनी। इसमें सबने अपना लक अजमाया फिर लक अजमाते2 माया ने एकदम उड़ा दिया। ठहर न सकें। फिर 5 हजार वर्ष के बाद भी ऐसे ही होगा। कितने चले गये-- आधा झाड़ तो जरूर गया। भल झाड़ वृद्धि को पाया है परन्तु पुराने चले गये, समझ सकते हैं- इनसे कुछ फिर आयेंगे जरूर पढ़ने। स्मृति आयेगी कि हम बाप से पढ़ते थे। और सब अभी तक पढ़ते रहते हैं। हमने हार खा ली। फिर मैदान में आयेंगे। बाबा आने देंगे फिर भी भल आकर पुरूषार्थ करें। कुछ न कुछ अच्छा पद मिल जायेगा।

(बाप स्मृति दिलाते हैं- मीठे2 बच्चे मामेकम् याद करो तो पाप कट जायेंगे। अब कैसे याद हो, क्या यह समझते हो कि बाबा परमधाम में है? नहीं। बाबा तो यहाँ रथ में बैठे हैं। इस रथ का सबको मालूम पड़ता जाता है। यह है भाग्यशाली रथ। इनमें आया हुआ है। भक्ति (d) मार्ग में थे तो उनको परमधाम में याद करते थे परन्तु यह नहीं जानते थे कि याद से क्या होगा। अभी तुम बच्चों को बाप खुद इस रथ में बैठ श्रीमत देते हैं, इसलिए तुम बच्चे समझते हो बाबा यहाँ इस मृत्युलोक में पुरूषोत्तम संगमयुग पर है। तुम जानते हो हमको ब्रह्मा को याद नहीं करना है। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। मैं इस रथ में रहकर तुमको यह नालेज दे रहा (e) हूँ। अपनी भी पहचान देता हूँ, मैं यहाँ हूँ। आगे तो तुम समझते थे परमधाम में रहने वाला है। होकर गया है परन्तु कब, यह पता नहीं था। होकर तो सब गये हैं ना। जिनके भी चित्र हैं, अभी वह कहाँ हैं, यह किसको पता नहीं है। जो जाते हैं वह फिर अपने समय पर आते हैं। भिन्न2 पार्ट बजाते रहते हैं। स्वर्ग में तो कोई जाते नहीं। बाप ने समझाया है स्वर्ग में जाने के लिए तो पुरूषार्थ करना होता है और पुरानी दुनिया का अन्त, नई दुनिया की आदि चाहिए। जिनको पुरूषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। यह ज्ञान अभी तुमको है। मनुष्य कुछ नहीं जानते। समझते भी हैं शरीर जल जाता है। बाकी आत्मा चली जाती है। अब कलियुग है तो जरूर जन्म कलियुग में ही लेंगे। सतयुग में थे तो जन्म भी सतयुग में लेते थे। यह भी जानते हो आत्माओं का सारा स्टॉक निराकारी दुनिया में होता है। यह तो बुद्धि में बैठा है ना। फिर वहाँ से आते हैं यहाँ शरीर धारण कर जीव आत्मा बन जाते हैं। सबको यहाँ आकर जीव आत्मा बनना है। फिर नम्बरवार वापिस जाना है। सबको तो नहीं ले जायेंगे फिर तो प्रलय हो जाए। दिखाते हैं कि प्रलय हो गई, रिजल्ट कुछ नहीं दिखाते। तुम तो जानते हो यह दुनिया कभी खाली नहीं हो सकती है। गायन है राम गयो रावण गयो, जिनके बहुत परिवार है। सारी दुनिया में रावण सम्प्रदाय हैं ना। राम सम्प्रदाय तो बहुत थोड़ी है। राम की सम्प्रदाय है ही सतयुग त्रेता में। बहुत फर्क रहता है। बाद में फिर और टाल टालियां निकलती है। अभी तुमने बीज और झाड़ को भी जाना है। बाप सब कुछ जानते हैं, तब तो सुनाते रहते हैं इसलिए उनको ज्ञान

सागर कहा जाता है, एक ही बात अगर होती तो फिर कुछ शास्त्र आदि भी बन न सके। झाड़ की डिटेल भी समझाते रहते हैं। मूल बात नम्बरवन सब्जेक्ट है बाप को याद करना। इसमें ही मेहनत है। इस पर ही सारा मदार है। बाकी झाड़ को तो तुम जान गये हो। दुनिया में इन बातों को कोई भी नहीं जानते हैं। तुम सब धर्म वालों की तिथि तारीख आदि सब बताते हो। आधाकल्प में यह सब आ जाते हैं। बाकी हैं सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी। इनके लिए बहुत युग तो नहीं होंगे ना। हैं ही दो युग। वहाँ मनुष्य भी थोड़े होते हैं। 84 लाख जन्म तो हो भी न सकें। मनुष्य समझ से बाहर हो जाते हैं इसलिए फिर बाप आकर समझ देते हैं। समझ से जो बाहर जाता है उनको बेसमझ कहा जाता है। नम्बरवन गपोड़ा लगाया है-ईश्वर सर्वव्यापी का और 84 लाख जन्मों का। बाप कहते हैं यह सब हैं अज्ञान। अज्ञान की एक्टिविटी को भक्ति कहा जाता है। ज्ञान की एक्टिविटी को ज्ञान कहा जाता है। वह दिन, वह रात। बाप जो रचता है, वही रचता और रचना के आदि मध्य अन्त की नालेज बैठ देते हैं। भारतवासी तो बिल्कुल कुछ नहीं जानते। सबको पूजते रहते हैं, मुसलमानों को, पारसी आदि को, जो आया उनको पूजने लग पड़ेंगे। क्योंकि अपने धर्म और धर्म स्थापक को भूल गये हैं और तो सब अपने2 धर्म को जानते हैं और सबको मालूम है फलाना धर्म कब, किसने स्थापन किया। बाकी सतयुग त्रेता की हिस्ट्री जाग्राफी का किसको भी पता नहीं है। चित्र भी देखते हैं शिवबाबा का यह रूप है। वही ऊँच ते ऊँच बाप है। तो याद भी उनको करना है। यहाँ फिर सबसे जास्ती पूजा करते हैं कृष्ण की। क्योंकि नेक्स्ट में है ना। प्यार भी उनको करते हैं, तो गीता का भगवान भी उनको समझ लिया है। सुनाने वाला चाहिए तब तो उनसे वर्सा मिले। बाप ही सुनाते हैं, नई दुनिया की स्थापना और पुरानी दुनिया का विनाश कराने वाला और कोई हो न सके सिवाए एक बाप के। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना यह भी लिखते हैं। यहाँ के लिए ही है। परन्तु समझ कुछ भी नहीं। तुम जानते हो वह है निराकारी सृष्टि। यह है साकारी सृष्टि। सृष्टि तो यही है, यहाँ ही रामराज्य और रावणराज्य होता है। मूवी तारी यहाँ की है। बाकी सूक्ष्मवतन क्या है, कुछ भी नहीं। यह सिर्फ साठ० होता है। मूलवतन में तो आत्मायें रहती हैं फिर यहाँ आकर पार्ट बजाते हैं। बाकी सूक्ष्मवतन में क्या है, यह चित्र बना दिया है। जिस पर बाप बैठ समझाते हैं। यह है फर्स्ट। तुम बच्चों को यह फरिश्ता बनना है। फरिश्ते हड्डी मास बिगर होते हैं। कहते हैं ना- दधीचि ऋषि ने हड्डियाँ भी दे दी। बाकी शंकर का गायन तो कहाँ है नहीं। ब्रह्मा विष्णु शंकर का मन्दिर है। शंकर का कुछ है नहीं। तो उनको लगा दिया है विनाश के लिए। बाकी ऐसे कोई आंख खोलने से विनाश करता नहीं है। देवतायें फिर हिंसा का काम कैसे करेंगे। न वह करते हैं न शिवबाबा ऐसा डायरेक्शन देते हैं। डायरेक्शन देने वाले पर भी आ जाता है ना। कहने वाला ही फँस जाता है। वह तो शिव शंकर को ही इकट्ठा कह देते हैं। अब बाप भी कहते हैं मुझे याद करो। नामेकम याद करो। ऐसा तो नहीं कहते शिव शंकर को याद करो। पतित पावन एक ही कहते हैं। भगवान अर्थ सहित बैठ समझाते हैं, यह कोई जानते नहीं हैं, तो यह चित्र देख मूँझ पड़ते हैं। अर्थ तो जरूर दिखाना पड़े ना।

समझने में टाइम लगता है। कोटो में कोई विरला निकलता है। मैं जो हूँ, जैसा हूँ, कोटो में कोई ही मुझे पहचान सकते हैं। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का बादप्यार और गुडमार्निंग। सभी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

के लिए मुख्य सार:- 1। किसी भी बात के चिंतन में अपना समय नहीं गँवाना है। अपनी में रहना है। स्वयं के प्रति चिंतन कर आत्मा को सतोप्रधान बनाना है।

2। नर से नारायण बनने के लिए अन्तकाल में एक बाप की ही याद रहे। इस हाइएस्ट युक्ति को सामने रखते हुए पुरुषार्थ करना है- मैं आत्मा हूँ..। इस शरीर को भूल जाना है।

Page No-4

18.9.89 -3-

इन साधुओं का भी उद्धार करने आता हूँ। उद्धार तो जरूर पतितों का ही किया जाता है। बाबा तो अनुभवी है। बाबा कहते है हमने भी बहुत गुरू किये। शान्ति का भी अर्थ नहीं समझते है। हठयोग से प्राणायाम आदि चढ़ाना, उसको ही शान्ति समझते है। उसमें भी बहुत मेहनत लगती है, कोई की ब्रेन खराब होजाती है। प्राप्ति कुछ भी नहीं। वह है अल्पकाल की शान्ति। जैसे सुख को अल्पकाल कांग विष्टा समान कहते है वैसे वह शान्ति भी काग विष्टा के समान है। वह है ही अल्पकाल के लिए। बाप तो 21 जन्मों के लिए तुमको सुख शान्ति दोनों देते है। कोई तो शान्तिधाम में पिछाड़ी तक रहते होंगे। जिनका पार्ट है, वह इतना सुख थोड़ेही देख सकेंगे। वहाँ भी नम्बरवार मर्तबे तो होंगे ना। भल दास दासियाँ होंगे परन्तु अन्दर थोड़ेही घुस सकेंगे। कृष्ण को भी देख न सकें। सबके अलग2 महल होंगे ना। कोई टाइम होगा देखने का। जैसे देखो पोप आता है तो उनका दर्शन करने के लिए कितने लोग जाते है। ऐसे बहुत निकलेंगे, जिनका बहुत प्रभाव होगा। लाखों मनुष्य जायेंगे दर्शन करने के लिए। परन्तु है तमोप्रधान। यहाँ शिवबाबा का दर्शन कैसे होगा। यह तो समझने की बात है। अब दुनिया को कैसे पता पड़े कि यह सबसे ऊँच तीर्थ है। देलवाड़ा जैसा मन्दिर शायद आसपास और भी हो। वह भी जाकर देखना चाहिए। कैसे बना हुआ है। उनको ज्ञान देने की भी दरकार नहीं। वह फिर तुमको ज्ञान देने लग जायेंगे। राय देते हैं ना-यह करना चाहिए, यह करना चाहिए। यह तो जानते नहीं कि इनको पढ़ाने वाला कौन है। एक एक को समझाने में मेहनत लगती है। उन पर कहानियाँ भी है। कहते थे शेर आया, शेर आया... तुम भी कहते हो मौत आया कि आया। तो वह विश्वास नहीं करते है। समझते है अभी तो 40हजार वर्ष पड़े है, मौत कहाँ से आयेगा। परन्तु मौत आना तो जरूर है, सबको ले जायेंगे। वहाँ कोई भी किचड़ा होता नहीं। यहाँ की गऊ और वहाँ की गऊ में भी कितना फर्क है। कृष्ण थोड़ेही गऊयें चराता था। उन्हों के पास तो दूध हेलीकाप्टर में आता होगा। यह किचड़पट्टी दूर रहती होगी। सामने घर में थोड़ेही किचड़ा रहेगा। वहाँ तो अपरमअपार सुख है, जिसके लिए पूरा पुरूषार्थ करना है। कितने अच्छे2 [illegible] निकलते है। फूल जो है वह अपने को भी फूल समझते हैं। देहली में भी बच्चे कितनी सर्विस करते है रात दिन। ज्ञान भी कितना ऊँच है। आगे तो कुछ नहीं जानते थे। अब कितनी मेहनत करनी पड़ती है। बाबा के पास तो सब समाचार आते है। कोई का सुनाते है, कोई का नहीं सुनाते है। क्योंकि ट्रेटर भी बहुत होते हैं। बहुत फर्स्टक्लास भी ट्रेटर्स बन पड़ते हैं। थर्डक्लास भी ट्रेटर हैं। थोड़ा ज्ञान मिला तो समझते हैं हम शिवबाबा के भी बाबा बन गये। पहचान तो है नहीं कि कौन नालेज देते हैं। समझ नहीं सकते। न समझते हैं इसलिए बाबा कहते हैं अच्छा- समझो शिवबाबा ही समझाते हैं। वह जो भी समझाते हैं सो राइट समझो। बेहद का यह नशा है। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:- (1) विश्व की बादशाही देने वाले बाप का बहुत2 रिगार्ड रखना है। बाप की सर्विस में अपनी जीवन सफल करनी है, पढ़ाई पर पूरा2 ध्यान देना है। (2) बाप से जो ज्ञान मिलता है उस पर विचार सागर मंथन करना है। कभी भी विघ्न रूप नहीं बनना है। डिस सर्विस नहीं करनी है। अंहकार में नहीं आना है।

नोट:- आप सबके पास नवम्बर मास से हर सप्ताह में डायरेक्ट अव्यक्त बापदादा की दो मुरलियाँ आयेंगी इसलिए अभी से रिवाइज कोर्स की अव्यक्त मुरली बंद की गई है। उसकी जगह पर साकार मुरली भेज रहे हैं।

(२९)

* 11.1.93. प्रातःक्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-तुम पीस स्थापन करने के निमित्त हो इसलिए तुम्हें बहुत2पीस में रहना है, बुद्धि में रहे कि हम एडाप्टेड बच्चे आपस में भाई बहन है"

प्रश्नः-पूरा सरेन्डर किसे कहेंगे? उनकी निशानी क्या होगी?

उत्तरः-पूरा सरेन्डर वह जिनकी बुद्धि में रहता कि हम ईश्वरीय माँ बाप से पलते हैं। बाबा यह सब कुछ आपका है। आप हमारी पालना करते हो। भल कोई नौकरी आदि करते हैं लेकिन बुद्धि से समझते हैं यह सब बाबा के लिए है। बाबा को मदद करते रहते तो ऐसे बच्चे ही अर्पण बुद्धि हैं। वह शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करते भी निरन्तर बेहद के मात पिता को याद करते हैं। ऊँच पद पाने के लिए अच्छी रीति पढ़ते और पढ़ाते हैं।

गीतः-ओम् नमो शिवाए..ओमशान्ति। यह गीत तो है गायन। वास्तव में महिमा सारी ऊँचे ते ऊँच परमात्मा की है, जिसको बच्चे जानते हैं और बच्चों द्वारा सारी दुनिया भी जानती है कि मात पिता हमारा वही है। अब तुम मात पिता के साथ कुटुम्ब में बैठे हो। श्रीकृष्ण की तो मात-पिता कह नहीं सकते। भल उनके साथ राधे भी हो तो भी उनको माता पिता नहीं कहेंगे क्योंकि वह तो प्रिन्स-प्रिन्सेज हैं। शास्त्रों में यह भूल है। अब यह बेहद का बाप तुमको सभी शास्त्रों का सार बताते हैं। भल इस समय सिर्फ तुम बच्चे सम्मुख बैठे हो। कोई बच्चे भल दूर हैं। परन्तु वह भी सुन रहे हैं। वे जानते हैं कि मात-पिता हमको सृष्टि के आदि मध्य अन्त का राज़ समझा रहे हैं और सदा सुखी बनाने का रास्ता वा युक्ति बता रहे हैं। यह हूबहू जैसा घर है। थोड़े बच्चे यहाँ हैं, बहुत तो बाहर हैं। यह है ब्रह्मा मुख वंशावली, नई रचना है। वह हो गई पुरानी रचना। बच्चे जानते हैं कि बाबा हमको सदा सुखी बनाने आये हैं। लौकिक माँ बाप भी बच्चे को बड़ाकर स्कूल में ले जाते हैं। यहाँ बेहद का बाप हमको पढ़ा भी रहे हैं। हमारी पालना भी कर रहे हैं। तुम बच्चों को अब एक के बिगर दूसरा कोई रहा [illegible] होगी। 2-3 शादी की होगी। यहाँ तो यह सब बाबा के बच्चे बैठे हैं। जितने भी बच्चे पैदा करने हैं सो अभी ही ब्रह्मा मुख कमल द्वारा करने हैं। पीछे तो बच्चे पैदा करने हो नहीं हैं। सभी को वापिस जाना है। यह एक ही एडाप्टेड माता निमित्त है। यह बड़ी वन्डरफुल बात है। यह तो जरूर है-गरीब का बच्चा समझेगा कि हमारा बाप गरीब है। साहूकार का बच्चा समझेगा कि हमारा बाप साहूकार है। वह तो अनेक माँ बाप हैं। यह तो सारे जगत का एक ही मात पिता है। तुम तभी जानते हो कि हम उनके मुख से एडाप्ट हुए हैं। यह हमारा पारलौकिक माँ बाप है। यह आते ही पुरानी सृष्टि में हैं। जब मनुष्य बहुत2 दुखी होते हैं। बच्चे जानते हैं कि हमने इस पारलौकिक मात-पिता की गोद ली है। हम सब आपस में भाई बहन हैं। दूसरा कोई हमारा सम्बन्ध नहीं है। तो भाई बहन को आपस में बहुत मीठा, रॉयल, पीसफुल, नालेजफुल, ब्लिसफुल बनना चाहिए। जबकि तुम पीस स्थापन कर रहे हो तो तुमको भी बहुत पीस में रहना चाहिए। बच्चों को यह तो बुद्धि में होना चाहिए कि हम पारलौकिक बाप के एडाप्टेड बच्चे हैं। परमधाम से बाप आये हैं। वह है ग्रैन्डफादर (डाडा) और यह है दादा-बड़ा भाई। जो पूरे सरेन्डर हैं वह समझेंगे हम ईश्वरीय माँ बाप से पलते हैं। बाबा यह सब कुछ आपका है। आप हमारी पालना करते हो। जो बच्चे अर्पण होते हैं उनसे सभी की पालना हो जाती है। भल कोई नौकरी करते हैं तो भी समझते हैं यह सब कुछ बाबा के लिए है। तो बाप को भी मदद करते रहते हैं। नहीं तो यज्ञ की कारोबार कैसे चले। राजा रानी को भी मात पिता कहते हैं। परन्तु वह फिर भी जिस्मानी मात-पिता हुए। राज माता भी कहते हैं तो राज पिता भी कहते हैं। यह फिर है बेहद के। बच्चे जानते हैं कि हम मात पिता के साथ बैठे हैं। यह भी बच्चे जानते हैं कि हम जितना पढ़ेंगे और पढ़ायेंगे उतना ऊँच पद पायेंगे। साथ2 शरीर निर्वाह अर्थ कर्म भी करना है। यह दादा भी बुजुर्ग है। शिवबाबा को कभी बूढ़ा वा जवान नहीं कहेंगे। वह है ही निराकार। यह भी तुम जानते हो कि तुम आत्माओं को निराकार बाप ने एडाप्ट किया है और फिर साकार में है यह ब्रह्मा। हम आत्मा कहती है हमने बाप को अपना बनाया है। फिर नीचे आओ तो कहेंगे हम भाई बहिनों ने ब्रह्मा को अपना बनाया है।

शिवबाबा कहते हैं-तुम भी ब्रह्मा द्वारा हमारी ब्रह्मा मुख वंशावली बने हो। ब्रह्मा भी कहते हैं तुम हमारे बच्चे बने हो। तुम ब्राह्मणों की बुद्धि में श्वाँसों श्वाँस यही चलेगा-कि यह हमारा बाप है। वह हमारा दादा है। बाप से जास्ती दादे को याद करते हैं। वह मनुष्य तो बाप से झगड़ा आदि कर भी दादे से प्रापर्टी लेते हैं। तुमको भी कोशिश कर बाप से भी जास्ती दादे से वर्सा लेना है। बाबा जब पूछते हैं तो सभी कहते हैं हम नारायण को वरेंगे। कोई2नये आते थे, पवित्र नहीं रह सकते तो वह हाथ नहीं उठा सकते। कह देते माया बड़ी प्रबल है। वह तो कह भी नहीं सकते कि हम श्री नारायण को वा श्री लक्ष्मी को वरेंगे। देखो जब बाबा तन्मुख सुनाते हैं तो कितना खुशी का पारा चढ़ता है। बुद्धि को रिफ्रेश किया जाता है तो नशा चढ़ता है फिर कोई2बच्चे को वह नशा स्थाई रहता है, कोई2का कम हो जाता है। बेहद के बाप को याद करना है, 84जन्मों को याद करना है और चक्रवर्ती राजाई को भी याद करना है। जो मानने वाले नहीं होंगे उनको याद नहीं रहेंगी। बापदादा समझ जाते हैं कि बाबा 2 कहते तो हैं परन्तु सच्चा2याद करते नहीं हैं और न लक्ष्मी न नारायण को वरने लायक हैं। चलन ही ऐसी है। अन्तर्यामी बाप हर एक की बुद्धि को समझते हैं। यहाँ शास्त्रों की तो कोई बात ही नहीं। बाप ने आकर राजयोग सिखाया है। जिसका नाम गीता रखा है। बाकी तो सब छोटे मोटे धर्मों वाले अपना2शास्त्र बना लेते हैं। फिर वह पढ़ते रहते हैं। बाबा कहते हैं- बच्चे मैं तुमको स्वर्ग की राह बताने आया हूँ। तुम जैसे अशरीरी आये थे वैसे ही तुमको जाना है। देह सहित सब इन दुखों के कर्मबन्धन को छोड़ देना है क्योंकि देह भी दुख देती है। बीमारी होगी तो क्लास में आ नहीं सकेंगे। तो यह भी देह का बंधन हो गया। इसमें बुद्धि बड़ी सालिम चाहिए। पहले तो निश्चय चाहिए कि बरोबर बाबा स्वर्ग रचता है। अभी तो है नर्क। जब कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्ग गया, तो जरूर नर्क में था ना। परन्तु यह तुम अभी समझते हो क्योंकि तुम्हारी बुद्धि में स्वर्ग है। बाबा रोज़2 नये2रीति से समझाते हैं तो तुम्हारी बुद्धि में अच्छी रीति बैठे। हमारा बेहद का मात पिता है। तो पहले बुद्धि एकदम ऊपर चली जायेगी। फिर कहेंगे इस समय बाबा आक में है। जैसे यात्रा पर जाते हैं तो बद्रीनाथ का मन्दिर ऊपर रहता है पण्डे ले जाते हैं बद्रीनाथ, खुद तो ले चलने लिए नहीं आता है। मनुष्य ही पण्डा बनते हैं। यहाँ शिवबाबा खुद आते हैं परमधाम से। कहते हैं हे आत्मायें तुमको यह शरीर जोड़ शिव पुरी चलना है। जहाँ जाना है वह निशाना जरूर याद रहेगा। वह बद्रीनाथ चैतन्य में आकर बच्चों को साथ ले जाये, ऐसे तो हो नहीं सकता। वह तो यहाँ का रहवासी है। यह परमपिता परमात्मा कहते हैं मैं परमधाम का रहवासी हूँ। तुमको लेने लिए आया हूँ। वह रूहानी बाप कहते हैं मुझे याद करो। बाप ऐसी युक्ति से यात्रा सिखाते हैं जो जब विनाश हो तो तुम आत्मा शरीर जोड़ सीधा बाप के पास चले जायेंगे फिर तो शुद्ध आत्मा को शुद्ध शरीर चाहिए। सो तब होगा जब इस पुरानी सृष्टि का विनाश हो। मच्छरों समुदाय सभी वापिस चले जायेंगे, बाबा के साथ। इसलिए उनको खिवैया भी कहा जाता है। इस विष्य सागर से उस पार ले जाते हैं। जैसे हमारी आत्मा है वैसे बाबा की आत्मा है। सिर्फ हम पहले अज्ञानी थे वह ज्ञान का सागर है। अज्ञानी उसको कहा जाता है जो रचता और रचना को नहीं जानते हैं। रचता द्वारा जो रचता और रचना को जानते हैं उनको ज्ञानी कहा जाता है। यह ज्ञान तुमको यहा मिलता है। सतयुग में नहीं मिलता। वो लोग कहते हैं परमात्मा विश्व का मालिक है। जैसे फरूखाबाद वाले कहते हैं हम उस मालिक को याद करते हैं। परन्तु वास्तव में विश्व का अथवा सृष्टि का मालिक तो ल0ना0बनते हैं। निराकार शिवबाबा तो विश्व का मालिक बनते नहीं। तो उन्हों से पूछना पड़े कि वह मालिक निराकार है या साकार निराकार तो साकार सृष्टि का मालिक हो न सके। वह है ब्रह्माण्ड का मालिक। वही आकर पतित दुनिया को पावन बनाते हैं। खुद पावन दुनिया का मालिक नहीं बनते। उनका मालिक तो लक्ष्मी नारायण बनते हैं और बनाने वाला है बाप। यह बड़ी गुह्य बातें हैं समझने की। हम आत्मा भी जब ब्रह्म तत्व में रहती हैं तो ब्रह्माण्ड के मालिक हैं। जैसे राजा रानी कहेंगे हम भारत के मालिक हैं तो प्रजा भी कहेगी हम मालिक हैं। वहाँ रहते तो हैं ना। वैसे बाप ब्रह्माण्ड का मालिक है। हम भी मालिक ही ठहरे। फिर बाबा आकर नई मनुष्य सृष्टि

रचते हैं।कहते हैं मुझे इस पर राज्य नहीं करना है। मैं मनुष्य नहीं बनता हूँ। मैं तो यह शरीर भी लोन लेता हूँ। तुमको सृष्टि का मालिक बनाने के लिए राजयोग सिखलाता हूँ। तुम जितना पुरूषार्थ करेंगे उतना ऊँच पद पायेंगे। इसमें कमी मत करो। टीचर तो सभी को पढ़ाते हैं।अगर इम्तहान में बहुत पास होते हैं तो टीचर का भी शो होता है फिर उनको गवर्मेन्ट से लिफ्ट मिलती है।यह भी ऐसे है। जितना अच्छा पढ़ेंगे उतना अच्छा पद मिलेगा। माँ बाप भी खुश होंगे। इम्तहान में पास होते हैं तो मिठाई बाँटते हैं।यहाँ तो तुम रोज़ मिठाई बाँटते हो फिर जब इम्तहान में पास हो जाते हो तो उन पर सोने के फूलों की वर्षा होती है। परन्तु तुम्हारे ऊपर कोई आकाश से फूल नहीं गिरेंगे। यह तो कोई की मडिया करने के लिए सोने के फूल बनाकर उन पर छाँटते हैं। जैसे दरभंगा का राजा बहुत साहूकार था उनका बच्चा विलायत गया तो पार्टी दी, बहुत पैसा खर्च किया। उसने सोने के फूल बना कर वर्षा की थी।उस पर बहुत खर्चा हो गया। बहुत नाम हुआ था। कहते थे देखो भारतवासी कैसे पैसे उड़ाते हैं। तुम तो खुद ही सोने के महलों में जाकर बैठेंगे तो तुमको कितना नशा रहना चाहिए। बाप कहते हैं सिर्फ मेरे को और चक्र को याद करो तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा। कितना सहज है।

तुम बच्चे हो चैतन्य परवाने, बाबा है चैतन्य शमा। तुम कहते हो अभी हमारा राज्य स्थापन होना है। अब सच्चा बाबा आया हुआ है भक्ति का फल देने। बाबा ने खुद बतलाया है मैं आकर कैसे नये ब्राह्मणों की सृष्टि रचता हूँ। मुझे जरूर आना पड़े। तुम बच्चे जानते हो हम ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ हैं। शिवबाबा के पोत्रे हैं। यह फैमली है वन्डरफुल। कैसे देवी देवता धर्म का कलम लग रहा है। झाड में क्लीयर है। नीचे तुम बैठे हो। तुम बच्चे कितने सौभाग्यशाली हो मोस्ट बिलवेड बाप बैठ समझाते हैं कि मैं आया हूँ तुम बच्चों को रावण की जेंजीरों से छड़ाने। रावण ने तमको रोगी बना दिया है। अब बापदादा कहते हैं मुझे याद करो अर्थात् शिवबाबा को याद करो तो तुम्हारे ज्यादा जंग लगेगा। फिर तुम उड़ने के लायक बन जायेंगे। माया ने सबके पंख तोड़ डाले हैं। अच्छा-

मीठे2सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग।

रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:- §1§ बुद्धि को तालिम बनाने के लिए देह में रहते, देह के बन्धन से न्यारा रहना है। अशरीरी बनने का अभ्यास करना है। बीमारी आदि के समय भी बाप की याद में रहना है।

§2§ पारलौकिक मात पिता के बच्चे बने हैं इसलिए बहुत2मीठा रॉयल, पीसफुल, नालेजफुल और ब्लिसफुल रहना है। पीस में रह पीस स्थापन करनी है।

निश्चयबुद्धि और बेफिक्र बादशाह बनो:-

11- निश्चय के फाउन्डेशन के 4 स्तम्भ हैं- बाप में निश्चय के साथ2 अपने श्रेष्ठ स्वमान को, ब्राह्मण परिवार को और इस पुरूषोत्तम युग के समय के महत्व को यथार्थ जानना, मानना और उसी प्रमाण चलना ही सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि बनना है। निश्चयबुद्धि अर्थात् त्रिकालदर्शी बनकर हर बात सुनो और बोलो। नालेजफुल होकर हर कर्म के परिणाम को जानकर कर्म करो तो निश्चय और विजय की समानता बेफिक्र बादशाह बना देगी।

1- डभोई §गुज§ सेवा केन्द्र का फोन नं. बदली हुआ है, नया नं. 2745 है।
2- कोलार §कर्नाटक§ सेवा केन्द्र का फोन नं. 3306 है।
3- जोधपुर §राज§ सेवा केन्द्र का फोन नं. 42103 है।

(३०)

*12.1.93 प्रातःक्लास ओमशान्ति "पिताश्री" शिवबाबा याद है?

"मीठे बच्चे-एक मनमनाभव के महामन्त्र से तुम बेसमझ से समझदार बनते हो, यही मन्त्र सब पापों से मुक्त करने वाला है"

प्रश्नः-सारे ज्ञान का सार क्या है?मनमनाभव रहने वालों की निशानी क्या होगी?

उत्तरः-सारे ज्ञान का सार है-कि इस छी2पतित दुनिया को छोड़ हमें अपने घर वापस चलना है।अगर यह याद रहे तो भी मनमनाभव हुआ। मनमनाभव रहने वाले बच्चे सदा ज्ञान का विचार सागर मंथन करते रहेंगे।वह बाबा से मीठी2रूहरिहान करेंगे।मनमनाभव रहने वाले सब पापों से मुक्त हो जाते हैं।

प्रश्नः-किस आदत के वशीभूत आत्मा बाप की याद में नहीं रह सकती?

उत्तरः-अगर गन्दे चित्र देखने की, गन्दे समाचार पढ़ने की आदत पड़ी तो बाप की याद रह नहीं सकती।सिनेमा है दोजक का द्वार जो वृत्तियों को खराब कर देता है।

ओमशान्ति।रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। समझाना उनको होता है, जिनमें कुछ समझ कम है।तुम अभी बहुत समझदार बन चुके हो।बच्चे जानते हैं बाबा तो बहुत वन्डरफुल है।ऐसे कोई मनुष्य नहीं होंगे जो समझें कि यह हमारा बेहद का बाप भी है, बेहद की शिक्षा भी देते हैं। सृष्टि के आदि मध्य अन्त का राज़ भी समझाते हैं। स्टूडेन्ट की बुद्धि में नालेज होनी चाहिए ना और फिर बाप साथ में भी जरूर ले जायेगा क्योंकि बाप जानते हैं कि यह पुरानी छी2दुनिया है।इस पुरानी दुनिया से मैं बच्चों को घर ले जाने आया हूँ।बाबा समझाते हैं यहाँ बैठे2बच्चों के अन्दर में जरूर आता होगा कि ओहो।यह हमारा बेहद का बाप भी है फिर शिक्षा भी बहुत ऊँची देते हैं।सारी रचना के आदि मध्य अन्त का राज़ भी समझाया है।यह सब याद करना भी मनमनाभव है।यह भी तुम्हारे चार्ट में आ सकता है।यह तो बहुत सहज है और भल कुछ भी न करो परन्तु उठते बैठते चलते फिरते बुद्धि में यह याद रहे। वन्डरफुल चीज को याद करना होता है।तुम समझते हो बाबा को याद करने से, पढ़ाई पढ़ने से हम फिर से विश्व का मालिक बनते हैं।यह बुद्धि में चलता रहना चाहिए।भल कहीं भी बस ट्रेन आदि में बैठे हो परन्तु बुद्धि में याद हो।पहले2 तो बच्चों को बाप चाहिए।तुम जानते हो हम आत्माओं का रूहानी बेहद का बाप है।सहज याद दिलाने लिए बाबा युक्ति बताते हैं। मामेकम् याद करो तो आधाकल्प के जो तुम्हारे विकर्म हैं वह सब योग अग्नि से भस्म हो जायें। जन्म जन्मान्तर बहुत ही यज्ञ तप आदि किये हैं।भक्ति मार्ग वालों को पता नहीं है कि यह सब क्यों करते हैं।इनमें क्या प्राप्ति होगी। मन्दिरों में जाते हैं इतनी भक्ति करते हैं-समझते हैं यह सब परम्परा से चला आया है। शास्त्रों के लिए भी कहेंगे यह परम्परा से चले आये हैं।मनुष्यों को पता ही नहीं है कि स्वर्ग में तो शास्त्र पढ़े ही नहीं जाते। वहाँ शास्त्र होते नहीं।वह समझते हैं सृष्टि के शुरू से ही यह सब चला आता है। न किसको यह कह सकते कि बेहद का बाप कौन है।यहाँ हद का बाप वा हद का टीचर तो नहीं है।हद के टीचर से तो तुम सब पढ़े हुए हो।जो पढ़कर ही नौकरी आदि करते हैं।कमाई करते हैं।तुम बच्चे जानते हो यह जो हमारा बेहद का बाप है, उनका कोई भी बाप है नहीं और यह बेहद का टीचर भी है, इनका कोई टीचर नहीं। इन देवताओं को किसने पढ़ाया, यह तो जरूर याद आना चाहिए ना।यह भी मनमनाभव है।यह पढ़ाई तो कहीं से पढ़े नहीं हैं।बाप स्वयं ही नालेजफुल है।इनको किसने पढ़ाया है क्या? मनुष्य सृष्टि का वह बीजरूप है और चैतन्य है, ज्ञान का सागर है।चैतन्य होने कारण मनुष्य सृष्टि रूपी झाड का आदि से अन्त का राज़ सुनाते हैं। अन्त में आकर आदि का ज्ञान सुनाते हैं और कहते हैं हे बच्चों जिस तन में मैं विराजमान हूँ, इन द्वारा मैं आदि से लेकर इस समय तक सब कुछ सुनाता हूँ।अन्त के लिए तो पीछे समझायेंगे। तुम आगे चलकर समझ जायेंगे कि अब अन्त है क्योंकि उस समय तुम कर्मातीत अवस्था को पहुँच जायेंगे और आसार भी देखेंगे कि इस पुरानी छी2 दुनिया का विनाश तो होना ही है। यह कोई नई बात नहीं है। अनेक बार देखी है और देखते ही रहेंगे। कल्प पहले राज्य लिया था फिर गँवाया फिर अब ले रहे हैं।बाबा हमको पढ़ाते हैं।तुम समझते हो हम ही विश्व के मालिक थे फिर 84जन्म लिये।अब फिर बाबा विश्व का मालिक बनाने के लिए वही ज्ञान दे रहे हैं। तुम अन्दर में समझते हो बाबा टीचर भी है अच्छा अगर बाप याद नहीं पड़ता तो टीचर को

याद करो।टीचर कभी भूलेगा क्या।टीचर से तो पढ़ते रहते हो।हाँ माया गफलत कराती है-वह तुमको पता नहीं पड़ता है। माया आंखों में एकदम धूल डाल देती है।जो हमको भगवान पढ़ाते हैं-यह एकदम भूल जाते हैं।बाप हर बात की समझानी देते हैं।यह है बेहद की समझानी। वह है हद की।यह बेहद की नालेज बाबा कल्प2तुम बच्चों को देते हैं।अच्छा जास्ती पढ़ नहीं सकते हो तो भला बाबा के रूप से याद करो।उनका तो कोई बाप है नहीं वह सबका बाप है। परन्तु उनके बच्चे सब हैं। कोई बता सकेगा कि शिवबाबा किसका बच्चा है?वह है बेहद का बाप। बच्चे समझते हैं हम बेहद के बाप के बने हैं।यह हमारी पढ़ाई भी वन्डरफुल है और हम ब्राह्मण ही पढ़ते हैं। देवता वा क्षत्रिय वैश्य शूद्र यह पढ़ाई नहीं पढ़ सकते।बाप की यह नालेज ही बिल्कुल न्यारी है।तुम्हारे सिवाए कोई समझ न सके।तुम बच्चों को खुशी का पारा चढ़ता है कि हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनें अब ऊँच पद पाने के लिए खूब पुरूषार्थ करना है। ऐसे नहीं स्वर्ग में तो सब जायेंगे। परन्तु ऊँच पद नहीं मिलेगा।अगर ज्ञान और योग की धारणा नहीं होगी तो। बाबा कहते हैं ।6कला सम्पूर्ण बनने में याद की बहुत मेहनत है। देखना है-किसको दुख तो नहीं देते हैं। हम सुखदाता के बच्चे हैं, सबको सुख देना है।मन्सा-वाचा-कर्मणा किसको दुख नहीं देना है। इस समय तुम जो पढ़ते हो, गुलगुल बनते हो।यह कमाई ही तुम्हारे साथ चलने वाली है। इसमें कोई किताब आदि पढ़ने की जरूरत ही नहीं।उस पढ़ाई में कितने किताब आदि पढ़ने पड़ते हैं।यह बाबा की नालेज सबसे न्यारी है। और बड़ी सहज भी है। (f) परन्तु है सब गुप्त। तुम्हारे सिवाए कोई समझ न सके कि यह क्या पढ़ते हैं।वन्डरफुल पढ़ाई है।बाप कहते हैं कभी अबसेन्ट नहीं होना।पढ़ाई कभी नहीं छोड़ना। बाबा के पास सबका रजिस्टर आता है। उनसे ही बाबा समझ जाते हैं यह ।0मास अबसेन्ट रहा यह 6 मास रहा। कोई तो चलते2पढ़ाई भी छोड़ देते हैं।यह बहुत वन्डरफुल चीज है। ऐसी वन्डरफुल चीज और कोई होती ही नहीं।कल्प2 तुम बच्चों को ऐसा बाप आकर मिलता है। तुम बच्चे जानते हो यह साकार बाबा तो पुनर्जन्म में आता है। यह 84का चक्र लगाते हैं। तत्त्वम् -यह खेल है ना।खेल कभी भूला नहीं जाता है।खेल सदैव याद रहता है। बाबा समझाते हैं एक तो यह दुनिया दोज़क है और इसमें भी खास यह बाइसकोप(सिनेमा) दोजक है।वहाँ जाने से वृत्तियां बहुत खराब हो जाती हैं। अखबार में भी कोई अच्छे2चित्र देखते हैं तो उसमें भी बुद्धि जाती है-यह खूबसूरत है, इनको प्राइज मिलनी चाहिए, ख्यालात चलती हैं।ऐसा देखें ही क्यों। बुद्धि से समझते हैं यह सारी दुनिया ही खत्म हो जाने वाली है। तुम सिर्फ मुझे ही याद करो। ऐसी2चीजें न देखो न ख्याल करो।यह तो पुरानी दुनिया के छी2गन्दे शरीर हैं।इनके तरफ क्या देखना है। एक बाप को ही देखना है। बाबा कहते हैं मीठे बच्चे मंजिल बहुत ऊँची है। माया कोई कम नहीं है। माया का देखो कितना झपका है।उस तरफ है साइन्स और यहाँ है तुम्हारी साइलेन्स। वो लोग चाहते हैं मुक्ति को पायें।यहाँ तुम्हारी एम आब्जेक्ट है जीवन-मुक्ति को पाने की। जीवनमुक्ति पाने का कोई रास्ता बता न सकें।सन्यासी आदि कोई भी यह नालेज दे न सकें।(वो किसको समझा नहीं सकते कि गृहस्थ व्यवहार में रहकर पवित्र) बनना है।यह एक ही बाप समझाते हैं। भक्ति मार्ग में टाइम वेस्ट ही होता आया है। कितनी भूलें होती हैं। भूल करते2 भोले ही बन गये हैं। लास्ट जन्म 100% झूठों का ही है। जरा भी बुद्धि काम नहीं करती है। अब बाबा तुमको समझाते हैं तब तुम समझते हो। अभी तुम सब समझ गये हो तो औरों को भी समझाते हो।खुशी का पारा भी तुम्हें चढ़ता है। वन्डर है ना-इस बाप को कोई बाप नहीं कोई शिक्षक नहीं। तब सीखा कहाँ से? मनुष्य वन्डर खायेंगे। बहुत समझते हैं इनका जरूर कोई गुरू होगा।अगर यह भी गुरू से सीखा हुआ हो फिर गुरू के और भी शिष्य होने चाहिए।सिर्फ यह एक शिष्य थोड़ेही होगा। गुरू के तो बहुत शिष्य होते हैं। आगाखां के देखो कितने शिष्य हैं। उन्हों को गुरू के लिए देखो कितना रिगार्ड रहता है। उनको हीरों में वजन करते हैं।तुम कितने में वज़न करेंगे?यह तो सबसे सुप्रीम है। इनका वज़न कितना होगा?तुम क्या करेंगे? वज़न करें तो कितना होगा? कोई चीज़ पड़ सकती है?शिवबाबा तो बिन्दी हैं ना। आजकल वज़न बहुत करते हैं।कोई सोने में, कोई चांदी में, कोई प्लाटेनियम में भी करते हैं।वह सोने से भी महंगा होता है।अब बाप समझाते हैं-वह जिस्मानी गुरू तो तुम्हें

सदगति देते नहीं (सदगति में ले जाने वाला तो एक ही बाप है। उनको किसमें वजन करेंगे? मनुष्य तो सिर्फ भगवान2ही कहते रहते हैं। लेकिन यह नहीं जानते कि वह बाप है, टीचर भी है। बैठे कितना साधारण हैं। बच्चों का झुंड़ा देखने के लिए थोड़ा सा ऊपर बैठते हैं। मददगार बच्चों के बिगर हम स्थापना कैसे कर सकते हैं। जो ज़ास्ती मदद करते हैं उनको ज़रूर बाबा लॅव करेंगे। लौकिक में भी एक बच्चा 200क्माता दूसरा 150क्माता होगा। तो बाप का लॅव किस पर रहेगा? परन्तु आजकल तो बच्चे पूछते ही बाप को कहाँ हैं। बेहद का बाप भी देखते हैं फलाने2बच्चे बहुत अच्छे मददगार हैं। बच्चों को देख देख बाबा हर्षित होते हैं। अन्तर्मा खुशी होती है। कल्प2 मैं आता हूँ और बच्चों को देख बहुत खुश होता हूँ। जानता हूँ कल्प2यह हमारे मददगार बनते हैं। यह बाबा का प्यार कल्प2का बन जाता है। कहाँ भी बैठो बुद्धि में यह सोचो बाबा हमारा बाप भी है, टीचर भी है, गुरू भी है। स्वयं ही सब कुछ है। तब तो सब उनको ही याद करते हैं। सतयुग में कोई याद नहीं करेंगे। क्योंकि 2।जन्मों के लिए बाप बेड़ा पार कर देते हैं। ऐसे2 तिमरण कर बच्चों को हर्षित होना चाहिए। खुशी होनी चाहिए कि हम ऐसे बाप की सर्विस करें। बाप का सबको परिचय दें। यह बेहद का बाप है। बाप ही स्वर्ग की स्थापना करते हैं। बाप से ही हमको वर्सा मिलता है। बाप ही हमको राजयोग सिखलाते हैं। बाप ही हम सबको साथ भी ले जाते हैं। ऐसी2 समझानी से सर्वव्यापी कह नहीं सकेंगे। बाप ने कहा है विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ती। वह सब खत्म हो जायेंगे बाकी तुम विजय पायेंगे। तुम राजधानी स्थापन कर रहे हो। आत्माओं का बाप आत्माओं को बैठ समझाते हैं। तो ऐसी2 वन्डरफुल बातें सबको सुनानी चाहिए। अच्छा-

मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:- 1। सुखदाता के हम बच्चे हैं, हमें सबको सुख देना है। मन्सा वाचा कर्मणा किसी को भी दुख नहीं देना है।

2- पढ़ाई और पढ़ाने वाला दोनों ही वन्डरफुल है। ऐसी वन्डरफुल पढ़ाई को कभी भी मिस नहीं करना है। अबसेन्ट नहीं होना है।

निश्चयबुद्धि और बेफिकर बादशाह बनो :-

12- हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, इस निश्चय से स्वयं को मालिक समझकर कर्मेन्द्रियों को अपने आर्डर से चलाना है। कभी उनके वश नहीं होना है। इस निश्चय से सदा स्मृति स्वरूप बनना है। स्मृति से ही समर्थी आती है। ऐसे स्मृति से समर्थी स्वरूप तथा स्वराज्य अधिकारी बनना है।

आजमगढ़, जालना, कृष्णागिरी तथा सुन्दर नगर सेवा केन्द्रों का मकान बदली हुआ है, नया एड्रेस लिख रहे हैं।

(1) BRAHMA KUMARIS,
K.M. 382 NEW COLONY-
RAIDOPUR
AZAMGARH-276001 (U.P.)

(2) BRAHMA KUMARIS
TAPASYA BHAWAN,
LAKKADKOT EKATMAKNAGAR
JALNA-431203 (Maha)

(3) BRAHMA KUMARIS
3, GOPAL KRISHANAN COLONY,
BANGALORE ROAD,
KRISHNAGIRI-635001
DIST. DHARAMPURI-(T.N.)

(4) BRAHMA KUMARIS,
SUNDERNAGAR-125046
(KHARIRI) DIST. MANDI(H.P.)

३१

8-8-93 प्रातःक्लास ओम् शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है ?

"मीठे बच्चे – 21 जन्मों के लिए पुण्य का खाता जमा करना है, योगबल से पापों के खाते को भस्म करना है इसलिए अन्तर्मुखी बनो"

प्रश्नः- किस श्रीमत का पालन करने से वाणी से परे जाने का पुरुषार्थ सहज हो जायेगा ?

उत्तरः- श्रीमत कहती है – बच्चे, अन्तर्मुखी हो जाओ, बाहर से कुछ भी न बोलो । इस श्रीमत को पालन करेंगे तो सहज ही वाणी से परे जा सकेंगे । जितना याद करेंगे, स्वदर्शन चक्र फिरायेंगे उतना कमाई जमा होती जायेगी । याद के लिए अमृतवेले का समय बहुत अच्छा है । उस समय उठकर अन्तर्मुखी बन आत्म स्वरूप में स्थित होकर बैठ जाओ ।

गीतः- तूने रात गँवाई..... ओम् शान्ति ।

यह कौन समझाते हैं कि अन्तर्मुखी हो जाओ, बाहर से कुछ भी न बोलो, अपनी आत्मा के स्वरूप में स्थित होकर बैठो ? बाप बच्चों से कहते हैं मुख से कुछ भी बोलो नहीं । राम-राम आदि तो बहुत कहते आये परन्तु उस कहने से भी मनुष्य पावन नहीं बन सकते । मनुष्य पतित से पावन तब बन सकते जब पतित-पावन बाप की श्रीमत पर चलें । पतित-पावन कहने से बाप याद आता है । बाप कहते है कि तुम बरोबर पतित थे ना । अब तुम पावन बन रहे हो । सतयुग में कोई पतित होता नहीं । पांच हजार वर्ष पहले जब भारत पावन था तो एक ही धर्म था । बाप तो सुख की ही सृष्टि रचेंगे ना । भारत सुखधाम था । लक्ष्मी-नारायण, राम-सीता आदि के मन्दिर सतयुग-त्रेता की निशानी हैं । सतयुग में बरोबर लक्ष्मी-नारायण की डिनायस्टी थी । यही भारत था जिसमें सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी का राज्य चलता था । जो अब फिर से स्थापन हो रहा है । इसको कहा जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जाग्राफी । यह मनुष्य ही तो जानेंगे । मनुष्य नहीं जानते तो जानवर से भी बदतर कहा जाता है । बाप को जानने लिए कितने धक्के खाते हैं, परन्तु जान नहीं सकते । तुम बाप के बच्चे बने हो तो बाप अपना परिचय देते हैं । पहले परिचय नहीं था तो इसका परिणाम क्या हुआ ? आरफन, नास्तिक, निधन के बन जाते हैं । अभी तुम बाप के बने हो, बाप से वर्सा ले रहे हो । बड़ा भारी वर्सा है, 21 जन्म स्वर्ग की राजधानी मिलती है, कोई कम बात है क्या ! लक्ष्मी-नारायण को पांच हजार वर्ष हुआ राज्य करते । फिर से हिस्ट्री रिपीट होती है ।

बाप समझाते हैं – मेरी श्रीमत पर चलो, अन्तर्मुखी बनो, बाहरमुखी मत बनो । अब इस समय है घोर अन्धियारा । इनको रात कहा जाता है । अभी सवेरा आ रहा है । कलियुग अन्त को घोर अन्धियारा, सतयुग आदि को घोर सोझरा कहा जाता है । बाप कहते हैं मैं आता ही हूँ संगम पर जबकि सभी मनुष्य पतित हैं । अभी तुम बच्चों को सदा सुख का वर्सा देने आया हूँ । विनाश सामने खड़ा है । बहुत गई थोड़ी रही..... इसलिए अब जल्दी-जल्दी पुरुषार्थ कर बेहद के बाप से वर्सा लो, जैसे सब ले रहे हैं । सब पुरुषार्थी हैं । अब सबको स्वीट होम, वाणी से परे जाना है । वह है हम आत्माओं का घर, निर्वाणधाम । धाम में कोई एक नहीं रहते । जितनी अभी जीव आत्मायें हैं 550 करोड़, वह सभी शरीर छोड़ जायेंगे अपने घर बाबा के पास । वह है निराकारी झाड़ । जैसे चित्र में भी झाड़ दिखाया जाता है । वह है हम आत्माओं का घर – शान्तिधाम । फिर हम आयेंगे सुखधाम । अभी 84 जन्मों का चक्र पूरा होता है,

कलियुग के बाद सतयुग जरूर आयेगा ना । द्वापर के बाद कलियुग जरूर आयेगा । बाप कहते हैं — मैं कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे आता हूँ, पुरानी दुनिया का विनाश कराता हूँ । जब तक नई दुनिया स्थापन हो जाए तब तक इस पुरानी दुनिया में रहना पड़े । जब तक नया मकान बन जाये तब तक पुराने मकान में बैठे रहते हैं ना । फिर जब नया बन जाये फिर पुराने को तोड़ा जाता है । यह भी पुरानी चीज हैं ना । इसके विनाश के लिए यह है महाभारत लड़ाई । बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं । आत्मा ही समझती है — जिस्मानी नॉलेज भी आत्मा सीखती है ना । आत्मा कहती है मैं प्रिन्सीपाल हूँ, सर्जन हूँ । आत्मा की नॉलेज न होने कारण देह अभिमानी हो जाते हैं । आत्मा ही संस्कार ले जाती है । तुम बच्चे समझते हो शिवबाबा हम आत्माओं को समझा रहे हैं । हम आत्मा यह पुराना शरीर छोड़ फिर नया जाकर लेंगी । अभी हम श्याम हैं फिर सुन्दर बनेंगे । सुन्दर से श्याम बनते हैं । **84** जन्म लग जाते हैं । फिर बाबा काम चिता से उतार ज्ञान चिता पर बिठाए गोल्डन एज का मालिक बना देते हैं । बेहद का बाप जरूर बेहद का वर्सा देगा ना । बाप तो ऊंच ते ऊंच हैं । कहते हैं बच्चों के लिए वैकुण्ठ की सौगात लाये है । हथेली पर बहिश्त लाया हूँ । सेकेण्ड में तुम साक्षात्कार कर लेते हो । कितने ढेर ब्रह्माकुमार-कुमारियां हैं । जरूर ब्रह्मा के बच्चे हैंऔर शिवबाबा के पोत्रे हैं । तुम कहते हो हम शिवबाबा से वर्सा लेते हैं । वही सर्व का सद्गति दाता है । राजयोग सिखलाते हैं । निराकार कैसे सिखलायें, इसलिए आरगन्स द्वारा पढ़ाते हैं । सृष्टि चक्र की नॉलेज देते हैं । जिसको परम आत्मा, सुप्रीम सोल कहते हैं उसकी ही सारी महिमा है । ज्ञान का सागर, पतित-पावन वह है तो जरूर आना पड़े । तुमको भी मास्टर सुप्रीम अथवा पावन बनाते हैं । वह है बेहद का बाप जिसको सभी भक्त बुलाते हैं । सभी भक्तों का बाप वह भगवान् है — परमपिता परमात्मा । अगर उनको सर्वव्यापी कह देते तो फिर वर्सा कैसे मिलेगा ? मनुष्य को भगवान् नहीं कह सकते । कृष्ण को भी दैवीगुणधारी मनुष्य कहा जाता है, वह है फर्स्ट प्रिन्स । सभी उनको झूले में झुलाते हैं । शिवबाबा को कभी झुलाते नहीं होंगे । क्योंकि वह कभी बच्चा बनता ही नहीं । यह तो साक्षात्कार कराते हैं समझाने के लिए — हम तुम्हारा बच्चा हूँ, तुम हमको अपना वारिस बनायेंगे, बलिहार जायेंगे तो मैं भी बलिहार जाऊंगा । बलिहार जाते हो तो जैसे मैं तुम्हारा बालक हो गया ।

मनुष्यों में कितनी अन्धश्रद्धा है जहाँ तहाँ माथा टेकते रहते हैं इसको कहा जाता है गुड़ियों की पूजा । नवरात्रि में बहुत गुड़ियां बनायेंगे । उनके आक्यूपेशन का किसको पता नहीं है । **4-6** भुजा वाली देवी थोड़ेही होती है और फिर तलवार आदि दे देते हैं । देवतायें हिंसक थोड़ेही होते हैं । शास्त्रवादियों ने उन्हें भी हिंसक बना दिया है । नेपाल में भी काली को पूजते हैं फिर ऐसे है थोड़ेही । मम्मा ऐसी काली जीभ वाली है थोड़ेही । मनुष्य तो मनुष्य ही होता है । ब्रह्मा, विष्णु, शंकर हैं सूक्ष्मवतनवासी । बस, और कोई चीज ही नहीं है फिर **8-10** भुजा वाले कहाँ से आये ! यह सब भक्ति मार्ग के अलंकार बनाते हैं । पैसा कमाने के लिए कुछ तो चाहिए ना । फिर किस्म-किस्म के चित्र बैठ बना देते हैं । वहाँ ही देखो सुन्दर कृष्ण का मन्दिर, वहाँ हीं सांवरे कृष्ण का मन्दिर । कारण तो चाहिए ना । कितनी अन्धश्रद्धा है ! अब भक्ति मार्ग खत्म हो ज्ञान मार्ग जिंदाबाद होता है । बाकी समय तो थोड़ा है, सबको मरना तो जरूर है । पुत्र-पोत्रे वारिस बनने नहीं हैं । वहाँ तुमको यह ज्ञान ही नहीं रहेगा कि संगम पर हमने राजाई के लिए

यह पुरुषार्थ किया था । वहाँ तो पवित्र सृष्टि चल पड़ती है । यहाँ तुम जानते हो कि बरोबर हम बाबा की राजधानी के हकदार हैं । वहाँ यह पता नहीं रहेगा कि कौन-से कर्म किये थे, कैसे बनें – यह सब भूल जाता है । वहाँ पतित होते ही नहीं, जो पावन बनने के लिए गुरु की दरकार पड़े । बाप पैर धोकर बच्चों को तख्त पर बिठाते हैं । गुरु चाहिए सद्गति के लिए । वहाँ तो है ही सद्गति । गुरु की दरकार ही नहीं । बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो, देह अभिमान में न रहो । मैं आत्मा अभी डॉक्टर के रूप में हूँ, मैं आत्मा मजिस्ट्रेट हूँ फिर यह शरीर छोड़ने के बाद पता नहीं क्या बनूँगा ? हम इस शरीर द्वारा पढ़ते हैं । आत्मा ही इन आरगन्स द्वारा पढ़ती है, आत्मा ही सुनती है – यह समझने की बातें हैं, न कि दन्त कथायें हैं ।

बाप कहते हैं यह सारी दुनिया कब्रिस्तान होनी है । अब जागो, नहीं तो भंभोर को आग लगने के समय हाय-हाय करेंगे । परन्तु कुछ भी कर नहीं सकेंगे, काल खा जायेगा, त्राहि-त्राहि करके रह जायेंगे । सजायें भी बहुत खायेंगे । अभी हमें पापों का खाता ख़लास कर पुण्य के खाते को जमा करना है । नयेसिर 21 जन्मों के लिए जमा करना है । जमा होगा बाप को याद करने से । पुराना खाता चुक्तू हो जाना चाहिए । ज्ञान कितना सहज है ! तुम्हारी रोज कितनी कमाई होती है ! जितना जो याद करते हैं, स्वदर्शन चक्र फिराते हैं तो अथाह कमाई करते हैं, अनगिनत । वहाँ कोई गिनती थोड़ेही होती है । अभी झोपड़ियों में बैठे हैं फिर महलों में बैठेंगे । फ़र्क तो रहता है ना – झोपड़ी और महल में । ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया स्थापन हो जायेगी तो पुरानी दुनिया का विनाश हो जायेगा । अभी की बात है ना । राजधानी की स्थापना हो जायेगी फिर जिसने जितना पुरुषार्थ किया सो किया फिर विनाश हो जायेगा । इसलिए अब गफ़लत नहीं करनी चाहिए । सवेरे उठकर याद में बैठ जाना चाहिए । जितना याद का चार्ट रखो उतना अच्छा है और फिर उतना ही ऊंच पद पायेंगे । शिवबाबा के गले का हार बनेंगे । दिल दर्पण में देखना है कि मैं लायक बना हूँ – लक्ष्मी-नारायण को वरने ? हम बाबा-मम्मा जैसी सर्विस करते हैं ? किस्म-किस्म के फूल हैं । यह बागवान बाबा का ह्युमन गुलशन हैं । कहेंगे – देखो, कुमारका, मनोहर कितने अच्छे-अच्छे फूल हैं ! यह रतन ज्योत है । बाबा इस बगीचे को देखते फिर उस बगीचे में जाकर फूलों को देखते हैं । बागवान जांच करते हैं फूलों की, तो बच्चों को फालो करना चाहिए – नम्बर वन टू फूल कौन-कौन है ? ऐसा बनना चाहिए । 21 जन्मों के लिए राजाई पद पाना कोई कम बात थोड़ेही है ! अथाह सुख है । विश्व का मालिक बनना है । यह स्कूल है । उस जिस्मानी पढ़ाई के साथ यह रूहानी पढ़ाई करो । टीचर्स के हमेशा अच्छे मैनर्स होते हैं । ऑनेस्ट होते हैं । स्कूल मे अन्धश्रद्धा की बात नहीं । वहाँ बैरिस्टरी पढ़ते, इन्जीनियरिंग पढ़ते । यहाँ तुम राजाओं का राजा बनने के लिए पढ़ते हो । सन्यासी तो कह देते ईश्वर सर्वव्यापी है । बस, खेल ही खत्म । बेहद का बाप बच्चों को समझाते हैं – बच्चे, यह अन्तिम जन्म पवित्र रहो । तुम बहुत सर्विस कर सकते हो ।

वहाँ भी एज्युकेशन डिपार्टमेन्ट है । यह भी गॉडली एज्युकेशन डिपार्टमेन्ट है । तुम बच्चे हो राजऋषि । वह तो घरबार छोड़ देते हैं । तुम घर में रहते सारी दुनिया का त्याग करते हो । तुम्हारी बुद्धि में अब नई दुनिया है, जो बाप ही बनाते हैं । इसलिए बाप कहते हैं तुम मुझे याद करो, यह पुरानी दुनिया ख़लास हो जायेगी । यह रूहानी कॉलेज अथवा हॉस्पीटल भी बहुत बड़ा है, जिससे तुम एवरहेल्दी,

एवरवेल्दी बनते हो। घर-घर में तुम यह हॉस्पीटल अथवा कॉलेज खोल सकते हो। इसमें खर्चा कुछ भी नहीं। सिर्फ तीन पैर पृथ्वी के चाहिए। अच्छा !

मात-पिता बापदादा का मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार :-

1. *सवेरे-सवेरे उठकर याद में जरूर बैठना है, इसमें गफ़लत नहीं करनी है। पुण्य का खाता जमा करना है।*

2. *एम ऑब्जेक्ट को बुद्धि में रख अच्छे मैनर्स धारण करने हैं। रूहानी पढ़ाई जरूर करनी है। अन्तर्मुखी होकर रहना है।*

विशेषता:- प्योरिटी की पर्सनैलिटी और अथॉर्टी

पवित्रता का सम्पूर्ण रूप है – ब्रह्मचारी के साथ-साथ ब्रह्माचारी बनना। ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा बाप के आचरण पर चलने वाले, जिसे ही फालो फादर कहा जाता है। क्योंकि स्थिति में शिव बाप के समान बनना है लेकिन आचरण वा कर्म में फालो ब्रह्मा बाप को करना है। पवित्रता का अर्थ है – सदा बाप को कम्पैनियन बनाना और बाप की कम्पनी में ही रहना। संगठन की कम्पनी, परिवार के स्नेह की मर्यादा, वह अलग चीज़ है। वह भी आवश्यक है। लेकिन आत्माओं की कम्पनी में रहते बाप की कम्पनी नहीं भूलना, तब पवित्रता की पर्सनैलिटी और अथॉर्टी वाले बन सकेंगे। नहीं तो समय पर बाप भूल जायेगा और शरीरधारी की याद आने से धोखा खा लेंगे।

निर्विघ्न रहना और निर्विघ्न बनाना ही यथार्थ सेवा है।

नोट:- जो भाई बहिन मधुबन में पत्र, ड्राफ्ट, चेक वा मनी आर्डर जो भी भेजते हैं तो साथ में अपनी पूरी एड्रेस क्लीयर अंग्रेजी अक्षरों में पिन कोड नम्बर सहित जरूर लिखकर भेजें। कईयों की एड्रेस क्लीयर लिखी हुई न होने के कारण जवाब देने में मुश्किल होता है। कोई तो एड्रेस लिखते ही नहीं हैं। कोई की अधूरी इनकम्पलीट एड्रेस होती है। कोई की राइटिंग बिल्कुल पढ़ने में नहीं आती। सो इस बात का ध्यान जरुर दें। हर बार पत्र में अपनी एड्रेस जरूर भेजें।

नोट :- सेवाकेन्द्र पर रहने वाले सभी समर्पित भाई-बहनों के लिये 5 पेज़ का एक चार्ट दो मास लिखने के लिये अलग पोस्ट से भेजा गया है। कृपया वह चार्ट दो मास भरने के बाद मधुबन में भेज दें। दादी जी उसे देखेंगी।

तीनों द्वारा तो नहीं बोलेंगे ना (३२)

5.2.95 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम्हें बाप द्वारा जो अद्वैत मत मिल रही है, उस मत पर चलकर कलियुगी मनुष्यों को सतयुगी देवता बनाने का श्रेष्ठ कर्तव्य करना है"

प्रश्नः- सभी मनुष्य मात्र दुःखी क्यों बने हैं, उसका मूल कारण क्या है?

उत्तरः- रावण ने सभी को श्रापित कर दिया है, इसलिए सभी दुःखी बने हैं। बाप वर्सा देता, रावण श्राप देता – यह भी दुनिया नहीं जानती। बाप ने वर्सा दिया तब तो भारतवासी इतने सुखी स्वर्ग के मालिक बनें, पूज्य बनें। श्रापित होने से पुजारी बन जाते हैं।

ओम् शान्ति। बच्चे यहाँ मधुबन में आते हैं बापदादा के पास। हाल में जब आते हो, देखते हो पहले बहन-भाई बैठते हैं फिर पीछे देखते हो बापदादा आया हुआ है तो बाप की याद आती है। तुम प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे, ब्राह्मण और ब्राह्मणियाँ। वह ब्राह्मण तो ब्रह्मा बाप को जानते हीनहीं हैं। तुम बच्चे जानते हो – बाप जब आते हैं तो ब्रह्मा-विष्णु-शंकर भी जरूर चाहिए। कहते ही हैं त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाच। अब तीनों द्वारा तो नहीं बोलेंगे ना। यह बातें अच्छी रीति बुद्धि में धारण करनी है। बेहद के बाप से जरूर स्वर्ग का वर्सा मिलता है। इसलिए सभी भक्त भगवान से क्या चाहते हैं? जीवनमुक्ति। अभी है जीवनबन्ध। सभी बाप को याद करते हैं कि आकर इस बंधन से मुक्त करो। अभी तुम बच्चे ही जानते हो कि बाबा आया हुआ है। कल्प-कल्प बाप आते हैं। पुकारते भी हैं – तुम मात पिता... परन्तु इसका अर्थ तो कोई भी नहीं समझते। निराकार बाप के लिए समझ लेते हैं। गाते हैं परन्तु मिलता कुछ भी नहीं है। अभी तुम बच्चों को उनसे वर्सा मिलता है फिर कल्प बाद मिलेगा। बच्चे जानते हैं बाप आधाकल्प के लिए आकर वर्सा देते हैं और रावण फिर श्राप देते हैं। यह भी दुनिया नहीं जानती कि हम सभी श्रापित हैं। रावण का श्राप लगा हुआ है इसलिए सभी दुःखी हैं। भारतवासी सुखी थे। कल इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य भारत में था। देवताओं के आगे माथा टेकते हैं, पूजा करते हैं परन्तु सतयुग कब था, यह किसको पता नहीं। अब देखो लाखों वर्ष की आयु सिर्फ सतयुग की फिर त्रेता की, द्वापर-कलियुग की, उस हिसाब से मनुष्य कितने ढेर हो जाएं। सिर्फ सतयुग में ही ढेर मनुष्य हो जाएं। कोई भी मनुष्य की बुद्धि में नहीं बैठता है। बाप बैठ समझाते हैं कि देखो गाया भी जाता है 33 करोड़ देवतायें होते हैं। ऐसे थोड़ेही वह कोई लाखों वर्ष में हो सकते हैं। तो यह भी मनुष्यों को समझाना पड़े।

अभी तुम समझते हो कि बाबा हमको स्वच्छ बुद्धि बनाते हैं। रावण मलेच्छ बुद्धि बनाते हैं। मुख्य बात तो यह है। सतयुग में हैं पवित्र। यहाँ हैं अपवित्र। यह भी किसको पता नहीं है कि रामराज्य कब से कब तक? रावण राज्य कब से कब तक होता है? समझते हैं यहाँ ही राम राज्य भी है, रावण राज्य भी है। अनेक मत-मतान्तर हैं ना। जितने हैं मनुष्य, उतनी हैं मतें। अभी यहाँ तुम बच्चों को एक अद्वैत मत मिलती है जो बाप ही देते हैं। तुम अभी ब्रह्मा द्वारा देवता बन रहे हो। देवताओं की महिमा गाई जाती है – सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण... हैं तो वह भी मनुष्य, मनुष्य की महिमा गाते हैं क्यों?

जरूर फर्क होगा ना । अभी तुम बच्चे भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार मनुष्य को देवता बनाने का कर्तव्य सीखते हो । कलियुगी मनुष्य को तुम सतयुगी देवता बनाते हो अर्थात् शान्तिधाम, ब्रह्माण्ड का और विश्व का मालिक बनाते हो, यह तो शान्तिधाम नहीं है ना । यहाँ तो कर्म जरूर करना पड़े । वह है स्वीट साइलेन्स होम । अभी तुम समझते हो हम आत्मायें स्वीट होम, ब्रह्माण्ड के मालिक हैं । वहाँ दुःख-सुख से न्यारे रहते हैं । फिर सतयुग में विश्व के मालिक बनते हैं । अभी तुम बच्चे लायक बन रहे हो । एम ऑब्जेक्ट एक्यूरेट सामने खड़ी है । तुम बच्चे हो योगबल वाले । वह हैं बाहुबल वाले । तुम भी हो युद्ध के मैदान पर, परन्तु तुम हो डबल अहिंसक । वह है हिंसक । हिंसा काम कटारी को कहा जाता है । सन्यासी भी समझते हैं यह हिंसा है इसलिए पवित्र बनते हैं । परन्तु तुम्हारे सिवाए बाप के साथ प्रीत कोई की है नहीं । आशिक माशूक की प्रीत होती है ना । वह आशिक माशूक तो एक जन्म के गाये जाते हैं । तुम सभी हो मुझ माशूक के आशिक । भक्तिमार्ग में मुझ एक माशूक को याद करते आये हो । अब मैं कहता हूँ यह अन्तिम जन्म सिर्फ पवित्र बनो और यथार्थ रीति याद करो तो फिर याद करने से ही तुम छूट जायेंगे । सतयुग में याद करने की दरकार ही नहीं रहेगी । दुःख में सिमरण सब करते हैं । भक्ति मार्ग दुःख का मार्ग है ना । यह है नर्क । इनको स्वर्ग तो नहीं कहेंगे ना । बड़े आदमी जो धनवान हैं वह समझते हैं हमारे लिए तो यहाँ ही स्वर्ग है । विमान आदि सब कुछ वैभव हैं, कितना अन्धश्रद्धा में रहते हैं । गाते भी हैं तुम मात पिता... परन्तु समझते कुछ नहीं । कौन से सुख घनेरे मिले – यह कोई भी नहीं जानते हैं । बोलती तो आत्मा है ना । तुम आत्मायें समझती हो हमको सुख घनेरे मिलने हैं । उसका नाम ही है – स्वर्ग, सुखधाम । स्वर्ग सभी को बहुत मीठा भी लगता है । तुम अभी जानते हो स्वर्ग में हीरे जवाहरों के कितने महल थे । भक्ति मार्ग में भी कितना अनगिनत धन था । जो सोमनाथ का मन्दिर बनाया है । एक-एक चित्र लाखों की कीमत वाले थे । वह सब कहाँ चले गये ? कितना लूटकर ले गये ! मुसलमानों ने जाए मस्जिद आदि में लगाया । इतना अथाह धन था । अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है हम बाप द्वारा फिर से स्वर्ग के मालिक बनते हैं । हमारे महल सोने के होंगे । दरवाजों पर भी जड़ित लगी हुई होगी । जैनियों के मन्दिर भी ऐसे बने हुए होते हैं । अब हीरे आदि तो नहीं हैं ना जो पहले थे । अभी तुम जानते हो हम बाप से स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं । शिवबाबा आते भी भारत में ही हैं । भारत को ही शिव भगवान से स्वर्ग का वर्सा मिलता है । क्रिश्चियन भी कहते हैं क्राइस्ट से 3 हज़ार वर्ष पहले भारत हेवन था । राज्य कौन करते थे ? यह किसको पता नहीं हैं । बाकी यह समझते हैं भारत बहुत पुराना है । तो यही स्वर्ग था ना । बाप को कहते भी हैं हेवनली गॉड फादर अर्थात् हेवन स्थापन करने वाला फादर । जरूर फादर आये होंगे, तब तुम स्वर्ग के मालिक बने होंगे । हर 5 हज़ार वर्ष बाद स्वर्ग के मालिक बनते हो फिर आधाकल्प बाद रावण राज्य शुरू होता है । चित्रों में ऐसा क्लीयर कर दिखाओ जो लाखों वर्ष की बात बुद्धि से ही निकल जाए । लक्ष्मी-नारायण कोई एक नहीं, इन्हों की डिनायस्टी होगी ना फिर उन्हों के बच्चे राजा बनते होंगे । राजायें तो बहुत बनते हैं ना । सारी माला बनी हुई है । माला को ही सिमरण करते हैं ना । जो बाप के मददगार बन बाप की सर्विस करते हैं उन्हों की ही माला बनती है । जो पूरा चक्र

में आते, पूज्य पुजारी बनते हैं उन्हों का यह यादगार है। तुम पूज्य से पुजारी बनते हो तो फिर अपनी माला को बैठ पूजते हो। पहले माला पर हाथ लगाकर फिर माथा टेकेंगे। पीछे माला को फेरना शुरू करते हैं। तुम भी सारा चक्र लगाते हो फिर शिवबाबा से वर्सा पाते हो। यह राज़ तुम ही जानते हो। मनुष्य तो कोई किसके नाम पर, कोई किसके नाम पर माला फेरते हैं। जानते कुछ भी नहीं। अभी तुमको माला का सारा ज्ञान है, और कोई को यह ज्ञान नहीं। क्रिश्चियन थोड़ेही समझते हैं। तुम्हारी माला फेरते हैं। यह माला है ही उन्हों की जो बाप के मददगार बन सर्विस करते हैं। इस समय सब पतित हैं, जो पावन थे वह सब यहाँ आते-आते अब पतित बने हैं। फिर नम्बरवार सब जायेंगे। नम्बरवार आते हैं, नम्बरवार जाते हैं। कितनी समझने की बातें हैं। यह झाड़ है। कितने टाल-टालियां मठ पंथ हैं। अभी यह सारा झाड़ खलास होना है, फिर तुम्हारा फाउन्डेशन लगेगा। तुम हो इस झाड़ के फाउन्डेशन। उसमें सूर्यवंशी चन्द्रवंशी दोनों हैं। सतयुग-त्रेता में जो राज्य करने वाले थे, उन्हों का अभी धर्म ही नहीं हैं, सिर्फ चित्र हैं। जिनके चित्र हैं उन्हों की बायोग्राफी को तो जानना चाहिए ना। कह देते फलानी चीज लाखों वर्ष पुरानी है। अब वास्तव में पुराने ते पुराना है आदि सनातन देवी-देवता धर्म। उनके आगे तो कोई चीज़ हो नहीं सकती। बाकी सब 2500 वर्ष की पुरानीं चीजें होंगी, नीचे से खोदकर निकालते हैं ना। भक्ति मार्ग में जो पूजा करते हैं वह पुराने चित्र निकालते हैं। क्योंकि अर्थक्वेक में सब मन्दिर आदि गिर पड़ते हैं फिर नये बनते हैं। हीरे सोने आदि की खानियां जो अभी खाली हो गई हैं वह फिर वहाँ भरतू हो जायेंगी। यह सब बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में हैं ना। बाप ने वर्ल्ड की हिस्ट्री जाग्राफी समझाई है। सतयुग में कितने थोड़े मनुष्य होते हैं फिर वृद्धि को पाते हैं। आत्मायें सब परमधाम से आती रहती हैं। आते-आते झाड़ बढ़ता है। फिर जब झाड़ जड़जड़ीभूत अवस्था को पाता है तो कहा जाता है राम गयो रावण गयो, जिनका बहु परिवार है। अनेक धर्म हैं ना। हमारा परिवार कितना छोटा है। यह सिर्फ ब्राह्मणों का ही परिवार है। वह कितने अनेक धर्म हैं, जनसंख्या बतलाते हैं ना। वह सब हैं रावण सम्प्रदाय। यह सब जायेंगे। बाकी थोड़े ही रहेंगे। रावण सम्प्रदाय फिर आयेंगे नहीं, सब मुक्तिधाम में चले जायेंगे। बाकी तुम जो पढ़ते हो वह नम्बरवार आयेंगे स्वर्ग में।

अभी तुम बच्चों ने समझा है कैसे वह निराकारी झाड़ है, यह मनुष्य सृष्टि का झाड़ है। यह तुम्हारी बुद्धि में है। पढ़ाई पर ध्यान नहीं देंगे तो इम्तहान में नापास हो जायेंगे। पढ़ते और पढ़ाते रहेंगे तो खुशी भी रहेगी। अगर विकार में गिरा तो बाकी यह सब भूल जायेगा। आत्मा जब पवित्र सोना हो तब उसमें धारणा अच्छी हो। सोने का बर्तन होता है पवित्र गोल्डन। अगर कोई पतित बना तो ज्ञान सुना नहीं सकता। अभी तुम सामने बैठे हो, जानते हो गॉड फादर शिवबाबा हम आत्माओं को पढ़ा रहे हैं। हम आत्मायें इन आरगन्स द्वारा सुन रही हैं। पढ़ाने वाला बाप है, ऐसी पाठशाला सारी दुनिया में कहाँ होगी। वह गॉड फादर है, टीचर भी है, सतगुरु भी है, सबको वापिस ले जायेंगे। अभी तुम बाप के सम्मुख बैठे हो। सम्मुख मुरली सुनने में कितना फर्क है। जैसे यह टेप मशीन निकली है, सबके पास एक दिन आ जायेगी। बच्चों के सुख के लिए बाप ऐसी चीज़ें बनवाते हैं। कोई बड़ी बात नहीं है ना। यह सांवल

शाह है ना । पहले गोरा था अभी सांवरा बना है तब तो श्याम सुन्दर कहते हैं । तुम जानते हो हम सुन्दर थे अब श्याम बने हैं फिर सुन्दर बनेंगे । सिर्फ एक क्यों बनेगा ? एक को सर्प ने डसा क्या ? सर्प तो माया को कहा जाता है ना । विकार में जाने से सांवरा बन जाते हैं । कितनी समझने की बातें हैं । बेहद का बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते यह अन्तिम जन्म फार माई सेक (मेरे सदके) पवित्र बनो । बच्चों से यह भीख मांगते हैं । कमल फूल समान पवित्र बनो और मुझे याद करो तो यह जन्म भी पवित्र बनेंगे । और याद में रहने से पास्ट के विकर्म भी विनाश होंगे । यह है योग अग्नि, जिससे जन्म जन्मान्तर के पाप दग्ध होते हैं । सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में आते हैं तो कला कम हो जाती है । खाद पड़ती जाती है । अब बाप कहते हैं सिर्फ मामेकम् याद करो । बाकी पानी की नदियों में स्नान करने से थोड़ेही पावन बनेंगे । पानी भी तत्व है ना । 5 तत्व कहे जाते हैं । यह नदियाँ कैसे पतित पावनी हो सकती हैं । नदियाँ तो सागर से निकलती हैं । पहले तो सागर पतित-पावन होना चाहिए ना । अच्छा !

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग । रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1. विजय माला में आने के लिए बाप का मददगार बन सर्विस करनी है । एक माशूक के साथ सच्ची प्रीत रखनी है । एक को ही याद करना है ।

2. अपनी एक्यूरेट एम ऑबजेक्ट को सामने रख पूरा पुरूषार्थ करना है । डबल अहिंसक बन मनुष्य को देवता बनाने का श्रेष्ठ कर्तव्य करते रहना है ।

वरदानः- सर्वगुण सम्पन्न बनने के साथ-साथ किसी एक विशेषता में विशेष प्रभावशाली भव

जैसे डॉक्टर्स जनरल बीमारियों की नॉलेज तो रखते ही हैं लेकिन साथ-साथ किसी बात की विशेष नॉलेज में नामीग्रामी हो जाते हैं, ऐसे आप बच्चों को सर्वगुण सम्पन्न तो बनना ही है फिर भी एक विशेषता को विशेष रूप से अनुभव में लाते, सेवा में लाते आगे बढ़ते चलो । जैसे सरस्वती को विद्या की देवी, लक्ष्मी को धन की देवी कहकर पूजते हैं, ऐसे अपने में सर्वगुण, सर्वशक्तियाँ होते भी एक विशेषता में विशेष रिसर्च कर स्वयं को प्रभावशाली बनाओ ।

स्लोगनः-

विकारों रूपी सांपों को सहजयोग की शैया बना दो तो सदा निश्चिंत रहेंगे ।

18/12/2000/ रिपीट 33 (३३)

2-12-95 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – पापों से हल्का होने के लिए सच्चे बनो, सच्चाई से वफादार बन अपनी कर्म कहानी बाप को लिखकर दो"

प्रश्न:- संगमयुग पर तुम बच्चे कौन-सा बीज नहीं बो सकते हो?

उत्तर:- देह अभिमान का। इस बीज से सब विकारों के झाड़ निकल पड़ते हैं। इस समय सारी दुनिया में ५ विकारों के झाड़ निकले हुए हैं। सब काम-क्रोध के बीज बोते रहते हैं। तुम्हें बाप का डायरेक्शन है बच्चे योगबल से पावन बनो। यह बीज बोना बन्द करो।

गीत:- तुम्हें पा के हमने..... ओम् शान्ति।

मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने गीत सुना! अभी तो थोड़े हैं, अनेकानेक बच्चे हो जायेंगे। इस समय थोड़े प्रैक्टिकल में बने हो फिर भी इस प्रजापिता ब्रह्मा को जानते तो सब हैं ना। नाम ही है प्रजापिता ब्रह्मा। कितनी ढेर प्रजा है। सब धर्म वाले इनको मानेंगे जरूर। उन द्वारा ही मनुष्य मात्र की रचना हुई है ना। बाबा ने समझाया है लौकिक बाप भी हद के ब्रह्मा हैं। क्योंकि उनका भी सिजरा बनता है ना। सरनेम से सिजरा चलता है। वह होते हैं हद के, यह है बेहद का बाप। इनका नाम ही है प्रजापिता। वो लौकिक बाप तो लिमिटेड प्रजा रचते हैं। कोई नहीं भी रचते। यह तो जरूर रचेंगे। ऐसे कोई कहेंगे कि प्रजापिता ब्रह्मा को सन्तान नहीं है? इनकी सन्तान तो सारी दुनिया है। पहले-पहले है ही प्रजापिता ब्रह्मा। मुसलमान भी आदम बीबी जो कहते हैं सो जरूर किसको तो कहते होंगे ना। एडम ईव, आदि देव आदि देवी यह प्रजापिता ब्रह्मा के लिए ही कहेंगे। जो भी धर्म वाले हैं सब इनको मानेंगे। बरोबर एक है हद का बाप, दूसरा है बेहद का। यह बेहद का बाप है बेहद का सुख देने वाला। तुम पुरूषार्थ भी करते हो बेहद स्वर्ग के सुख के लिए। यहाँ बेहद के बाप से बेहद के सुख का वर्सा पाने आये हो। स्वर्ग में बेहद का सुख, नर्क में बेहद का दु:ख भी कह सकते हैं। दु:ख भी बहुत आने वाले हैं। हाय-हाय करते रहेंगे। बाप ने तुमको सारे विश्व के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाया है। तुम बच्चे सामने बैठे हो और पुरूषार्थ भी करते हो। यह तो मात-पिता दोनों हुए ना। इतने ढेर बच्चे हैं। बेहद के मात-पिता से कभी कोई दुश्मनी रखेंगे नहीं। मात-पिता से कितना सुख मिलता है। गाते भी हैं तुम मात-पिता.... यह तो बच्चे ही समझते हैं। दूसरे धर्म वाले सब फादर को ही बुलाते हैं। मात-पिता नहीं कहेंगे। सिर्फ यहाँ ही गाते हैं तुम मात-पिता हम..... तुम बच्चे जानते हो हम पढ़कर मनुष्य से देवता, कांटे से फूल बन रहे हैं। बाप खिवैया भी है, बागवान भी है। बाकी तुम ब्राह्मण सब अनेक प्रकार के माली हो। मुगल गार्डन का भी माली होता है ना। उनकी पगार भी कितनी अच्छी होती है। माली भी नम्बरवार हैं ना। कोई-कोई माली कितने अच्छे-अच्छे फूल बनाते हैं। फूलों में एक किंग ऑफ फ्लावर भी होता है। सतयुग में किंग क्वीन फ्लावर भी हैं ना। यहाँ भल महाराजा-महारानी हैं परन्तु फ्लावर्स नहीं हैं। पतित बनने से कांटे बन जाते हैं। रास्ते चलते-चलते कांटा लगाकर भाग

जाते हैं। अजामिल भी उनको कहो जाता है। सबसे जास्ती भक्ति भी तुम करते हो। वाम मार्ग में गिरने वाले चित्र देखो कैसे-कैसे गन्दे बनाये हुए हैं। देवताओं के ही चित्र दिये हैं। अब वह हैं वाम मार्ग के चित्र। अभी तुम बच्चों ने यह बातें समझ ली हैं। तुम अभी ब्राह्मण बने हो। हम विकारों से बहुत दूर-दूर जाते हैं। ब्राह्मणों में भाई-बहिन के साथ विकार में जाना यह तो बहुत बड़ा क्रिमिनल एसाल्ट हो जाए। नाम ही खराब हो जाता है। इसलिए छोटेपन से ही कुछ खराब काम किया है तो वह भी बाबा को सुनाते हैं तो आधा माफ हो जाता है। याद तो रहता है ना। फलाने समय यह हमने गंदा काम किया। बाबा को लिखकर देते हैं। जो बहुत वफादार ऑनेस्ट होते हैं वह बाबा को लिखते हैं – बाबा हमने यह यह गंदा काम किया। क्षमा करो। बाप कहते हैं क्षमा तो होती नहीं बाकी सच बताते हो तो वह हल्का हो जायेगा। ऐसे नहीं, भूल जाता है। भूल नहीं सकता। आगे फिर ऐसा कोई काम न हो उसके लिए खबरादार करता हूँ। बाकी दिल खाती जरूर है। कहते हैं बाबा हम तो अजामिल थे। इस जन्म की ही बात है। यह भी अभी तुम जानते हो। कब से वाम मार्ग में आकर पाप आत्मा बने हो? अब बाप फिर हमको पुण्य आत्मा बनाते हैं। पुण्य आत्माओं की दुनिया ही अलग है। भल दुनिया एक ही है परन्तु समझ गये हो कि दो भाग में हैं। एक है पुण्य आत्माओं की दुनिया जिसको स्वर्ग कहा जाता है। दूसरी है पाप आत्मओं की दुनिया जिसको नर्क दु:खधाम कहा जाता है। सुख की दुनिया और दु:ख की दुनिया। दु:ख की दुनिया में सब चिल्लाते रहते हैं हमको लिबरेट करो, अपने घर ले जाओ। यह भी बच्चे समझते हैं कि घर में जाकर बैठना नहीं है, फिर पार्ट बजाने आना है। इस समय सारी दुनिया पतित है। अभी बाप द्वारा तुम पावन बन रहे हो। एम ऑब्जेक्ट सामने खड़ी है। और कोई भी यह एम ऑब्जेक्ट नहीं दिखायेंगे कि हम यह बन रहे हैं। बाप कहते हैं बच्चे तुम यह थे, अब नहीं हो। पूज्य थे अब पुजारी बन गये हो फिर पूज्य बनने के लिए पुरूषार्थ चाहिए। बाप कितना अच्छा पुरूषार्थ कराते हैं। यह बाबा समझते हैं ना हम प्रिन्स बनूँगा। नम्बरवन में है यह, फिर भी हर वक्त याद नहीं ठहरती है। भूल जाते हैं। कितना भी कोई मेहनत करे परन्तु अभी वह अवस्था होगी नहीं। कर्मातीत अवस्था तब होगी जब लड़ाई का समय होगा। पुरूषार्थ तो सबको करना है ना। इनको भी करना है। तुम समझाते भी हो चित्र में देखो बाबा का चित्र कहाँ है? एकदम झाड़ के पिछाड़ी में खड़ा है, पतित दुनिया में और नीचे में फिर तपस्या कर रहे हैं। कितना सहज समझाया जाता है। यह सब बातें बाप ने ही समझाई हैं। यह भी नहीं जानते थे। बाप ही नॉलेजफुल है, उसको ही सब याद करते हैं–हे परमपिता परमात्मा आकर हमारे दु:ख हरो। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर तो देवतायें हैं। मूलवतन में रहने वाली आत्माओं को देवता थोड़ेही कहा जाता है। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर का भी राज़ बाप ने समझाया है। ब्रह्मा, लक्ष्मी-नारायण यह तो सब यहाँ ही हैं ना। सूक्ष्मवतन का सिर्फ तुम बच्चों को अभी साक्षात्कार होता है। यह बाबा भी फरिश्ता बन जाते हैं। यह तो बच्चे जानते हैं जो सीढ़ी के ऊपर में खड़ा है वही फिर नीचे तपस्या कर रहे हैं। चित्र में बिल्कुल क्लीयर

दिखाया है। वह अपने को भगवान कहाँ कहलाते हैं। यह तो कहते हैं हम वर्थ नाट ए पेनी थे, ततत्वम्। अभी वर्थ पाउण्ड बन रहे हो ततत्वम्। कितनी सहज समझने की बातें हैं। कभी कोई बोले तो कहो देखो यह तो कलियुग के अन्त में खड़ा है ना। बाप कहते हैं जब जड़जड़ीभूत अवस्था, वानप्रस्थ होती है तब मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। अभी राजयोग की तपस्या कर रहे हैं। तपस्या करने वाले को देवता कैसे कहेंगे? राजयोग सीखकर यह बनेंगे। तुम बच्चों को भी ऐसा ताज वाला बनाते हैं ना। यह सो देवता बनते हैं। ऐसे तो 10-20 बच्चों के चित्र भी रख सकते हैं। दिखलाने के लिए कि यह बनते हैं। आगे सबके ऐसे फोटो निकले हुए हैं। यह समझाने की बात हैं ना। एक तरफ साधारण, दूसरे तरफ डबल सिरताज। तुम समझते हो हम यह बन रहे हैं। बनेंगे वह जिनकी लाइन क्लीयर होगी और बहुत मीठा भी बनना है। इस समय मनुष्यों में काम-क्रोध आदि का बीज कितना हो गया है। सबमें 5 विकार रूपी बीज के झाड़ निकल पड़े हैं। अभी बाप कहते हैं ऐसा बीज नहीं बोना है। संगमयुग पर तुमको देह अभिमान का बींज नहीं बोना है। काम का बीज नहीं बोना है। आधाकल्प के लिए फिर रावण ही नहीं रहेगा। हर एक बात बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। मुख्य तो एक ही बात है मनमनाभव। बाप कहते हैं मुझे याद करो। सबसे पिछाड़ी में यह है, फिर सबसे पहले भी यह है। योगबल से कितना पावन बनते हैं। शुरू में तो बच्चों को बहुत साक्षात्कार होते थे। भक्ति मार्ग में जब नौधा भक्ति करते हैं तब साक्षात्कार होता है। यहाँ तो यह बैठे-बैठे ध्यान में चले जाते थे। इसको जादू समझते थे। यह तो फर्स्टक्लास जादू है। मीरा ने तो बहुत तपस्या की, साधू-सन्त आदि का संग किया। यहाँ साधू आदि कहाँ हैं। यह तो बाप है ना। सबका बाप है शिवबाबा। कहते हैं गुरू जी से मिलें। यहाँ तो गुरू है नहीं। शिवबाबा तो है निराकार फिर किससे मिलना चाहते हो? इन गुरूओं के पास तो जाकर भेंटा रखते हैं। यह तो बाप बेहद का मालिक है। यहाँ भेंट आदि की बात नहीं। यह पैसा क्या करेंगे? यह ब्रह्मा भी समझते है हम विश्व का मालिक बनते हैं। जो कुछ बच्चे पैसा आदि देते हैं तो उन्हों के लिए ही मकान आदि बना देते हैं। पैसे तो न शिवबाबा के काम के हैं, न ब्रह्मा बाबा के काम के हैं। यह मकान आदि बनाया ही है बच्चों के लिए, बच्चे ही आकर रहते हैं। कोई गरीब हैं, कोई साहूकार हैं, कोई तो दो रूपये भी भेज देते हैं—बाबा हमारी एक ईंट लगा दो। कोई हजार भेज देते हैं। भावना तो दोनों की एक है ना। तो दोनों का इक्वल बन जाता है। फिर बच्चे आते हैं जहाँ चाहें रहें। जिसने मकान बनवाया है वह अगर आते हैं तो उनको जरूर सुख से रहायेंगे। कई फिर कह देते बाबा के पास भी खातिरी होती है। अरे वह तो जरूर करनी पड़ेगी ना। कोई कैसे हैं, कोई तो कहाँ भी बैठ जाते हैं। कोई बहुत नाज़ुक होते हैं, विलायत में रहने वाले, बड़े-बड़े महलों में रहने वाले होते हैं, हर एक नेशन में बड़े-बड़े साहूकार निकलते हैं तो मकान आदि ऐसे बनाते हैं। यहाँ तो देखो कितने ढेर बच्चे आते हैं। और किसी बाप को ऐसे ख्यालात थोड़ेही होंगे। करके 10-12-20 पोत्रे-पोत्रियाँ हों। अच्छा, किसको 200-500 भी हों इनसे जास्ती

तो नहीं होंगे। इस बाबा की फैमिली तो कितनी बड़ी है, और ही वृद्धि को पानी है। यह तो राजधानी स्थापन हो रही है। बाप की फैमिली कितनी बनेंगी। फिर प्रजापिता ब्रह्मा की फैमिली कितनी हो गई। कल्प-कल्प जब आते हैं तब ही वन्डरफुल बातें तुम्हारे कानों में पड़ती है। बाप के लिए ही कहते हो ना—हे प्रभु तुम्हारी गति-मत सबसे न्यारी शुरू होती है। भक्ति और ज्ञान में फर्क देखो कितना है।

बाप तुमको समझाते हैं – स्वर्ग में जाना है तो दैवीगुण भी धारण करने चाहिए। अभी तो कांटें हैं ना। गाते रहते हैं मैं निर्गुण हारे में कोई गुण नाही। बाकी 5 विकारों के अवगुण हैं, रावण राज्य है। अभी तुमको कितनी अच्छी नॉलेज मिलती है। वह नॉलेज इतनी खुशी नहीं देती है, जितनी यह। तुम जानते हो हम आत्मायें ऊपर मूलवतन में रहने वाले हैं। सूक्ष्मवतन में ब्रह्मा-विष्णु-शंकर, वह भी सिर्फ साक्षात्कार होता है। ब्रह्मा भी यहाँ, लक्ष्मी-नारायण भी यहाँ के हैं। यह सिर्फ साक्षात्कार होता है। व्यक्त ब्रह्मा सो फिर सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा फरिश्ता कैसे बन जाते हैं, वह निशानी है। बाकी है कुछ नहीं। अभी तुम बच्चे सब बातें समझते जाते हो, धारणा करते जाते हो। नई बात नहीं है। तुम अनेक बार देवता बने हो, डीटी (Deity) राज्य था ना। यह चक्र फिरता रहता है। वह विनाशी ड्रामा होता है, यह है अनादि अविनाशी ड्रामा। यह तुम्हारे सिवाए और कोई की बुद्धि में नहीं है। यह सब बाप बैठ समझाते हैं। ऐसे नहीं कि परम्परा से चला आया है। बाप कहते हैं यह ज्ञान अभी तुमको सुनाते हैं। फिर यह प्रायः लोप हो जाता है। तुम राजाई पद प्राप्त कर लेते हो फिर सतयुग में यह नॉलेज होती नहीं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. सदा स्मृति रहे कि हम अभी ब्राह्मण हैं इसलिए विकारों से बहुत-बहुत दूर रहना है। कभी भी क्रिमिनल एसाल्ट न हो। बाप से बहुत-बहुत ऑनेस्ट, वफादार रहना है। २. पुण्य आत्मा बनने के लिए अपने आपको बहुत-बहुत खबरदार रखना है। बहुत-बहुत मीठा बनना है। एकान्त में बैठ विचार सागर मंथन कर बहुत-बहुत खुशी में रहना है।

वरदान:- पुरूषार्थ और सेवा में विधिपूर्वक वृद्धि को प्राप्त करने वाले तीव्र पुरूषार्थी भव

ब्राह्मण अर्थात् विधिपूर्वक जीवन। कोई भी कार्य सफल तब होता है जब विधि से किया जाता है। अगर किसी भी बात में स्वयं के पुरूषार्थ या सेवा में वृद्धि नहीं होती है तो जरूर कोई विधि की कमी है। इसलिए चेक करो कि अमृतवेले से रात तक मन्सा-वाचा-कर्मणा व सम्पर्क विधिपूर्वक रहा अर्थात् वृद्धि हुई? अगर नहीं तो कारण को सोचकर निवारण करो फिर दिलशिकस्त नहीं होंगे। अगर विधि पूर्वक जीवन है तो वृद्धि अवश्य होगी और तीव्र पुरूषार्थी बन जायेंगे।

स्लोगन:-

स्वच्छता और सत्यता में सम्पन्न बनना ही सच्ची पवित्रता है।

15-10-95 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – आत्म अभिमानी होकर बैठो, अन्दर घोटते रहो – मैं आत्मा हूँ.... देही अभिमानी बनो, सच्चा चार्ट रखो तो समझदार बनते जायेंगे, बहुत फायदा होगा"

प्रश्नः- बेहद के नाटक को समझने वाले बच्चे किस एक लॉ (नियम) को अच्छी रीति समझते हैं?

उत्तरः- यह अविनाशी नाटक हैं, इसमें हर एक पार्टधारी को पार्ट बजाने अपने समय पर आना ही है। कोई कहे हम सदा शान्तिधाम में ही बैठ जाएं – तो यह लॉ नहीं है। उसे तो पार्टधारी ही नहीं कहेंगे। यह बेहद की बातें बेहद का बाप ही तुम्हें सुनाते हैं।

ओम् शान्ति। अपने की आत्मा समझकर बैठो। देह अभिमान छोड़कर बैठो। बेहद का बाप बच्चों को समझा रहे हैं। समझाया उनको जाता है जो बेसमझ होते हैं। आत्मा समझती है कि बाप सच कहते हैं – हम आत्मा बेसमझ बन गई हैं। मैं आत्मा अविनाशी हूँ, शरीर विनाशी है। मैं आत्म अभिमान छोड़ देह अभिमान में फँस पड़ा हूँ। तो बेसमझ ठहरे ना। बाप कहते हैं सब बच्चे बेसमझ हो पड़े हैं, देह अभिमान में आकर। फिर तुम बाप द्वारा देही अभिमानी बनते हो। तो बिल्कुल समझदार बन जाते हो। कोई तो बन गये हैं, कोई पुरूषार्थ करते रहते हैं। आधाकल्प लगा है बेसमझ बनने में। इस अन्तिम जन्म में फिर समझदार बनना है। आधाकल्प से बेसमझ होते-होते 100 प्रतिशत बेसमझ बन जाते हैं। देह अभिमान में आकर ड्रामा प्लैन अनुसार तुम गिरते आये हो। अभी तुमको समझ मिली है फिर भी पुरूषार्थ बहुत करना है। क्योंकि बच्चों में दैवीगुण भी चाहिए। बच्चे जानते हैं हम सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण..... थे। फिर इस समय निर्गुण बन पड़े हैं। कोई भी गुण नहीं रहा है। तुम बच्चों में भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार इस खेल को समझते हैं। समझते-समझते भी कितने वर्ष हो गये हैं। फिर भी जो नये हैं वह अच्छे समझदार बनते जाते हैं। औरों को भी बनाने का पुरूषार्थ करते हैं। कोई ने तो बिल्कुल नहीं समझा है। बेसमझ के बेसमझ ही हैं। बाप आये ही हैं समझदार बनाने। बच्चे समझते हैं माया के कारण हम बेसमझ बने हैं। हम पूज्य थे – तो समझदार थे फिर हम ही पुजारी बन बेसमझ बने हैं। आदि सनातन देवी-देवता धर्म प्राय: लोप हो गया है। इनका दुनिया में किसको पता नहीं है। यह लक्ष्मी-नारायण कितने समझदार थे, राज्य करते थे। बाप कहते हैं तत् त्वम्। तुम भी अपने लिए ऐसे समझो। यह बहुत-बहुत समझने की बातें हैं। सिवाए बाप के कोई समझा न सके। अभी महसूस होता है – बाप ही ऊंच ते ऊंच समझदार ते समझदार होगा ना। एक तो ज्ञान का सागर भी है। सर्व का सद्गति दाता भी है। पतित पावन भी है। एक की ही महिमा है। इतना ऊंच ते ऊंच बाप आकरके बच्चे-बच्चे कह कैसे अच्छी

रीति समझाते हैं। बच्चे अब पावन बनना है। उसके लिए बाप एक ही दवाई देते हैं। कहते हैं – योग से तुम भविष्य 21 जन्म निरोगी बन जायेंगे। तुम्हारे सब रोग, दु:ख खत्म हो जायेंगे। तुम मुक्तिधाम में चले जायेंगे। अविनाशी सर्जन के पास एक ही दवाई है। एक ही इन्जेक्शन आत्मा को आए लगाते हैं। ऐसे नहीं कोई मनुष्य बैरिस्टरी भी करेंगे, इन्जीनियरी भी करेंगे। नहीं। हर एक आदमी अपने धन्धे से ही लग जाते हैं। बाप को कहते हैं आकर पतित से पावन बनाओ। क्योंकि पतितपने में दु:ख है। शान्तिधाम को पावन दुनिया नहीं कहेंगे। स्वर्ग को ही पावन दुनिया कहेंगे। यह भी समझाया है मनुष्य शान्ति और सुख चाहते हैं। सच्ची-सच्ची शान्ति तो वहाँ है जहाँ शरीर नहीं, उसको कहा जाता है शान्तिधाम। बहुत कहते हैं शान्तिधाम में रहें, परन्तु लॉ नहीं है। वह तो पार्टधारी हुआ नहीं। बच्चे नाटक को भी समझ गये हैं। जब एक्टर्स का पार्ट होगा तब बाहर स्टेज पर आकर पार्ट बजायेंगे। यह बेहद की बातें बेहद का बाप ही समझाते हैं। ज्ञान सागर भी उनको कहा जाता है। सर्व के सद्गति दाता पतित पावन हैं। सर्व को पावन बनाने वाले तत्व नहीं हो सकते। पानी आदि सब तत्व हैं, वह कैसे सद्गति करेंगे। आत्मा ही पार्ट बजाती है। हठयोग का भी पार्ट आत्मा बजाती है। यह बातें भी जो समझदार हैं वही समझ सकते हैं। बाप ने कितना समझाया है – कोई ऐसी युक्ति रचो जो मनुष्य समझें – कैसे पूज्य सो फिर पुजारी बनते हैं। पूज्य हैं नई दुनिया में, पुजारी हैं पुरानी दुनिया में। पावन को पूज्य, पतित को पुजारी कहा जाता है। यहाँ तो सब पतित हैं क्योंकि विकार से पैदा होते हैं। वहाँ है श्रेष्ठ। गाते भी हैं सम्पूर्ण श्रेष्ठाचारी। अभी तुम बच्चों को ऐसा बनना है। मेहनत है। मुख्य बात है याद की। सभी कहते हैं याद में रहना बड़ा मुश्किल है। हम जितना चाहते हैं, याद में रह नहीं सकते हैं। कोई सच्चाई से अगर चार्ट लिखे तो बहुत फायदा हो सकता है। बाप बच्चों को यह ज्ञान देते हैं कि मनमनाभव। तुम अर्थ सहित कहते हो, तुम्हें बाप हर बात यथार्थ रीति अर्थ सहित समझाते हैं। बाप से बच्चे कई प्रकार के प्रश्न पूछते हैं, बाप करके दिल लेने लिए कुछ कह देते हैं। परन्तु बाप कहते हैं मेरा काम ही है पतित से पावन बनाना। मुझे तो बुलाते ही इसलिए हो। तुम जानते हो हम आत्मा शरीर सहित पावन थी। अभी वही आत्मा शरीर सहित पतित बनी है। 84 जन्मों का हिसाब है ना।

तुम जानते हो – अभी यह दुनिया कांटों का जंगल बन गई है। यह लक्ष्मी-नारायण तो फूल हैं ना। उन्हों के आगे कांटे जाकर कहते हैं आप सर्वगुण सम्पन्न..... हम पापी कपटी हैं। सबसे बड़ा कांटा है – काम विकार का। बाप कहते हैं इस पर जीत पहन जगतजीत बनो। मनुष्य कहते हैं भगवान को कोई न कोई रूप में आना है, भागीरथ पर विराजमान हो आना है। भगवान को आना ही है पुरानी दुनिया को नया बनाने। नई दुनिया को सतोप्रधान, पुरानी को तमोप्रधान कहा जाता है। जबकि अभी पुरानी दुनिया है तो जरूर बाप को आना ही पड़े। बाप को ही रचयिता कहा जाता है। तुम बच्चों को कितना सहज समझाते हैं। कितनी खुशी होनी चाहिए। बाकी किसका

कर्मभोग का हिसाब-किताब है, कुछ भी है, वह तो भोगना है। इसमें बाबा आशीर्वाद नहीं करते हैं। हमको बुलाते ही हो – बाबा आकर हमको वर्सा दो। बाबा से क्या वर्सा पाने चाहते हो? मुक्ति-जीवनमुक्ति का। मुक्ति-जीवनमुक्ति का दाता एक ही ज्ञान सागर बाप है। इसलिए उनको ज्ञान दाता कहा जाता है। भगवान ने ज्ञान दिया था परन्तु कब दिया, किसने दिया, यह किसको पता नहीं है। सारा मुँझारा इसमें है। किसको ज्ञान दिया यह भी किसको पता नहीं है। अभी यह ब्रह्मा बैठे हैं – इनको मालूम पड़ा है कि हम सो नारायण था फिर 84 जन्म भोगे। यह है नम्बरवन में। बाबा बतलाते हैं मेरी तो आंख ही खुल गई। तुम भी कहेंगे हमारी तो आंखें ही खुल गई। तीसरा नेत्र तो खुलता है ना। तुम कहेंगे हमको बाप का, सृष्टि चक्र का पूरा ज्ञान मिल गया है। मैं जो हूँ, जैसा हूँ – मेरी आंखें खुल गई हैं। कितना वन्डर है। हम आत्मा फर्स्ट हैं और फिर हम अपने को देह समझ बैठे। आत्मा कहती है हम एक शरीर छोड़ दूसरा लेता हूँ। फिर भी हम अपने को आत्मा भूल देह अभिमानी बन जाते हैं। इसलिए अब तुमको पहले-पहले यह समझ देता हूँ कि अपने को आत्मा समझ बैठो। अन्दर में यह बैठकर घोटो कि मैं आत्मा हूँ। आत्मा न समझने से बाप को भूल जाते हो। फील करते हो बरोबर हम घड़ी-घड़ी देह अभिमान में आ जाते हैं। मेहनत करनी है। यहाँ बैठो तो भी आत्म अभिमानी होकर बैठो। बाप कहते हैं हम तुम बच्चों को राजाई देने आये हैं। आधाकल्प तुमने हमको याद किया है। कोई भी बात सामने आती है तो कहते हैं हाय राम, परन्तु ईश्वर वा राम कौन है, यह किसको पता नहीं। तुमको सिद्ध करना है – ज्ञान का सागर, पतित पावन, सर्व का सद्गति दाता, त्रिमूर्ति परमपिता परमात्मा शिव है। ब्रह्मा-विष्ण-शंकर तीनों का जन्म इकट्ठा है। सिर्फ शिवजयन्ती नहीं है परन्तु त्रिमूर्ति शिव जयन्ती है। जरूर जब शिव की जयन्ती होगी तो ब्रह्मा की भी जयन्ती होगी। शिव की जयन्ती मनाते हैं परन्तु ब्रह्मा ने क्या किया। लौकिक, पारलौकिक और यह है अलौकिक बाप। यह है प्रजापिता ब्रह्मा। बाप कहते हैं नई दुनिया के लिए यह नया ज्ञान अभी तुमको मिलता है फिर प्राय: लोप हो जाता है। जिसको बाप रचता और रचना का ज्ञान नहीं तो अज्ञानी ठहरे ना। अज्ञान नींद में सोये पडे हैं। ज्ञान से है दिन, भक्ति से है रात। शिवरात्रि का अर्थ भी नहीं जानते इसलिए उनकी हॉली डे भी उड़ा दी है।

अभी हम जानते है बाप आते ही हैं – सबकी ज्योत जगाने। तुम यह बत्तियां आदि जगायेंगे तो समझेंगे इनका कोई बड़ा दिन है। अब तुम जगाते हो अर्थ सहित। वो लोग थोड़ेही समझेंगे। तुम्हारे भाषण से पूरा समझ नहीं सकते। अभी सारे विश्व पर रावण का राज्य है, यहाँ तो मनुष्य कितने दु:खी हैं। सिद्धि-सिद्धि वाले भी बहुत तंग करते हैं। अखबारों में भी पड़ता है, इनमें ईविल सोल है। बहुत दु:ख देते हैं। बाबा कहते हैं इन बातों से तुम्हारा कोई कनेक्शन नहीं। बाप तो सीधी

बात बताते हैं—बच्चे, तुम मुझे याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। तुम्हारे सब दु:ख दूर हो जायेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. यथार्थ रीति बाप को याद करने वा आत्म अभिमानी बनने की मेहनत करनी है, सच्चाई से अपना चार्ट रखना है, इसमें ही बहुत-बहुत फायदा है।

२. सबसे बड़ा दु:ख देने वाला कांटा काम विकार है, इस पर योगबल से विजय प्राप्त कर पतित से पावन बनना है। रिद्धि-सिद्धि की बातों में बिल्कुल इन्ट्रेस्ट नहीं लेना है।

वरदान:- एक के साथ सर्व रिश्ता निभाने वाले सर्व किनारों से मुक्त सम्पूर्ण फरिश्ता भव

जैसे कोई चीज़ बनाते हैं जब वह बनकर तैयार हो जाती है तो किनारा छोड़ देती है, ऐसे जितना सम्पन्न स्टेज के समीप आते जायेंगे उतना सर्व से किनारा होता जायेगा। जब सब बन्धनों से वृत्ति द्वारा किनारा हो जाए अर्थात् किसी में भी लगाव न हो तब सम्पूर्ण फरिश्ता बनेंगे। एक के साथ सर्व रिश्ते निभाना—यही ठिकाना है, इससे ही अन्तिम फरिश्ते जीवन की मंजिल समीप अनुभव होगी। बुद्धि का भटकना बन्द हो जायेगा।

स्लोगन:-

स्नेह ऐसा चुम्बक है जो ग्लानि करने वाले को भी समीप ले आता है।

विशेष सूचना(1) :- निम्नलिखित सेवाकेन्द्रों पर नये फोन लगे हैं या नम्बर परिवर्तन हुए हैं! अतः नये नम्बर लिख रहे हैं!

(PLEASE NOTE THE NEW & CHANGED PHONE NUMBERS).

1. जालोर (JALORE). राजस्थान का नया फोन नम्बर है :- 02973-33949.
2. नवांशहर (NAWANSAHAR). पंजाब का नया फोन नम्बर है :- 01823-20473.
3. फिलौर (PHILLAUR). पंजाब का नया फोन नम्बर है :- 22378.
4. राधनपुर (RADHANPUR). गुजरात का नया फोन नम्बर है :- 02746-225

(2). मऊ, उतरप्रदेश स्थित सेवाकेन्द्र का मकान बदली हुआ है, अतः नया पता लिख रहे हैं।

BRAHMA KUMARIS.
H.NO.- 80. BRAHMASTHAN.
SAHADATPURA; MAU - 275101 (UP).

OM SHANT!

"मीठे बच्चे - इस ड्रामा में तुम हीरो हीरोइन पार्टधारी हो, सारे कल्प में तुम्हारे जैसा हीरो पार्ट और किसी का भी नहीं" (३५)

प्रश्नः- मनुष्य से देवता बनने का इम्तहान कौन पास कर सकता है?

उत्तरः- जो फॉलो फादर कर बाप समान पवित्र बनते वही यह इम्तहान पास कर सकते हैं। 21 जन्मों का बेहद का वर्सा मिलता है तो जरूर थोड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। अभी मेहनत नहीं की तो कल्प-कल्पान्तर नहीं करेंगे फिर ऊंच पद कैसे पायेंगे। पवित्र बनेंगे तो अच्छा पद पायेंगे। नहीं तो सजायें खानी पड़ेंगी।

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों से बाबा सम्मुख बात कर रहे हैं। बच्चे समझते होंगे हमारे साथ बेहद का बाप बात कर रहे हैं। जो सबसे अति मीठा है। बाप भी मीठा होता है, (a) टीचर भी मीठा होता है क्योंकि दोनों से वर्सा मिलता है। गुरू से भक्ति का वर्सा मिलता है। यहाँ तो एक से ही तीनों मिलते हैं। खुशी भी होती है। तुम उनके सम्मुख बैठे हो। तुम जानते हो बेहद का बाप जिसको पतित-पावन कहा जाता है, वही मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। वह बीज जड़ होता है। यह है चैतन्य। इनको सत चित आनंद स्वरुप कहा जाता है फिर (b) उनकी महिमा भी है। वह ज्ञान का सागर है परन्तु उससे नॉलेज क्या मिलती है, यह किसको पता नहीं है। तुम जानते हो जिन्हों को बाप नॉलेज दे रहे हैं, वही भक्ति मार्ग में इनके मन्दिर, शास्त्र आदि बनाते हैं। यह भी तुम जानते हो कि बरोबर हर 5 हजार वर्ष के बाद यह कल्प का संगम आता है। इसको कहा जाता है रूहानी अविनाशी पुरुषोत्तम संगमयुग। यूँ तो उत्तम पुरुष बहुत ही होते हैं। परन्तु वह एक जन्म में उत्तम पुरुष बनते हैं, फिर मध्यम कनिष्ट हो पड़ते हैं। यह लक्ष्मी-नारायण देखो कितने उत्तम पुरुष हैं। यह हैं पुरुषोत्तम और पुरुषोत्तमनी। ऐसा उत्तम दोनों को किसने बनाया? गाया जाता है ऊंच ते ऊंच भगवान है, वह ऊपर में रहते हैं। मनुष्य सृष्टि में ऊंचे ते ऊंच यह विश्व महाराजा महारानी हैं। ऊंचे ते (c) ऊंच भारत में राज्य करते थे। अब यह राज्य उन्होंने कैसे पाया! यह किसको पता नहीं। ऐसा बाप जो तुमको इतना ऊंच बनाते हैं, वह कितना मीठा लगना चाहिए। उनकी मत पर चलना चाहिए। ऐसा ऊंचा विश्व का मालिक बनाने वाला बाप पढ़ाते कैसे साधारण रीति से हैं। यह भी तुम जानते हो कि बेहद का बाप भारत में आता है। शिव जयन्ती भी मनाते हैं। भारत को आकर स्वर्ग बनाते हैं। अब स्मृति आई है कि हम स्वर्गवासी 84 जन्म भोग नर्कवासी बने हैं। फिर बाबा आया हुआ है स्वर्गवासी बनाने। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारी आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेगी। सतोप्रधान बनने बिगर वापिस कोई जा नहीं सकते। नहीं तो सजा खानी पड़ेगी। सज़ा भी आत्मा को मिलती है ना। गर्भ जेल में शरीर धारण कराए फिर सजा देते हैं। बच्चों को बहुत दुःख भोगना पड़ता है। त्राहि-त्राहि करते हैं। कहते हैं फिर पाप नहीं करूँगा। तुम बच्चों को तो गर्भ जेल में जाना नहीं है। वहाँ गर्भ महल है क्योंकि पाप होता नहीं। यहाँ रावणराज्य में पाप होता है तब तो राम-राज्य माँगते हैं। परन्तु वह जानते नहीं रावण राज्य क्या चीज़ है। जलाते हैं तो खत्म होना चाहिए। फिर-फिर

जलाते हैं, गोया मरा नहीं है। फिर यह सब करने से फायदा क्या? वो लोग जाकर लंका लूटकर आते हैं। एक झाड़ को बीमारी होती है, उसको सोना समझ ले आते हैं। वास्तव में तुम इस समय रावण पर जीत पाते और गोल्डन एज के मालिक बनते हो। अजमेर में बैकुण्ठ का मॉडल बनाया है। अब तुम जानते हो बाबा आया है बच्चों को फिर से स्वर्ग का मालिक बनाने। हीरे जवाहरों के महलों में हम राज्य करेंगे।

अभी तुम बच्चे योगबल से निर्विकारी सतोप्रधान बनते हो। आत्मा सम्पूर्ण निर्विकारी बन फिर चली जायेगी शान्तिधाम, वहाँ दु:ख की बात नहीं। बाबा ने समझाया है इस नाटक में तुम्हारा सबसे बड़ा मुख्य पार्ट है हीरो हीरोइन का। राज्य लेना और गँवाना-यह खेल है। हीरो हीरोइन तुम हो। हीरो का अर्थ है मुख्य पार्टधारी। तुम गोल्डन एज में पवित्र गृहस्थ आश्रम में रहते थे। आइरन एज में अपवित्र गृहस्थ व्यवहार है। अब बाबा गोल्डन एज में ले जायेगा। वहाँ लक्ष्मी-नारायण सूर्यवंशियों का राज्य होगा। वह पुनर्जन्म ले चन्द्रवंशी में आयेंगे, वृद्धि होती रहेगी। अब कितने करोड़ हो गये हैं। अब कहते बर्थ कम हों। जिनको एक दो बच्चा होगा वह थोड़ेही बन्द करेंगे। अब तुम तो इतला कर सकते हो कि पापूलेशन कम कराना यह तो बाप के ऊपर है। बाप जानते हैं जास्ती मनुष्य होंगे तो भूखो मरेंगे। मैं आया हूँ सबको खलास कर एक धर्म की स्थापना करने। वहाँ 9 लाख होंगे। छू मन्त्र हुआ ना। कलियुग रूपी रात पूरी होकर दिन शुरू हो जायेगा। बर्थ कन्ट्रोल पर कितना खर्चा करते हैं। बाप का कोई खर्चा नहीं। नेचुरल कैलेमिटीज होगी, सब खत्म हो जायेगा, ड्रामा में नूँध है। वह1 लोग जो प्लैन बना रहे हैं, वह भी ड्रामा में नूँध है। यूरोपवासी यादव, भारतवासी कौरव और पाण्डव। वह सब एक तरफ, इस तरफ दो भाई-भाई हैं। भारत में भाई-भाई हैं। जो अभी कलियुग में भाई-भाई हैं तुम अब निकल आये हो संगम पर। कौरव और पाण्डव एक ही घर के थे। आत्मा असुल में भाई-भाई है। तुम आत्माओं से ही पहले-पहले बाबा मिला है। रेस में जो पहले-पहले जाते हैं वह इनाम लेते हैं। तुम्हारी है याद की दौड़। यह कोई शास्त्र में नहीं है। बाप कहते हैं मेरे साथ योग रखो। यह योग की यात्रा इस समय ही होती है। यह यात्रा और कोई सिखला न सके। सतयुग में न रूहानी योग, न जिस्मानी योग होता - वहाँ दरकार ही नहीं। यह इस समय तुम्हारी बुद्धि में बैठता है। ड्रामा में एक-एक सेकेण्ड का एक्ट समझाया है, इसको स्वदर्शन चक्र कहा जाता है। वास्तव में स्वदर्शन चक्रधारी अभी तुम बनते हो। 84 जन्मों का अथवा सृष्टि चक्र का नॉलेज तुमको है। स्व माना आत्मा। आत्मा को यह ज्ञान है तो अभी तुम बच्चे स्वदर्शन चक्रधारी बने हो। हम तुमको कहेंगे रूहानी बच्चों। स्वदर्शन चक्रधारी ब्राह्मण कुल भूषण। इन अक्षरों का अर्थ कोई नया समझ नहीं सकता। यह अलंकार तुमको नहीं देते हैं क्योंकि तुमसे कई भागन्ती हो जाते हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि में 84 का चक्र है। अब नम्बरवन में जायेंगे। पहले घर जाकर फिर देवता बनेंगे। फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनेंगे। कितनी समझ की बात है। इतना भी कोई याद करे तो अहो सौभाग्य। बाकी थोड़ा समय है फिर हम स्वर्ग में जायेंगे। बाकी शास्त्रों में तो बहुत दन्त कथायें लिख दी हैं। कृष्ण जो सभी का प्यारा है, उनके लिए भी लिख दिया है सर्प ने डसा, यह हुआ..। कृष्ण, राधे से भी प्यारा लगता है क्योंकि मुरली बजाई है। वह वास्तव में है

ज्ञान की बात। तुम इस समय ज्ञान-ज्ञानेश्वरी हो। फिर पढ़कर राज-राजेश्वरी बनती हो। यह है एम आब्जेक्ट। तुमसे कोई पूछते हैं यहाँ का उद्देश्य क्या है? बोलो, मनुष्य से देवता बनना। हम सो देवता थे। 84 जन्मों बाद शूद्र बनें, अब फिर ब्राह्मण बने हैं। फिर देवता बनेंगे। पढ़ाने वाला ज्ञान का सागर परमात्मा है, न कि कृष्ण। यह राजयोग कोई भी सिखला न सके। तुम कहते हो बाबा हम कल्प-कल्प आपसे आकर राज्य-भाग्य लेते हैं। यह भी तुम जानते हो। इस महाभारी लड़ाई से ही स्वर्ग के गेट खुलने वाले हैं। बाबा आकर राजयोग सिखलाते हैं तो जरूर स्वर्ग चाहिए। नर्क खत्म होना चाहिए। यह महाभारी लड़ाई शास्त्रों में है।

(खाँसी आई) यह किसको होती है? शिवबाबा को या ब्रह्मा बाबा को? (ब्रह्मा को) यह कर्मभोग है। अन्त तक होता रहेगा। जब तक सम्पूर्ण बन जायें फिर यह शरीर भी नहीं रहेगा। तब तक कुछ न कुछ होता रहेगा, इसको कर्मभोग कहा जाता है। सतयुग में कर्मभोग होता नहीं। कोई बीमारी आदि होती नहीं। हम एवरहेल्दी-एवरवेल्दी बनते हैं। सदैव हर्षित रहते हैं क्योंकि बेहद के बाप से वर्सा मिलता है। फिर आधाकल्प के बाद दु:ख शुरू होता है। सो भी जब भक्ति व्यभिचारी हो जाती है तब दु:ख जास्ती होता है, तब त्राहि-त्राहि करते हैं और फिर विनाश होता है। अब तुम सम्मुख सुनते हो तो कितना मजा आता है। जानते हो यह हमारा सच्चा बाप, सच्चा टीचर, सच्चा सतगुरू है। यह महिमा एक ही निराकार बाप की है। वह है ऊंचे ते ऊंचा भगवान। उस बाप को याद करो तो ऊंच पद पायेंगे। यह कोई साधू-सन्त महात्मा तो तख्त पर नहीं बैठता है। कभी पाँव पड़ने भी नहीं देते हैं। बाप कहते हैं— मैं तुम्हारा ओबीडियन्ट सर्वेन्ट हूँ। मुझे पैर कहाँ हैं? तुम माथा किसको टेकेंगे? बहुत गुरुओं को माथा टेकते-टेकते तुम्हारी टिप्पड़ ही घिस गई है। जो भक्तिमार्ग में होता है वह ज्ञान मार्ग में हो न सके। भक्ति मार्ग में कहते हैं हे राम... बाप कहते हैं यहाँ कोई आवाज नहीं करना है। अपने को आत्मा समझ गुप्त बाप को याद करना है। हे शिव.. भी कहना नहीं है। तुमको आवाज से परे जाना है। बच्चे को अन्दर में बाप याद रहता है। आत्मा जानती है कि यह हमारा बाबा है। तुमको अन्दर गुप्त याद करना है, इसको अजपा याद कहा जाता है। जाप नहीं करना है। माला अन्दर फेरो या बाहर फेरो। बात एक ही है। अन्दर फेरना कोई गुप्त नहीं। गुप्त बात है - अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना। वह शिवबाबा यह प्रजापिता ब्रह्मा। तुमको डबल इंजन मिलती है, श्रृंगारने लिए। इनकी आत्मा भी श्रृंगार रही है। फिर सब चलेंगे पियर घर। वहाँ से फिर ससुर घर विष्णुपुरी में आयेंगे। यह है डबल पियर घर अलौकिक, वो लौकिक वह पारलौकिक। इस अलौकिक बाप को कोई जानते नहीं तब कहते हैं इस दादा को क्यों बिठाया है। यह किसको पता नहीं है कि इस तन से परमात्मा पढ़ाते हैं। यह बहुत जन्मों के अन्त में पूज्य से पुजारी बने हैं। राजा से रंक बने हैं। बाबा समझाते हैं - इस तन में मैं प्रवेश करता हूँ। फिर भी किसकी बुद्धि में बैठता नहीं। मन्दिरों में बैल रख दिया है। अब शंकर तो है सूक्ष्मवतन वासी। सूक्ष्मवतन में बैल आदि तो होते ही नहीं। बैल अर्थात् मेल। भागीरथ को मेल दिखाते हैं। मनुष्य तो बिल्कुल बेसमझ बन पड़े हैं। बाप कहते हैं- रावण ने बेसमझ बनाया है। खुद कहते हैं रामराज्य चाहिए। अब रामराज्य

तो सतयुग में होता है। कलियुग में रावण राज्य। राम और रावण भारत में होता है। शिव जयन्ती भी भारत में मनाते हैं, रावण जयन्ती नहीं मनाते क्योंकि दुश्मन है। जयन्ती उसकी मनाई जाती है जो सुख देता है। अब शिवबाबा आकर ज्ञान सुनाते हैं और रावण पर जीत पहनाते हैं। अब तुम जानते हो रावण क्या चीज़ है! कब आते हैं! एक्यूरेट हिसाब बताया जाता है। यह बातें अच्छी रीति धारण करो। भूलो मत। ज्ञान सागर के पास बादल बनकर आये हो। भरकर वर्षा बरसानी है, धारणा बड़ी अच्छी चाहिए। यहाँ तुम सम्मुख बैठे हो। भासना आती है हम बेहद बाप के सम्मुख, घर में बैठे हैं। ब्राह्मण कुल भूषण भी हैं। मम्मा बाबा भी हैं। बाबा हमको टीचर के रूप में पढ़ा रहे हैं। सतगुरू के रूप में साथ ले जायेंगे। वो गुरू लोग ले नहीं जाते। गुरू का काम है फॉलोअर्स को साथ ले जाना। वास्तव में वह फॉलोअर्स भी हैं नहीं। वह सन्यासी, वह गृहस्थी तो फॉलोअर्स कैसे ठहरे। तुम शिवबाबा को भी फॉलो करते हो, ब्रह्मा बाबा को भी फॉलो करते हो। जैसे यह बनते हैं, तुम भी बनते हो। हम आत्मा पवित्र बन बाबा के पास चली जायेंगी। बाबा कहते हैं मामेकम् याद करो। सच्चे-सच्चे फॉलोअर्स तुम हो।

बाप कहते हैं– मैं आया हूँ तुमको ले जाने के लिए। अब ज्ञान-चिता पर बैठो तो ले जाऊंगा। सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था उस समय और सब धर्म शान्तिधाम में थे। यह बातें बड़ी सहज हैं। बाबा के फॉलोअर्स बनो। जितना पवित्र बनेंगे, अच्छा पद पायेंगे नहीं तो सजा खानी पड़ेगी। जाना तो जरुर है 21 जन्मों का वर्सा मिलता है तो क्यों नहीं मेहनत करनी चाहिए। अब मेहनत नहीं की तो कल्प-कल्पान्तर नहीं करेंगे। फिर ऊंच पर कैसे पायेंगे। यह बड़ा बेहद का क्लास है। एक ही इम्तहान है। मनुष्य से देवता बनना है। अच्छा-

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

(१) एक बाप का सच्चा-सच्चा फॉलोअर्स बन पूरा-पूरा पवित्र बनना है। 21 जन्मों का वर्सा लेने का पुरुषार्थ करना है।

(२) मुख से "हे शिवबाबा" भी नहीं कहना है। आवाज़ से परे जाना है। अपने को आत्मा समझ अन्दर में बाप को याद करना है।

वरदान:- कर्म द्वारा गुणों का दान करने वाले डबल लाइट फरिश्ता मूर्त भव

जो बच्चे कर्मणा द्वारा गुणों का दान करते हैं उनकी चलन और चेहरा दोनों ही फरिश्ते की तरह दिखाई देते हैं। वे डबल लाइट अर्थात् प्रकाशमय और हल्केपन की अनुभूति करते हैं। उन्हें कोई भी बोझ महसूस नहीं होता है। हर कर्म में मदद की महसूसता होती है। जैसे कोई शक्ति चला रही है। हर कर्म द्वारा महादानी बनने के कारण उन्हें सर्व की आशीर्वाद वा सर्व के वरदानों की प्राप्ति का अनुभव होता है।

स्लोगन:-

कर्म करते करन-करावनहार बाप की स्मृति रहे तो स्व-पुरुषार्थ और योग का बैलेन्स ठीक रहेगा।

३६

16-11-96 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – हर एक पार्टधारी आत्मा आधा समय सुख, आधा समय दु:ख का पार्ट बजाती है – यह भी ईश्वरीय लॉ है"

प्रश्न:- बाप जो समझाते हैं, यह समझानी बच्चों की बुद्धि में यथार्थ रीति कब बैठेगी?

उत्तर:- जब बुद्धि शुद्ध बनेगी। जितना-जितना जो पुरुषार्थ कर खाद निकालते जायेंगे, उतना बाप की समझानी बुद्धि में बैठती जायेगी। अभी तक बच्चे सतो तक भी मुश्किल पंहुचे हैं। हर एक का पुरुषार्थ अपना है। कोई सतो हैं तो कोई तमो भी हैं। लेकिन बनना है सतोप्रधान।

गीत:- दूर देश का रहने वाला..... ओम् शान्ति।

जब मेले वा प्रदर्शनी में बच्चे समझाते हैं तो जो समझाने लायक बातें हैं, वह जरूर समझानी पड़ें। इसमें यह तो जरूर समझाना पड़े कि सब ब्रदर्स (आत्माओं) का बेहद का बाप एक ही है। यह भी पूछना पड़ता है कि भारत का आदि सनातन धर्म क्या है? यह तो आदि सनातन हिन्दू ही समझते हैं। इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन आदि को मालूम है कि हमारा धर्म किसने और कब स्थापन किया। भारतवासियों का हिन्दू धर्म है वा देवी-देवता? यह किसने और कब स्थापन किया? यह भारतवासी बिल्कुल ही नहीं जानते। यह बिल्कुल जरूरी बात है समझाने की। यह किसके भी ध्यान में नहीं आता है। प्राचीन भारत देश गाया जाता है। परन्तु उन्हों को यह पता नहीं कि हमारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म है। हिन्दू तो कोई धर्म ही नहीं है। अब तुम बच्चे जानते हो कि 5 हजार वर्ष पहले देवी-देवता धर्म था। बरोबर उस समय लक्ष्मी-नारायण राज्य करते थे। वह अपने को हिन्दू नहीं कहलाते थे। अच्छा हिन्दू धर्म का भी कोई संवत होना चाहिए। विकर्म संवत जो कहते हैं, हो सकता है जब से देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं तो अपने को हिन्दू कहलाना शुरू करते हों, तब से विक्रम संवत भी कहते हो। तो आधा-आधा हो गया। उस समय उनको आदि सनातन देवी-देवता नहीं कहेंगे। संवत कहा जाता है जब धर्म स्थापन होता है। वह किसने स्थापन किया? विकर्म संवत तो रावण ने स्थापन किया। उस समय सबके कर्म, विकर्म होते रहे। कर्म, अकर्म, विकर्म नाम तो है ना। तो विकर्म राजा का भी संवत चलता है। वह हो गया आधा समय। तो आगे का भी आधा चाहिए। विकर्म संवत 2053 है। अब यह हिन्दुओं का संवत तो नहीं है। अब यह बात बहुत जरूरी है समझाने की। यह प्रदर्शनी में, अखबार में भी पूछना चाहिए कि भारत का आदि सनातन देवी-देवता धर्म कब स्थापन हुआ? मालूम तो पड़े ना। यह बहुत नाजुक बातें हैं। जब यह मालूम पड़े तब हिसाब लगा सकें कि नई दुनिया थी फिर दिन-रात जरूर होते हैं। आधा-आधा जरूर होगा। यह एक ईश्वरीय लॉ है, यह समझानी देना है जरूर। ऐसा कभी कोई ने समाचार नहीं दिया है। क्रिश्चियन का भी आधा सुख, आधा दु:ख का पार्ट चलेगा। यह जो हम समझाते हैं, इसमें सारी हिस्ट्री जॉग्राफी आ जाती है। मनुष्य जो भी आते हैं उनको दु:ख सुख का पार्ट मिला हुआ है। एक दो जन्म लिए आयेंगे तो भी आधा-आधा होगा। यह एक ईश्वरीय लॉ है। प्रदर्शनी में जब सुनते हैं, अच्छा-अच्छा

करते हैं। बाहर निकलने से ही भूल जाते हैं। बिरला कोई ध्यान देते हैं। कोई एक मास आकर भी गुम हो जाते हैं। कोई 10 मिनट समझते, कोई एक घन्टा कोई तो कुछ समय आकर चलते-चलते थक जाते हैं। ऐसे सेन्टर्स पर होता रहता है। कैसे दैवी सम्प्रदाय बन रहे हैं। यह भी वन्डर है – नई दुनिया का धर्म पुरानी दुनिया में स्थापन हो रहा है। यह बातें तुम बच्चों की बुद्धि में आती हैं। बाप द्वारा तुम अपने 84 जन्मों को जान चुके हो। बाप कहते हैं मैं 84 जन्मों की कहानी सुनाने आता हूँ तो जरूर पिछाड़ी में ही आकर सुनायेंगे ना। द्वापर के बीच में तो सुना न सकें। जबकि पिछाड़ी वाले जन्म अभी लिये नहीं हैं। राजयोग का ज्ञान द्वापर में मिल न सके। महाभारत लड़ाई भी द्वापर में लग न सके। महाभारत लड़ाई के बाद ही सतयुग स्थापन होता है अर्थात् देवी-देवता धर्म स्थापन होता है। उनसे पहले ब्राह्मण धर्म स्थापन होता है तो जरूर ब्रह्मा द्वारा स्थापन करते होंगे। तो ब्राह्मण जन्म लेते होंगे ना। विराट रूप जो दिखाया है उसमें शिव को भी नहीं दिखाया है तो ब्राह्मणों की चोटी भी नहीं दिखाई है। प्रदर्शनी में भी विराट रूप वाला चित्र होना जरूरी है। ब्रह्मा द्वारा पहले जरूर ब्राह्मण रचेंगे। फिर वह ब्राह्मण कब और कहाँ रचते हैं। ब्राह्मणों का है संगम। शूद्रों का है कलियुग। अब तुम अपने को कहलाते हो प्रजापिता ब्रह्माकुमार कुमारियाँ। प्रजा माना ही मनुष्य सृष्टि तो जरूर ब्राह्मण होंगे। क्राइस्ट को क्रिश्चियन धर्म का पिता कहेंगे। यह है प्रजापिता। भगवान ब्रह्मा द्वारा मनुष्य सृष्टि रचते हैं। ऐसे नहीं क्राइस्ट द्वारा, बौद्धियों द्वारा रचते हैं। मनुष्य सृष्टि शुरू ही ब्रह्मा से होती है। तो जरूर पहले-पहले ब्राह्मण ही रचेंगे। ब्राह्मणों को फिर देवता बनाते हैं। विराट रूप भी भारत में ही दिखाते हैं और धर्म वाले विराट रूप बना न सकें। यह नई-नई बातें बाप ही समझाते हैं। नई पाइंटस भी निकलती रहती हैं, पुरानी भी निकलती रहती हैं क्योंकि नये-नये बच्चों को भी कुछ नई, कुछ पुरानी पाइंट मिलनी चाहिए, जो समझें। जब तक अल्फ बे बुद्धि में नहीं हो तो और क्या समझेंगे। तुम जानते हो अल्फ बे किसको समझाना बड़ा सहज है। बाप तो सबका एक है, वह आते भी जरूर हैं। शिव जयन्ती भारत में ही मनाते हैं। परन्तु भारतवासियों को यह पता नहीं कि शिव जयन्ती क्या है। ना ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का पता है, ना श्रीकृष्ण का। श्री लक्ष्मी-नारायण का राज्य कब था, यह भी नहीं जानते। क्राइस्ट होकर गये, उनके पोप की सारी लिस्ट होगी। परन्तु भारतवासियों को यह पता नहीं कि यह लक्ष्मी-नारायण भी भारत में राज्य करके गये हैं। जो भी चित्र बनाते हैं पूजा करते, उनका आक्यूपेशन बिल्कुल ही नहीं जानते। देवताओं ने फिर क्षत्रियों से राजाई कैसे ली, क्या लड़ाई की? राजाई बदली होती है तो जरूर कोई ने विजय पाई। वहाँ तो यह बात ही नहीं। वह तो अच्छी तरह राज्य देते हैं। मनुष्य तो कितने अन्धियारे में हैं। तुमको कितनी रोशनी मिलती है। ऐसे भी नहीं सब बातें किसको याद रहती हैं। नहीं तो बाबा ने जो समझाया वह सब प्रदर्शनी में समझाना चाहिए। प्रदर्शनी में एक दिन आते हैं फिर दूसरे दिन आते नहीं। कुछ भी पता नहीं पड़ता है कि समझते हैं वा नहीं। ओपीनियन में लिखाना चाहिए कि पहले हमको यह पता नहीं था तो देवी-देवता धर्म कहाँ गया। संवत बताओ। हिन्दू धर्म कब से शुरू हुआ? हर एक क्या-

क्या समझाते हैं, यह किसको पता नहीं पड़ता। ओपीनियन रखने वाला भी चाहिए। तुम सिद्ध करके बताते हो। 5 हजार वर्ष का यह चक्र है, लिखो। संवत आदि का किसको मालूम तो है नहीं। यह बातें कोई शास्त्र में सुनी हैं? फिर हमने कहाँ से सीखी? तो हमको सिखाने वाला जरूर भगवान होगा। भगवान बिगर यह बातें कोई समझा न सके। वह भी जरूर कोई तन में आयेगा। परमात्मा ज्ञान का सागर है। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। आदि मध्य अन्त की नॉलेज देते हैं। उनका नाम है शिव। भक्ति मार्ग में उनके ढेर नाम रख दिये हैं। कम से कम डेढ़ लाख अपनी-अपनी भाषा में उनके नाम रखते हैं।

बच्चों को रोज कितना समझाते हैं। परन्तु अजुन शुद्ध बुद्धि बने नहीं हैं। पुरुषार्थ करते रहेंगे तो खाद निकल जायेगी। अब तक तो बच्चे सतो तक भी मुश्किल पहुँचे हैं। उसमें भी कोई तमो, सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो इसमें भी नम्बरवार हैं। हर एक का पुरुषार्थ अपना-अपना चलता है। इस समय मनुष्यों की है विनाश काले विप्रीत बुद्धि। सिर्फ पाण्डवों की थी प्रीत बुद्धि। उन्हों की विजय हुई। असुर और देवता, हैं दोनों मनुष्य। ऐसे नहीं कि असुरों की कोई भयानक शक्ल होती है। वह तो लड़ाई में गोले गैस आदि से बचने लिए ड्रेस पहनते हैं। वह है आसुरी सम्प्रदाय, तुम हो राम सम्प्रदाय क्योंकि तुमने 5 विकार छोड़े हैं। पवित्र बन सारे विश्व पर तुम राज्य करेंगे। तुम्हारी कोई के साथ लड़ाई नहीं है। बाबा कितनी बातें समझाते हैं। कोई मास दो आकर फिर थक जाते हैं। फिर समझाया जाता है तकदीर में नहीं है। साधारण प्रजा में तो आयेंगे। प्रजा तो ढेर बनने वाली है। अभी भी देखो प्रजा कितनी है। किस तरफ अन्न की कमी होने कारण मनुष्य भूख में भी मर जाते हैं। कोई तरफ बारिस नहीं होने कारण अकाल भी पड़ जाता है। इसमें गवर्मेन्ट क्या करेगी! ये तो नेचुरल कैलेमेटीज है। अब तो मूसलधार बरसात भी पड़ेगी। विनाश तो होना है। तो तुमने जो साक्षात्कार किया है, वह सब प्रैक्टिकल में होगा। साक्षात्कार में एक कृष्ण का महल देखेंगे। सारा तो नहीं देख सकेंगे। अच्छा देखेंगे विनाश हुआ शरीर छोड़ेंगे तो सब कुछ भूल जायेंगे। सारी दुनिया खत्म हो जाने वाली है। फिर दुनिया ही बदल जायेगी, तुमको सब कुछ भूल जायेगा। अभी तुम्हारे में शुरू से लेकर अन्त तक सब नॉलेज है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन का चक्र कैसे फिरता है, सारी नॉलेज बाप ने दी है। जिसमें जितना जास्ती ज्ञान उतना जास्ती नशा रहता है। अभी हम मास्टर नॉलेजफुल हो गये, फिर जब विनाश होगा हमारा शरीर खलास हो जायेगा। इस जन्म तक ही नॉलेज रहती है। तो इतना बुद्धि में नशा रहना चाहिए कि हम यह शरीर छोड़ जाकर प्रिन्स प्रिन्सेज बनेंगे। मनुष्य तो पढ़कर जाकर अपनी-अपनी कमाई करते हैं। बाप कहते हैं- हम कोई कमाई नहीं करते। हम तो तुमको सिखलाकर अपने घर ले जाते हैं। तुम कमाई करते हो तो गँवाते भी हो। तुमको सारा आदि मध्य अन्त का ज्ञान है। बाबा को भी ज्ञान है, जो बैठकर समझाते हैं पार्ट अनुसार। फिर बाबा भी चले जाते हैं निर्वाणधाम। सभी आत्मायें भी चली जायेंगी। वहाँ फिर जिन-जिन का पार्ट होगा वह फिर राजधानी में आते जायेंगे। बाकी टाइम शान्तिधाम में रहेंगे। बच्चों को कितना ज्ञान मिल रहा है। ऊंच पद पाने के लिए नये किसकी बुद्धि में बैठ न सके! सिर्फ इतना कहेंगे ज्ञान बहुत

अच्छा है। फिर अपने धन्धेधोरी में चले जायेंगे। बाहर जाने से माया भुला देती है, ताला लगा देते हैं। कई बच्चों का भी ऐसा हाल होता है। पूरी धारणा होती नहीं। पहले अन्दर कोई आये तो बोलो, यह सब हैं ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा विष्णुपुरी की स्थापना कर रहे हैं। अभी कलियुग अन्त है फिर सतयुग होगा। तो ब्रह्मा के बच्चे सब ब्रह्माकुमार हैं जो फिर देवता बनेंगे। ऐसा सर्विस समाचार बाबा को मिलता रहे तो बाबा राय दें। परन्तु बाबा को पूरा सुनाते नहीं। बहुतों पर ग्रहचारी लगती है। अभी-अभी देखो फर्स्टक्लास, कल देखो थर्डक्लास बन पड़ते हैं। ग्रहचारी न होती तो आश्चर्यवत भागन्ती क्यों होते? जो बच्चे प्रदर्शनी में अच्छी तरह जाकर सर्विस करते हैं, वह अपना समय भी सफल करते हैं। बापदादा को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। बाबा बच्चों को कुछ भी बोलेगा फिर फौरन प्यार भी करेगा। बाबा की दिल पर बच्चों का कुछ भी रहता नहीं है। यह सिर्फ शिक्षा देने के लिए सिखलाते हैं।

यहाँ बच्चों को टोली खिलाई जाती है क्योंकि बेहद का बाप है ना। लौकिक बाप बाजार से आते हैं तो बच्चे जरूर याद पड़ेंगे। कुछ न कुछ टोली ले आते हैं। बाहर सेन्टर पर टोली नहीं मिलती। यहाँ बाप सम्मुख बैठा है। बाबा सब कुछ बच्चों को समझाते हैं। यह द्वापर से ऋषि-मुनि जो सतोप्रधान थे, जिनकी बुद्धि को ताला लगा हुआ नहीं था, वे भी कहते थे रचता और रचना को हम नहीं जानते हैं। आज कलियुग में सबकी बुद्धि को ताला लगा हुआ है, फिर वह कैसे जान सकेंगे। शास्त्र तो वह ऋषि-मुनी भी पढ़ते थे। तुमको पाइंट बहुत मिलती हैं समझाने के लिए। अच्छा—

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

(१) भगवान हमको पढ़ाकर भगवती भगवान बनाते हैं - इसी खुशी वा नशे में रहना है। रचना और रचना का ज्ञान बुद्धि में रख दूसरों को सुनाना है।

(२) जैसे बाप किसी बच्चे की बात दिल पर नहीं रखते हैं, ऐसे किसी की भी बात दिल पर नहीं रखनी है।

वरदान:- साथी और साक्षीपन की स्मृति द्वारा सब बन्धनों से मुक्त होने वाले सर्व शक्ति सम्पन्न भव

सर्व शक्तियों से सम्पन्न बन अधीनता से परे होने के लिए दो शब्द सदा याद रहें - एक साक्षी दूसरा साथी, इससे बन्धनमुक्त अवस्था जल्दी बन जायेगी। सर्वशक्तिमान् बाप का साथ है तो सर्व शक्तियां स्वत: प्राप्त हो जाती हैं और साक्षी बनकर चलने से कोई भी बन्धन में फंसेंगे नहीं। निमित्त मात्र इस शरीर में रहकर कर्तव्य किया और साक्षी हो गये — इसका विशेष अभ्यास बढ़ाओ।

स्लोगन:-

अच्छाई धारण करो लेकिन अच्छाई में प्रभावित नहीं हो जाओ।

17-5-98 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज-1-1-79 मधुबन

नए वर्ष के लिए बाप द्वारा कराया गया दृढ़ संकल्प

आज बापदादा सर्व बच्चों के नई उमंगों, नये दृढ़ संकल्पों, नई दुनिया को समीप लाने के सुहावने संकल्पों को सुनते हुए अति हर्षित हो रहे थे। हरेक बच्चे के अन्दर विशेष उमंग है - स्वयं को सम्पन्न बनाकर विश्व का कल्याण करने का। आज अपने अन्दर रही हुई कमजोरियों को सदाकाल के लिए विदाई देने के दृढ़ संकल्प पर, बापदादा भी बधाई देते हैं। इसी विदाई की बधाई को हर रोज़ अमृतवेले स्मृति के द्वारा समर्थ बनाते रहना! इस वर्ष स्वयं के समर्थी स्वरुप के साथ-साथ सेवा में भी समर्थ स्वरूप लाना है। जैसे विनाशकारी ग्रुप बहुत तीव्र गति से अपने कार्य को आगे बढ़ाते जा रहे हैं। बहुत रिफ़ाइन सेकेण्ड में शारीरिक बन्धन से मुक्त होने अर्थात् शारीरिक दु:ख से सहज मुक्त होने, अनेक आत्माओं को बचाने के सहज साधन बना रहे हैं। किस आधार से? साइन्स की अथॉरिटी से। ऐसे स्थापना के कार्य में निमित्त बने हुए मास्टर आलमाइटी अथॉरिटी ग्रुप, आत्माओं को जन्म-जन्मान्तर के लिए माया के बन्धन से, माया द्वारा प्राप्त हुए अनेक प्रकार के दु:खों से, एक सेकेण्ड में मुक्त करने वा सदाकाल के लिए सुख-शान्ति का वरदान देने, हरेक आत्मा को ठिकाने लगाने के लिए तैयार हो? विनाशकारी ग्रुप अब भी एवररेडी है, सिर्फ आर्डर की देरी है। ऐसे स्थापना के निमित्त बने हुए ग्रुप एवररेडी हो? क्योंकि स्थापना का कार्य सम्पन्न होना अर्थात् विनाशकारियों को आर्डर मिलना है। जैसे समय समीप अर्थात् पूरा होने पर सुई आती है और घण्टे स्वत: ही बजते हैं। ऐसे बेहद की घड़ी में स्थापना की सम्पन्नता अर्थात् समय पर सुई (कांटा) का आना और विनाश के घण्टे बजना। तो बताओ सम्पन्नता में एवररेडी हो?

आज बच्चों के अमृतवेले से नये वर्ष के नये उमंग सुनते बापदादा की भी एक नई टापिक पर रुहरिहान हुई।

ब्रह्मा बोले - मुक्ति का गेट कब खोलना है? जब तक मुक्ति का गेट ब्रह्मा नहीं खोलते तब तक अन्य आत्माएं भी मुक्ति में जा नहीं सकती। ब्रह्मा बोले - अब चाबी लगायें?

बाप बोले - उद्घाटन अकेला करना है या बच्चों के साथ?

ब्रह्मा बोले - सौतेले और मातेले बच्चों के दु:ख के आलाप, तड़फने के आलाप सुनते-सुनते अब रहम आता है।

बाप बोले - बच्चों में से सर्व श्रेष्ठ विजयी रत्न जो साथ-साथ भिन्न-भिन्न सम्बन्ध और स्वरुप से ब्रह्मा की आत्मा के साथी बनने वाले है, ऐसे साथी विजयी रत्नों की माला तैयार है? जिन्हों का आदि से यही संकल्प है कि साथ जियेंगे, साथ मरेंगे.... किसी भी भिन्न रुप वा सम्बन्ध में साथ रहेंगे, उन्हों से किए हुए वायदे के प्रमाण साथियों के बिना चाबी कैसे लगायेंगे?

तो नये वर्ष का नया संकल्प ब्रह्मा का सुना? बाप के इस संकल्प को प्रैक्टिकल में

लाने वाले विजयी ग्रुप अब क्या करेंगे? श्रेष्ठ विजयी रत्न ही बाप के इस संकल्प को पूरा करने वाले हैं, इसलिए इस वर्ष में विशेष रुप से मास्टर आलमाइटी अथॉरिटी के स्वरुप से सेकेण्ड में मुक्त करने की मशीनरी तीव्र करो। अभी मैजारटी आत्मायें प्रकृति के अल्पकाल के साधनों से वा आत्मिक शान्ति प्राप्त करने के बने हुए अल्पज्ञ स्थानों से अर्थात् परमात्म मिलन मनाने के ठेकेदारों से अब थक गए हैं, निराश हो गए हैं - समझते हैं सत्य कुछ और है। सत्यता की मंज़िल की खोज में हैं। प्राप्ति के प्यासे हैं। ऐसी प्यासी आत्माओं को आत्मिक परिचय, परमात्म परिचय की यथार्थ बूँद भी ज्ञान आत्मा बना देगी, इसलिए ज्ञान कलष धारण कर सबसे को प्यास बुझाओ। अमृत कलष सदा साथ रहे। चलते फिरते सदा अमृत द्वारा अमर बनाते चलो। तब ही ब्रह्मा बाप के साथ-साथ मुक्ति के गेट का उद्घाटन कर सकेंगे? अभी तो भवनों का उद्घाटन कर रहे हो - अभी विशाल गेट का उद्घाटन करना है। उसके लिए सदा अमर बनो और अमर बनाओ। अमर भव के वरदानी मूर्त बनो। अब पुरूषार्थ करने वाली आत्माएं जो अन्तिम अति कमज़ोर आत्माएं हैं, ऐसी कमज़ोर आत्माओं में पुरुषार्थ करने की भी हिम्मत नहीं है, ऐसी आत्माओं को स्वयं की शक्तियों द्वारा समर्थ बनाकर प्राप्ति कराओ। इसलिए ज्ञान मूर्त से ज्यादा अभी वरदानी मूर्त का पार्ट चाहिए। सुनने की शक्ति भी नहीं है। चलने की हिम्मत नहीं है। सिर्फ एक प्यास है कि कुछ मिल जाए - ऐसी अनेक आत्माएं विश्व में भटक रही हैं, चलने के पाँव अर्थात् हिम्मत भी आपको देनी पड़ेगी। तो हिम्मत का स्टाक जमा है? अमृत कलष सम्पन्न है? अखुट है? अखण्ड है? क्यू लगायें? स्वयं की क्यू समाप्त की है? अगर स्वयं की क्यू में बिज़ी होंगे तो अन्य आत्माओं को सम्पन्न कैसे बनायेंगे? इसलिए इस वर्ष में अपनी क्यू को समाप्त करो। क्यों, क्या की भाषा चेन्ज करो। एक ही भाषा हो, सर्व प्रति संकल्प से, वाणी से वरदानी भाषा हो, वरदानी मूर्त हो, वरदानों की वर्षा के भाषण हो। जो भी सुनें वह अनुभव करे कि भाषण नहीं लेकिन वरदानों के पुष्पों की वर्षा हो रही है - तब उद्घाटन करेंगे। नये वर्ष की यही नवीनता करना। अच्छा।

ऐसे सदा अमृत कलषधारी, हर संकल्प से वरदानी अनेक आत्माओं की हिम्मत बढ़ाने वाले, हिम्मते बच्चे मदद बाप, ऐसे एवररेडी ब्रह्मा बाप के साथ-साथ सदा साथ का पार्ट बजाने वाले ऐसे विजयी रत्नों को, सम्पन्न आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:- ब्रह्मा को यह संकल्प क्यों उठा? इसका रहस्य समझते हो? ब्रह्मा के संकल्प से सृष्टि रची और ब्रह्मा के संकल्प से ही गेट खुलेगा। अब शंकर कौन हुआ? यह भी गुह्य रहस्य है। जब ब्रह्मा ही विष्णु है तो शंकर कौन? इस पर भी रुहरिहान करना। अब तो वरदानी मूर्त ग्रुप, जिन्हों के इन स्थूल हाथों में नहीं लेकिन सदा स्मृति में, समर्थ स्वरुप में विजय का झण्डा हो - ऐसे विजय का झण्डा लहराने वाला ग्रुप हो। जिसको कहा जाता है रुहानी सोशल वर्कर ग्रुप। ऐसा ग्रुप अब स्टेज पर चाहिए। स्टेज पर आने वालों के ऊपर सभी की नज़र आटोमेटिकली जाती है - अभी पर्दे के अन्दर है, स्वयं के पुरुषार्थ का पर्दा है। अभी इसी पर्दे से निकल सेवा की स्टेज पर आओ

तो विश्व की आत्माएं - ऐसे हीरो पार्टधारियों को देख नज़र से निहाल हो जायेंगे। ऐसे प्लान बनाओ, ऐसे ग्रुप के मुख से सत्यता की अथार्टी स्वत: ही बाप की प्रत्यक्षता करेगी। अभी तो बेबी बाम्ब फेंक रहे हैं, अभी परमात्म बाम्ब द्वारा धरनी को परिवर्तन करो। इसका सहज साधन है सदा मुख पर वा संकल्प में बापदादा-बापदादा की निरन्तर माला के समान स्मृति हो। सबकी एक ही धुन हो बापदादा। संकल्प, कर्म और वाणी में यही अखण्ड धुन हो। यही अजपाजाप हो। जब यह अजपाजाप हो जायेगा तो और सब बातें स्वत: ही समाप्त हो जायेंगी क्योंकि इसमें ही बिज़ी रहेंगे। फुर्सत ही नहीं होती तो व्यर्थ स्वत: ही समाप्त हो जायेगा। तो अब सुना कि इस वर्ष में क्या करना है? आज के संकल्प से समय को जानना - सुई तो ब्रह्मा ही है ना। तो सुई कहाँ तक पहुँची है? सुक्ष्मवतन से आगे भी बढ़ेगी ना? अच्छा।

विदेशी भाई-बहनों से -

डबल विदेशी बच्चों के तीव्र पुरुषार्थ की रफ्तार को देख बापदादा भी हर्षित होते हैं। विदेशी बच्चों ने अपने असली बाप को, अपने असली देश को, असली धर्म को बहुत अच्छी तरह से पहचान लिया है। जैसे कल्प पहले की बनी हुई धरनियों में सिर्फ बाप के परिचय का बीज पड़ने से फल स्वरुप प्रत्यक्ष हो गए। बापदादा जानते हैं कि इस ग्रुप में कई ऐसे रत्न हैं जो बापदादा के गले के माला के मणके हैं। ऐसे मणकों को बाप भी सदा विश्व के आगे प्रत्यक्ष करने के वा विश्व के आगे बच्चों द्वारा बाप प्रत्यक्ष होने के कई दृश्य देख भी रहे हैं - अभी प्रत्यक्ष हो रहे हैं, और आगे चल के भी होंगे। आप सभी अपने को ऐसे अमूल्य रत्न समझते हो? जो सबसे अमूल्य रत्न हैं, उन्हों का निवास स्थान कहाँ है? अमूल्य रत्नों का स्थान है ही दिल की डिब्बी। सदा दिल में रहने वाले अर्थात् सदा बाप की याद में रहने वाले सभी अपने को तीव्र पुरुषार्थी अनुभव करते हो? किस लाइन में हो? हाई जम्प लगाने वाले हो ना? डबल लाइट वाले सदा हाई जम्प देंगे। अगर किसी भी प्रकार का बोझ है तो हाई जम्प नहीं दे सकते। सभी सिकीलधे हो क्योंकि बाप का परिचय मिलते ही सहजयोग द्वारा बाप को सहज ही पहचान लिया। मुश्किल का अनुभव नहीं हुआ। मुश्किल को सहज करने का साधन है - बाप के सामने बैठ जाओ तो सदा वरदान का हाथ अपने ऊपर अनुभव करेंगे। सेकेण्ड में सर्व समस्याओं का हल मिल जायेगा। लेकिन बाप के सामने कौन बैठ सकेंगे? जिन्होंने बाप को जो है, जैसे है, वैसे दिव्य चक्षु द्वारा, बुद्धि द्वारा जान लिया और देख लिया। बाप जानते हैं कि इन आत्माओं ने विश्व के आगे एक एक्जैम्पुल बन अनेक आत्माओं के कल्याण के लिए बहुत अच्छा कदम उठाया है। विश्व आपको फालो करेगी। अच्छा।

दिल्ली जोन

1. अन्तिम मंज़िल के समीपता की निशानी - सर्व से किनारा

सदा अपनी मंज़िल अति समीप अनुभव करते हो? ऐसे समझते हो कि अपनी अन्तिम फरिश्ते जीवन की मंज़िल पर अभी पहुँचने वाले ही हैं। जितना-जितना इस अन्तिम मंज़िल

के नज़दीक आते जायेंगे उतना सब तरफ से न्यारे और बाप के प्यारे बनते जायेंगे। जैसे जब कोई चीज़ बनाते हो जब वह तैयार हो जाती है तो किनारा छोड़ देती है ना, जितना सम्पन्न स्टेज के समीप आते जायेंगे उतना सर्व से किनारा होता जायेगा। फरिश्ता अर्थात् एक के साथ सब रिश्ता। ऐसे अनुभव करते हो कि किनारा होता जाता है? जब कोई चीज़ पूरी नहीं बनती तो तले में लगते जाती है, जब बन जाती है तो किनारा छोड़ देती, किनारा नहीं छोड़ा माना अभी तैयार नहीं। तो सब बन्धनों से, सब तरफ से वृत्ति द्वारा किनारा होता जाता है कि अभी लगाव है? अगर स्पीड ढीली होगी तो समय पर पहुँच नहीं सकेंगे। समय के बाद पहुँचे तो प्राप्ति की लिस्ट में नहीं आ सकेंगे। इसलिए यह चेक करो कि चारों ओर के बन्धन से मुक्त होते जाते हैं? अगर नहीं होते तो सिद्ध है फरिश्ता जीवन समीप नहीं। जब एक तरफ सम्बन्ध का सुख प्राप्त हो सकता है तो भटकने की क्या ज़रुरत है, ठिकाने लग जाना चाहिए ना। एक के साथ सर्व रिश्ते निभाना यह है ठिकाना। सदा अपना अन्तिम फरिश्ता स्वरुप स्मृति में रखो तो जैसी स्मृति होगी वैसी स्थिति बन जाएगी।

2. वाह ड्रामा वाह इसी स्मृति से अनेकों की सेवा - सभी सदैव वाह ड्रामा वाह इसी स्मृति में ड्रामा को देखते हुए चलते हो? कोई भी सीन को देखते हुए घबराते तो नहीं? जब ड्रामा का ज्ञान मिल गया तो वर्तमान समय कल्याणकारी युग है, जो भी दृश्य सामने आता है उसमें कल्याण भरा हुआ है। वर्तमान न भी जान सको लेकिन भविष्य में समाया हुआ कल्याण प्रत्यक्ष हो जायेगा। वाह ड्रामा वाह याद रहे तो सदा खुश रहेंगे, पुरुषार्थ में कभी भी उदासी नहीं आयेगी, स्वत: ही आप द्वारा अनेकों की सेवा हो जायेगी।

3. सहयोगी आत्माओं को सदा सम्पन्न रहने का वरदान - जो आत्माएं दिल व जान सिक व प्रेम से यज्ञ को सम्पन्न बनाती हैं, जिन्होंने समय के अनुसार सहयोग की अंगुली दी उन्हों का एक से अनेक गुणा बन गया, समय की भी वैल्यू होती, आदि में आवश्यकता के समय जिन आत्माओं का अमूल्य, सहयोग स्थापना के कार्य में हुआ है, उन्हों को रिटर्न में सदा सम्पन्न रहने का वरदान प्राप्त हो गया। वह सदा भरपूर रहते आये हैं और रहेंगे। अच्छा - ओम् शान्ति।

वरदान:- कर्मयोगी बन हर कार्य को कुशलता और सफलता पूर्वक करने वाले चिंतामुक्त भव

कई बच्चों को कमाने की, परिवार को पालने की चिंता रहती है लेकिन चिंता वाला कभी कमाई में सफल नहीं हो सकता। चिंता को छोड़कर कर्मयोगी बन काम करो तो जहाँ योग है वहाँ कोई भी कार्य कुशलता और सफलता पूर्वक सम्पन्न होगा। अगर चिंता से कमाया हुआ पैसा आयेगा भी तो चिंता ही पैदा करेगा, और योगयुक्त बन खुशी-खुशी से कमाया हुआ पैसा खुशी दिलायेगा क्योंकि जैसा बीज होगा वैसा ही फल निकलेगा।

स्लोगन:-

सदा गुण रूपी मोती ग्रहण करने वाले होलीहंस बनो, कंकड़ पत्थर लेने वाले नहीं।

★ 22-5-98 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम रूप बसन्त हो, तुम्हें बाप की याद में भी रहना है तो ज्ञान-रत्नों का बीज भी बोना है, ज्ञान-योग से अपना शृंगार करना है"

प्रश्नः- तुम बच्चे कलियुगी गोवर्धन पर्वत को उठाने के लिए कौन-सी अंगुली देते हो?
उत्तरः- पवित्रता की। पवित्रता की प्रतिज्ञा करना ही जैसे अंगुली देना है। पवित्रता नहीं है तो भारत का हाल देखो क्या हो चुका है। पवित्रता है तो पीस-प्रासपर्टी सब है इसलिए श्रीमत पर आग और कपूस इकट्ठे रहते भी पवित्र बनना है (प्रवृति में रहते पवित्र बनना है)। घरबार का सन्यास नहीं करना है।

गीतः- आने वाले कल की तुम तकदीर हो... ओम् शान्ति।

माताओं ने, सभी सजनियों ने यह गीत सुना। बच्चे जानते हैं इस भारत की तकदीर में लकीर लगी हुई है। किस द्वारा लकीर लगी है? 5 विकारों रूपी रावण द्वारा। अब फिर तुम बच्चे भारत की तकदीर बना रहे हो। तुम हो शिव शक्ति मातायें। जब ज्ञान सागर आते हैं तो माताओं के ऊपर कलष रखते हैं। तुम बच्चे जानते हो हम भारत की तकदीर बनाने अर्थात् भारत को स्वर्ग बनाने वाले हैं। तुम बाप की सेना हो। बाप के घर की शोभा हो। माँ-बाप के पास बच्चा नहीं होता है तो घर जैसे सूना लगता है। अब यह दुनिया सूनी-सूनी लगती है। अब तुम बच्चे इनको स्वर्ग बनाने वाले हो। बाप कहते हैं मैं तुम माताओं का गुलाम हूँ क्योंकि आगे यह मातायें पति की गुलाम थीं। उनको कहा जाता है हिन्दू नारी का पति ही गुरु-ईश्वर सब कुछ है। वास्तव में इस समय की बात को फिर भक्ति मार्ग में ले गये हैं। परमपिता परमात्मा को ही इस समय कहा जाता है त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव। सब कुछ एक है। हिन्दू लोगों ने फिर पति के लिए कह दिया है। वास्तव में शिवबाबा है पतियों का पति। तुम तो सदा सौभाग्यशाली बनती हो और यह पति भी अमर है, अमरनाथ है ना। तुमको भी अमरनाथ, अमरपुरी का मालिक बनाते हैं। ऐसे पति को बहुत याद करना है जो तुमको पढ़ाकर स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। ऐसे पति को भूलने से रोना आ जाता है। बाप कहते हैं – क्या तुम्हारा साजन मर गया है जो तुम रोती हो! तुमको तो अभी सदैव हर्षितमुख रहना है। देवताओं का मुखड़ा सदैव हर्षित रहता है। मनुष्य देखने से ही खुश होते हैं। देवताओं ने वह खुशी कहाँ से लाई? संगम पर बाप ने ऐसा हर्षितमुख, खुशमिज़ाज़ बनाया था। अभी पुरुषार्थ करना है तब ही तो अविनाशी बनेंगे। बाप कहते हैं – रोने की बात ही नहीं है। वाह ऐसा सलोना साजन मिला है जिससे स्वर्ग के महाराजा-महारानी बनते हो। तुम श्रीमत पर कदम-कदम चलते रहो। तुम जो वर्शन्स सुनते हो वह एक-एक वर्शन्स लाख रूपये का है। वह विद्वान लोग गीता, वेदान्त आदि सुनाते हैं तो कहते हैं यह एक-एक वर्शन्स लाख रूपये का है। परन्तु ऐसा तो है नहीं।

तुम हरेक रूप-बसन्त हो। आत्मा रूप है ना। बाप भी है रूप। फिर उनको ज्ञान-सागर

कहा जाता है। ज्ञान की वर्षा कराने वाला है। स्थूल पानी की बात नहीं। इसको तो ज्ञान-रत्न कहा जाता हैं। हरेक को यह ज्ञान-रत्नों का बीज बोना है। मनुष्यों को समझाना चाहिए कि तुम आत्मा हो, यह तुम्हारा शरीर है। तुम कहते हो पाप-आत्मा, पुण्य-आत्मा। पाप-परमात्मा, पुण्य-परमात्मा नहीं कहते हो। इससे सिद्ध है – परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है। माया पाप-आत्मा बनाती है और बाप पुण्य-आत्मा बनाते हैं। पुण्य-आत्माओं की दुनिया को स्वर्ग और पाप-आत्माओं की दुनिया को नर्क कहा जाता है। सबको पावन बनाने वाला सद्गति-दाता एक ही बाप है। तो तुम बच्चे इस बेहद के घर के श्रृंगार हो। तुम्हें भारत का श्रृंगार करना है। वैकुण्ठ को वन्डर ऑफ दी वर्ल्ड कहा जाता है। मनुष्य 7 जिस्मानी वन्डर्स दिखाते हैं। वह तो हैं मनुष्य के बनाये हुए। वास्तव में वन्डर आफ दी वर्ल्ड है वैकुण्ठ, जहाँ सब आत्मायें सदा सुखी रहती हैं। गाते भी हैं फलाना स्वर्गवासी हुआ, परन्तु जब तक बाप न आये तब तक वहां कोई जा नहीं सकता। अब तुम बच्चे जानते हो – हम वैकुण्ठ में जाते हैं। वह जिस्मानी वन्डर्स ऑखों से देखने के हैं। तुमको तो वैकुण्ठ में (b) जाकर अथाह सुख भोगना है। वहां रोने की बात नहीं। बाप कहते हैं तुम परमपिता परमात्मा की सजनी क्यों रोती हो। शायद साज़न को भूल जाती हो। साजन को भूल जाना माना उनसे विदाई लेना। सदैव उनको याद करते रहो तो रोने की बात नहीं। बाकी किसका सम्बन्धी आदि मरता है तो रोते हैं। अब तुम जीते जी छुट्टी लेते हो। सबसे छुट्टी ले, रो-रोकर फिर सदा के लिए हँस पड़ते हो क्योंकि वैकुण्ठ में जाते हो। यहाँ तो रोने की दरकार नहीं। बाबा ने कहा है अम्मा मरे तो भी हलुआ खाना, कौन सा हलुआ? यह ज्ञान का। अब तो सब मरे पड़े हैं। किसका चिन्तन करें, किसका करें – इतने सब मरेंगे। कोई क्रियाकर्म करने वाला भी नहीं रहेगा। जापान में बम से इतने मरे फिर किसने क्रियाकर्म किया। क्रियाकर्म करने वाले भी मर जायेंगे। यह तो भक्ति मार्ग की रसमरिवाज है। सतयुग में ऐसी बातें होती नहीं। वहाँ तो अथाह सुख है। मोहजीत राजा की कहानी भी वहाँ की है। तुमने जन्म-जन्मान्तर यह कथा सुनी है। अब बाप कहते हैं – जो कुछ सुना है वह भूल जाओ। अब सब बाप से सुनो। हियर नो ईविल, सी नो ईविल.. उन्होंने बन्दरों की शक्ल का एक खिलौना बनाया हुआ है। टॉक नो ईविल, सी नो ईविल.... क्योंकि इस समय मनुष्य बन्दर से भी बदतर हैं, जो सुनाओ सत-सत करते रहते हैं। बाबा कहते हैं – बच्चे, ग्लानी की बातें मत सुनो। मैं कल्प के संगमयुग पर आता हूँ। बाप को तो जरूर आना ही है तब तो नॉलेज दे। मनुष्य कहते ऋषि-मुनि आदि त्रिकालदर्शी थे। बाबा (c) कहते – बिल्कुल नहीं। लक्ष्मी-नारायण भी त्रिकालदर्शी नहीं थे। त्रिकालदर्शी सिर्फ तुम ब्राह्मण बने हो। तुम्हारा यह 84वाँ अन्तिम जन्म है। ऐसे नहीं यह ज्ञान के संस्कार दूसरे जन्म में रहेंगे। नहीं, यह प्राय:लोप हो जाते हैं। वहाँ तो राजाई स्थापन हो जाती है तो राजयोग की दरकार नहीं। तो देखो, बाबा क्या कहते, मनुष्य क्या कहते हैं। रात और दिन का अन्तर है। मनुष्य कहते परमात्मा सर्वव्यापी है, बाप कहते हैं नहीं। मनुष्य कहते हैं कलियुग की आयु अभी 40 हजार वर्ष पड़ी है, बाप कहते हैं नहीं। कितने गपोड़े सुनाए घोर

अन्धियारा कर दिया है।

अब मीठा बाप कहते हैं – बहुत मीठा बनो। तुम ईश्वरीय दरबार में ईश्वर के बच्चे हो। तुम्हारा फ़र्ज है योग लगाना। गोवर्धन पर्वत पर जायेंगे तो वहाँ अंगुली दिखाई है। पर्वत की कितनी पूजा होती है। भारत जब गोल्डन एज बन जाता है तो उनकी पूजा नहीं होती। तो यह अंगुली है तुम्हारी निशानी। पवित्रता की प्रतिज्ञा करना जैसे अंगुली देना है – भारत को सैलवेज करने के लिए। पवित्रता है तो पीस प्रासपर्टी भी है। पवित्रता नहीं है तो भारत का हाल देखो क्या है। मेहनत है ना। सन्यासी कहते आये – आग और कपूस इकट्ठे रह नहीं सकते। शास्त्रों में ऐसा है। परन्तु तुम सन्यासियों को कह सकते हो कि हम कैसे आग कपूस इकट्ठे रहते पवित्र रहते हैं। सन्यासियों को श्रीमत थोड़े-ही मिलती है। हम तो अब बाप की श्रीमत पर चलते हैं। उनको मिलती है शंकराचार्य की मत, यह है शिवाचार्य की मत। तुम शिवाचार्य के बच्चे हो। यह कोई नहीं जानते। कहते हैं परमात्मा ज्ञान का सागर है तो आचार्य हुआ ना। वह शंकराचार्य है। सन्यासी बहुत शास्त्र पढ़कर टाइटिल लेते हैं। कृष्ण आचार्य कभी नहीं कहा जाता है। शिव का पता (d)
(d) ही नहीं। वह बाप को जानते ही नहीं हैं। सिवाए बाप के और किसी को ज्ञान का सागर नहीं कह सकते हैं। कोई सन्यासी मिले तो बोलो – तुम हो निवृति मार्ग वाले हठयोग सन्यासी। हम हैं प्रवृति मार्ग वाले राजयोगी। तुम राजयोग सिखला नहीं सकते हो। तुम हो रजोगुणी क्योंकि शंकराचार्य आते ही हैं द्वापर में। तुम्हारा है हठयोग कर्म सन्यास। वास्तव में कर्म सन्यास तो होता ही नहीं है। अब तुम बच्चों को डायरेक्शन ही कुछ और मिलता है। मनुष्य चाहते हैं शान्ति में रहें। बोलो– अच्छा, अपने को इन आरगन्स से डिटैच (e)
(e) कर दो। परन्तु सिर्फ डिटैच करने से ही फ़ायदा नहीं होगा। डिटैच हो फिर मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। शान्ति तो तुम्हारे गले का हार है। आत्मा का स्वधर्म है शान्ति। हम आत्मायें मूलवतन में साइलेन्स में रहती हैं। फिर सूक्ष्मवतन में है मूवी। यह है टाकी स्थूल वतन। तुम बच्चों ने साक्षात्कार किया है। बाबा ने जास्ती देखा है। मम्मा ने तो कुछ भी नहीं देखा। कभी भी ध्यान में नहीं गई। ज्ञान में कितनी तीखी गई। यह ध्यान की (f)
(f) आश भी नहीं रखनी चाहिए। मम्मा देखो बिगर ध्यान के कितना आगे नम्बर लेती है। पहले श्री लक्ष्मी फिर श्री नारायण, इनके लिए लिखा हुआ है अर्जुन को विनाश स्थापना का साक्षात्कार हुआ। इस रथ में रथी शिवबाबा बैठ नालेज सुनाते हैं। इस रथ को भी नालेज उनसे मिलती है। यह खुद भी गीता पढ़ते थे। बहुत कथा करते थे। अब वन्डर लगता है – शास्त्रों में क्या-क्या है। बाप कहते हैं – यह पढ़ा हुआ सब भूल जाओ, सुनो नहीं, देखते हुए नहीं देखो। बस, हम तो जाते हैं बाबा के घर स्वीट होम। जब तक गाइड तथा लिबरेटर न आये तब तक कोई जा नहीं सकता। पण्डा और मुक्ति दाता तो एक ही बाप है। दुःखों से मुक्त कर देते हैं। इसलिए उनको गति-सद्गति दाता कहा (g)
(g) जाता है। वह है मनुष्य सृष्टि का बीज रूप, सुप्रीम सोल। निराकारी दुनिया है आत्माओं के रहने का धाम। ऐसे नहीं कि ब्रह्म परमात्मा है। उसमें आत्मायें लीन हो जायेंगी। किसी

वन्डरफुल बातें हैं। तुम्हारा 84 जन्म का पार्ट अविनाशी है। यह कब मिट नहीं सकता। सृष्टि अनादि रची हुई है। सतयुग को नई सृष्टि कहा जाता है। अब है पुरानी सृष्टि। बाकी सृष्टि कोई विनाश नहीं होती। बाप आते ही हैं पतित सृष्टि को पावन बनाने। सृष्टि तो है ही है। 84 जन्म तो जरूर देवताओं के ही होंगे। फिर क्या होता है। फिर क्रिश्चियन आदि का भी हिसाब निकाल सकते हैं। वास्तव में भारतवासियों की जनसंख्या बहुत होनी चाहिए। परन्तु और और धर्मों में कनवर्ट होने कारण कम हो गये हैं। नाम ही हिन्दू रख दिया है। बाप कहते हैं मैं आता ही तब हूँ जब मुझे ब्रह्मा द्वारा देवी-देवता धर्म की स्थापना करनी है। शंकर द्वारा विनाश... फिर जो स्थापना करते हैं वही पालना करेंगे। गाँधी जी को भी जिन्होंने मदद की, मेहनत की आज बहुत सुखी हैं। वहाँ सुखी तो सब बनेंगे। बाकी पद में फ़र्क पड़ जाता है। जो बाप की याद में रहते हैं और वर्से को याद करते हैं वह सूर्यवंशी बनेंगे। कम याद करेंगे तो चन्द्रवंशी, नहीं तो फिर प्रजा, दास-दासियाँ आदि तो बहुत चाहिए ना। बाप ने समझाया है योगबल से ही कोई भी विश्व का मालिक बन सकता है। तुम हो योगबल की अहिंसक सेना। क्रिश्चियन को भी इतना बल मिल जाए तो विश्व के मालिक बन सकते है। परन्तु लॉ नहीं कहता है। वह बन्दर की कहानी है ना। कृष्ण के मुख में माखन आ जाता है – विश्व की राजाई का। तो विश्व का राज्य योगबल से ही मिल सकता है। बाप कहते हैं मैं स्वर्ग रचता हूँ। तुम बच्चों का भी यही धन्धा है। बच्चे फिर बाप के बन स्थापना में मदद करते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद, प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- सदा हर्षित, खुशमिज़ाज रहना है। कभी भी रोना नहीं है। जीते जी सबसे छुट्टी ले लेनी है। किसी का भी चिन्तन नहीं करना है।

२- अपने शान्ति स्वधर्म में स्थित रहना है। ज्ञान और योग से तीखा जाना है। ध्यान की आश नहीं रखनी है।

वरदान:- सदा अपने को सारथी और साक्षी समझ देह-भान से न्यारे रहने वाले योगयुक्त भव

योगयुक्त रहने की सरल विधि है - सदा अपने को सारथी और साक्षी समझकर चलना। इस रथ को चलाने वाली हम आत्मा सारथी हैं, यह स्मृति स्वत: इस रथ अथवा देह से वा किसी भी प्रकार के देह-भान से न्यारा बना देती है। देह-भान नहीं तो सहज योगयुक्त बन जाते और हर कर्म भी युक्तियुक्त होता है। स्वयं को सारथी समझने से सर्व कर्मेन्द्रियां अपने कन्ट्रोल में रहती हैं। वह किसी भी कर्मेन्द्रिय के वश नहीं हो सकते।

स्लोगन:-

विजयी आत्मा बनना है तो अटेन्शन और अभ्यास - इसे निज़ी संस्कार बना लो।

३९

6-8-98 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – दूरादेशी और विशालबुद्धि बनो, शिवबाबा के कार्य में कभी डिस्टर्ब नहीं करना, डिस्टर्ब करने वालों को ऊंच पद नहीं मिल सकता"

प्रश्नः- इस दुनिया में मनुष्यों को कौन से ख्यालात रहते हैं जो सतयुगी देवताओं को कभी नहीं आयेंगे?

उत्तरः- यहाँ मनुष्य समझते हैं कि हम कमायेंगे तो हमारे पुत्र और पोत्रे खायेंगे लेकिन यह ख्यालात देवताओं में नहीं होंगे क्योंकि उनके पुत्र और पोत्रे सब यहाँ से ही वर्सा लेकर जाते हैं। वह समझते हैं हमारी अविनाशी राजाई है। यहाँ ही हरेक अपना-अपना पुरुषार्थ कर रहे हैं।

गीतः- माता ओ माता.....

ओम् शान्ति। बच्चों ने माताओं की महिमा सुनी। बच्चे जान चुके हैं किस-किस माता की महिमा होती है। माताओं की इतनी महिमा करते हैं, तो जरूर होकर गयी हैं। अभी तो वह है नहीं। जो जगत अम्बा होकर गई है उनकी भक्ति मार्ग में महिमा होती है। अब वह क्या करके गयी – यह तुम भी नहीं जानते थे। जगत अम्बा के मन्दिर में जाते हैं, जाकर उनसे कुछ न कुछ मांगते हैं। कोई को बच्चे की आश होगी, कोई आशीर्वाद मांगेंगे। अब जड़ चित्र तो कुछ कर नहीं सकते, न वह समझते हैं परन्तु यह है भक्ति। तुम जानते हो वह पास्ट हो गये हैं। जगत अम्बा की महिमा है। एक तो नहीं है, तुम सब पालना ब्राह्मण कुल की पालना करते हो, फिर दैवी कुल की पालना करेंगे। तुम इस समय जैसे कि सारे जगत की पालना करते हो परन्तु कोई जानते नहीं। चण्डिका देवी का भी मेला लगता है। चण्डिका नाम देखो कितना छी-छी है! बाबा कहते हैं जो आश्चर्यवत् भागन्ती हो फ़ारकती देते हैं वह जाकर चण्डाल का जन्म पाते हैं। घर में चंचलता करते हैं तो उनको कहा जाता है ना – तुम तो चण्डी हो, चण्डाल हो। बरोबर तुम देखते हो शिवबाबा का बनकर फिर भी बहुत चंचलता करते हैं, चंचलता अर्थात् अवज्ञा करते हैं, शिवबाबा की सर्विस में डिस्टर्ब करते हैं तो अन्त में चले ही जाते हैं। कोई भी ब्रह्माकुमारी सेन्टर में होगी, कुछ चंचलता करेगी, किसको समझा नहीं सकेगी वा क्रोध करती होगी तो सब कहेंगे इनको तो क्रोध बहुत है। अब चण्डिका एक तो नहीं, बहुत होती हैं। देवियों की महिमा भी है और फिर ऐसे जो चण्डिका आदि बनते हैं उनका भी गायन है। फिर भी ईश्वर के बने हैं। भल कोई चले जाते हैं फिर भी स्वर्ग में तो आयेंगे ना। मालिक तो बनेंगे ना। भल मालिक तो राजा-रानी ही बनते हैं लेकिन प्रजा भी कहेगी हम मालिक हैं। कांग्रेसी लोग कहते हैं ना हमारा भारत महान् है। आजकल तो गीत में भी गाते रहते हैं – भारत बहुत अच्छा था। आज तो खून की नदियां बह रही हैं।

अभी तुम बेहद के बाप के बच्चे बने हो। गोपी वल्लभ की गोप-गोपियां गाई हुई हैं। वल्लभ बाप को कहा जाता है। गाया भी जाता है एक गोपी वल्लभ की अनेक गोप-गोपियां।

सतयुग में तो गोपिकाओं आदि की बात ही नहीं है। अभी तुम बच्चे विशाल दूरांदेशी बुद्धि बने हो। बुद्धि का ताला खुल गया है। इस जन्म की जीवन कहानी को तुम अच्छी रीति जानते हो। हर एक को नशा तो रहता है ना। अभी बिड़ला है, उनको अपने धन का नशा होगा। समझेंगे – मैं सबसे साहूकार हूँ। परन्तु तुम जानते हो – जो आज साहूकार हैं वह फिर गरीब बन जायेंगे। तुम्हारी और अन्य मनुष्यों की बुद्धि में रात-दिन का फ़र्क है। कोई को क्या नशा, कोई को क्या नशा रहता है – मैं फलाना हूँ, ऐसे हूँ.....। इनको (ब्रह्मा को) भी नशा था ना – मैं बड़ा जौहरी हूँ। अभी समझते हैं वह सभी नशे कौड़ी मिसल हैं। तुम बच्चों को कितना नशा चढ़ा हुआ है! वह समझते हैं हम कमायेंगे फिर हमारे पुत्र-पोत्रे खायेंगे। यहाँ तो वह बात नहीं है। तुम जानते हो हम बेहद के बाप को जानकर उनसे वर्सा पा रहे हैं। जिसकी प्रालब्ध हम ही खुद जन्म बाई जन्म पद पायेंगे। पुत्र-पोत्रे आदि सब यहाँ पुरुषार्थ कर रहे हैं। 'हमारे पौत्रे खायेंगे' – यह ख्यालात वहाँ नहीं रहती। समझते हैं अविनाशी राजाई है। यहाँ तो राजे लोग समझते हैं – पुत्र-पोत्रे खायेंगे। तुम अभी बाप से इतना वर्सा लेते हो, ऐसे कर्म करते हो जो 21 जन्म उसका फल मिलता रहता है, पुत्र-पौत्रों का ख्याल नहीं रहता। वे भी सब यहाँ ही वर्सा पाते हैं। तुमको कितना ज्ञान है, मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। गॉड फादर, जिनको इतना याद करते हैं, जरूर उनसे इतना भारी सुख मिलता होगा। गाते हैं ना – हे परमपिता परमात्मा रहम करो। उनको परम आत्मा कहा जाता है, वह सुप्रीम है। जन्म-मरण रहित है इसलिए उनको परम आत्मा अर्थात् परमात्मा कहते हैं। सभी आत्माओं का रूप एक जैसा है। जैसा-जैसा पुरुषार्थ करते हैं वैसा पद पाते हैं। इनकी आत्मा अच्छा पढ़ती है तो नारायण बनती है। कोई फिर फेल होंगे तो राम बनेंगे। आत्मा ही बनती है ना। तुम्हारी आत्मा समझती है मैं परमपिता परमात्मा से राजयोग सीख रही हूँ। आत्मा फिर आकर नया चोला पहन पार्ट बजायेगी, नर से नारायण बनेगी। यह तुम बच्चों की बुद्धि में है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। फिर यह ज्ञान प्रायः लोप हो जायेगा। वहाँ कोई पतित होगा नहीं। ज्ञान किसको देंगे? पतित-पावन को यहाँ याद करते हैं। अच्छा समझो गंगा पतित-पावनी है तो भी वह राजयोग तो नहीं सिखला सकती है। बाप तो राजयोग सिखलाते हैं ना। यह सारा ड्रामा का राज़ आदि से अन्त तक तुम बच्चों की बुद्धि में है।

तुम सब पढ़ते तो एक ही क्लास में हो, लेकिन नम्बरवार हो। शुरू-शुरू में 300 की भट्ठी थी। गऊशाला में हजारों की अन्दाज़ में गऊयें हों तो कोई सम्भाल भी न सके। भट्ठी भी थोड़ों की बननी थी। उनमें से भी कई तो चल रहे हैं, कई टूट पड़े। कई बच्चे समझते हैं हम पहले से होते तो अच्छा था परन्तु ऐसे भी नहीं है। पुराने-पुराने कितने भागन्ती हो गये! 25-30 वर्ष वाले भी इतना नहीं याद रखते कि वह बेहद का बाप है, जिससे वर्सा पाते हैं। बाबा स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, सेकेण्ड की बात है। बाप कहते हैं तुम मेरा बनने से स्वर्ग के मालिक बनेंगे। जीवनमुक्ति तो राजा-रानी भी पाते हैं, प्रजा भी पाती है। गाया हुआ है सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। बच्चे जो पूरा पढ़ते नहीं हैं वह क्या करते होंगे? चंचलता। कोई-कोई बच्चे तो बड़े आज्ञाकारी होते हैं। बाप से भी अच्छा मर्तबा पा लेते हैं। बाप

100-200 कमाने वाला होगा, बच्चा लखपति बन जाता है। तो अलौकिक सम्बन्ध में भी ऐसे होता है – 7 रोज वाला बच्चा 25 वर्ष वाले से तीखा चला जाता है। नम्बरवार तो होते ही हैं।

तुम वास्तव में सब सजनियां हो, एक साजन को याद करते हो। तुम जानते हो बाप आकर हमको सुखधाम का वर्सा देते हैं। लौकिक पति तो सबके हैं फिर भी याद उनको करते हैं जो पतियों का पति है। पारलौकिक साज़न अमृत पिलाते हैं इसलिए उनको याद किया जाता है, फिर तुम स्वर्ग के मालिक बन जाते हो, फिर वहाँ कोई को याद नहीं करते। अभी के पुरुषार्थ से तुम २१ जन्म प्रालब्ध पाते हो। तुम्हारी बुद्धि कितनी खुली है! वह भी नम्बरवार, तो बादशाही भी नम्बरवार लेते हो। तुमको सब समझा दिया है। यहाँ अच्छी रीति पढ़ाई पढ़ने से तुम पद भी इतना ऊंच पायेंगे। नहीं तो अनपढ़े, पढ़े के आगे भरी ढोयेंगे। इसमें पुरुषार्थ बहुत अच्छी रीति करना है। अभी टाइम अच्छा है पुरुषार्थ के लिए। तुम जानते हो – जहाँ जीना है वहाँ ज्ञानामृत पीना है अथवा पढ़ते रहना है। सैपलिंग लगाते रहते हैं। कोई झट समझ जाते हैं तो समझा जाता है इनका पद तो अच्छा देखने में आता है, अच्छा नजदीक का फूल है, तन-मन-धन अर्पण कर बैठा है, सर्विस में अच्छा लग गया है। समझता है अपना समय जितना सर्विस में देंगे, उतना फायदा है। जैसे बाबा हम ज्ञान नेत्रहीन अंधों की लाठी बना है ऐसे हमें भी बनना है। तुम एक-दो की लाठी बनते जाते हो। अंधा बनाया है रावण ने। यह तुमको समझाया जाता है कि इस समय सारी दुनिया लंका है, सब शोक वाटिका में हैं। नाम रखा है अशोका होटल, वहाँ खूब मजे उड़ाते हैं। जिन्होंने कांग्रेस को मदद की है वह सुख पा रहे हैं।

अभी तुम जानते हो बाबा आया हुआ है। महाभारत लड़ाई सामने खड़ी है। यह तो लगनी है जबकि गेट्स खुलने हैं। द्वापर की तो बात ही नहीं। अभी तो घोर अन्धियारा है ना। ब्राह्मणों की रात अब पूरी हुई है, बाबा आया हुआ है। यह बातें तुम बच्चे ही जानते हो। स्कूल में पढ़ते हैं, कोई तो बहुत अच्छे मार्क्स लेते हैं, कोई फेल हो जाते हैं। फेल की निशानी है चन्द्रवंशी में चले जायेंगे। राम को क्षत्रिय की निशानी दी है। अर्थ नहीं समझते। लव-कुश की क्या-क्या बातें बैठ सुनाते हैं। कितने झूठे दोष बैठ लगाते हैं। गाते हैं – राम राजा, राम प्रजा, धर्म का उपकार है। फिर यह सब बातें कहाँ से आई? यह सब बातें समझने की हैं। तुम जानते हो यह नॉलेज नम्बरवार हमारी बुद्धि में है। स्टूडेन्ट को बहुत तीखा पुरुषार्थ करना चाहिए। हम गॉड फादरली स्टूडेन्ट हैं। टीचर को कौन नहीं याद करेंगे! हम हैं पतित-पावन गॉड फादरली स्टूडेन्ट। इसमें बाप, टीचर, सतगुरु तीनों ही आ जाते हैं। तुम सब सीतायें हो ना। रावण की शोक वाटिका में पड़े हो। इनकारपोरियल गॉड फादर इज़ ज्ञान सागर नॉलेजफुल। कृष्ण को अथवा लक्ष्मी-नारायण को ऐसे नहीं कहेंगे। उनकी महिमा ही न्यारी है। गीत में भी गाते हैं – उनकी महिमा अपरमअपार है, जो ऐसा बनाते हैं। तुम कहते हो – बाबा, हम आपसे पूरा वर्सा लेंगे। आप कितने मीठे हो, कितने प्यारे हो! लक्ष्मी-नारायण कितने मीठे, कितने प्यारे हैं! लक्ष्मी-नारायण के चित्र देखो, हमेशा

मुस्कराहट वाले दिखाते हैं। तुम जानते हो देवतायें इस भारत में ही थे। अभी कहाँ है? तुम सबको बतला सकते हो कि यह उनका अन्तिम जन्म है। फिर से कृष्ण बनना है। अभी कृष्णपुरी स्थापन हो रही है। कृष्ण भी राजयोग सीख रहे हैं। तुम भी कृष्णपुरी में जाना चाहो तो राजयोग सीखो। लक्ष्मी-नारायण कहने से मनुष्य मूंझ जाते हैं। कृष्ण को झूले में झुलाते हैं। पूजा लक्ष्मी-नारायण की करते हैं। उन्हों का बाल चरित्र कुछ भी है नहीं। राधे-कृष्ण फिर कहाँ गये, क्या हुआ – कुछ भी पता नहीं है। राधे-कृष्ण कोई आपस में भाई-बहन नहीं थे। अभी राधे-कृष्ण का राज्य तो है नहीं। द्वापर में भी उन्हों की राजधानी का कुछ पता थोड़ेही है। तो यह सब बातें समझने के लिए बहुत अच्छी बुद्धि चाहिए। लिटरेचर बनाने में भी मेहनत लगती है। विष्णु के अलंकार दिखाते हैं परन्तु वास्तव में विष्णु के यह अलंकार होते नहीं। विष्णु वा लक्ष्मी-नारायण को शंख थोड़ेही है। तो हम क्या लिखें? मनुष्य तो कुछ भी समझ न सकें। शंख तो है तुम्हारे पास। तो अलंकार जरूर ब्राह्मणों को देना पड़े। कहेंगे यह ब्राह्मण फिर कहाँ से आये? समझ नहीं सकेंगे। तुम समझा सकते हो – हम ब्राह्मण स्वदर्शन चक्रधारी हैं। यह सब बातें समझाने में बड़ी ही विशाल बुद्धि चाहिए। प्रजा में जाने वाले मोटी बुद्धि समझ न सकें। समझाने में बड़ी ही डिफीकल्टी लगती है। बाबा लिखते भी हैं सिकीलधे स्वदर्शन चक्रधारी ब्रह्मा मुख वंशावली। परन्तु तुम्हारे पास अलंकार कहाँ हैं। चित्रों में देवियों को तीसरा नेत्र दिया है, लेकिन उनको तो तीसरा नेत्र है नहीं। तुम्हारी अब तीसरी आंख खुली है। तुम शक्तियों की महिमा है। जगत अम्बा है तो बच्चे भी साथ में होंगे। मैजारिटी माताओं की है। माताओं को ही ऊंच उठाते हैं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार :-

१. अपना समय सर्विस में सफल करना है। तन-मन-धन सब अर्पण कर जब तक जीना है पढ़ाई पढ़ते रहना है।

२. आपस में एक-दो की ज्ञान से पालना करनी है। ऐसा कोई कार्य नहीं करना है जिससे बाप की अवज्ञा हो।

वरदान:- दिव्य बुद्धि के बल द्वारा परमात्म टचिंग का अनुभव करने वाला मास्टर सर्वशक्तिमान भव

दिव्य बुद्धि को बुद्धिबल कहा जाता है इस बुद्धिबल द्वारा ही बाप से सर्वशक्तियां कैच कर मास्टर सर्वशक्तिमान बनते हो। जैसे साइंस बुद्धिबल है लेकिन वह संसारी बुद्धि है इसलिए इस संसार के प्रति, प्रकृति के प्रति ही सोच सकते हैं। आपके पास दिव्य बुद्धि का बल है जो परमात्म प्राप्ति की अनुभूति कराता है। दिव्य बुद्धि द्वारा हर कर्म में परमात्म प्योर टचिंग का अनुभव कर सफलता का अनुभव कर सकते हो। दिव्य बुद्धि के बल से माया के वार को हार खिला सकते हो।

स्लोगन:-

मास्टर ज्ञान सूर्य बन सर्व को ज्ञान की लाइट माइट देने वाले ही सच्चे सेवाधारी हैं।

(SH)

मुरली नं०- (४०)

*2-10-98 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे-बच्चे – तुम आत्माओं को अपना-अपना रथ है, मैं हूँ निराकार, मुझे भी कल्प में एक ही बार रथ चाहिए, मैं ब्रह्मा का अनुभवी वृद्ध रथ उधार लेता हूँ"

प्रश्न:- किस निश्चय के आधार पर शरीर का भान भूलना अति सहज है?

उत्तर:- तुम बच्चों ने निश्चय से कहा – बाबा, हम आपके बन गये, तो बाप का बनना माना ही शरीर का भान भूलना। जैसे शिवबाबा इस रथ पर आता और चला जाता, ऐसे तुम बच्चे भी प्रैक्टिस करो इस रथ पर आने-जाने की। अशरीरी बनने का अभ्यास करो। इसमें मुश्किल का अनुभव नहीं होना चाहिए। अपने को निराकारी आत्मा समझ बाप को याद करो।

गीत:- ओम् नमो शिवाए.....

ओम् शान्ति। शिवबाबा बच्चों को इस ब्रह्मा के रथ द्वारा समझाते हैं क्योंकि बाप बच्चों से ही पूछते हैं मुझे अपना रथ तो है नहीं। मुझे रथ तो जरूर चाहिए। जैसे तुम हर एक आत्मा को अपना-अपना रथ है ना। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को भी सूक्ष्म शरीर है ना। लक्ष्मी-नारायण आदि सब आत्माओं को शरीर रूपी रथ है जरूर, जिसको अश्व कहते हैं। हैं तो मनुष्य ना। मनुष्यों की ही बात समझाई जाती है, जानवरों की बातें जानवर जानें। यहाँ तो मनुष्य सृष्टि है तो बाप भी मनुष्यों को बैठ समझाते हैं। मनुष्य में भी जो आत्मा है, उनको बैठ समझाते हैं। डायरेक्ट पूछते हैं तुम हर एक को अपना-अपना शरीर है ना। हर एक आत्मा शरीर लेती और छोड़ती है। मनुष्य तो कह देते कि आत्मा 84 लाख जन्म लेती है। यह भूल है जबकि तुम 84 जन्म लेकर ही बिल्कुल फाँ हो गये हो (थक गये हो), कितने तंग हो गये हो। तो 84 लाख जन्मों की तो बात ही नहीं। यह हैं मनुष्यों के गपोड़े। तो बाप समझाते हैं तुम आत्माओं का भी अपना-अपना रथ है। मुझे भी तो रथ चाहिए ना। मैं तुम्हारा बेहद का बाप हूँ। गाते भी हैं पतित-पावन, ज्ञान का सागर....., तुम और कोई को पतित-पावन नहीं कहेंगे। लक्ष्मी-नारायण आदि को भी नहीं कहेंगे। पतित सृष्टि को पावन बनाने वाला अर्थात् पावन सृष्टि स्वर्ग का रचयिता, परमपिता परमात्मा बिगर कोई हो नहीं सकता। सुप्रीम फादर वही है। बाप जानते हैं तुम नम्बरवार पत्थरबुद्धि से पारस बुद्धि बन रहे हो। बाहर वाले मनुष्य यह नहीं जानते। तो बाप समझाते हैं मुझे भी जरूर रथ तो चाहिए ना। मुझ पतित-पावन को जरूर पतित दुनिया में आना पड़े ना। प्लेग की बीमारी होती है तो डॉक्टर को प्लेगियों के पास आना पड़ेगा। बाप कहते हैं तुम्हारे में 5 विकारों की बीमारी आधाकल्प की है। मनुष्य तो दु:ख देने वाले हैं। इन 5 विकारों से तुम बिल्कुल ही पतित बन गये हो। तो बाप समझाते हैं मुझे पतित दुनिया में ही आना पड़े ना। पतित को ही भ्रष्टाचारी कहा जाता है, पावन को श्रेष्ठाचारी कहेंगे। बरोबर तुम्हारा भारत पावन श्रेष्ठाचारी था, लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। जिसकी ही महिमा गाते हो सर्वगुण सम्पन्न..... वहाँ सब सुखी थे। यह तो कल की बात है। तो बाप कहते हैं मैं आऊं तो कैसे आऊं, किसके शरीर

में आऊं? पहले तो मुझे प्रजापिता चाहिए। सूक्ष्म वतनवासी को यहाँ कैसे ले आ सकता? वह तो फरिश्ता है ना। उनको पतित दुनिया में ले आऊं – यह तो दोष हो जाए। कहेंगे मैंने क्या गुनाह किया? बाप बड़ी रमणीक बातें समझाते हैं। समझेगा वही जो बाप का बना होगा। घड़ी-घड़ी बाप को याद करता रहेगा।

बाप कहते हैं मैं आता ही तब हूँ जब धरती पर पाप बढ़ जाता है। कलियुग में मनुष्य कितने पाप करते हैं। तो बाप पूछते हैं – बच्चे, बताओ मैं आऊं तो किस तन में आऊं? मुझे चाहिए भी जरूर वृद्ध अनुभवी रथ। यह जो मैंने रथ लिया है, बरोबर इनके बहुत गुरु किये हुए हैं। शास्त्र आदि पढ़ा हुआ है। यह भी लिखा हुआ है ना कि बहुत पढा हुआ था। अर्जुन की बात नहीं। मुझे कोई अर्जुन वा कृष्ण का रथ थोड़ेही चाहिए। मुझे तो चाहिए ब्रह्मा का रथ, उनको ही प्रजापिता कहेंगे। कृष्ण को तो प्रजापिता नहीं कहेंगे। बाप को तो ब्रह्मा का ही रथ चाहिए जिससे ब्राह्मणों की प्रजा रचे। ब्राह्मणों का है सर्वोत्तम कुल। विराट रूप दिखाते हैं ना। देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, बाकी ब्राह्मण कहाँ गये? यह किसको भी पता नहीं। ऊंच ते ऊंच है ब्राह्मणों की चोटी। चोटी हो तब ही समझा जाता है कि यह ब्राह्मण है। सच्ची-सच्ची चोटी तो तुम्हारी है। तुम राजऋषि हो, बड़ी चोटी वाले। ऋषि उनको कहा जाता जो पवित्र रहते हैं। तुम हो राजयोगी, राजऋषि। राजाई के लिए तपस्या कर रहे हो। वह मुक्ति के लिए हठयोग की तपस्या करते हैं, तुम जीवनमुक्ति, राजाई के लिए राजयोग की तपस्या कर रहे हो। तुम्हारा नाम ही है शिव शक्ति। शिवबाबा तुम्हें रीइनकारनेट करते हैं। तो तुम फिर से भारत में जन्म लेते हो। जन्म लिया है ना। कोई-कोई ने भल जन्म लिया है परन्तु समझते नहीं कि हम शिवबाबा के बने हैं, उनके पास जन्म लिया है। अगर ऐसा समझें तो शरीर का भान बिल्कुल ही निकल जाना चाहिए। जैसे शिवबाबा निराकार इस रथ में है, तुम भी अपने को निराकार आत्मा समझो। बाप कहते हैं – बच्चे, मुझे याद करो। अब वापिस घर चलना है। तुम तो पहले नंगे थे फिर देवी-देवता शरीर लिया, फिर क्षत्रिय शरीर, फिर वैश्य शरीर, फिर शूद्र शरीर लिया। अभी फिर तुम अशरीरी बनो। तुम मुझ निराकार को ही कहते हो – बाबा, अभी हम आपके बने हैं, हमको वापिस जाना है। देह को तो ले नहीं चलना है। हे आत्मायें, अब मुझ बाप को और स्वीट होम को याद करो। मनुष्य जब विलायत से लौटते हैं तो कहते हैं – चलो, अपने स्वीट होम भारत में चलें। जहाँ जन्म लिया था वहाँ लौटें। मनुष्य मरते हैं तो जहाँ जन्म लिया था उनको वहाँ ले जाते हैं। समझते हैं भारत की मिट्टी का बना हुआ है तो वह मिट्टी भारत में ही छोड़ें।

बाप कहते हैं मेरा जन्म भी भारत में है। शिव जयन्ती भी मनाते हो। मेरे नाम तो ढेर रख दिये हैं। कहते हैं हर-हर महादेव, सबके दुःख काटने वाला, वह भी मैं ही हूँ, शंकर नहीं है। ब्रह्मा सर्विस पर हाजिर है। और फिर जो स्थापना करते हैं वही विष्णु के दो रूप से पालना करेंगे। मुझे प्रजापिता ब्रह्मा जरूर चाहिए। आदि देव का बरोबर मन्दिर भी है। आदि देव किसका बच्चा है? कोई बताये। इस देलवाडा मन्दिर के जो ट्रस्टी लोग हैं वह भी यह नहीं जानते कि आदि देव है कौन? उनका बाप कौन था?

आदि देव प्रजापिता ब्रह्मा है, उनका बाप है शिव। अब जिनका मन्दिर है उनके आक्यूपेशन को नहीं जानते और बने हैं ट्रस्टी। जगतपिता, जगत अम्बा का यह यादगार मन्दिर है। इस आदि देव ब्रह्मा के रथ में बाप ने बैठ ज्ञान सुनाया है। कोठरी में सब बच्चे बैठे हैं। सभी का मन्दिर तो नहीं बनायेंगे। मुख्य है 108 की माला, तो 108 कोठरियां बना दी हैं। 108 की ही पूजा होती है। मुख्य है शिवबाबा फिर ब्रह्मा-सरस्वती युगल। वह शिवबाबा है फूल। उनको अपना शरीर नहीं है। ब्रह्मा-सरस्वती को अपना शरीर है। माला शरीरधारियों की बनी हुई है। सब माला को पूजते हैं। पूजकर पूरा करेंगे फिर शिवबाबा को नमस्कार करेंगे, माथा झुकायेंगे क्योंकि उसने इन सबको पतित से पावन बनाया है इसलिए पूजी जाती है। माला हाथ में ले बैठ राम-राम कहते हैं। परमपिता परमात्मा के नाम का किसको पता नहीं है। शिवबाबा है मुख्य फिर प्रजापिता ब्रह्मा और सरस्वती भी मुख्य हैं। बाकी ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ जो-जो पुरुषार्थ करते रहते हैं उन्हों के नाम होंगे। आगे चल तुम सब देखते रहेंगे। जब पिछाड़ी होगी तब तुम यहाँ आकर रहेंगे। जो पक्के योगी होंगे वही रह सकेंगे। भोगी तो थोड़ा ठका सुनने से ख़त्म हो जायेंगे। कोई का आपरेशन देखने से भी मनुष्य अनकॉन्शस हो जाते हैं। अभी पार्टीशन में कितने मनुष्य मरे। वो लोग तो गपोड़े मारते रहते हैं कि हमने बिगर कोई लड़ाई राज्य ले लिया। परन्तु मरे इतने जो बात मत पूछो। यह है ही झूठी माया..... अभी सच्चा बाप बैठ तुमको सच सुनाते हैं। बाप कहते हैं मुझे रथ तो जरूर चाहिए। मैं साजन बड़ा हूँ तो सजनी भी बड़ी चाहिए। सरस्वती है ब्रह्मा मुख वंशावली। वह कोई ब्रह्मा की युगल नहीं है, ब्रह्मा की बेटी है। उनको फिर जगत अम्बा क्यों कहते हैं? क्योंकि यह मेल है ना, तो माताओं की सम्भाल के लिए उनको रखा है। ब्रह्मा मुख वंशावली सरस्वती तो ब्रह्मा की बेटी हो गई। मम्मा तो जवान है, ब्रह्मा तो बूढ़ा है। सरस्वती जवान, ब्रह्मा की स्त्री शोभती भी नहीं। हाफ पार्टनर कहला न सके। अभी तुम समझ गये हो। तो बाप कहते हैं मुझे इस ब्रह्मा का शरीर लोन लेना पड़ता है। उधार पर तो बहुत लेते हैं। ब्राह्मण को खिलाते हैं तो वह आत्मा आकर ब्राह्मण के शरीर का आधार लेगी। आत्मा वह शरीर छोड़कर आती है क्या? नहीं, यह तो बच्चों को समझाया गया है कि ड्रामा में साक्षात्कार की रस्म-रिवाज पहले से नूँध है। यहाँ भी बुलाते हैं। ऐसे नहीं कि आत्मा शरीर छोड़कर आयेगी। नहीं, यह ड्रामा में नूँध है। बाप के लिए तो यह रथ नंदीगण है। नहीं तो शिव के मन्दिर में बैल क्यों दिखाते? सूक्ष्म वतन में शंकर के पास बैल कहाँ से आया? वहाँ तो है ही ब्रह्मा, विष्णु, शंकर और वह युगल दिखाते हैं। प्रवृत्ति मार्ग दिखाते हैं। बाकी वहाँ जानवर कहाँ से आया? मनुष्यों की बुद्धि कुछ भी काम नहीं करती, जो आता है सो कहते रहते। जिससे वेस्ट ऑफ टाइम, वेस्ट ऑफ एनर्जी होती है।

तुम कहते हो हम सो पावन देवता थे फिर पुनर्जन्म लेते-लेते हम पतित पुजारी बने हैं। आपे ही पूज्य, आपेही पुजारी। पूज्य और पुजारी कोई भगवान् नहीं बनता। उनको थोड़ेही 84 जन्म लेने पड़ते। माया मनुष्यों को बिल्कुल पत्थरबुद्धि बना देती है। हम सो का अर्थ यह नहीं कि हम आत्मा सो परमात्मा हैं, नहीं। हम सो ब्राह्मण, सो देवता बनेंगे।

पुनर्जन्म लेते आयेंगे। कितनी अच्छी समझानी है। बाप कहते हैं मैंने जिसमें प्रवेश किया है, इसने बहुत गुरु किये, शास्त्र पढ़े हैं, जन्म भी पूरे 84 लिए हुए हैं। यह नहीं जानता, हम तुमको इन सहित बताता हूँ। ब्रह्मा को भी बतलाता हूँ। सदैव भी तो सवारी नहीं कर सकता हूँ। ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मणों को बतलाता हूँ। मुझे रथ भी चाहिए ना। तुम बच्चे याद करते हो और मैं आ जाता हूँ। मुझे तो सर्विस करनी है तो श्री श्री शिव की मत से भारत पावन बनता है। नर्कवासियों को श्री श्री का टाइटिल देना रांग है। आगे श्री नाम नहीं था। अभी तो सबको श्री अर्थात् श्रेष्ठ बना दिया है। श्री श्री तो है शिवबाबा। फिर सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर फिर श्री लक्ष्मी-नारायण। यह समझने की बातें हैं। नॉलेज बड़ी मज़े की है। परन्तु कोई-कोई पढ़ते-पढ़ते रफू-चक्कर हो जाते हैं। माया हाथ छुड़ा देती है। दुकान भी नम्बरवार हैं। बड़ी दुकान में जरूर अच्छे सेल्स मैन होंगे। छोटे-छोटे में कम होंगे। तो बड़ी दुकान पर जाना चाहिए जहाँ महारथी हों। माताओं को तो टाइम बहुत रहता है। पुरुषों को धंधा आदि करना है तो बिज़ी रहते हैं। माताएं तो फ्री हैं। खाना पकाया बस। वह तुम पर [illegible] चलते हैं। सुनते हैं ब्रह्माकुमारियों पास जाने से विष बंद हो जायेगा तो रोकते हैं।

शिवबाबा ऐसी तिरकनी (फिसलने वाली) चीज़ है जो घड़ी-घड़ी भूल जाती है। बाप बिल्कुल सहज रास्ता बताते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भी कट जायेंगे और मेरे पास भी आ जायेंगे। याद नहीं करेंगे तो पाप भी नहीं कटेंगे और साथ भी नहीं ले जाऊंगा। फिर सजा खानी पड़ेगी। भक्ति मार्ग में छांछ पीते आये। मक्खन तो तुमने सतयुग-त्रेता में खाकर पूरा कर दिया। बाकी पीछे छांछ रह जाती है। छांछ भी पहले अच्छी मिलती फिर पानी मिलता है। सतयुग-त्रेता में घी दूध की नदी बहती है। अभी तो घी कितना महंगा हो गया है। अच्छा!

मात-पिता बापदादा का मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- राजऋषि बन तपस्या करनी है। पूज्यनीय माला में आने के लिए बाप समान सर्विस करनी है। पक्का योगी बनना है।

२- नॉलेज बड़ी मज़े की है, इसलिए रमणीकता से पढ़ना है, मूँझना नहीं है।

वरदान:- अपने मस्तक बीच सदा बाप की स्मृति इमर्ज रखने वाले मस्तकमणि भव

मस्तकमणि अर्थात् जिसके मस्तक में सदा बाप की यादें रहे, इसी को ही ऊंची स्टेज कहा जाता है। अपने को सदा ऐसी ऊंची स्टेज पर स्थित रहने वाली श्रेष्ठ आत्मा समझ आगे बढ़ते रहो। जो इस ऊंची स्टेज पर रहते हैं वह नीचे की अनेक प्रकार की बातों को सहज पार कर लेते हैं। समस्यायें नीचे रह जाती हैं और स्वयं ऊपर हो जाते। मस्तकमणि का स्थान ही ऊंचा मस्तक है इसलिए नीचे नहीं आना, सदा ऊपर रहो।

स्लोगन:-

आज्ञाकारी बनो तो बापदादा के दिल की दुआयें प्राप्त होती रहेंगी। (१९८)

30-12-98 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे–एक बाप के साथ सच्ची मुहब्बत हो तो बाप तुम्हें अपने साथ घर ले जायेंगे, सब पापों से मुक्त कर देंगे, स्वर्ग का मालिक बना देंगे"

प्रश्न :- अपने आपको खुशी में रखने के लिए कौन सी मुख्य धारणा चाहिए?

उत्तर:- खुशी में तभी रह सकते जब अपने आपसे रूह-रिहान करना आता हो। किसी भी चीज़ में आसक्ति न हो। दो रोटी पेट को मिले, बस–ऐसी अनासक्त वृत्ति की धारणा हो तब हर्षित रहेंगे। ज्ञान का मनन कर स्वयं को हर्षित रखो। तुम कर्मयोगी हो, कर्म करते, घर का काम करते, खाना आदि खाते भी बाप को याद करो। स्वदर्शन चक्र बुद्धि में घूमता रहे, तो बहुत खुशी रहेगी।

गीत:- न वह हमसे जुदा होंगे..... ओम् शान्ति।

मीठे-मीठे बच्चों ने गीत सुना। यह है बच्चों की वा आत्माओं की अपने परमपिता परमात्मा के साथ रूहानी मुहब्बत। यह रूहानी मुहब्बत सिर्फ तुम ब्राह्मण बच्चों की ही होती है। तुम अपने को आत्मा निश्चय करते हो। परन्तु जब कहते हैं कि आत्मा सो परमात्मा, तो आत्मा किसके साथ मुहब्बत रखे। मुहब्बत होती है बच्चों की बाप के साथ। बाप, बाप की मुहब्बत नहीं होती है। अभी तुम समझते हो हम आत्मायें अपने परमपिता परमात्मा के साथ मुहब्बत जोड़ रही हैं। यह मुहब्बत ही तुमको साथ ले जाती है। तुम रूहानी मुहब्बत बाप के साथ रखते हो तो तकलीफ भी सहन करनी पड़ती है। सारी दुनिया, घर के भाती आदि सब दुश्मन बन जाते हैं।

बच्चों को समझाया है कि पतित-पावनी गंगा नहीं है। मनुष्य पावन होने के ख्याल से गंगा वा जमुना के तट पर हरिद्वार, काशी में जाकर बैठते हैं। मुख्य स्थान यह दो हैं। कहते हैं–हे पतित-पावनी गंगा। अब वह गंगा तो सुनती ही नहीं। सुनने वाला एक पतित-पावन बाप ही है। अभी तुम उस बाप के सम्मुख बैठे हो। बाप बतला रहे हैं तुम पावन कैसे बनोगे? पानी की गंगा थोड़ेही कहती है–मामेकम् याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। बाप कहते हैं–मैं प्रतिज्ञा करता हूँ अगर तुम मुझ बाप को याद करेंगे तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। गैरन्टी देते हैं, गंगा तो गैरन्टी दे न सके। जैसे मनुष्य रावण को वर्ष-वर्ष जलाते आये हैं परन्तु रावण मरता ही नहीं है, वैसे गंगा में स्नान भी जन्म-जन्मान्तर करते आये हैं परन्तु पतित से पावन कोई बनते ही नहीं। फिर-फिर स्नान करने जाते रहते हैं। एक बार पावन बनें तो फिर क्यों जाते हैं स्नान करने? कितने मेले लगते हैं। उनको कोई आत्मा-परमात्मा का संगम नहीं कहेंगे। भक्ति मार्ग में भीड़ लगती है मेले पर। अभी तुम बाप के साथ बुद्धियोग लगाते हो। तुम जानते हो हम आत्मायें आशिक बनी है। आत्मा ही भगवान् को याद करती है शरीर द्वारा। बाप कहते हैं मैं भी इस शरीर द्वारा तुमको पढ़ा रहा हूँ। इसलिए हमेशा बाबा को याद करते रहो। बाबा कहने से स्वर्ग जरूर याद आयेगा और अपना मुक्तिधाम घर भी याद आयेगा। मुक्ति को निर्वाणधाम भी कहते हैं।

यह है साकारी दुनिया। जब तक आत्मायें यहाँ न आयें तो साकारी दुनिया कैसे बढ़े? आत्मायें निराकारी दुनिया से आती हैं। मनुष्य सृष्टि बढ़ती जाती है। कोई समझते हैं नैचुरल बढ़ती रहती है। तुम जानते हो आत्मायें यहाँ आती हैं, वृद्धि को पाती रहती हैं। बच्चों को मालूम हुआ है कि

स्वीट होम शान्तिधाम है। शान्ति को बहुत लोग पसन्द करते हैं। तुम जानते हो शान्तिधाम तो हमारा स्वीट गॉड फादरली होम है। भारतवासी विलायत से लौटते हैं तो कहते हैं हम अपने स्वीट होम भारत में जाते हैं। जहाँ जन्म लेते हैं वह देश प्यारा लगता है। कहते हैं हमको स्वीट होम (भारत में) ले चलो। अच्छा, समझो मर जाते हैं, आत्मा तो चली गई। फिर शरीर को यहाँ ले आकर खत्म करते हैं। समझते हैं भारत की मिट्टी भारत में ही जाये। नेहरु मरा तो उनकी राख देखो कहाँ-कहाँ ले गये! खेतों में गिराई। समझते हैं खेती अच्छी होगी। परन्तु हर चीज़ को वह कितना भी मान दें, पुरानी तो जरूर होनी है। बिचारे सन्यासी आदि कोई भी नहीं जानते। तुम्हारे लिए तो सब बिचारे ही हैं। कितनी तकलीफ सहन कर रहे हैं! बाप का पता नहीं है। तुम बाप को जानकर बाप से वर्सा ले रहे हो। तो दिल होती है मित्र सम्बन्धियों आदि को भी स्वर्गवासी बनायें। किसको तुम कहो स्वर्गवासी बनो तो कहेंगे तुम मारने चाहते हो क्या! तुम बच्चे जानते हो—श्रीमत पर हम श्रेष्ठ स्वर्गवासी बन रहे हैं। देही-अभिमानी बनने में बड़ी मेहनत लगती है। घड़ी-घड़ी देह-अभिमान में आकर बाप को भूल जाते हो। अभी तुम सम्मुख बैठे हो। जानते हो हम अपने परमपिता परमात्मा पास आये हैं। बाबा कहते हैं—आगे कभी मिले थे? तो झट कहते हैं—हाँ, बाबा 5 हजार वर्ष पहले। यह तुम्हारा गुप्त अक्षर है। और कोई कॉपी कर न सके। भल कृष्ण का वेष धारण कर लेते हैं, कहते हैं हम आये हैं स्वर्ग की स्थापना करने। परन्तु यह बात कि 5 हजार वर्ष पहले भी स्वर्ग स्थापन किया था—यह कह न सकें। तुम ही कहते हो—बाबा, 5 हज़ार वर्ष पहले हम आपसे वर्सा लेने आये थे। आपने राजयोग सिखाया था। यह आत्मा कहती है इस शरीर द्वारा। अपने को आत्मा निश्चय कर और बाप को याद करना है। इसमें सर्वव्यापी की तो बात ही नहीं। यह भी नहीं समझते हैं कि ब्रह्मा जरूर साकार में होना चाहिए, जिस द्वारा परमपिता परमात्मा सृष्टि रचते हैं।

पतित-पावन बाप आकर सो देवी-देवता पावन बनाते हैं। बाप ही स्वर्ग का रचयिता है। तो जरूर स्वर्ग में मनुष्य चाहिए। बाबा आकर तुम्हें स्वर्ग का द्वार बताते हैं। तुम कोशिश करते हो हम नर्कवासी को स्वर्गवासी बनायें। कोई बड़े आदमी को सीधा कहो तुम पतित नर्कवासी हो तो कितना बिगड़ पड़ेंगे। अभी तुम जानते हो हम नर्क से निकल स्वर्ग में जा रहे हैं। अभी हम संगमवासी हैं। हम आत्मायें अब जा रही हैं—इस शरीर को छोड़ बाबा के साथ, बाबा के घर। यह है तुम्हारी रूहानी यात्रा। बाबा की याद में रहना है। समझते हो यह शरीर जहाँ तक रहेगा वहां तक यात्रा चालू है। कर्म भी तो करना है। भल खाओ, पियो, खाना पकाओ। जितना समय मिले बाप को जरूर याद करना है। दफ्तर में बैठते हो, देखो फुर्सत है तो बाबा की याद में बैठ जाओ। बहुत कमाई है। ट्रेन में सफर करते हो, उस समय तो कोई काम नहीं रहता है। बैठे हुए बाबा को याद करते रहो। अभी हम बाबा के पास जाते हैं। बाबा परमधाम से हमको लेने लिए आया है। अच्छा, शाम को घर का खाना आदि पकाते हो तो भी एक-दो को याद दिलाओ—आओ, हम अपने बाप की याद में बैठें। प्वाइंट भी एक-दो को सुनाओ। हम स्वदर्शन चक्रधारी हैं। बाबा कहते हैं—तुम लाइट हाउस भी हो, रास्ता बतलाते हो। उठते, बैठते, चलते तुम लाइट हाउस हो। एक आंख में मुक्ति, एक आंख में जीवनमुक्ति। स्वर्ग यहाँ था। अभी नहीं है। अब तो नर्क है। बाबा फिर से स्वर्ग स्थापन कर रहे हैं। बाप कहते हैं हम तुमको बहुत गुल-गुल बनाते हैं। फिर

तुम जाकर महारानी, पटरानी बनेंगे। खद्दर की रानी नहीं बनना। तुम्हें 16 कला सम्पन्न बनना है, न कि 14 कला। श्रीकृष्ण 16 कला था। तुम बच्चियाँ कितने व्रत-नेम आदि रखती थी! ७रोज़ निर्जल रहती थी, कितनी मेहनत करती थी! परन्तु कृष्णपुरी में जा न सकें। अभी तुम कृष्णपुरी स्वर्ग में प्रैक्टिकल में जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। कृष्ण को द्वापर में ले जाने से स्वर्ग का किसको पता नहीं पड़ता है। वास्तव में 7 रोज का अर्थ क्या है सो तुम अभी जानते हो। सिवाए बाप के और कोई को याद नहीं करना है। बाकी निर्जल आदि की कोई बात नहीं। (c) (c) बाबा को याद करने से तुम बाबा के पास चले जायेंगे। बाप फिर स्वर्ग में भेज देंगे। व्रत-नेम रख तुम कितने दिन भूखे मरते हो! जन्म बाई जन्म कितनी मेहनत करते हो! प्राप्ति कुछ भी नहीं हुई है। अभी तुमको उनसे छुड़ाए सद्गति मार्ग में ले जाते है। तुम कहते हो—बाबा, कल्प पहले भी आपसे मिले थे स्वर्ग का वर्सा लेने। बाप कहते हैं कदम-कदम पर राय लेते रहो। सब हिसाब-किताब पूछो। बाबा राय देते रहेंगे। भल तुम अपना धन्धाधोरी आदि करते रहो। फिर भी बाबा राय देते रहेंगे। देखेंगे—यह बहुत धन्धे में घुस पड़े हैं तो राय देंगे। क्यों इतना माथा मारते हो? कितना समय तुम जियेंगे। पेट तो एक-दो रोटी मांगता है। उनसे गरीब भी चलते तो साहूकार भी चलते हैं। साहूकार लोग अच्छी रीति खाते हैं फिर रोगी भी बनते हैं। भील लोग देखो कितने मजबूत रहते हैं! और खाते क्या हैं! कितना काम करते हैं! अपनी कुटिया में वह खुश रहते हैं। तो इस समय तुम्हें और सब आशायें छोड़ देनी चाहिए। दो रोटी मिली, पेट भरा, बस, बाप को याद करना है। तुम हो रूहानी बच्चे, परमपिता परमात्मा माशूक के आशिक़ बने हो। जितना बाबा को याद करेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे और जिसको याद करते हो उनसे जाए मिलेंगे। कई चाहते हैं साक्षात्कार हो, यह हो। बाबा कहते हैं घर बैठे भी तुमको हो सकता है। शिवबाबा को याद करने से तुमको वैकुण्ठ का साक्षात्कार होगा, कृष्णपुरी देखेंगे। यहाँ तो बाबा तुमको वैकुण्ठ का मालिक बना देते हैं। सिर्फ साक्षात्कार की बात नहीं। मेरे को याद करो क्योंकि मैं आया हूँ तुमको ले जाने। शिवबाबा को याद करना है। वही कृष्णपुरी का मालिक बनाने वाला है। कृष्ण तो नहीं बनायेंगे। शिवबाबा को याद करने से तुमको वैकुण्ठ की बादशाही मिलती है। अब (d) (d) वह परमधाम से आया हुआ है। जरूर आये हैं तब तो मन्दिर यादगार बना है ना। शिव का मन्दिर है। शिवजयन्ती भी मनाते है ना। परन्तु वह भारत में कैसे आते हैं—यह किसको पता नहीं हैं। कृष्ण के तन में तो नहीं आते। कृष्ण होता ही है सतयुग में। शिव का बड़ा भारी मन्दिर है। कृष्ण का इतना बड़ा नहीं है। सोमनाथ का मन्दिर कितना बड़ा है! कृष्ण के मन्दिर में राधे-कृष्ण को बहुत गहने दिखाते हैं। शिव के मन्दिर में कभी गहने नहीं देखेंगे। अब वह शिवबाबा तो बड़े महलों में रहता नहीं। रहता है श्रीकृष्ण। बाबा कहते हैं मैं महलों में रहता ही नहीं हूँ। परन्तु भक्ति मार्ग में कितना बड़ा आलीशान हीरे-जवाहरों का मन्दिर बनाया है! जिनको शिवबाबा द्वारा स्वर्ग का वर्सा मिला है उन्हों ने उनका मन्दिर इतना ऊंच बनाया है। यादगार के लिए कितना बड़ा मन्दिर बनाया है! तो वह खुद कितने न साहूकार होंगे! मन्दिर बहुत अच्छा बनाते हैं। बाम्बे में बाबुरीनाथ में शिव का मन्दिर है। लक्ष्मी-नारायण का माधव बाग में है। बाप कहते हैं हम तुमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। तो भक्ति मार्ग में तुम कितना भारी मन्दिर बनाते हो और अभी देखो कैसे झोपड़ी में बैठा हूँ! तुम्हारा भी नाम बाला होना है। तुम जानते हो हमारा फिर मन्दिर बनेगा।

हमारे बाप शिव के भी बहुत मन्दिर हैं, कमाल है। जिन्होंने सोमनाथ का मन्दिर बनाया था, वो कितने धनवान होंगे! अभी तो कितना गुप्त हूँ! कोई को पता नहीं। तुम जान गये हो फिर कैसे शिवबाबा का मन्दिर बनाना पड़ेगा। भक्ति मार्ग में आयेंगे। मम्मा-बाबा जो पहले नम्बर में पूज्य बनते हैं, वैकुण्ठ के मालिक बनते हैं, फिर पहले-पहले पुजारी बन मन्दिर भी उनको ही बनाना है। तो दिल में कहेंगे ना—हम ही पुजारी बन मन्दिर बनायेंगे। ऐसी-ऐसी बातों में रमण करने से फिर यह पुरानी दुनिया भूल जायेगी। आपस में भी ऐसी-ऐसी बातें करनी चाहिए तो तुमको खुशी बहुत रहेगी। अपने से रूहरिहान करो।

सुप्रीम रूह बैठ तुम्हारी रूह को रिझाते हैं। इस ज्ञान से हर्षित बनाते हैं। तुम कहते हो हम कल्प बाद फिर से आये हैं। अनेक बार बाप से मिले हैं। वर्सा पाया है। ऐसे-ऐसे आपस में बातें करनी चाहिए। फिर तुम कर्मयोगी भी हो। भल घर में खाना आदि पकाओ, खुशी रहेगी। तुम 84 जन्मों की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानते हो। हम अभी ब्राह्मण बने हैं फिर देवता बन राज्य करेंगे। पुजारी से पूज्य बनेंगे। फिर महल आदि बनायेंगे। अपनी ही हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाते रहो। हमारी हिस्ट्री-जॉग्राफी चक्र कैसे लगाती है—इसको ही स्वदर्शन चक्रधारी कहा जाता है। तुम तीनों लोकों को जानने वाले हो। ज्ञान का नेत्र तुम्हारा खुला है। यह चक्र याद करने से तुमको बड़ी खुशी रहनी चाहिए। बाप को भी खुशी रहती है। अभी तुम सेवा में उपस्थित हो। तुम सेवाधारियों के मन्दिर फिर बाद में भक्ति मार्ग में बनेंगे। अभी मैं तुम बच्चों की सर्विस में आया हूँ। तुमको स्वर्ग का पूरा वर्सा देने आया हूँ। जितना जो पुरुषार्थ करेंगे, उस अनुसार स्वर्ग के मालिक बनेंगे।

अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद, प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार :-

१- चलते-फिरते लाइट हाउस बन सभी को रास्ता बताना है। सब आशायें छोड़ एक बाप की याद में रहना है। बाप से राय लेते रहना है।

२- ज्ञान की बातों में ही रमण करना है। अपने आपसे बातें करनी है। स्वदर्शन चक्र फिराते सदा हर्षित रहना है।

वरदान :- स्वयं को बाप हवाले कर बुद्धि से भी सरेन्डर होने वाले डबल लाइट भव

अपनी जिम्मेवारी बाप को देकर, स्वयं को बाप हवाले कर दो अर्थात् अपने सब बोझ बाप को दे दो तो डबल लाइट बन जायेंगे। बुद्धि से सरेन्डर हो जाओ तो और कोई भी बात बुद्धि में नहीं आयेगी, बस सब कुछ बाप का है, सब कुछ बाप में है तो और कुछ रहा ही नहीं, जब रहा ही नहीं तो बुद्धि कहाँ जायेगी, बस एक बाप, एक ही याद का रास्ता, इस रास्ते से सहज मंजिल पर पहुंच जायेंगे।

स्लोगन:-

अडोलता के तख्त पर विराजमान हो, साक्षी दृष्टा बन पार्ट बजाने वाले ही श्रेष्ठ पार्टधारी हैं।

*30-1-99© प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - आत्मा के उन्नति की रेसपान्सिबिल्टी एक बाप पर है, मनुष्य शरीर की उन्नति का प्रबन्ध रचते, आत्मा की उन्नति वा चढ़ती का साधन बाप ही बतलाते हैं - वह है रूहानी सर्जन।"

प्रश्नः- सदा बच्चों की उन्नति होती रहे उसके लिए बाप कौन-कौन सी श्रीमत देते हैं?
उत्तरः- बच्चे, अपनी उन्नति के लिए 1- सदा याद की यात्रा पर रहो। याद से ही आत्मा की जंक निकलेगी। 2- कभी भी बीती को याद नहीं करो और आगे के लिए कोई आश न रखो। 3- शरीर निर्वाह के लिए कर्म भले करो लेकिन जो भी टाइम मिले वह वेस्ट नहीं करो, बाप की याद में टाइम सफल करो। 4- कम से कम 8 घण्टा ईश्वरीय सेवा करो तो तुम्हारी उन्नति होती रहेगी।

ओम् शान्ति। रुहानी बाप बैठ रुहानी बच्चों को अथवा आत्माओं को समझाते हैं, मनुष्य कहते हैं आत्मा की रेसपान्सिबिल्टी है परमात्मा के ऊपर। वही सब आत्माओं की उन्नति और मन की शान्ति का रास्ता बता सकते हैं। आत्मा रहती है भ्रकुटी में सबसे न्यारी। अक्सर करके रोग होते हैं शरीर में। यहाँ भ्रकुटी में नहीं। भल सिर में दर्द पड़ेगा परन्तु जो आत्मा का तख्त है वहाँ कोई तकलीफ नहीं होगी क्योंकि उस तख्त पर आत्मा विराजमान है। अब आत्मा की उन्नति अथवा शान्ति देने वाला सर्जन तो एक ही परमात्मा है। जब आत्मा की उन्नति हो तब आत्मा को हेल्थ वेल्थ भी मिले। शरीर को तो कितना भी करो उससे कोई उन्नति नहीं होगी। शरीर की कुछ न कुछ खिटपिट तो रहती ही है। आत्मा की उन्नति तो सिवाए बाप के कोई कर न सके। और सब दुनिया में शरीर की उन्नति का प्रबन्ध रचते हैं, बाकी आत्मा की चढ़ती कला वा उन्नति होती नहीं है। वह तो बाप ही सिखलाते हैं। सारा मदार आत्मा पर है। आत्मा ही 16 कला बनती है फिर आत्मा ही बिल्कुल कला रहित हो जाती है। 16 कलायें बनती हैं फिर कला कम कैसे होती है, यह भी बाप ही समझाते हैं। बाप कहते हैं सतयुग में तुमको बहुत सुख था। आत्मा चढ़ती कला में थी और सतसंगों में आत्मा की उन्नति कैसे हो — यह बात नहीं समझाई जाती है। वह जिस्मानी नशे में रहते हैं। देह-अभिमान है, बाप तुमको देही-अभिमानी बनाते हैं। आत्मा जो तमोप्रधान बनी है उनको सतोप्रधान बनाना है। यहाँ सब हैं रुहानी बातें। वहाँ हैं जिस्मानी बातें। सजन लोग एक हाट निकाल दूसरा डालते हैं। उनका आत्मा से कोई तैलुक नहीं। आत्मा तो भ्रकुटी में रहती है, उनका आपरेशन आदि कुछ नहीं होता।

अच्छा बाप समझाते हैं कि आत्मा की उन्नति तो एक ही बार होती है। आत्मा जब तमोप्रधान हो जाती है तब आत्मा की उन्नति करने वाला बाप आता है। उनके बिगर किसी भी आत्मा की चढ़ती कला हो न सके। बाप कहते हैं यह छी-छी तमोप्रधान आत्मायें मेरे पास आ न सकें। तुम्हारे पास जब कोई आते हैं तो कहते हैं शान्ति कैसे मिले अथवा उन्नति कैसे हो? परन्तु यह नहीं जानते कि उन्नति के बाद हम कहाँ जायेंगे। क्या होगा। पुकारते हैं पतित से

पावन बनाओ। जीवनमुक्तिधाम में ले जाओ। तो आत्माओं को ही ले जायेंगे ना। शरीर तो यहाँ खत्म हो जायेंगे। परन्तु यह बातें किसकी बुद्धि में नहीं हैं। यह है ईश्वरीय मत। बाकी वह सब हैं मानव मत। ईश्वरीय मत से एकदम आसमान में चढ़ जाते हो – शान्तिधाम, सुखधाम में। फिर ड्रामा अनुसार नीचे भी उतरना ही है। आत्मा की उन्नति के लिए बाप के सिवाए और कोई सर्जन नहीं। सर्जन फिर तुमको आप समान बनाते हैं। कोई तो बहुतों की उन्नति अच्छी करते हैं, कोई मीडियम, कोई थर्ड औरों की उन्नति करते हैं। आत्माओं की उन्नति का जवाबदार है ही एक बाप। दुनिया में यह किसको मालूम नहीं है। बाप कहते हैं इन साधुओं आदि का भी उद्धार करने मैं आता हूँ। पहले जब आत्मा आती है तो पवित्र ही आती है। अब बाप आये हैं सबकी उन्नति करने। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार तुम्हारी देखो कितनी उन्नति हो जाती है। वहाँ तुमको शरीर भी फर्स्टक्लास मिलता है। बाप है ही अविनाशी सर्जन। वही आकर तुम्हारी उन्नति करते हैं। तो तुम ऊंच ते ऊंच अपने स्वीट होम में चले जायेंगे। वो लोग मून पर जाते हैं। अविनाशी सर्जन तुमको उन्नति प्राप्त कराने लिए कहते हैं मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। बाप विश्व के बच्चों को लिबरेट करते हैं। जब तुम स्वर्ग में जायेंगे तब सब शान्तिधाम में होंगे। बाप कितना वन्डरफुल कार्य करते हैं। कमाल है बाप की! तब कहते हैं तुम्हारी गति मत तुम ही जानो। आत्मा में ही मत है, आत्मा अलग हो जाए तो मत मिल न सके। ईश्वरीय मत से चढ़ती कला, मानव मत से उतरती कला–यह भी ड्रामा में नूँध है। वो लोग समझते हैं अभी स्वर्ग बन गया है। आगे चलकर मालूम पड़ेगा कि यह नर्क है वा स्वर्ग। भाषा के ऊपर कितना हंगामा करते हैं। दु:खी हैं ना। स्वर्ग में दु:ख होता नहीं। अर्थक्वेक भी नहीं होगी। अब पुरानी दुनिया का विनाश होना है फिर स्वर्ग बन जायेगा। फिर आधाकल्प वह भी गुम हो जाता है। कहते हैं द्वारिका सागर के नीचे चली गई। सोने की चीज़ें नीचे दब गई हैं। सो तो ज़रुर अर्थक्वेक से नीचे जायेंगी। समुद्र को थोड़ेही खोदकर निकालेंगे। धरती को खोदते हैं, वहाँ से माल निकालते हैं।

बाप कहते हैं मैं सबका उपकार करता हूँ। मेरा फिर सब अपकार करते, गाली देते। मैं तो अपकारी का भी उपकार करता हूँ। तो मेरी ज़रुर महिमा होनी चाहिए। भक्ति मार्ग में देखो कितना मान है। तुम बच्चे भी बाप की कितनी महिमा करते हो। चित्र में 32 गुण दिखाये हैं। अभी तुम भी बाप जैसे गुणवान बन रहे हो तो कितना पुरुषार्थ करना चाहिए। टाइम वेस्ट नहीं करना चाहिए। बहुत हाइएस्ट बाप पढ़ाते हैं तो रोज़ ज़रूर पढ़ना चाहिए। यह अविनाशी बाप भी है, टीचर भी है, पिछाड़ी में आने वाले पुरानों से भी तीखे जा रहे हैं। अब सारी दुनिया की उन्नति हो रही है–बाप द्वारा। श्रीकृष्ण को भी गुणवान बनाने वाला बाप है, सबको देने वाला है। बाकी सब लेते हैं। यह घराना बन रहा है – नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बेहद का बाप देखो कितना मीठा और कितना प्यारा है। ऊंचे ते ऊंचे बाप द्वारा अब सबकी उन्नति हो रही है। बाकी तो सबको सीढ़ी उतरनी है। कमाल है बाप की। भल खाओ-पिओ सब कुछ करो सिर्फ बाबा के गुण गाओ। ऐसे नहीं बाबा की याद में रहने से खाना नहीं खा सकते। रात को फुर्सत बहुत मिलती है। 8 घण्टा तो फुर्सत है। बाप कहते हैं कम से कम 8 घण्टा इस गवर्मेन्ट

की सर्विस करो। जो भी आये उनको आत्मा की उन्नति के लिए रास्ता बताओ। जीवनमुक्ति माना विश्व का मालिक और मुक्ति माना ब्रह्माण्ड का मालिक। ये समझाना तो सहज है ना। परन्तु तकदीर में नहीं है तो तदबीर क्या कर सकेंगे।

बाप समझाते हैं कि बाप की याद सिवाए आत्मा की जंक निकल नहीं सकती। भल ज्ञान सारा दिन सुनाओ परन्तु आत्मा की उन्नति का उपाय याद के सिवाए और कोई नहीं। बाप बच्चों को बहुत प्यार से रोज़-रोज़ समझाते हैं परन्तु अपनी उन्नति करते हैं वा नहीं करते हैं, वह हर एक खुद समझ सकते हैं। यह सिर्फ तुम नहीं सुनते हो परन्तु सब सेन्टर्स वाले बच्चे सुनते हैं। यह टेप रखी है। यह भी अपने में आवाज़ भरकर जाती है – सर्विस पर। यह बहुत सर्विस देती है। बच्चे समझते हैं शिवबाबा की मुरली हम सुनते हैं। तुम्हारे द्वारा सुनने से इनडायरेक्ट हो जाता है फिर यहाँ आते हैं डायरेक्ट सुनने के लिए। फिर बाबा ब्रह्मा मुख द्वारा सुनाते हैं अथवा मुख द्वारा ज्ञान अमृत देते हैं। इस समय दुनिया तमोप्रधान हो गई है तो उस पर ज्ञान की वर्षा चाहिए। वह पानी की वर्षा तो बहुत होती है। उस पानी से तो कोई पावन बन नहीं सकता। यह है सारी ज्ञान की बात।

बाप कहते हैं अब जागो, मैं तुमको शान्तिधाम ले जाता हूँ। आत्मा की उन्नति भी इसमें है, बाकी सब हैं जिस्मानी बातें। रुहानी बातें सिर्फ तुम ही सुनते हो। पदमपति, भाग्यशाली सिर्फ तुम ही बनते हो। बाप है गरीब निवाज़। गरीब ही सुनते हैं, तब बाप कहते हैं अहिल्याओं, गणिकाओं को भी समझाओ। सतयुग में ऐसी बातें नहीं होती। वह है बेहद का शिवालय। अब है बेहद का वेश्यालय। बिल्कुल ही तमोप्रधान हैं। इससे जास्ती मार्जिन नहीं है। अब इस पतित दुनिया को चेन्ज होना है। भारत में राम राज्य और रावण राज्य होता है। जब अनेक धर्म हो जाते हैं तब अशान्ति हो जाती है। लड़ाई तो लगती ही रहती है। अब तो बहुत ज़ोर से लड़ाई लगेगी। कड़ी लड़ाई लग फिर बन्द हो जायेगी क्योंकि राजाई भी स्थापन हो, कर्मातीत अवस्था भी हो। अभी तो कोई कह न सके। वह अवस्था आयेगी तो पढ़ाई पूरी हो जायेगी। फिर ट्रान्सफर हो जायेंगे – अपने पुरुषार्थ अनुसार। इस भंभोर को आग तो लगनी है। फटाफट विनाश हो जायेगा। उनको खूनी नाहेक खेल कहा जाता है। नाहेक सब मर जायेंगे। रक्त की नदियाँ बहेंगी। फिर घी दूध की नदियाँ बहेंगी। हाहाकार से जयजयकार होगी। बाकी सब अज्ञान निद्रा में सोते-सोते ही खत्म हो जायेंगे। बड़ी युक्ति से स्थापना होती है। विघ्न भी पड़ेंगे। अत्याचार भी होंगे। मैजारिटी पुरुष तंग करते हैं। कहाँ-कहाँ स्त्रियाँ भी तंग करती हैं। अब माताओं द्वारा स्वर्ग का द्वार खुलता है। हैं तो पुरुष भी बहुत परन्तु माता जन्म देती है तो उनको पुरुष से इज़ाफा ज्यादा मिलता है। स्वर्ग में तो नम्बरवार सब जायेंगे कोई दो जन्म मेल के भी बन सकते हैं, हिसाब-किताब जो ड्रामा में नूँध है वही होता है। आत्मा की उन्नति होने से कितना फ़र्क पड़ जाता है। कोई तो एकदम हाइएस्ट बन जाता है कोई तो बिल्कुल लोएस्ट। कहाँ राजा तो कहाँ प्रजा।

मीठे-मीठे बच्चों को बाप समझाते हैं अब पुरुषार्थ करो। योग से पवित्र बनो तब धारणा हो। मंज़िल बहुत ऊंची है। अपने को आत्मा समझ बहुत प्यार से बाप को याद करना है।

आत्मा का परमात्मा के साथ लॅव है ना। यह है रुहानी लॅव, जिससे आत्मा की उन्नति होती है। जिस्मानी लॅव से गिर पड़ते हैं। तकदीर में नहीं है तो भागन्ती हो जाते हैं। यज्ञ की बड़ी सम्भाल चाहिए। माताओं की पाई-पाई से यज्ञ की सर्विस हो रही है। यहाँ गरीब ही साहूकार बनते हैं। सारा मदार पढ़ाई पर है। तुम अभी सदा सुहागिन बनती हो—यह सबको फीलिंग आती है। माला का दाना बनने वालों को कितनी अच्छी फीलिंग चाहिए। शिवबाबा को याद करते, सर्विस करते रहो तो बहुत उन्नति हो सकती है। शिवबाबा की सर्विस में शरीर भी न्योछावर करना चाहिए। सारा दिन नशा रहे -- यह मासी का घर नहीं है। देखना है हमने अपनी कितनी उन्नति की है। बाबा कहते हैं - बीती को याद न करो। आगे की कोई आश मत रखो। शरीर निर्वाह अर्थ कर्म तो करना है। जो टाइम मिले उसमें बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। बाबा बाँधेलियों को भी समझाते हैं कि तुम्हें पति को बहुत नम्रता प्यार से समझाना है, कोई मारे तो उन पर फूलों की वर्षा करो। अपने को बचाने की बड़ी युक्ति चाहिए। ऑखें बड़ी शीतल चाहिए। कभी हिलें नहीं। इस पर अंगद का भी मिसाल है, बिल्कुल अडोल था। तुम सब महावीर हो, जो कुछ पास्ट हुआ उनको याद नहीं करना है। सदैव हर्षित रहना है। ड्रामा पर अटल रहना है। बाप खुद कहते हैं मैं भी ड्रामा के बंधन में बाँधा हुआ हूँ। बाकी और कोई बात नहीं। कृष्ण के लिए लिखा है स्वदर्शन चक्र से मारा। यह सब कथायें हैं। बाप तो हिंसा कर न सके। यह तो बाप टीचर है, मारने की बात नहीं है। यह बातें सब इस समय की हैं। एक तरफ़ ढेर मनुष्य हैं दूसरे तरफ़ तुम हो, जिनको आना होगा आते रहेंगे। कल्प पहले मिसल पद पाते रहेंगे। इसमें चमत्कार की बात नहीं। बाप रहमदिल है, दु:ख हर्ता सुख कर्ता है। फिर दु:ख कैसे देंगे। अच्छा -

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- कम से कम 8 घण्टा ईश्वरीय गवर्मेन्ट की सर्विस कर अपना टाइम सफल करना है। बाप जैसा गुणवान बनना है।

२- जो बीता उसे याद नहीं करना है। बीती को बीती कर सदैव हर्षित रहना है। ड्रामा पर अडोल रहना है।

वरदान:- हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझ सदा एवररेडी रहने वाले तीव्र पुरूषार्थी भव

अपनी अन्तिम घड़ी का कोई भरोसा नहीं है इसलिए हर घड़ी को अन्तिम घड़ी समझते हुए एवररेडी रहो। एवररेडी अर्थात् तीव्र पुरुषार्थी। ऐसे नहीं सोचो कि अभी तो विनाश होने में कुछ टाइम लगेगा फिर तैयार हो जायेंगे। नहीं। हर घड़ी अन्तिम घड़ी है इसलिए सदा निर्मोही, निर्विकल्प, निर-व्यर्थ.. व्यर्थ भी नहीं, तब कहेंगे एवररेडी। कोई भी कार्य रहे हुए हों लेकिन अपनी स्थिति सदा उपराम हो, जो होगा वो अच्छा होगा।

स्लोगन:-

विकारों रूपी सांपों को अपनी शैया बना दो तो सहजयोगी बन जायेंगे।

"मीठे बच्चे – विचार सागर मंथन करने की आदत डालो, एकान्त में सुबह-सुबह विचार सागर मंथन करो तो अनेक नई-नई प्वाइन्ट बुद्धि में आयेंगी"

प्रश्नः- बच्चों को अपनी अवस्था फर्स्ट क्लास बनानी है तो किन-किन बातों का सदा ध्यान रहे?

उत्तरः- (1) एक बाप जो सुनाते हैं वही सुनो, बाकी इस दुनिया का कुछ भी नहीं सुनो। (2) संग की सम्भाल रखो। जो अच्छी रीति पढ़ते हैं, धारणा करते हैं उनका ही संग करो तो अवस्था फर्स्ट क्लास हो जायेगी। कई बच्चों की अवस्था को देख बाबा को ख्याल आता कि ड्रामा में कुछ परिवर्तन हो जाये परन्तु फिर कहते–यह भी राजधानी स्थापन हो रही है।

ओम् शान्ति। एक ही बेहद का बाप, बेहद के बच्चों को बैठ समझाते हैं वा पढ़ाते हैं। बाकी मनुष्य जो कुछ पढ़ते हैं, सुनते हैं वह तुमको सुनना, पढ़ना कुछ भी नहीं है क्योंकि यह तो समझ गये हो--एक ही यह ईश्वरीय पढ़ाई है, जो अभी तुम्हें पढ़नी है। तुमको सिर्फ एक ईश्वर से ही पढ़ना है। बाप जो पढ़ाये, सिखाये–ओरली पढ़ना है। वह तो अनेक प्रकार की किताब लिखते हैं, जो सारी दुनिया पढ़ती है। कितनी ढेर किताबें पढ़ते होंगे। सिर्फ तुम बच्चे ही कहते हो एक से ही सुनो और वही औरों को सुनाओ क्योंकि उनसे जो कुछ सुनेंगे उसमें ही कल्याण है। बाकी ढेर किताबे हैं। नई-नई निकलती रहती हैं। तुम जानते हो राइटियस तो एक बाप ही सुनाते हैं। बस, उनसे ही सुनना है। बाप तो बच्चों को बहुत थोड़ा समझाते हैं, उसको डिटेल में समझाकर फिर भी एक ही बात पर आ जाते हैं। भल मनमनाभव अक्षर बाबा राइट कहते हैं परन्तु बाबा ने ऐसे कहा नहीं है। बाप तो कहते हैं अपने को आत्मा समझो, मुझ बाप को याद करो और सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान जो सुनाता हूँ वह धारण करो। यह भी तुम जानते हो, हम जो देवता बनते हैं वही फिर वृद्धि को पाते हैं। बच्चों को मूलवतन भी याद है फिर नई दुनिया भी याद है।

पहले है ऊंचे ते ऊंचा बाप। फिर यह नई दुनिया, जिसमें यह लक्ष्मी-नारायण ऊंचे ते ऊंच राज्य करने वाले हैं। चित्र तो जरूर चाहिये। तो वह बाकी निशानी रह गई है। यही एक चित्र है। राम का भी है परन्तु राम राज्य को हेविन नहीं कहेंगे। वह है ही सेमी। अब ऊंच ते ऊंच बाप पढ़ा रहे हैं। इसमें किताब आदि की कोई जरूरत नहीं है। यह किताब आदि कुछ भी चलनी नहीं है, जो दूसरे जन्म में पढ़ सकें। यह पढ़ाई इस जन्म के लिये ही है। यह अमरकथा भी है। नर से नारायण बनने की शिक्षा भी बाप देते हैं नई दुनिया के लिये। बच्चे 84 के चक्र को भी जान गये हैं। यह पढ़ाई को समय है। बुद्धि में मंथन चलना चाहिये। तुमको औरों को भी पढ़ाना है। सवेरे उठ विचार सागर मंथन करना है। सवेरे ही विचार सागर मंथन अच्छा होता है। जो समझाने

वाले होंगे उन्हों का ही मंथन होगा। टॉपिक्स, प्वाइन्ट्स आदि निकलती हैं। भक्ति की बातें जन्म-जन्मान्तर सुनी। यह ज्ञान जन्म-जन्मान्तर नहीं सुनेंगे। यह बाप एक बार सुनाते हैं। फिर यह नॉलेज तुमको भी भूल जाती है। भक्ति मार्ग की कितनी किताबे हैं। विलायत से भी आती हैं। यह सब खत्म होने वाली हैं। सतयुग में तो कोई किताब आदि की दरकार नहीं। यह सब है कलियुगी सामग्री। यहाँ जो कुछ तुम देखते हो – हॉस्पिटल, जेल, जज आदि वहाँ कुछ भी नहीं होंगे। वह दुनिया ही दूसरी होगी। दुनिया तो यही है परन्तु नई और पुरानी में फ़र्क तो जरूर होगा ना। उनको कहा जाता है स्वर्ग। वही दुनिया फिर नर्क बनती है। मुख से कहते हैं—फलाना स्वर्गवासी हुआ। सन्यासी के लिये कहेंगे ब्रह्म में लीन हुआ, निर्वाण गया। परन्तु निर्वाण कोई जाता नहीं है। यह तुम जानते हो। रूद्र माला कैसे बनी है? रूण्ड माला भी है। विष्णु की राजधानी की माला बनती है। अब माला के राज़ को तुम बच्चे ही जानते हो। रूद्र की माला किसका नाम है? रूण्ड माला किसका नाम है? विष्णु के राजधानी की माला बनती है। नम्बरवार पढ़ाई अनुसार ही माला में पिरोये जाते हैं। पहले-पहले यह निश्चय चाहिये। यह ईश्वरीय पढ़ाई है। वह सुप्रीम बाप और सुप्रीम शिक्षक भी है। तुम्हारी बुद्धि में जो नॉलेज है वही औरों को देनी है। आप समान बनाना है। विचार सागर मंथन करना है। अखबारें भी सवेरे निकलती हैं। वह कॉमन बात है। यह तो एक बात लाखों रूपये की है। कोई अच्छी तरह समझते हैं, कोई कम समझते हैं। समझने और समझाने के अनुसार ही फिर नई दुनिया में पद मिलता है। विचार सागर मंथन करने में बड़ा एकान्त चाहिये। रामतीर्थ के लिये बताते हैं – जब लिखता था, चेले को कहा दो माइल दूर हो जाओ, नहीं तो वायब्रेशन आयेगा।

तुम अब परफेक्ट बन रहे हो। सारी दुनिया की है डिफेक्टेड बुद्धि। तुम इस पढ़ाई से यह लक्ष्मी-नारायण बनते हो। कितनी ऊंच पढ़ाई है! परन्तु नम्बरवार बिठा नहीं सकते। पिछाड़ी में बैठने से फंक हो जायेंगे, घुटका खायेंगे, वायुमण्डल खराब करेंगे। यूँ तो लॉ कहता है—नम्बरवार बिठाना चाहिये। परन्तु इन सब बातों को गुड़ जाने, गुड़ की गोथरी जाने। यह है बहुत ऊंच नॉलेज। तुम्हारी अलग-अलग क्लास तो नहीं कर सकते। वास्तव में तुमको क्लास में इस तरह बैठना चाहिये जो अंग, अंग से न लगे। माइक पर तो दूर भी आवाज़ सुन सकते हो। बाप कहते हैं—इस दुनिया का तुम और कुछ भी न सुनो, न पढ़ो। उन्हों का संग भी न करो। जो अच्छी तरह पढ़ते हैं उनका ही संग करना चाहिये। सुनना भी उन्हों का चाहिये। ऐसे तो सब कहेंगे हमको फर्स्ट क्लास ब्राह्मणी चाहिये। सेकेण्ड, थर्ड क्लास हमको भी ऐसा बना देगी। फिर फर्स्ट क्लास ब्राह्मणी इतनी सब कहाँ से लायेंगे? जैसे म्युजियम है, वहाँ बहुत तीखी और योगयुक्त चाहिये।

यह भी बाप समझाते हैं – ड्रामा बना हुआ है। कभी-कभी बाबा सोचते—कुछ ड्रामा में चेंज हो जाये। परन्तु चेन्ज हो नहीं सकता। यह बना-बनाया खेल है। बच्चों की अवस्था को देख ख्याल आता है कि कुछ चेन्ज हो जाये। क्या ऐसे-ऐसे स्वर्ग में चलेंगे? फिर

ख्याल आता है--स्वर्ग में तो सारी राजधानी चाहिये। कोई दास-दासियां, चण्डाल आदि भी होंगे। ड्रामा में कुछ चेंज नहीं हो सकती। भगवानुवाच--यह ड्रामा बना हुआ है। इसको मैं भी चेंज नहीं कर सकता हूँ। भगवान के ऊपर तो कोई भी है नहीं। मनुष्य तो कह देते हैं--भगवान् क्या नहीं कर सकता! परन्तु भगवान् खुद कहता है--मैं कुछ नहीं कर सकता हूँ। यह बना-बनाया खेल है। विघ्न पड़ते हैं, कुछ भी नहीं कर सकते। ड्रामा में नूँध है, मैं क्या कर सकता हूँ। बहुत बच्चियां पुकारती हैं--हमको नंगन होने से बचाओ। अब बाप क्या करेंगे। बाप सिर्फ कह देंगे--ड्रामा की भावी। यह तो बना-बनाया ड्रामा है। ऐसे मत समझो भगवान् की भावी। भगवान् के हाथ में होता तो समझो कोई अनन्य शरीर छोड़ देते हैं, उनको भी बचा लेते। ऐसे बहुतों को संशय आता है। भगवान् पढ़ाते हैं! अगर भगवान् के बच्चे हैं तो क्या भगवान् भी अपने बच्चों को नहीं बचा सकते! बहुत उल्हना देते हैं। कहते हैं ऐसे साधू लोग तो किसके प्राणों को बचा सकते हैं, प्राण फिर से आ जाते हैं। चिता से भी उठ जाते हैं। फिर कहेंगे ईश्वर ने लौटा दिया, काल ले गया, उस पर प्रभु ने रहम किया। बाप समझाते हैं--जो कुछ ड्रामा में नूँध है वही होता है। बाप भी कुछ नहीं कर सकता। इसको कहा जाता है ड्रामा की भावी। ड्रामा का अक्षर तुम जानते हो। वह कहेंगे जो कुछ होना था हुआ, फिक्र काहे का। तुमको बेफिक्र बनाते हैं। सेकण्ड बाई सेकण्ड जो कुछ होता है ड्रामा ही समझो। आत्मा ने शरीर छोड़ जाकर दूसरा पार्ट बजाया। अनादि पार्ट को तुम कैसे फेर सकते हो! भल अभी थोड़ी कच्ची अवस्था है, थोड़ा बहुत विचार आ जाता है। परन्तु भावी कुछ कर नहीं सकती। लोग भल क्या-क्या भी कहें परन्तु हमारी बुद्धि में ड्रामा का राज़ है। पार्ट बजाना है। फिक्र की बात नहीं। जब तक कच्ची अवस्था है थोड़ी-बहुत लहर आती है।

इस समय तुम सब पढ़ रहे हो। तुम सब देहधारी हो, मैं एक विदेही हूँ। सब देहधारियों को सिखलाता हूँ। बाप समझाते हैं--कोई-कोई समय तुम बच्चों को फिर यह ब्रह्मा भी बैठ समझाते हैं। यह बाप का पार्ट और प्रजापिता ब्रह्मा का पार्ट वन्डरफुल है। यह बाप विचार सागर मंथन कर तुमको सुनाते रहते हैं। कितनी वन्डरफुल नॉलेज है! कितनी बुद्धि चलानी पड़ती है। बाबा का विचार सागर मंथन सुबह को चलता है। तुमको भी ऐसा बनना है, जैसा टीचर। फिर भी फ़र्क तो जरूर रहता है। टीचर स्टूडेन्ट को कभी 100 मार्क्स नहीं देंगे। कुछ कम देंगे। वह है ऊंचे ते ऊंचा। हम हैं देहधारी। तो बाबा मिसल 100 परसेन्ट कैसे बनेंगे? यह बडी गुह्य बातें हैं। कोई तो सुनकर धारण करते हैं, खुशी होती है। कोई-कोई कहते हैं बाबा की तो एक ही वाणी चलती है, रिपीटेशन होती है। अब कोई नये-नये बच्चे आते हैं तो मुझे पहली प्वाइन्ट उठानी पड़ती है। कोई नई प्वाइन्ट भी निकल आती है औरों को समझाने के लिये। बच्चों को फिर भी बाप को मदद करनी पड़ती है। मैगजीन निकालते हैं। कल्प पहले भी ऐसा लिखा होगा। अगर अखबार निकालें तो उस पर बहुत ध्यान देना पड़े। ऐसी कोई बात न हो जो मनुष्य पढ़कर नाराज़ हो जायें। मैगजीन तो तुम पढ़ते हो। कोई कच्ची-पक्की बात होगी कहेंगे अब तक सम्पूर्ण

नहीं बने हैं। एक्यूरेट 16 कला सम्पूर्ण बनने में समय तो लगता है। अभी तो बहुत सर्विस करनी है। बहुत प्रजा बनानी है। यह भी बाप ने समझाया है—अनेक प्रकार की मार्क्स हैं। कोई निमित्त हैं, बहुतों को ज्ञान लेने के लिये प्रबन्ध करते हैं तो उनको भी फल मिल जाता है। अब तो पुरानी दुनिया ही खत्म होनी है। यहाँ है अल्पकाल का सुख। बीमारी आदि तो सबको होती है। बाबा सब बातों का अनुभवी है। दुनिया की बातें भी समझाते हैं। बाबा ने कहा था—अखबार वा मैगजीन में वन्डरफुल बातें लिखो जो समझें कि ब्रह्माकुमारियों ने यह बात बिल्कुल ठीक लिखी है। यह लड़ाई 5 हजार वर्ष पहले हूबहू लगी थी। कैसे? यह आकर समझो। तुम्हारा नाम भी होगा, मनुष्य सुनकर खुश भी होंगे। बहुत बड़ी बात है! परन्तु जब किसकी बुद्धि में बैठे। जो लिखते हैं उनको फिर समझाना भी है। समझाना नहीं आता होगा इसलिये फिर लिखते भी नहीं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिये मुख्य सार :-

१. एक बाप जो सुनाते व पढ़ाते हैं, वही सुनो व पढ़ो। बाकी कुछ भी पढ़ने-सुनने की दरकार नहीं। संग की बहुत-बहुत सम्भाल रखो। सवेरे-सवेरे एकान्त में बैठ विचार सागर मंथन करो।

२. ड्रामा की भावी निश्चित बनी हुई है इसलिये सदा बेफिक्र रहो। किसी भी बात में संशय मत उठाओ। लोग भल क्या भी कहेंगे लेकिन तुम ड्रामा पर अटल रहो।

वरदान:- नालेज की लाइट माइट से रांग को राइट में परिवर्तन करने वाले ज्ञानी तू आत्मा भव

कहा जाता है नालेज इज लाइट, माइट। जहाँ लाइट अर्थात् रोशनी है कि ये रांग है, ये राइट है। ये अंधकार है, ये प्रकाश है। ये व्यर्थ है, यह समर्थ है — तो रांग समझने वाले रांग कर्मो वा संकल्पों के वशीभूत हो नहीं सकते। ज्ञानी तू आत्मा अर्थात् समझदार, ज्ञान स्वरूप, कभी यह नहीं कह सकते कि ऐसा होना तो चाहिए...लेकिन उनके पास रांग को राइट में परिवर्तन करने की शक्ति होती है।

स्लोगन:-

जो स्वयं को परमात्म प्यार के पीछे कुर्बान करते हैं, सफलता उनके गले की माला बन जाती है।

भगिरथ

(४४)

3.7.99 प्रात मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे–विचार सागर मंथन कर श्रीकृष्ण और परमात्मा शिव के महान् अन्तर को स्पष्ट करो"

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से सम्बन्धित)

प्रश्न :- ब्रह्मा बाबा अपने आपसे क्या बातें करते हैं? उन्हें वन्डर क्या लगता है?

उत्तर :- ब्रह्मा बाबा अपने आपसे बातें करते–पता नहीं क्या होता जो शिवबाबा घड़ी-घड़ी भूल जाता है। ऐसे तो नहीं, बाप जब प्रवेश करते हैं तब याद रहती है, बाबा चले जाते हैं तो याद भूल जाती है। परन्तु मैं तो उनका बच्चा हूँ, याद भूल क्यों जाती? क्या मेरी याद से ही बाबा आते हैं? ऐसे-ऐसे बाबा अपने आपसे बातें करके वन्डर खाते रहते हैं।

गीत :- तू प्यार का सागर है.....

ओम् शान्ति। शिवबाबा बैठ करके अपने सिकीलधे बच्चों को समझाते हैं कि गीता का भगवान् कौन है? क्योंकि इस समय भारत में है अज्ञान अन्धियारा। इसको कहा जाता है घोर अन्धियारा, अज्ञान अन्धियारा। फिर सोझरा चाहिए ज्ञान का। परमपिता परमात्मा को ही मनुष्य मानते हैं कि वह ज्ञान का सागर है, नॉलेजफुल है। अच्छा, वह ज्ञान का सागर है, उनसे क्या मिलता है? नदियों से पानी मिलता है तो भर-भर कर स्नान भी करते हैं। तुमको ज्ञान सागर से क्या मिलता है? एक बूंद। बाप आकर बच्चों को समझाते हैं–मैं ज्ञान का सागर हूँ, तुमको बूँद देता हूँ। कौन सी बूँद? सिर्फ कहता हूँ–मैं तुम्हारा बाप हूँ। तुम मुझे याद करो। समझो कि हम अपने शान्तिधाम-सुखधाम जाते हैं।

ज्ञान सागर एक सेकेण्ड में जीवनमुक्ति वैकुण्ठ मे भेज देते हैं। घर बैठे भी दिव्य दृष्टि दे देते हैं। मनुष्य तो एक-दो को सामने दृष्टि देते हैं। बाबा घर बैठे साक्षात्कार करा लेते हैं। एक बूँद मिलने से तुम यहाँ से चले जाते हो। यहाँ बैठे-बैठे तुम वैकुण्ठ मे चले जाते हो। अब बाप बैठ समझाते हैं। गीता का भगवान कौन है? वह है ज्ञान का सागर निराकार। मनुष्य तो गाते हैं श्रीकृष्ण के लिए। अब तुमको समझाना है श्रीकृष्ण ने ज्ञान नहीं सुनाया। पहले-पहले तो कहते हैं कृष्ण ने माता के गर्भ से जन्म लिया। कंसपुरी थी। फिर आवाज हुआ–हे कंस, तुमको मारने वाला आया है। यह तो जानते हो सब असुर हैं। कंस, जरासन्धी, अकासुर, बकासुर पाप आत्मायें सबका विनाश करने लिए उनका जन्म दिखाते हैं। तो श्रीकृष्ण ने जन्म लिया। वह तो छोटा था। फिर ज्ञान कब दिया? वह तो युद्ध के मैदान में कृष्ण का बड़ा रूप दिखाते हैं, छोटा तो नहीं दिखाते हैं। वैसे ही कृष्ण जयन्ती के बाद फिर गीता जयन्ती दिखाते हैं। कुछ समय के बाद जब वह बड़ा हुआ तब ज्ञान दिया होगा। यह भी दिखाते हैं– जन्म लिया है। टाइम भी दिखाते हैं– सोने के समय। यहाँ तुम देखते हो शिवबाबा की पधरामनी हुई है। कोई को पता नहीं कि कब प्रवेशता हुई। शिवबाबा तो बच्चा बना नहीं है। वह तो बूढ़े वानप्रस्थ अवस्था में आया है। कब आया–उसकी डेट है नहीं। कृष्ण की तो तिथि-तारीख है और वह गर्भ से पैदा हुआ है। यहाँ शिवबाबा तो ज्ञान का सागर है। उनको छोटा होना नहीं है, जो फिर बड़ा होकर ज्ञान सुनाये। कृष्ण तो मनुष्य था। मनुष्य को ज्ञान सागर नहीं कहा जाता है। उनका तो जन्म ही स्वर्ग में हुआ। वह किसको राजयोग सिखला न सके, क्योंकि

खुद ही राजा है। बरोबर तुम जानते हो निराकार बाप ही आकर राजयोग सिखलाते हैं। पतिता को पावन, राजाओं का राजा बनाते हैं।

इस हद के रात और दिन तथा इस बेहद के रात और दिन के अर्थ में भी फर्क है। यह है संगम जबकि ब्रह्मा की रात पूरी हो ब्रह्मा का दिन शुरु होता है। यह है बेहद की रात्रि, अज्ञान अन्धियारा। सतयुग में है सोझरा। उस रात की बात नहीं। वह तो कृष्ण का जन्म रात में मनाते हैं। वह हुई हद की बात, यह है बेहद की। बाप कहते हैं मैं आता हूँ, मेरी कोई तिथि-तारीख नहीं। कृष्ण-राम आदि की तो तिथि-तारीख है। मुख्य है ही दो।

अभी कृष्ण जयन्ती आती है ना। उन्हों को समझाना है कृष्ण तो छोटा बच्चा है। रात और दिन तो ब्रह्मा का गाया जाता है। ब्रह्मा का दिन कृष्ण है और ब्रह्मा की रात ब्रह्मा है। ब्रह्मा ही फिर सो कृष्ण बनता है, कृष्ण की रात वा कृष्ण का दिन नहीं कहेंगे। वह तो समझते हैं कृष्ण भगवान् है, वह हाजिराहजूर है। तो इस पर भी समझाना है। तुम्हारी है शिवजयन्ती वा शिव रात्रि कहो। शिव जयन्ती कहना ठीक है। यह भी समझाना होता है। वह गर्भ में तो आते नहीं हैं। साधारण तन में आते हैं। कृष्ण की तो 8 पीढ़ी चलती है। छोटेपन में उनको मोहन अथवा कृष्ण कहते हैं। जैसे प्रिन्स ऑफ वेल्स है वैसे पहले-पहले गद्दी इन्द्रप्रस्थ की—प्रिन्स आफ इन्द्रप्रस्थ। फिर वह प्रिन्स से किंग होगा। कृष्ण अक्षर नहीं, महाराजा नाम ही गाया जाता है। श्री लक्ष्मी-नारायण को महाराजा-महारानी कहते हैं। किंग अक्षर अंग्रेजों का है, असुल नाम महाराजा-महारानी है। ऐसे नहीं कि नारायण ने ज्ञान दिया था। स्वयंवर बाद कृष्ण फिर श्री-नारायण बनता है। अब इस ज्ञान सागर शिव का नाम तो बदलता नहीं। एक ही नाम है। उनका वह रथ तो बड़ा है। आने से ही ज्ञान सुनाना शुरु कर दिया है। यह (ब्रह्मा) तो कुछ नहीं जानत थ। समझ में आता है इनमें आया हुआ है, जो साक्षात्कार कराते हैं। नॉलेज दे रहे हैं। यह साक्षात्कार का राज़ अथवा यह नॉलेज शुरु में पहले समझ में नहीं आती थी। बाबा अपना अनुभव बतलाते हैं—शुरु में बनारस गये तो दीवारों पर गोले आदि निकालते रहते थे। समझ में कुछ भी नहीं आता था—यह क्या है? क्योंकि यह तो जैसे बेबी बन गये। नया जन्म लिया ना। कहते हैं ना—बाबा, हम 8-10 मास का आपका बच्चा हूँ तो मैं भी बच्चा हो गया। तो पहले कुछ समझ में नहीं आता था। वह ज्ञान की बात ही और थी। अगड़म-बगड़म क्या-क्या बैठ निकालते थे। अभी तो सीखते-सीखते कितने वर्ष हो गये हैं! अभी बाप की बातें समझ में आती हैं। बच्चों को कृष्ण जयन्ती पर समझाना है। चित्र तो बरोबर हैं। झाड़ में ब्रह्मा का चित्र भी है। मक्खन तो यह हप कर लेते हैं। विश्व के मालिकपने का माखन है। कृष्ण सतयुग की प्रालब्ध लेकर के आया है। श्रीकृष्ण है सतयुग का पहला प्रिन्स फिर उनके बच्चे भी प्रिन्स बनेंगे। यह है उनकी प्रालब्ध जो कलियुग में तो थी नहीं। तो यह सूर्यवंशी की प्रालब्ध किसने बनाई? गाया जाता है—ज्ञान सूर्य प्रगटा, अज्ञान अन्धेर विनाश। ज्ञान सागर तो शिवबाबा है। वह आये हैं और स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। कान्ट्रास्ट बतलाना है। कृष्ण कैसे गीता सुना सकता, वह तो बच्चा है। गर्भ में आया है। दिखाते हैं—वहां कंस, जरासन्धी आदि थे। परन्तु वहां असुर तो हो न सकें। असुरों और देवताओं की लड़ाई दिखाते हैं। तो जरूर असुर कलियुग अन्त में होंगे, देवतायें सतयुग आदि में होंगे। दोनों की लड़ाई तो लगी नहीं है। महाभारत लड़ाई बरोबर है। देवतायें तो यहाँ हो न सकें। असुरों की असुरों में लड़ाई चली

है। मुसलमानों का राज्य भी देखते हो। बराबर यादव, कौरव, पाण्डव भी हैं।

पाण्डव हैं [illegible] बहती रहती है। दुश्मनी तो है ना। पार्टीशन में रक्त की नदी अच्छी ही बही थी ना। भाई-भाई की युद्ध हुई, भाई-भाई तो है ना। लड़ाई उन्हों की लगती है, [illegible] कैसे बहे? यह तो एक दो का खून करते है। तलवारें चलाते हैं तब रक्त की नदी बहती है। और है यह संगम का समय। रक्त की नदियों बाद फिर घी की नदियां बहनी हैं। कृष्ण तो छोटा प्रिन्स है। फिर उनकी भी बैठ ग्लानी की है। उनकी तो ज्ञान सागर कह नहीं सकते। देवताओं की महिमा तो गाई जाती है—सर्वगुण सम्पन्न, मर्यादा पुरुषोत्तम..... यह महिमा बच्चे की नहीं हो सकती। महिमा हमेशा राजा-रानी की चलती है। वह फिर लक्ष्मी-नारायण को सतयुग में और कृष्ण को द्वापर में ले गये हैं। कितनी बड़ी भूल कर दी है! लक्ष्मी-नारायण की छोटेपन की कहानी भी कोई बता नहीं सकते। राम-सीता की भी कुछ न कुछ बतलाते हैं। कृष्ण की भी उल्टी-सुल्टी बात बतलाते हैं। कुछ तो सुल्टी कहानी भी बताओ। लक्ष्मी-नारायण की तो महिमा गाई जाती है—सर्वगुण सम्पन्न, मर्यादा पुरुषोत्तम, अहिंसा परमो धर्म.....। अच्छा, उन्हों को राज्य किसने दिया? मनुष्य का नाम सुन मूँझ जाते हैं। लक्ष्मी-नारायण कहने से तुम चले जाते हो सतयुग में। यह है नर से नारायण बनने की कथा। कृष्ण बनने की कथा नहीं कहते, इसको सत्य नारायण की कथा कहेंगे। सत्य कृष्ण की कथा नहीं कहा जाता। सच्चा बाबा ज्ञान सागर यह कथा सुनाते हैं। सारे सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की कथा है। उसमें श्री लक्ष्मी-नारायण की कथा भी आ जाती है। उनके 84 जन्मों की कथा दिखलाते हैं। श्री नारायण की कथा से बेड़ा पार हुआ। बराबर बाप बैठ बच्चों को नर से नारायण बनने की सच्ची कथा सुनाते हैं। श्री नारायण तो बड़ा है ना। स्वयंवर से पहले कौन थे? क्या लक्ष्मी-नारायण ही नाम था या दूसरा और कोई नाम था? है राधे-कृष्ण, जिनका स्वयंवर बाद लक्ष्मी-नारायण नाम रखा है। बाबा एसे (Essay-निबन्ध) देते हैं फिर तुमको विचार सागर मंथन करना चाहिए। पहले नम्बर की भूल है यह। तुम जानते हो अभी है कलियुग। यादव, कौरव, पाण्डव भी हैं। कलियुग का समय भी है। कलियुग के बाद जरूर सतयुग होगा। बाप कहते हैं—मैं गाइड बन आया हूँ, रावण के चम्बे से छुड़ाए वापिस ले जाने। आत्माओं को ही ले जाऊंगा।

गाया जाता है आत्मा-परमात्मा अलग रहे बहुकाल..... ऐसे नहीं कि कृष्ण अलग रहे बहुकाल। महिमा ही उस निराकार की है—सुन्दर मेला कर दिया जब वह सतगुरु मिला दलाल। यहाँ तो सब गुरु ही हैं। गाया हुआ है—सतगुरु मिला दलाल..... सत परमपिता परमात्मा दलाल के रूप में मिलते हैं। सौदा दलाल द्वारा होता है। यह भी सगाई होती है। आत्मा और परमात्मा अलग हैं। परमात्मा है निराकार वह आकर इसमें प्रवेश कर तुम्हारी सगाई करते हैं। खुद दलाल बनते हैं। कहते है मुझ परमपिता परमात्मा को याद करो। इस शरीर में बैठ कहते है मामेकम् याद करो। मैं तुमको माया रावण से लिबरेट कर साथ ले जाऊंगा, तुमको फिर राजाई देकर मैं निर्वाणधाम में बैठ जाऊंगा। कृष्ण थोड़ेही ऐसे कहेंगे। यह है ही आत्मा और परमात्मा। कृष्ण तो छोटा बच्चा है। बातें तो बहुत हैं समझाने की। तो बाबा ने समझाया है कैसे इसमें प्रवेशता हुई? फिर समझने लगा—मैं राजाओं का राजा बनता हूँ। विष्णु का साक्षात्कार हुआ और दिल में बहुत खुशी हुई। फिर विनाश का साक्षात्कार भी

हुआ। परन्तु इतना समझ में नहीं आया। अभी समझते हैं बाबा ने यह साक्षात्कार कराया—तुम नर से नारायण बनेंगे। परन्तु उस समय इतनी समझ नहीं थी। जैसे बाबा रात को बतला रहे थे—पता नहीं क्या होता है जो शिवबाबा को याद करना भूल जाता हूँ। ऐसे तो नहीं बाप जब प्रवेश करते हैं तब समझता हूँ बाबा आया है, याद रहती है, बाबा चला जाता है तो भूल जाता हूँ। प्वाइन्ट सुनाते हैं तो फील होता है—बेहद का बाप आकर सुनाते हैं। परन्तु मैं खुद ही भूल जाता हूँ। क्या मेरी याद से हो आता है? ऐसे कहें—मैं घड़ी-घड़ी याद करता हूँ। भल आवे इसमें तो सदका कल्याण है। याद ही मुख्य हो जाती है। आये, न आये, बाप को याद जरूर करना है। बाबा ने समझाया है कि गीता जयन्ती के बाद होती है कृष्ण जयन्ती। पहले है शिवजयन्ती फिर गीता जयन्ती फिर कृष्ण जयन्ती। शिव तो बड़ा है। फट से आया और गीता सुनाई। छोटा तो नहीं है। इन बातों पर विचार सागर मंथन करना चाहिए—कैसे हम समझायें? पहले ख्याल करो—शिव किसको कहते हैं, जिसकी रात्रि मनाई जाती है। सतयुग है श्रीकृष्ण की राजधानी। नर से नारायण बनने की नॉलेज तो जरूर फादर ही देंगे, वह नॉलेजफुल है। और किसको नॉलेजफुल नहीं कहा जाता। गॉड इज नॉलेजफुल, रचयिता, बीजरूप है। वही ड्रामा की नॉलेज सुनायेंगे। ड्रामा कब शुरू होता है और फिर कब पूरा होता है, किसको पता ही नहीं है। सतयुग से कलियुग अन्त तक वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है—यह कोई समझा नहीं सकते। सुनावे वह जो त्रिकालदर्शी हो। त्रिकालदर्शी तो कोई है नहीं, सिवाए एक के। वही तुमको त्रिकालदर्शी बनाते हैं।

अच्छा! मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार :-

१- मास्टर नॉलेजफुल और त्रिकालदर्शी बन श्रीकृष्ण और परमात्मा शिव के महान् अन्तर को स्पष्ट कर घोर अन्धियारे से निकालने की सेवा करनी है।

२- बाबा जो एसे (Essay; निबन्ध) देते हैं उस पर विचार सागर मंथन करना है। ख्याल करना है—कैसे किसको समझायें।

वरदान:- अपने मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर देखते हुए सर्व चिंताओं से मुक्त बेफिक्र बादशाह भव

बेफिक्र रहने की बादशाही सब बादशाहियों से श्रेष्ठ है। अगर कोई ताज पहनकर तख्त पर बैठ जाए और फिकर करता रहे तो यह तख्त हुआ या चिंता? भाग्य विधाता भगवान ने आपके मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींच दी, बेफिक्र बादशाह हो गये। तो सदा अपने मस्तक पर श्रेष्ठ भाग्य की लकीर देखते रहो - वाह मेरा श्रेष्ठ ईश्वरीय भाग्य, इसी फ़खुर में रहो तो सब फिकरातें (चिंतायें) समाप्त हो जायेंगी।

स्लोगन:-

एकाग्रता की शक्ति द्वारा रूहों का आवाहन कर रूहानी सेवा करना ही सच्ची सेवा है।

मुरली नं.-(४५)

1-9-99 प्रातः मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम्हारा काम है अपने आपसे बातें कर पावन बनना, दूसरी आत्माओं के चिंतन में अपना टाइम वेस्ट मत करो"

प्रश्न:- कौन-सी बात बुद्धि में आ गई तो पुरानी सब आदतें छूट जायेंगी?

उत्तर:- हम बेहद बाप की सन्तान हैं तो विश्व के मालिक ठहरे, हमें देवता बनना है—यह बात बुद्धि में आ गई तो पुरानी सब आदतें छूट जायेंगी। तुम कहो, न कहो, आपेही छोड़ देंगे। उल्टा-सुल्टा खान-पान, शराब आदि खुद ही छोड़ देंगे। (कहेंगे वाह हमको तो यह लक्ष्मी-नारायण बनना है। 21 जन्मों का राज्य-भाग्य मिलता है तो क्यों नहीं पवित्र रहेंगे।)

ओम् शान्ति। बाप घड़ी-घड़ी बच्चों का अटेन्शन खिंचवाते हैं कि बाप की याद में बैठे हो? बुद्धि कोई और तरफ तो नहीं भागती है? (बाप को बुलाते ही इसलिए हैं कि बाबा आकर हमें पावन बनाओ। पावन तो जरूर बनना है और नॉलेज तो तुम किसको भी समझा सकते हो। यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, किसको भी तुम समझाओ तो झट समझ जायेंगे। भल पवित्र नहीं होगा तो भी नॉलेज तो पढ़ ही लेगा। कोई बड़ी बात नहीं है। 84 का चक्र और हरेक युग की इतनी आयु है, इतने जन्म होते हैं। कितना सहज है। इनका कनेक्शन याद से नहीं है, यह तो है पढ़ाई। बाप तो यथार्थ बात समझाते हैं। बाकी है सतोप्रधान बनने की बात। वह होंगे याद से। अगर याद नहीं करेंगे तो बहुत छोटा पद पा लेंगे। इतना ऊंच पद पा नहीं सकेंगे इसलिए कहा जाता है अटेन्शन। (बुद्धि का योग बाप के साथ हो। इनको ही प्राचीन योग कहा जाता है। टीचर के साथ योग तो हरेक का होगा ही। मूल बात है याद की। याद की यात्रा से ही सतोप्रधान बनना है और सतोप्रधान बन वापस घर जाना है।) बाकी पढ़ाई तो बिल्कुल सहज है। कोई बच्चा भी समझ सकते हैं। (माया की युद्ध इस याद में ही चलती है। तुम बाप को याद करते हो और माया फिर अपनी तरफ खींचकर भुला देती है। ऐसे नहीं कहेंगे कि मेरे में तो शिवबाबा बैठा है, मैं शिव हूँ। नहीं, मैं आत्मा हूँ, शिवबाबा को याद करना है। ऐसे नहीं मेरे अन्दर शिव की प्रवेशता है। ऐसे हो नहीं सकता। बाप कहते हैं मैं कोई में जाता नहीं हूँ। हम इस रथ पर सवार होकर ही तुम बच्चों को समझाते हैं। हाँ, कोई डल बुद्धि बच्चे हैं और कोई अच्छा जिज्ञासु आ जाता है तो उनकी सर्विस अर्थ मैं प्रवेश कर दृष्टि दे सकता हूँ। सदैव नहीं बैठ सकता हूँ। बहु रूप धारण कर किसका भी कल्याण कर सकते हैं। बाकी ऐसे कोई नहीं कह सकते कि मेरे में शिवबाबा की प्रवेशता है, मुझे शिवबाबा यह कहते हैं। नहीं, शिवबाबा तो बच्चों को ही समझाते हैं।) मूल बात है ही पावन बनने की, जो फिर पावन दुनिया में जा सके। 84 का चक्र तो बहुत सहज समझाते हैं। चित्र सामने लगे हुए हैं। बाप बिगर इतना ज्ञान तो कोई दे न सके। आत्मा को ही नॉलेज मिलती है। उनको ही ज्ञान का तीसरा नेत्र कहा जाता है। आत्मा को ही सुख-दुःख होता है, उनको यह शरीर है ना। आत्मा ही देवता बनती है। कोई बैरिस्टर, कोई व्यापारी आत्मा ही बनती है। तो अब आत्माओं से बाप बैठ बात करते हैं, अपनी पहचान देते हैं। तुम जब देवता थे, तो थे मनुष्य, परन्तु पवित्र आत्मायें थी। अभी तुम पवित्र नहीं हो इसलिए तुम्हें देवता नहीं कह सकते। अब देवता बनने

के लिए पवित्र जरूर बनना है। उसके लिए बाबा को याद करना है। अक्सर करके यही कहते हैं—बाबा, मेरे से यह भूल हुई जो हम देह-अभिमान में आ गया। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं पावन जरूर बनना है। कोई विकर्म न करो। तुमको सर्वगुण सम्पन्न यहाँ बनना है। पावन बनने से मुक्तिधाम में चले जायेंगे। और कोई प्रश्न पूछने की बात ही नहीं है। तुम अपने से बात करो, दूसरी आत्माओं का चिंतन नहीं करो। कहते हैं लड़ाई में दो करोड़ मरे। इतनी आत्मायें कहाँ गई? अरे, वह कहाँ भी गये, उसमें तुम्हारा क्या जाता है। तुम क्यों टाइम वेस्ट करते हो? और कोई भी बात पूछने की दरकार नहीं। तुम्हारा काम है पावन बनकर पावन दुनिया का मालिक बनना। और बातों में जाने से मूँझ पड़ेंगे। कोई को पूरा उत्तर नहीं मिलता है तो मूँझ पड़ते हैं।

बाप कहते हैं मनमनाभव। देह सहित देह के सब सम्बन्ध छोड़ो, मेरे पास ही तुमको आना है। मनुष्य मरते है तो जब शमशान में ले जाते हैं उस समय मुंह इस तरफ और पांव शमशान तरफ रखते हैं फिर जब शमशान के पास पहुँचते है तो पांव इस तरफ और मुँह शमशांन की तरफ कर देते हैं। तुम्हारा भी घर ऊपर में है ना। ऊपर में कोई पतित जा नहीं सकते। पावन बनने के लिए बुद्धि का योग बाप के साथ लगाना है। बाप के पास मुक्तिधाम में जाना है। पतित है इसलिए ही बुलाते हैं कि हम पतितों को आकर पावन बनाओ, लिबरेट करो। तो बाप कहते हैं अब पवित्र बनो। बाप जिस भाषा में समझाते हैं, उसमें ही कल्प-कल्प समझायेंगे। जो भाषा इनकी होगी, उसमें ही समझायेंगे ना। आजकल हिन्दी बहुत चलती है, ऐसे नहीं कि भाषा बदल सकती है। नहीं, संस्कृत भाषा आदि कोई देवताओं की तो है नहीं। हिन्दू धर्म की संस्कृत नहीं है। हिन्दी ही होनी चाहिए। फिर संस्कृत क्यों उठाते हैं? तो बाप समझाते हैं यहाँ जब बैठते हो तो बाप की याद में ही बैठना है, और कोई बातों में तुम जाओ ही नहीं। इतने मच्छर निकलते हैं, कहाँ जाते हैं? अर्थक्वेक में ढेर के ढेर फट से मरते हैं, आत्मायें कहाँ जाती हैं? इसमें तुम्हारा क्या जाता है। तुमको बाप ने श्रीमत दी है कि अपनी उन्नति के लिए पुरूषार्थ करो। औरों के चिंतन में मत जाओ। ऐसे तो अनेक बातों का चिंतन हो जायेगा। बस, तुम मुझे याद करो, जिसके लिए बुलाया है उस युक्ति में चलो। तुम्हें बाप से वर्सा लेना है, और बातों में नहीं जाना है। इसलिए बाबा घड़ी-घड़ी कहते हैं अटेन्शन! कहाँ बुद्धि तो नहीं जाती। भगवान की श्रीमत तो माननी चाहिए ना। और कोई बात में फायदा नहीं। मुख्य बात है पावन बनने की। यह पक्का याद रखो—हमारा बाबा, बाबा भी है, टीचर भी है, प्रीसेप्टर भी है। यह जरूर दिल में याद रखना है—बाप, बाप भी है, हमको पढ़ाते हैं, योग सिखलाते हैं। टीचर पढाते हैं तो बुद्धि का योग टीचर में और पढ़ाई में भी जाता है। यही बाप भी कहते हैं तुम बाप के तो बन ही गये हो। बच्चे तो हो ही, तब तो यहाँ बैठे हो। टीचर से पढ़ रहे हो। कहाँ भी रहते बाप के तो हो ही फिर पढ़ाई में अटेन्शन देना है। शिवबाबा को याद करेंगे तो विकर्म विनाश होंगे और तुम सतोप्रधान बन जायेंगे। यह नालेज और कोई दे न सके। मनुष्य तो घोर अन्धियारे में हैं ना। ज्ञान में देखो—कितनी ताकत है। ताकत कहाँ से मिलती है? बाप से ताकत मिलती है जिससे तुम पावन बनते हो। फिर पढ़ाई भी सिम्पुल है। उस पढ़ाई में तो बहुत मास लगते हैं। यहाँ तो 7 रोज़ का कोर्स है। उससे तुम सब कुछ समझ

जायेंगे फिर उसमें है बुद्धि पर मदार। कोई जास्ती टाइम लगाते हैं, कोई कम। कोई तो 2-3 दिन में ही अच्छी रीति समझ जाते हैं। मूल बात है बाप को याद करना, पवित्र बनना। वही मुश्किलात होती है। बाकी पढ़ाई तो मोस्ट सिम्पुल है। स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। एक रोज़ के कोर्स में भी सब कुछ समझ सकते हो। हम आत्मा हैं, बेहद के बाप की सन्तान हैं तो जरूर हम विश्व के मालिक ठहरें। यह बुद्धि में आता है ना। देवता बनना है तो दैवीगुण भी धारण करने हैं। जिसको बुद्धि में आ गया वह फट से सब आदतें छोड़ देंगे। तुम कहो, न कहो, आपेही छोड़ देंगे। उल्टा-सुल्टा खान-पान, शराब आदि खुद ही छोड़ देंगे। कहते हैं—वाह, हमको यह बनना है, 21 जन्मों के लिए राज्य मिलता है तो क्यों नहीं पवित्र रहेंगे। चटक जाना चाहिए। मुख्य बात है याद की यात्रा। बाकी 84 के चक्र की नालेज तो एक सेकेण्ड में मिल जाती है। देखने से ही समझ जाते हैं। नया झाड़ जरूर छोटा होगा। अभी तो कितना बड़ा झाड़ तमोप्रधान बन गया है। कल फिर नया छोटा बन जायेगा। तुम जानते हो—यह ज्ञान कभी कहाँ से भी मिल नहीं सकता। यह पढ़ाई है, पहली मुख्य शिक्षा भी मिलती है कि बाप को याद करो। बाप पढ़ाते हैं, यह निश्चय करो। भगवानुवाच—मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ। और कोई मनुष्य ऐसे कह न सके। टीचर पढ़ाते हैं तो जरूर टीचर को याद करेंगे ना। बेहद का बाप भी है, बाप हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। परन्तु आत्मा कैसे पवित्र बनेगी—यह कोई भी बता नहीं सकते हैं। भल अपने को भगवान कहें वा कुछ भी कहें परन्तु पावन बना नहीं सकते। आजकल भगवान तो बहुत हो गये हैं। मनुष्य मूँझ पड़े हैं। कहते हैं अनेक धर्म निकलते हैं, क्या पता कौन-सा राइट है। भल तुम्हारी प्रदर्शनी वा म्यूजियम आदि का उद्घाटन करते हैं परन्तु समझते कुछ भी नहीं। वास्तव में उद्घाटन तो हो ही गया है। पहले फाउन्डेशन पडता है, फिर जब मकान बनकर तैयार होता है तब उद्घाटन होता है। फाउन्डेशन लगाने के लिए भी बुलाया जाता है। तो यह भी बाप ने स्थापना कर दी है, बाकी नई दुनिया का उद्घाटन तो हो ही जाना है, उसमें किसके उद्घाटन करने की दरकार नहीं रहती। उद्घाटन तो स्वत: ही हो जायेगा। यहाँ पढ़कर फिर हम नई दुनिया में चले जायेंगे।

तुम समझते हो अभी हम स्थापना कर रहे हैं जिसके लिए ही मेहनत करनी होती है। विनाश होगा फिर यह दुनिया ही बदल जायेगी। फिर तुम नई दुनिया में राज्य करने आ जायेंगे। सतयुग की स्थापना बाप ने की है फिर तुम आयेंगे तो स्वर्ग की राजधानी मिल जायेगी। बाकी ओपनिंग सेरीमनी कौन करेगा? बाप तो स्वर्ग में आते नहीं। आगे चल देखना है स्वर्ग में क्या होता है। पिछाड़ी में क्या होता है। आगे चल समझेंगे। तुम बच्चे जानते हो पवित्रता बिगर विद् आनर तो हम स्वर्ग में जा नहीं सकते। इतना पद भी नहीं पा सकते हैं। इसलिए बाप कहते हैं खूब पुरूषार्थ करो। धन्धा आदि भी भल करो परन्तु जास्ती पैसा क्या करेंगे। खा तो सकेंगे नहीं। तुम्हारे पुत्र-पोत्रे आदि भी नहीं खायेंगे। सब मिट्टी में मिल जायेगा। इसलिए थोड़ा स्टॉक रखो युक्ति से। बाकी तो सब वहाँ ट्रांसफर कर दो। सब तो ट्रांसफर नहीं कर सकते हैं। गरीब जल्दी ट्रांसफर कर देते हैं। भक्ति मार्ग में भी ट्रांसफर करते हैं दूसरे जन्म के लिए। परन्तु वह है इनडायरेक्ट। यह है डायरेक्ट। पतित मनुष्यों की पतितों से ही लेन-देन

है। अभी तो बाप आये हैं, तुम्हारी तो पतितों से लेन-देन है नहीं। तुम हो ब्राह्मण, ब्राह्मणों को ही तुम्हें मदद करनी है। जो खुद सर्विस करते हैं, उनको तो मदद की दरकार नहीं। यहाँ गरीब साहूकार आदि सब आते हैं। बाकी करोड़पति तो मुश्किल आयेंगे। बाप कहते हैं मैं हूँ गरीब निवाज़। भारत बहुत गरीब खण्ड है। बाप कहते हैं मैं आता भी भारत में हूँ, उसमें से भी यह आबू सबसे बड़ा तीर्थ है जहाँ बाप आकर सारे विश्व की सद्गति करते हैं। यह है नर्क। तुम जानते हो नर्क से फिर स्वर्ग कैसे होता है। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारी नालेज है। बाप युक्ति ऐसी बताते हैं पावन बनने की, जो सबका कल्याण कर देते हैं। सतयुग में कोई अकल्याण की बात, रोना, पीटना आदि कुछ भी नहीं होता। अभी जो बाप की महिमा है—ज्ञान का सागर, सुख का सागर है। अभी तुम्हारी भी यह महिमा है, जो बाप की है। तुम भी आनन्द के सागर बनते हो, बहुतों को सुख देते हो फिर जब तुम्हारी आत्मा संस्कार ले नई दुनिया में जायेगी तो वहाँ फिर तुम्हारी महिमा बदल जायेगी। फिर तुमको कहेंगे सर्वगुण सम्पन्न.... अभी तुम हेल में बैठे हो, इनको कहा जाता है कांटों का जंगल। बाप को ही बागवान, खिवैया कहा जाता है। गाते भी हैं हमारी नईया पार करो क्योंकि दु:खी हैं तो आत्मा पुकारती है। महिमा भल गाते हैं परन्तु समझते कुछ भी नहीं। जो आया सो कह देते हैं। ऊंच ते ऊंच भगवान की निंदा करते रहते हैं। तुम कहेंगे हम तो आस्तिक हैं। सर्व का सद्गति दाता जो बाप है, उनको हम जान गये हैं। बाप ने खुद परिचय दिया है। तुम भक्ति नहीं करते हो तो कितना तंग करते हैं। वह है मैजारिटी, तुम्हारी है मैनारिटी। जब तुम्हारी मैजारिटी हो जायेगी, तब उन्हों को भी कशिश होगी। बुद्धि का ताला खुल जायेगा। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. अपनी उन्नति का ही चिंतन करना है। दूसरी किसी भी बात में नहीं जाना है। पढ़ाई और याद पर पूरा अटेन्शन देना है। बुद्धि भटकानी नहीं है।

२. अब बाप डायरेक्ट आये हैं इसलिए अपना सब-कुछ युक्ति से ट्रांसफर कर देना है। पतित आत्माओं से लेन-देन नहीं करना है। विद् ऑनर स्वर्ग में चलने के लिए पवित्र जरूर बनना है।

वरदान:- एक बाप को कम्पैनियन बनाने वा उसी कम्पन्नी में रहने वाले सम्पूर्ण पवित्र आत्मा भव

सम्पूर्ण पवित्र आत्मा वह है जिसके संकल्प और स्वप्न में भी ब्रह्मचर्य की धारणा हो, जो हर कदम में ब्रह्मा बाप के आचरण पर चलने वाला हो। पवित्रता का अर्थ है - सदा बाप को कम्पैनियन बनाना और बाप की कम्पन्नी में ही रहना। संगठन की कम्पन्नी, परिवार के स्नेह की मर्यादा अलग चीज है, लेकिन बाप के कारण ही यह संगठन के स्नेह की कम्पन्नी है, बाप नहीं होता तो परिवार कहाँ से आता। बाप बीज है, बीज को कभी नहीं भूलना।

स्लोगन:-

किसी के प्रभाव में प्रभावित होने वाले नहीं, ज्ञान का प्रभाव डालने वाले बनो।

SiLL (ब्र.बा. साक्षात्कार + पंधरामकी नहीं.

(४६)

19-1-01 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – अपने स्वीट बाप को याद करो तो तुम सतोप्रधान देवता बन जायेंगे, सारा मदार याद की यात्रा पर है"

प्रश्न:- जैसे बाप की कशिश बच्चों को होती है वैसे किन बच्चों की कशिश सबको होगी?
उत्तर:- जो फूल बने हैं। जैसे छोटे बच्चे फूल होते हैं, उन्हें विकारों का पता भी नहीं तो वह सबको कशिश करते हैं ना। ऐसे तुम बच्चे भी जब फूल अर्थात् पवित्र बन जायेंगे तो सबको कशिश होगी। तुम्हारे में विकारों का कोई भी कांटा नहीं होना चाहिए।

ओम् शान्ति। रूहानी बच्चे जानते हैं कि यह पुरूषोत्तम संगमयुग है। अपना भविष्य का पुरूषोत्तम मुख देखते हो? पुरूषोत्तम चोला देखते हो? फील करते हो कि हम फिर नई दुनिया सतयुग में इनकी (लक्ष्मी-नारायण की) वंशावली में जायेंगे अर्थात् सुखधाम में जायेंगे अथवा पुरूषोत्तम बनेंगे। बैठे-बैठे यह विचार आते हैं! स्टूडेन्ट जो पढ़ते हैं तो जो दर्जा पढ़ते हैं, वह जरूर बुद्धि में होगा ना—मैं बैरिस्टर या फलाना बनूँगा। वैसे तुम भी जब यहाँ बैठते हो तो यह जानते हो हम विष्णु डिनायस्टी में जायेंगे। विष्णु के दो रूप हैं—लक्ष्मी-नारायण, देवी-देवता। तुम्हारी बुद्धि अभी अलौकिक है। और कोई मनुष्य की बुद्धि में यह बातें रमण नहीं करती होंगी। तुम बच्चों की बुद्धि में यह सब बातें हैं। यह कोई कॉमन सतसंग नहीं है। यहाँ बैठे हो समझते हो सत बाबा जिसको शिव कहा जाता है, उनके संग में बैठे हैं। शिवबाबा ही रचता है, वही रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं और वह नॉलेज देते हैं। जैसेकि कल की बात सुनाते हैं। यहाँ बैठे हो तो यह तो याद होगा ना कि हम आये हैं—रिज्युवनेट होने अर्थात् यह शरीर बदल देवता शरीर लेने। आत्मा कहती है हमारा यह तमोप्रधान पुराना शरीर है उनको बदलकर ऐसा लक्ष्मी-नारायण बनने का है। एम ऑब्जेक्ट कितनी श्रेष्ठ है। पढ़ाने वाला टीचर जरूर पढ़ने वाले स्टूडेन्ट से होशियार होगा ना। पढ़ाते हैं, अच्छे कर्म सिखलाते हैं तो जरूर ऊंच होगा ना। तुम जानते हो हमको सबसे ऊंच ते ऊंच भगवान पढ़ाते हैं। भविष्य में हम सो देवता बनेंगे। हम जो पढ़ते हैं सो भविष्य नई दुनिया के लिए। और कोई को नई दुनिया का पता भी नहीं है। तुम्हारी बुद्धि में अब आता है यह लक्ष्मी-नारायण नई दुनिया के मालिक थे। तो जरूर फिर रिपीट होगा। तो बाप समझाते हैं तुमको पढ़ाकर मनुष्य से देवता बनाता हूँ। देवताओं में भी जरूर नम्बरवार होंगे। दैवी राजधानी होती है ना। तुम्हारा सारा दिन यही ख्यालात चलता होगा कि हम आत्मा हैं। हमारी आत्मा जो बहुत पतित थी, सो अब पावन बनने के लिए पावन बाप को याद करती है। याद का अर्थ भी समझना है। आत्मा याद करती है अपने स्वीट बाप को। बाप खुद कहते हैं—बच्चे, मुझे याद करने से तुम सतोप्रधान देवता बन जायेंगे। सारा मदार याद की यात्रा पर है। बाप जरूर पूछेंगे ना—बच्चे कितना समय याद करते हो? याद करने में ही माया की लड़ाई होती है। तुम खुद समझते हो यह यात्रा नहीं परन्तु जैसेकि लड़ाई है, इसमें विघ्न बहुत पड़ते हैं। याद की यात्रा में रहने में ही माया विघ्न डालती है अर्थात् याद भुला देती है। कहते भी हैं बाबा हमको आपकी याद में रहने में माया के तूफान बहुत लगते हैं। नम्बरवन तूफान है देह-अभिमान का। फिर है काम, क्रोध, लोभ, मोह.....। बच्चे कहते हैं बाबा हम बहुत कोशिश करते

हैं याद में रहने में कोई विघ्न न आये परन्तु फिर भी तूफान लगते हैं। आज क्रोध का तूफान, आज लोभ का तूफान आया। आज हमारी अवस्था अच्छी रही, कोई भी तूफान नहीं आया। याद की यात्रा में सारा दिन रहे, बड़ी खुशी थी। बाबा को बहुत याद किया। याद में प्रेम के आंसू बहते रहते हैं। बाप की याद में रहने से तुम मीठे बन जायेंगे।

तुम बच्चे यह भी समझते हो कि हम माया से हार खाते-खाते कहाँ तक आकर पहुँचे हैं। बच्चे हिसाब निकालते हैं। कल्प में कितने मास, कितने दिन.. हैं। बुद्धि में आता है ना। अगर कोई कहे लाखों वर्ष आयु है तो फिर कोई हिसाब थोड़ेही कर सके। बाप समझाते हैं—यह सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। इस सारे चक्र में हम कितने जन्म लेते हैं। कैसे डिनायस्टी में जाते हैं। यह तो जानते हो ना। यह बिल्कुल नई बातें, नई नॉलेज है नई दुनिया के लिए। नई दुनिया स्वर्ग को कहा जाता है। तुम कहेंगे हम अभी मनुष्य हैं, देवता बन रहे हैं। देवता पद है ऊंच। तुम बच्चे जानते हो हम सबसे न्यारी नॉलेज ले रहे हैं। हमको पढ़ाने वाला बिल्कुल न्यारा विचित्र है। उनको यह साकार चित्र नहीं है। वह है ही निराकार। तो ड्रामा में देखो कैसा अच्छा पार्ट रखा हुआ है। बाप पढ़ाये कैसे? तो खुद बतलाते हैं—मैं फलाने तन में आता हूँ। किस तन में आता हूँ, वह भी बताते हैं। मनुष्य मूँझते हैं—क्या एक ही तन में आयेगा! परन्तु यह तो ड्रामा है ना। इसमें चेंज हो नहीं सकती। यह बातें तुम ही सुनते हो और धारण करते हो और सुनाते हो—कैसे हमको शिवबाबा पढ़ाते हैं? हम फिर और आत्माओं को पढ़ाते हैं। पढ़ती आत्मा है। आत्मा ही सीखती, सिखलाती है। आत्मा मोस्ट वैल्युबुल है। आत्मा अविनाशी, अमर है। सिर्फ शरीर खत्म होता है। हम आत्मायें अपने परमपिता परमात्मा से नॉलेज ले रही हैं। रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त, 84 जन्मों की नॉलेज ले रहे हैं। नॉलेज कौन लेते हैं? आत्मा। आत्मा अविनाशी है। मोह भी रखना चाहिए अविनाशी चीज में, न कि विनाशी चीज़ में। इतना समय तुम विनाशी शरीर में मोह रखते आये हो। अभी समझते हो—हम आत्मा हैं, शरीर का भान छोड़ना है। कोई-कोई बच्चे लिखते भी हैं मुझ आत्मा ने यह काम किया। मुझ आत्मा ने आज यह भाषण किया। मुझ आत्मा ने आज बहुत बाबा को याद किया। वह है सुप्रीम आत्मा, नॉलेजफुल। तुम बच्चों को कितनी नॉलेज देते हैं। मूलवतन, सूक्ष्मवतन को तुम जानते हो। मनुष्यों की बुद्धि में तो कुछ भी नहीं है। तुम्हारी बुद्धि में है रचता कौन है? इस मनुष्य सृष्टि का क्रियेटर गाया जाता है. तो जरूर कर्तव्य में आते हैं।

तुम जानते हो और कोई मनुष्य नहीं जिसको आत्मा और परमात्मा बाप याद हो। बाप ही नॉलेज देते हैं कि अपने को आत्मा समझो। तुम अपने को शरीर समझ उल्टे लटक पड़े हो। आत्मा सत् चित आनन्द स्वरूप है। आत्मा की सबसे जास्ती महिमा है। एक बाप के आत्मा की कितनी महिमा है। वही दुःख हर्ता सुख कर्ता है। मच्छर आदि की तो महिमा नहीं करेंगे कि वह दुःख हर्ता सुख कर्ता है, ज्ञान का सागर है। नहीं, यह बाप की महिमा है। तुम भी हर एक खुद दुःख हर्ता सुख कर्ता हो क्योंकि उस बाप के बच्चे हो ना, जो सबका दुःख हरकर और सुख देते हैं। सो भी आधाकल्प के लिए। यह नॉलेज और कोई में है नहीं। नॉलेजफुल एक ही बाप है। हमारे में नो नॉलेज। एक बाप को ही नहीं जानते हैं तो बाकी फिर क्या नॉलेज होगी। अभी तुम फील करते हो

हम पहले नॉलेज लेते थे, कुछ भी नहीं जानते थे। बेबी में (छोटे बच्चे में) नॉलेज नहीं होती है और कोई अवगुण भी नहीं होता है, इसलिए उनको महात्मा कहा जाता है क्योंकि पवित्र है। जितना छोटा बच्चा उतना नम्बरवन फूल। बिल्कुल ही जैसे कर्मातीत अवस्था है। कर्म विकर्म को कुछ नहीं जानते। सिर्फ अपने को ही जानते हैं। वह फूल हैं इसलिए सबको कशिश करते हैं। जैसे अब बाबा कशिश करते हैं। (बाप आये ही हैं तुम सबको फूल बनाने। तुम्हारे में कई बहुत खराब कांटे भी हैं। 5 विकार रूपी कांटे हैं ना। इस समय तुमको फूलों और कांटों का ज्ञान है। कांटों का जंगल भी होता है। बबूल का कांटा सबसे बड़ा होता है। उन कांटों से भी बहुत चीजें बनती हैं। भेंट की जाती है मनुष्यों की। बाप समझाते हैं, इस समय बहुत दुःख देने वाले मनुष्य कांटे हैं इसलिए इनको दुःख की दुनिया कहा जाता है। कहते भी हैं बाप सुखदाता है। माया रावण दुःख दाता है। फिर सतयुग में माया नहीं होगी तो यह कुछ भी बातें नहीं होंगी। ड्रामा में एक पार्ट दो वारी नहीं हो सकता। बुद्धि में है सारी दुनिया में जो पार्ट बजता है, वह सब नया। तुम विचार करो—सतयुग से लेकर यहाँ तक के दिन ही बदल जाते, एक्टिविटी बदल जाती। 5 हज़ार वर्ष की पूरी एक्टिविटी का रिकार्ड आत्मा में भरा हुआ है, वह बदल नहीं सकता। हर आत्मा में अपना पार्ट भरा हुआ है। यह एक बात भी कोई समझ नहीं सकते। अभी आदि-मध्य-अन्त को तुम जानते हो। यह स्कूल है ना। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानना है और फिर बाप को याद कर पवित्र बनने की पढ़ाई है। इनके पहले जानते थे क्या—हमको यह बनना है। बाप कितना क्लीयर कर समझाते हैं। तुम पहले नम्बर में यह थे फिर तुम नीचे उतरते-उतरते अब क्या बन गये हो। दुनिया को तो देखो क्या बन गई है! कितने ढेर मनुष्य हैं। इन लक्ष्मी-नारायण की राजधानी का विचार करो - क्या होगा! यह जहाँ रहते होंगे कैसे हीरे-जवाहरातों के महल होंगे। बुद्धि में आता है—अभी हम स्वर्गवासी बन रहे हैं। वहाँ हम अपने मकान आदि बनायेंगे। ऐसे नहीं कि नीचे से द्वारिका निकल आयेगी। जैसे शास्त्रों में दिखाया है। शास्त्र नाम ही चला आता है, और तो कोई नाम रख नहीं सकते। और किताब होते हैं पढ़ाई के। दूसरे मनुष्य ऐसे हैं बोलेंगे इनको पुस्तक अथवा शास्त्र कहते हैं। वह है पढ़ाई के किताब। शास्त्र पढ़ने वालों को भक्त कहा जाता है। भक्ति और ज्ञान दो चीजें हैं। अब वैराग्य किसका? भक्ति का या ज्ञान का? जरूर कहेंगे भक्ति का। अब तुमको ज्ञान मिल रहा है, जिससे तुम इतना ऊंच बनते हो। अब बाप तुमको सुखदाई बनाते हैं। सुखधाम को ही स्वर्ग कहा जाता है। सुखधाम में तुम चलने वाले हो तो तुमको ही पढ़ाते हैं। यह ज्ञान भी तुम्हारी आत्मा लेती है। आत्मा का कोई धर्म नहीं है। वह तो आत्मा है। फिर आत्मा जब शरीर में आती है तो शरीर के धर्म अलग होते हैं। आत्मा का धर्म क्या है? एक तो आत्मा बिन्दु मिसल है और शान्त स्वरूप है। शान्तिधाम, मुक्तिधाम में रहती है। (अब बाप समझाते हैं—सब बच्चों का हक है। बहुत बच्चे हैं जो और और धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं। वह फिर निकलकर अपने असली धर्म में आ जायेंगे। जो देवी-देवता धर्म छोड़ दूसरे धर्म में गये हैं, वह सब पत्ते लौटकर आ जायेंगे, अपनी जगह पर। जो हिन्दू से मुसलमान बनते हैं उनको शेख कहते हैं। जैसे शेख मुहम्मद।) इन सब बातों को और कोई समझ नहीं सकेंगे। पहले पहले तो बाप का परिचय देना है। इनमें ही सब मूझ पड़े हैं। तुम बच्चे जानते हो

अभी हमको कौन पढ़ाते हैं? बाप पढ़ाते हैं। कृष्ण तो देहधारी है। इनको (ब्रह्मा को) दादा कहेंगे। सब भाई-भाई हैं ना। फिर है मर्तबे के ऊपर। यह भाई का शरीर है, यह बहन का शरीर है। यह भी अब तुम जानते हो। आत्मा तो एक छोटा सा सितारा है। इतनी सब नॉलेज छोटे सितारे में है। सितारा शरीर के सिवाए बात भी नहीं कर सकता। सितारे को पार्ट बजाने के लिए अंग भी चाहिए। सितारों की दुनिया ही अलग है। फिर यहाँ आकर आत्मा शरीर धारण करती है। वह है आत्माओं का घर। आत्मा छोटी बिन्दी है। शरीर बड़ी चीज है। तो उनको कितना याद करते हैं! अभी तुमको याद करना है—एक परमपिता परमात्मा को। यही सत्य है जबकि आत्माओं और परमात्मा का मेला होता है। गायन भी है आत्मायें परमात्मा अलग रहे बहुकाल.. हम बाबा से अलग हुए हैं ना। याद आता है कितना समय अलग हुए हैं! बाप जो कल्प-कल्प सुनाते आये हैं, वही आकर सुनाते हैं। इसमें ज़रा भी फर्क नहीं हो सकता। सेकण्ड बाई सेकण्ड जो एक्ट चलती है वह नई। एक सेकण्ड पास होता है, मिनट पास होता है, उनको जैसे छोड़ते जाते हैं। पास होता जाता है ताकि कहेंगे—इतने वर्ष, इतने दिन, मिनट, इतने सेकण्ड पास कर आये हैं। पूरा 5 हज़ार वर्ष होगा फिर एक नम्बर से शुरू होगा। एक्यूरेट हिसाब है ना। मिनट सेकण्ड सब नोट करते हैं। अभी तुमसे कोई पूछे—इसने कब जन्म लिया था? तुम गिनती कर बताते हो। कृष्ण ने पहले नम्बर में जन्म लिया है। शिव का तो मिनट, सेकण्ड कुछ भी नहीं निकाल सकते हो। कृष्ण की तिथि-तारीख पूरा लिखा हुआ है। मनुष्यों की घड़ी में फर्क पड़ सकता है—मिनट सेकण्ड का। शिवबाबा के अवतरण में तो बिल्कुल फर्क नहीं पड़ सकता। पता भी नहीं पड़ता है कि कब आया! ऐसे भी नहीं साक्षात्कार हुआ तब आया। नहीं, अन्दाज़ से कह देते हैं। बाकी ऐसे नहीं उस समय प्रवेश हुआ। साक्षात्कार हुआ कि हम फलाना बनेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. सुखधाम में चलने के लिए सुखदाई बनना है। सबके दुःख हरकर सुख देना है। कभी भी दुःखदाई कांटा नहीं बनना है।

२. इस विनाशी शरीर में आत्मा ही मोस्ट वैल्युबुल है, वही अमर अविनाशी है। इसलिए अविनाशी चीज से प्यार रखना है। देह का भान मिटा देना है।

वरदान:- ड्रामा की ढाल को सामने रख खुशी की खुराक खाने वाले सदा शक्तिशाली भव

खुशी रूपी भोजन आत्मा को शक्तिशाली बना देता है, कहते भी हैं - खुशी जैसी खुराक नहीं। इसके लिए ड्रामा की ढाल को अच्छी तरह से कार्य में लगाओ। यदि सदा ड्रामा की स्मृति रहे तो कभी भी मुरझा नहीं सकते, खुशी गायब हो नहीं सकती क्योंकि यह ड्रामा कल्याणकारी है इसलिए अकल्याणकारी दृश्य में भी कल्याण समाया हुआ है, ऐसा समझ सदा खुश रहेंगे।

स्लोगन:-

परचिंतन और प्रदर्शन की धूल से दूर रहने वाले ही सच्चे अमूल्य हीरे हैं।

★6-2-01 प्रातः मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - (यहाँ तुम्हारा सब कुछ गुप्त है, इसलिए तुम्हें कोई भी ठाठ नहीं करना है, अपनी नई राजधानी के नशे में रहना है") (a)

प्रश्नः- श्रेष्ठ धर्म और दैवी कर्म की स्थापना के लिए तुम बच्चे कौन सी मेहनत करते हो?

उत्तरः- तुम अभी 5 विकारों को छोड़ने की मेहनत करते हो, क्योंकि इन विकारों ने ही सबको भ्रष्ट बनाया है। तुम जानते हो इस समय सभी दैवी धर्म और कर्म से भ्रष्ट हैं। बाप ही श्रीमत देकर श्रेष्ठ धर्म और श्रेष्ठ दैवी कर्म की स्थापना करते हैं। तुम श्रीमत पर चल बाप की याद से विकारों पर विजय पाते हो। पढ़ाई से अपने आपको राजतिलक देते हो।

गीतः- तुम्हें पाके.....

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों ने यह गीत सुना। (रूहानी बच्चे ही कहते हैं कि बाबा। बच्चे जानते हैं यह बेहद का बाप, बेहद का सुख देने वाला है अर्थात् वह सभी का बाप है। उनको सब बेहद के बच्चे, आत्मायें याद करते रहते हैं। किस न किस प्रकार से याद करते हैं परन्तु उनको यह पता नहीं है कि हमको कोई उस परमपिता परमात्मा से विश्व की बादशाही मिलती है।) तुम जानते हो हमको बाप जो सतयुगी विश्व की बादशाही देते हैं, वह अटल अखण्ड, अडोल है, वह हमारी बादशाही 21 जन्म कायम रहती है। सारे विश्व पर हमारी राजाई रहती है जिसको कोई छीन नहीं सकता। लूट नहीं सकता। हमारी राजाई है अडोल क्योंकि वहाँ एक ही धर्म है, द्वैत है नहीं। वह है अद्वैत राज्य। बच्चे जब भी गीत सुनते हैं तो अपनी राजधानी का नशा आना चाहिए। ऐसे-ऐसे गीत घर में रहने चाहिए। (तुम्हारा सब कुछ है गुप्त और बड़े-बड़े आदमियों का बहुत ठाठ होता है। तुमको कोई ठाठ नहीं है। तुम देखते हो बाबा ने जिसमें प्रवेश किया है वह भी कितना साधारण रहते हैं।) यह भी बच्चे जानते हैं यहाँ हर एक मनुष्य अनराइटियस छी-छी काम ही करते हैं, इसलिए बेसमझ कहा जाता है। बुद्धि को बिल्कुल ही ताला लगा हुआ है। तुम कितने समझदार थे। विश्व के मालिक थे। अभी माया ने इतना बेसमझ बना दिया है जो कोई काम के नहीं रहे हैं। बाप के पास जाने के लिए यज्ञ-तप आदि बहुत करते रहते हैं परन्तु मिलता कुछ भी नहीं है। ऐसे ही धक्के खाते रहते हैं। दिन-प्रतिदिन अकल्याण ही होता जाता है। जितना-जितना मनुष्य तमोप्रधान हो जाते हैं, उतना-उतना अकल्याण होना ही है। (ऋषि-मुनि जिनका गायन है वह पवित्र रहते थे। नेती-नेती कहते थे। अभी तमोप्रधान बन गये हैं तो कहते हैं शिवोहम् ततत्वम्, सर्वव्यापी है, तेरे-मेरे में सबमें है। वो लोग सिर्फ परमात्मा कह देते हैं। परमपिता कभी नहीं कहेंगे। परमपिता, अगर फिर सर्वव्यापी कहना यह तो रांग हो जाता है इसलिए फिर ईश्वर वा परमात्मा कह देते। पिता अक्षर बुद्धि में नहीं आता है।) करके कोई कहते भी हैं तो भी कहने मात्र। अगर परमपिता समझे तो बुद्धि एकदम चमक उठे। बाप स्वर्ग का वर्सा देते हैं, वह है

ही हेविनली गॉड फादर। फिर हम नर्क में क्यों पड़े हैं। अब हम मुक्ति-जीवनमुक्ति कैसे पा सकते हैं। यह किसकी भी बुद्धि में नहीं आता है। आत्मा पतित बन पड़ी है। आत्मा पहले सतोप्रधान, समझदार होती है फिर सतो रजो तमो में आती है, बेसमझ बन पड़ती है। अभी तुमको समझ आई है। बाबा ने हमको यह स्मृति दिलाई है। जब नई दुनिया भारत था तो हमारा राज्य था। एक ही मत, एक ही भाषा, एक ही धर्म, एक ही महाराजा-महारानी का राज्य था, फिर द्वापर में वाम मार्ग शुरू होता है फिर हर एक के कर्मों एर मदार हो जाता है। कर्मों अनुसार एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। अभी बाप कहते हैं मैं तुमको ऐसे कर्म सिखाता हूँ जो 21 जन्म तुम बादशाही पाते हो। भले वहाँ भी हद का बाप तो मिलता है परन्तु वहाँ यह ज्ञान नहीं रहता कि यह राजाई का वर्सा बेहद के बाप का दिया हुआ है। फिर द्वापर से सर्वण सज्य शुरू होता है, विकारी संबंध हो जाता है। फिर कर्मों अनुसार जन्म मिलता है। भारत में पूज्य राजायें भी थे तो पुजारी राजायें भी हैं। सतयुग-त्रेता में सब पूज्य होते हैं। वहाँ पूजा वा भक्ति कोई होती नहीं फिर द्वापर में जब भक्ति मार्ग शुरू होता है तो यथा राजा-रानी तथा प्रजा पुजारी, भगत बन जाती है। बड़े से बड़ा राजा जो सूर्यवंशी पूज्य था, वही पुजारी बन जाते।

अभी तुम जो वाइसलेस बनते हो, उसकी प्रालब्ध 21 जन्म लिए है। फिर भक्तिमार्ग शुरू होता है। देवताओं के मन्दिर बनाकर पूजा करते रहते हैं। यह सिर्फ भारत में ही होता है। 84 जन्मों की कहानी जो बाप सुनाते हैं, यह भी भारतवासियों के लिए है। और धर्म वाले तो आते ही बाद में हैं। फिर तो वृद्धि होते-होते ढेर के ढेर हो जाते हैं। वैरायटी भिन्न-भिन्न धर्म वालों के फीचर्स, हर एक बात में भिन्न-भिन्न हो जाते हैं। रस्म-रिवाज़ भी भिन्न-भिन्न होती है। भक्ति मार्ग के लिए सामग्री भी चाहिए। जैसे बीज छोटा होता है, झाड़ कितना बड़ा है। झाड़ के पत्ते आदि गिनती नहीं कर सकते। वैसे भक्ति का भी विस्तार हो जाता है। ढ़ेर के ढेर शास्त्र बनाते जाते हैं। अब बाप बच्चों को कहते हैं – यह भक्ति मार्ग की सामग्री सब खत्म हो जाती है। अब मुझ बाप को याद करो। भक्ति का प्रभाव भी बहुत है ना। कितनी खूबसूरत है, नाच, तमाशा, गायन आदि कितना खर्चा करते हैं। अभी बाप कहते हैं मुझ बाप को और वर्से को याद करो। आदि सनातन अपने धर्म को याद करो। अनेक प्रकार की भक्ति जन्म-जन्मान्तर तुम करते आये हो। सन्यासी भी आत्माओं के रहने के स्थान, तत्व को परमात्मा समझ लेते हैं। ब्रह्म वा तत्व को ही याद करते हैं। वास्तव में सन्यासी जब सतोप्रधान हैं तो उन्हों को जंगल में जाकर रहना है शान्ति में। ऐसे नहीं कि उन्हों को ब्रह्म मे जाकर लीन होना है। वह समझते हैं ब्रह्म की याद में रहने से, शरीर छोड़ने से ब्रह्म में लीन हो जायेंगे। बाप कहते हैं—लीन कोई हो नहीं सकते। आत्मा तो अविनाशी है ना, वह लीन कैसे हो सकती। भक्ति मार्ग में कितना माथा कूट करते हैं, फिर कहते हैं भगवान कोई न कोई रूप में आयेंगे। अब कौन राइट? वह कहते हम ब्रह्म से योग लगाए ब्रह्म में लीन हो जायेंगे। गृहस्थ धर्म वाले कहते भगवान किसी न किसी रूप में पतितों को पावन बनाने आयेंगे। ऐसे नहीं कि ऊपर से प्रेरणा द्वारा ही सिखलायेंगे। टीचर घर बैठे प्रेरणा करेंगे

क्या! प्रेरणा अक्षर है नहीं। प्रेरणा से कोई काम नहीं होता। भल शंकर की प्रेरणा द्वारा विनाश कहा जाता है परन्तु है यह ड्रामा की नूँध। उन्हों को यह मूसल आदि तो बनाने ही हैं। यह सिर्फ महिमा गाई जाती है। कोई भी अपने बड़ों की महिमा नहीं जानते। धर्म स्थापक को भी गुरू कह देते हैं लेकिन वे तो सिर्फ धर्म स्थापन करते हैं। गुरू उनको कहा जाता जो सद्गति करें। वह तो धर्म स्थापन करने आते हैं, उनके पिछाड़ी उनकी वंशावली आती रहती है। सद्गति तो किसकी करते ही नहीं। तो उनको गुरू कैसे कहेंगे। गुरू तो एक ही है जिसको सर्व का सद्गति दाता कहा जाता है। भगवान बाप ही आकर सबकी सद्गति करते है। मुक्ति-जीवनमुक्ति देते है। उनकी याद कभी किससे छूट नहीं सकती। भल पति से कितना भी प्यार हो फिर भी हे भगवान, हे ईश्वर जरूर कहेंगे क्योंकि वही सर्व का सद्गति दाता है। बाप बैठ समझाते हैं, यह सारी रचना है। रचयिता बाप मैं हूँ। सबको सुख देने वाला एक ही बाप ठहरा। भाई, भाई को वर्सा नहीं दे सकते। वर्सा हमेशा बाप से मिलता है। तुम सभी बेहद के बच्चों को बेहद का वर्सा देता हूँ इसलिए ही मुझे याद करते हैं–हे परमपिता, क्षमा करो, रहम करो। समझते कुछ भी नहीं। भक्ति मार्ग में अनेक प्रकार की महिमा करते हैं, यह भी ड्रामा अनुसार अपना पार्ट बजाते रहते हैं। बाप कहते हैं मैं कोई इन्हों के पुकारने पर नहीं आता हूँ। यह तो ड्रामा बना हुआ है। ड्रामा में मेरे आने का पार्ट नूँधा हुआ है। अनेक धर्म विनाश, एक धर्म की स्थापना वा कलियुग का विनाश, सतयुग की स्थापना करनी होती है। मैं अपने समय पर आपेही आता हूँ। इस भक्ति मार्ग का भी ड्रामा में पार्ट है। अभी जब भक्ति मार्ग का पार्ट पूरा हुआ तब आया हुआ हूँ। बच्चे भी कहते हैं, अभी हम जान गये। ५ हजार वर्ष के बाद फिर से आपके साथ मिले हैं। कल्प पहले भी बाबा आप ब्रह्मा तन में ही आये थे। यह ज्ञान तुमको अभी मिलता है फिर कभी नहीं मिलेगा। यह है ज्ञान, वह है भक्ति। ज्ञान की है प्रालब्ध, चढ़ती कला। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति कहा जाता है। जनक को सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिली थी ना। यह भी अक्षर हैं – राधे जाकर अनुराधे बनती है। जनक भी जाकर फिर सीता का बाप अनुजनक बना, इस ज्ञान से। यह भी एक मिसाल दे रखा है। समझते कुछ भी नहीं हैं। कहते हैं जनक ने सेकेण्ड में जीवनमुक्ति पाई। क्या सिर्फ एक जनक ने जीवनमुक्ति पाई? जीवनमुक्ति अर्थात् जीवन को मुक्त करते हैं इस रावण राज्य से।

बाप जानते हैं सब बच्चों की कितनी दुर्गति हो गई है। उन्हों की फिर सद्गति होनी है। दुर्गति से फिर ऊंच गति, मुक्ति-जीवनमुक्ति को पाते हैं। पहले मुक्ति में जाकर फिर जीवनमुक्ति में आयेंगे। शान्ति से फिर सुखधाम में आयेंगे। यह चक्र का सारा राज़ बाप ने समझाया है। तुम्हारे साथ और भी धर्म आते जाते हैं, मनुष्य सृष्टि वृद्धि को पाती जाती है। बाप कहते हैं इस समय यह मनुष्य सृष्टि का झाड़ तमोप्रधान जड़ जड़ीभूत हो गया है। आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाउन्डेशन सारा सड़ गया है। बाकी सब धर्म खड़े हैं। भारत में एक भी अपने को आदि सनातन देवी-देवता धर्म का समझता नहीं है। हैं देवता धर्म के परन्तु इस समय यह समझते नहीं। हैं - हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म

के थे क्योंकि देवतायें तो पवित्र थे। समझते हैं हम तो पवित्र हैं नहीं। हम अपवित्र पतित अपने को देवता कैसे कहलायें? यह भी ड्रामा के प्लैन अनुसार रसम पड़ जाती है हिन्दू कहलाने की। आदमशुमारी में भी हिन्दू धर्म लिख देते हैं। भल गुजराती होंगे तो भी हिन्दू गुजराती कह देंगे। उन्हों से पूछो तो सही कि हिन्दू धर्म कहाँ से आया? तो कोई को पता नहीं है सिर्फ कह देते हमारा धर्म कृष्ण ने स्थापन किया। कब? द्वापर में। द्वापर से ही यह लोग अपने धर्म को भूल हिन्दू कहलाने लगे हैं। इसलिए उन्हों को कहा जाता है दैवी धर्म भ्रष्ट हैं। वहाँ सब अच्छा कर्म करते हैं। यहाँ सब छी-छी कर्म करते हैं इसलिए देवी-देवता धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट कहा जाता है। अब फिर श्रेष्ठ धर्म, श्रेष्ठ दैवी कर्म की स्थापना हो रही है इसलिए कहा जाता है अब इन 5 विकारों को छोड़ते जाओ। यह विकार आधाकल्प से रहे हैं। अब एक जन्म में इनको छोड़ना—इसमें ही मेहनत लगती है। मेहनत बिगर थोड़ेही विश्व की बादशाही मिलेगी। बाप को याद करेंगे तब ही अपने को तुम राजाई का तिलक देते हो अर्थात् राजाई के अधिकारी बनते हो। जितना अच्छी रीति याद में रहेंगे, श्रीमत पर चलेंगे तो तुम राजाओं का राजा बनेंगे। पढ़ाने वाला टीचर तो आया है पढ़ाने। यह पाठशाला है ही मनुष्य से देवता बनने की। नर से नारायण बनाने की कथा सुनाते हैं। यह कथा कितनी नामीग्रामी है। इनको अमरकथा, सत्य नारायण की कथा, तीजरी की कथा भी कहते हैं। तीनों का अर्थ भी बाप समझाते हैं। भक्ति मार्ग की तो बहुत कथायें हैं। तो देखो गीत कितना अच्छा है। बाबा हमको सारे विश्व का मालिक बनाते हैं, जो मालिकपना कोई लूट न सके। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. सदा यह स्मृति रखनी है कि हम एक मत, एक राज्य, एक धर्म की स्थापना के निमित्त हैं। इसलिए एक मत होकर रहना है।

२. स्वयं को राजाई का तिलक देने के लिए विकारों को छोड़ने की मेहनत करनी है। पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना है।

वरदान:- सन्तुष्टता की विशेषता वा श्रेष्ठता द्वारा सर्व के इष्ट बनने वाले वरदानी मूर्त भव

जो सदा स्वयं से और सर्व से सन्तुष्ट रहते हैं वही अनेक आत्माओं के इष्ट व अष्ट देवता बन सकते हैं। सबसे बड़े से बड़ा गुण कहो, दान कहो या विशेषता वा श्रेष्ठता कहो वह सन्तुष्टता ही है। सन्तुष्ट आत्मा ही प्रभूप्रिय, लोकप्रिय और स्वयं प्रिय होती है। ऐसी सन्तुष्ट आत्मा ही वरदानी रूप में प्रसिद्ध होगी। अभी अन्त के समय में महादानी से भी ज्यादा वरदानी रूप द्वारा सेवा होगी।

स्लोगन:-

विजयी रत्न वह है जिसके मस्तक पर सदा विजय का तिलक चमकता हो।

गीता जयन्ती

४८

★14-2-01 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम इस कब्रिस्तान को परिस्तान बना रहे हो, इसलिए तुम्हारा इस पुरानी दुनिया, कब्रिस्तान से पूरा-पूरा वैराग्य चाहिए"

प्रश्नः- बेहद का बाप अपने रूहानी बच्चों का वण्डरफुल सर्वेन्ट है कैसे?

उत्तरः- बाबा कहते बच्चे मैं तुम्हारा धोबी हूँ, तुम बच्चों के तो क्या सारी दुनिया के छी-छी गन्दे वस्त्र सेकेण्ड में साफ कर देता हूँ। आत्मा रुपी वस्त्र स्वच्छ बनने से शरीर भी शुद्ध मिलता है। ऐसा वण्डरफुल सर्वेन्ट है जो मनमनाभव के छू मन्त्र से सबको सेकेण्ड में साफ कर देता है।

ओम् शान्ति। ओम् शान्ति का अर्थ बच्चों को बाप ने समझाया है। अहम् आत्मा का स्वधर्म है शान्त। शान्तिधाम जाने के लिए कोई पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता है। आत्मा स्वयं शान्त स्वरूप, शान्तिधाम में रहने वाली है। हाँ थोड़ा समय शान्त रह सकती है। आत्मा कहती है–मैं कर्मेन्द्रियों के बोझ से थक गई हूँ, मैं अपने स्वधर्म में टिक जाती हूँ, शरीर से अलग हो जाती हूँ। परन्तु कर्म तो करना ही है। शान्ति में कहाँ तक बैठे रहेंगे। आत्मा कहती है हम शान्ति देश के रहवासी हैं। सिर्फ यहाँ शरीर में आने से मैं टाकी बना हूँ। अहम् आत्मा अविनाशी, मम शरीर है विनाशी। आत्मा पावन और पतित बनती है। सतयुग में 5 तत्व भी सतोप्रधान होते हैं। यहाँ 5 तत्व भी तमोप्रधान हैं। सोने में खाद पड़ने से सोना पतित बन जाता है फिर उनको साफ करने के लिए आग में डाला जाता है, इनका नाम ही है योग अग्नि। दुनिया में तो अनेक प्रकार के हठयोग आदि सिखलाते हैं। उनको योग अग्नि नहीं कहा जाता है। योग अग्नि यह है जिससे पाप जलते हैं। आत्मा को पतित से पावन बनाने वाला परमात्मा है, बुलाते हैं हे पतित-पावन आओ। ड्रामा प्लैन अनुसार सबको पतित तमोप्रधान बनना ही है। यह झाड़ है इनका बीजरूप ऊपर में है। बाप को जब बुलाते हैं, बुद्धि ऊपर चली जाती है। जिससे तुम वर्सा ले रहे हो, जो अब नीचे आया हुआ है। कहते हैं मुझे आना पड़ता है। मनुष्य सृष्टि का जो झाड़ है, अनेक [illegible] बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। सतयुग में देवतायें, कलियुग में हैं असुर। बाकी असुर और देवताओं की लड़ाई लगी नहीं है। तुम इन आसुरी 5 विकारों पर योगबल से जीत पाते हो। बाकी कोई हिंसक लड़ाई की बात नहीं। तुम कोई भी प्रकार से हिंसा नहीं करते हो। कभी किसको हाथ भी नहीं लगायेंगे। तुम डबल अहिंसक हो। काम कटारी चलाना यह तो सबसे बड़ा पाप है। बाप कहते हैं यह काम कटारी आदि-मध्य-अन्त दुःख देती है। विकार में नहीं जाना चाहिए। देवताओं के आगे महिमा गाते हैं ना–आप सर्वगुण सम्पन्न.....। आत्मा कहती है हम पतित बने हैं, तब तो बुलाती है हे पतित-पावन आओ। जब पावन है तब तो कोई को बुलाते ही नहीं। उनको स्वर्ग कहा जाता है। यहाँ तो साधू-सन्त आदि कितनी धुन लगाते हैं – हे पतित-पावन सीताराम.....। बाप कहते हैं इस समय सारी दुनिया पतित है, इसमें भी किसका दोष नहीं है। यह ड्रामा बना-बनाया है।

जब तक मैं आऊं, इन्हों को अपना पार्ट बजाना है। ज्ञान और भक्ति फिर है बैराग्य। (b) पुरानी दुनिया से वैराग्य। यह है बेहद का वैराग्य। उन्हों का है हद का वैराग्य।)

(तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया अब खत्म होनी है। नया घर बनाते हैं तो पुराने घर से वैराग्य हो जाता है ना। बेहद का बाप कहते हैं अभी तुमको स्वर्ग रूपी घर बनाकर देता हूँ। अभी तो है नर्क। स्वर्ग है नई दुनिया। नर्क पुरानी दुनिया। अभी पुरानी दुनिया में रह हम नई दुनिया बना रहे हैं। पुराने कब्रिस्तान पर हम परिस्तान बनायेंगे। (यही जमुना (c) का कण्ठा होगा। इस पर महल बनेंगे। यही देहली जमुना नदी आदि होगी बाकी यह जो दिखाते हैं पाण्डवों के किले थे, यह सब हैं दन्त कथायें। ड्रामा प्लैन अनुसार जरुर फिर यह बनेंगे।) जैसे तुम यज्ञ तप दान आदि करते आये हो फिर भी करना होगा। पहले तुम शिव की भक्ति करते हो फर्स्टक्लास मन्दिर बनाते हो। उसको व्यभिचारी भक्ति कहा जाता है। अभी तुम ज्ञानमार्ग में हो। (यह है अव्यभिचारी ज्ञान। एक ही शिवबाबा से तुम सुनते हो।) जिसकी पहले-पहले तुमने भक्ति शुरु की, उस समय और कोई धर्म होते नहीं। तुम ही होते हो। तुम बहुत सुखी रहते हो। देवता धर्म बहुत सुख देने वाला है। नाम लेने से मुख मीठा हो जाता है। (तो तुम एक बाप से ही ज्ञान सुनते हो। बाप कहते हैं और कोई से न सुनो। यह है तुम्हारा अव्यभिचारी ज्ञान। बेहद के बाप के तुम बने हो। बाप से ही वर्सा मिलेगा नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप भी थोड़े समय के लिए साकार में (d) आया हुआ है। कहते हैं मुझे ही तुम बच्चों को ज्ञान देना है। मेरा स्थाई शरीर है नहीं, मैं इसमें प्रवेश करता हूँ। शिवजयन्ती से फिर झट गीता जयन्ती हो जाती है। उनसे ही (e) ज्ञान शुरु कर देते हैं। यह रूहानी विद्या तुमको सुप्रीम रूह ही दे रहे हैं।) पानी की बात नहीं। पानी को थोड़ेही ज्ञान कहेंगे। पतित से पावन ज्ञान से बनेंगे, पानी से थोड़ेही पावन बनेंगे। नदियां तो सारी दुनिया में हैं ही। यह तो ज्ञान सागर बाप आते हैं, इसमें प्रवेश कर नॉलेज सुनाते हैं। यहाँ जब कोई मरते हैं तो मुख में गंगा का जल डालते हैं। समझते हैं यह जल है पतित से पावन बनाने वाला तो स्वर्ग में चला जायेगा। यहाँ भी गऊ मुख पर जाते हैं। (वास्तव में गऊमुख तुम चैतन्य हो। तुम्हारे मुख से ज्ञान अमृत निकलता है।) गऊ से दूध मिलता है, पानी की तो बात नहीं। यह अभी तुमको पता पड़ा है। तुम जानते हो ड्रामा में जो एक बार हो गया है वह फिर 5 हज़ार वर्ष के बाद होगा, हूबहू रिपीट। यह बाप बैठ समझाते हैं, जो सभी का सद्गति दाता है। अभी तो सब दुर्गति में पड़े हैं। आगे तुम नहीं जानते थे कि रावण को क्यों जलाते हैं। अभी तुम समझते हो बेहद का दशहरा होना है। सारी सृष्टि पर रावण राज्य है ना। (यह सारी जो पृथ्वी है वह लंका (f) है। रावण कोई हद में नहीं रहता। रावण का राज्य सारी सृष्टि में है।) भक्ति भी आधाकल्प चलती है। पहले होती है अव्यभिचारी भक्ति फिर व्यभिचारी भक्ति शुरु होती है। दशहरा, रक्षाबंधन आदि सब अभी के त्योहार हैं। (शिव जयन्ती के बाद होती है कृष्ण जयन्ती। अभी कृष्णपुरी स्थापन होती है। आज कंसपुरी में हैं, कल कृष्णपुरी में होंगे। कृष्ण थोड़ेही (g) यहाँ हो सकता। कृष्ण जन्म लेते ही हैं सतयुग में। वह है फर्स्ट प्रिन्स। स्कूल में पढ़ने जाते हैं, जब बड़ा होता है तब गद्दी का मालिक बनता है।) बाकी यह रासलीला आदि

वह तो आपस में खुशी मनाते होंगे। बाकी कृष्ण किसको बैठ ज्ञान सुनाये यह हो कैसे सकता। सारी महिमा एक शिवबाबा की है जो पतितों को पावन बनाते हैं। तुम कोई बड़े ऑफीसर्स को समझाओ तो कहेंगे आप राइट कहती हो। परन्तु वह और किसी को सुना न सकें। उनकी बात कोई सुनेगा नहीं। बी.के. बना और सब कहेंगे इनको तो जादू लग गया है। बी.के. का नाम सुना, बस। समझते हैं यह जादू करती होंगी। थोड़ा किसको ज्ञान दो तो कह देते यह बी.के. जादू लगाती हैं। बस यह तो सिवाए अपने दादा के और किसको मानतो नहीं। भक्ति आदि कुछ नहीं करती। बाबा तो कहते हैं किसको मना नहीं करना है कि भक्ति न करो। आपेही छूट जायेगी। तुम भक्ति छोड़ते हो, विकार छोड़ते हो, इस पर ही हंगामा होता है। बाबा ने कहा है मैं रुद्र ज्ञान यज्ञ रचता हूँ, इसमें आसुरी सम्प्रदाय के विघ्न पड़ते हैं। यह है शिवबाबा का बेहद का यज्ञ, जिसमें मनुष्य से देवता बनते हैं। गाया हुआ भी है—ज्ञान यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रज्जवलित हुई। जब पुरानी दुनिया विनाश हो तब तो तुम नई दुनिया में राज्य करेंगे। मनुष्य कहेंगे हम कहते हैं शान्ति हो और यह बी.के. कहती हैं विनाश हो। बाप समझाते हैं यह सारी पुरानी दुनिया इस ज्ञान यज्ञ में स्वाहा हो जायेंगी। इस पुरानी दुनिया को आग लगनी है। नेचुरल कैलेमिटीज भी आयेगी। विनाश तो होना ही है। सरसों मुआफ़िक सब मनुष्य पीसकर खत्म हो जायेंगे। बाकी आत्मायें बच जायेंगी। यह तो कोई भी समझ सकते हैं—आत्मा अविनाशी है। अभी यह बेहद की होलिका होनी है, जिसमें शरीर सब खत्म हो जायेंगे। बाकी आत्मायें पवित्र बन चली जायेंगी। आग में चीज शुद्ध होती है ना। हवन करते हैं शुद्धता के लिए। वह सब हैं जिस्मानी बातें। अभी तो सारी दुनिया स्वाहा होनी है। विनाश के पहले जरुर स्थापना हो जानी चाहिए। किसको भी समझाओ तो पहले बोलो स्थापना फिर विनाश। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। प्रजापिता तो मशहूर है ना। आदि देव और आदि देवी। जगत अम्बा के भी लाखों मन्दिर हैं। कितने मेले लगते हैं। तुम हो जगत अम्बा के बच्चे, ज्ञान-ज्ञानेश्वरी फिर बनेंगे राज-राजेश्वरी। तुम बहुत धनवान बनते हो फिर भक्ति मार्ग में लक्ष्मी से दीपमाला पर विनाशी धन मांगते हैं। यहाँ तो सब कुछ मिल जाता है। आयुश्वान भव, पुत्रवान भव। तुम जानते हो हमारी आयु 150 वर्ष की रहती है। बाप कहते हैं जितना योग लगायेंगे उतना आयु बढ़ती रहेगी। तुम ईश्वर से योग लगाकर योगेश्वर बनते हो। मनुष्य तो हैं भोगेश्वर। कहा भी जाता है विकारी, मूत पलीती कपड़ धोए..... बाप कहते हैं मुझे धोबी भी कहते हैं। मैं सब आत्माओं को आकर साफ करता हूँ फिर शरीर भी नया शुद्ध मिलेगा। बाप कहते हैं मैं सेकेण्ड में सारी दुनिया के कपड़े साफ कर लेता हूँ। सिर्फ मनमनाभव होने से आत्मा और शरीर पवित्र बन जायेंगे। छू मन्त्र है ना। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। कितना सहज उपाय है। बाप को याद करो तो पावन बन जायेंगे। चलते फिरते सिर्फ बाप को याद करो, और कोई जरा भी तकलीफ तुमको नहीं देता हूँ। सिर्फ याद करना है। अभी तुम्हारे एक-एक सेकेण्ड में चढ़ती कला होती है।

बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों का सर्वेन्ट बन आया हूँ। तुमने बुलाया ही है हे पतित-पावन आओ, आकर हमको पावन बनाओ। अच्छा बच्चे आया हूँ तो सर्वेन्ट हुआ ना।

जब तुम बहुत पतित बने हो तब ही जोर से चिल्लाते हो। अब मैं आया हूँ। मैं कल्प-कल्प आकर तुम बच्चों को यह मन्त्र देता हूँ। मुझे याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। मनमनाभव का अर्थ भी है। मनमनाभव, मध्याजी भव अर्थात् बाप को याद करो तो विष्णुपुरी के मालिक बनेंगे। तुम आये ही हो विष्णुपुरी का राज्य लेने। रावणपुरी के बाद है विष्णुपुरी। कंसपुरी के बाद कृष्णपुरी कितना सहज समझाया जाता है। बाप कहते हैं इस पुरानी दुनिया से ममत्व मिटा दो। अभी हमने 84 जन्म पूरे किये हैं। यह पुराना चोला छोड़कर हम जायेंगे नई दुनिया में। याद से ही तुम्हारे पाप कटते जायेंगे। इतनी हिम्मत करनी चाहिए। वह तो ब्रह्म को याद करते हैं। समझते हैं ब्रह्म में लीन हो जायेंगे। परन्तु ब्रह्म तो है रहने का स्थान। वो लोग तपस्या में बैठ जाते हैं। बस हम ब्रह्म में जाकर लीन हो जायेंगे। परन्तु वापिस तो कोई जा नहीं सकते। ब्रह्म से योग लगाने से पावन तो बनेंगे नहीं। एक भी जा न सके। पुनर्जन्म तो लेना ही है। बाप आकर सच बतलाते हैं, सचखण्ड सच्चा बाबा स्थापन करते हैं। रावण आकर झूठ खण्ड बनाते हैं। अभी यह है संगमयुग। इसमें तुम उत्तम से उत्तम बनते हो इसलिए इनको पुरुषोत्तम कहा जाता है। तुम कौड़ी से हीरे जैसा बनते हो। यह है बेहद की बात। उत्तम से उत्तम मनुष्य हैं देवतायें। तो अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर तुम बैठे हो। तुमको पुरुषोत्तम बनाने वाला है ऊंच ते ऊंच बाप। ऊंच ते ऊंच स्वर्ग का वर्सा तुमको देते हैं फिर यह तुम भूलते क्यों हो? बाप कहते हैं मुझे याद करो। बच्चे कहते हैं -- बाबा कृपा करो तो हम भूलें नहीं। यह कैसे हो सकता। बाबा के डायरेक्शन पर चलना है ना। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पतित से पावन बन जायेंगे। राय पर चलो ना। बाकी आशीर्वाद क्या करूँ। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. बाप के हर डायरेक्शन पर चलकर स्वयं को कौड़ी से हीरे जैसा बनाना है। एक बाप की याद में रह स्वयं के वस्त्रों को स्वच्छ बनाना है।

२. अब नये घर में चलना है इसलिए इस पुराने घर से बेहद का वैराग्य रखना है। नशा रहे कि इस पुराने कब्रिस्तान पर हम परिस्तान बनायेंगे।

वरदान:- सदा देह-अभिमान व देह की बदबू से दूर रहने वाले इन्द्रप्रस्थ निवासी भव

कहते हैं इन्द्रप्रस्थ में सिवाए परियों के और कोई भी मनुष्य निवास नहीं कर सकते। मनुष्य अर्थात् जो अपने को आत्मा न समझ देह समझते हैं। तो देह-अभिमान और देह की पुरानी दुनिया, पुराने संबंधों से सदा ऊपर उड़ते रहते। जरा भी मनुष्य-पन की बदबू न हो। देही-अभिमानी स्थिति में रहो, ज्ञान और योग के पंख मजबूत हों तब कहेंगे इन्द्रप्रस्थ निवासी।

स्लोगन:-

अपने तन, मन, धन को सफल करने वा सर्व खजानों को बढ़ाने वाले ही समझदार हैं।

मुरली नं.- (४९)

★ 17-2-01 प्रातः मुरली ओम् शान्ति बापदादा मधुबन

"मीठे बच्चे – यह संगमयुग है चढ़ती कला का युग, इसमें सभी का भला होता है इसलिए कहा जाता चढ़ती कला तेरे भाने सर्व का भला"

प्रश्नः- बाबा सभी ब्राह्मण बच्चों को बहुत-बहुत बधाइयाँ देते हैं – क्यों?

उत्तरः- क्योंकि बाबा कहते तुम मेरे बच्चे मनुष्य से देवता बनते हो। तुम अभी रावण की जंजीरों से छूटते हो, तुम स्वर्ग की राजाई पाते हो, पास विद् ऑनर बनते हो, मैं नहीं। इसलिए बाबा तुम्हें बहुत-बहुत बधाइयां देते हैं। तुम आत्मायें पतंग हो, तुम्हारी डोर मेरे हाथ में हैं। मैं तुम्हें स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ।

गीतः- आखिर वह दिन आया आज.....

ओम् शान्ति। यह अमर कथा कौन सुना रहे हैं? अमर कथा कहो, सत्य नारायण की कथा कहो वा तीजरी की कथा कहो – तीनों मुख्य हैं। अभी तुम किसके सामने बैठे हो और कौन तुमको सुना रहे हैं? सतसंग तो इसने भी बहुत किये हैं। वहाँ तो सब मनुष्य देखने में आते हैं। कहेंगे फलाना सन्यासी कथा सुनाते हैं। शिवानंद सुनाते हैं। भारत में तो ढेर सतसंग हैं। गली-गली में सतसंग हैं। मातायें भी पुस्तक उठाए बैठ सतसंग करती हैं। तो वहाँ मनुष्य को देखना पड़ता है लेकिन यहाँ तो वन्डरफुल बात है। तुम्हारी बुद्धि में कौन है? परमात्मा। तुम कहते हो अभी बाबा सामने आया हुआ है। निराकार बाबा हमको पढ़ाते हैं। मनुष्य कहेंगे वाह ईश्वर तो नाम-रूप से न्यारा है। बाप समझाते हैं कि नाम-रूप से न्यारी कोई चीज़ है नहीं। तुम बच्चे जानते हो यहाँ कोई भी साकार मनुष्य नहीं पढ़ाते हैं और कहाँ भी जाओ सारी वर्ल्ड में साकार ही पढ़ाते हैं। यहाँ तो सुप्रीम बाप है, जिसको निराकार गॉड फादर कहा जाता है, वह निराकार साकार में बैठ पढ़ाते हैं। यह बिल्कुल नई बात हुई। जन्म बाई जन्म तुम सुनते आये हो। यह फलाना पण्डित है, गुरू है। ढेर के ढेर नाम हैं। भारत तो बहुत बड़ा है। जो भी कुछ सिखाते हैं, समझाते हैं वह मनुष्य ही हैं। मनुष्य ही शिष्य बने हुए हैं। अनेक प्रकार के मनुष्य हैं। फलाना सुनाते हैं। हमेशा शरीर का नाम लिया जाता है। भक्ति मार्ग में निराकार को बुलाते हैं कि हे पतित-पावन आओ। वही आकर बच्चों को समझाते हैं। तुम बच्चे जानते हो कि कल्प-कल्प सारी दुनिया जो पतित बन जाती है, उनको पावन करने वाला एक ही निराकार बाप है। तुम यहाँ जो बैठे हो, तुम्हारे में भी कोई कच्चे हैं, कोई पक्के हैं क्योंकि आधाकल्प तुम देह-अभिमानी बने हो। अब देही-अभिमानी इस जन्म में बनना है। तुम्हारी देह में रहने वाली जो आत्मा है उनको परमात्मा बैठ समझाते हैं। आत्मा ही संस्कार ले जाती है। आत्मा कहती है आरगन्स द्वारा कि मैं फलाना हूँ। परन्तु आत्म-अभिमानी तो कोई है नहीं। बाप समझाते हैं जो इस भारत में सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी थे वही इस समय आकर ब्राह्मण बनेंगे फिर देवता बनेंगे। मनुष्य देह-अभिमानी रहने के आदती हैं, देही-अभिमानी रहना भूल जाते हैं। इसलिए बाप घड़ी-घड़ी कहते हैं देही-अभिमानी बनो। आत्मा ही भिन्न-भिन्न चोला लेकर पार्ट बजाती है। यह हैं उनके आरगन्स। अब बाप बच्चों को कहते हैं मनमनाभव। बाकी

सिर्फ गीता पढ़ने से कोई राज्य-भाग्य थोड़ेही मिल सकता है। तुमको इस समय त्रिकालदर्शी बनाया जाता है। रात-दिन का फ़र्क हो गया है। बाप समझाते हैं मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। कृष्ण तो सतयुग का प्रिन्स है। जो सूर्यवंशी देवतायें थे उनमें कोई ज्ञान नहीं। ज्ञान तो प्राय:लोप हो जायेगा। ज्ञान है ही सद्गति के लिए। सतयुग में दुर्गति में कोई होता ही नहीं। वह है ही सतयुग। अभी है कलियुग। भारत में पहले सूर्यवंशी 8 जन्म फिर चन्द्रवंशी 12 जन्म। यह एक जन्म अभी तुम्हारा सबसे अच्छा जन्म है। तुम हो प्रजापिता ब्रह्मा मुख वंशावली। यह है सर्वोत्तम धर्म। देवता धर्म सर्वोत्तम धर्म नहीं कहेंगे। ब्राह्मण धर्म सबसे ऊंच है। देवतायें तो प्रालब्ध भोगते हैं। आजकल बहुत सोशल वर्कर हैं। तुम्हारी है रूहानी सर्विस। वह है जिस्मानी सेवा करना। रूहानी सर्विस एक ही बार होती है। आगे यह सोशल वर्कर आदि नहीं थे। राजा-रानी राज्य करते थे। सतयुग में देवी-देवता थे। तुम ही पूज्य थे फिर पुजारी बने। लक्ष्मी-नारायण द्वापर में जब वाम मार्ग में जाते हैं तो मन्दिर बनाते हैं। पहले-पहले शिव का बनाते हैं। वह है सर्व का सद्गति दाता तो उनकी जरूर पूजा होनी चाहिए। शिवबाबा ने ही आत्माओं को निर्विकारी बनाया था ना। फिर होती है देवताओं की पूजा। तुम ही पूज्य थे फिर पुजारी बने। बाबा ने समझाया है—चक्र को याद करते रहो। सीढ़ी उतरते-उतरते एकदम पट पर आकर पड़े हो। अब तुम्हारी चढ़ती कला है। कहते हैं चढ़ती कला तेरे भाने सर्व का भला। सारी दुनिया के मनुष्य मात्र की अब चढ़ती कला करता हूँ। पतित-पावन आकर सबको पावन बनाते हैं। जब सतयुग था तो चढ़ती कला थी और बाकी सब आत्मायें मुक्तिधाम में थी।

बाप बैठ समझाते हैं मीठे-मीठे बच्चों मेरा जन्म भारत में ही होता है। शिवबाबा आया था, गाया हुआ है। अब फिर आया हुआ है। इसको कहा जाता है राजस्व अश्वमेध अविनाशी रूद्र ज्ञान यज्ञ। स्वराज्य पाने के लिए यज्ञ रचा हुआ है। विघ्न भी पड़े थे, अब भी पड़ रहे हैं। माताओं पर अत्याचार होते हैं। कहते हैं बाबा हमको यह नंगन करते हैं। हमको यह छोड़ते नहीं हैं। बाबा हमारी रक्षा करो। दिखाते हैं द्रोपदी की रक्षा हुई फिर तुम 21 जन्मों के लिए बेहद के बाप से वर्सा लेने आये हो। याद की यात्रा में रहकर अपने को पवित्र बनाते हो। फिर विकार में गये तो खलास, एकदम गिर पड़ेंगे। इसलिए बाप कहते हैं पवित्र जरूर रहना है। जो कल्प पहले बने थे वही पवित्रता की प्रतिज्ञा करेंगे फिर कोई पवित्र रह सकते हैं, कोई नहीं रह सकते हैं। मुख्य बात है याद की। याद करेंगे, पवित्र रहेंगे और स्वदर्शन चक्र फिराते रहेंगे तो फिर ऊंच पद पायेंगे। विष्णु के दो रूप राज्य करते हैं ना। परन्तु विष्णु को जो शंख चक्र दे दिया है वह देवताओं को नहीं था। लक्ष्मी-नारायण को भी नहीं था। विष्णु तो सूक्ष्मवतन में रहते हैं, उनको चक्र के नॉलेज की दरकार नहीं है। वहाँ मूवी चलती है। अभी तुम जानते हो कि हम शान्तिधाम के रहने वाले हैं। वह है निराकारी दुनिया। अब आत्मा क्या चीज़ है, वह भी मनुष्य मात्र नहीं जानते। कह देते आत्मा सो परमात्मा। आत्मा के लिए कहते हैं एक चमकता हुआ सितारा है, जो भृकुटी के बीच रहती है। इन आंखों से देख न सकें। भल कोई कितना भी कोशिश करें, शीशे आदि में बन्द करके रखें कि देखें कि

आत्मा निकलती कैसे है? कोशिश करते हैं परन्तु किसको भी पता नहीं पड़ता है – आत्मा क्या चीज़ है, कैसे निकलती है? बाकी इतना कहते हैं आत्मा स्टॉर मिसल है। दिव्य दृष्टि बिगर उसको देखा नहीं जाता। भक्ति मार्ग में बहुतों को साक्षात्कार होता है। लिखा हुआ है अर्जुन को साक्षात्कार हुआ अखण्ड ज्योति है। अर्जुन ने कहा हम सहन नहीं कर सकते। बाप समझाते हैं इतना तेजोमय आदि कुछ है नहीं। जैसे आत्मा आकर शरीर में प्रवेश करती है, पता थोड़ेही पड़ता है। अब तुम भी जानते हो कि बाबा कैसे प्रवेश कर बोलते हैं। आत्मा आक़र बोलती है। यह भी ड्रामा में सारी नूँध है, इसमें कोई के ताकत की बात नहीं। आत्मा कोई शरीर छोड़ जाती नहीं है। यह साक्षात्कार की बात है। वन्डरफुल बात है ना। बाप कहते हैं मैं भी साधारण तन में आता हूँ। आत्मा को बुलाते हैं ना। आगे आत्माओं को बुलाकर उनसे पूछते भी थे। अभी तो तमोप्रधान बन गये हैं ना। बाप आते ही इसलिए हैं कि हम जाकर पतितों को पावन बनायें। कहते भी हैं 84 जन्म। तो समझना चाहिए कि जो पहले आये हैं, उन्होंने ही जरूर 84 जन्म लिए होंगे। वह तो लाखों वर्ष कह देते हैं। अब बाप समझाते हैं तुमको स्वर्ग में भेजा था। तुमने जाकर राज्य किया था। तुम भारतवासियों को स्वर्ग में भेजा था। राजयोग सिखाया था संगम पर। बाप कहते हैं मैं कल्प के संगमयुगे आता हूँ। गीता में फिर युगे-युगे अक्षर लिख दिया है।

अभी तुम जानते हो हम सीढ़ी कैसे उतरते हैं फिर चढ़ते है। चढ़ती कला फिर उतरती कला। अभी यह संगमयुग है सर्व की चढ़ती कला का युग। सब चढ़ जाते हैं। सब ऊपर में जायेंगे फिर तुम आयेंगे स्वर्ग में पार्ट बजाने। सतयुग में दूसरा कोई धर्म नहीं था। उनको कहा जाता है वाइसलेस वर्ल्ड। फिर देवी-देवतायें वाम मार्ग में जाकर सब विशश होने लगते हैं, यथा राजा-रानी तथा प्रजा। बाप समझाते हैं हे भारतवासी तुम वाइसलेस वर्ल्ड में थे। अब है विशश वर्ल्ड। अनेक धर्म हैं बाकी एक देवी-देवता धर्म नहीं है। जरूर जब न हो तब तो फिर स्थापन हो। बाप कहते हैं मैं ब्रह्मा द्वारा आकर आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करता हूँ। यहाँ ही करेगा ना। सूक्ष्म वतन में तो नहीं करेंगे। लिखा हुआ है ब्रह्मा द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की रचना रचते हैं। तुमको इस समय पावन नहीं कहेंगे। पावन बन रहे हैं। टाइम तो लगता है ना। पतित से पावन कैसे बनें, यह कोई भी शास्त्रों में नहीं है। वास्तव में महिमा तो एक बाप की है। उस बाप को भूलने के कारण ही आरफन बन पड़े हैं। लड़ते रहते हैं। फिर कहते हैं सब मिलकर एक कैसे हों। भाई-भाई हैं ना। बाबा तो अनुभवी है। भक्ति भी इसने पूरी की है। सबसे अधिक गुरू किये हुए हैं। अब बाप कहते हैं इन सबको छोड़ो। अब मैं तुमको मिला हुआ हूँ। सूर्व का सद्गति दाता एक सत् श्री अकाल कहते हैं ना। अर्थ नहीं समझते। पढ़ते तो बहुत रहते हैं। बाप समझाते हैं अभी सब पतित हैं फिर पावन दुनिया बनेगी। भारत ही अविनाशी है। यह कोई को पता नहीं है। भारत का कभी विनाश नहीं होता और न कभी प्रलय होती है। यह जो दिखाते हैं सागर में पीपल के पत्ते पर श्रीकृष्ण आये – अब पीपल के पत्ते पर तो बच्चा आ न सके। बाप समझाते हैं तुम गर्भ से

जन्म लेंगे, बड़े आराम से। वहाँ गर्भ महल कहा जाता है। यहाँ है गर्भ जेल। सतयुग में है गर्भ महल। आत्मा को पहले से ही साक्षात्कार होता है। यह तन छोड़ दूसरा लेना है। वहाँ आत्म-अभिमानी रहते हैं। मनुष्य तो न रचयिता को, न रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। अभी तुम जानते हो बाप है ज्ञान का सागर। तुम मास्टर सागर हो। तुम (मातायें) हो नदियां और यह गोप हैं ज्ञान मानसरोवर। यह ज्ञान नदियां हैं। तुम हो सरोवर। प्रवृत्ति मार्ग चाहिए ना। तुम्हारा पवित्र गृहस्थ आश्रम था। अभी पतित है। बाप कहते हैं यह सदैव याद रखो कि हम आत्मा हैं। एक बाप को याद करना है। बाबा ने फरमान दिया है कोई भी देहधारी को याद न करो। इन आंखों से जो कुछ देखते हो वह सब खत्म हो जाना है। इसलिए बाप कहते हैं मनमनाभव, मध्याजीभव। इस कब्रिस्तान को भूलते जाओ। माया के तूफान तो बहुत आयेंगे, इनसे डरना नहीं है। बहुत तूफान आयेंगे परन्तु कर्मेन्द्रियों से कर्म नहीं करना है। तूफान आते हैं तब जब तुम बाप को भूल जाते हो। यह याद की यात्रा एक ही बार होती है। वह है मृत्युलोक की यात्रायें, अमरलोक की यात्रा यह है। तो अब बाप कहते हैं कोई भी देहधारी को याद न करो।

बच्चे, शिव जयन्ती की कितनी तारें भेजते हैं। बाप कहते हैं ततत्वम्। तुम बच्चों को भी बाप बधाइयां देते हैं। वास्तव में तुमको बधाइयां हो क्योंकि मनुष्य से देवता तुम बनते हो। फिर जो पास विद् ऑनर होगा उनको जास्ती मार्क्स और अच्छा नम्बर मिलेगा। बाप तुमको बधाइयां देते हैं कि अब तुम रावण की जंजीरों से छूटते हो। सभी आत्मायें पतंगें हैं। सबकी रस्सी बाप के हाथ में है। वह सबको ले जायेंगे। सर्व के सद्गति दाता हैं। परन्तु तुम स्वर्ग की राजाई पाने के लिए पुरूषार्थ कर रहे हो। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. पास विद् ऑनर होने के लिए एक बाप को याद करना है, किसी भी देहधारी को नहीं। इन आंखों से जो दिखाई देता है, उसे देखते भी नहीं देखना है।

२. हम अमरलोक की यात्रा पर जा रहे हैं। इसलिए मृत्युलोक का कुछ भी याद न रहे, इन कर्मेन्द्रियों से कोई भी विकर्म न हो, यह ध्यान रखना है।

वरदान:- सदा अपने रॉयल कुल की स्मृति द्वारा ऊंची स्टेज पर रहने वाले गुणमूर्त भव

जो रॉयल कुल वाले होते हैं वह कभी धरती पर, मिट्टी पर पांव नहीं रखते। यहाँ देह-अभिमान मिट्टी है, इसमें नीचे नहीं आओ, इस मिट्टी से सदा दूर रहो। सदा स्मृति रहे कि ऊंचे से ऊंचे बाप के रॉयल फैमिली के, ऊंची स्टेज वाले बच्चे हैं तो नीचे नज़र नहीं आयेगी। सदैव अपने को गुणमूर्त देखते हुए ऊंची स्टेज पर स्थित रहो। कमी को देखते खत्म करते जाओ। उसे बार-बार सोचेंगे तो कमी रह जायेगी।

स्लोगन:-

रॉयल वह है जो अपने हर्षितमुख द्वारा प्योरिटी की रायॅल्टी का अनुभव कराये।

झालापुर

५०

*24-3-01 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – पुण्य आत्मा बनना है तो एक बाप को याद करो, याद से ही खाद निकलेगी, आत्मा पावन बनेगी"

प्रश्नः- कौन सी स्मृति रहे तो कभी भी किसी बात में मूँझ नहीं सकते?

उत्तरः- ड्रामा की। बनी बनाई बन रही, अब कुछ बननी नाहि... यह अनादि ड्रामा चलता ही रहता है। इसमें किसी बात में मूँझने की दरकार नहीं। कई बच्चे कहते हैं पता नहीं यह हमारा अन्तिम 84 वाँ जन्म है या नहीं, मूझ जाते हैं। बाबा कहते मूझो नहीं। मनुष्य से देवता बनने का पुरूषार्थ करो।

ओम् शान्ति। बच्चों को ओम् शान्ति के अर्थ का तो पता है कि मैं आत्मा हूँ और मुझ आत्मा का स्वधर्म है शान्ति। मैं आत्मा शान्त स्वरूप, शान्तिधाम की रहने वाली हूँ। यह लेसन पक्का करते जाओ। यह कौन समझाते हैं? शिवबाबा। याद भी करना है शिवाबाबा को। उनको अपना रथ नहीं है। इसलिए उनको बैल दे देते हैं। मन्दिर में भी बैल रख दिया है। इसको कहा जाता है पूरा अज्ञान। बाप समझाते हैं बच्चों को अथवा रूहों को। यह है रूहों का बाप शिव, इनके नाम तो बहुत हैं। परन्तु बहुत नाम से मूंझ पड़े हैं। वास्तव में इसका नाम है शिव। शिव जयन्ती भी भारत में मनाई जाती है। वह निराकार बाबा है, आकर पतितों को पावन बनाते हैं। कोई ने भागीरथ, कोई ने नंदीगण कह दिया है। बाप ही बताते हैं कि मैं कौन से भाग्यशाली रथ में आता हूँ। मैं ब्रह्मा के तन में प्रवेश करता हूँ। ब्रह्मा द्वारा भारत को स्वर्ग बनाता हूँ। तुम सब भारतवासी जानते हो ना कि लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। तुम सब भारतवासी बच्चे आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले थे। स्वर्गवासी थे। 5 हजार वर्ष पहले जब मैं आया था तो सभी को सतोप्रधान स्वर्ग का मालिक बनाया था। फिर पुनर्जन्म जरूर लेना पड़े। बाप कितना सीधा बताते हैं। अब जयन्ती मनाते हो – लिखते हो 65 वीं शिवजयन्ती, बाबा की पधरामणी हुए 65 वर्ष हुए। फिर साथ-साथ ब्रह्मा विष्णु शंकर की भी पधरामणी है। त्रिमूर्ति ब्रह्मा की जयन्ती कोई दिखाते नहीं हैं, दिखाना जरूरी हैं क्योंकि बाबा कहता है मैं ब्रह्मा द्वारा स्थापना फिर से करता हूँ। ब्राह्मण बनाता जाता हूँ। तो ब्रह्मा और ब्राहमण वंशियों का भी जन्म हुआ। फिर दिखाता हूँ कि तुम सो विष्णुपुरी के मालिक बनेंगे। बाप की याद से ही तुम्हारी खाद निकलेगी। भल भारत का प्राचीन योग मशहूर है परन्तु वह किसने सिखाया था, यह कोई नहीं जानते। खुद कहते हैं हे बच्चे तुम अपने बाप को याद करो। वर्सा तुमको मेरे से मिलता है। मैं तुम्हारा बाप हूँ। मैं कल्प-कल्प आता हूँ, आकर तुमको मनुष्य से देवता बनाता हूँ क्योंकि तुम देवी-देवता थे फिर 84 जन्म लेते-लेते आकर पतित बने हो। रावण की मत पर चल रहे हो। ईश्वरीय मत से तुम स्वर्ग के मालिक बनते हो।

बाप कहते हैं मैं कल्प पहले भी आया था। जो कुछ पास होता है, वह कल्प-कल्प होता ही रहेगा। बाप फिर भी आकर इनमें प्रवेश करेंगे, इस दादा को छुड़ायेंगे। फिर इन सबकी परवरिश करायेंगे। तुम जानते हो कि हम ही सतयुग में थे। हम भारतवासियों

को ही 84 जन्म लेना पड़े। पहले-पहले तुम सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण थें यथा राजा रानी तथा प्रजा नम्बरवार। सब तो राजा नहीं बन सकते। तो बाप समझाते हैं सतयुग में तुम्हारे 8 जन्म, त्रेता में 12 जन्म ... ऐसे ही अपने को समझो कि हमने यह पार्ट बजाया है। पहले सूर्यवंशी राजधानी में पार्ट बजाया फिर चन्द्रवंशी में फिर नीचे उतरते वाम मार्ग में आये। फिर हमने 63 जन्म लिए। भारतवासियों ने ही पूरे 84 जन्म लिए हैं और कोई धर्म वाले इतने जन्म नहीं लेते हैं। गुरूनानक को 500 वर्ष हुए, करीब उनके 12-14 जन्म होंगे। यह हिसाब निकाला जाता है। क्रिश्चियन ने 2 हजार वर्ष में 60 पुनर्जन्म लिये होंगे, वृद्धि होती जाती है। पुनर्जन्म लेते जाते हैं। बुद्धि में यह विचार करो तो हमने ही 84 जन्म भोगे हैं, फिर सतोप्रधान बनना है। जो कुछ पास हुआ ड्रामा। जो ड्रामा बना हुआ है वह फिर रिपीट होगा। बेहद की हिस्ट्री में तुमको ले जाते हैं। तुम पुनर्जन्म लेते आये हो। अब तुमने 84 जन्म पूरे किये हैं। अब फिर बाप ने याद दिलाई कि तुम्हारा घर है शान्तिधाम। आत्मा का रूप क्या है? बिन्दी। वहाँ जैसे बिन्दियों का झाड़ है। आत्माओं का भी नम्बरवार झाड़ है। नम्बरवार नीचे आना होता है। परमात्मा भी बिन्दी है। ऐसे नहीं कि इतना बड़ा लिंग है। बाप कहते हैं कि तुम हमारे बच्चे बनते हो तो मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ, पहले तुम हमारे बने फिर मैं तुमको पढ़ाता हूँ। कहते हो बाबा हम तुम्हारे हैं। साथ-साथ पढ़ना भी है। हमारे बने और तुम्हारी पढ़ाई शुरू हो गई।

बाबा कहते कि यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है, कमल फूल समान पवित्र बनो। बच्चे वायदा करते हैं बाबा हम आपसे वर्सा लेने लिए कभी पतित नहीं बनेंगे। 63 जन्म तो पतित बने हैं। यह 84 जन्मों की कहानी है। बाबा आकर सहज कर बताते हैं। जैसे लौकिक बाप बताते हैं ना। तो यह है बेहद का बाप। वह आकर रूहों से बच्चे-बच्चे कह बात करते हैं। शिवरात्रि भी मनाते हैं ना। यह है आधाकल्प का दिन और आधाकल्प की रात। अभी है रात का अन्त और दिन के आदि का संगम। भारत सतयुग था तो दिन था। सतयुग त्रेता को ब्रह्मा का दिन कहा जाता है। तुम ब्राह्मण हो ना। तुम ब्राह्मण जानते हो कि हमारी अब रात्रि है। तमोप्रधान भक्ति है। दर दर धक्के खाते रहते हैं, सबकी पूजा करते रहते हैं। टिवाटे की भी पूजा करते हैं। मनुष्य के शरीर की भी पूजा करते हैं। सन्यासी लोग अपने को शिवोहम् कह बैठ जाते हैं फिर मातायें जाकर उनकी पूजा करती हैं। बाबा बहुत अनुभवी है। बाबा कहते हमने भी बहुत पूजा की है। परन्तु उस समय ज्ञान तो था नहीं। फल चढ़ाते थे, लोटी चढ़ाते थे मनुष्य पर। यह भी ठगी हुई ना। परन्तु यह सब फिर भी होगा। भक्तों का रक्षक है भगवान क्योंकि सभी दुःखी हैं ना। बाप समझाते हैं कि द्वापर से लेकर तुम गुरू करते आये हो और भक्ति मार्ग में उतरते आये हो। अभी तक भी साधू लोग तो साधना करते हैं। बाप कहते हैं कि उन्हों का भी मैं उद्धार करता हूँ। संगम पर तुम्हारी सद्गति हो जाती है फिर तुम 84 जन्म लेते हो। बाप को कहा जाता है ज्ञान का सागर, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप। सत् चित् आनन्द स्वरूप है। वो कब विनाश नहीं होता, उनमें ज्ञान है। ज्ञान का सागर, प्यार का सागर है, जरूर

उनसे वर्सा मिलना चाहिए। अभी तुम बच्चों को वर्सा मिल रहा है। शिवबाबा है ना। वह भी बाबा है, यह भी तुम्हारा बाप है फिर शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा तुमको पढ़ाते हैं इसलिए प्रजापिता ब्रह्माकुमार कुमारियां कहा जाता है। कितने ढेर बी.के. हैं। कहते हैं कि हमको डांडे से वर्सा मिलता है। बच्चे कहते हैं बाबा हमको नर्कवासी से स्वर्गवासी बनाते हैं। कहते हैं हे बच्चे – मामेकम् याद करो तो तुम्हारे सिर पर जो पापों का बोझा है वह भस्म हो जायेगा। फिर तुम सतोप्रधान बन जायेंगे। तुम सच्चा सोना, सच्चे जेवर थे। आत्मा और शरीर दोनों सतोप्रधान थे। आत्मा फिर सतो रजो तमो होती है तो शरीर भी ऐसा तमोगुणी मिलता है। बाप तुमको राय देते हैं कि बच्चे मुझे याद करो। मुझे बुलाते हो ना कि हे पतित-पावन आओ। भारत का प्राचीन राजयोग मशहूर है। वह अब तुमको सिखला रहा हूँ कि मेरे साथ योग रखो तो इससे तुम्हारी खाद जल जायेगी। जितना याद करेंगे उतनी खाद निकलती जायेगी। याद की ही मुख्य बात है। नॉलेज जो बाप ने दी है। सतयुग में यथा राजा रानी तथा प्रजा सब पवित्र थे, अभी सब पतित हैं। बाप कहते हैं कि इनके बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में मैं प्रवेश करता हूँ। इसको कहा जाता है भाग्यशाली रथ। यह पढ़कर फिर पहले नम्बर में जाते हैं। नम्बरवार तो बनते हैं ना। मुख्य एक नाम होता है। बाप ने बच्चों को 84 जन्मों का राज़ अच्छी रीति समझाया है। तुम आदि सनातन देवी देवता धर्म के हो, न कि हिन्दू धर्म के। तुम कर्म श्रेष्ठ, धर्म श्रेष्ठ थे। फिर रावण के प्रवेश होने से धर्म-कर्म भ्रष्ट हो गये हो। अपने को देवी-देवता कहलाने में लज्जा आती है इसलिए हिन्दू नाम रख दिया है। वास्तव में आदि सनातन देवी-देवता धर्म के थे। तुमने 84 जन्म लिए हैं फिर पतित बन गये हो। 84 का चक्र भारतवासियों के लिए है। वापिस जाना तो सबको है। पहले तुम जायेंगे। जैसे बारात जाती है ना। शिवबाबा को साजन भी कहते हैं। तुम सजनियाँ इस समय छी-छी तमोप्रधान हो, उनको गुल-गुल बनाकर ले जायेंगे। आत्माओं को पावन बनाकर ले जायेंगे। इसको लिबरेटर, गाइड कहा गया है। बेहद का बाप ले जाता है। उनका नाम क्या है? शिवबाबा। नाम शरीर पर पड़ता है परन्तु परमात्मा का शिव ही नाम है। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का तो सूक्ष्म शरीर है। शिवबाबा का तो कोई शरीर है नहीं। उनको शिवबाबा ही कहते हैं। बच्चे कहते हैं, हे मात-पिता हम आपके बालक बने हैं। दूसरे तो पुकारते रहते हैं क्योंकि उन्हों को पता नहीं है। अगर सबको पता पड़ जाए तो मालूम नहीं क्या हो जाए। दैवी झाड़ का अभी सैपलिंग लगता है। हीरे से कौड़ी बनने में 84 जन्म लगते हैं। फिर नये सिरे से शुरू होगा। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होगी। बाप समझाते हैं कि तुमने पूरे 84 जन्म लिए हैं। 84 लाख तो हो न सके। यह बड़ी भूल है। 84 लाख जन्म समझने कारण कल्प की आयु लाखों वर्ष कह दी है। यह है बिल्कुल झूठ। भारत अब झूठखण्ड है। सचखण्ड में तुम सदा सुखी थे। इस समय तुम 21 जन्म का वर्सा लेते हो। सारा तुम्हारे पुरूषार्थ पर है। राजधानी में जो चाहो वह पद लो, इसमें जादू आदि की कोई बात नहीं है। हाँ मनुष्य से देवता जरूर बनते हैं। यह तो अच्छा जादू है ना। तुम सेकेण्ड में जान लेते हो कि हम बाबा के बच्चे बने हैं। कल्प-कल्प बाबा हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। आधाकल्प भटकते

आये हो, स्वर्गवासी तो कोई भी हुआ नहीं। बाप आकर तुम बच्चों को लायक बनाते हैं। बरोबर यहाँ महाभारत लड़ाई लगी थी और राजयोग सिखाया था। शिवबाबा कहते हैं कि मैं ही आकर तुमको सिखाता हूँ, न कि क्राइस्ट। अभी तुम्हारा बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है, मूँझो नहीं। तुम भारतवासी हो। तुम्हारा धर्म बहुत सुख देने वाला है और धर्म वाले तो बैकुण्ठ में आ नहीं सकते। यह भी ड्रामा अनादि चलता रहता है। कब बना यह कह नहीं सकते। इसकी नो एण्ड। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। यह है संगमयुग, छोटा युग। चोटी है ब्राह्मणों की। बाप तुम ब्राह्मणों को देवता बना रहे हैं। तो ब्रह्मा के बच्चे जरूर बनना पड़े। तुमको वर्सा मिलता है डाडे से। जब तक अपने को बी.के. नहीं समझें तब तक वर्सा कैसे मिले। फिर भी कोई कुछ न कुछ ज्ञान सुनते हैं तो साधारण प्रजा में आ जायेंगे। आना तो जरूर है। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय धर्म की स्थापना करते हैं। सिवाए गीता के दूसरा कोई भी शास्त्र है नहीं। गीता है ही सर्वोत्तम दैवी धर्म का शास्त्र जिससे 3 धर्म स्थापन होते हैं। ब्राह्मण भी यहाँ बनना है। देवता भी यहाँ ही बनेंगे। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार :-

१- हर एक के निश्चित पार्ट को जान सदा निश्चिंत रहना है। बनी बनाई बन रही.....ड्रामा पर अडोल रहना है।

२- इस छोटे से संगमयुग पर बाप से पूरा वर्सा लेना है। याद के बल से खाद निकाल स्वयं को कौड़ी से हीरे जैसा बनाना है। मीठे झाड़ के सैपलिंग में चलने के लिए लायक बनना है।

वरदान:- श्रीमत के आधार पर खुशी, शक्ति और सफलता का अनुभव करने वाले सर्व प्राप्ति सम्पन्न भव

जो बच्चे स्वयं को ट्रस्टी समझकर श्रीमत प्रमाण चलते हैं, श्रीमत में जरा भी मनमत या परमत मिक्स नहीं करते उन्हें निरन्तर खुशी, शक्ति और सफलता की अनुभूति होती है। पुरूषार्थ वा मेहनत कम होते भी प्राप्ति ज्यादा हो तब कहेंगे यथार्थ श्रीमत पर चलने वाले। परन्तु माया, ईश्वरीय मत में मनमत वा परमत को रायॅल रूप से मिक्स कर देती है इसलिए सर्व प्राप्तियों का अनुभव नहीं होता। इसके लिए परखने और निर्णय करने की शक्ति धारण करो तो धोखा नहीं खायेंगे।

स्लोगन:-

बालक सो मालिक वह है जो तपस्या के बल से भाग्यविधाता बाप को अपना बना दे।

*26-3-01 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – याद में रहकर दूसरों को याद का अभ्यास कराओ, योग कराने वाले का बुद्धि योग इधर-उधर नहीं भटकना चाहिए"

प्रश्नः- किन बच्चों के ऊपर बहुत बड़ी रेसपॉन्सिबिल्टी है? उन्हें कौन सा ध्यान जरूर देना चाहिए?

उत्तरः- जो बच्चे निमित्त टीचर बनकर दूसरों को योग कराते हैं, उन पर बहुत बड़ी रेसपॉन्सिबिल्टी है। अगर योग कराते समय बुद्धि बाहर भटकती है तो सर्विस के बजाए डिससर्विस करते हैं। इसलिए यह ध्यान रखना है कि मेरे द्वारा पुण्य का काम होता रहे।

गीतः- ओम् नमो शिवाए.....

ओम् शान्ति। बाप सभी बच्चों को पहले-पहले तो यहाँ बैठ करके लक्ष्य में टिकने के लिए दृष्टि देते हैं कि जैसे मैं शिवबाबा की याद में बैठा हूँ, तुम भी शिवबाबा की याद में बैठो। प्रश्न उठता है कि जो सामने बैठे हैं नेष्ठा कराने के लिए, वह सारा समय शिवबाबा की याद में रहते हैं? जो औरों को भी कशिश हो। याद में रहने से बहुत शान्ति में रहेंगे। अशरीरी हो शिवबाबा की याद में रहेंगे तो औरों को भी शान्ति में ले जायेंगे क्योंकि टीचर होकर बैठते हो ना। अगर टीचर ही ठीक रीति याद में नहीं होंगे तो दूसरे रह नहीं सकेंगे। पहले तो यह ख्याल करना है कि मैं जो उस माशूक बाबा का आशिक हूँ, उसकी याद में बैठा हूँ? हर एक ऐसे अपने से पूछे। अगर बुद्धि और तरफ चली जाती है। देह-अभिमान में आ जाते हैं तो गोया वह सर्विस नहीं, डिससर्विस करने बैठे हैं। यह बात समझ की है ना। कुछ सर्विस तो की नहीं। ऐसे ही बैठे हैं तो नुकसान ही करेंगे। टीचर का ही बुद्धियोग भटकता होगा तो वह मदद क्या करेंगे। जो टीचर हो बैठते हैं वह अपने से पूछें कि मैं पुण्य का काम कर रहा/रही हूँ? अगर पाप का काम करेंगे तो दुर्गति को पायेंगे। पद भ्रष्ट हो जायेगा। अगर ऐसे को गद्दी पर बिठाते हो तो तुम भी रेसपान्सिबुल हो। शिवबाबा तो सबको जानते हैं। यह बाबा भी सबकी अवस्था को जानते हैं। शिवबाबा कहेंगे यह टीचर बन बैठे हैं और इनका बुद्धियोग तो भटकता रहता है। यह क्या औरों को मदद करेंगे। तुम ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने हो, शिवबाबा का बनकर उनसे वर्सा लेने। बाबा कहते हैं हे आत्मायें मामेकम् याद करो। टीचर बन बैठते हो तो और ही अच्छी तरह उस अवस्था में बैठो। यूँ तो हर एक को बाप को याद करना है। स्टूडेन्ट अपनी अवस्था को समझ सकते हैं। जानते हैं कि हम पास होंगे वा नहीं। टीचर भी जानते हैं। अगर प्राइवेट टीचर रखते हैं, वह भी जानते हैं। इस पढ़ाई में कोई खास टीचर रखने चाहें तो रख सकते हैं। कोई कहते हमको निष्ठा (योग) में बिठाओ तो बाप की याद में बैठना है। बाप का फरमान ही है मामेकम् याद करो। तुम आशिक हो, चलते-फिरते अपने माशूक को याद करो। सन्यासी ब्रह्म को याद करते हैं। समझते हैं कि हम जाकर ब्रह्म में लीन होंगे। जो अधिक याद करते होंगे उनकी अवस्था अच्छी होगी। हर एक में कोई न कोई खूबी तो रहती है ना। कहते हैं कि याद की यात्रा में रहो। खुद को भी याद में रहना है। बाबा के पास कोई तो सच्चे भी हैं, कोई

झूठे भी हैं। खुद निरन्तर याद में रहें, बड़ा मुश्किल है। कोई तो बाप से बिल्कुल सच्चे रहते हैं। यह बाबा भी अपना अनुभव तुम बच्चों को बताते हैं कि थोड़ा समय याद में रहता हूँ फिर भूल जाता हूँ क्योंकि इसके ऊपर तो बहुत बोझ है। कितने ढेर बच्चे हैं। तुम बच्चों को यह भी पता नहीं पड़ता है कि यह मुरली शिवबाबा ने चलाई वा ब्रह्मा चलाते हैं क्योंकि दोनों इकट्ठे हैं ना। यह कहते हैं कि मैं भी शिवबाबा को याद करता हूँ। यह बाबा भी बच्चों को नेष्ठा कराते हैं। यह बैठते हैं तो देखते हो सन्नाटा अच्छा हो जाता है। बहुतों को खींचते हैं। बाप है ना। कहते हैं बच्चे याद की यात्रा में रहो। खुद को भी रहना है, सिर्फ पण्डित नहीं बनना है। याद में नहीं रहेंगे तो अन्त में फेल हो पड़ेंगे। बाबा मम्मा का तो ऊंच पद है, बाकी तो अभी माला बनी नहीं है। एक भी दाना बना हुआ कम्पलीट नहीं है। आगे माला बनाते थे बच्चों को लिफ्ट देने लिए। परन्तु देखा गया कि माया ने बहुतों को खत्म कर दिया। सारा मदार सर्विस पर है। तो जो सामने नेष्ठा कराने बैठते हैं उनको समझना है कि मैं सच्चा टीचर होकर बैठूँ। नहीं तो बोलना चाहिए कि हमारी बुद्धि यहाँ वहाँ चली जाती है। मैं यहाँ बैठने के लायक नहीं हूँ। स्वयं बताना चाहिए। ऐसे नहीं कि आपेही कोई भी आकर बैठे। कोई हैं जो मुख से मुरली नहीं चलाते, परन्तु याद में रहते हैं। लेकिन यहाँ तो दोनों में तीखा जाना चाहिए। साजन बहुत लवली है, उनको तो बहुत याद करना चाहिए। मेहनत है इसमें। बाकी प्रजा बनना तो सहज है। दास दासियाँ बनना बड़ी बात नहीं है। ज्ञान नहीं उठा सकते हैं। जैसे देखो यज्ञ की भण्डारी है, सबको बहुत खुश करती है, किसको दुःख नहीं देती, सब महिमा करते हैं। तो वाह, शिवबाबा की भण्डारी तो नम्बरवन है। बहुतों की दिल को खुश करती है। बाबा भी बच्चों की दिल को खुश करते आये हैं। बाप कहते हैं कि मुझे याद करो और यह चक्र बुद्धि में रखो। अब हर एक को अपना कल्याण करना है। हड्डी सर्विस करनी चाहिए। तुमको बहुत रहमदिल बनना चाहिए। मनुष्य मुक्ति जीवनमुक्ति के लिए बहुत धक्के खाते हैं। किसको भी सद्गति का मालूम ही नहीं है। समझते हैं कि जहाँ से आया वहाँ वापिस जाना है। नाटक भी समझते हैं परन्तु उस पर चलते नहीं हैं। देखो क्लास में कहाँ-कहाँ मुसलमान भी आते हैं। कहते हैं कि हम असुल देवी देवता धर्म के हैं फिर जाकर हम मुसलमान धर्म में कनवर्ट हो गये हैं। हमने 84 जन्म भोगे हैं। सिन्ध में भी 5-6 मुसलमान आते थे। अभी भी आते हैं, अब आगे चल सकते हैं वा नहीं, वह तो देख लेंगे क्योंकि माया भी तो परीक्षा लेती है। कोई तो पक्के ठहर जाते हैं, कोई ठहर नहीं सकते। जो असुल ब्राह्मण धर्म के होंगे, जिन्होंने 84 जन्म लिए होंगे वे तो कभी हिलेंगे नहीं। बाकी कोई न कोई कारणे, अकारणे चले जायेंगे। देह-अभिमान भी बहुत आ जाता है। तुम बच्चों को तो बहुतों का कल्याण करना है। नहीं तो क्या पद पायेंगे। घरबार छोड़ा है, अपने कल्याण के लिए। कोई बाप के ऊपर मेहरबानी नहीं करते हैं। बाप के बने हो तो फिर सर्विस भी ऐसी करनी चाहिए। तुमको तो राजाई का मैडल मिलता है, 21 जन्म सदा सुख की राजाई मिलती है। माया पर सिर्फ जीत पानी है और औरों को भी सिखाना है। कई फेल भी हो जाते हैं। समझते हैं कि बादशाही लेनी तो मुश्किल है। बाप कहते हैं कि ऐसा समझना कमजोरी है। बाप और वर्से को याद करना तो बहुत

सहज है। बच्चों में हिम्मत नहीं आती है राजाई लेने की, तो कायर हो बैठ जाते हैं। न खुद लेते, न औरों को लेने देते। तो परिणाम क्या होगा? बाप समझाते हैं कि रात-दिन सर्विस करो। कांग्रेसियों ने भी मेहनत की। कितनी जफाकसी की तब तो फॉरेनर्स से राज्य लिया। तुमको रावण से राज्य लेना है। वह तो सबका दुश्मन है। दुनिया को पता नहीं कि हम रावण की मत पर चल रहे हैं तब दु:खी हैं। किसको भी सच्चा स्थाई दिल का सुख थोड़ेही है। शिवबाबा कहते हैं मैं तुम बच्चों को सदा सुखी बनाने आया हूँ। अब श्रीमत पर चल श्रेष्ठ बनना है। जो भी भारतवासी हैं, वे अपने धर्म को भूल गये हैं। यथा राजा रानी तथा प्रजा। अब तुम बच्चों को समझ मिलती है – सृष्टि का चक्र कैसे चलता है। सो भी घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं। बुद्धि में ठहरता ही नहीं है। भल ब्राह्मण तो बहुत बनते हैं परन्तु कई कच्चे होने के कारण विकार में भी जाते रहते हैं। कहते हैं कि हम बी.के. हैं, परन्तु हैं नहीं। बाकी जो पूरी रीति डायरेक्शन पर चलते हैं, आप समान बनाते रहते हैं, वे ही ऊंच पद पा सकेंगे। विघ्न तो पड़ेंगे। अमृत पीते-पीते फिर जाकर विघ्न डालते हैं। यह भी गायन है, उनका पद क्या होगा? कई बच्चियां तो विकार के कारण मार भी खाती हैं, कहती हैं कि बाबा यह दु:ख थोड़ा सहन कर लेंगे। हमारा माशूक तो बाबा है ना। मार खाते भी हम शिवबाबा को याद करती हूँ। वह खुशी में बहुत रहती हैं। इस कापारी खुशी में रहना चाहिए। बाप से हम वर्सा ले रहे हैं औरों को भी हम आप समान बनाते रहते हैं।

बाबा की बुद्धि में तो यह सीढ़ी का चित्र बहुत रहता है। इसको बड़ा महत्व देते हैं। बच्चे जो विचार सागर मंथन कर ऐसे-ऐसे चित्र बनाते हैं, तो बाबा भी उनकी शुक्रिया करते हैं या तो ऐसे कहेंगे कि बाबा ने उस बच्चे को टच किया है। सीढ़ी बडी अच्छी बनाई है। 84 जन्मों को जानने से सारे सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो। यह फर्स्टक्लास चित्र है। त्रिमूर्ति गोले के चित्र से भी इसमें नॉलेज अच्छी है। अभी हम चढ़ रहे हैं। कितना सहज है। बाप आकर लिफ्ट देते हैं। शान्ति से बाप से वर्सा ले रहे हैं। सीढ़ी का ज्ञान बहुत अच्छा है। समझाना है कि तुम हिन्दू थोड़ेही हो, तुम तो देवी देवता धर्म के हो। अगर कहें कि हमने 84 जन्म थोड़ेही लिए हैं। अरे क्यों नहीं समझते हो कि हमने 84 जन्म लिए हैं। फिर याद करो तो तुम फिर से पहले नम्बर में आ जायेंगे। अपने कुल का होगा तो ऐसा प्रश्न करेगा नहीं कि सब थोड़ेही 84 जन्म लेंगे। अरे तुम क्यों समझते हो कि हम देरी से आये हैं। बाप सब बच्चों को कहते हैं तुम भारतवासियों ने 84 जन्म लिए हैं। अब फिर से अपना वर्सा लो, स्वर्ग में चलो। तुम बच्चे योग में बैठते हो। सीढ़ी को याद करो तो बहुत मौज में रहेंगे। हमने 84 जन्म पूरे किये हैं। अब हम वापिस जाते हैं। कितनी खुशी होती है। सर्विस करने का भी उल्लास रहना चाहिए। समझाने के तरीके भी बहुत मिल रहे हैं। सीढ़ी के ऊपर समझाओ। चित्र तो सब चाहिए ना। त्रिमूर्ति भी चाहिए। बाबा कहते भी हैं कि तुम जाओ ही मेरे भक्तों के पास, उनको यह ज्ञान सुनाओ। वह मिलेंगे ही मन्दिरों में। मन्दिरों में भी इस सीढ़ी के चित्र पर समझा सकते हो। सारा दिन बुद्धि में यह रहे कि हम बाबा का परिचय दे, किसका कल्याण करें। दिन-प्रतिदिन बुद्धि का ताला खुलता जायेगा। जिनको वर्सा पाना होगा – वह आयेंगे।

दिन-प्रतिदिन सीखते भी रहते हैं। कईयों पर ग्रहचारी बैठती है तो बाबा को समझाना पड़ता है। वह नहीं समझते कि हमारे ऊपर ग्रहचारी है। इसलिए हमसे सर्विस नहीं होती। सारी रेसपॉन्सिबिल्टी तुम बच्चों पर है। आप समान ब्राह्मण बनाते रहो। सर्विस पर रहने से बहुत खुशी होती है। बहुतों का कल्याण होता है। बाबा को बम्बई में सर्विस करने का बहुत मजा आता था। बहुत नये-नये आते थे। बाबा की तो बहुत दिल होती है कि सर्विस करें। बच्चों को भी ऐसा रहमदिल बनना चाहिए। सर्विस पर लग जाना चाहिए। दिल में यह रहना चाहिए कि जब तक हमने किसी को आप समान नहीं बनाया है तब तक भोजन नहीं खाना है। पहले पुण्य तो करूँ। पाप आत्मा को पुण्य आत्मा बनायें फिर रोटी खायें। तो सर्विस में जुटा रहना चाहिए। किसका जीवन सफल बनायें तब रोटी खायें। आप समान ब्राह्मण बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

बच्चों के लिए मैगज़ीन निकलती है लेकिन बी.के. इतना पढ़ते नहीं हैं। समझते हैं कि हमको थोडेही पढ़ना है। यह बाहर वालों के लिए है। बाबा कहते हैं बाहर वाले तो कुछ समझते नहीं हैं, बिगर टीचर के। यह है ब्रह्माकुमार कुमारियों के लिए तो पढ़कर रिफ्रेश हों। परन्तु वे पढ़ते नहीं हैं। सभी सेन्टर्स वालों से पूछते हैं कि सारी मैगज़ीन कौन पढ़ते हैं? मैगज़ीन से क्या समझते हैं? कहाँ तक ठीक है? मैगज़ीन निकालने वाले को भी आफरीन देनी चाहिए कि आपने बहुत अच्छी मैगजीन लिखी है, आपको धन्यवाद करते हैं। मेहनत करनी है, मैगज़ीन पढ़नी है। यह है बच्चों के रिफ्रेश होने के लिए। लेकिन बच्चे पढ़ते नहीं। जिनका नाम बाला है उन्हों को सब बुलाते हैं कि बाबा भाषण करने लिए हमारे पास फलाने को भेजो। बाबा फिर समझते हैं कि खुद भाषण करना नहीं जानते हैं तब तो मांगनी करते हैं। तो सर्विसएबुल को कितना रिगार्ड देना चाहिए। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- राजाई का मैड़ल लेने के लिए सबकी दिल को खुश करना है। बहुत-बहुत रहमदिल बन अपना और सर्व का कल्याण करना है। हड्डी सेवा करनी है।

२- देह-अभिमान में आकर डिससर्विस नहीं करनी है। सदा पुण्य का काम करना है। आप समान ब्राह्मण बनाने की सेवा करनी है। सर्विसएबुल का रिगार्ड रखना है।

वरदान:- अपने प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करने वाले श्रेष्ठ तकदीरवान भव

कोई भी बात को स्पष्ट करने के लिए अनेक प्रकार के प्रमाण दिये जाते हैं। लेकिन सबसे श्रेष्ठ प्रमाण प्रत्यक्ष प्रमाण है। प्रत्यक्ष प्रमाण अर्थात् जो हो, जिसके हो उसकी स्मृति में रहना। जो बच्चे अपने यथार्थ वा अनादि स्वरूप में स्थित रहते हैं वही बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त हैं। उनके भाग्य को देखकर भाग्य बनाने वाले की याद स्वत: आती है।

स्लोगन:-

अपने रहम की दृष्टि से हर आत्मा को परिवर्तन करने वाले ही पुण्य आत्मा हैं।

28-3-01 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – जैसे बाप-दादा दोनों निरहंकारी हैं, देही-अभिमानी हैं, ऐसे फॉलो फादर करो, तो सदा उन्नति होती रहेगी"

प्रश्नः- ऊंच पद की प्राप्ति के लिए कौन सी खबरदारी रखना जरूरी है?

उत्तरः- ऊंच पद पाना है तो खबरदारी रखो कि मन्सा से भी किसी को मेरे द्वारा दुःख न हो, 2- किसी भी परिस्थिति में क्रोध न आये, 3- बाप का बनकर बाप के कार्य में, इस रूद्र यज्ञ में विघ्न रूप न बनें। अगर कोई मुख से बाबा-बाबा कहे और चलन रॉयल न हो तो ऊंच पद नहीं मिल सकता।

ओम् शान्ति। बच्चे अच्छी तरह से जानते हैं कि बाप से वर्सा पाना है जरूर। कैसे? श्रीमत पर। बाप ने समझाया है एक ही गीता शास्त्र है जिसमें श्रीमत भगवानुवाच है। भगवान तो सबका बाप है। श्रीमत भगवानुवाच। तो जरूर भगवान ने आकर श्रेष्ठ बनाया होगा, तब तो उसकी महिमा है। श्रीमत भगवत गीता अर्थात् श्रीमत भगवानुवाच। भगवान तो जरूर ऊंच ते ऊंच ठहरा। श्रीमत भी उस ही एक शास्त्र में गाई हुई है और कोई शास्त्र में श्रीमत भगवानुवाच नहीं है। श्रीमत किसकी होनी चाहिए वह लिखने वाले भी समझ न सकें। उसमें भूल क्यों हुई है? वह भी बाप आकर समझाते हैं। रावण राज्य शुरू होने से ही रावण मत पर चल पड़ते हैं। पहले कड़े ते कड़ी भूल इन रावण मत वालों ने की है। रावण की चमाट लगती है। जैसे कहा जाता है शंकर प्रेरक है, बॉम्बस आदि बनवाये हैं। वैसे 5 विकारों रूपी रावण प्रेरक है मनुष्य को पतित बनाने का, तब तो पुकारते हैं पतित-पावन आओ। तो पतित-पावन एक ही ठहरा ना। इससे सिद्ध है कि पतित बनाने वाला और है, पावन बनाने वाला और है। दोनों एक हो नहीं सकते। यह बातें तुम ही समझते हो – नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। ऐसे मत समझना कि सभी को निश्चय है। नम्बरवार हैं। जितना निश्चय है उतनी खुशी बढ़ती है। बाप की मत पर चलना होता है। श्रीमत पर हमको यह स्वराज्य पद पाना है। मनुष्य से देवता बनने में देरी नहीं लगती है। तुम पुरूषार्थ करते हो। मम्मा बाबा को फॉलो करते हो। जैसे वह आप समान बनाने की सर्विस कर रहे हैं, तुम भी समझते हो हम क्या सर्विस कर रहे हैं और मम्मा बाबा क्या सर्विस कर रहे हैं। बाबा ने समझाया था कि शिवबाबा और ब्रह्मा दादा दोनों इकट्ठे हैं। तो समझना चाहिए कि सबसे नजदीक हैं। इनका ही सम्पूर्ण रूप सूक्ष्मवतन में देखते हैं तो जरूर यह तीखा होगा। परन्तु जैसे बाप निरहंकारी है, देही-अभिमानी है वैसे यह दादा भी निरहंकारी है। कहते हैं कि शिवबाबा ही समझाते रहते हैं। जब मुरली चलती हैं तो बाबा खुद कहते हैं कि समझो कि शिवबाबा इन द्वारा सुना रहे हैं। यह ब्रह्मा भी जरूर सुनता होगा। यह न सुने और न सुनाये तो ऊंच पद कैसे पाये। परन्तु अपना देह-अभिमान छोड़ कहते हैं कि ऐसे समझो कि शिवबाबा ही सुनाते हैं। हम पुरूषार्थ करते रहते हैं। शिवबाबा ही समझाते हैं। इसने तो पतित-पना पास किया हुआ है। मम्मा तो कुमारी थी। तो मम्मा ऊंच चली गई। तुम भी कुमारियाँ मम्मा को फॉलो करो। गृहस्थियों को बाबा

को फॉलो करना चाहिए। हर एक को समझना है कि मैं पतित हूँ, मुझे पावन बनना है। मुख्य बात बाप ने याद के यात्रा की सिखलाई है। इसमें देह-अभिमान नहीं रहना चाहिए। अच्छा कोई मुरली नहीं सुना सकते तो याद की यात्रा पर रहो। यात्रा पर रहते मुरली चला सकते हैं। परन्तु यात्रा भूल जाते हैं तो भी हर्जा नहीं। (मुरली चलाकर फिर यात्रा पर लग जाओ क्योंकि वह वाणी से परे वानप्रस्थ अवस्था है।) मूल बात है देही-अभिमानी हो बाप को याद करते रहें और चक्र को याद करते रहें। किसी को दु:ख न दें। यही समझाते रहें बाप को याद करो। यह है यात्रा। मनुष्य जब मरते हैं तो कहते हैं – स्वर्ग पधारा। अज्ञान काल में कोई स्वर्ग को याद नहीं करते हैं। स्वर्ग को याद करना माना यहाँ से मरना। ऐसे तो कोई याद नहीं करते। अभी तुम बच्चे जानते हो हमको वापिस जाना है। बाप कहते हैं – जितना तुम याद करेंगे उतना खुशी का पारा चढ़ेगा वर्सा याद रहेगा। जितना बाप को याद करेंगे उतना हर्षित भी रहेंगे। बाप को याद न करने से मूँझते हैं। घुटका खाते रहते हैं। तुम इतना समय याद कर नहीं सकते। (बाबा ने आशिक माशूक का मिसाल बताया है। वह भल धंधा करते हैं और वह भल चर्खा चलाते रहते तो भी उसके सामने माशूक आकर खड़ा हो जाता। आशिक माशूक को याद करते, माशूक फिर आशिक को याद करते। यहाँ तो सिर्फ तुमको एक बाप को याद करना है। बाप को तो तुमको याद नहीं करना है। बाप सबका माशूक है। तुम बच्चे लिखते हो कि बाबा आप हमको याद करते हो? अरे जो सबका माशूक है वह फिर तुम आशिकों को याद कैसे कर सकेंगे? हो नहीं सकता। वह है ही माशूक। आशिक बन नही सकता।) तुमको ही याद करना है। तुम हर एक को आशिक बनना है, उस एक माशूक का। अगर वह आशिक बने तो कितने को याद करे। यह तो हो नहीं सकता। कहता है कि मेरे ऊपर पापों का बोझ थोड़ेही है जो किसको याद करें। तुम्हारे ऊपर बोझा है। बाप को याद नहीं करेंगे तो पापों का बोझा नहीं उतरेगा। बाकी मुझे क्यों किसको याद करना पड़े। याद करना है तुम आत्माओं को। जितना याद करेंगे उतना पुण्य आत्मा बनेंगे, पाप कटते जायेंगे। बड़ी मंजिल है। देही-अभिमानी बनने में ही मेहनत है। यह नॉलेज सारी तुमको मिल रही है। तुम त्रिकालदर्शी बने हो, नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। सारा चक्र तुम्हारी बुद्धि में रहना चाहिए। बाप समझाते हैं तुम लाईट हाउस हो ना। हर एक को रास्ता बताने वाले हो, शान्तिधाम और सुखधाम का। यह सब नई बातें तुम सुनते हो। जानते हो कि बरोबर हम आत्मायें शान्तिधाम के रहवासी हैं। यहाँ पार्ट बजाने आते हैं। हम एक्टर हैं। यही चिंतन बुद्धि में चलता रहे तो मस्ती चढ़ जाये। बाप ने समझाया है आदि से लेकर अन्त तक तुम्हारा पार्ट है। अभी कर्मातीत अवस्था में जरूर जाना है फिर गोल्डन एज़ में आना है। इस धुन में रहते अपना कल्याण करना है। सिर्फ पण्डित नहीं बनना है। दूसरे को सिखाते रहेंगे, खुद उस अवस्था में नहीं रहेंगे तो असर पड़ेगा नहीं। अपना भी पुरूषार्थ करना है। बाप भी बताते हैं कि हम भी याद करने की कोशिश करता हूँ। कभी माया का तूफान ऐसा आता है जो बुद्धि का योग तोड़ देते हैं। बहुत बच्चे चार्ट भेज देते हैं। वन्डर खाता हूँ कि यह तो हमसे भी तीखे जाते हैं। शायद वेग आता है तो चार्ट लिखने

में लग जाते हैं परन्तु ऐसी अगर तीखी दौड़ी पहनें तो नम्बरवन में चले जायें। परन्तु नहीं वह सिर्फ चार्ट लिखने तक है। ऐसे नहीं लिखते कि बाबा इतनों को आप समान बनाया। और वह भी लिखे बाबा हमको इसने यह रास्ता बताया है। ऐसा समाचार नहीं आता है। तो बाबा क्या समझेंगे? सिर्फ चार्ट भेजने से काम नहीं चलता। आप समान भी बनाना है। रूप और बसन्त दोनों बनना है। नहीं तो बाप समान नहीं ठहरे। रूप भी बसन्त भी एक्यूरेट बनना है। इसमें ही मेहनत है। देह-अभिमान मार डालता है। रावण ने देह-अभिमानी बनाया है। अभी तुम देही-अभिमानी बनते हो। फिर आधाकल्प के बाद माया रावण देह-अभिमानी बनाती है। देही-अभिमानी तो बहुत मीठा बन जाते हैं। सम्पूर्ण तो अभी कोई भी बना नहीं है। इसलिए बाबा हमेशा कहते हैं कि किसी के भी दिल को रंज नहीं करना है, दु:ख नहीं देना है। सबको बाप का परिचय दो। बोलने करने की भी बड़ी रॉयल्टी चाहिए। ईश्वरीय सन्तान के मुख से सदैव रत्न निकलने चाहिए। तुम मनुष्यों को जीयदान देते हो। रास्ता बताना है और समझाना है। तुम परमात्मा के बच्चे हो ना। उनसे तुमको स्वर्ग की राजाई मिलनी चाहिए। फिर अब वह क्यों नहीं है। याद करो बरोबर बाप से वर्सा मिला था ना। तुम भारतवासी देवी देवतायें थे, तुमने ही 84 जन्म लिए। तुम समझो कि हम ही लक्ष्मी नारायण के कुल के थे। अपने को कम क्यों समझते हो। अगर कहते कि बाबा सब थोड़ेही बनेंगे। तो बाबा समझ जाता कि यह इस कुल का नहीं। अभी से ही थिरकने लग पड़ा है। तुमने 84 जन्म लिए हैं। बाप ने 21 जन्मों की प्रालब्ध जमा कराई वह खाया फिर ना (समाप्त) होना शुरू हो गई। कट चढ़ते-चढ़ते तमोप्रधान कौड़ी मिसल बन पड़े हो। (भारत ही 100 प्रतिशत सॉलवेन्ट था। इन्हों को यह वर्सा कहाँ से मिला? एक्टर्स ही बता सकेंगे ना। मनुष्य ही एक्टर हैं। उनको यह पता होना चाहिए कि इन लक्ष्मी-नारायण को बादशाही मिली कहाँ से? कितनी अच्छी-अच्छी प्वाईट्स हैं। जरूर आगे जन्म में ही यह राज्य भाग्य पाया होगा। (f)

बाप ही पतित-पावन है। बाप कहते हैं कि मैं तुमको कर्म, अकर्म और विकर्म की गति समझाता हूँ। रावण राज्य में मनुष्य के कर्म विकर्म हो जाते हैं। वहाँ तुम्हारे कर्म अकर्म होते हैं। वह है दैवी सृष्टि। मैं रचता हूँ तो जरूर मुझे संगम पर आना पड़े। यह है रावण राज्य। वह है ईश्वरीय राज्य। ईश्वर अब स्थापना करा रहे हैं। तुम सब ईश्वर के बच्चे हो, तुमको वर्सा मिल रहा है। भारतवासी ही सॉलवेन्ट थे, अब इन्सॉलवेन्ट बन गये हैं। यह बना बनाया ड्रामा है, इसमें फ़र्क नहीं हो सकता।) सबका झाड़ अपना-अपना है। वैराइटी झाड़ है ना। देवता धर्म वाले ही फिर देवता धर्म में आयेंगे। क्रिश्चियन धर्म वाले अपने धर्म में खुश हैं औरों को भी अपने धर्म में खींच लिया है। भारतवासी अपने धर्म को भूलने के कारण वह धर्म अच्छा समझ चले जाते हैं। विलायत में नौकरी के लिए कितने जाते हैं क्योंकि वहाँ कमाई बहुत है। ड्रामा बड़ा वण्डरफुल बना हुआ है। इसको समझने की अच्छी बुद्धि चाहिए। विचार सागर मंथन करने से सब कुछ समझ में आ जाता है। यह बना बनाया अनादि ड्रामा है। तो तुम बच्चों को आपसमान सदा सुखी बनाना है। यह तुम्हारा धन्धा है पतितों से पावन बनाना। जैसे बाप का धंधा वैसे तुम्हारा। तुम्हारा (g)

मुखड़ा सदैव देवताओं जैसा हर्षित होना चाहिए खुशी में। तुम जानते हो हम विश्व के मालिक बनते हैं। तुम हो लवली चिल्ड्रेन। क्रोध पर बड़ी खबरदारी रखनी है। बाप आये हैं बच्चों को सुख का वर्सा देने। स्वर्ग का रास्ता सबको बताना है। बाप सुख कर्ता, दु:ख हर्ता है। तो तुमको भी सुख कर्ता बनना है। किसको दु:ख नहीं देना है। दु:ख देंगे तो तुम्हारी सज़ा 100 गुणा बढ़ जायेगी। कोई भी सजा से बच नहीं सकता। (बच्चों के लिए तो खास ट्रिब्युनल बैठती है।) बाप कहते कि तुम विघ्न डालेंगे तो बहुत सजा खायेंगे। कल्प-कल्पान्तर तुम साक्षात्कार करेंगे कि फलाने यह बनेंगे। आगे जब देखते थे तो बाबा मना करते थे कि न सुनाओ। अन्त में तो एक्यूरेट मालूम पड़ता जायेगा। (आगे चलकर जोर से साक्षात्कार होंगे। वृद्धि तो होती जायेगी। आबू तक क्यू लग जायेगी। बाबा से कोई भी मिल नहीं सकेंगे। कहेंगे अहो प्रभू तेरी लीला। यह भी गाया हुआ तो है ना। विद्वान, पण्डित आदि भी पीछे आयेंगे। उन्हों के सिंहासन भी हिलेंगे। तुम बच्चे तो बहुत खुशी में रहेंगे।)

अच्छा -- मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार। ऐसी यादप्यार एक ही बार मिलती है। जितना तुम याद करते हो उतना तुम प्यार पाते हो। विकर्म विनाश होते हैं और धारणा भी होती है। बच्चों को खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। जो भी आये उनको रास्ता बतायें। बेहद का वर्सा बेहद के बाप से पाना है। कम बात है क्या? ऐसा पुरूषार्थ करना चाहिए।

अच्छा -- रूहानी बापदादा का रूहानी बच्चों को याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार :-

१- बोलने चलने में बहुत रॉयल बनना है। मुख से सदैव रत्न निकालने हैं। आप समान बनाने की सेवा करनी है। किसी की दिल को रंज नहीं करना है।

२- क्रोध पर बड़ी खबरदारी रखनी है। मुखड़ा सदैव देवताओं जैसा हर्षित रखना है। स्वयं को ज्ञान योगबल से देवता बनाना है।

वरदान:- अपने एकाग्र स्वरूप द्वारा सूक्ष्म शक्ति की लीलाओं का अनुभव करने वाले अन्तर्मुखी भव

एकाग्रता का आधार अन्तर्मुखता है। जो अन्तर्मुखी हैं वे अन्दर ही अन्दर सूक्ष्म शक्ति की लीलाओं का अनुभव करते हैं। आत्माओं का आह्वान करना, आत्माओं से रूहरिहान करना, आत्माओं के संस्कार स्वभाव को परिवर्तन करना, बाप से कनेक्शन जुड़वाना—ऐसे रूहों की दुनिया में रूहानी सेवा करने के लिए एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ, इससे सर्व प्रकार के विघ्न स्वत: समाप्त हो जायेंगे।

स्लोगन:-

सर्व प्राप्तियों को स्वयं में धारण कर विश्व की स्टेज पर प्रत्यक्ष होना ही प्रत्यक्षता का आधार है।

53 -शिवजंयती

9-4-01 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - योग से ही आत्मा की खाद निकलेगी, बाप से पूरा वर्सा मिलेगा, इसलिए जितना हो सके योगबल बढ़ाओ"

प्रश्नः- देवी देवताओं के कर्म श्रेष्ठ थे, अभी सबके कर्म भ्रष्ट क्यों बने हैं?
उत्तरः- क्योंकि अपने असली धर्म को भूल गये हैं। धर्म भूलने के कारण ही जो कर्म करते हैं वह भ्रष्ट होते हैं। बाप तुम्हें अपने सत धर्म की पहचान देते हैं, साथ-साथ सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाते हैं, जो सबको सुनानी है, बाप का सत्य परिचय देना है।

गीतः- मुखड़ा देख ले प्राणी....

ओम् शान्ति। यह किसने कहा और किसको? बाप ने कहा बच्चों को। जिन बच्चों को पतित से पावन बना रहे हैं। बच्चे जान गये हैं हम भारतवासी जो देवी देवता थे, वह अब 84 जन्मों का चक्र लगाए सतोप्रधान से पास कर अब सतो, रजो, तमो और अब तमोप्रधान बन गये हैं। अब फिर पतितों को पावन बनाने वाला बाप कहते हैं, अपने दिल से पूछो कि कहाँ तक हम पुण्य आत्मा बने हैं? तुम सतोप्रधान पवित्र आत्मा थे, जब यहाँ पहले-पहले तुम देवी-देवता कहलाते थे, जिसको आदि सनातन देवी देवता धर्म कहा जाता था। अभी कोई भारतवासी अपने को देवी देवता धर्म के नहीं कहलाते। हिन्दू तो कोई धर्म है नहीं। परन्तु पतित होने के कारण अपने को देवता कहला नहीं सकते। सतयुग में देवतायें पवित्र थे। पवित्र प्रवृति मार्ग था, यथा राजा-रानी तथा प्रजा पवित्र थे। भारतवासियों को बाप याद दिलाते हैं कि तुम पवित्र प्रवृति मार्ग वाले आदि सनातन देवी देवता धर्म वाले थे, उसको स्वर्ग कहा जाता था। वहाँ एक ही धर्म था। पहला नम्बर महाराजा-महारानी, लक्ष्मी-नारायण थे। उनकी भी डिनायस्टी थी और भारत बहुत धनवान था, वह सतयुग था। फिर आये त्रेता में तब भी पूज्य देवी-देवता वा क्षत्रिय कहलाते थे। वह लक्ष्मी-नारायण का राज्य, वह सीता-राम का राज्य, वह भी डिनायस्टी चली। जैसे क्रिश्चियन में एडवर्ड दी फर्स्ट, सेकेण्ड..... ऐसे चलता है। वैसे भारत में भी ऐसे था। 5 हजार वर्ष की बात है अर्थात् 5 हजार वर्ष पहले भारत पर इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। परन्तु उन्होंने यह राज्य कब और कैसे पाया—यह कोई नहीं जानते। वही सूर्यवंशी राज्य फिर चन्द्रवंशी में आया क्योंकि पुनर्जन्म लेते-लेते सीढ़ी उतरनी है। यह भारत की हिस्ट्री-जॉग्राफी कोई नहीं जानते। रचता है बाप तो जरूर सतयुगी नई दुनिया का रचता ठहरा। बाप कहते हैं बच्चे, तुम आज से 5 हजार वर्ष पहले स्वर्ग में थे। यह भारत स्वर्ग था फिर नर्क में आये हैं। दुनिया तो इस वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को नहीं जानती। वह तो अधूरी सिर्फ पिछाड़ी की हिस्ट्री जानते हैं। सतयुग-त्रेता की हिस्ट्री-जॉग्राफी को कोई नहीं जानते। ऋषि-मुनि भी कहते गये हम रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते हैं। जाने भी कोई कैसे, बाप तुमको ही बैठ समझाते हैं। शिवबाबा भारत में ही दिव्य जन्म लेते हैं, जिसकी शिव जयन्ती भी होती है। शिवजयन्ती के बाद फिर चाहिए गीता जयन्ती। फिर साथ-साथ होनी चाहिए कृष्ण जयन्ती। परन्तु इस जयन्ती का राज़ भारतवासी जानते नहीं हैं कि शिव जयन्ती कब हुई!

और धर्म वाले तो झट बतायेंगे – बुद्ध जयन्ती, क्राइस्ट जयन्ती कब हुई। भारतवासियों से पूछो शिवजयन्ती कब हुई? कोई नहीं बतायेंगे। शिव भारत में आया, आकर क्या किया? कोई नहीं जानते। (शिव ठहरा सब आत्माओं का बाप। आत्मा है अविनाशी।) आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। यह 84 का चक्र है। शास्त्रों में तो 84 लाख जन्म का गपोड़ा लगा दिया है। बाप आकर राइट बात बताते हैं। (बाप के सिवाए बाकी सब रचता और रचना के लिए झूठ ही बोलते हैं क्योंकि यह है ही माया का राज्य। पहले तुम पारसबुद्धि थे, भारत पारसपुरी था। सोने, हीरे, जवाहरों के महल थे। बाप बैठ रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ अर्थात् दुनिया की हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं। भारतवासी यह नहीं जानते कि हम सो पहले-पहले देवी-देवता थे, अभी पतित, कंगाल, इरिलीजस बन गये हैं, अपने धर्म को भूल गये हैं। यह भी ड्रामा अनुसार होना है। (तो यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी बुद्धि में आनी चाहिए ना। ऊंच ते ऊंच बाप है - सब आत्माओं का बाप। फिर है सूक्ष्मवतन। यह है स्थूलवतन। सूक्ष्मवतन में सिर्फ ब्रह्मा-विष्णु-शंकर रहते हैं। उनकी दूसरी कोई हिस्ट्री-जॉग्राफी नहीं है। यह तीन तबके हैं। गॉड इज वन। उनकी रचना भी एक है। जो चक्र फिरता रहता है।) सतयुग से त्रेता फिर द्वापर, कलियुग में आना पड़े। 84 जन्मों का हिसाब चाहिए ना, जो कोई भी नहीं जानते हैं। न कोई शास्त्र में है। 84 जन्मों का पार्ट तुम बच्चे ही बजाते हो। बाप तो इस चक्र में नहीं आते हैं। बच्चे ही पावन से पतित बन जाते हैं इसलिए चिल्लाते हैं - बाबा आकर हमको फिर से पावन बनाओ। एक को ही सब पुकारते हैं। रावण राज्य में जो सब दु:खी हो पड़े हैं, (उनको आकर लिबरेट करो फिर रामराज्य में ले जाओ। आधाकल्प है रामराज्य। आधाकल्प है रावण राज्य। भारतवासी जो पवित्र थे वही पतित बनते हैं। वाम मार्ग में जाने से पतित होना शुरू होते हैं।) भक्ति मार्ग शुरू होता है। अभी तुम बच्चों को ज्ञान सुनाया जाता है, जिससे आधाकल्प, 21 जन्म के लिए तुम सुख का वर्सा पाते हो। आधाकल्प ज्ञान की प्रालब्ध चलती है, फिर रावण राज्य होता है। गिरने लग पड़ते हैं। तुम दैवी राज्य में थे फिर आसुरी राज्य में आ गये हो, इसको हेल भी कहते हैं। तुम हेविन में थे फिर 84 जन्म पास कर हेल में आकर पड़े हो। वह था सुखधाम। यह है दु:खधाम, 100 परसेन्ट इनसालवेन्ट। 84 जन्मों का चक्र लगाते, वही भारतवासी पूज्य से पुजारी बन गये हैं। इसको ही वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्रांफी कहा जाता है। यह है सारा तुम भारतवासियों का चक्र, और धर्म वाले तो 84 जन्म नहीं लेते हैं। वह सतयुग में होते ही नहीं। सतयुग त्रेता में सिर्फ भारत ही था। सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी फिर वैश्य वंशी, शूद्रवंशी....अभी फिर तुम आकर ब्राह्मण वंशी बने हो, देवता वंशी बनने के लिए। यह है भारत के वर्ण। अभी तुम ब्राह्मण बनने से शिवबाबा से वर्सा ले रहे हो। बाप तुमको पढ़ा रहे हैं, 5 हजार वर्ष पहले मुआफ़िक। कल्प-कल्प तुम पावन बन फिर पतित बनते हो। सुखधाम में जाकर फिर दु:खधाम में आते हो। फिर शान्तिधाम में जाना है, जिसको निराकारी दुनिया कहा जाता है। आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, यह कोई भी मनुष्य नहीं जानते हैं। आत्मा भी एक स्टार बिन्दी है। कहते हैं – भ्रकुटी के बीच में सितारा चमकता है, छोटी सी बिन्दी है, जिसको दिव्य दृष्टि से देखा जा सकता है। वास्तव में स्टार भी

नहीं कहा जायेगा। स्टार तो बहुत बड़ा है - सिर्फ दूर होने के कारण छोटा दिखाई पड़ता है। यह सिर्फ एक मिसाल दिया जाता है। आत्मा इतनी छोटी है जैसे ऊपर में स्टार छोटा दिखाई पड़ता है। बाप की आत्मा भी एक बिन्दी मिसल है। उनको सुप्रीम आत्मा कहा जाता है। उनकी महिमा अलग है। मनुष्य सृष्टि का चैतन्य बीज रूप होने के कारण उनमें सारा ज्ञान है। तुम्हारी आत्मा को भी अभी नॉलेज मिल रही है। आत्मा ही नॉलेज ग्रहण कर रही है, इतनी छोटी बिन्दी में 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है। सो भी अविनाशी, 84 जन्मों का चक्र लगाते आये हो। इसकी इन्ड हो नहीं सकती। देवता थे, दैत्य बने फिर सो देवता बनना है। यह चक्र चलता आया है। बाकी तो सब हैं बाईप्लाटा इस्लामी, बौद्धी आदि कोई 84 जन्म नहीं लेते हैं। यही सतयुग भारत में राइटियस सालवेन्ट था फिर 84 जन्म ले विशश बने हैं। यह विशश वर्ल्ड है। 5 हजार वर्ष पहले प्योरिटी थी, पीस भी थी, प्रासपर्टी भी थी। बाप बच्चों को याद दिलाते हैं। मुख्य है - प्योरिटी। इसलिए कहते हैं विशश को वाइसलेस बनाने वाले आओ। वही सद्गति देने वाला है, इसलिए वही सतगुरू है। अभी तुम बाप द्वारा बेगर टू प्रिन्स बन रहे हो अथवा नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनते हो। तुम्हारा यह राजयोग है। भारत को ही अब बाप द्वारा राजाई मिलती है। आत्मा ही 84 जन्म लेती है। आत्मा ही पढ़ती है, शरीर द्वारा। शरीर नहीं पढ़ता। आत्मा संस्कार ले जाती है। मैं आत्मा इस शरीर द्वारा पढ़ती हूँ - इसको देही-अभिमानी कहा जाता है। आत्मा अलग हो जाती है तो शरीर कोई काम का नहीं रहता है। आत्मा कहती है, अब मैं पुण्य आत्मा बन रही हूँ। मनुष्य देह-अभिमान में आकर कह देते हैं यह करता हूँ....तुम अभी समझते हो हम आत्मा हैं, यह हमारा शरीर बड़ा है। परमात्मा बाप द्वारा मैं आत्मा पढ़ रही हूँ। बाप कहते हैं, मामेकम् याद करो। तुम गोल्डन एज में सतोप्रधान थे फिर तुम्हारे में अल्लाए पड़ी है। खाद पड़ते-पड़ते तुम पावन से पतित बन पड़े हो। अब फिर पावन बनना है। इसलिए कहते हैं – हे पतित-पावन आओ, आकर हमको पावन बनाओ, तो बाप राय देते हैं हे पतित आत्मा मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे से खाद निकलेगी और तुम पावन बन जायेंगे। उनको प्राचीन योग कहा जाता है। इस याद अर्थात् योग अग्नि से खाद भस्म होगी। मूल बात है - पतित से पावन बनना। साधू-सन्त आदि सब पतित हैं। पावन बनने का उपाय बाप ही बताते हैं – मामेकम् याद करो। यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो। खाते-पीते, चलते-फिरते मामेकम् याद करो क्योंकि तुम सब आत्माओं का (आशिकों का) माशूक, मैं हूँ। तुमको हमने पावन बनाया था फिर पतित बने हो। सभी भक्तियां आशिक हैं। माशूक कहते हैं कर्म भी भल करो। बुद्धि से मुझे याद करते रहो तो विकर्म विनाश होंगे। यह मेहनत है। तो बाप को याद करना चाहिए ना, वर्सा पाने के लिए। जो जास्ती याद करेंगे उनको वर्सा भी जास्ती मिलेगा। यह है याद की यात्रा। जो जास्ती याद करेंगे वही पावन बन आकर मेरे गले का हार बनेंगे। सभी आत्माओं का निराकारी दुनिया में एक सिजरा बना हुआ है। उनको इनकारपोरियल ट्री कहा जाता है। यह है कारपोरियल ट्री, निराकारी दुनिया से सबको नम्बरवार आना है, आते ही रहना है। झाड़ कितना बड़ा है। आत्मा यहाँ आती है पार्ट बजाने। जो भी सब आत्मायें हैं, सभी इस ड्रामा के एक्टर्स हैं।

आत्मा अविनाशी है, उसमें पार्ट भी अविनाशी है। ड्रामा कब बना, यह कह नहीं सकते। यह चलता ही रहता है। भारतवासी पहले-पहले सुख में थे फिर दुःख में आये, फिर शान्तिधाम में जाना है। फिर बाप सुखधाम में भेज देंगे। उसमें जो जितना पुरूषार्थ कर ऊंच पद पाये, बाप किंगडम स्थापन करते हैं। उसमें पुरूषार्थ अनुसार राजाई में पद पायेंगे। सतयुग में तो जरूर थोड़े मनुष्य होंगे। आदि सनातन देवी देवता धर्म का झाड़ छोटा है, बाकी सब विनाश हो जायेंगे। यह आदि सनातन देवी देवता धर्म स्थापन हो रहा है अर्थात् स्वर्ग के गेट खुल रहे हैं। 5 हजार वर्ष पहले भी इस लड़ाई के बाद स्वर्ग की स्थापना हुई थी। अनेक धर्म विनाश हो गये थे। इस लड़ाई को कहा जाता है, कल्याणकारी लड़ाई। अब नर्क के गेट खुले हैं, फिर स्वर्ग के गेट खुलेंगे। (स्वर्ग के द्वार बाप खोलते हैं, नर्क के द्वार रावण खोलते हैं। बाप वर्सा देते हैं, रावण श्राप देते हैं। यह बातें दुनिया नहीं जानती, तुम बच्चों को समझाता हूँ।) एज्यूकेशन मिनिस्टर भी बेहद की नॉलेज चाहते हैं। सो तो तुम ही दे सकते हो। (परन्तु तुम हो गुप्त। तुमको पहचानते ही नहीं है। तुम योगबल से अपनी राजाई ले रहे हो। लक्ष्मी-नारायण ने यह राज्य कैसे पाया सो तुम जानते हो। इसको कहा जाता है आस्पीशियस कल्याणकारी युग। जबकि बाप आकर पावन बनाते हैं। कृष्ण को तो सभी बाप नहीं कहेंगे। बाप निराकार को कहा जाता है, उस बाप को याद करना है, पावन भी बनना है। विकारों को जरूर छोड़ना पड़े। भारत वाइसलेस सुखधाम था अब विशश, दुःखधाम है। वर्थ नॉट ए पेनी है। यह ड्रामा का खेल है, जिसको बुद्धि में धारण करके औरों को भी कराना है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- याद से पावन बन बाप के गले का हार बनना है। कर्म करते भी बाप की याद में रह विकर्माजीत बनना है।

२- पुण्य आत्मा बनने का पूरा-पूरा पुरूषार्थ करना है। देह-अभिमान छोड़ देही-अभिमानी बनना है।

वरदान:- सदा साथीपन की स्मृति और साक्षी स्टेज का अनुभव करने वाले शिवमई शक्ति स्वरूप कम्बाइन्ड भव

जैसे आत्मा और शरीर दोनों का साथ है, जब तक इस सृष्टि पर पार्ट है तब तक अलग नहीं हो सकते, ऐसे ही शिव और शक्ति दोनों का इतना ही गहरा सम्बन्ध है। जो सदा शिव मई शक्ति स्वरूप में स्थित होकर चलते हैं तो उनकी लगन में माया विघ्न डाल नहीं सकती। वे सदा साथीपन का और साक्षी स्टेज का अनुभव करते हैं। ऐसे अनुभव होता है जैसे कोई साकार में साथ हो।

स्लोगन:-

निर्विघ्न और एकरस स्थिति का अनुभव करने के लिए एकाग्रता का अभ्यास करो।

"मीठे बच्चे - जब भी समय मिले तो एकान्त में बैठ सच्चे माशूक को याद करो क्योंकि याद से ही स्वर्ग की बादशाही मिलेगी"

प्रश्नः- बाप मिला है तो कौन सा अलबेलापन समाप्त हो जाना चाहिए?

उत्तरः- कई बच्चे अलबेले हो कहते हैं हम तो बाबा के हैं ही। याद की मेहनत नहीं करते। घड़ी-घड़ी याद भूल जाती है। यही है अलबेलापन। बाबा कहते बच्चे, अगर याद में रहो तो अन्दर स्थाई खुशी रहेगी। किसी भी प्रकार का घुटका नहीं आयेगा। जैसे बांधेलियाँ याद में तड़फती हैं, दिन-रात याद करती हैं, ऐसे तुम्हें भी निरन्तर याद रहनी चाहिए।

गीतः- तकदीर जगाकर आई हूँ.....

ओम् शान्ति। बाप ने बच्चों को समझाया है - तुम भी कहते हो ओम् शान्ति। बाप भी कहते हैं ओम् शान्ति अर्थात् तुम आत्मायें शान्त स्वरूप हो। बाप भी शान्त स्वरूप है, आत्मा का स्वधर्म शान्त है। परमात्मा का भी स्वधर्म शान्त है। तुम भी शान्तिधाम में रहने वाले हो। बाप भी कहते हैं - मैं भी वहाँ का रहने वाला हूँ। तुम बच्चे पुनर्जन्म में आते हो, मैं नहीं आता। मैं इस रथ में प्रवेश करता हूँ। (a) यह मेरा रथ है। शंकर से अगर पूछेंगे, पूछ तो नहीं सकते परन्तु समझो सूक्ष्मवतन में जाकर कोई पूछे तो कहेंगे यह सूक्ष्म शरीर हमारा है। शिवबाबा कहते हैं यह हमारा शरीर नहीं है। यह हमने उधार लिया है क्योंकि मुझे भी कर्मेन्द्रियों का आधार चाहिए। (b) पहली-पहली मुख्य बात समझानी है कि पतित-पावन, ज्ञान का सागर श्रीकृष्ण नहीं है। श्रीकृष्ण सर्व आत्माओं को पतित से पावन नहीं बनाते हैं, वो तो आकर पावन दुनिया में राज्य करते हैं। पहले प्रिन्स बनते हैं फिर महाराजा बनते हैं। (c) उनमें भी यह ज्ञान नहीं है। रचना का ज्ञान तो रचता में ही होगा ना। श्रीकृष्ण को रचना कहा जाता है। रचता बाप ही आकर ज्ञान देते हैं। अभी बाप रच रहे हैं, कहते हैं तुम हमारे बच्चे हो। तुम भी कहते हो बाबा हम आपके हैं। कहा भी जाता है ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मणों की स्थापना। नहीं तो ब्राह्मण कहाँ से आये। सूक्ष्मवतन वाला ब्रह्मा कोई दूसरा नहीं है। ऊपर वाला सो नीचे वाला सो ऊपर वाला। एक ही है। अच्छा विष्णु और लक्ष्मी-नारायण भी एक ही बात है। वह कहाँ के हैं? ब्रह्मा सो विष्णु बनते हैं। ब्रह्मा-सरस्वती ही सो लक्ष्मी-नारायण फिर वही सारा कल्प 84 जन्मों के बाद आकर संगम पर ब्रह्मा-सरस्वती बनते हैं। लक्ष्मी-नारायण भी मनुष्य हैं, उनका देवी देवता धर्म है। विष्णु को भी 4 भुजायें दी हैं। यह प्रवृत्ति मार्ग दिखाया है। भारत में शुरू से ही प्रवृत्ति मार्ग चला आता है। इसलिए विष्णु को 4 भुजायें दी हैं। यहाँ है ब्रह्मा-सरस्वती, वह सरस्वती एडाप्टेड बच्ची है। इनका असुल नाम लखीराज था, फिर इनका नाम रखा ब्रह्मा। शिवबाबा ने इसमें प्रवेश किया और राधे को अपना बनाया, नाम रखा सरस्वती। सरस्वती का ब्रह्मा कोई लौकिक बाप नहीं ठहरा। इन दोनों के लौकिक बाप अपने-अपने थे। अभी वह नहीं हैं। यह शिवबाबा ने ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट किया है। तुम हो एडाप्टेड चिल्ड्रेन। ब्रह्मा भी शिवबाबा का बच्चा है। ब्रह्मा के मुख कमल से रचते हैं इसलिए ब्रह्मा

को भी माता कहा जाता है। तुम मात पिता हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा से सुख घनेरे.. गाते हैं ना। तुम ब्राह्मण आकर बालक बने हो। इसमें समझने की बुद्धि बड़ी अच्छी चाहिए। तुम बच्चे शिवबाबा से वर्सा लेते हो। ब्रह्मा कोई स्वर्ग का रचयिता वा ज्ञान सागर नहीं है। ज्ञान का सागर एक ही बाप है। आत्मा का बाप ही ज्ञान का सागर है। आत्मा भी ज्ञान सागर बनती है परन्तु इनको ज्ञान सागर नहीं कहेंगे क्योंकि सागर एक ही है। तुम सब नदियाँ हो। सागर को अपना शरीर नहीं है। नदियों को है। तुम हो ज्ञान नदियाँ। कलकत्ता में ब्रह्मपुत्रा नदी बहुत बड़ी है क्योंकि उनका सागर से कनेक्शन है। उनका मेला बहुत बड़ा लगता है। यहाँ भी मेला लगता है। सागर और ब्रह्मपुत्रा दोनों कम्बाइन्ड हैं। यह है चैतन्य। वह है जड़। यह बातें बाप समझाते हैं। शास्त्रों में नहीं हैं। शास्त्र हैं भक्ति मार्ग की डिपार्टमेन्ट। यह है ज्ञान मार्ग, वह है भक्ति मार्ग। आधाकल्प भक्ति मार्ग की डिपार्टमेन्ट चली है। उसमें ज्ञान सागर है नहीं। परमपिता परमात्मा, ज्ञान का सागर बाप संगम पर आकर ज्ञान स्नान से सबकी सद्गति करते हैं।)

तुम जानते हो कि हम बेहद के बाप से स्वर्ग के सुखों की तकदीर बना रहे हैं। बरोबर हम सतयुग, त्रेता में पूज्य देवी देवता थे। अभी हम पुजारी मनुष्य हैं। फिर मनुष्य से तुम देवता बनते हो। ब्राह्मण सो देवता धर्म में आये फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनें। 84 जन्म लेते-लेते नीचे उतरना पड़ा है। यह भी तुमको बाप ने बताया है। तुम अपने जन्मों को नहीं जानते थे। 84 जन्म भी तुम ही लेते हो। जो पहले-पहले आते हैं, वही पूरे 84 जन्म लेते हैं। योग से ही खाद निकलती है, योग में ही मेहनत है। भल कई बच्चे ज्ञान में तीखे हैं परन्तु योग में कच्चे हैं। बांधेलियाँ योग में छुटेलियों से भी अच्छी हैं। वह तो शिवबाबा से मिलने के लिए रात-दिन तड़फती हैं। तुम मिले हो। तुमको कहा जाता है याद करो तो तुम घड़ी-घड़ी भूल जाते हो। तुमको तूफान बहुत आते हैं। वह याद में तड़फती हैं। तुम तड़फते नहीं हो। उन्हों का घर बैठे भी ऊंच पद हो जाता है। तुम बच्चे जानते हो - बाबा की याद में रहने से हमको स्वर्ग की बादशाही मिलेगी। जैसे बच्चा गर्भ से निकलने के लिए तड़फता है। वैसे बांधेलियाँ तडपते-तड़पते पुकारती हैं, शिवबाबा इस बंधन से निकालो। दिन-रात याद करते हैं ना। तुमको बाप मिला है तो तुम अलबेले बन पड़े हो। हम बाबा के बच्चे हैं। हम यह शरीर छोड़ जाए प्रिन्स बनेंगे, यह अन्दर स्थाई खुशी रहनी चाहिए। परन्तु माया याद रखने नहीं देती। याद से खुशी में बहुत रहेंगे। याद नहीं करेंगे तो घुटका खाते रहेंगे। आधाकल्प तुमने रावण राज्य में दुःख देखा है। अकाले मृत्यु होता आया है। दुःख तो है ही है। भल कितना भी साहूकार हो, दुःख तो होता है। अकाले मृत्यु हो जाती है। सतयुग में ऐसे अकाले नहीं मरते, कभी बीमार नहीं होंगे। समय पर बैठे-बैठे आपेही एक शरीर छोड़ दूसरा ले लेते हैं। उसका नाम ही है- सुखधाम। मनुष्य तो स्वर्ग की बातों को कल्पना समझते हैं। कहेंगे, स्वर्ग कहाँ से आया। तुम जानते हो हम तो स्वर्ग में रहने वाले हैं फिर 84 जन्म लेते हैं। यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है। तुम जानते हो हम 21 जन्म पावन देवता थे फिर हम क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बने। अब फिर ब्राह्मण बने हैं। यह स्वदर्शन चक्र बहुत सहज है। यह शिवबाबा

बैठ समझाते हैं।

तुम जानते हो शिवबाबा ब्रह्मा के रथ में आया है, जो ब्रह्मा है वही सतयुग आदि में श्रीकृष्ण था। 84 जन्म ले पतित बने हैं फिर इनमें बाप ने प्रवेश कर एडाप्ट किया है। खुद कहते हैं मैंने इस तन का आधार ले तुमको अपना बनाया है। फिर तुमको स्वर्ग की राजधानी का लायक बनाता हूँ, जो लायक बनेंगे वही राजाई में आयेंगे। इसमें मैनर्स अच्छे चाहिए। मुख्य है ही पवित्रता। इस पर अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। कहाँ-कहाँ पुरूषों पर भी अत्याचार होते हैं। विकार के लिए एक दो को तंग करते हैं। यहाँ मातायें बहुत होने के कारण शक्ति सेना नाम गाया हुआ है, वन्दे मातरम्। अभी तुम ज्ञान-चिता पर बैठे हो काम-चिता से उतर गोरे बनने के लिए। द्वापर से लेकर काम-चिता पर बैठे हो। एक दो को विकार देने का हथियाला विकारी ब्राह्मण बांधते हैं। तुम हो निर्विकारी ब्राह्मण। तुम वह कैंसिल कराए ज्ञान-चिता पर बिठाते हो। काम-चिता से काले बने हैं, ज्ञान-चिता से गोरे बन जायेंगे। बाप कहते हैं भल इकट्ठे रहो परन्तु प्रतिज्ञा करनी है हम विकार में नहीं जायेंगे, इसलिए बाबा अंगूठी भी पहनाते हैं। शिवबाबा, बाबा भी है, साजन भी है। सभी सीताओं का राम है। वही पतित-पावन है। बाकी रघुपति राघव राजाराम की बात नहीं है। उसने संगम पर ही यह प्रालब्ध पाई थी। उनको हिंसक बाण दिखाना रांग है। (e) चित्र में भी नहीं देना चाहिए। सिर्फ लिखना है चन्द्रवंशी। बच्चों को समझाना चाहिए शिवबाबा इस द्वारा हमको यह चक्र का राज़ समझा रहे हैं। सत्य-नारायण की कथा होती है ना। वह है मनुष्यों की बनाई हुई कथा। नर से नारायण तो कोई बनते नहीं। सत्य नारायण की कथा का अर्थ ही है नर से नारायण बनना। अमरकथा भी सुनाते हैं परन्तु अमरपुरी में तो कोई जाते नहीं। मृत्युलोक 2500 वर्ष चलता है। तीजरी की कथा मातायें सुनती हैं। वास्तव में यह है तीसरा ज्ञान का नेत्र देने की कथा। अभी ज्ञान का तीसरा नेत्र आत्मा को मिला है तो आत्म-अभिमानी बनना है। मैं इस शरीर द्वारा अब देवता बनती हूँ। मेरे में ही संस्कार हैं। मनुष्य सब देह-अभिमानी हैं। बाप आकर देही-अभिमानी बनाते हैं। लोग फिर कह देते हैं आत्मा परमात्मा एक है। परमात्मा ने यह सब रूप धारण किये हैं। बाप कहते हैं यह सब रांग है, इसको मिथ्या अभिमान, मिथ्या ज्ञान कहा जाता है। बाप बतलाते हैं मैं बिन्दी मिसल हूँ। तुम भी नहीं जानते थे, यह भी नहीं जानते थे। अभी बाप समझाते हैं - इसमें संशय नहीं आना चाहिए। निश्चय होना चाहिए। बाबा जरूर सत्य ही बोलते हैं, संशयबुद्धि विनश्यन्ती। वह पूरा वर्सा नहीं पायेंगे। आत्म-अभिमानी बनने में ही मेहनत है। खाना पकाते बुद्धि बाप की तरफ लगी रहे। हर बात में यह प्रैक्टिस करनी चाहिए। रोटी बेलते, अपने माशूक को याद करते रहना - यह अभ्यास हर बात में चाहिए। जितना समय फुर्सत मिले याद करना है। याद से ही तुम सतोप्रधान बनेंगे। 8 घण्टा कर्म के लिए छुट्टी है। बीच में भी एकान्त में जाकर बैठना चाहिए, तुम्हें सबको बाप का परिचय भी सुनाना है। आज नहीं सुनेंगे तो कल सुनेंगे। बाप स्वर्ग स्थापन करते हैं, हम स्वर्ग में थे अभी फिर नर्कवासी हुए हैं। अब फिर बाप से वर्सा मिलना चाहिए। भारतवासियों को ही समझाते हैं। बाप आते भी भारत में ही हैं। देखो, तुम्हारे पास मुसलमान लोग

भी आते हैं, वो भी सेन्टर सम्भालते हैं। कहते हैं शिवबाबा को याद करो। सिक्ख भी आते हैं, क्रिश्चियन भी आते हैं, आगे चलकर बहुत आयेंगे। यह ज्ञान सबके लिए है क्योंकि यह है ही सहज याद और सहज वर्सा बाप का। परन्तु पवित्र तो जरूर बनना पड़ेगा। दे दान तो छूटे ग्रहण। अभी भारत पर राहू का ग्रहण है फिर ब्रहस्पति की दशा शुरू होगी 21 जन्मों के लिए। (पहले होती है ब्रहस्पति की दशा। फिर शुक्र की दशा। सूर्यवंशियों पर ब्रहस्पति की दशा, चन्द्रवंशियों पर शुक्र की दशा कहेंगे। फिर दशा कमती होती जाती है। सबसे खराब है राहू की दशा। ब्रहस्पति कोई गुरू नहीं होता है। यह दशा है वृक्षपति की। वृक्षपति बाप आते हैं तो ब्रहस्पति और शुक्र की दशा होती है। रावण आते हैं तो राहू की दशा हो जाती है। तुम बच्चों पर अभी ब्रहस्पति की दशा बैठती है। सिर्फ वृक्षपति को याद करो, पवित्र बनो, बस। अच्छा।)

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- हर कार्य करते हुए आत्म-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस करनी है। देह का अहंकार समाप्त हो जाए, इसके लिए ही मेहनत करनी है।

२- सतयुगी राजाई के लायक बनने के लिए अपने नैनर्स रॉयल बनाने हैं। पवित्रता ही सबसे ऊंची चलन है। पवित्र बनने से ही पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे।

वरदान:- ''पहले आप'' के पाठ द्वारा ताजधारी बनने वाले चतुरसुजान भव

जैसे बापदादा अपने को ओबीडियन्ट सर्वेन्ट कहते हैं, सर्वेन्ट कहने से ताजधारी स्वत: बन जाते हैं, ऐसे आप बच्चे भी स्वयं नम्रचित बन दूसरे को श्रेष्ठ शीट दे दो, उनको शीट पर बिठायेंगे तो वह उतरकर आपको स्वत: ही बिठा देगा। अगर आप बैठने की कोशिश करेंगे तो वह बैठने नहीं देगा। इसलिए बिठाना ही बैठना है। तो ''पहले आप'' का पाठ पक्का करो, फिर संस्कार भी सहज ही मिल जायेंगे, ताजधारी भी बन जायेंगे—यही चतुरसुजान बनने का तरीका है, इसमें मेहनत भी नहीं प्राप्ति भी ज्यादा है।

स्लोगन:-

अन्तर्मुखी, एकान्तवासी बनने वाली श्रेष्ठ आत्मा ही अव्यक्त स्थिति का अनुभव करती है।

"मीठे बच्चे - पावन बनो तो रूहानी सेवा के लायक बनेंगे, देही-अभिमानी बच्चे रूहानी यात्रा पर रहेंगे और दूसरों को भी यही यात्रा करायेंगे"

प्रश्नः- संगम पर तुम बच्चे जो कमाई करते हो, यही सच्ची कमाई है - कैसे?
उत्तरः- अभी की जो कमाई है वह 21 जन्म तक चलती है, इसका कभी भी देवाला नहीं निकलता। ज्ञान सुनना और सुनाना, याद करना और कराना - यही है सच्ची-सच्ची कमाई। जो सच्चा-सच्चा बाप ही तुम्हें सिखलाता है। ऐसी कमाई सारे कल्प में कोई भी कर न सके। दूसरी कोई भी कमाई साथ नहीं चलती।

गीतः- हमें उन राहों पर चलना है....

ओम् शान्ति। भक्ति मार्ग में तो बच्चों ने बहुत ठोकरें खाई हुई हैं। भक्ति मार्ग में बहुत ही भावना से यात्रा करने जाते हैं, रामायण आदि सुनते हैं। ऐसे प्रेम से बैठ कहानियाँ सुनते हैं - जो रोना भी आ जाता है। हमारे भगवान की सीता भगवती को रावण डाकू ले गया। फिर सुनने समय बैठ रोते हैं। यह हैं सब दन्त कथायें, जिससे फायदा कुछ भी नहीं। पुकारते भी हैं - हे पतित-पावन आओ, आकर हम दुःखी आत्माओं को सुखी बनाओ। यह नहीं समझते कि आत्मा दुःखी होती है क्योंकि वह तो आत्मा को निर्लेप कह देते हैं। समझते हैं आत्मा सुख दुःख से न्यारी है। यह क्यों कहते हैं? क्योंकि समझते हैं - परमात्मा सुख दुःख से न्यारा है, तो बच्चे फिर सुख दुःख में कैसे आयेंगे? इन सब बातों को अब बच्चों ने समझा है। इस ज्ञान मार्ग में भी कभी ग्रहचारी बैठती है, कभी कुछ होता है। कभी प्रफुल्लित रहते, कभी मुरझाया हुआ चेहरा रहता है। यह होती है माया से लड़ाई। माया पर ही जीत पानी है। जब बेहोश होते हैं तब संजीवनी बूटी दी जाती है - मनमनाभव। भक्ति मार्ग में चहचटा बहुत है। देवताओं को कितना श्रृंगारते हैं, सच्चे जेवर पहनाते हैं। देवताओं का चित्र कितना हीरे जवाहरातों से सजा हुआ है। लक्ष्मी-नारायण की मूर्तियों को बड़े-बड़े हीरों के बहुत जेवर पहनाते थे। बड़े-बड़े खजाने थे, जिस पर झगड़ा भी चला था। पुजारियों के पास इतने जेवर कहाँ से आये? जेवर तो ठाकुर की प्रापर्टी हुई। ठाकुर की प्रापर्टी सो पुजारी वा ट्रस्टी की हो जाती है। तुम बच्चे जानते हो कि हम चैतन्य में बहुत हीरे जवाहरों से सजे हुए थे। फिर जब पुजारी बनते हैं तो भी बहुत जेवर पहनते हैं। अब कुछ भी नहीं है। चैतन्य रूप में भी पहने फिर जड़ रूप में भी पहने। अब नो जेवर। बिल्कुल साधारण हैं। बाप कहते हैं मैं साधारण तन में आता हूँ। कोई राजाई आदि की ठाठ-बाठ नहीं है। सन्यासियों के भी बहुत ठाठ-बाठ होते हैं। अभी तुम समझ गये हो बरोबर सतयुग में कैसे हम आत्मायें पवित्र थीं। शरीर भी हमारे पवित्र थे। उन्हों का श्रृंगार भी बहुत अच्छा रहता है। कोई खूबसूरत होते हैं तो उनको श्रृंगार का भी शौक रहता है। तुम भी खूबसूरत थे तो बहुत अच्छे-अच्छे जेवर पहनते थे। हीरों के बड़े हार आदि पहनते थे। यहाँ हर चीज सांवरी है। देखो गऊयें भी सांवरी होती गई हैं। बाबा जब श्रीनाथ द्वारे गया था तो बहुत अच्छी गऊएं थीं। कृष्ण

की गऊ बहुत अच्छी दिखाते हैं। यहाँ तो देखो कोई कैसे, कोई कैसे हैं क्योंकि कलियुग है। ऐसी गऊएं वहाँ होती नहीं। तुम बच्चे विश्व के मालिक बनते हो। तुम्हारी सजावट भी वहाँ ऐसी सुन्दर रहती है। विचार करो – गऊएं तो जरूर होनी चाहिए। वहाँ की गऊओं का गोबर भी कैसा होता होगा। कितनी ताकत होगी। जमीन को खाद चाहिए ना। खाद डाली जाती है तो अच्छा अनाज पैदा होता है। वहाँ सब चीज़ें अच्छी ताकत वाली होती हैं। यहाँ तो कोई चीज़ में ताकत नहीं है। हर एक चीज़ बिल्कुल ही पावरलेस हो गई है। बच्चियाँ सूक्ष्मवतन में जाती थी। कितने अच्छे-अच्छे बड़े फल खाती थी, शूबीरस आदि पीती थी। यह सब साक्षात्कार कराते थे। माली वहाँ कैसे फल आदि काटकर देते हैं। सूक्ष्मवतन में तो फल आदि हो न सकें। यह साक्षात्कार होता है। वैकुण्ठ तो फिर भी यहाँ होगा ना। मनुष्य समझते हैं वैकुण्ठ कोई ऊपर में है। वैकुण्ठ न सूक्ष्मवतन में, न मूलवतन में होता है। यहाँ ही होता है। यहाँ जो बच्चियाँ साक्षात्कार करती हैं वह फिर इन आँखों से देखेंगे। जैसी पोजीशन ऐसी सामग्री भी रहती है। राजाओं के महल देखो कैसे अच्छे-अच्छे होते हैं। जयपुर में बहुत अच्छे-अच्छे महल बने हुए हैं। सिर्फ महल देखने लिए मनुष्य जाते हैं तो भी टिकेट रहती है। खास वह महल देखने लिए रखते हैं। खुद फिर और महलों में रहते हैं। सो भी अभी कलियुग में। यह है ही पतित दुनिया। कोई अपने को पतित समझते थोड़ेही हैं। तुम अभी समझते हो - हम तो पतित थे। कोई काम के नहीं थे फिर हम गोरा बनेंगे। वह दुनिया ही फर्स्टक्लास होगी। यहाँ भल अमेरिका आदि में फर्स्ट क्लास महल हैं। परन्तु वहाँ की भेंट में यह तो कुछ नहीं हैं क्योंकि यह तो अल्पकाल का सुख देने वाले हैं। वहाँ तो फर्स्टक्लास महल होते हैं। फर्स्टक्लास गऊएं होती हैं। वहाँ ग्वाले भी होते हैं। श्रीकृष्ण को ग्वाला कहते हैं ना। यहाँ जो गऊओं को सम्भालने वाले हैं, वह कहते हैं हम गूजर (ग्वाले) हैं। कृष्ण के वंशावली हैं। वास्तव में कृष्ण के वंशावली नहीं कहेंगे। कृष्ण की राजधानी के कहेंगे। साहूकारों के पास गऊएं होंगी तो गूजर सम्भालने वाले भी होंगे। यह गूजर नाम सतयुग का है। कल की बात है। कल हम आदि सनातन देवी देवता धर्म के थे फिर पतित बने हैं तो अपने को हिन्दू कहला देते हैं। पूछो, तुम आदि सनातन देवी देवता धर्म के हो वा हिन्दू धर्म के हो? आजकल सब हिन्दू लिख देते हैं। हिन्दू धर्म किसने स्थापन किया? देवी देवता धर्म किसने स्थापन किया? यह भी कोई नहीं जानते हैं। बाबा यह प्रश्न पूछते - हैं बताओ आदि सनातन देवी देवता धर्म किसने स्थापन किया? शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा कर रहे हैं। राम वा शिवबाबा की श्रीमत पर आदि सनातन देवी देवता धर्म स्थापन हुआ। फिर रावण राज्य होता है, विकारों में जाते हैं। भक्ति मार्ग शुरू हो जाता है तब हिन्दू कहलाने लगते हैं। अभी अपने को कोई देवता कह न सके। रावण ने विशश बनाया, बाप आकर वाइसलेस बनाते हैं। तुम ईश्वरीय मत से देवता बनते हो। बाप ही आकर तुम ब्राह्मणों को देवता बनाते हैं। सीढ़ी कैसे उतरते हैं, यह तुम बच्चों की बुद्धि में नम्बरवार बैठता है। तुम जानते हो और सभी मनुष्य आसुरी मत पर चल रहे हैं और तुम ईश्वरीय मत पर चल रहे हो। रावण की मत से सीढ़ी उतरते आये हो। 84 जन्मों के बाद फिर पहला नम्बर जन्म होगा।

ईश्वरीय बुद्धि से तुम सारे सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जान जाते हो। (यह तुम्हारा जीवन बहुत अमूल्य है, इनकी बहादुरी है। जबकि बाप आकर हमको इतना पावन बनाते हैं। हम रूहानी सेवा के लायक बनते हैं। वह है जिस्मानी सोशल वर्कर, तो देह-अभिमान में हैं। तुम देही-अभिमानी हो। आत्माओं को रूहानी यात्रा पर ले जाते हो।) बाप समझाते हैं तुम सतोप्रधान थे, अभी तमोप्रधान बनते हो। सतोप्रधान को पावन, तमोप्रधान को पतित कहा जाता है। आत्मा में ही खाद पड़ी है। आत्मा को ही सतोप्रधान बनाना है। जितना याद में रहेंगे उतना पवित्र बनेंगे। नहीं तो कम पवित्र बनेंगे। पापों का बोझा सिर पर रह जायेगा। आत्मायें तो सभी पवित्र होती हैं फिर हर एक का पार्ट अलग है। सबका एक जैसा पार्ट हो न सके। सबसे ऊंच बाबा का पार्ट फिर ब्रह्मा-सरस्वती का कितना पार्ट है। (फिर जो स्थापना कराता है, वही पालना कराता है। बड़ा पार्ट उनका है। पहले है शिवबाबा फिर है ब्रह्मा-सरस्वती, जो पुनर्जन्म में आते हैं। शंकर तो सिर्फ सूक्ष्म रूप धारण करते हैं। ऐसे नहीं कि शंकर कोई शरीर का लोन लेते हैं। कृष्ण को अपना शरीर है। यहाँ सिर्फ शिवबाबा शरीर का लोन लेते हैं। पतित शरीर, पतित दुनिया में आकर सेवा करते हैं। मुक्ति-जीवनमुक्ति में ले जाने की। पहले मुक्ति में जाना पड़े। नॉलेजफुल एक ही बाप पतित-पावन है, उनको ही कहते हैं, शिवबाबा। शंकर को बाबा कहते शोभता नहीं है।) शिवबाबा अक्षर बहुत मीठा है। शिव के ऊपर कोई अक चढ़ाते हैं, कोई क्या चढ़ाते हैं। कोई दूध भी चढ़ाते हैं।

बाप बच्चों को अनेक प्रकार की समझानी देते रहते हैं। बच्चों के लिए समझाया जाता है, सारा मदार योग पर है। योग से ही विकर्म विनाश होंगे। योग वाले को ज्ञान की धारणा भी अच्छी होगी। अपनी धारणा में चलते रहेंगे क्योंकि फिर सुनाना भी पड़ता है। (यह है नई बात - भगवान ने जिन्हों को डायरेक्ट सुनाया, उन्होंने ही सुना फिर तो यह ज्ञान रहता ही नहीं। अभी बाप तुमको जो सुनाते हैं वह अभी तुम सुनते हो। धारणा होती है फिर तो प्रालब्ध का पार्ट बजाना होता है। ज्ञान सुनना, सुनाना अभी होता है। सतयुग में यह पार्ट नहीं होगा।) वहाँ तो है ही प्रालब्ध का पार्ट। मनुष्य बैरिस्टरी पढ़ते हैं फिर बैरिस्टर बन कमाते हैं। यह कितनी बड़ी कमाई है, इनको दुनिया वाले नहीं जानते। तुम जानते हो सच्चा बाबा हमको सच्ची कमाई करा रहे हैं। इनका कभी देवाला निकल न सके। अभी तुम सच की कमाई करते हो। वह फिर 21 जन्म साथ रहती है। वह कमाई साथ नहीं देती। यह साथ देने वाली है तो ऐसी कमाई को साथ देना चाहिए। यह बातें तुम्हारे सिवाए और कोई की बुद्धि में नहीं हैं। तुम्हारे में भी घड़ी-घड़ी कोई भूल जाते हैं। (बाप और वर्से को भूलना नहीं चाहिए। बस, बात एक ही है। बाप को याद करो। जिस बाप से 21 जन्म का वर्सा मिलता है।) 21 जन्म निरोगी काया रहती है। बुढ़ापे तक अकाले मृत्यु नहीं होती। बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। बाप की याद है मुख्य, इसमें ही माया विघ्न डालती है। तूफान लाती है। अनेक प्रकार के तूफान आते हैं। तुम कहेंगे - बाप को याद करूँ, परन्तु कर नहीं सकेंगे। याद में ही बहुत फेल होते हैं। योग की बहुतों में कमी है। जितना हो सके, योग में मजबूत होना चाहिए। बाकी बीज और झाड़ का ज्ञान कोई बड़ी बात नहीं है।

बाप कहते हैं मुझे याद करो। मुझे याद करने से, मुझे जानने से तुम सब कुछ जान जायेंगे। याद में ही सब कुछ भरा हुआ है। स्वीट बाबा, शिवबाबा को याद करना है। ऊंच ते ऊंच है भगवान। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ वह है। ऊंचे से ऊंच वर्सा देते हैं 21 जन्म के लिए। सदा सुखी अमर बनाते हैं। तुम अमरपुरी का मालिक बनते हो। तो ऐसे बाप को बहुत याद करना चाहिए। बाप को याद नहीं करेंगे तो और सब कुछ याद आ जायेगा। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. यह ईश्वरीय जीवन बहुत-बहुत अमूल्य है, इस जीवन में आत्मा और शरीर दोनों को पावन बनाना है। रूहानी यात्रा में रहकर दूसरों को यही यात्रा सिखानी है।

२. जितना हो सके - सच की कमाई में लग जाना है। निरोगी बनने के लिए याद में मजबूत होना है।

वरदान:- फरियाद को याद में परिवर्तन करने वाले स्वत: और निरन्तर योगी भव

संगमयुग की विशेषता है—अभी-अभी पुरूषार्थ, अभी-अभी प्रत्यक्षफल। अभी स्मृति स्वरूप अभी प्राप्ति का अनुभव। भविष्य की गॉरन्टी तो है ही लेकिन भविष्य से श्रेष्ठ भाग्य अभी का है। इस भाग्य के नशे में रहो तो स्वत: याद रहेगी। जहाँ याद है वहाँ फरियाद नहीं। क्या करें, कैसे करें, यह होता नहीं है, थोड़ी मदद दे दो—यह है फ़रियाद। तो फरियाद को छोड़कर स्वत: योगी निरन्तर योगी बनो।

स्लोगन:-

जो स्वयं को मेहमान समझकर चलते हैं वही महान स्थिति का अनुभव करते हैं।

30-4-01 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम अभी सत्य बाप द्वारा सच्ची बातें सुन सोझरे में आये हो तो तुम्हारा कर्तव्य है सबको अन्धियारे से निकाल सोझरे में लाना"

प्रश्नः- जब तुम बच्चे किसी को ज्ञान सुनाते हो तो कौन सी एक बात जरूर याद रखो?
उत्तरः- मुख से बार-बार बाबा बाबा कहते रहो, इससे अपना-पन समाप्त हो जायेगा। वर्सा भी याद रहेगा। बाबा कहने से सर्वव्यापी का ज्ञान पहले से ही खत्म हो जाता है। अगर कोई कहे भगवान सर्वव्यापी है तो बोलो बाप सबके अन्दर कैसे हो सकता है!

गीतः- आज अन्धेरे में है इंसान...

ओम् शान्ति। बच्चों ने क्या कहा और किसको पुकारा? हे ज्ञान के सागर अथवा हे ज्ञान सूर्य बाबा.... भगवान को बाबा कहा जाता है ना। भगवान बाप है तो तुम सब बच्चे हो। बच्चे कहते हैं हम अन्धेरे में आकर पड़े हैं। आप हमें सोझरे में ले जाओ। बाबा कहने से सिद्ध होता है कि बाप को पुकारते हैं। बाबा अक्षर कहने से लव आ जाता है क्योंकि बाप से वर्सा लिया जाता है। सिर्फ ईश्वर वा प्रभु कहने से बाप के वर्से की रसना नहीं आती। बाबा कहने से वर्सा याद आ जाता है। तुम पुकारते हो बाबा हम अन्धेरे में आकर पड़े हैं, आप अभी फिर ज्ञान से हमारा दीपक जगाओ क्योंकि आत्माओं का दीपक बुझा हुआ है। मनुष्य मरते हैं तो 12 दिन दीवा जगाते हैं। एक घृत डालने के लिए बैठा रहता है कि कहाँ दीवा बुझ न जाये।

बाप समझाते हैं - तुम भारतवासी सोझरे में अर्थात् दिन में थे। अब रात में हो। 12 घण्टा दिन, 12 घण्टा रात। वह है हद की बात। यह तो बेहद का दिन और बेहद की रात है, जिसको कहा जाता है ब्रह्मा का दिन – सतयुग त्रेता, ब्रह्मा की रात – द्वापर कलियुग। रात में अन्धियारा होता है। मनुष्य ठोकरें खाते रहते हैं। भगवान को ढूँढने के लिए चारों तरफ फेरे लगाते हैं, परन्तु परमात्मा को पा नहीं सकते। परमात्मा को पाने के लिए ही भक्ति करते हैं। द्वापर से भक्ति शुरू होती है अर्थात् रावण राज्य शुरू होता है। दशहरे की भी एक स्टोरी बनाई है। स्टोरी हमेशा मनोमय बनाते हैं, जैसे बाइसकोप, नाटक आदि बनाते हैं। श्रीमद् भगवत गीता ही है सच्ची। परमात्मा ने बच्चों को राजयोग सिखाया, राजाई दी। फिर भक्तिमार्ग में बैठकर स्टोरी बनाते हैं। व्यास ने गीता बनाई अर्थात् स्टोरी बनाई। सच्ची बात तो बाप द्वारा तुम अभी सुन रहे हो। हमेशा बाबा-बाबा कहना चाहिए। परमात्मा हमारा बाबा है। नई दुनिया का रचयिता है। तो जरूर उनसे हमको स्वर्ग का वर्सा मिलना चाहिए। अभी तो 84 जन्म भोग हम नर्क में आकर पड़े हैं। बाप समझाते हैं बच्चों, तुम भारतवासी सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी थे। विश्व के मालिक थे, दूसरा कोई धर्म नहीं था, उसको स्वर्ग अथवा कृष्णपुरी कहा जाता है। यहाँ है कंसपुरी। बापदादा याद दिलाते हैं, लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। बाप ही ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर पतित-पावन है, न कि पानी की गंगा। सब ब्राइड्स का एक ही भगवान ब्राइडग्रूम है – यह मनुष्य नहीं जानते। इसलिए पूछा जाता है – आत्मा का बाप कौन है? तो मूँझ पड़ते हैं। कहते

हैं हम नहीं जानते। अरे आत्मा, तुम अपने बाप को नहीं जानती हो? कहते हैं गॉड फादर, फिर पूछा जाता है—उनका नाम रूप क्या है? गॉड को पहचानते हो? तो कह देते हैं सर्वव्यापी है। अरे बच्चों का बाप कब सर्वव्यापी होता है क्या? रावण की आसुरी मत पर कितने बेसमझ बन जाते हैं। देह-अभिमान है नम्बरवन। अपने को आत्मा निश्चय नहीं करते। कह देते मैं फलाना हूँ। यह तो हो गई शरीर की बात। असल में स्वयं कौन हैं – यह नहीं जानते। मैं जज हूँ, मैं यह हूँ .... 'मैं' 'मैं' कहते रहते हैं, परन्तु यह रांग है। मैं और मेरा यह दो चीज़ें हैं। आत्मा अविनाशी है, शरीर विनाशी है। नाम शरीर का पड़ता है। आत्मा का कोई नाम नहीं रखा जाता है। बाप कहते हैं - मेरा नाम शिव ही है। शिव जयन्ती भी मनाते हैं। अब निराकार की जयन्ती कैसे हो सकती? वह किसमें आते हैं, यह किसको पता नहीं। सब आत्माओं का नाम आत्मा ही है। परमात्मा का नाम है शिव। बाकी सब हैं सालिग्राम। आत्मायें बच्चे हैं। एक शिव सब आत्माओं का बाप है। वह है बेहद का बाप। उनको सब पुकारते हैं कि आकर हमें पावन बनाओ। हम दुःखी हैं। आत्मा पुकारती है, दुःख में सब बच्चे याद करते हैं और फिर यही बच्चे सुख में रहते हैं तो कोई भी याद नहीं करते। दुःखी बनाया है रावण ने।

बाप समझाते हैं – यह रावण तुम्हारा पुराना दुश्मन है। यह भी ड्रामा का खेल बना हुआ है। तो अभी सब अन्धियारे में हैं। इसलिए पुकारते हैं हे ज्ञान सूर्य आओ, हमको सोझरे में ले जाओ। भारत सुखधाम था तो कोई पुकारते नहीं थे। कोई अप्राप्त वस्तु नहीं थी। यहाँ तो चिल्लाते रहते हैं, हे शान्ति देवा। बाप आकर समझाते हैं - शान्ति तो तुम्हारा स्वधर्म है। गले का हार है। आत्मा शान्तिधाम की रहवासी है। शान्तिधाम से फिर सुखधाम में जाती है। वहाँ तो सुख ही सुख है। तुमको चिल्लाना नहीं होता है। दुःख में ही चिल्लाते हैं – रहम करो, दुःख हर्ता सुख कर्ता बाबा आओ। शिवबाबा, मीठा बाबा फिर से आओ। आते जरूर हैं तब तो शिवजयन्ती मनाते हैं। श्रीकृष्ण है स्वर्ग का प्रिन्स। उनको भी जयन्ती मनाते हैं। परन्तु कृष्ण कब आया, यह किसको पता नहीं। राधे-कृष्ण ही स्वयंवर के बाद लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। यह कोई भी नहीं जानते। मनुष्य ही पुकारते रहते हैं – ओ गॉड फादर... अच्छा उनका नाम-रूप क्या है तो कह देते हैं नाम-रूप से न्यारा है। अरे, तुम कहते हो गॉड फादर फिर नाम-रूप से न्यारा कह देते हो। आकाश पोलार है, उनका भी नाम है आकाश। तुम कहते हो हम बाप के नाम-रूप आदि को नहीं जानते, अच्छा अपने को जानते हो? हाँ हम आत्मा हैं। अच्छा आत्मा का नाम-रूप बताओ। फिर कह देते आत्मा सो परमात्मा है। आत्मा नाम-रूप से न्यारी तो हो नहीं सकती। आत्मा एक बिन्दी स्टार मिसल है। भ्रकुटी के बीच में रहती है। जिस छोटी सी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट नूँधा हुआ है। यह बहुत समझने की बात है। इसलिए 7 रोज़ भट्ठी गाई हुई है। द्वापर से रावणराज्य शुरू हुआ है तब से विकारों की प्रवेशता हुई है। सीढ़ी उतरते आये हैं। अब सबको ग्रहण लगा हुआ है, काले हो गये हैं। इसलिए पुकारते हैं हे ज्ञान सूर्य आओ। आकर हमको सोझरे में ले जाओ। ज्ञान अंजन सतगुरू दिया, अज्ञान अंधेर विनाश... बुद्धि में बाप आता है। ऐसे नहीं ज्ञान अंजन गुरू दिया.. गुरू तो ढेर हैं, उनमें

ज्ञान कहाँ है। उनका थोड़ेही गायन है। ज्ञान-सागर, पतित-पावन, सर्व का सद्गति दाता एक ही बाप है। फिर दूसरा कोई ज्ञान दे कैसे सकता। साधू लोग कह देते हैं भगवान से मिलने के अनेक रास्ते हैं। शास्त्र पढ़ना, यज्ञ, तप आदि करना – यह सब भगवान से मिलने के रास्ते हैं लेकिन पतित फिर पावन दुनिया में जा कैसे सकते हैं। बाप कहते हैं - मैं खुद आता हूँ। भगवान तो एक ही है ब्रह्मा-विष्णु-शंकर भी देवता हैं, उन्हें भगवान नहीं कहेंगे। उनका भी बाप शिव है। प्रजापिता ब्रह्मा तो यहाँ ही होगा ना। प्रजा यहाँ है। नाम भी लिखा हुआ है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी इन्स्टीट्यूशन। तो बच्चे ठहरे। ढेर बी.के. हैं। वर्सा शिव से मिलता है, न कि ब्रह्मा से। वर्सा दादे से मिलता है। ब्रह्मा द्वारा बैठकर स्वर्ग में जाने लायक बनाते हैं। ब्रह्मा द्वारा बच्चों को एडाप्ट करते हैं। बच्चे भी कहते हैं बाबा हम आपके ही हैं, आपसे वर्सा लेते हैं। ब्रह्मा द्वारा स्थापना होती है विष्णुपुरी की। शिवबाबा राजयोग सिखाते हैं। श्रीमत अथवा श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ भगवान की गीता है। भगवान एक ही निराकार है। बाप समझाते हैं - तुम बच्चों ने 84 जन्म लिए हैं। आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल.. बहुकाल से तो भारतवासी ही थे। दूसरा कोई धर्म नहीं था। वही पहले-पहले बिछुडे हैं। बाप से बिछुड़कर यहाँ पार्ट बजाने आये हैं। बाबा कहते हैं -- हे आत्मायें अब मुझ बाप को याद करो। यह है याद की यात्रा अथवा योग अग्नि। तुम्हारे सिर पर जो पापों का बोझ है, वह इस योग अग्नि से भस्म होगा। हे मीठे बच्चे, तुम गोल्डन एज़ से आइरन एज़ में आ गये हो। अब मुझे याद करो। यह बुद्धि का काम है ना। देह सहित देह के सब सम्बन्ध छोड़ मामेकम् याद करो। तुम आत्मा हो ना। यह तुम्हारा शरीर है। मैं, मैं आत्मा करती है। तुमको रावण ने पतित बनाया है। यह खेल बना हुआ है। पावन भारत और पतित भारत। जब पतित बनते हैं तो बाप को पुकारते हैं। रामराज्य चाहिए। कहते भी हैं, परन्तु अर्थ को नहीं समझते। ज्ञान देने वाला ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है। बाप ही आकर सेकण्ड में वर्सा देते हैं। अभी तुम बाप के बने हो। बाप से सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी वर्सा लेने। फिर सतयुग, त्रेता में तुम अमर बन जाते हो। वहाँ ऐसे नहीं कहेंगे कि फलाना मर गया। सतयुग में अकाले मृत्यु होती नहीं। तुम काल पर जीत पाते हो। दुःख का नाम नहीं रहता। उनको कहते हैं सुखधाम। बाप कहते हैं हम तो तुमको स्वर्ग की बादशाही देते हैं। वहाँ तो बहुत वैभव हैं। भक्तिमार्ग में मन्दिर बनाये हैं उस समय भी कितना धन था। भारत क्या था! बाकी और सब आत्मायें निराकारी दुनिया में थी। बच्चे जान गये हैं – ऊंच ते ऊंच बाबा अब स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। ऊंच ते ऊंच है शिवबाबा, फिर है ब्रह्मा-विष्णु-शंकर सूक्ष्मवतन वासी। फिर यह दुनिया।

ज्ञान से ही तुम बच्चों की सद्गति होती है। गाया भी जाता है–ज्ञान, भक्ति और वैराग्य। पुरानी दुनिया से वैराग्य आता है, क्योंकि सतयुग की बादशाही मिलती है। अब बाप कहते हैं - बच्चे, मामेकम् याद करो। मेरे को याद करते तुम मेरे पास आ जायेंगे। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- सिर पर जो पापों का बोझ है उसे योग अग्नि से भस्म करना है। बुद्धि से देह सहित देह के सब सम्बन्ध छोड़ एक बाप को याद करना है।

२- पुकारने वा चिल्लाने के बजाए अपने शान्त स्वधर्म में स्थित रहना है, शान्ति गले का हार है। देह-अभिमान में आकर ''मैं'' और ''मेरा'' शब्द नहीं कहना है, स्वयं को आत्मा निश्चय करना है।

वरदान:- सदा पुण्य का खाता जमा करने और कराने वाले मास्टर शिक्षक भव

हम मास्टर शिक्षक हैं, मास्टर कहने से बाप स्वत: याद आता है। बनाने वाले की याद आने से स्वयं निमित्त हूँ – यह स्वत: स्मृति में आ जाता है। विशेष स्मृति रहे कि हम पुण्य आत्मा हैं, पुण्य का खाता जमा करना और कराना – यही विशेष सेवा है। पुण्य आत्मा कभी पाप का एक परसेन्ट संकल्प मात्र भी नहीं कर सकती। मास्टर शिक्षक माना सदा पुण्य का खाता जमा करने और कराने वाले, बाप समान।

स्लोगन:-

संगठन के महत्व के जानने वाले संगठन में ही स्वयं की सेफ्टी का अनुभव करते हैं।

सूचना -1

निम्नलिखित सेवाकेन्द्रों पर फोन नम्बर परिवर्तित हुए हैं या नये फोन लगे हैं। सो इस प्रकार हैं।

1. **विद्युत नगर, जयपुर (Vidyut Nagar, Jaipur), राजस्थान का वर्तमान फोन नम्बर – 352754.**
2. **शाजापुर (Shajapur), मध्य प्रदेश का वर्तमान फोन नम्बर – 26071.**
3. **सिलचर (Silchar), आसाम का परिवर्तित फोन नम्बर – 65024.**
4. **पिम्परी, पूने (Pimpri, Pune), महाराष्ट्र का नया फोन नम्बर – 020-7473082.**

सूचना -2

निम्नलिखित सेवाकेन्द्रों के मकान बदली हुए हैं अत: नया पता लिख रहे हैं।

1. BRAHMA KUMARIS
395/72,Oulkar Compound,
Behind Hotel Milan, kali Ambrai,
BELGAUM - 590001 (KAR)
यह केलकर बाग, वेलगाम स्थित सेवाकेन्द्र के स्थान पर है।

2. BRAHMA KUMARIS
H/o Chaitanya Swaroop, Advocate,
Rajgarh Road,
BIAORA-465674(MP)
PH.No.-32348

3. BRAHMA KUMARIS
H No.-135, Gali No. 3,
Shiv Puri, No.3,
DHURI-148024(PB)
PH.No.-624160

4. BRAHMA KUMARIS
"Shanti Kutir"
Big Chetly Street, Waralyur,
TIRUCHIRAPALLY-600003(TN)
PH.No.-750111

नोट:- सिलचर (Silchar)आसाम का नया ई-मेल पता (**E-mail address**)- **bksilchar@indiatimes.com**

"मीठे बच्चे - शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों की मत मशहूर है, तुम्हें दोनों की मत पर चलकर अपना कल्याण करना है"

प्रश्नः- नम्बरवन ट्रस्टी कौन है और कैसे?

उत्तरः- शिवबाबा है नम्बरवन ट्रस्टी, उसमें बिल्कुल आसक्ति नहीं। भक्ति मार्ग में भी तुम उनके अर्थ जो भी दान-पुण्य आदि करते हो, वह सब इनश्योर हो जाता है, जिसका फल दूसरे जन्म में मिलता है। अभी भी जो बाप के अर्थ अपना सब कुछ इनश्योर करते उनका पूरा रिटर्न बाप देता हैं क्योंकि बाबा कहते– मैं खुद तो सुख भोगता नहीं। मैं तुम्हारा लेकर क्या करूँगा।

गीतः- दर पर आये हैं कसम लेके....

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों ने गीत सुना। बच्चे उनको कहा जाता है जो बाप के बनते हैं। बाप ने समझाया है यह है अन्तिम मरजीवा जन्म। जीते जी बाप का बनना है। यह तो बच्चे जानते हैं, श्रीमत गाई हुई है। श्रीमत भगवानुवाच। गीता में कृष्ण का नाम डाल दिया है परन्तु है शिवबाबा। उनके बाद ब्रह्मा फिर कृष्ण। श्रीमत कृष्ण की नहीं कहेंगे। श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ हमारा बाप है। पतित-पावन कृष्ण अथवा राधे आदि को नहीं कहेंगे। वह दैवीगुण वाले मनुष्य हैं। मनुष्य को पतित-पावन नहीं कहा जाता। सतयुग में ऐसे नहीं कहेंगे पतित-पावन आओ। पतितों को पावन बनाने वाला एक ही बापु है, जिसकी श्रीमत पर तुम चल रहे हो। प्रजापिता ब्रह्मा की मत मशहूर है। श्रीमत भी मशहूर है। परन्तु उनमें भूल कर देते हैं जो बाप के बदले कृष्ण का नाम डाल दिया है। सब धर्म वालों का तो एक ही बाप है। कृष्ण को तो सब नहीं मानेंगे। क्रिश्चियन लोग क्राइस्ट को फादर मानते हैं, न कि कृष्ण को क्योंकि किश्चियन हैं क्राइस्ट की मुखवंशावली। शिवबाबा आकर तुमको अपना बनाते हैं। कहते हैं, सिर हथेली पर रख बाप के बने हैं। उनके डायरेक्शन पर चलना पड़े। तुम्हें बाप को अपनी मत देने की दरकार नहीं रहती। वह खुद मत देने वाला है। यह तो सब बच्चे हैं। शिवबाबा नामीग्रामी है। वह जो मत देंगे, जो कुछ करेंगे राइट। इस ब्रह्मा को भी मत देते हैं कि यह करो। तुम्हारा कनेक्शन ही शिवबाबा से है। कोई का भी अवगुण नहीं देखना है, श्रीमत पर चलना है। शिवबाबा तो है निराकार। उनका यह घर तो है नहीं। तुम यहाँ पुराने घर में रहते हो फिर स्वर्ग में जाकर अपने घर में रहेंगे। शिवबाबा कहते हैं मैं तो नहीं रहूँगा। मैं तो इस समय थोड़े टाइम के लिए आता हूँ।

तुम हो सच्चे-सच्चे रूहानी सैलवेशन आर्मी। सुप्रीम रूह (बाप) डायरेक्शन दे रहे हैं, हूबहू ड्रामा प्लैन अनुसार कल्प पहले मुआफ़िक। कल्प-कल्प जो डायरेक्शन देते होंगे वही देते हैं। रात-दिन गुह्य सुनाते रहते हैं। नया कोई यह समझ न सके। भल कोई 35-40 वर्ष से रहते हैं परन्तु बहुत हैं जो इन गम्भीर बातों को समझते नहीं हैं। बाबा तो रोज़ नया सुनाते रहते हैं। कराची से लेकर मुरली निकलती आई है। पहले बाबा मुरली चलाते

नहीं थे। रात को 2 बजे उठकर 10-15 पेज लिखते थे। बाबा लिखवाते थे फिर उनकी कापियाँ निकलती थी। भक्तिमार्ग में तो शास्त्र आदि के कागज सम्भालते हैं। दिन-प्रतिदिन बड़ी-बड़ी किताबें बनाते आते हैं। कितनी बायोग्राफी बनाते जाते हैं। वह फिर पढ़कर रखते हैं। तुम तो मुरली पढ़कर फेंक देते हो। नहीं तो यह वर्शन्स रखने चाहिए हमेशा के लिए। परन्तु नहीं, जानते हैं कि यह सब विनाश हो जायेंगे। चित्र आदि जो भी तुम बनाते हो थोड़े समय के लिए हैं। फिर यह दब जायेंगे फिर वहाँ न शास्त्र, न चित्र आदि कुछ भी नहीं रहते हैं फिर यह जो कुछ चल रहा है, कल्प बाद भी होगा। शास्त्र आदि फिर द्वापर से शुरू होंगे। ग्रंथ भी आगे तो हाथ से लिखा हुआ बहुत छोटा था। अब बड़ा बनाया है। दिन-प्रतिदिन बड़ा बनाते जायेंगे। नहीं तो शिवबाबा की जीवन कहानी कितनी लिखनी चाहिए। अभी तुम बच्चे कहते हो– परमपिता परमात्मा की जीवन कहानी हम जानते हैं। बाप बैठ समझाते हैं– मैं भक्तिमार्ग में क्या करता हूँ। भक्ति मार्ग में भी इन्श्योरेन्स करता हूँ। ईश्वर अर्थ मनुष्य दान-पुण्य करते हैं ना। कहते हैं इसने दान पुण्य किया है ईश्वर अर्थ। ईश्वर ने बड़े घर में जन्म दिया है। भक्तिमार्ग में धर्मात्मा बहुत होते हैं। ईश्वर अर्थ, श्रीकृष्ण अर्थ दान पुण्य करते हैं। तो फिर बाप समझाते हैं– मैं बच्चों को दूसरे जन्म में अल्पकाल के लिए फल देता आया हूँ। अच्छा वा बुरा फल मिलता तो है ना। कितना इन्श्योरेन्स हुआ। जो जैसे कर्म करते हैं, उस अनुसार फल मिलता है। माया उल्टा काम कराती है, जिससे तुम दु:ख को पाते हो। अब मैं तुमको ऐसे कर्म सिखाता हूँ जो कभी दु:ख नहीं होगा और माया भी वहाँ नहीं होती। बाकी है मर्तबा। जो जितना इन्श्योर करे। शिवबाबा भी ट्रस्टी है ना। नम्बरवन ट्रस्टी है। दूसरे की आसक्ति जायेगी, कोई ट्रस्टी तो किसका खाना ही खराब कर देते हैं। बाप तो देखो कैसा ट्रस्टी है, कहते हैं यह सब कुछ बच्चों के लिए है। तुम्हारा सारा कनेक्शन शिवबाबा से है। बाप कहते हैं मैं सच्चा ट्रस्टी हूँ। मैं खुद सुख नहीं लेता हूँ, बच्चों को सारी राजधानी देता हूँ। लौकिक बाप भी बच्चों को सब कुछ वर्से में दे जाते हैं। मैं तो स्वर्ग में कुछ भी लेता नहीं हूँ। तुमको ही सब देता हूँ। तो तुम्हारा कनेक्शन सारा शिवबाबा से है। यह बाबा कहते हैं मैंने भी फुल इनश्योर कर लिया। तन-मन-धन सब बाप की सर्विस में है। सिन्धी में एक कहावत है– हाथ जिसका ऐसे (दाता रूप में) पहला पूर वह पहुँचेंगे। बाप को सब इनश्योर करना है। दो मुट्ठी चावल दिये तो महल मिल गये। अभी देखो मकान बना है, कोई ने एक रूपया भेजा, हमारी ईट भी लग जाए। बाप ने लिखा तुमको तो सबसे अच्छे महल मिलेंगे क्योंकि तुम गरीब हो। मैं हूँ ही गरीब निवाज़। गरीब का एक रूपया तो साहूकार का 10 हजार। दोनों को एक ही मर्तबा मिल जाता है। साहूकार बहुत मुश्किल आते हैं। सबसे कन्यायें तो बिल्कुल फ्री हैं। नम्बरवन देखो मम्मा गई। उनके पास तो कुछ भी नहीं था। गरीब के घर की थी फिर भी नम्बरवन चली गई। इसने सब कुछ दिया फिर भी पहले लक्ष्मी फिर नारायण। कितना वन्डरफुल खेल है। तो कभी किसी बात में संशय नहीं होना चाहिए। बापदादा कोई कम थोड़ेही है। जरा भी संशय इसमें नहीं लाना चाहिए। बहुत मीठा भी बनना है। कदम-कदम पर श्रीमत लेनी है। नहीं तो माया

बहुत नुकसान करा देती है। बच्चों को कितने डायरेक्शन देने पड़ते हैं। बाबा कहते हैं– पूरा समाचार लिखो। बाबा हर प्रकार की सम्भाल करेंगे। बाबा को बहुत ख्याल रहता है। कहाँ यह बच्चा चढ़ जाए। पढ़ाई पर पूरा अटेन्शन चाहिए। हम हैं मोस्ट बिलवेड गॉड फादरली स्टूडेन्ट। भगवानुवाच भी लिखा हुआ है परन्तु कृष्ण का नाम डाल दिया है। कृष्ण भी सभी मनुष्यों से ऊंच ते ऊंच ठहरा ना। फर्स्ट प्रिन्स है। कृष्ण का नाम देते हैं, नारायण का क्यों नहीं! कृष्ण है बालक। छोटेपन से बालक सतोप्रधान होता है। फिर बचपन से युवा, फिर वृद्ध अवस्था आती है। बच्चों की ही महिमा करते हैं क्योंकि पवित्र हैं ना। बालक ब्रह्मज्ञानी समान कहते हैं। बच्चे से कोई पाप नहीं होता है। तो कृष्ण भी छोटा बच्चा होने के कारण उनका बर्थ डे मनाते हैं। फिर भी कृष्ण को द्वापर में दिखा दिया है। यह सब बाप बैठ समझाते हैं। सिवाए तुम ब्राह्मणों के दुनिया में ऐसा कोई नहीं होगा जिसे यह सब बातें पता हों। ब्राह्मण हैं उत्तम। तुम ब्राह्मण हो ईश्वरीय सन्तान। सतयुग में ईश्वरीय सन्तान नहीं कहेंगे। ईश्वर से जरूर स्वर्ग की प्राप्ति होगी। यह है तुम्हारा अति दुर्लभ अमूल्य जीवन। सबका तो हो नहीं सकता। यह ड्रामा ऐसा बना हुआ है। कल्प पहले जिन्होंने पढ़ा, वह पढ़ रहे हैं। भगवान ने जरूर भगवान-भगवती पैदा किये। परन्तु भगवान-भगवती कह नहीं सकते। गॉड इज वन। निराकार की महिमा है। साकार की थोड़ेही महिमा होती है। इन लक्ष्मी-नारायण को निराकार ने ऐसा बनाया। अब राजयोग सीख रहे हैं। राजाई स्थापन हुई, तो उस समय विनाश भी हुआ। बाप जरूर स्वर्ग का वर्सा देंगे। अब तो है संगम की बात। शिवबाबा आते हैं, तब खेल पूरा होता है, फिर कृष्ण का जन्म होता है। मनुष्य तो बिचारे मूँझ गये हैं, तब तो बाप आकर समझाते हैं। परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा सब शास्त्रों का सार बताते हैं। अभी तुम जैसे मास्टर नॉलेजफुल हो गये हो। आत्मा की ही महिमा है। ज्ञान का सागर, आनंद का सागर, ब्लिसफुल, यह बाप की महिमा है। बाप कहते हैं– यह भारत तो सबसे बड़ा तीर्थ स्थान है। परन्तु कृष्ण का नाम डालने से सारी महिमा गुम कर दी है। नहीं तो सभी शिव के मन्दिर में फूल चढ़ाते, सबका सद्गति दाता वह एक है। आधाकल्प तुम प्रालब्ध भोग फिर नीचे आते हो। सबको तमोप्रधान बनना ही है। अब बाप कहते हैं– तुम बच्चों के लिए नई दुनिया स्थापन कर रहा हूँ। उसमें खुद नहीं आता, सब कुछ तुम बच्चों के लिए है। साफ बात है। मनुष्य तो अपने लिए करते हैं फिर कहते हैं कि हम निष्काम करते हैं। परन्तु निष्काम तो कोई कर न सके। हर चीज़ का फल जरूर मिलता है। मैं तो तुम बच्चों को अविनाशी ज्ञान रत्न देता हूँ। तुम्हारे लिए ही वैकुण्ठ लाया हूँ। बच्चों को सावरन्टी का सोवीनियर देते हैं। तो वह लेने लिए ऐसा लायक बनना चाहिए। स्वर्ग का मालिक बनना है। हथेली पर बहिश्त मिलता है। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति अथवा सेकेण्ड में बादशाही। दिव्य दृष्टि दाता शिवबाबा है। सेकेण्ड में बैकुण्ठ में ले जाते हैं, इसमें बाबा के हाथ में कुछ भी चाबी नहीं है। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों को राजाई देता हूँ। मैं नहीं करता हूँ। फिर जब तुम भक्ति मार्ग में जायेंगे तब तुमको दिव्य दृष्टि से बहलाना पड़ेगा। कितना अच्छी रीति समझाते हैं। ऐसा बाबा कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे एक ही बार आते हैं। बनी बनाई

बन रही अब कुछ बननी नाहि... जो कुछ होता है, ड्रामा में नूँध है। उसको साक्षी हो देखो। बाबा बहुत अच्छी रीति समझाते हैं। बच्चे मैं तुम्हारा इन्श्योरेन्श मैगनेट हूँ। तुम्हारी एक पाई भी नहीं गँवाता हूँ। कौड़ी से तुमको हीरे तुल्य बनाता हूँ। यह सब शिवबाबा करते हैं इनके द्वारा, करनकरावनहार हैं। निराकार, निरहंकारी वह है। गॉड फादर कैसे बैठ पढ़ाते हैं। ऐसे नहीं कहते चरणों में पड़ो। बाप ओबीडियन्ट सर्वेन्ट है। बाप कहते हैं– जिनको मालिक बनाया, वह सुख भोग-भोग कर अभी दुःखी हुए हैं। सुख भी बहुत मिलता है। इतना सुख कोई धर्म को नहीं मिलता है। ऐसे नहीं कह सकते कि भारतवासियों को क्यों, औरों ने क्या किया? अरे इतने ढेर मनुष्य हैं, सब तो नहीं आ सकते हैं। यह ड्रामा बना हुआ है। भारत में ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। भगवान ने आकर सहज राजयोग सिखाया था। बाप कहते हैं– मैं फिर से आया हुआ हूँ। तुम भी जानते हो 84 जन्मों का पार्ट बजाया अब फिर से हम घर जाते हैं। यह बहुत पुराना चोला हो गया है (सर्प का मिसाल)। सन्यासी लोग फिर कहते हैं आत्मा सो परमात्मा में लीन हो जाती है। ऐसी अवस्था में रहते-रहते फिर शरीर छोड़ देते हैं। परन्तु ब्रह्म में लीन तो कोई होता नही है। उनमें भी कोई-कोई बहुत तीखे होते हैं। शान्ति में बैठकर शरीर छोड़ चले जाते हैं। तो उनका वायुमण्डल में 2-3 दिन तक सन्नाटा हो जाता है। तो तुम जानते हो कि यह पुराना शरीर छोड़ बाबा के पास जाते हैं। ब्रह्म तो बाबा नहीं, यह उन बिचारों का भ्रम है। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- इस ड्रामा की हर सीन साक्षी होकर देखना है क्योंकि बनी बनाई बन रही। कभी किसी बात में संशय नहीं उठाना है।

२- बाप इन्श्योरेन्स मैगनेट है, इसलिए तन-मन-धन बाप की सर्विस में सफल कर अपना भविष्य बनाना है। बाप से पूरा-पूरा कनेक्शन रखना है। पूरा समाचार देना है।

वरदान:- अपने अनादि आदि स्वरूप की स्मृति से निर्बन्धन बनने और बनाने वाले मरजीवा भव

जैसे बाप लोन लेता है, बंधन में नहीं आता, ऐसे आप मरजीवा जन्म वाले बच्चे शरीर के, संस्कारों के, स्वभाव के बंधनों से मुक्त बनो, जब चाहें जैसे चाहें वैसे संस्कार अपने बना लो। जैसे बाप निर्बन्धन है ऐसे निर्बन्धन बनो। मूलवतन की स्थिति में स्थित होकर फिर नीचे आओ। अपने अनादि आदि स्वरूप की स्मृति में रहो, अवतरित हुई आत्मा समझकर कर्म करो तो और भी आपको फालो करेंगे।

स्लोगन:-

याद की वृत्ति से वायुमण्डल को पावरफुल बनाना–यही मन्सा सेवा है।

प्र. वि. शो. का अपना अच्छा जादू है

★ 21-6-01 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – यह सारी विश्व ईश्वरीय फैमिली है इसलिए गाते हैं तुम मात-पिता हम बालक तेरे, तुम अभी प्रैक्टिकल में गॉडली फैमिली के बने हो"

५८

प्रश्नः- बाप से 21 जन्मों का पूरा वर्सा लेने की सहज विधि कौन सी है?

उत्तरः- संगम पर शिवबाबा को अपना वारिस बनाओ। तन-मन-धन से बलिहार जाओ तो 21 जन्मों के लिए पूरा वर्सा प्राप्त होगा। बाबा कहे जो बच्चे संगम पर अपना पुराना सब कुछ इन-श्योर करते हैं, उन्हें मैं रिटर्न में 21 जन्मों तक देता हूँ।

गीतः- नयन हीन को राह दिखाओ...

ओम् शान्ति। बच्चों ने गीत सुना। यह भगत भगवान को पुकारते हैं। भगवान को पूरा न जानने के कारण मनुष्य कितने दुःखी हैं। भक्ति मार्ग में कितना माथा मारते रहते हैं। सिर्फ इस जीवन की बात नहीं। जब से भक्ति शुरू हुई है तब से धक्के खाते रहते हैं। भारत में ही देवी-देवताओं का राज्य था, जिसको स्वर्ग सचखण्ड कहा जाता था। अब भारत सचखण्ड है। भारत की महिमा बड़ी जबरदस्त है क्योंकि भारत परमपिता परमात्मा का बर्थ प्लेस है। उनका असुल नाम शिव है। शिव जयन्ती मनाते हैं। रूद्र वा सोमनाथ जयन्ती नहीं कहा जाता। शिव जयन्ती वा शिव रात्रि कहा जाता है। स्वर्ग की स्थापना करने वाला एक ही हेविनली गॉड फादर है। अब सभी भक्तों का भगवान तो जरूर एक होना चाहिए। सभी नयन हीन हैं अर्थात् ज्ञान के चक्षु वा डिवाइन इनसाइट नहीं हैं। भगवानुवाच – मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ, श्रीमत भगवत गीता है मुख्या श्री अर्थात् श्रेष्ठ मत। अब तुमको बुद्धिवान बनाया जाता है। दिव्य चक्षु अर्थात् ज्ञान का तीसरा नेत्र दिखाते हैं। वास्तव में ज्ञान का तीसरा नेत्र तुम ब्राह्मणों को मिलता है। जिससे तुम बाप को और बाप की रचना के आदि-मध्य-अन्त को जान जाते हो। इस समय सभी में देह अहंकार वा 5 विकार हैं इसलिए घोर अन्धियारे में हैं। तुम बच्चों के पास रोशनी है। तुम्हारी आत्मा सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जान गई है। आगे तुम सब अज्ञान में थे। ज्ञान अंजन सतगुरु दिया अज्ञान अन्धेर विनाशा। जो पूज्य थे वही फिर पुजारी बन पड़े हैं। पूज्य हैं रोशनी में। पुजारी हैं अन्धियारे में। परमात्मा को आपेही पूज्य, आपेही पुजारी नहीं कह सकते हैं। वह तो है ही परम पूज्य। सबको पूज्य बनाने वाला। उनको कहा जाता है परम पूज्य। परमपिता परम आत्मा माना परमात्मा। कृष्ण को थोड़ेही ऐसे कहेंगे। उनको सब गॉड फादर नहीं कहेंगे। निराकार गॉड को ही सब गॉड फादर कहते हैं। है वह भी आत्मा परन्तु परम है इसलिए उनको परमात्मा कहा जाता है। वह परम आत्मा सदैव परमधाम में रहने वाले हैं। अंग्रेजी में उनको सुप्रीम सोल कहा जाता है। बाप कहते हैं–तुम गाते भी हो आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल...। ऐसे नहीं परमात्मा, परमात्मा से अलग रहे बहुकाल...। नहीं, यह पहले नम्बर का अज्ञान है – आत्मा सो परमात्मा, परमात्मा सो आत्मा कहना। आत्मा तो जन्म मरण में आती है। परमात्मा थोड़ेही पुनर्जन्म में आते हैं। बाप बैठ समझाते हैं– तुम भारतवासी स्वर्गवासी पूज्य थे। ह्यमिनिटी के पूज्य सब देवी-देवतायें थे। यह सारी ईश्वर की फैमिली है। ईश्वर है रचता। गाया जाता है – तुम मात पिता हम बालक तेरे... तो फैमिली हो गई ना। अच्छा भला यह तो बताओ तुम मात-पिता

किसको कहते हो? यह कौन कहते हैं? आत्मा कहती है तुम मात-पिता.... तुम्हारी कृपा से स्वर्ग के सुख घनेरे हमको स्वर्ग में मिले हुए थे। तुम मात-पिता आकर स्वर्ग की स्थापना करते हो। तो हम आपके बच्चे बनते हैं। बाप कहते हैं– मैं संगम पर ही आकर राजयोग सिखाता हूँ, नई दुनिया के लिए। मनुष्यों की बुद्धि बिल्कुल ही भ्रष्ट बन गई है। स्वर्ग को नर्क समझ लेते हैं। कहते हैं वहाँ भी कंस, जरासन्धी, हिरण्यकश्यप आदि थे। बाप आकर समझाते हैं– क्या तुम भूल गये हो। मेरी तो शिव जयन्ती भी तुम भारत में ही मनाते हो। गाया भी जाता है – शिव रात्रि। कौन सी रात्रि? यह ब्रह्मा की बेहद की रात्रि। बाप संगम पर आकर रात्रि से दिन अर्थात् नर्क से स्वर्ग बनाते हैं। शिव रात्रि के अर्थ का भी कोई को पता नहीं है। भगवान है निराकार। मनुष्यों के तो जन्म बाई जन्म शरीर के नाम बदलते हैं। परमात्मा कहते हैं मेरा कोई शरीर का नाम नहीं। मेरा नाम शिव ही है। मैं सिर्फ बूढ़े वानप्रस्थ तन का आधार लेता हूँ। यह पूज्य था, अब पुजारी बना है। शिवबाबा आकर स्वर्ग रचते हैं, हम उनके बच्चे हैं तो जरूर हम स्वर्ग के मालिक होने चाहिए ना। शिवबाबा है ऊंच ते ऊंच। ब्रह्मा-विष्णु-शंकर का अपना-अपना पार्ट है। हर एक आत्मा में अपना सुख दु:ख का पार्ट नूँधा हुआ है। तुम जानते हो हम शिवबाबा के वारिस बने थे। शिवबाबा ने स्वर्गवासी बनाया था, तब उनको सब याद करते हैं। ओ गॉड रहम करो। साधू भी साधना करते हैं क्योंकि यहाँ दु:ख है तो निर्वाणधाम जाना चाहते हैं। आत्मा, परमात्मा में लीन हो जाती है वा हम आत्मा सो परमात्मा – यह समझना रांग है। अब तुम कहते हो, हम आत्मा परमधाम में रहने वाली हैं। फिर देवता कुल में आयेंगी फिर 84 जन्म भोगेंगी। हम आत्मा वर्णों में आती है। शिवबाबा जन्म मरण में नहीं आते हैं। सिर्फ नारायण की डिनायस्टी थी। जैसे क्रिश्चियन धराने में एडवर्ड दी फर्स्ट, सेकेण्ड, थर्ड चलता है। वैसे वहाँ भी लक्ष्मी-नारायण दी फर्स्ट, लक्ष्मी नारायण दी सेकेण्ड, थर्ड, ऐसे 8 डिनायस्टी चलती हैं। अभी तुम ब्राह्मणों का तीसरा नेत्र खुला है। बाप बैठ आत्माओं से बात करते हैं। तुम ऐसे 84 का चक्र लगाए इतने-इतने जन्म लेते आये हो। वर्णों का भी एक चित्र बनाते हैं जिसमें देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र, ब्राह्मण बनाते हैं। अब तुम जानते हो हम सो ब्राह्मण चोटी है। इस समय हम हैं ईश्वरीय औलाद प्रैक्टिकल में। इस सहज राजयोग और ज्ञान से हमको सुख घनेरे मिलते हैं। कोई तो सूर्यवंशी राजधानी का वर्सा लेते हैं, कोई चन्द्रवंशी का। सारी किंगडम स्थापन हो रही है। हर एक अपने पुरुषार्थ से वह पद पायेंगे। कोई अगर पूछे कि अभी पढ़ते-पढ़ते हमारा शरीर छूट जाए तो क्या पद मिलेगा? तो बाबा बतला सकते हैं। योग से ही आयु बढ़ती है, विकर्म विनाश होते हैं और कोई उपाय पतित से पावन बनने का नहीं है। पतित-पावन कहने से ही भगवान याद आता है। परन्तु भगवान है कौन? यह नहीं जानते हैं। बाप कहते हैं– मैं आता ही भारत में हूँ। यह मेरा बर्थ प्लेस है। सोमनाथ का मन्दिर कितना आलीशान है – यह बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। भक्ति मार्ग में फिर यादगार बनने शुरू होते हैं। जब पुजारी बनते हैं तो पहले-पहले सोमनाथ का मन्दिर बनाते हैं। भारत तो सतयुग त्रेता में बहुत साहूकार था। मन्दिरों में भी अकीचार धन था। भारत हीरे तुल्य था। अब तो भारत कंगाल कौड़ी तुल्य है। फिर बाप आकर भारत को हीरे तुल्य बनाते हैं। कोई से भी पूछो – क्रियेटर कौन है? कहेंगे परमात्मा। वह कहाँ है? वह तो सर्वव्यापी है। बाप कहते हैं– यह सारा झाड़ जड़ जड़ीभूत अवस्था को पाया हुआ है।

अपने को देखा जाता है कि हम लायक बने हैं जो बाबा मम्मा की गद्दी नशीन बन सकें?

यह है ही पतित दुनिया। पवित्रता है मुख्य। अब तो नो हेल्थ, नो वेल्थ, नो हैपीनेस है। यह है रूण्य के पानी मिसल (मृगतृष्णा के समान) राज्य। इस पर भी दुर्योधन की कहानी शास्त्रों में लिखी हुई है। दुर्योधन विकारी को कहा जाता है। द्रोपदियाँ कहती हैं हमारी लाज रखो। सब द्रोपदियाँ हैं ना। यह बच्चियाँ स्वर्ग का द्वार हैं। बाबा कितना अच्छी रीति समझाते हैं। जिनका बुद्धियोग पूरी रीति लगा हुआ होगा तो धारणा भी होगी। नॉलेज ब्रह्मचर्य में ही पढ़ी जाती है। बाप कहते हैं– गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान रहना है। दोनों तरफ निभाना है। मरना भी जरूर है। मरने समय मनुष्य को मन्त्र देते हैं। बाप कहते हैं कि तुम सब मरने वाले हो। मैं कालों का काल सबको वापिस ले जाने वाला हूँ। तो खुशी होनी चाहिए ना। फिर जो अच्छी रीति पढ़ेंगे वह स्वर्ग के मालिक बनेंगे। नहीं पढ़ेंगे तो प्रजा पद पायेंगे। यहाँ तुम आये हो राज्य पद पाने। यह पढ़ाई है, इसमें अन्धश्रद्धा की तो बात ही नहीं। यह पढ़ाई है राजाई के लिए। जैसे पढ़ाई की एम आब्जेक्ट है – बैरिस्टर बनेगा तो योग जरूर पढ़ाने वाले टीचर से रखना पड़े। यहाँ तुमको भगवान पढ़ाते हैं तो उनसे योग लगाना है। बाप कहते हैं– मैं परमधाम, बहुत दूर से आता हूँ। परमधाम कितना ऊंचा है। सूक्ष्मवतन से भी ऊंच वहाँ से आने में मुझे सेकेण्ड लगता है। उनसे तीखा और कुछ हो नहीं सकता। सेकण्ड में जीवनमुक्ति देता हूँ। जनक का मिसाल है ना। अभी तो नर्क पुरानी दुनिया है। नई दुनिया स्वर्ग को कहा जाता है। बाप नर्क का विनाश कराए स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। बाकी सब आत्मायें शान्तिधाम में चली जाती हैं। आत्मा इमार्टल है। उनको पार्ट भी इमार्टल मिला हुआ है। फिर आत्मा छोटी बड़ी कैसे हो सकती है अथवा जल मर कैसे सकती है? है ही स्टार। बड़ा छोटा हो न सके। अब तुम हो गॉड फादरली स्टूडेन्ट। गॉड फादर नॉलेजफुल, ब्लिसफुल है। वह तुमको पढ़ा रहे हैं। तुम जानते हो इस पढ़ाई से हम सो देवी देवता बनेंगे। तुम भारत की सेवा कर रहे हो। पहले-पहले तो बाप का बनना है और जगह तो गुरू के पास जाते हैं, उनका बनते हैं अथवा उनको अपना गुरू बनाते हैं। यहाँ तो है बापा। तो पहले बाप का बच्चा बनना पड़े। बाप बच्चों को अपनी जायदाद देते हैं। बाप कहते हैं–बच्चे तुम एक्सचेंज करो। तुम्हारा कखपन हमारा, हमारा सब कुछ तुम्हारा। देह सहित जो कुछ है वह सब मेरे को दो। मैं तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों को पवित्र बना दूँगा और फिर राजाई पद भी दूँगा। तुम्हारे पास जो कुछ है तुम बलि चढ़ा दो तो जीवनमुक्ति मिलेगी। बाबा यह सब आपका है। बाप कहते हैं–तुम मुझे वारिस बनाओ। मैं 21 जन्म तुम्हें वारिस बनाता हूँ। सिर्फ मेरी मत पर चलो। भल धन्धा आदि करो। विलायत जाओ, कुछ भी करो। सिर्फ मेरी मत पर चलो। खबरदार रहना माया घड़ी-घड़ी पछाड़ेगी। कोई भी विकर्म नहीं करना। श्रीमत पर चलेंगे तो श्रेष्ठ बनेंगे। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- आत्मा और शरीर दोनों को पावन बनाने के लिए देह सहित जो कुछ है उसे बाप के हवाले कर उनकी श्रीमत पर चलना है।

२- मात-पिता के गद्दी नशीन बनने के लिए स्वयं को लायक बनाना है। लायक बनने के लिए मुख्य पवित्रता की धारणा करनी है।

वरदान:- अपनी सम्पूर्णता के आधार पर समय को समीप लाने वाले मास्टर रचयिता भव

समय आपकी रचना है, आप मास्टर रचयिता हो। रचयिता रचना के आधार पर नहीं होते। रचयिता रचना को अधीन करते हैं। इसलिए यह कभी नहीं सोचो कि समय आपेही सम्पूर्ण बना देगा। आपको सम्पूर्ण बन समय को समीप लाना है। वैसे कोई भी विघ्न आता है तो समय प्रमाण जायेगा जरूर लेकिन समय से पहले परिवर्तन शक्ति द्वारा उसे परिवर्तन कर दो—तो उसकी प्राप्ति आपको हो जायेगी। समय के आधार पर परिवर्तन किया तो उसकी प्राप्ति आपको नहीं होगी।

स्लोगन:-

कर्म और योग का बैलेन्स रखने वाले ही सच्चे कर्मयोगी हैं।

ओम् शान्ति 23-4-2001 मधुबन

अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश (गुल्जार दादी)

आज विशेष अपनी मीठी दादी का यादप्यार और 11 मई की डेट प्रति सन्देश लेकर पहुंची तो बाबा ने मुस्कराते मिलन मनाया और क्या देखा कि हमारे जाने के पहले ही बापदादा के नयनों के सामने सर्व ब्राह्मण इमर्ज थे। बाबा बहुत स्नेह और शक्तिशाली दृष्टि से हर बच्चे को देख-देख मुस्करा रहे थे। यह देख दिल से यही निकला वाह बाबा की कमाल, बाबा के पास तो सब बच्चे इमर्ज हैं। बापदादा खुद जैसे रिजल्ट देख रहे हैं।

कुछ समय के बाद बापदादा बोले, बच्ची आज दुबई से बाप के पास मिलने आई हो। मैं बोली बाबा सब बच्चे बड़े खुश हैं कि बाबा ने हमें चांस दिया है बड़ी बहनों से नजदीक मिलने सुनने का, बाबा बोले हाँ बच्ची आजकल सब बाप की विशेष आत्माओं के नजदीक आने बहुत चाहते हैं।

उसके बाद फिर बाबा बोले, क्या आज 11 मई नजदीक आ रही है, उसका समाचार सुनाने आई हो! देखो बापदादा तो रोज़ बच्चों के स्थिति के परिवर्तन की रिजल्ट देखते हैं और बहुत बच्चे सोच भी रहे हैं कि बाबा को रिजल्ट क्या देंगे, बहुत मीठी-मीठी रूहरिहान करते रहते हैं। लेकिन बाप-दादा तो यहाँ बच्चों को रियलाइज कराने चाहते हैं कि डेट फिक्स होते भी कई बच्चों ने देख लिया कि जितना होना चाहिए उतना नहीं है। तो फाइनल समाप्ति के समय जो अचानक आना है उस समय क्या कर सकेंगे! क्योंकि बहुत बच्चों के मन में बार-बार आता है - बाबा लास्ट समय कब आयेगा वा संगम समय कब सम्पन्न होगा, थोड़ा सा ईशारा दे तो हम तीव्र पुरुषार्थ करें, लेकिन बापदादा ने रिह-र्सल कराके दिखाया कि डेट फिक्स बताते भी क्या रिजल्ट रही? इसलिए अब फिर भी चांस है। अब तक भी बाप के रहमदिल का पार्ट, मर्सीफुल का पार्ट चल रहा है। इसलिए अब अपने ऊपर हर समय परिवर्तन का अटेन्शन चाहिए। हर संकल्प कर्म में एवररेडी रहने का अभ्यास चाहिए। सदा दृढ़ता द्वारा निश्चय बुद्धि विजयी बनना ही है। बापदादा हर बच्चे को स्वराज्य अधिकारी सो विश्व अधिकारी देखने चाहते हैं। सोचो, अब स्व को बदलना ही है, कुछ भी सामने बातें आयें लेकिन मुझे आगे उड़ना ही है। इसके लिए अब हर संकल्प को ही संकल्प में चेक करो और चेंज करो, वाचा, कर्मणा तो स्वत: ही श्रेष्ठ हो जायेगी। ऐसे **शार्टकट पुरुषार्थ** का रास्ता बनाओ और सफलता मूर्त बनो।

ऐसे कहते चारों ओर दृष्टि दौड़ाते बापदादा हर बच्चे को अपने दिल में समा रहे थे। दादी जी, दादी जानकी जी को बहुत स्नेह सम्पन्न दृष्टि देते जैसे नयनों ही नयनों में, नयनों की भाषा में कुछ बातें कर रहे थे। मैं देखती रही और मिलन मनाते साकार वतन में पहुंच गई। *ओम् शान्ति।*

मुरली न.- (५९)

22-6-01 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – इस दुनिया में निष्काम सेवा केवल एक बाप ही करता है, बाकी तुम जो भी कर्म करते हो उसका फल अवश्य मिलता है"

प्रश्नः- ड्रामा अनुसार कौन सी बात 100 प्रतिशत सरटेन है? जिसकी तुम बच्चों को खुशी है?

उत्तरः- ड्रामा अनुसार सरटेन है कि नई राजधानी स्थापन होनी ही है। तुम बच्चों को खुशी है कि श्रीमत पर हम अपने लिए अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। इस पुरानी दुनिया का विनाश तो होना ही है। तुम बच्चे जितना पुरूषार्थ करेंगे तुम्हें उतना ऊंच पद प्राप्त होगा।

गीतः- तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है..... (कॅजेट अमुल्यरतन 1 A 2

ओम् शान्ति। जो बच्चे कहते हैं, बाबा भी वही कहते हैं। बच्चे कहते हैं बाबा तुम्हें पाके हम स्वर्ग के मालिक बनते हैं। बाप भी कहते हैं बच्चे मनमनाभव। बात एक ही हो गई। मनुष्य सब पूछेंगे कि ब्रह्माकुमार कुमारियों को इस सतसंग में जाकर क्या मिलता है? तो ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ कहते हैं हम बापदादा से विश्व के मालिक बनते हैं। विश्व का मालिक और कोई बन न सके। विश्व के मालिक यह लक्ष्मी-नारायण ही हैं, शिवबाबा तो विश्व का मालिक हो नहीं सकता। तुम बच्चे विश्व के मालिक बनते हो। तुम्हारा बाप विश्व का मालिक नहीं बनता। ऐसी निष्काम सेवा करने वाला और कोई होता नहीं। हर एक को अपनी सेवा का फल जरूर मिलता है। भक्ति मार्ग में वा किसी भी प्रकार से जो कोई कुछ भी करते हैं....सोशल वर्कर को भी सेवा का फल जरूर मिलता है। गवर्मेन्ट से पघार मिलता है। बाप कहते हैं– मैं ही एक निष्काम सेवा करता हूँ, जो बच्चों को विश्व का मालिक बनाता हूँ और मैं नहीं बनता हूँ। बच्चों को सुखी करके, सुखधाम का मालिक बनाए 21 जन्मों का सुख दे मैं अपने निर्वाणधाम में वा वानप्रस्थ अवस्था में बैठ जाता हूँ। वानप्रस्थ तो मूलवतन को ही कहेंगे। मनुष्य वानप्रस्थ लेते हैं। बच्चों को सब कुछ दे जाए सतसंग आदि करते हैं। गुरू करते हैं कि यह मुक्ति का रास्ता बताये। अब तुम बच्चे जान गये हो कि मुक्ति जीवनमुक्ति का रास्ता कोई मनुष्य मात्र कभी किसको बता नहीं सकते। वे किसी को भी सद्गति दे नहीं सकते। अपने को भी नहीं दे सकते। अपने को दें तो फिर दूसरों को भी दे सकें। बाप आते ही हैं परमधाम से। वह वहाँ का रहने वाला है, तुम बच्चे भी वहाँ के रहने वाले हो। तुमको पार्ट बजाना है इस कर्मक्षेत्र पर। बाबा को भी एक बार यहाँ आना है तुम बच्चों के लिए जबकि स्वर्ग की स्थापना हो रही है तो जरूर नर्क का विनाश होना ही है।

अभी तुम जान गये हो – शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। तुम जानते हो हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं फिर से। तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हर 5 हजार वर्ष बाद हम आकर फिर से ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा के बच्चे बनते हैं, वर्सा पाने के लिए। पतित-पावन उनको कहा जाता है। नॉलेजफुल ज्ञान

का सागर भी है। योग अर्थात् याद सिखाते हैं परन्तु निराकार कैसे समझाये इसलिए कहते हैं ब्रह्मा द्वारा मनुष्य से देवता बनाता हूँ अर्थात् देवी-देवता धर्म की स्थापना कराता हूँ। अब वह धर्म है नहीं। फिर बनाना पड़े। अब फिर से आदि सनातन देवी-देवता धर्म स्थापन कर बाकी सबको मुक्तिधाम में ले जाता हूँ। भारत प्राचीन खण्ड है इसलिए भारत की आदमशुमारी वास्तव में सबसे जास्ती होनी चाहिए। ऐसी बातें और कोई की बुद्धि में नहीं आती। आदि सनातन देवी-देवता धर्म सबसे जास्ती बड़ा होना चाहिए। 5 हजार वर्ष से उन्हों की वृद्धि होती रहती है। बाकी और तो आते ही हैं 2500 वर्ष के बाद। इस्लामियों की आदमशुमारी कम होनी चाहिए फिर थोड़े समय बाद बौद्धी धर्म वाले आते हैं तो उन्हों में थोड़ा फर्क होना चाहिए। इस्लामी, बौद्धी आदि पहले सतोप्रधान हैं फिर धीरे-धीरे तमोप्रधान बनते हैं। यह भी हिसाब है। जो अनन्य समझदार बच्चे हैं उन्हों को ख्याल करना पड़े। आजकल लिखते हैं चाइनीज़ सबसे ज्यादा हैं। परन्तु उन्हों को सृष्टि चक्र का ज्ञान तो है नहीं। यह सब राज़ तुम बच्चों की बुद्धि में है। जो पढ़े-लिखे हैं उन्हों को डिटेल में समझाना होता है। देवी-देवता धर्म वालों को 5 हजार वर्ष हुए। तो इस समय उन्हों की संख्या बहुत होनी चाहिए। परन्तु देवी-देवता धर्म वाले फिर और-और धर्मों में कनवर्ट हो गये हैं। पहले-पहले बहुत मुसलमान बन गये फिर बौद्धी भी बहुत बने हैं। यहाँ भी बौद्धी बहुत हैं, क्रिश्चियन तो बेशुमार हैं। देवता धर्म का तो नाम ही नहीं है। अगर हम ब्राह्मण धर्म कहें तो भी हिन्दुओं की लाइन में डाल देंगे। अभी तुम जानते हो आदि सनातन देवी-देवता धर्म स्थापन हो रहा है – हम ब्राह्मणों द्वारा श्रीमत पर। यह भी समझ होनी चाहिए। धर्म गाये तो जाते हैं ना। यहाँ के मनुष्य अपने को हिन्दू की लाइन में ले आते हैं। कहेंगे हिन्दू आर्य धर्म है, सबसे पुराना है। भारतवासी पहले-पहले आर्य थे, बहुत धनवान थे, अब अनआर्य बन गये हैं। कोई अक्ल नहीं, जिसको जो आता वह धर्म का नाम रख देते हैं। झाड़ के पिछाड़ी छोटे-छोटे पत्ते टाल टालियाँ निकलते हैं। नये का थोड़ा मान होता है।

अभी तुम बच्चे जानते हो कि हम बाबा से स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। तो ऐसे वर्सा देने वाले बाप को कितना याद करना चाहिए। तुम जितना जास्ती याद करेंगे एक तो वर्सा मिलेगा और तुम पावन बनेंगे। लौकिक बाप से तो धन का वर्सा मिलता है। साथ-साथ फिर पतित बनने का भी वर्सा मिलता है। वह लौकिक बाप, वह पारलौकिक बाप और यह है बीच में अलौकिक बाप। इनको बीच में दोनों तरफ से जोड़ दिया जाता है। शिवबाबा को तो कोई तकलीफ नहीं होती है, इनको कितनी गाली खानी पड़ती है। वास्तव में कृष्ण को गाली नहीं मिलती है। बीच में फँसा है यह। कहते हैं ना – रास्ते चलते ब्राह्मण फँसा। गाली खाने के लिए यह फँसा है। अलौकिक बाप को ही सहन करना पड़ता है। यह किसको पता ही नहीं कि शिवबाबा इनमें प्रवेश कर आए पतितों को पावन बनाते हैं। पवित्र बनने पर ही मार खाते हैं। बाप कहते हैं–मैं आया हूँ सबको वापिस ले जाने। तुम जानते हो, मौत सामने खड़ा है। विनाश तो जरूर चाहिए। विनाश बिगर सुख शान्ति कैसे हो। जब कोई लड़ाई आदि लगती है तो मनुष्य यज्ञ आदि रचते हैं, लड़ाई बन्द

हो जाए। तुम ब्राह्मण कुल भूषण जानते हो विनाश तो जरूर होगा। नहीं तो स्वर्ग के गेटस कैसे खुलेंगे। सब स्वर्ग में तो नहीं आयेंगे। जो पुरूषार्थ करेंगे वही चलेंगे बाकी जायेंगे मुक्तिधाम। यह किसको भी पता न होने के कारण कितना डरते हैं। शान्ति के लिए कितना धक्का खाते हैं। कान्फ्रेन्स करते रहते हैं। सिर्फ तुम ब्राह्मण ही जानते हो सुखधाम, शान्तिधाम की कैसे स्थापना हो रही है। विनाश के सिवाए स्थापना हो न सके। तुम अभी त्रिकालदर्शी बने हो। तीसरा नेत्र ज्ञान का मिला है। वह तो कहते रहते हैं पीस कैसे हो? अर्थात् कोई भी लड़े नहीं। सभी कहते हैं वन नेस हो। एक ही बाप की मत लें कि हम सब एक बाप के बच्चे भाई-भाई हैं तो वन नेस हो जायेगी। एक बाप के बच्चे हैं तो आपस में लड़ना नहीं चाहिए। यह भी तो सतयुग में ही था। वहाँ कोई भी आपस में लड़ते नहीं। वह तो सतयुग की बात हो गई, यहाँ तो है कलियुग। बरोबर सतयुग में देवता थे, बाकी सब आत्मायें कहाँ थी पता नहीं पड़ता। तुम अब समझते हो, एक राज्य सिर्फ सतयुग में ही था। वहाँ सुख-शान्ति सब था। यह सब बातें तुम्हारी बुद्धि में हैं – नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। समझते हैं, बरोबर हम सतयुग में राज्य करते थे, बहुत सुख था। अद्वेत धर्म था। यह ज्ञान किसको है नहीं। इस समय तुम नॉलेजफुल बनते हो। बाप तुमको आप समान बनाते हैं। जो बाप की महिमा वही तुमको बनना है। सिर्फ दिव्य दृष्टि की चाबी बाप के पास रहती है। बाप ने बताया है– भक्ति मार्ग में मुझे काम करना पड़ता है, जो जिसकी पूजा करते हैं मैं उनकी मनोकामना पूरी करता हूँ। यहाँ भी दिव्य दृष्टि का पार्ट चलता है। कहते हैं ना– अर्जुन ने विनाश का साक्षात्कार किया। विनाश भी जरूर होना है। विष्णुपुरी भी जरूर स्थापन होनी है। बाप ने जैसे कल्प पहले समझाया था– वैसे ही बैठ समझाते हैं। बाबा हमको मनुष्य से देवता बनाते हैं। जब देवता बनते हैं तो आसुरी सृष्टि का विनाश जरूर होगा। चारों तरफ हाहाकार मचना है। बुद्धि समझ सकती है, नेचुरल कैलेमिटीज़ आनी हैं। मूसलधार बरसात भी होनी है। इन सबका विनाश हो जाए तब सतयुग की स्थापना हो। 5 तत्वों की खाद भी मिल जायेगी। इस धरती को खाद देखो कितनी मिलती है। बाप कहते हैं– इस रूद्र ज्ञान यज्ञ में यह सब स्वाहा हो जायेगा। भक्ति मार्ग में देखो रूद्र यज्ञ कैसे रचते हैं। शिवबाबा का लिंग और छोटे-छोटे सालिग्राम बहुत बनाकर पूजा करके फिर मिटा देते हैं, फिर रोज़ बनाते हैं। पूजा करके फिर तोड़ देते हैं। शिवबाबा के साथ जिन्होंने भी सर्विस की उन्हों का भी यह हाल करते हैं। रावण की देखो हर वर्ष एफीज़ी बनाए उनको जलाते हैं। दुश्मन की तो एक दो बार एफीजी बनाए जलाते हैं, ऐसे नहीं कि वर्ष-वर्ष जलाने का नियम रखते हैं। एक बार ही गुस्सा निकाल देंगे। रावण को तो हर वर्ष जलाते हैं। इनका अर्थ कोई समझते थोड़ेही हैं। फिर कहते हैं रावण ने सीता को चुराया, कुछ अर्थ नहीं समझते। फॉरेनर्स क्या समझेंगे, कुछ भी नहीं। दिन-प्रतिदिन रावण को बड़ा बनाते जाते हैं क्योंकि रावण बहुत दुःख देने वाला है। अभी तुम इस पर जीत पाते हो। सतयुग में होगा ही नहीं। यह जो कर्म की भोगना, बीमारी आदि होती है, यह है रावण के कारण। रावण की प्रवेशता होने के कारण मनुष्य जो भी कर्म करते हैं, वह विकर्म हो जाते हैं। सुख-दुःख का खेल

बना हुआ है। इस हिस्ट्री-जॉग्राफी का किसको भी पता नहीं है। लक्ष्मी-नारायण को यह राज्य कैसे मिला? किसको पता नहीं। तुम छोटे-छोटे बच्चे समझाते हो– यह लक्ष्मी-नारायण सतयुग में राज्य करते थे। संगम पर यह राजयोग सीख यह पद पाया है। बिड़ला को भी छोटी-छोटी बच्चियाँ जाकर समझायें कि इन्होंने यह राज्य कैसे पाया? अभी तो कलियुग है, इनको सतयुग नहीं कहा जाता। राजाई तो अभी है नहीं। राजाओं का ताज ही उड़ा दिया है। धर्म शास्त्र सिर्फ 4 हैं। गीता धर्म शास्त्र है, जिससे 3 धर्म अभी स्थापन होते हैं, न कि सतयुग में। ऐसे नहीं कि लक्ष्मी-नारायण ने वा राम ने कोई धर्म स्थापन किया। यह धर्म अभी स्थापन कर रहे हैं फिर इस्लामी, बौद्धी और क्रिश्चियन। क्रिश्चियन का एक ही धर्म शास्त्र है बाइबिल, बस। फिर पीछे वृद्धि होती जाती है। आदि सनातन है ही देवता धर्म अब फिर से देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। तुम ड्रामा के राज़ को अच्छी रीति समझ गये हो। खुशी भी रहती है। जबकि तुम बच्चों को 100 प्रतिशत सरटेन है कि हम फिर से अपना राज्य-भाग्य स्थापन कर रहे हैं – इसमें लड़ाई आदि की कोई बात ही नहीं। राजधानी स्थापन हो रही है, यह सरटेन है। एज़ सुरटेन एज डेथ। तुम जानते हो हम फिर से राज्य भाग्य लेते हैं। कल्प-कल्प बाप से वर्सा लेते हैं। जितना पुरूषार्थ करेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। अच्छा –

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- जो बाप की महिमा है उस महिमा को स्वयं में लाना है। बाप समान महिमा योग्य बनना है। पारलौकिक बाप से पवित्रता का वर्सा लेना है। पवित्र बनने से ही स्वर्ग का वर्सा मिलेगा।

२- श्रीमत पर अपने ही तन-मन-धन से एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करनी है।

वरदान:- स्वयं को जिम्मेवार समझकर हर कर्म यथार्थ विधि से करने वाले सम्पूर्ण सिद्धि स्वरूप भव

इस समय आप संगमयुगी श्रेष्ठ आत्माओं का हर श्रेष्ठ कर्म सारे कल्प के लिए विधान बन रहा है। तो स्वयं को विधान के रचयिता समझकर हर कर्म करो, इससे अलबेलापन स्वत: समाप्त हो जायेगा। संगमयुग पर हम विधान के रचयिता, जिम्मेवार आत्मा हैं–इस निश्चय से हर कर्म करो तो यथार्थ विधि से किये हुए कर्म की सम्पूर्ण सिद्धि अवश्य प्राप्त होगी।

स्लोगन:-

सर्वशक्तिमान् बाप साथ हो तो माया पेपर-टाइगर बन जायेगी।

★26-6-01 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – बाप आये हैं तुम बच्चों की खिदमत (सेवा) करने, तुम भी बाप समान बन सबकी खिदमत (सेवा) करो"

प्रश्नः- ब्रह्मा बाप का कौन सा एक विचार चलता, जिस पर शिवबाबा कहते वेट एण्ड सी, फिकर मत करो?

उत्तरः- बाबा का विचार चलता, समय बड़ा नाजुक होता जाता, बच्चों को अविनाशी ज्ञान रत्न लेने बाप के पास आना ही है, इतने ढेर बच्चे कहाँ आकर रहेंगे। कितने मकान बनाने पड़ेंगे। शिवबाबा कहते वेट एण्ड सी। कल्प पहले जैसे आकर रहे थे वैसे ही रहेंगे। तुम फिकर मत करो; तुम सिर्फ पढ़ते रहो, मनमनाभव। तुम्हें कर्मातीत बनने का पुरूषार्थ करना है।

गीतः- तुम्हें पाके हमने.... मुरली कैसेट साईड A-2

ओम् शान्ति। बाप भी कहते हैं बच्चे ओम् शान्ति। और क्या कहेंगे! बच्चों को कहते हैं–बच्चे ओम् शान्ति, तत्त्वम्। हे बच्चों तुम भी शान्त स्वरूप हो। तुम भी मास्टर पतित-पावन हो। ऐसे और कोई कह नहीं सकेंगे। कहा जाता है – जैसे काग वैसे बच्चे। तुम बच्चे भी जानते हो जैसे बाबा वैसे हम। बाप कहते हैं मैं ज्ञान का सागर हूँ। तुम बच्चे भी समझेंगे हम मास्टर ज्ञान सागर हैं, गोया नदियाँ ठहरे। सागर के बाल-बच्चे भी होंगे ना। बड़ी-बड़ी नदियाँ भी हैं। बड़े-बड़े तलाव, बड़े-बड़े सरोवर भी हैं। वह हैं जड़, तुम हो चैतन्य। सागर से ही निकले हुए हैं। कई बच्चे भी इन बातों को समझते नहीं हैं क्योंकि पढ़ी लिखी तो बच्चियाँ हैं नहीं। बाबा ने एक बार पूछा था – चीनी किससे बनती है? गुड़ किससे बनता है? तो बोला लाल गन्ने से गुड़ बनता है, सफेद गन्ने से चीनी बनती है। बिचारी पढ़ी हुई तो हैं नहीं। अब तुमको कितनी बड़ी बातें समझाते हैं। पानी के सागर से पानी की ही नदियाँ निकलती हैं। मनुष्य बहुत बढ़ते जाते हैं तो पानी भी बहुत चाहिए ना। कितने कैनाल्स आदि बनाते रहते हैं। तो तुम बच्चों को उठते-बैठते, चलते-फिरते यही ख्याल रखना है कि हम इस पतित दुनिया को पावन बनाते हैं। गीत में भी कहते हैं बाबा हम आपसे विश्व की बादशाही का वर्सा लेते हैं। यह हमसे कोई छीन नहीं सकेगा। 21 जन्म यह राजाई कायम रहेगी। बेहद का बाप आकर बेहद का राज्य भाग्य देते हैं। राज्य भाग्य चलाने के लायक बनाते हैं, पवित्र बनाते हैं। बुलाते भी हैं, हे पतित-पावन आओ। यह कोई कृष्ण को नहीं बुलाते हैं। निराकार भगवान को बुलाते हैं। जब कहते हैं, हे पतित-पावन, तो कृष्ण बुद्धि में याद नहीं आता है, परमात्मा याद आता है। बाप आकर हर एक बात समझाते हैं। अभी तुम बच्चे सम्मुख बैठे हो। यह कोई साधू-सन्त नहीं है। तुम जानते हो निराकार शिवबाबा इस ब्रह्मा तन में प्रवेश कर हमको पढ़ाते हैं। गायन भी है – परमपिता परमात्मा, ब्रह्मा तन द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। विनाश, स्थापना के बाद ही हुआ है। इससे सिद्ध है कि पुरानी दुनिया में आते हैं। ब्रह्मा द्वारा स्थापना नई दुनिया की, शंकर द्वारा अनेक धर्मों का विनाश कराते हैं। सतयुग में एक धर्म था, अभी तो अनेक धर्म हैं। एक धर्म वाले देवी-

देवताओं की निशानी चक्र आदि है। इन लक्ष्मी-नारायण को कहते ही हैं विश्व का मालिक। स्वर्ग का मालिक सो विश्व का मालिक हो गया। यह बातें अभी तुम बच्चों की बुद्धि में बैठी हैं। बाप कहते हैं– बच्चे, मनमनाभव। यह बच्चों को घड़ी-घड़ी सावधानी मिलती है। बाप को और वर्से को याद करो। यह भूलो मत और प्वाइंट्स भूल जाती हैं। यह तो मुख्य हैं ना। बाप ही पतित-पावन है। यह युक्ति बताते हैं पावन होने की। बाप कहते हैं, तुम सतोप्रधान थे। अब तमोप्रधान पतित बन गये हो। 84 जन्म पूरे लिए हैं। अब तुमको फिर सतोप्रधान बनना है। सतोप्रधान बनो तब ही तुम चल सकेंगे पवित्र दुनिया में। निराकारी दुनिया भी पवित्र है, साकारी दुनिया भी पवित्र है। अपवित्र पतित दुनिया यह है। आत्मा भी तमोप्रधान तो शरीर भी तमोप्रधान है। यह तो सृष्टि का नाटक है, इसमें ब्रह्माण्ड और सूक्ष्मवतन भी आ जाता है। सृष्टि का चक्र यहाँ फिरता है। सतयुग त्रेता यहाँ है। यह कोई सूक्ष्मवतन वा मूलवतन में नहीं होते। यह यहाँ ही हैं। इनको मनुष्य सृष्टि कहा जाता है। वह है आत्माओं की निराकारी दुनिया। वह है ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की आकारी दुनिया। यह साकारी सृष्टि कितनी बड़ी है। सतयुग में कितनी छोटी सृष्टि होती है। वहाँ है ही एक धर्म। बाकी मनुष्य जो कहते हैं कि वहाँ भी दैत्य आदि थे, यह सब है झूठ।

तुम समझते हो कि नई दुनिया की स्थापना, पुरानी दुनिया का विनाश गाया हुआ है। सबका विनाश होगा और सतयुग हेवन की स्थापना होगी। तुम भी बाप के साथ खिदमत कर रहे हो। बाप भी आते ही हैं बच्चों की खिदमत करने। यह है बेहद का बाप। देखते हैं हमारे बच्चे बहुत दु:खी हैं तो जरूर तरस पड़ेगा ना। वह है ही रहमदिल बाप। अभी तो सारी दुनिया में अशान्ति है। एक बाप के सिवाए और कोई शान्ति दे न सके। हठयोगी भी अथाह हैं। आत्मा के लिए कह देते वह निर्लेप है। मनुष्यों को उल्टी बातें सुना देते हैं। वास्तव में आत्मा की सफाई चाहिए। आत्मा में ही खाद पड़ी है और किसको पता नहीं है। कहते भी हैं यह पाप आत्मा है। बहुत पाप करते हैं। यह महात्मा है, पुण्यात्मा है। ऐसे नहीं कहेंगे महान परमात्मा है। सन्यासियों के लिए कहेंगे पवित्र आत्मा है क्योंकि सन्यास किया हुआ है। अब बाप समझाते हैं– आत्मा को पवित्र बनाने वाला सिवाए एक परमात्मा बाप के और कोई हो नहीं सकता। पतित दुनिया में पावन आत्मा कोई हो न सके। अभी सैपलिंग लगता है। धीरे-धीरे वृद्धि होती जायेगी। यह तो छोटे-छोटे मठ, पंथ आदि टाल टालियाँ है। उनमें कोई मेहनत थोड़ेही लगती है। अनेक प्रकार के मन्त्र देते हैं। किसम-किसम के मन्त्र देते हैं। यह भी वशीकरण मन्त्र है, जिससे तुम 5 विकारों पर जीत पाते हो। राम-राम का मन्त्र जपते हैं, इससे फायदा तो कुछ भी नहीं है। यहाँ तो बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप नाश हो जायेंगे। तुम पवित्र आत्मा बन जायेंगे। याद को ही योग कहते हैं। भारत का प्राचीन योग बहुत मशहूर है। इस योग से ही तुम विश्व पर जीत पाते हो। भारत का राजयोग बहुत नामीग्रामी है। यह बाप के सिवाए और कोई सिखा न सके। तुम हो ब्रह्माकुमार, कुमारियाँ। बी.के. तो यहाँ ही होंगे ना। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे तो जरूर ब्रह्मा के साथ ही होंगे। ब्राह्मण कुल भी जरूर चाहिए। इसको कहा जाता है – सर्वोत्तम ऊंचे ते ऊंचा ब्राह्मण कुल। अभी तुम ब्राह्मण हो फिर उथल खायेंगे। बाजोली खेलते हैं ना। शूद्र से ब्राह्मण बने हो फिर देवता,

क्षत्रिय.) तो अब बाप समझाते हैं मीठे-मीठे बच्चों – बहुत थोड़ी बात है, बाप की याद में रहो। यह भी तो बुद्धि में है – बाबा हमको 84 जन्मों का राज़ बता रहे हैं। 84 लाख अथवा 84 जन्मों का हिसाब तो चाहिए ना। कोई को पता नहीं। 84 लाख का तो हिसाब कोई बता न सके। मनुष्य 84 जन्मों का चक्र लगाते हैं। आत्मायें ऊपर से आती हैं पार्ट बजाने के लिए। सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक आती ही रहती हैं। हर एक अपना-अपना पार्ट बजाते रहते हैं। इन बातों को मनुष्य मात्र नहीं जानते। एक बाप ही जान सकते हैं। मनुष्य को कभी परमपिता, गॉड फादर नहीं कहा जाता। गॉड फादर कहने से फिर निराकार शिव तरफ बुद्धि जाती है। जीव आत्मा का बाप तो होगा ना। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। निराकार बाप का नाम शिव है। तुम्हारा भी एक ही नाम है, आत्मा। फिर शरीर में भिन्न-भिन्न नाम पड़ते हैं। परमपिता परमात्मा भी शरीर में आकर ज्ञान सुनाते हैं। शरीर बिगर थोड़ेही सुनायेंगे। तो बाप समझाते हैं कि इनका तो अपना नाम है, मेरा शरीर का कोई नाम नहीं है, न मैं पुनर्जन्म में आता हूँ। मैं इनमें प्रवेश करता हूँ, इनको भी मालूम नहीं पड़ता है। कोई तिथि तारीख नहीं। हाँ मैं कल्प के अन्त अर्थात् रात में आता हूँ। अभी रात है ना। यह है ही पतितों की दुनिया। मैं आता हूँ पावन दुनिया अर्थात् दिन बनाने। यह भी नहीं जानते कि बाबा ने कब प्रवेश किया। हाँ विनाश साक्षात्कार किया। बहुत ध्यान में जाते थे, वह कोई तिथि तारीख वेला नहीं निकाल सकते। कृष्ण को भी पूजते हैं, उनका रात्रि को जन्म दिखाते हैं। किस समय, कितने मिनट आदि सारा निकालते हैं। बाप कहते हैं– मैं तो हूँ ही निराकार। जैसे और मनुष्य जन्म लेते हैं वैसे मेरा जन्म थोड़ेही होता है। मेरा तो दिव्य अलौकिक जन्म है। मैं इनमें प्रवेश करता हूँ फिर चला जाता हूँ। बैल पर सारा दिन सवारी थोड़ेही करते हैं। मुझे जिस समय बच्चे याद करते हैं, मैं हाजिर हूँ। बाप आकर बच्चों से मिलते हैं, गुडमार्निंग करते हैं। जैसे मनुष्य एक दो में मिलते हैं, राम-राम वा नमस्ते कहते हैं। यह तो रूहानी बेहद का बाप समझाते हैं। मैं तुम सब बच्चों का बाप हूँ। तो शिवबाबा की सन्तान तुम सब आत्मायें भाई-भाई हो। यह खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। बेहद का बाप आया हुआ है, हमको बेहद का वर्सा दे रहा है। बच्चों को देख बाप को भी खुशी होती है,. ढेर बच्चे हैं। बच्चे जानते हैं हमको बाबा स्वर्ग का मालिक बना रहे हैं, राजाई देते हैं। प्रजा भी तो कहेगी – हमारा राज्य है। जैसे भारतवासी कहते हैं यह हमारा भारत देश है। राजा प्रजा दोनों कहते हैं हमारा देश है। तुम बच्चे नर्कवासी हो फिर स्वर्गवासी बनेंगे। बाप को और वर्से को याद करना है और कोई तकलीफ बाबा नहीं देते हैं। रहना भी है गृहस्थ व्यवहार में। यहाँ आकर थोड़ेही रहना है। सब यहाँ भागकर आयें तो इतने सबको बाबा कहाँ रख सकते हैं। इतने सब ढेर बच्चे एक ही बार कैसे इकट्ठे हो सकते हैं। सब सेन्टर्स के बच्चे एक ही बार इकट्ठे मिल कैसे सकते हैं। कहाँ ठहर सकेंगे। मुश्किल है ना। दिन-प्रतिदिन बच्चे वृद्धि को पाते रहते हैं, इसकी भी कुछ युक्ति रचनी पड़े। यह सब आस-पास वाले मकान लेने पड़ेंगे। मकान वालों से पूछेंगे, कितना मांगते हैं। समय पर तो लेना पड़ेगा ना। पैसे की तो कोई बात नहीं। समय बड़ा नाजुक होता जाता है। बाप और बच्चे दोनों अविनाशी हैं। अविनाशी खजाना बच्चों को देते हैं। बहुत ढेर बच्चों को आना होगा। बाबा विचार करते हैं

इतने ढेर कहाँ आकर रहेंगे। बाबा कहते हैं तुम फिकर क्यों करते हो – "वेट एण्ड सी"। तुम पढ़ते रहो, मनमनाभव।

तुम बच्चों को यह ख्याल में रखना है कि अभी हमको कर्मातीत अवस्था में जाना है, सतोप्रधान बनना है। याद से ही पावन बनेंगे। बाबा बात तो बहुत सहज बताते हैं। अति सहज है सिर्फ बाबा को याद करना है। देखो गाय के बच्चे को जब माँ याद आती है तो चिल्लाता है ना। वह तो है जानवर। तुम बच्चों ने भी रड़ियाँ मारी ना। आगे चल बहुत चिल्लायेंगे, बहुत याद करेंगे। तुम बच्चे तो अब जानते हो कि बाबा आया हुआ है, विनाश तो होना ही है। नेचुरल कैलेमिटीज आनी है। सब आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं। कितना खर्चा कर बाम्ब्स बनाते हैं, बहुत पैसा जाता है। खर्चा तो होता है ना। इतना खर्चा कहाँ से लायें। डरते भी हैं – मौत से। फिर भी बाम्ब्स बनाना तो बन्द नहीं करते। बाम्ब्स की लड़ाई चलेगी। अभी बनाते ही ऐसे हैं – जो बम गिरे और मनुष्य मर जायें। चीज़ बनाने में पहले टाइम लगता है फिर तो मिनटमोटर। जल्दी-जल्दी बनाते जाते हैं। बाम्ब्स भी कोई थोड़े बनेंगे क्या? तुम बच्चे जानते हो इस पुरानी सृष्टि का विनाश होना है। अब बेहद के बाप से वर्सा लेना है।

गीता है तुम भारतवासियों का, देवी-देवता धर्म का शास्त्र। बाकी तो छोटे-छोटे हैं, उनका कोई गायन नहीं। ब्राह्मण धर्म है सबसे ऊंच। ब्राह्मणों का काम है कथा सुनाना। तुम कह सकते हो हम ब्रह्माकुमार कुमारियाँ हैं ब्रह्मा के बच्चे, हमको डाडे का वर्सा मिल रहा है। अच्छा –

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- ड्रामा के हर राज़ को जानते हुए किसी भी बात की फिकर नहीं करनी है। पढ़ाई पढ़ते रहना है। मनमनाभव होकर कर्मातीत बनने का ख्याल रखना है। स्वयं को सतोप्रधान बनाना है।

२- हम आत्मायें शिवबाबा की सन्तान आपस में भाई-भाई हैं। शिवबाबा से वर्सा ले रहे हैं। इस खुशी में रहना है।

वरदान:- सदा कम्बाइण्ड स्वरूप की स्मृति द्वारा मुश्किल कार्य को सहज बनाने वाले डबल लाइट भव

जो बच्चे निरन्तर याद में रहते हैं वे सदा साथ का अनुभव करते हैं। उनके सामने कोई भी समस्या आयेगी तो अपने को कम्बाइन्ड अनुभव करेंगे, घबरायेंगे नहीं। ये कम्बाइन्ड स्वरूप की स्मृति कोई भी मुश्किल कार्य को सहज बना देती है। कभी कोई बड़ी बात सामने आये तो अपना बोझ बाप के ऊपर रख स्वयं डबल लाइट हो जाओ। तो फरिश्ते समान दिन-रात खुशी में मन से डांस करते रहेंगे।

स्लोगन:-

किसी भी कारण का निवारण कर सन्तुष्ट रहने और करने वाले ही सन्तुष्टमणि हैं।

मुरली नं.- ६१

11-8-01 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "दादादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – तुम गैरन्टी करते हो कि हम अपने ही योगबल से इस भारत को स्वर्ग बनायेंगे, वहाँ एक धर्म, एक राज्य होगा"

प्रश्न:- माया के किस विघ्न से सेफ रहने वाले बहुत अच्छी कमाल कर सकते हैं?

उत्तर:- माया का सबसे बड़ा विघ्न है – देह-अभिमान में लाकर एक-दो के नाम रूप में फँसाना। जो बच्चे इस विघ्न से सेफ रहते, माया के धोखे से बचे रहते, वे बहुत कमाल कर दिखाते हैं। उनकी बुद्धि में सर्विस के नये-नये ख्यालात चलते रहते हैं। सर्विस में उन्नति तब होगी जब देही-अभिमानी होंगे।

ओम् शान्ति। रूहानी बच्चों को बाप आये हैं श्रीमत देने। यह तो बच्चे जानते हैं कि थोड़े समय के अन्दर ड्रामा प्लैन अनुसार सारा कार्य होना है। हम रावणपुरी को विष्णुपुरी बनाते हैं। अब बाप भी गुप्त तो पढ़ाई भी गुप्त है। सेन्टर्स तो बहुत हैं। छोटे बड़े गांव में सेन्टर्स हैं और बच्चे भी बहुत हैं। और भी दिन-प्रतिदिन बढ़ते जायेंगे। लिटरेचर में भी लिखते हैं कि हम इस भारत भूमि को स्वर्ग बनाकर छोड़ेंगे। तुमको यह भारत भूमि बहुत प्यारी है क्योंकि तुम जानते हो कि यह भारत ही स्वर्ग था। उनको 5 हजार वर्ष हुए। भारत बहुत शानदार था। तुम ब्रह्म मुख वंशावली बच्चों को ही यह नॉलेज है। इस भारत को श्रीमत पर स्वर्ग बनाना पड़े। सबको रास्ता बताना है और कोई खिटखिट की यहाँ बात नहीं है। आपस में बैठ राय करनी चाहिए कि इन चित्रों द्वारा ऐसी कला एडवरटाइज करें जो अखबार में भी यह चित्र डालें। आपस में इस पर सेमीनार करना चाहिए। जैसे उस गवर्मेन्ट के लोग आपस में मिलते हैं, राय करते हैं तो भारत को हम कैसे सुधारें। यह जो इतने मतभेद हो गये हैं, उनको आपस में मिलकर ठीक करें और भारत में सुख-शान्ति कैसे स्थापन हो। ऐसे तुम भी रूहानी पाण्डव गवर्मेन्ट हो, यह बड़ी ईश्वरीय गवर्मेन्ट है। पतित पावन बाप ही पतित बच्चों को पावन बनाकर पावन दुनिया का मालिक बनाते हैं। यह राज़ तुम बच्चे जानते हो। मुख्य है ही भारत का आदि सनातन देवी-देवता धर्म। यह है रूद्र ज्ञान यज्ञ। रूद्र कहा जाता है शिवबाबा को। अब तुमको बाप ने आकर जगाया है, तुमको फिर औरों को जगाना है। ड्रामा प्लैन अनुसार तुम जागते रहते हो। अब तक जिस-जिस ने जैसा-जैसा पुरुषार्थ किया है, उतना ही कल्प पहले भी किया था। तुम्हारी रूहानी युद्ध है। कभी माया का जोर हो जाता है, कभी ईश्वर का। कभी-कभी तो सर्विस अच्छी तेजी से चलती है। कभी कई बच्चों में माया के विघ्न पड़ जाते हैं। माया एकदम बेहोश कर देती है। लड़ाई का मैदान तो है ना। माया, राम की सन्तान को बेहोश कर देती है। लव-कुश की कहानी भी है ना। राम के दो बच्चे दिखाये हैं। यहाँ तो बाबा के ढेर बच्चे हैं। इस समय सब मनुष्य कुम्भकरण की नींद में सोये हुए हैं। वे यह भी नहीं जानते कि परमपिता परमात्मा आया है – बच्चों को वर्सा देने। बाप भारत में ही आते हैं। यह बात बिल्कुल ही भूल गये हैं।

भारतवासी ही स्वर्ग के मालिक थे, इसमें कोई शक नहीं। परमपिता परमात्मा का जन्म भी यहाँ होता है तब तो शिव जयन्ती भारत में मनाते हैं। तो जरुर उसने कुछ आकर किया होगा। बुद्धि कहती है कि जरुर बाप ने आकर स्वर्ग की स्थापना की होगी। प्रेरणा से थोड़ेही स्थापना करेंगे। यहाँ तो तुम बच्चों को राजयोग सिखाया जाता है, याद की यात्रा सिखाई जाती है। प्रेरणा में कोई आवाज नहीं होता। समझते हैं शंकर प्रेरणा से विनाश करता, परन्तु इसमें प्रेरणा की बात नहीं है। तुम समझ गये हो कि ड्रामा में उन्हों का पार्ट ही है – मूसल बनाना। वे विनाश अर्थ निमित्त बने हुए हैं। प्रेरणा शास्त्रों का अक्षर है, इसमें प्रेरणा की तो बात नहीं है। शंकर तो सूक्ष्मवतन में है। ड्रामा अनुसार तो विनाश होना ही है। गाया हुआ है महाभारत लड़ाई में यह मूसल आदि काम में आये थे। जो पास्ट हो गया है वह फिर रिपीट होना है। तुम गैरन्टी करते हो कि हम योगबल से स्वर्ग की स्थापना करेंगे, वहाँ एक धर्म होगा। तो दूसरे सब धर्म कहाँ होंगे? जरुर विनाश हो जायेंगे। यह समझने की बात है। गाया हुआ है – ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना तो ठीक है। लेकिन शंकर को तो शिव के साथ मिला दिया है, यह रांग है। शिव-शंकर कह देते हैं क्योंकि शंकर तो कोई काम नहीं करते तो शिव से मिला दिया है। परन्तु शिवबाबा कहते हैं मुझे तो बहुत काम करना पड़ता है। सबको पावन बनाना पड़ता है। मैं इस ब्रह्मा तन में प्रवेश कर इस साकार द्वारा स्थापना का कार्य करता हूँ। शंकर का तो कोई पार्ट है नहीं। शिव की पूजा होती है। शिव ही कल्याणकारी झोली भरने वाला है। शिव परमात्माए नमः कहते हैं ना। यह ब्रह्मा भी प्रजापिता ठहरा। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा यह तो बड़ी गुह्य बातें हैं। यह सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो। सेन्सीबुल बच्चों की बुद्धि में ज्ञान झट समझ में आ जाता है। मनुष्य को कुछ भी समझ नहीं है कि पतित-पावन बाप कब आयेंगे! अब तो कलियुग का अन्त है। अगर कहते कि कलियुग के अन्त में 40 हजार वर्ष पड़े हैं, तो अभी कितना और पतित बनेंगे? कितना दुःख सहन करेंगे? कलियुग में सुख तो होगा नहीं। कुछ भी न जानने के कारण बिचारे घोर अन्धियारे में पड़े हैं।

तुम बच्चों को आपस में मिलकर राय करनी चाहिए कि कैसे सर्विस को बढ़ायें। बाप प्लैन तो बताते रहते हैं फिर बच्चों को आपस में मिलना है। चित्रों पर अच्छी रीति समझाना है। यह भी ड्रामा अनुसार चित्र बनते जा रहे हैं। बच्चे जानते हैं कि जो-जो समय पास होता जाता है, हूबहू ड्रामा चलता रहता है। बच्चों की अवस्थायें तो कब ऊपर, कब नीचे, यह चलता रहेगा। बाबा भी साक्षी होकर देखता है। कभी-कभी बच्चों पर ग्रहचारी बैठती है तो उनको मिटाने के लिए प्रयत्न कराते हैं। बाबा घड़ी-घड़ी कहते हैं कि बाप को याद करो। लेकिन देह-अभिमान में आ जाते हैं इसलिए ठोकरें खाते हैं, इसमें देही-अभिमानी बनना पड़े। परन्तु बच्चों में देह-अभिमान बहुत है। तुम देही-अभिमानी बनो तो बाप की याद रहे फिर सर्विस की उन्नति भी होती रहेगी। जिनको ऊंच पद पाना है, वह सदैव सर्विस में लगे रहेंगे। तकदीर में अगर नहीं है तो तदबीर भी नहीं करेंगे। खुद कहते हैं कि बाबा हमको

धारणा नहीं होती है। बुद्धि में नहीं बैठता। धारणा अगर नहीं होती तो खुशी भी नहीं रहती है। जिनको धारणा होती है तो खुशी भी रहती है। समझते हैं कि शिवबाबा आया हुआ है। बाप कहते हैं– बच्चे तुम अच्छी रीति समझकर फिर औरों को भी समझाओ। कोई तो सर्विस में लग जाते हैं। पुरुषार्थ करते रहते हैं। तुम बच्चे जानते हो कि जो-जो सेकेण्ड बीतता है वह ड्रामा में नूँध है फिर ऐसे ही रिपीट होता है। बच्चों को ही समझाया जाता है कि बाहर भाषण करते समय तो अनेक प्रकार के मनुष्य आते हैं। तुम बच्चे जानते हो कि सभी वेद, शास्त्र, गीता आदि पर ही भाषण करते हैं, उनको यह पता थोड़ेही है कि यहाँ ईश्वर अपना और इस रचना के आदि-मध्य-अन्त का रहस्य समझाते हैं। चित्रों में कितना अच्छी तरह दिखाया है कि परमात्मा कौन है! यह बातें प्रोजेक्टर पर तो समझा नहीं सकते। प्रदर्शनी में चित्र भी सामने खड़े हैं और फिर तुम समझाकर पूछ भी सकते हो कि अब बताओ कि गीता का भगवान कौन है? ज्ञान का सागर कौन है? पवित्रता सुख-शान्ति का सागर, लिबरेटर गाइड कौन है? कृष्ण के लिए तो कह नहीं सकेंगे। परमात्मा की महिमा अलग है। पहले लिखाना भी चाहिए, प्रोब लेना चाहिए। सबसे सही भी लेनी है।

(हाल में चिड़िया लड़ रही हैं) इस समय सारी दुनिया में लड़ाई-झगड़ा ही है। सब आपस में लड़ते रहते हैं। 5 विकार भी मनुष्य में गाये जाते हैं। जानवरों की तो बात नहीं है। विशश वर्ल्ड और वाइसलेस वर्ल्ड मनुष्यों के लिए गाया हुआ है। कलियुग में है आसुरी सम्प्रदाय, सतयुग में है दैवी सम्प्रदाय। मनुष्य इतने तमोप्रधान बुद्धि हैं जो बिल्कुल समझते नहीं कि हम ही आसुरी सम्प्रदाय हैं। देवताओं के आगे जाकर गाते भी हैं हम ही नीच पापी हैं, हम निर्गुण हारे में कोई गुण नाही। तुम तो उन्हों को सिद्ध कर बता सकते हो। सीढ़ी के चित्र में बड़ा क्लीयर है। दिखाया हुआ है कि कैसे चढ़ती कला है फिर उतरती कला है। भारतवासियों के लिए मुख्य है सीढ़ी का चित्र। यह है सबसे अच्छी चीज़। इस चित्र पर बहुत अच्छा समझा सकते हो। 84 जन्म पूरे कर फिर पहला नम्बर जन्म लेना है फिर उतरती कला फिर चढ़ती कला में जाना पड़े। हर एक का विचार चलना चाहिए कि सबको रास्ता कैसे बतायें। ख्यालात नहीं चलेंगे तो सर्विस कैसे करेंगे। चित्रों पर समझाना बहुत सहज होता है। सतयुग के बाद सीढ़ी उतरनी ही है। बच्चे जानते हैं कि अब हम ट्रांसफर हो रहे हैं। लेकिन सीधा सतयुग में नहीं जाते। पहले शान्तिधाम में जाना है। तुम जानते हो हम पार्टधारी हैं। बाकी तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं जो अपने को पार्टधारी समझते हैं – इस ड्रामा के। दुनिया में ऐसा कोई नहीं कह सकते कि हम पार्टधारी हैं। हम लिखते भी हैं कि हर एक मनुष्य मात्र इस बेहद ड्रामा के एक्टर्स होते हुए भी ड्रामा के मुख्य एक्टर्स, डायरेक्टर और ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते हैं। तो वह बेसमझ हैं। इस लिखने में कोई हर्जा नहीं है। एक कान से सुन दूसरे से निकाल नहीं देना चाहिए। सर्विस, सर्विस और सर्विस। बाबा जानते हैं कि बच्चों पर कभी ग्रहचारी भी बैठती है। जब ग्रहचारी बैठती तो कितना नुकसान हो जाता है, वह बाप जानते हैं। साहूकार गरीब बन पड़ते हैं। कारण तो होता है ना।

बहुतों को बाबा समझाते भी रहते हैं – बच्चे नाम-रूप में कभी नहीं फँसना। नहीं तो माया ऐसी है जो नाक से पकड़ खड्डे में डाल देगी। माया बड़ा धोखा दे देगी। आशिक माशूक यहाँ नहीं बनना है। आशिक माशूक कोई विकार के लिए बनते हैं, दूसरे सिर्फ रूप पर फिदा होते हैं। तुम जानते हो सेन्टर्स पर भी ऐसे माया के विघ्न बहुत पड़ते हैं, एक-दो के नाम-रूप में फंस जाते हैं। माया ऐसी प्रबल है जो माता, माता के नाम-रूप में, कन्या, कन्या के नाम-रूप में भी फँस पड़ती है। पुरूषार्थ करते हुए भी माया एकदम पकड़ लेती है। इसलिए बाबा सावधानी देते हैं कि बच्चे माया बहुत फँसाने की कोशिश करेगी, लेकिन तुमको फँसना नहीं है। देह-अभिमान में नहीं आना चाहिए। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। माया के धोखे से बचते रहना है। तुम बच्चों को बाप गुल-गुल (फूल) बनाने आये हैं, तुम्हें किसी बात में संशय नहीं आना चाहिए। अगर दिल में संशय आया तो सर्विस अच्छी तरह कर नहीं सकेंगे। अन्दर घुटका खाते रहेंगे। हिम्मत रखनी चाहिए। उड़ना बहुत थोड़ा है। बाबा की मुरली सुनेंगे तो उत्साह में आयेंगे। आत्मप्रकाश बच्चा ठीक रीति चित्रों तरफ अटेन्शन दे रहा है। बाम्बे वालों के भी दिमाग में आना चाहिए। मुख्य चित्र को पहले बनाना पड़े। जांच करनी चाहिए, बाबा डायरेक्शन देते रहते हैं कि कैसे चित्रों में उन्नति होनी चाहिए। ऐसी कोई युक्ति रचो जो सीढ़ी का चित्र एरोड्रम पर रखा जाए। यह चित्र देखकर सब खुश होंगे। आखिर समझेंगे कि इनको मत देने वाला कौन है। तो बच्चों को बहुत नशा चढ़ना चाहिए। अच्छा–मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- तुम बच्चे लड़ाई के मैदान में हो, माया रावण से तुम्हारी युद्ध है। माया बहुत विघ्न डालती है। बच्चों को बहुत सावधान रहना चाहिए।

२- हर एक को अपनी उन्नति के लिए विचार करना है। चित्रों पर कैसे समझायें, सर्विस को कैसे बढ़ायें। चित्रों में ऐसा क्या डालें जो मनुष्य सहज समझ जाएं।

वरदान:- सदा अपने पवित्र स्वरूप में स्थित रह गुण रूपी मोती चुगने वाले होलीहंस भव

आप होली हंसों का स्वरूप है पवित्र और कर्तव्य है सदैव गुणों रूपी मोती चुगना। अवगुण रूपी कंकड कभी भी बुद्धि में स्वीकार न हो। लेकिन इस कर्तव्य को पालन करने के लिए सदैव एक आज्ञा याद रहे कि न बुरा सोचना है, न बुरा सुनना है, न बुरा देखना है, न बुरा बोलना है.... जो इस आज्ञा को सदा स्मृति में रखते हैं वह सदा सागर के किनारे पर रहते हैं। हंसों का ठिकाना है ही सागर।

स्लोगन:-

चलते-फिरते फरिश्ता स्वरूप में रहना–यही ब्रह्मा बाप की दिल-पसन्द गिफ्ट है।

6-10-01 प्रातः मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - तुम्हारे जैसा सौभाग्यशाली कोई नहीं, क्योंकि जिस बाप को सारी दुनिया पुकार रही है वह तुम्हें पढ़ा रहे हैं, तुम उनसें बातें करते हो"

प्रश्नः- जिन बच्चों को विचार सागर मंथन करना आता है, उनकी निशानी क्या होगी?
उत्तरः- उनकी बुद्धि में सारा दिन यही तात लगी रहती कि कैसे सबको रास्ता बतायें! कैसे किसका कल्याण करें! वह सर्विस के नये-नये प्लैन बनाते रहते हैं। उनकी बुद्धि में सारा ज्ञान टपकता रहता है। वे अपना टाइम वेस्ट नहीं करते।

ओम् शान्ति। बच्चों के आगे निराकार परमपिता परमात्मा बोल रहे हैं, यह बच्चे ही जानते हैं। भगवान को ऊंच कहा जाता है। ऊंचा उनका ठांव है। रहने का स्थान तो मशहूर है। बच्चे जानते हैं हम मूलवतन में रहने वाले हैं। मनुष्यों को इन सब बातों का पता नहीं है। गॉड फादर बोलते हैं। तुम बच्चों बिगर ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसको पता हो कि निराकार भगवान बोलते हैं। निराकार होने के कारण कोई की बुद्धि में नहीं आता है कि भगवानुवाच कैसे हो सकता है। पता न होने के कारण गीता में कृष्ण का नाम दे दिया है। अब बच्चों के आगे बोल रहे हैं। सम्मुख होने बिगर तो सुन नहीं सकते। दूर से भल सुनते हैं परन्तु निश्चय नहीं होता। सुनते तो हैं भगवानुवाच। यथार्थ रीति तुम जानते हो। भगवान तो शिवबाबा है। प्रैक्टिकल में जानते हो बाबा हमको ज्ञान सुना रहे हैं। तुम्हारी बुद्धि झट ऊपर में चली जाती है। शिवबाबा ऊंच ते ऊंच रहने वाला है। जैसे कोई बड़े आदमी, क्वीन आदि आती है तो जानते हैं यह फलानी जगह की रहने वाली है, इस समय यहाँ आई है। तुम बच्चे भी जानते हो बाबा आया है – हमको ले जाने। हम भी बाबा के साथ वापिस जायेंगे। हम परमधाम के रहने वाले हैं। तुमको अब बाप और घर याद पड़ता है। वही बाप सृष्टि का रचयिता है। बाप ने आकर तुम बच्चों को मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन का राज़ समझाया है। जिसकी बुद्धि में है वही समझेंगे। बराबर हम पुरूषार्थ कर रहे हैं – भविष्य 21 जन्मों के लिए, बाप से वर्सा लेने। पुरूषार्थ तो करना ही है। पुरूषार्थ को कभी भी छोड़ना नहीं है। स्कूल के बच्चे जानते हैं जब तक इम्तिहान हो तब तक हमको पढना ही पढना है। एम आब्जेक्ट रहती है। हम बड़े ते बड़ा इम्तिहान पास करेंगे। एक कॉलेज छोड दूसरे, तीसरे में जायेंगे। मतलब तो पढ़ते रहना है। बड़े आदमी का बच्चा होगा तो जरूर बड़ा इम्तिहान पास करने का ख्याल होगा। तुम जानते हो हम बहुत बड़े बाप के बच्चे हैं। दुनिया में किसको पता नहीं है - हम शिवबाबा की सन्तान हैं। तुम बहुत बड़े ऊंच ते ऊंच बाप के बच्चे हो। बहुत बड़ी पढ़ाई पढ़ते हो। जानते हो यह ऊंच ते ऊंच पढ़ाई है। पढ़ाने वाला बाप है तो कितना उमंग और खुशी में रहना चाहिए। यह किसको भी समझा सकते हो। हम बहुत बड़े ते बड़े बाप के बच्चे हैं। बहुत बड़े सतगुरू की मत पर हम चलते हैं। टीचर की, गुरू की मत पर चलना होता है ना। उनको फालोअर कह देते हैं। यहाँ बाप की मत पर भी चलना है, टीचर की मत पर भी

चलना है, तो गुरू की मत पर भी चलना है। तुम जानते हो वह हमारा बाप, टीचर, सतगुरू है। उनकी मत पर जरूर चलना है। वह तो एक ही है। ऊंच ते ऊंच है शिवबाबा। वह बोलते हैं।

बाबा बच्चों से पूछते हैं शिवबाबा बोलते हैं? शंकर बोलते हैं? ब्रह्मा बोलते हैं? विष्णु बोलते हैं? (किसी ने कहा शिव और ब्रह्मा बोलते हैं – विष्णु वा शंकर नहीं बोलते) विष्णु के दो रूप लक्ष्मी-नारायण कहते हो तो फिर क्या बोलते नहीं हैं? गूँगे हैं? (ज्ञान नहीं बोलते) हम ज्ञान की बात ही नहीं करते, बोलने की बात पूछता हूँ। विष्णु, लक्ष्मी-नारायण बोलते हैं? शंकर नहीं बोलते हैं - वह ठीक है। बाकी तीनों क्यों नहीं बोलेंगे। विष्णु के दो रूप लक्ष्मी-नारायण हैं तो जरूर बोलेंगे ना। मनुष्य शिवबाबा के लिए समझते होंगे कि वह निराकार कैसे बोलेंगे। तुम बच्चे जानते हो शिवबाबा भी इसमें आकर बोलते हैं। ब्रह्मा को भी बोलना होता है। एडाप्टेड हैं ना। सन्यासी लोग भी अपना नाम सन्यास के बाद बदली करते हैं। तुमने भी सन्यास किया है। तो तुम्हारा नाम बदलना चाहिए। पहले बाबा ने नाम रखे। परन्तु देखा कि नाम रखे हुए भी मर पड़ते हैं - आश्चर्यवत सुनन्ती, कथन्ती, भागन्ती हो जाते हैं, इसलिए कितने नाम रख, कितनों का रखें। आजकल तो माया भी बहुत तेज है। बुद्धि कहती है जब लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तो उसको विष्णु पुरी कहा जाता था। यह एम आब्जेक्ट बुद्धि में है। विष्णु के दो रूप लक्ष्मी-नारायण राज्य करते हैं तो बोलते क्यों नहीं होंगे! बाबा यहाँ की बात नहीं करते हैं। मनुष्य तो कहेंगे निराकार कैसे बोलेंगे। उनको यह पता ही नहीं है कि निराकार कैसे आते हैं। उनको पतित-पावन कहते हैं। वह ज्ञान का सागर भी है, चैतन्य भी है, प्यार का सागर भी है। अब प्यार प्रेरणा से तो होता नहीं है, वह भी इसमें प्रवेश कर बच्चों को प्यार कर सकते हैं ना, तब कहते हैं हम परमपिता परमात्मा की गोद में आते हैं। बस बाबा तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से सुनूँ... बुद्धि उस तरफ चली जाती है। श्रीकृष्ण बुद्धि में नहीं आता है। तो बाप बच्चों को बैठ समझाते हैं। तुम्हारे जैसा सौभाग्यशाली कोई है नहीं। तुम जानते हो हम कितने ऊंच पार्टधारी हैं। यह खेल है ना। इसके पहले तो तुम कुछ नहीं जानते थे। जिसमें बाबा ने प्रवेश किया है, वह भी कहते हैं हम अज्ञानी थे। बाप प्रवेश नहीं करते थे तो अज्ञानी ही रहते थे। अभी बाप ने प्रवेश किया है तो ड्रामा प्लैन अनुसार उन द्वारा सुन रहे हैं।

बाप कहते हैं – मीठे-मीठे बच्चों तुम जानते हो बाबा निराकार है। वह हम आत्माओं का बाप है। यह बातें कोई भी शास्त्र आदि में लिखी हुई नहीं हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि विशाल हुई है। स्टूडेन्ट पढ़ते हैं, बुद्धि में सारी हिस्ट्री-जॉग्राफी आ जाती है। परन्तु यह किसकी बुद्धि में नहीं है – बाबा कहाँ हैं! यथार्थ रीति तुम बच्चे ही समझते हो और प्रैक्टिकल में वह खुशी है। बाबा परमधाम से आते हैं, हमको पढ़ाते हैं। सारा दिन आपस में यही रूह-रिहान होनी चाहिए। सिवाए इस ज्ञान के बाकी सब हैं सत्यानाश करने वाली बातें। शरीर निर्वाह अर्थ तुमको धन्धा आदि भी करना है और साथ-साथ यह रूहानी सर्विस भी।

तुम जानते हो बरोबर यह भारत स्वर्ग था। इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। जो भी

देवताओं के चित्र हैं, उनका यथार्थ ज्ञान बुद्धि में आ गया है। नम्बरवन लक्ष्मी-नारायण का चित्र उठाओ, विचार करो – बरोबर यह भारत में राज्य करते थे तो एक ही धर्म था। रात पूरी हो दिन शुरू हुआ अर्थात् कलियुग पूरा हो सतयुग शुरू हुआ। कलियुग है रात। सतयुग है सुबह। विचार सागर मंथन करना है कि इन्होंने यह राज्य कैसे पाया। जैसे कहा जाता है सागर में पत्थर डालो तो लहरें उठेंगी। तो तुम भी पत्थर मारो, मनुष्यों को समझाओ। यह ख्याल करो। भारत में देवी-देवताओं का राज्य था ना, जिन्होंने ही फिर भक्ति मार्ग में मन्दिर बनाये हैं, जिसको फिर लूट गये हैं। कल की बात है। अभी भक्ति मार्ग है तो जरुर उसके आगे ज्ञान मार्ग होगा। यह सब बातें अभी तुम्हारी बुद्धि में हैं। बाप भी आकर अपनी जीवन कहानी बताते हैं। तुमको यह याद क्यों नहीं पड़ती है। बाबा आकरके हमको यह सारी नॉलेज सुनाते हैं, समझ भी चाहिए ना। किसको भी यही बात सुनाओ। यह चित्र है एम आब्जेक्ट। यह लक्ष्मी-नारायण तो सबसे बड़े किंग क्वीन हो गये हैं। भारत स्वर्ग था ना। कल की बात है। फिर इन्होंने यह राजगद्दी कैसे गँवाई। अपने बच्चे भी भल यह सब सुनते हैं परन्तु कभी बुद्धि में टपकता नहीं है। बुद्धि में याद भी नहीं आता। अगर याद आता है तो औरों को भी समझा सकते हैं। है तो बहुत सहज। तुम यहाँ आते हो लक्ष्मी-नारायण जैसा बनने। समझाया गया है 5 हजार वर्ष की बात है। इससे लांग-लांग एगो कोई होता नहीं। सबसे पुराने ते पुराने भारत की कहानी यह है। रीयल्टी में सच्ची-सच्ची कहानी यह होनी चाहिए। सबसे बड़ी कहानी यह है। इन्हों का राज्य था, अभी वह राज्य है नहीं। जरा भी किसको पता नहीं है। तुम्हारी बुद्धि में नम्बरवार टपकता है। बाप कहते हैं – मुझे याद करो। वह भी पूरी रीति कोई याद नहीं करते हैं। बाप बिन्दी है, हम भी बिन्दी हैं, यह भी बुद्धि में ठहरता नहीं। कोई-कोई की बुद्धि में तो अच्छी रीति टपकता है। किसी को बैठ समझाते हैं तो 4-5 घण्टे भी लग जाते हैं। यह बहुत वन्डरफुल बातें हैं। जैसे सत्य नारायण की कथा बैठकर सुनते हैं ना। 2-3 घण्टे बैठ सुनते हैं, जिसकी दिलचश्पी होती है। इसमें भी ऐसे है, जिसको बहुत रूचि होगी उनको और कुछ सूझेगा ही नहीं। बस यह बातें समझने में ही मजा आता है। यह बातें अच्छी लगती हैं। समझते हैं बस इस सर्विस में ही लग जायें, दूसरा धन्धाधोरी आदि सब छोड़ दें। परन्तु ऐसे तो कोई को बैठना नहीं है। तो तुम बच्चे यह सत्य-नारायण की कहानी सुन रहे हो। अभी तुम्हारी बुद्धि में कितनी अच्छी बातें रमण करती हैं। हम यह वक्खर (सामग्री) डिलेवरी करने के लिए एवररेडी हैं। वक्खर हमेशा रेडी होना चाहिए। यह चित्र भी तुम दिखाकर किसको भी समझा सकते हो – इन लक्ष्मी-नारायण को यह राज्य कैसे मिला। कितना वर्ष आगे यह विश्व के मालिक थे। उस समय सृष्टि में मनुष्य कितने थे, अभी कितने हैं। कुछ न कुछ पत्थर डालना चाहिए तो विचार सागर मंथन चले। अपने इस कुल का होगा तो झट लहर जायेगी। अपने कुल का नहीं होगा तो कुछ भी समझेंगे नहीं, चलें जायेंगे। यह नब्ज देखने की बात है। तुम्हें सिवाए इस मीठे-मीठे ज्ञान के बाकी कुछ भी बोलना नहीं है। अगर ज्ञान के सिवाए कुछ भी बोलते हैं तो समझो वह ईविल है, उनमें कोई सार

नहीं है। हमारे पास ऐसे बहुत बच्चे हैं जिन्हें सुनने का बड़ा शौक होता है। बाप समझाते हैं – ईविल बात तो कभी भी सुननी नहीं चाहिए। कल्याण की बातें ही सुनो। नहीं तो मुफ्त अपनी सत्यानाश कर देंगे। बाप तो आकर तुम्हें ज्ञान ही सुनाते हैं। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं। कहते हैं और कोई भी बात मत करो, इसमें बहुत टाइम वेस्ट करते हो। फलाना ऐसे है, वह ऐसा करता है... उसे ईविल कहा जाता है। दुनिया की बात अलग है, तुम्हारा तो एक-एक सेकेण्ड का टाइम बहुत वैल्युबुल है। तुम कभी भी ऐसी बातें नहीं सुनो, नहीं करो। इससे तो तुम बेहद के बाप को याद करो तो तुम्हारी बहुत कमाई है। जहाँ तहाँ बाप का परिचय जाकर दो। यही रूहानी सर्विस करते रहो।

अच्छे-सच्चे महावीर तुम हो। बस सारा दिन यही तात रहे – कोई हो जिसे यह रास्ता बताओ। बाप कहते हैं–मुझ अल्फ को याद करो तो बे बादशाही मिल जायेगी। कितना सहज है। ऐसे-ऐसे जाकर सर्विस करनी चाहिए। बच्चों को सर्विस पर बहुत ध्यान देना चाहिए। अपना और दूसरों का कल्याण करना चाहिए। बाप भी तुम बच्चों को समझाने के लिए ही आये हैं ना। तुम बच्चे भी आये हो पढ़ने और पढ़ाने। टाईम वेस्ट करने या सिर्फ रोटियाँ पकने तो नहीं आये हो। सारा दिन बुद्धि सर्विस में चलनी चाहिए। अच्छा–

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- जो बातें अपने काम की नहीं हैं उन्हें सुनने वा बोलने में अपना समय वेस्ट नहीं करना है। जितना हो सके पढ़ाई पर पूरा-पूरा ध्यान देना है।

२- सदा खुशी और उमंग में रहना है कि हमें पढ़ाने वाला कौन है। पुरूषार्थ को कभी छोड़ना नहीं है। मुख से ज्ञान रत्न ही निकालने हैं।

वरदान:- मनन शक्ति द्वारा शक्तिशाली बन विघ्नों के फोर्स को समाप्त करने वाले सर्व आकर्षण मुक्त भव

वर्तमान समय मनन शक्ति द्वारा आत्मा में सर्व शक्तियां भरने की आवश्यकता है। इसके लिए अन्तर्मुखी बन हर प्वाइंट पर मनन करो तो मक्खन निकलेगा और शक्तिशाली बन जायेंगे। ऐसी शक्तिशाली आत्मायें अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति का अनुभव करती हैं, उन्हें अल्पकाल की कोई भी वस्तु अपने तरफ आकर्षित नहीं कर सकती। उनकी मगन अवस्था द्वारा जो रूहानियत की शक्तिशाली स्थिति बनती है उससे विघ्नों का फोर्स समाप्त हो जाता है।

स्लोगन:-

–ब्राह्मण संसार में सर्व का सम्मान प्राप्त करने वाले ही तख्तनशीन बनते हैं।

4-11-2001 ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" मधुबन

"सत्यवादी बनो और समय प्रमाण बेहद की वृत्ति, दृष्टि और कृति बनाने के दृढ़ संकल्प का दीप जलाओ"

आज प्यार के सागर बापदादा अपने अति प्यारे सिकीलधे मीठे-मीठे बच्चों से मिलन मनाने आये हैं। आप सबभी मिलन मनाने आये हैं ना! भाग-भाग कर आये हैं। तो बापदादा भी भाग-भाग के आये हैं बच्चों से मिलने के लिए। आप सभी तो इस लोक से आये हो और बापदादा परलोक और सूक्ष्मलोक से आये हैं। तो सबसे दूर से कौन आया है? कौन दूरदेशी है? डबल फारेनर्स दूरदेशी हैं? नहीं। सबसे दूर से दूर, दूरदेशी तो बाप ही है। बापदादा को इस बारी डबल विदेशी वा भारतवासी बच्चों की एक बात पर बहुत नाज़ है। कौन सी बात? कौन सी बात पर नाज़ है? सुनाओ। कुमारियां सुनाओ। किस बात पर नाज़ है? बोलो। बच्चों की, विशेष डबल विदेशी बच्चों की हिम्मत देख बापदादा को नाज़ है कि कैसी भी परिस्थिति में बाप से मिलने के लिए पहुंच ही जायेंगे। पहुंच ही गये हैं। ड्रामा में खेल भी दिखाया लेकिन बाप और बच्चों के मिलन को ड्रामा भी रोक नहीं सका। तो ऐसे हिम्मत वाले बच्चों पर बापदादा विशेष वरदानों की वर्षा कर रहे हैं।

आज इस घड़ी जो भी बच्चा जो भी वरदान चाहे वह वरदान मिलेगा। सहज मिलेगा लेकिन इस वरदान को रोज़ अमृतवेले और कर्मयोगी स्थिति में बार-बार दिल से याद करना। दिलशिकस्त नहीं होना। वरदान प्राप्त है सिर्फ सदा नयनों में, जैसे स्थूल नयनों के बीच में क्या चमकती है? सबके नयनों के बीच में क्या चमकती है? बिन्दी चमकती है ना! तो जैसे नयनों में बिन्दी निरन्तर चमक रही है ना! या कभी-कभी चमकती है? निरन्तर है ना! ऐसे सदा नयनों में बाप बिन्दी को समाकर रखना। रख सकते हैं ना! मुश्किल है? मुश्किल नहीं है? सहज है? अच्छा। तो जैसे स्थूल बिन्दी निरन्तर है, ऐसे नयनों में निरन्तर बाप बिन्दी भी समाया हुआ हो। समा लिया? फिट हो गया? निकल तो नहीं जायेगा? अगर नयनों में निरन्तर बाप बिन्दी समाया हुआ है तो और किसी तरफ भी नयन आकर्षित नहीं होंगे। मेहनत से छूट जायेंगे। और तरफ नज़र जायेगी ही नहीं। बिल्कुल सेफ हो जायेंगे। कुछ भी हो जाए लेकिन नयनों में सदा बिन्दी बाप समाया हुआ हो। सदा नयनों में समाया हुआ होगा तो दिल में भी वही समाया हुआ होगा। तो दिल में और नयनों में समाने की विधि है - बापदादा, साहेब को राज़ी करना। साहेब राज़ी है? आप समझते हो बापदादा साहेब आपके ऊपर राज़ी है? राज़ी है? कितने परसेन्ट? बोलो? (कोई ने कहा 99, कोई ने कहा 75) आफरीन है। बापदादा को राज़ी करना बहुत सहज है। सहज है या मुश्किल है? इज़ी? पीछे वाले बोलो इज़ी है? हाथ तो बहुत अच्छा उठाया। बापदादा को राज़ी करने का सहज साधन है -"सच्ची दिल"। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी है। हर कर्म में सत्यवादी। सत्यता महानता है। जो सच्ची दिल वाला है, वह सदा संकल्प, वाणी और कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में राज़युक्त होगा अर्थात् राज़ को समझ करने वाले, चलने वाले। और राज़युक्त की निशानी है, हम कहाँ तक राज़युक्त हैं वह उसके परखने की निशानी है, अगर राज़ जानता है तो वह कभी भी अपने स्व-स्थिति से नाराज़ नहीं होगा अर्थात् दिलशिकस्त नहीं होगा। और संकल्प में भी, वृत्ति से भी, स्मृति से भी, दृष्टि से भी किसी को नाराज़ नहीं करेगा। क्यों? सबके वा अपने संस्कार स्वभाव को जानने वाला राज़युक्त है।

तो बाप को राज़ी करने की विधि है - राज़युक्त चलना और राज़युक्त अर्थात् न अपने अन्दर नाराज़गी आये, न औरों को नाराज़ करे।

सदा समय अनुसार अपने मन, बुद्धि को स्वप्न तक भी सदा शुभ और शुद्ध रखो। कई बच्चे रूहरिहान में कहते हैं - बापदादा तो शक्तियां देता है लेकिन समय पर शक्ति यूज़ नहीं होती। बापदादा विशेष सब बच्चों के साथी होने के सम्बन्ध से विशेष ऐसे समय पर एकस्ट्रा मदद देते हैं क्यों? बाप जिम्मेवार है बच्चों को सम्पन्न बनाए साथ ले जाने के लिए। जिम्मेवार है बाप। तो बाप अपनी जिम्मेवारी विशेष ऐसे समय पर निभाते हैं लेकिन कभी-कभी बच्चों के मन की कैचिंग पावर का स्विच आफ होता है। तो बाप क्या करे? बाप तो फिर भी स्विच आन करने की, खोलने की कोशिश करते हैं लेकिन टाइम लग जाता है। इसलिए जब फिर स्विच आन हो जाता है ना तो कहते हैं करना तो नहीं चाहिए था, लेकिन हो गया। तो सदा अपने मन की कैचिंग पावर, जिसको आप कहते हैं टचिंग, कैचिंग पावर का स्विच आन रखो। माया कोशिश करती है आफ करने की, सेकण्ड में आफ करके चली जाती है, इसीलिए जैसा समय नाज़ुक होता जायेगा, अभी होना है और। डरते तो नहीं हो ना? कोई हर्जा नहीं। बापदादा ने पहले भी कहा कि आप सबने वर्ष क्यों मनाया है? कौन सा वर्ष मनाया है? संस्कार से संसार परिवर्तन का। पक्का है ना! मनाया है ना! या भूल गये हैं? मना रहे हैं। तो प्रकृति बाप से पूछती है कि बच्चों ने संसार परिवर्तन का संकल्प लिया है। पक्का लिया है ना? पीछे वालों ने लिया है? पक्का संकल्प है ना? सभी का संकल्प है? तो प्रकृति बाप से पूछती है कि मैं तैयारी करती हूँ, सफ़ाई करने की लेकिन सफ़ाई करने वाले जो निमित्त हैं वह करते-करते सोच में पड़ जाते हैं, दुविधा में पड़ जाते हैं करें या नहीं करें। जल्दी करें, धीरे से करें, तो मैं क्या करूं! प्रकृति पूछती है? क्या जवाब दें? बापदादा, प्रकृति को क्या जवाब दे? बोलो? डबल विदेशी बोलो। (थोड़ा इन्तजार करें) यह तो ठीक जवाब नहीं है। अगर डबल विदेशी इन्तजार करेंगे तो फिर प्लैन नहीं मिलेंगे। अभी तो प्लेन मिल गये ना। सोते-सोते आये हो ना प्लेन में। आराम से आ गये ना। सारी सभा में से किसी को भी आने में मुश्किल हुई? हाथ उठाओ। हुई किसको? पहुंच तो गई। टाइम पर पहुंच तो गई। यह हिम्मत की बात है। जो थोड़ा डरे तो बैठ गये। आप लोगों ने दृढ़-संकल्प किया, जाना ही है तो पहुंच गये। सिर्फ एक का प्लैन लौटा, बस ना। उसकी कोई बात नहीं। फिर अच्छा मिलेगा। अभी तो आगे चलकर प्रकृति को, सफाई करने वालों को सोच में नहीं डालो क्योंकि स्थापना वाले अभी भी कभी-कभी सोच में पड़ जाते हैं। क्या करें? ऐसे करें, नहीं करें? ठीक होगा या नहीं ठीक होगा? एकदम स्पष्ट हो हाँ या ना। यह राइट है यह रांग है - क्लीयर हो। तो प्रकृति आपके वर्ष मनाने के कारण तैयारी तो करेगी। अभी भी करा रही है लेकिन स्थापना के निमित्त बनी हुई आत्माओं को अभी किसी भी बातों में चाहे स्व प्रति, चाहे औरों के प्रति सोचने में समय नहीं लगाना चाहिए। क्लीयर टचिंग सेकण्ड में हो। बिन्दी लगाने में कितना टाइम लगता है? (सेकण्ड) तो जब प्रैक्टिकल लाइफ में बिन्दी लगाते हो तो सेकण्ड लगता है? कोई भी बात में बिन्दी लगाने में या बिन्दू रूप स्थिति में स्थित होने में सेकण्ड लगता है? सेकण्ड लगता है? प्रैक्टिकल में सेकण्ड से भी कम लगता है? मानो कोई बात आपके सामने आ गई, उसको बिन्दी लगाने में सेकण्ड लगता है? पाण्डव सेकण्ड लगता है? (कभी-कभी) पाण्डवों को बिन्दी लगाने में टाइम लगता है, यह तो कह रही हैं सेकण्ड लगता है? शक्तियों में शक्ति है? (पाण्डव सच बोलते है) नहीं, दोनों सच्चे हैं, क्योंकि उन्हों की अभी लगती होगी बिन्दी, आपकी अभी

नहीं लगती होंगी, इसलिए फर्क हो गया। बाकी तो सब सच्चे हैं। सच्चे दिल वाले हैं। हाल तो फुल है। नीचे भी बैठे हैं। नीचे तो बैठे हैं लेकिन बापदादा के सामने हैं। जो देश विदेश में इसी याद में बैठे हैं बापदादा आ गये मधुबन में। अपने-अपने दूरदेशी दृष्टि दुरबीन से देख रहे हैं। तो वह भी अभी बाबा के सामने आ रहे है कि कैसे दूर बैठे भी मन से मधुबन में हैं। आपके यह साधन, इस साकार वतन के साधन तो नीचे ऊपर हो सकते हैं लेकिन यह आध्यात्मिक दूर दृष्टि, दूरादेशी दृष्टि कभी खराब नहीं हो सकती। तो बापदादा के सामने सभी चारों ओर के सेवाकेन्द्र के बच्चे सामने दिखाई दे रहे हैं। अच्छा।

दीवाली मना ली? संगमयुग है ही मनाने का युग। चाहे अन्तर्मुखी हो अतीन्द्रिय सुख की मौज़ मनाओ, चाहे सेवा में महादानी बन आत्माओं के प्रति महादान देते हुए मनाओ, चाहे आपस में रूहरिहान करो, डांस करो, सम्बन्ध-सम्पर्क से एक दो की विशेषता को देखो, विशेषता की खुशबू लो, सदा मनाना ही मनाना है। गंवाने का समय समाप्त हो गया। गंवाने का युग तो नहीं है ना? अभी मनाने का और कमाने का युग है, जमा करने का युग है। तो बापदादा सदा हर बच्चे को यही देखता रहता तो मना रहे हैं, किसी भी रूप में मनाना ही है क्योंकि संगम पर ही है, गंवाना और मनाना, दोनों का नॉलेज है। इसीलिए गंवा के फिर मनाना उसका महत्व होता है। अभी गंवाने को बिन्दी लगाओ। स्टॉप। गंवाना नहीं है। एक संकल्प भी गंवाना नहीं है। कमाने के समय पर गंवायेंगे तो कमायेंगे कब? फिर तो समय मिलना नहीं है। चेक करो जो भी खजाने हैं, सबसे बड़ा खजाना है कौन सा? संकल्प, समय, ज्ञान का खजाना, प्रत्यक्ष जीवन में आये। ज्ञान सुनाना और सुनना यह फर्स्ट स्टेज है। लेकिन ज्ञान अर्थात् नॉलेज। नॉलेज को क्या कहते हो? नॉलेज लाइट है, माइट है; कहते हो ना! तो ज्ञान वा नॉलेज का अर्थ है – इस संकल्प में, बोल में, कर्म में लाइट और माइट है तब कहेंगे नॉलेजफुल।

कुमारियां नॉलेजफुल बनने वाली हैं ना? सिर्फ कोर्स कराने वाली नहीं बनना। भाषण करने वाले नहीं बनना। साथ-साथ नॉलेज की लाइट माइट, संकल्प, बोल और कर्म में हो। कुमारियों से तो बापदादा का विशेष प्यार है। क्यों? अपने जीवन का फैंसला कर लिया। कर लिया ना? या करना है? अच्छी तरह से सोच लिया? कि वहाँ जाके सोचेंगी? पक्का सोच लिया है तो मुबारक हो। देखो इतने हैण्डस तैयार मिलेंगे आपको। जो कुमारियां ट्रेनिंग कर रही हैं वह हाथ उठाओ। कितनी है संख्या? (80) जो अभी सेवा में नहीं लगी हुई है वह कौन हैं, हाथ उठाओ। जो अभी सेन्टर नहीं सम्भालती हैं, वह ऊंचा हाथ उठाओ। गिनती करो। आधे हैं। अच्छा इतने हैण्ड तो मिलेंगे ना! राइट हैण्ड या लेफ्ट हैण्ड। राइट हैण्ड बनेंगे ना! अच्छा है। कुमारियां हैं ना तो बापदादा कुमारियों को सेन्टर का घर भी देता और वर तो मिला ही है। हमेशा घर और वर दो चाहिए। कुमारियों को वर तो मिल गया, अभी घर भी मिलेगा। सेन्टर मिलेगा। कुमारों को भी मिलता है। कुमार समझते हम पीछे क्यों। पीछे नहीं आगे हो। कुमारों के बिना भी सेवा कहाँ चलती है। कोई भी सेन्टर पर देखो, अगर हार्डवर्कर कुमार नहीं हों तो बहनें कुछ नहीं कर सकती। दोनों ही जरूरी हैं। इसीलिए पाण्डवों का भी नाम है तो शक्तियों का भी नाम है। दोनों का नाम है। अच्छा।

आप सबके मीटिंग्स का समाचार बापदादा के पास पहुंचा। चाहे भारत वालों की, चाहे डबल विदेशियों की। इस वर्ष में चाहे देश में, चाहे विदेश में, देश में कान्फ्रेन्सेज़, स्नेह मिलन ज्यादा हुए हैं। और विदेश में भिन्न-भिन्न प्रोजेक्ट चला रहे हैं। लेकिन बापदादा ने देखा कि सेवा में लगन भी है और सेवा की गति में तीव्रता भी है। दोनों है। समय अनुसार हर प्रोजेक्ट

या कान्फ्रेन्स या स्नेह मिलन कहो, कोई भी प्रोग्राम जो भी चलता है, उसमें सिर्फ समय प्रमाण टॉपिक को उसी रूप से रखना जरूरी है क्योंकि जिस समय किसको पानी की प्यास है, और आप उसको 36 प्रकार का भोजन दे दो तो वह स्वीकार करेगा? तो प्रोजेक्ट कोई भी है, टॉपिक कोई भी है लेकिन इस समय सर्व आत्माओं को चाहिए शान्ति और स्नेह। शान्ति की भी प्यासी हैं तो स्नेह की भी प्यासी हैं। तो अच्छी सेवा कर रहे हैं, जो भी प्लैन बनाये हैं, वह अच्छे बनाये हैं, जो चल रहे हैं वह अच्छे चल रहे हैं। रिजल्ट भी है और हिम्मत भी है। इसलिए बापदादा सेवा के समाचार सुनते हर्षित होते हैं। और गीत कौन सा गाते हैं? बापदादा गीत गाते हैं, कौन सा? वाह बच्चे वाह! और इस समय प्रोग्रामस तो चलने ही हैं, प्रोग्रामस को नहीं रोकना है। समय के सरकमस्टांश प्रोग्राम को रोकते हैं तो रोकें। लेकिन आप प्रोग्रामस नहीं रोक सकते हो। अच्छा अगर मानों कोई प्रोग्रामस रखते हो और समस्या बदल जाती है तो प्रोग्राम में आने वाले भी समझते हैं, जाने वाले भी समझते हैं। आप क्यों ना करो! दाता के बच्चे हैं ना, तो आप देने में, प्रोग्राम करने में ना नहीं कर सकते हो। आओ, भले आओ, खुशी से आओ। स्वागत करेंगे। जब सरकमस्टांश होंगे तो सरकमस्टांश ही उन्हों को रोकें, आप नहीं रोको। अभी भी देखो अमेरिका के पीस वीलेज में, हंगामा होते हुए भी अमेरिका में भी प्रोग्राम चल रहे हैं ना, और बहुत अच्छे चले हैं। रुके हैं, नहीं रुके हैं ना! अभी 4 तारीख तक जो भी प्रोग्राम आपने बनाये वह कोई रुका है। बाम्ब्स भी चल रहे हैं, चलने दो। लड़ाई तो चल रही है ना! सुनते रहो। अच्छा है, सुनने से आप सब ब्राह्मणों के जो विशेष संस्कार वा स्वभाव हैं, रहमदिल, मर्सीफुल वह इमर्ज होगा और होना ही जरूरी है। इस समय आप हर एक का आत्माओं के प्रति रहमदिल और दातापन, कुछ न कुछ देना ही है, चाहे मन्सा सेवा द्वारा दो, चाहे शुभ भावना से दो, श्रेष्ठ सकाश देने की वृत्ति से दो, चाहे आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न बोल से दो, चाहे अपने स्नेह सम्पन्न सम्बन्ध-सम्पर्क से दो लेकिन कोई भी आत्मा वंचित नहीं रहे। दाता बनो, रहमदिल बनो। चिल्ला रहे हैं। बाप के आगे अपनी-अपनी भाषा में चिल्ला रहे हैं - शान्ति दो, स्नेह दो। दिल का प्यार दो। सुख की किरणें दिखाओ। तो बाप कैसे देंगे? आप बच्चों द्वारा ही देंगे ना! बाप के आप सभी राइट हैण्ड हो, कोई भी देना होता है तो हैण्ड द्वारा देते हैं ना! तो आप सभी बाप के राइट हैण्ड हो ना? पाण्डव राइट हैण्ड हो? इतने राइट हैण्ड, आप राइट हैण्डस का यादगार है। पता है कौन सा यादगार है? इतने राइट हैण्ड। विराट रूप का चित्र देखा है, तो उसमें कितने हाथ दिखाते हैं? तो आपका चित्र है राइट हैण्ड का। कुमारियां आप लोगों का चित्र है ना उसमें? तो अभी बाप राइट हैण्डस द्वारा आत्माओं को सुख-शान्ति का अंचली तो दिलायेगा ना! बिचारों को अंचली भी नहीं देंगे तो कितने तड़फेंगे! **अभी सभी हद की बातों से ऊंचे हो जाओ। हद की बातों में, हद के संस्कारों में समय नहीं गंवाओ।** बापदादा आज भी सभी बच्चों को, चाहे यहाँ बैठे हैं, चाहे सेन्टर्स पर बैठे हैं, चाहे देश में हैं, चाहे विदेश में हैं लेकिन रहमदिल भावना से इशारा दे रहे हैं - बापदादा हर बच्चे की हद की बातें, हद के स्वभाव संस्कार, वा नटखट वा चतुराई के संस्कार, अलबेलेपन के संस्कार बहुत समय से देख रहे हैं, कई बच्चे समझते हैं सब चल रहा है, कौन देखता है, कौन जानता है लेकिन अभी तक बापदादा रहमदिल है, इसलिए देखते हुए भी, सुनते हुए भी रहम कर रहा है। लेकिन बापदादा पूछते हैं आखिर भी रहमदिल कब तक? कब तक? क्या और टाइम चाहिए? बाप से समय भी पूछता है, आखिर कब तक? प्रकृति भी पूछती है। जवाब दो आप। जवाब

दो। अभी तो सिर्फ बाप का रूप चल रहा है, शिक्षक और सतगुरू तो है ही। लेकिन बाप का रूप चल रहा है। क्षमा के सागर का पार्ट चल रहा है। लेकिन धर्मराज़ का पार्ट चला तो? क्या करेंगे? **बापदादा यही चाहते हैं, कि धर्मराज़ के पार्ट में भी वाह बच्चे वाह! का आवाज कानों में गूंजे।** फिर बाप को उल्हना नहीं देना। बाबा आपने सुनाया नहीं, हम तैयार हो जाते थे ना! इसलिए अभी हद की छोटी-छोटी बातों में, स्वभाव में, संस्कारों में समय नहीं गंवाओ। चल रहे हैं, चलता है, नहीं, जमा होता जाता है। दुगुना, तीगुना, सौगुना जमा होता जाता है, चलता है नहीं। इसलिए इस दृढ़ संकल्प का दिल में दीप जगाओ। हद से बेहद की वृत्ति, दृष्टि, कृति बनानी ही है। इसीलिए बापदादा कहते हैं बनानी पड़ेगी। आज यह कह रहे हैं बनानी पड़ेगी। फिर क्या कहेंगे? टू लेट। समय को देखो, सेवा को देखो, सेवा बढ़ रही है, समय आगे दौड़ रहा है। लेकिन स्वयं हद में हैं या बेहद में हैं? हद की बातों के पीछे आप नहीं दौड़ो। तो बेहद की वृत्ति, स्वमान की स्थिति आपके पीछे दौड़ेगी।

बापदादा इस वर्ष में जो इस समय तक किया, उसमें सन्तुष्ट है आफरीन भी देते हैं। लेकिन अभी सेवा में अनुभूति कराना, शमा के ऊपर परवानें बनाना, चाहे सहयोगी बनाओ, चाहे साथी बनाओ, कुछ बनें। अनुभूति की खान खोलो। अच्छा है, यहाँ तक ठीक है। लेकिन सिर्फ चक्कर लगाने वाले परवाने नहीं बनें। पक्के परवाने बनेंगे अनुभूति का कोर्स कराने से। इतने तक अनुभूति होती है - बहुत अच्छा है, स्वर्ग है। यही यथार्थ ज्ञान है, नॉलेज है, इतना सेवा का रिजल्ट अच्छा है। अभी अनुभूति स्वरूप बन अनुभव कराओ। अनुभव करने वाले अर्थात् बाप से डायरेक्ट सम्बन्ध रखने वाले। ऐसे अनुभवी परवाने तैयार करो। सहयोगी बनाये हैं, उसकी मुबारक है और बनाओ। यह स्थान है, यहाँ से ही प्राप्ति हो सकती है, इतने तक भी मानते हैं लेकिन बाप के साथ जरा सा कनेक्शन तो जोड़ो। जो शमा के पीछे ही भागते रहें। तो इस वर्ष विशेष बापदादा अनुभूति कराने का, सेवा में कोर्स कराने चाहते हैं। इससे ही साक्षात्कार भी होंगे और साक्षात बाप प्रत्यक्ष होंगे। सुना, क्या करना है? प्लैन मिला?

अभी इस वर्ष की रिजल्ट देखेंगे कितनों को बाप शमा के परवाने बनवाये। चलो चक्कर तो लगायें, स्वाहा नहीं हों, बाबा बाबा का चक्कर तो लगायें। अच्छा। कुमारियां ठीक हैं ना! अच्छा।

चारों ओर के बच्चों के पत्र भी बापदादा को मिलते रहते हैं। वह बच्चे लिखना शुरू करते हैं और बाप के पास पहले ही पहुंच जाता है। दिल का आवाज है ना! यह तो हाथों से लिखते हैं, लेकिन पहले दिल का आवाज दिलाराम के पास पहुंच जाता है। यह भी अच्छा है, बापदादा की याद तो आती है ना! समाचार लिखने के टाइम कितनी खुशी होती है। तो बापदादा जिन्होंने भी पत्र, ई-मेल, किसी भी साधन द्वारा याद प्यार या समाचार भेजा है उन सभी को एक-एक को नाम सहित स्पेशल यादप्यार और मुबारक दे रहे हैं। आप सब तो सम्मुख दे रहे हो ना! उन्हों को देना पड़ेगा ना। तो सभी को, चारों ओर के बच्चों को दीवाली मुबारक भी दे रहे हैं, कौन सी दीवाली मनानी है वह तो सुना ही दिया। अच्छा।

चारों ओर के अति बापदादा के दिलतख्त नशीन श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा हद के स्वभाव, संस्कार परिवर्तन करने वाले बेहद की परिवर्तक आत्माओं को सदा एक सेकण्ड, एक संकल्प भी व्यर्थ न गंवाने वाले, जमा करने वाले तीव्र पुरुषार्थी बच्चों को, सदा रहमदिल बन, दाता बन हर आत्मा को, चाहे ब्राह्मण आत्मा, चाहे प्यासी आत्माओं को कुछ न कुछ अंचली देने वाले, सकाश देने वाले, ऐसे बड़ी दिल रखने वाले बच्चों को बापदादा का बहुत-बहुत-बहुत-बहुत यादप्यार और नमस्ते।

मुरली नं. ६४

2-1-2002 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - आत्मा को निरोगी बनाने के लिए रूहानी स्टडी करो और कराओ, रूहानी हॉस्पिटल खोलो"

प्रश्न:- कौन सी एक आश रखने से बाकी सब आशायें स्वत: पूर्ण हो जाती हैं?
उत्तर:- सिर्फ बाप को याद कर एवरहेल्दी बनने की आश रखो। ज्ञान-योग की आश पूर्ण की तो बाकी सब आशायें स्वत: पूरी हो जायेंगी। बच्चों को कोई भी आदत नहीं रखनी है। आलराउन्डर बनना है। भल खामियां हर एक में हैं परन्तु सर्विस जरूर करनी है।

गीत:- धीरज धर मनुआ... ओम् शान्ति।

बच्चों ने गीत सुना। इस समय सभी आत्माओं को धीरज दिया जाता है। आत्मा में ही मन-बुद्धि है। आत्मा ही दु:खी होती है तब बाप को बुलाती है – हे पतित-पावन परमपिता परमात्मा आओ। कभी ब्रह्मा विष्णु शंकर को पतित-पावन नहीं कहा जाता। जब उन्हों को नहीं कहा जाता तो लक्ष्मी-नारायण, राम-सीता आदि को भी नहीं कहा जा सकता है। पतित-पावन तो एक ही है। विष्णु का चित्र तो है ही पावना वह हैं विष्णुपुरी के मालिक। विष्णुपुरी स्थापन करने वाला है शिवबाबा। वही इस समय विष्णुपुरी स्थापन कर रहे हैं। वहाँ देवी-देवता ही रहते हैं। विष्णु डिनायस्टी कहें अथवा लक्ष्मी-नारायण डिनायस्टी कहें, बात एक ही है। यह सब प्वाइंट्स धारण करने की हैं। बाप है रूहानी और यह रूहानी स्टडी है, रूहानी सर्जरी है। इसलिए बोर्ड पर नाम भी ऐसा लिखना चाहिए "ब्रह्माकुमारीज़ रूहानी ईश्वरीय विश्व विद्यालय"। रूहानी अक्षर जरूर डालना है। रूहानी हॉस्पिटल भी कह सकते हैं, क्योंकि बाप को अविनाशी सर्जन भी कहते हैं, पतित-पावन, ज्ञान का सागर भी कहते हैं। वह धीरज दे रहे हैं कि बच्चे मैं आया हूँ। मैं रूहों को पढ़ाने वाला हूँ। मुझे सुप्रीम रूह कहते हैं। आत्मा को ही रोग लगा हुआ है, खाद पड़ी हुई है। सतयुग में पवित्र आत्मायें हैं, यहाँ अपवित्र आत्मायें हैं। वहाँ हैं पुण्य आत्मायें यहाँ हैं पाप आत्मायें। आत्मा पर ही सारा मदार है। आत्मा को शिक्षा देने वाला है - परमात्मा। उनको ही याद करते हैं। सब कुछ उनसे ही मांगा जाता है। कोई दु:खी कंगाल होगा तो कहेगा - मेहर करो कुछ पैसे साहूकार से दिलाओ। पैसा मिल गया तो कहेंगे ईश्वर ने दिया वा दिलवाया। कोई कारपेन्टर है तो उनको सेठ से मिलेगा। बच्चों को बाप से मिलता है। परन्तु नाम ईश्वर का बाला होता है। अब ईश्वर को तो मनुष्य जानते ही नहीं हैं। इसलिए यह सब युक्तियां रची जाती हैं। पूछा जाता है परमपिता परमात्मा से आपका क्या सम्बन्ध है? प्रजापिता ब्रह्मा और जगदम्बा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? राज-राजेश्वरी लक्ष्मी-नारायण से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? वह तो स्वर्ग के मालिक हैं। जरूर स्वर्ग की स्थापना करने वाले ने उनको वर्सा दिया होगा। यह तो विष्णुपुरी के मालिक हैं ना। मुख्य चित्र है शिवबाबा और ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का। विष्णु का भी सजा-सजाया रूप दिखाते हैं। विष्णु द्वारा पालना करते

हैं, शंकर द्वारा विनाश। उनका इतना कर्तव्य नहीं है। स्तुति लायक शिवबाबा है और विष्णु भी बनते हैं। शंकर का पार्ट अलग है। उन द्वारा तो विनाश होता है। नाम रख दिया है त्रिमूर्ति। राम-सीता, लक्ष्मी-नारायण यही मुख्य चित्र हैं। उसके बाद फिर चित्र है रावण का। वह भी बड़ा 4'×6' फुट का बनाना चाहिए। रावण को वर्ष-वर्ष जलाते हैं, इनसे आपका क्या सम्बन्ध है? इनको जलाते हैं तो जरूर बड़ा दुश्मन ठहरा। प्रदर्शनी में उनका बड़ा चित्र होना चाहिए। इनका राज्य द्वापर से शुरू होता है, जबकि देवी-देवता वाम मार्ग में गिरते हैं। इनके अलावा बाकी जो चित्र हैं उनकी फिर अलग-अलग प्रदर्शनी दिखानी चाहिए कि यह सब कलियुगी चित्र हैं। गणेश, हनुमान, कच्छ-मच्छ आदि सबके चित्र डालने चाहिए। ऐसे बहुत किसम-किसम के चित्र मिलते हैं। एक तरफ कलियुगी चित्र, एक तरफ हैं तुम्हारे चित्र। इन पर तुम समझा सकते हो। मुख्य चित्र है शिवबाबा का और एम आबजेक्ट का। लक्ष्मी-नारायण का अलग है, संगम का अलग है, कलियुग का अलग है। चित्रों की प्रदर्शनी के लिए बहुत बड़ा कमरा चाहिए।

देहली में बहुत आयेंगे। अच्छे और बुरे तो होते ही हैं। बड़ी सम्भाल करनी चाहिए, इसमें चाहिए पहचान। चीफ जस्टिस से ओपनिंग कराते हैं, वह भी नामीग्रामी नम्बरवन है। प्रेजीडेंट और चीफ जस्टिस इक्वल हैं। एक दो को कसम उठवाते हैं। जरूर कुछ समझते हैं तब तो उद्घाटन करेंगे ना। कन्स्ट्रक्शन का ही उद्घाटन करेंगे। डिस्ट्रक्शन का तो उद्घाटन नहीं करेंगे।

अब बाप समझाते हैं बच्चे, तुम्हारे सुख के दिन आ रहे हैं। बोर्ड पर भी हॉस्पिटल नाम जरूर लिखना चाहिए। और किसने स्थापना की? अविनाशी सर्जन पतित-पावन बाप है ना। पावन दुनिया में तो पावन मनुष्यों को कभी बीमारी आदि होती नहीं। पतित दुनिया में तो बहुत बीमारियां हैं। तो सर्विस के लिए विचार चलाना चाहिए। क्या-क्या चित्र रखने चाहिए, कैसे समझाना चाहिए। अगर कोई बेसमझ, समझायेंगे तो कुछ भी समझ नहीं सकेंगे। कहेंगे यहाँ तो कुछ भी नहीं है। गपोड़े मारते रहते हैं। इसलिए प्रदर्शनी में कभी भी बुद्धूओं को समझाने के लिए नहीं खड़ा करना चाहिए। समझाने वाले भी होशियार चाहिए। किसम-किसम के मनुष्य आते हैं। बड़े आदमी को कोई भुटटू समझावे तो सारी प्रदर्शनी का नाम बदनाम कर देंगे। बाबा बतला सकते हैं फलाना-फलाना किस प्रकार का टीचर है। सब एक जैसे होशियार भी नहीं हैं। बहुत देह-अभिमानी भी हैं।

अब बाप कहते हैं हे आत्मायें तुम्हारे सुख के दिन आ रहे हैं। स्वर्ग का नाम तो सब गाते हैं। परन्तु स्वर्ग में भी नम्बरवार मर्तबे हैं। नर्क में भी नम्बरवार दर्जे हैं। विजय माला में पिरोने वाले राज-राजेश्वर बनते हैं। हम पूछते भी हैं - ज्ञान ज्ञानेश्वरी जगत अम्बा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? ज्ञान ज्ञानेश्वरी को ईश्वर ज्ञान देते हैं तो राज-राजेश्वरी बनती है। जगत अम्बा को भी बहुत बच्चे हैं और प्रजापिता ब्रह्मा को भी बहुत बच्चे हैं। कितनी सूक्ष्म बातें हैं। मनुष्य समझ ही नहीं सकते कि प्रजापिता ब्रह्मा और जगत अम्बा यह कौन हैं! प्रजापिता ब्रह्मा के मुख वंशावली होंगे ना। सेन्सीबुल जो

होंगे वह झट पूछेंगे हमको यह बात समझ में नहीं आती कि प्रजापिता ब्रह्मा और जगत अम्बा का आपस में क्या कनेक्शन है? जो इतने बच्चे मुख से हुए हैं। ऐसे ऐसे प्रश्न पूछने से आने वालों की बुद्धि का भी पता लग जायेगा। बाप सब राज़ समझाते हैं। त्रिमूर्ति, झाड़, गोला, लक्ष्मी-नारायण का चित्र इनमें एम आबजेक्ट भी है, वर्सा देने वाला भी ऊपर में खड़ा है। तो समझाने वाला बहुत होशियार चाहिए। प्रश्नावली भी बहुत अच्छी है। रावण से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? इतने बड़े-बड़े विद्वान, पण्डित आदि कुछ भी समझते नहीं हैं कि यह दुश्मन कैसे हैं। हम भी आगे समझते नहीं थे। बाबा कहते हैं यह जो ब्रह्मा है, जिसको मैंने एडाप्ट किया है वह भी नहीं जानते थे। अब जानते हैं तो औरों को भी समझाने का बड़ा शौक चाहिए। यह प्रदर्शनी बिल्कुल नई है। भल कोई कापी भी करे तो भी समझा न सके। यह वन्डर है। बड़ा नशा चाहिए। सर्विस में पूरा लग जाना चाहिए। चित्र तुम्हारे बहुत मांगेंगे तो बहुत होने चाहिए। सर्विस के लिए विशालबुद्धि चाहिए। खर्चा तो होगा ही। पैसे तो खर्च करने के लिए ही हैं। खर्च करते जायेंगे तो आते जायेंगे। धन दिये धन ना खुटे। बच्चे तो बहुत बनते जायेंगे। पैसे तो सर्विस में ही लगाने हैं। राजधानी तो सतयुग में होनी है। यहाँ तो महल आदि नहीं बनाने हैं। उसमें गवर्मेन्ट का कितना खर्चा होता है। यहाँ है चित्र बनाने का खर्चा। दिनप्रतिदिन प्वाइंटस बहुत अच्छी निकलती जाती हैं। बड़ी युक्ति से समझाया जाता है कि रावण राज्य कब से शुरू हुआ है। आधा समय रावण का राज्य, आधा समय राम का राज्य। इस रावण से बाबा ही आकर छुड़ाते हैं और कोई छुड़ा न सके। इनके लिए तो सर्वशक्तिमान् ही चाहिए। वही माया पर जीत पहना सकते हैं। फिर सतयुग में यह रावण दुश्मन होता ही नहीं। धीरे-धीरे तुम्हारा प्रभाव बहुत निकलेगा। फिर बांधेली मातायें, कन्यायें सब छूट जायेंगी। समझेंगे यह तो अच्छी बात है। कलंक लगने ही हैं। कृष्ण पर भी कलंक लगे हैं ना। स्थापना के समय भी भगाने आदि के कलंक लगाये, गालियां देते थे। फिर स्वर्ग में भी कलंक लगाये हैं, सर्प ने डसा, यह किया... कितनी फालतू बातें हैं। प्रदर्शनी में बहुत आते हैं। फिर उन्हों को कहा जाता है सेन्टर पर आकर समझो। आकर अपनी जीवन बनाओ। काल पर जीत पहनो। वहाँ काल खाता नहीं। एक कहानी है यमदूत लेने गया तो उनको कहा तुम अन्दर घुस नहीं सकते... यह बड़ी समझने की बातें हैं। इसमें बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए और देही-अभिमानी चाहिए। हम आत्मा हैं, पुराने सम्बन्ध और पुराने शरीर का भान नहीं रखना है। अब नाटक पूरा होता है, हम वापिस जा रहे हैं। स्वर्ग में जाकर हमको नये सम्बन्ध में जुटना है। यह ज्ञान बुद्धि में है। यह पुरानी दुनिया तो खत्म होने वाली है। हमारा सम्बन्ध है बाप से और नई दुनिया से। यह बातें सिमरण करनी पड़े। यह ज्ञान मिल रहा है तुमको भविष्य नई दुनिया के लिए। यह पुरानी दुनिया तो कब्रिस्तान होनी है, इनसे क्या दिल लगानी है। यह तो देह सहित सब कुछ खलास हो जाने वाला है। देही-अभिमानी बनना अच्छा है। हम बाबा के पास जाते हैं। अपने साथ बातें करनी हैं तब कोई को समझा सकेंगे।

अब तुम बच्चे जानते हो हमारे सुख के दिन आ रहे हैं। जितना पास होने का

पुरूषार्थ करेंगे तो पद भी ऊंचा पायेंगे। सर्टीफिकेट तो टीचर ही देंगे ना। वह जानते हैं इनमें कितनी सच्चाई है। कितना सर्विसएबुल है। यह कन्स्ट्रक्शन का काम करते हैं। डिस्ट्रक्शन का काम तो नहीं करते हैं! सर्विसएबुल ही दिल पर चढ़ते हैं। भल अभी तो परिपूर्ण कोई नहीं है। खामियां तो सबमें रहती हैं। परिपूर्ण तो आगे चलकर बनना है। शौक रखना है - मनुष्य की जीवन कैसे बनायें। कांटों को फूल बनाना है। बाप भी कांटे जैसे मनुष्यों को फूल बनाते हैं। देवता बनाते हैं। ज्ञान और योग भी चाहिए। बच्चे वृद्धि को पाते रहेंगे फिर कोई विरोध नहीं करेंगे। सीधे हो जायेंगे। यहाँ कोई डीटी तो है नहीं। हर बात में ध्यान देना पड़ता है। आलराउन्ड बुद्धि चाहिए। सर्विस ठीक रीति से कोई करते हैं वा नहीं करते हैं। कोई आराम-पसन्द तो नहीं हैं! सारा दिन यह चाहिए, वह चाहिए तो नहीं है! इसको कहा जाता है लोभ। कपड़ा अच्छा चाहिए, भोजन अच्छा चाहिए। आशायें बहुत रहती हैं। वास्तव में यज्ञ से जो मिले सो अच्छा। सन्यासी कभी दूसरी चीज़ लेते नहीं। समझते हैं आदत अच्छी नहीं है। शिवबाबा के यज्ञ से सब कुछ ठीक मिलता है। फिर भी कुछ आश रहती है। पहले ज्ञान-योग की आश तो पूर्ण करो। वह आशायें तो जन्म-जन्मान्तर रखते आये। (अब तो बाबा को याद करने से हम एवरहेल्दी बनेंगे - यह आश रखनी है। तो यह जरूर लिखना है कि यह रूहानी हॉस्पिटल है, जिससे मनुष्य समझें कि यह हॉस्पिटल वा कालेज भी है। बाबा ने मकान भी हॉस्पिटल और कॉलेज के ढंग से बनवाया है। कालेजों में कोई श्रृंगार नहीं होता है, सिम्पल होता है।)

अच्छा—मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- आराम-पसंद नहीं बनना है। सर्विस का बहुत-बहुत शौक रखना है। सर्विस में ही पैसे खर्च करने हैं। मनुष्यों की जीवन काटें से फूल बनानी है।

२- सदैव कन्स्ट्रक्शन का काम ही करना है, डिस्ट्रक्शन का नहीं। अपने आपसे बातें करनी हैं। हम कहाँ जा रहे हैं! क्या बन रहे हैं!

वरदान:- ज्ञान खजाने द्वारा मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करने वाले सर्व बंधनमुक्त भव

ज्ञान रत्नों का खजाना सबसे श्रेष्ठ खजाना है, इस खजाने द्वारा इस समय ही मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति कर सकते हो। ज्ञानी तू आत्मा वह है जो दु:ख और अशान्ति के सब कारण समाप्त कर, अनेकानेक बन्धनों की रस्सियों को काटकर मुक्ति वा जीवनमुक्ति का अनुभव करे। अनेक व्यर्थ संकल्पों से, विकल्पों से और विकर्मों से सदा मुक्त रहना—यही मुक्त और जीवनमुक्त अवस्था है।

स्लोगन:-

विश्व परिवर्तक वह है जो अपनी शक्तिशाली वृत्तियों से वायुमण्डल को परिवर्तन कर दे।

मुरली नं.- ६५

*12-1-2002 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे – आधाकल्प से जो 5 विकारों की बीमारियाँ लगी हुई थी वह अब छूटी कि छूटी, इसलिए अपार खुशी में रहना है"

प्रश्न:- तुम बच्चों को अब कौन सी एक हॉबी (शौक) रखना है, किन बातों से तुम्हारा तैलुक नहीं?

उत्तर:- (a) एक बाप से पूरा वर्सा लेने की हॉबी रखनी है। मनुष्यों को तो अनेक प्रकार की हॉबियाँ होती हैं। तुम्हें वह सब छोड़ देनी है। तुम ईश्वर के बच्चे बने हो, बाप के साथ वापिस जाना है इसलिए इस शरीर से तैलुक रखने वाली सब बातों को भूल जाना है। पेट को दो रोटी खिलानी है और बुद्धि नई दुनिया से लगानी है। (a)

गीत:- जिसका साथी है भगवान...

ओम् शान्ति। जो भी अनन्य महावीर अडोल बच्चे हैं वह समझते हैं कि अनेक प्रकार के मन्सा तूफान भी आयेंगे और कैलेमिटीज़, बीमारियाँ आदि भी आयेंगी क्योंकि अब पिछाड़ी का पाम्प है। माया खूब झोके लगायेगी। जो पक्के निश्चयबुद्धि हैं उन्हों को तो मालूम पड़ता है कि शरीर के हिसाब-किताब भी चुक्तू होंगे। जब कोई बीमारी छूटने पर होती है तो खुशी होती है। अब हम इस बीमारी से छूटने वाले हैं। तुम जानते हो बाकी थोड़े रोज़ हैं। यह 5 विकारों की बीमारी आधाकल्प की लगी हुई है, जिससे मनुष्य अजामिल जैसे पाप आत्मा बन जाते हैं। ऐसी दुनिया अब बाकी थोड़े रोज़ है। यह बीमारियाँ छूटी कि छूटी। दुनिया तो इन बातों को नहीं जानती वह तो जैसेकि आसुरी बुद्धि हैं। वह तो हाय-हाय करते रहेंगे। तुम तो यह घटनायें देखते रहेंगे। तुम्हारा इन बातों से कोई तैलुक नहीं है। यह कोई नई बात नहीं है, यह तो होना ही है। इसमें डरने की कोई बात नहीं। बाकी थोड़ा समय है। पेट को दो रोटी खिलानी हैं। अभी अपने को हॉबी है – बाबा से वर्सा लेने की। अनेक प्रकार की हॉबी (आदत) मनुष्यों को होती हैं। यहाँ कोई हॉबी नहीं। शरीर के साथ तैलुक रखने वाली बातों को भूल जाना है। (b) हम ईश्वर के बन गये। अब वापिस बाबा के पास अथवा साजन के पास जाना है। यह साज़न भी बड़ा विचित्र है। विचित्र होने के कारण उनको पूरा याद नहीं कर सकते। यह नई रसम है ना। आत्मा को परमात्मा को याद करना है। ऐसे तो कभी याद किया नहीं है आधाकल्प से, सतयुग में सिर्फ इतना समझते हैं – हम आत्मा हैं बस और कोई ज्ञान नहीं। हम आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेंगे। यहाँ तो आत्मा को परमात्मा बना दिया है। परमात्मा सर्वव्यापी कह देते हैं। अभी यह पुरानी दुनिया जैसेकि तुम्हारे लिए है नहीं। बुद्धि नई दुनिया से लगी हुई है। जैसे कोई नया घर बनता है तो बुद्धि पुराने घर से निकल नये में लग जाती है। अभी इतने धर्म वाले कान्फ्रेन्स आदि करते हैं परन्तु एक का भी बुद्धियोग परमपिता पमरमात्मा से नहीं है। अभी तुमको सिखलाने वाला बाप मिला है। वही ज्ञानेश्वर और योगेश्वर है। ईश्वर जो अपने साथ योग लगाना सिखलाते हैं, ज्ञानेश्वर माना ईश्वर में ही ज्ञान है। वही ज्ञान और योग सिखा सकते हैं। जिनको पक्का निश्चय है –

वह तो समझते हैं इसी दुनिया में हम थोड़े समय के लिए हैं। हमको तो अब वापिस जाना है। जैसे नाटक में एक्टर्स को मालूम पड़ जाता है कि बाकी थोड़ा समय है फिर हम घर जायेंगे। घड़ी को देखते रहते हैं। तुम्हारी है बेहद की घड़ी, तुम जानते हो यह अन्तिम जन्म है। तो तुमको तो बड़ी खुशी होनी चाहिए – हमको यह पुराना शरीर छोड़ विश्व का प्रिन्स और प्रिन्सेज बनना है। हमारे मम्मा बाबा भी जाकर प्रिन्स-प्रिन्सेज बनेंगे। बच्चों को भी अच्छी दौड़ी लगाकर विजय माला में नजदीक नम्बर में आना चाहिए। बाबा से कोई पूछे तो बाबा बतला सकते हैं – तुम्हारी चलन ऐसी है, जिससे दिखाई पड़ता है कि तुम बरोबर विजय माला में नजदीक आ जायेंगे। खुद को भी मालूम पड़ जाता है। हम कहाँ तक पास होंगे। कोई तो समझते हैं – हम कभी भी पास नहीं होंगे। भल बाबा का बच्चा हूँ, सब कुछ सरेन्डर किया है, बाबा की गोद में बैठा हूँ, परन्तु धारणा नहीं है तो ऊंच पद मिल न सके। जो गृहस्थ व्यवहार में रहकर सर्विस कर रहे हैं, वह यहाँ रहने वालों से अच्छा पद पा सकते हैं। और देखने में आता है – वह बहुत तीखे जा रहे हैं। सिर्फ साथ में रहने से थोड़ा फायदा होता है। बादल सागर के पास आये, भरे और फिर यह गये बरसने।

मुरली तो सब तरफ जाती रहती है। मुरली सुनकर फिर सुनाते भी हैं। बहुत सर्विस करते हैं, वह अच्छा ऊंच पद पा लेते हैं, मेहनत है। यहाँ मेहनत नहीं होती है तो गिर पड़ते हैं। सारा मदार पुरुषार्थ पर है। अपनी नब्ज आपेही भी देखी जा सकती है। समझ सकते हैं इस पुरुषार्थ से मैं क्या पद पाऊंगा! अब पुरुषार्थ कर ऊंच पद नहीं पाया तो कल्प-कल्पान्तर ऐसे पद होगा। यह है बेहद का ड्रामा। अपने को अब बेहद की बुद्धि मिली है। ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानना, बड़ा मजा है। परन्तु माया के तूफान ऐसे हैं जो कुछ न कुछ उल्टा करा लेते हैं। अच्छे-अच्छे बच्चों को माया जीत लेती है। आगे चल वृद्धि भी जास्ती होगी। तुम्हारा नाम बाला होगा। अब देहली में रिलीजस कान्फ्रेन्स होती है। कान्फ्रेन्स में समझाने की बड़ी अच्छी बुद्धि चाहिए। बहुत अच्छी लिखा पढ़ी चलनी चाहिए। हेड्स जो होते हैं उन्हों की पहले छोटी कमेटी होती है फिर बड़ी कान्फ्रेन्स बुलाते हैं। पोप आदि का पहले से सब प्रबन्ध किया जाता है। यह भी कान्फ्रेन्स में बहुत ख्यालात करते हैं। तो ऐसी कान्फ्रेन्स में बड़े बुद्धिवान बच्चे चाहिए जो बड़े-बड़े समझदार हैं, उनको जाकर समझाना चाहिए। पहले तो यह बात निकालो कि हेड कौन है। अब बाबा भी आया हुआ है – इनके पहले तो किसको भी देवी-देवता धर्म का पता ही नहीं था। अभी खुशी होती है कि देवी-देवता धर्म का भी हेड है। जो ज्ञान में परिपक्व हुए हैं वो समझते हैं, अभी हम इन्हों से पूछ सकते हैं कि बताओ – सब धर्मों में ऊंच धर्म कौन सा है? उनको ही हेड बनाना चाहिए। तुम बी.के. हो सबसे हेड, तुम जगत मातायें हो। मर्तबा भी माताओं का है। दिखाते भी हैं – कुमारियों ने बाण मारे हैं – भीष्म पितामह आदि को। इन कुमारियों के आगे सबको आना है। तो यह समझाना पड़ता है कि ऊंच से ऊंच कौन है। फिर समझ जायेंगे कि सर्वव्यापी का ज्ञान झूठा है।

अभी तुम हो युद्ध के मैदान पर। बाप का परिचय देना – तुम्हारे लिए कोई नई बात

नहीं है। अच्छे-अच्छे जो बच्चे हैं उन्हों को नशा चढ़ा हुआ है – यह पार्ट तो अनेक बार हमने बजाया है। अभी यह पुरानी दुनिया खत्म हो जानी है। यह पुराना चोला छोड़ना है फिर नयेसिर आकर पार्ट बजायेंगे। अभी तुम्हारी बुद्धि विशाल बनी है। अभी यह पुराना चोला छोड़ना है फिर 84 जन्म नये-नये चोले लेते हैं। यह बुद्धि में सदैव रहना चाहिए – हर एक पार्टधारी को अपने-अपने पार्ट का तो पता होना चाहिए ना। 84 जन्म ले पार्ट बजाया। अब खेल पूरा होता है। यह चोला भी पूरा होता है। सृष्टि भी तमोप्रधान है, अब हमारी राजधानी स्थापन हो जायेगी फिर विनाश शुरू होगा। हम जाकर विश्व के मालिक बनेंगे – दूसरे जन्म में। यहाँ जो पढ़ते हैं तो उससे इस जन्म में ही मिलता है। तुमको वह फिर याद आया, हम जाकर दैवी जन्म लेंगे फिर क्षत्रिय जन्म लेंगे। यह बुद्धि में टपकना चाहिए, तब खुशी का पारा चढ़ा रहेगा। जो अच्छे पुरुषार्थी होंगे उनकी बुद्धि में ऐसी-ऐसी बातें चलती रहेंगी।

बाबा ने समझाया है – कर्म तो करना ही है। फिर अपने याद के चार्ट को बढ़ाना है। रात का टाइम अच्छा है। इसमें कोई थकावट नहीं होती है। सारा समय उस अवस्था में नहीं रह सकते फिर तूफान आते हैं तो थका भी देते हैं। न चाहते भी तूफान आ जाते हैं। वह थकावट करेंगे। बाकी बाप को याद करते रहेंगे। टापिक आदि निकालते रहेंगे तो उसमें माथा और ही भरपूर हो जायेगा। यह बाबा का अनुभव है। तूफान तो बहुत आयेंगे। जितना रुसतम बनेंगे उतना माया जास्ती पछाड़ेगी। यह एक लॉ है। बाप कहते हैं - माया बड़ी बलवान है क्योंकि उनका राज्य अभी जाना है तो खूब तूफान मचायेगी। उनसे डरना नहीं है। शरीर को कुछ होता है, वह भी कर्मभोग है। इसमें घुटका नहीं खाना है। पिछाड़ी का शरीर है। बाकी थोड़ा समय है, ऐसे करते खुशी में रहते हैं। ड्रामा में इस समय तुम सबसे जास्ती मर्तबे वाले हो क्योंकि परमपिता परमात्मा की गोद ली है। तुम्हारे में भी जो अच्छे पुरुषार्थी हैं उन्हों जैसा सौभाग्यशाली कोई नहीं। यह ईश्वरीय सुख बहुत ऊंच है। तुम समझा सकते हो भारत ही स्वर्ग था, अविनाशी खण्ड है और कोई धर्म नहीं था। वह तो बाद में आये हैं। सूर्यवंशी राजधानी पास्ट हुई तो फिर चन्द्रवंशी हुए। उनकी हिस्ट्री-जॉग्राफी का किसको पता ही नहीं है। अभी तुम्हें पता पड़ा है। वहाँ थोड़ेही कोई भी जानते हैं कि सतयुग के बाद त्रेता होता है तो दो कला कम होने से वह सुख कम हो जाता है। यह ज्ञान सतयुग में हो तो अन्दर ही घुटका खाते रहें। दिल खायेगी क्या हम फिर उतरेंगे। राजाई ही अच्छी नहीं लगेगी। यहाँ भी कोई-कोई कहते हैं हम स्वर्ग के मालिक बनेंगे फिर नीचे उतरना पड़ेगा! परन्तु वहाँ फिर भी राजाई मिलने की खुशी है। अभी तुमको बाबा त्रिकालदर्शी बना रहे हैं। लक्ष्मी-नारायण जो स्वर्ग के मालिक हैं, वह भी त्रिकालदर्शी नहीं हैं। संगम पर ही बाप आकर तीसरा नेत्र ज्ञान का दे त्रिकालदर्शी बनाते हैं। देवताओं को यह सब अंलकार क्यों देते हैं? क्योंकि वह फाइनल में हैं। ब्राह्मण तो गिरते और चढ़ते रहते हैं। उन्हों को अलंकार कैसे दे सकते हैं, शोभते ही नहीं। ड्रामा में कितना वन्डरफुल राज़ है। स्वदर्शन चक्रधारी ब्राह्मण ही हैं। इस ज्ञान से ही तुम देवता बनते हो। इस समय तुम स्वदर्शन चक्रधारी, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी हो। यह तुम्हारा टाइटिल है। यह सब बातें समझने और समझाने की हैं। पहले-पहले बाप का

परिचय देना है। परमपिता परमात्मा से आपका क्या सम्बन्ध है? उनका नाम ही है गॉड फादर। ऐसे थोड़ेही कहेंगे कि गॉड फादर सर्वव्यापी है। वह तो बाप है ना। हम लिखते ही हैं कि परमपिता परमात्मा से आपका क्या सम्बन्ध है? परमपिता कहते हैं तो जरूर पिता ठहरा ना। बाप सर्वव्यापी कैसे होगा! बाप से तो वर्सा मिलना होता है। बाप तो रचयिता है नई दुनिया का। इन लक्ष्मी-नारायण को नई दुनिया का वर्सा मिला हुआ है। वहाँ देवताओं को तीसरे नेत्र की दरकार नहीं रहती है। तीसरा नेत्र जरुर ब्रह्मा द्वारा ही देंगे। त्रिमूर्ति का अर्थ कितना अच्छा है। समझाने की बड़ी रौनक चाहिए। अंगूरी लगानी होती है। वह तो जो अच्छा उस्ताद होगा, उनको प्रैक्टिस होगी। दिन-प्रतिदिन किसको समझाना बहुत सहज होता जायेगा। परमपिता परमात्मा आपका क्या लगता है? कहेंगे बाप लगता है। बाप है नई दुनिया का रचता। सतयुग में देवी-देवताओं का राज्य था। जरूर उन्हों को प्रापर्टी मिली होगी परमपिता परमात्मा से। राजयोग सीख राजाई पाते हैं। हम सब बी.के. हैं। कोई को भी समझाओ – अच्छा तुम कहते हो प्रजापिता ब्रह्मा। तो तुम्हारा पिता हुआ ना। वह (शिव) भी पिता है। तुम भी ब्रह्माकुमार कुमारी हो। हम दादे से वर्सा ले रहे हैं, तुम नहीं ले रहे हो। आकर समझो, पुरुषार्थ करो तो तुमको भी मिल जायेगा। प्रजापिता ब्रह्मा और जगदम्बा दो हैं मुख्य। वर्सा मिलता है – लक्ष्मी-नारायण पद। बच्चों को बहुत प्रकार से समझाते हैं। बड़ी-बड़ी कान्फ्रेन्सेज़ में तुम बच्चे जाओ तब नाम बाला हो। हमारी बात ही ज्ञान की है, दूसरे सबकी बातें हैं भक्ति की। ज्ञान से हमको अथॉरिटी है – कोई से भी पूछने की। परन्तु समझने वाले भी कोई झट समझते नहीं हैं, बखेरे बहुत करते हैं। समझ जायें तो सारी आबरू ही चट हो जाए। लिखा हुआ है कुमारियों ने भीष्म पितामह को जीता है। यह होना है। ड्रामा में यह पार्ट है जरूर। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१- विजय माला में आने के लिए मम्मा बाबा के समान सर्विस करनी है। मुरली धारण कर फिर सुनानी है। चलन बड़ी रॉयल रखनी है।

२- अपनी विशाल बुद्धि से इस बेहद ड्रामा को जान अपार खुशी में रहना है। तूफानों से डरना नहीं है। ज्ञान मंथन से बुद्धि को भरपूर रखना है।

वरदान:- निमित्त पन की स्मृति से हर पेपर में पास होने वाले एवररेडी, नष्टोमोहा भव

एवररेडी का अर्थ ही है – नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप। उस समय कोई भी सम्बन्धी अथवा वस्तु याद न आये। किसी में भी लगाव न हो, सबसे न्यारा और सबका प्यारा। इसका सहज पुरुषार्थ है ''निमित्त भाव।'' निमित्त समझने से ''निमित्त बनाने वाला'' याद आता है। मेरा परिवार है, मेरा काम है—नहीं। मैं निमित्त हूँ। इस निमित्त पन की स्मृति से हर पेपर में पास हो जायेंगे।

स्लोगन:-

ब्रह्मा बाप के संस्कार को अपना संस्कार बनाना ही फालो फादर करना है।

"मीठे बच्चे - एक ईश्वर से सच्ची मुहब्बत रखनी है, इस इन्द्र की दरबार में सपूत बच्चों को ही लाना है, किसी कपूत को नहीं"

प्रश्नः- 21 जन्मों की बड़े से बड़ी लॉटरी लेने के लिए कौन सा पुरुषार्थ करते चलो?
उत्तरः- एक पारलौकिक साजन को याद करने और उसकी श्रीमत पर चलने का पूरा पुरुषार्थ करो। यदि किसी के नाम रूप में बुद्धि लटकी हुई हो तो वहाँ से बुद्धियोग निकालते जाओ। रात में जब फुर्सत मिलती है, प्यार से बाप को याद करो, दैवीगुण धारण करो तो 21 जन्मों की लॉटरी मिल जायेंगी।

गीतः- न वह हमसे जुदा होगे...

ओम् शान्ति। दुःख तो यहाँ ही हैं। बाप आते हैं दुःख से छुड़ाने क्योंकि बच्चों को यह समझाया गया है कि कृष्ण यहाँ नहीं आ सकता। उनकी पुरी में दुःख नहीं होता। दुःख होता ही है - कंसपुरी में। कृष्णपुरी हुई श्रेष्ठाचारी देवताओं की पुरी। हम अभी दैवीगुण धारण करने वाले बने हैं। अगर आसुरी गुण रखते रहेंगे तो दैवी सम्प्रदाय में अच्छा पद नहीं मिलेगा। अभी पद नहीं मिला तो कल्प-कल्पान्तर नहीं मिलेगा। बड़ा घाटा है। वह घाटा-फायदा तो एक जन्म के लिए होता है। यह तो जन्म-जन्मान्तर की बात है। अच्छे बुरे कर्म होते हैं ना। सतयुग में सिर्फ अच्छे कर्म होते हैं। बुरे कर्म कराने वाला रावण वहाँ होता नहीं। यहाँ जो जैसा कर्म करेगा, 21 जन्म के लिए उनको फल पाना है। या तो चलना है श्रीमत पर या तो चलना है आसुरी मत पर। बुरा काम किया गोया आसुरी मत पर चला, झट मालूम पड़ जाता है। बाबा से प्यार तो पूरा चाहिए ना। ईश्वर से प्यार नहीं तो गोया असुरों से प्यार है। यहाँ तुमको ईश्वर का प्यार मिला है। कहते हो ईश्वर बाबा! प्रतिज्ञा करते हैं - हम एक तुम से ही मुहब्बत रखेंगे। फिर कोई से मुहब्बत रखी तो जैसे असुरों से रखी। फिर खुद भी असुर बन जायेंगे। एक कहानी भी बताते हैं ना - इन्द्र की दरबार थी, उसमें कोई परी विकारी को साथ ले आई। वह सपूत बच्चा नहीं था, कपूत विकारी था तो दोनों को नीचे फेंक दिया. ज्ञान पूरा न होने के कारण ऐसे ऐसे को ले आते हैं, जो पवित्र नहीं रह सकते हैं। तो जो बी.के. उनको ले आते हैं वो भी श्रापित हो जाते हैं। वह तो श्रापित है ही। यह ईश्वर की ज्ञान इन्द्र सभा है। ज्ञान वर्षा बरसाने वाला एक ही बाप है। तो यहाँ बहुत समझ कर किसको ले आना चाहिए, नहीं तो ले आने वाले भी श्रापित हो जाते हैं। तुम रूहानी पण्डे हो, तुम ले आते हो सुप्रीम रूह के पास तो बहुत खबरदारी से ले आना चाहिए। यूँ तो मिलने के लिए बहुत आते हैं, कइयों से मिलना भी पड़ता है परन्तु वह भी दिन आयेगा जो कितना भी बड़ा आदमी पवित्र नहीं होगा तो सामने आ न सके। अभी ऐसे करें तो मुश्किल हो जाए। मंजिल बहुत ऊंची है, इतने जो भी आश्रम व सतसंग हैं कहाँ भी एम आब्जेक्ट नहीं कुछ भी जानते नहीं

कि इनसे हमको लाभ क्या होगा। यहाँ तो बड़े अक्षरों में एम आब्जेक्ट लिखी जाती है। मनुष्य से देवता बनना है। सिक्ख लोग गाते हैं मनुष्य से देवता किये... देवता होते हैं सतयुग में। तो जरूर मनुष्य को देवता बनाने वाला भगवान होगा। भगवान क्या बनाते हैं? भगवान और भगवती। परन्तु हम देवी-देवता कहते हैं, क्योंकि भगवान एक है। (a) (a) ब्रह्मा, विष्णु, शंकर भी सूक्ष्मवतन वासी हैं। लक्ष्मी-नारायण भी दैवी गुण वाले मनुष्य हैं। दैवी गुण वाले फिर आसुरी गुणों में जरूर आते हैं। अब ब्रह्मा द्वारा स्थापना हो रही है। बाबा कहते हैं मैं पतित दुनिया और पतित शरीर में आता हूँ। यह पूरे 84 जन्म लेते हैं, अपनी डिनायस्टी सहित। पतितों को पावन बनाने वाला वह है, कृष्ण कैसे पतितों को पावन बनायेगा। कृष्ण उस नाम रूप से एक ही बार आयेगा। उनका वह चित्र फिर पाच हजार वर्ष बाद मिलेगा। बाकी जन्म तो भिन्न-भिन्न होते हैं। यही (b) (b) लक्ष्मी-नारायण जो अब जगत-अम्बा, जगत-पिता हैं, इनको पता पड़ता है कि हम दूसरे जन्म में यह बनेंगे। फीचर्स जो अभी हैं वह बदल जायेंगे। तुम अभी वतन में जाकर देख सकते हो। तो सतयुग में लक्ष्मी-नारायण के कौन से फीचर्स होंगे। तुम इस समय साक्षात्कार कर सकते हो। यह वन्डर है और किसको साक्षात्कार नहीं होता। तुम इस एक का एक्यूरेट देख सकते हो। परन्तु वह फोटो यहाँ तो निकल न सके। यह फोटो तो यहाँ ही बनाये हैं। तुम जानते हो भविष्य में यह बनेंगे। गुरू नानक का एक्यूरेट चित्र जो था वह 5 हजार वर्ष बाद होगा। यह बातें तुम ही जानते हो। ऐसे बाप के साथ योग बड़ा अच्छा चाहिए और अव्यभिचारी योग चाहिए। कोई के नाम रूप से प्रीत लगी तो व्यभिचारी हो गये। शिवबाबा की भक्ति शुरू होती है तो पहले उनको अव्यभिचारी भक्ति कही जाती है। शिव को ही पूजते हैं। अभी फिर एक शिवबाबा की ही याद रहनी चाहिए। बाप कहते हैं ऐसा न हो कि अन्त में तुम्हारा बुद्धियोग व्यभिचारी हो जाए। कहाँ भी नाम रूप में फंसे हुए हो तो बुद्धि को निकालते जाओ। माया ऐसी है जो कब कहाँ, कब कहाँ धक्का खिलायेगी। कभी मित्र-सम्बन्धी याद आयेंगे। फट से योग लग जाए, यह हो नहीं सकता। बाबा कहते हैं अभी तो कोई कम्पलीट नहीं बने हैं। यह बहुत बड़े ते बड़ी 21 जन्मों की लॉटरी है, इसमें पुरूषार्थ बहुत अच्छा चाहिए। माया बड़ी प्रबल है, झट भुला देती है। यह भी ड्रामा में नूंध है इसलिए याद करने का पुरुषार्थ रात में करो। दिन में तो फुर्सत नहीं मिलती है, रात में पारलौकिक साजन को याद करो। श्रीमत पर चलने से श्रेष्ठ बनेंगे। अब जो श्रेष्टाचारी कृष्ण है, उनको गीता का भगवान कह दिया और श्रेष्ठ बनाने वाले को गुम कर दिया है। कृष्ण के गुण और परमपिता परमात्मा के गुण वर्णन जरूर करने चाहिए। तो सर्वव्यापी की बात उड़ जाये। यह है संगम युग, इनको सुहावना कल्याणकारी युग कहा जाता है। सतयुग को वा कलियुग को आस्पीसियस नहीं कहेंगे। आस्पीसियस उनको कहा जाता है, जो कल्याणकारी है। सतयुग तो है ही कल्याणकारी, उनके आगे अकल्याणकारी युग था। तो महिमा सारी संगमयुग की है जबकि शिवबाबा का अवतरण होता है। बाबा (c) कहते हैं मैं कल्प के संगमयुग पर आता हूँ। कल्प पूरा होता है फिर नया शुरू होता (c)

है। पुराने कल्प में कलियुग और नये कल्प में सतयुग। यह है कल्प का संगमयुग। उन्होंने फिर युगे-युगे कह दिया है। अच्छा सतयुग और त्रेता का संगम, त्रेता और द्वापर का संगम, द्वापर और कलियुग का संगम.. फिर कलियुग और सतयुग का संगम तो चार संगम हो गये। तो अवतार भी चार चाहिए। फिर 24 अवतार क्यों कहते हैं? यह सब बातें धारण करने की हैं।

बाबा ने बड़ा सहज रीति से लिखवाया है कि परमपिता परमात्मा से आपका क्या सम्बन्ध है? परमपिता कहते हैं तो जरूर दो बाप हैं। प्रदर्शनी में सब समझाते बहुत हैं परन्तु इतना कोई समझते नहीं हैं। एक को भी निश्चय नहीं होता। भल आयेंगे, मुरली सुनेंगे परन्तु वह हमारा बाबा है, उनसे वर्सा लेना है, श्रीमत पर चलना है। यह बात बुद्धि में नहीं बैठती है। हजारों आये परन्तु एक को भी निश्चय नहीं है कि वह हमारा पिता है, उनकी मत पर चलना है। पहले तो माँ बाप का मुखड़ा देखना चाहिए। परन्तु निश्चय नहीं, माया बड़ी प्रबल है। इस प्रबल माया से छुड़ाने में बड़ी मेहनत लगती है। बाप कहते हैं सतगुरू का निंदक ठौर न पाये। अगर बदचलन होगी तो ठौर नहीं पायेंगे। यहाँ तो एम आब्जेक्ट क्लीयर है। आधाकल्प भक्ति मार्ग चलता है। वह है उतरती कला। गाते हैं गुरू का नाम लेने से चढ़ती कला होती है। परन्तु गुरू कौन सा? सतगुरू। तुम सतगुरू को जानते हो वह है शिवबाबा, सत बाबा, सत टीचर, सतगुरू। शिवबाबा को याद करने से चढ़ती कला हो जाती है। 16 कला बन जाते हैं। फिर 16 कला से उतरना है। मनुष्य कहेंगे हम तो इनसे छूटना चाहते हैं। परन्तु छूटना तो होता नहीं। चढ़ती कला, उतरती कला फिर चढ़ती कला, सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो फिर तमो से सतो... यह चक्र लगाना है। इस चक्र में हरेक को आना है। तुम पूरे चक्र में आते हो, वह थोड़े चक्र में आते हैं। सतो, रजो, तमो तो होना ही है। बचपन को सतोप्रधान कहा जाता है फिर थोड़ा बड़ा होता है तो सतो, जवान को रजो, बूढ़े को तमो कहेंगे। हर एक के सुख - दुःख का पार्ट नूंधा हुआ है। यह नाटक बड़ा वन्डर फुल है, जिसको कोई भी जानते नहीं। रॉयल घर के बच्चों की चलन बहुत अच्छी होती है। यहाँ तो श्रीमत पर चलना है। सभी एकरस तो चल न सकें। बाबा समझाते हैं दास-दासी बनें, फिर थर्ड क्लास राजा-रानी बनना, इससे तो प्रजा में साहूकार बनना अच्छा है। दान-पुण्य कर साहूकार बन जाएं। दास-दासी का नाम तो न पड़े। भल वह दास दासी बन राजाई में जाते हैं परन्तु उनसे वह सुखी जास्ती हैं। वह नाम दास-दासी नहीं पड़ता, प्रजा में बहुत साहूकार बनेंगे। यहाँ रहकर अगर श्रीमत पर नहीं चले तो दास-दासी बन पड़ते। यहाँ रहकर कोई कुकर्म करते हैं तो दासी के भी दासी बन पड़ते हैं। कोई तो अच्छी दासी होती है, कोई रिस्पेक्टलेस होती है। तो पुरुषार्थ बहुत अच्छा करना चाहिए। इसलिए बाबा लिखते हैं बच्चों का सर्टिफिकेट भेज दो। कई हैं जो अपने को मियां मिट्ठू समझ बैठ जाते हैं। फिर रिपोर्ट कौन करे जो सावधानी मिले। बाबा का काम है समझाना, एम आब्जेक्ट तो पूरा है,

जो चाहे पुरुषार्थ कर लो, विजय माला में पिरो कर दिखाओ। आठ की भी माला है। 108 की भी माला है, 16108 की भी माला है। वाइसलेस वर्ल्ड के राजा-रानी थोड़े ही होते हैं। पीछे बहुत हो जाते हैं, यहाँ भारत के सबसे जास्ती होंगे। कितने गांव हैं, कितने राजा-रानी फिर उन्हों के कितने प्रिन्स-प्रिन्सेज, कितने ढेर हैं। बड़ी लिस्ट निकालते हैं। महाराजा, रांजा फिर उनके कुटुम्ब वाले। डायरेक्टरी में मुख्य नाम डालते हैं। वहाँ तो एक-एक बच्चा होता है। बड़ा लम्बा चौड़ा हिसाब है। फिर भी बाप कहते हैं बेहद के बाप को याद करो जिससे वर्सा पाना है। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है, यह है पवित्र प्रवृत्ति मार्ग कोई मनुष्य ईश्वर को न जानने के कारण स्वयं को ही (e) ईश्वर समझ बैठे हैं। जन्ममरण में आते रहते हैं। अकाले मृत्यु भी होती रहती है और ईश्वर भी कहलाते रहते हैं। तुम जानते हो देवताएं कभी अकाले नहीं मरते हैं। जब टाइम पूरा होता है तब साक्षात्कार होता है। अब पुराना शरीर छोड़ नया लेना है, बहुत समझने की बातें हैं। बस एक बाबा को ही याद करना है और कोई के नाम रूप में धक्के नही खाने हैं, नहीं तो गिर पड़ेंगे। बाबा को तो अनेक प्रकार से उठाना पड़ता है। इसमें तो शिवबाबा की पधरामणी है, इनसे रीस नहीं करना है। माया तूफान बहुत लाती है, हनुमान मिसल पक्का बनना है, जो माया रावण हिला न सके। आदि देव को महावीर हनुमान भी कहते हैं। नाम रख दिये हैं। बच्चों में कोई महारथी भी हैं। बात प्रैक्टिकल में यहाँ की है। (f) जिसको ज्ञान की मालिस नहीं होती है वह जैसे मुरझाये हुए दिखाई देते हैं। ज्ञान की मालिस से लक्ष्मी-नारायण को देखो कितने रमणीक हैं। (f)

अच्छा — मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

१. अपनी एम आब्जेक्ट को सामने रख ऊंच पद पाने का पुरुषार्थ करना है, चलन बहुत रॉयल रखनी है और श्रीमत पर चलते रहना है।

२. किसी भी देहधारी के नाम रूप को याद नहीं करना है। एक बाप की अव्यभिचारी याद में रहने का पुरुषार्थ करना है।

वरदान:- सर्व प्राप्तियों को सामने रख श्रेष्ठ शान में रहने वाले मास्टर सर्वशक्तिमान् भव

हम सर्व श्रेष्ठ आत्मायें हैं, ऊंचे ते ऊंचे भगवान के बच्चे हैं—यह शान सर्वश्रेष्ठ शान है, जो इस श्रेष्ठ शान की सीट पर रहते हैं वह कभी भी परेशान नहीं हो सकते। देवताई शान से भी ऊंचा ये ब्राह्मणों का शान है। सर्व प्राप्तियों की लिस्ट सामने रखो तो अपना श्रेष्ठ शान सदा स्मृति में रहेगा और यही गीत गाते रहेंगे कि पाना था वो पा लिया... सर्व प्राप्तियों की स्मृति से मास्टर सर्वशक्तिमान् की स्थिति सहज बन जायेगी।

स्लोगन:-

योगी और पवित्र जीवन ही सर्व प्राप्तियों का आधार है।

a) ब्रह्मा बाबा 18 जनवरी 1969 में हार्ट फेल होकर के-
शरीर छोड़े थे।

(67)

एक अनोखा अनुभव



Auto-biography

of

Dada Vishwa Ratan

चैप्टर 6

मातेश्वरी जी का देह-त्याग

24 जून 1965 में प्यारी मम्मा ने अपनी पुरानी देह का त्याग किया और उसके बाद 12 फरवरी 1968 को बम्बई में भाऊ विश्वकिशोर ने देह का त्याग किया और उनका अन्तिम संस्कार वहाँ बम्बई में हुआ।

बाबा अव्यक्त हुए

18 जनवरी 1969 को प्यारे ब्रह्मा बाबा सवेरे क्लास में नहीं आये। वैसे तो रोज़ सवेरे क्लास में आकर स्वयं ही मुरली सुनाते थे लेकिन उस दिन थोड़ी तबियत ठीक न होने के कारण क्लास में नहीं आये। रोज़ शाम को भी रात्रि क्लास में आते थे। उस दिन दादी कुमारका (दादी प्रकाशमणी) भी मधुबन में थी। वैसे दादी जी गॉमदेवी बम्बई में रहती थीं। लेकिन कुछ दिन पहले बाबा से मिलने के लिए आई थी। बड़ी दीदी (दीदी मनमोहिनी जी) कुछ दिन पहले कानपुर, इलाहाबाद आदि की तरफ सर्विस पर गई हुई थी। दादी प्रकाशमणी को 16-17 जनवरी को ही बम्बई जाना था परन्तु बाबा ने उनको रोका और कहा 2-4 दिन ठहर कर जाना। 18 जनवरी को जैसे ही बाबा तैयार होकर रात्रि क्लास में जाने लगे, तो दादी जी ने बाबा को कहा कि बाबा, आज आपकी तबियत ठीक नहीं है इसलिए आज आप आराम करो, हम क्लास करा लेंगे। बाबा ने कहा "नहीं बच्ची, मैं सवेरे भी क्लास में नहीं गया और अगर अभी भी नहीं जाऊंगा तो बच्चों को बहुत चिन्ता होगी और सोचते रहेंगे बाबा को क्या हुआ है! इसलिए मैं क्लास में चलता हूँ।" बाबा ने आधा घण्टा बहुत अच्छी मुरली चलाई और फिर अन्त में याद-प्यार नमस्ते कहने के बाद कहा "अच्छा अब छुट्टी।" ये "छुट्टी" पहले बाबा कभी नहीं कहते थे। उस दिन ये "छुट्टी" अक्षर बोल कर क्लास के बाहर आया। उस समय लगभग रात्रि के नौ बजे थे। मैं भी

क्लास से उठकर बाहर आया। बाबा ने मुझे देखकर कहा "बच्चू, डाक्टर को बुलाओ और मुझे चेक कर के जाये।" मैंने उसी समय जमुनाप्रसाद भाई को साइकिल पर भेजा (उन दिनों हमारे पास एक भी कार नहीं थी) और उसको कहा कि जल्दी ही अभी-अभी डाक्टर को यहाँ ले आओ, बाबा को चेक करके जाये। जमुनाप्रसाद भाई उसी समय साइकिल पर गया और डाक्टर को चलने के लिए कहा। उन दिनों में डाक्टर अरोड़ा सिविल हास्पिटल में था। वे घर में ही थे। डाक्टर ने कहा हाँ, बस सिर्फ चाय पीकर चलता हूँ। इधर बाबा आकर अपने पलंग पर लेट गया। बाबा के कमरे में दादी प्रकाशमणि और अन्य थोड़ी बहनें और मैं खड़े थे। मैं बाबा को देखता रहा था। मैंने देखा कि बाबा अपना एक हाथ हार्ट पर रखकर कभी लेट जाता था और कभी बैठ जाता था। मैंने ऐसे अनुभव किया कि बाबा को बहुत दर्द है और रेस्टलेस फील कर रहा है। मैं जल्दी-जल्दी कमरे से बाहर आया कि जमुनाप्रसाद को फोन करूँ कि जल्दी डाक्टर को ले आओ। मैंने हास्पिटल में फोन किया परन्तु वहाँ किसी ने फोन नहीं उठाया। उस समय डाक्टर के घर में फोन नहीं था। फिर मैंने सरदार नेवन्द सिंह की दुकान पर फोन किया, जो हास्पिटल के सामने ही थी। वहाँ सरदार जी का बच्चा दयाल सिंह बैठा था, उसको कहा कि आप जाकर जल्दी ही डाक्टर को भेजो, बाबा को अधिक तकलीफ है। वह तुरन्त ही डाक्टर के पास गया। उस समय डाक्टर चाय पी चुके थे और तुरन्त अपने स्कूटर पर यहाँ आया। मैं इसके बीच ही कोरामिन की इन्जेक्शन निकाल कर रखी और सिरिन्ज भी उबाल कर रखी थी। मैंने सोचा कि शायद डाक्टर को इस इन्जेक्शन की आवश्यकता हो। फिर आकर बाहर गेट पर खड़ा था, उसी समय डाक्टर भी आ गया। मैंने डाक्टर को कहा आप जल्दी ही अन्दर चलिये, बाबा को बहुत दर्द हो रहा है। डाक्टर अन्दर आया, कमरे में अन्दर आते ही बाबा की तकलीफ को देखकर डाक्टर डर गया। डाक्टर

सवेरे भी बाबा को चेक करके गया था, उस समय ऐसा कुछ नहीं था। लेकिन इतने में बाबा की ऐसी हालत देखकर हैरान हो गया। मैं भी डॉक्टर के साथ ही था तो क्या देखा कि बाबा का बाया हाथ अपने हार्ट पर है और दायां हाथ दादी प्रकाशमणी के हाथों में है, आँखें बन्द हैं। दादी किशनी (दादी प्रकाशमणि की बहन, जो पटना में रहती है) बाबा के पलंग पर पीछे से बैठकर बाबा को पकड़कर बैठी है क्योंकि लेटे हुए बाबा को अधिक दर्द होता था। ऐसा दृश्य देखकर डाक्टर ने तुरन्त मेरे से कोरामिन इन्जेक्शन लेकर बाबा को इन्जेक्शन लगाई। लेकिन इतने में बाबा तो पहले से ही देह का त्याग कर ऊपर सूक्ष्म वतन में चला गया। फिर तो बाबा को पलंग पर लिटा दिया। डाक्टर को भी बड़ा दुख हो रहा था कि मैंने आने में देरी की। अगर थोड़ा जल्दी आ जाता तो ऐसा नहीं होता। तो "सॉरी" बोल कर चला गया। डाक्टर अरोड़ा के पहले इस हॉस्पिटल में लेडी डाक्टर थी, जिसने रिटायर होकर अपनी प्राइवेट हास्पिटल खोली थी। फिर उस लेडी डाक्टर को बुलाया गया, जिससे वह भी आकर चेक करे कि सचमुच बाबा ने देह का त्याग किया है या स्वांस कहीं रुका हुआ है। वह भी आई और उसने भी कन्फर्म किया कि बाबा ने शरीर छोड़ दिया है।

फिर तो सारे बंगले में ये सूचना फैल गई और सभी के चेहरे और दिलों में दुख की लहर आने लगी। बाबा नौ बजे क्लास के बाहर आये और साढ़े नौ बजे शरीर छोड़ दिया। आधा घण्टे में ही बाबा जैसे आँख मिचौली का खेल करके सभी बच्चों से न्यारा होकर वतन में चले गये। सभी कहते थे कि बाबा तो बिल्कुल ठीक था, मुरली भी अच्छी चलाई, फिर इतने में क्या हो गया? ऐसे किसी के ख्याल में भी नहीं था कि बाबा ऐसे ही इतने में चले जायेंगे। लेकिन बाबा तो डाक्टर के आने तक भी नहीं रुका। पहले ही न्यारा हो गया।

फिर तो दादी प्रकाशमणि जी सभी सेन्टर्स पर ये सूचना देने के लिए

उनसे प्यार गया तो खेल खलास, बाप से वर्सा कैसे पायेंगे। तुम्हारी लड़ाई पुराने दुश्मन से है। कोई को मालूम नहीं है कि रावण से भी कोई युद्ध होती है। कहते हैं सच की नांव डोलेगी लेकिन डूबेगी नहीं। तो हिलती कितनी है। दूसरे सतसंगों में तो हिलने की बात ही नहीं है। यहाँ तो माया से युद्ध है। जब तक बाप को नहीं समझा है तब तक भल लिखकर दें, परन्तु तोता कण्ठी वाला नहीं बना है। जंगली तोता आया और गया। अल्फ को समझना है। ऐसे प्रजा तो ढेर है, बाकी राजाई के लिए कोई खड़ा नहीं होता है। बत्ती पर फिदा हो जाए सो बड़ा मुश्किल होता है।

अच्छा - मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

१- आपस में बहुत प्यार से रहना है, मिलकर राय निकालनी है कि किस युक्ति से हर एक तक बाप का सन्देश पहुंचायें।

२- यह विनाश का समय है इसलिए एक बाप से सच्ची प्रीत रखनी है। योग से आत्मा को पावन बनाना है।

(प्यारे साकार बापदादा ने अव्यक्त होने के पूरा एक मास पहले, रात्रि क्लास में शरीर छोड़ने की सहज विधि और कर्मातीत स्थिति की निशानियां सुनाई हैं, वह 17 दिसम्बर 1968 का रात्रि क्लास भेज रहे हैं)

तुम बच्चों को बाप का डायरेक्शन मिला हुआ है कि बच्चे बाप को याद करो। बच्चे कहते हैं बाबा फुर्सत नहीं मिलती है। अब फुर्सत कहाँ चली जाती है? जरूर माया तुम्हारा समय ले लेती है। माया भी जबरदस्त तीखी है, जो तुमको बाप को याद करने की फुर्सत नहीं देती, तब तो कहते हो बाबा सारे दिन में आधा घण्टा, 20 मिनट याद में रहे, कोई मुश्किल ही सारे दिन में दो घण्टा बाप को याद करते होंगे। जो समझते हैं हम 2 घण्टा याद करते हैं, वह हाथ उठाओ। वह स्थूल याद, पुरानी याद तो चलती आती है। यह तो है इनकारपोरियल, इनको अपना ऑख, कान तो है नहीं। बच्चों को कहते हैं मामेकम् याद करो। अपने को आत्मा समझो। तो बाबा पूछ रहे हैं कि कितना घण्टा याद में रहते हो? बच्चे खेलने जाते हैं तो टीचर को याद करते हैं। घर में पढ़ते हैं तो भी टीचर याद रहता है। तो वह है स्थूल याद। इसमें है थोड़ी डिफीकल्टी, तो बाबा पूछते हैं कि अपने को आत्मा समझ बाप को 2 घण्टा जो याद कर सकते हैं, वह हाथ उठाओ। लज्जा नहीं करो, एक्यूरेट बताओ।

तुम यहाँ बैठते हो, बाबा मुरली चलाते हैं तो बुद्धि दूसरे तरफ चली जाती है ना! इतना बुद्धि में धारण भी नहीं होता है। जैसे यहाँ सुबह में एक घण्टा बाबा समझाते हैं, तो क्या वह एक घण्टा बाबा को याद करते हो या बुद्धि बाहर में चली जाती है? बरोबर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बुद्धि कहाँ न कहाँ चली जाती है। सारा नहीं सुनते हैं। अगर सारा बैठ करके सुनें और नोट करते रहें तो बाबा कहेगा हाँ, इनका योग ठीक है। तो सुनते समय अटेन्शन देना है और प्वाइन्ट्स पूरा लिखना है। अगर लिंक टूटेगी तो प्वाइन्ट भूल जायेगी।

बाप समझाते हैं बच्चे, हार्ट फेल का मौत बहुत मीठा मौत है। इसमें तेरा मेरा फेरा कुछ भी नहीं है। बैठे-बैठे यह गिरा, बेहोश हुआ, खलास। बस। फिर होश में आये ही नहीं। यह बहुत

अच्छा मौत है। बाकी मनुष्य तो रोते पीटते हैं और तुम तो खुश होंगे अरे वाह! इनका मौत बड़ा सहज हुआ, इनको कोई दु:ख नहीं हुआ। अगर मौत हो तो ऐसा हो, नहीं तो दवा, नर्स, यह वह बहुत होते हैं ना। इसलिए जो बैठे-बैठे अपनी इस पुरानी जुत्ती को छोड़ दे, कर्मातीत अवस्था हो, ऐसे ही शरीर छोड़े, तो वो सबसे अच्छा है। तुम आगे चल करके देखेंगे, अनायास बाम्बस छूटेंगे और सब बैठे-बैठे चले जायेंगे। चेहरा भी हर्षित होगा। जैसे कभी-कभी अच्छे मौत होते हैं तो देखने वाले कहते हैं कि यह तो जैसे जागता है, यह तो हर्षित है, ऐसे तो कोई कह नहीं सकेंगे कि यह मर गया है। आत्मा हर्षित होके जाती है ना, तो आत्मा में अगर हर्षितपना होगा तो चेहरे पर बाहर से दिखाई तो पड़ेगा ना! आत्मा कोई खत्म तो नहीं होती हैं, आत्मा शरीर छोड़ती है। तो बड़ी खुशी से यह शरीर हंसते हुए छोड़ देगी, इसको कहा जाता है – कर्मातीत अवस्था। वही इतना ऊंच गाये जाते हैं। तुम बच्चों को ऐसे ही जाना है, शरीर की कोई परवाह ही नहीं है, और दूसरी कोई चीज याद नहीं आवे, इसको कहेंगे सबसे मीठा, ऑपेही शरीर छोड़ना। इसलिए सर्प का मिसाल भी देते हैं। सतयुग में ऐसे होता है जो खुशी से शरीर छोड़ते हैं। तो प्रैक्टिस यहाँ से होगी, पीछे वह प्रैक्टिस चलती रहेगी।

तुम बच्चे बाप को कितना प्यार से याद करते हो। अंग्रेजी में कहा जाता है मोस्ट बिलवेड, परम प्रिय, बहुत मीठा। लोगों को तो परमप्रिय, मोस्ट बिलवेड कह नहीं सकते। बाप कहते हैं बच्चे मैं तुम्हारा बाप भी हूँ, टीचर भी हूँ, गुरु भी हूँ। तुम कभी टीचर को भूलो तो बाप को याद कर सकते हो। बाबा गाइड है, गाइड को पण्डा भी कहा जाता है। वह दु:ख से लिबरेट करने वाला, शान्तिधाम में ले जाने वाला है, उसके पीछे है सुखधाम। तो तुमको यह ज्ञान घास मिलता है फिर इसको विचार सागर मंथन करते रहो। जैसे गाय का मुख चलता रहता है। तुम्हारा मुख तो चलने की दरकार नहीं है, बाकी अन्दर में सबकुछ याद करना है। जैसे तुम हो, ऐसे हम हैं। हमको तो और भी कम घण्टे मिलते हैं, क्योंकि हमारा बुद्धियोग बाहर में बहुत जाता है, कभी कोई की चिट्ठी आई, फलाने की खिटपिट है, यह है, वह है.. तो सारा दिन उस तरफ बुद्धि जाती है। परन्तु शायद बच्चों से जास्ती बाबा को सहज है क्योंकि बगल में (साथ में) रहता है। जब बाबा भोजन खाने के लिए बैठते हैं तो सोचते हैं, अच्छा मैं बाबा को याद करता हूँ, 2-3 मिनट याद रहती है फिर भूल जाता हूँ। याद हवा मुआफिक उड़ जाती है, बच्चे ट्राय करके देखो। सहज होते भी याद में टाइम तो लगता है ना। अच्छा।

मीठे-मीठे सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का दिल व जान, सिक व प्रेम से यादप्यार और गुडनाइट। मीठे मीठे सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप की नमस्ते।

वरदान:- अपने आक्यूपेशन की स्मृति से सेवा का फल और बल प्राप्त करने वाले विश्व कल्याणकारी भव

कोई भी काम करते अपना आक्यूपेशन कभी नहीं भूलो। जैसे पाण्डवों ने गुप्त वेष में नौकरी की लेकिन नशा विजय का था। ऐसे आप भल गवर्मेन्ट सर्वन्ट हो, नौकरी करते हो लेकिन नशा रहे मैं विश्व कल्याणकारी हूँ तो इस स्मृति से स्वत: समर्थ रहेंगे और सदा सेवा भाव होने के कारण सेवा का फल और बल मिलता रहेगा। गाया हुआ है भावना का फल मिलता है तो आपकी सेवा-भावना अनेक आत्माओं को शान्ति, शक्ति का फल देगी।

स्लोगन:-

(a) 1936 में दादा लेखराज की उम्र 50 साल थी (६८)

ज्ञानामृत पुस्तक - 1986

ज्ञानामृत फरवरी 1986 (६८) 2 फरवरी-86

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय
(१९३६-८६)

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय वर्ष १९८६-८७ को 'स्वर्णिम जयन्ती वर्ष' के रूप में मना रहा है। इस शुभ अवसर पर इस महान् संस्था की उपलब्धियों और महत्वपूर्ण कार्यों का अवलोकन और लेखा-जोखा करना यथार्थ होगा। साथ ही इसके प्रगति के मार्ग में पिछले ५० वर्षों में जो बाधाएँ आई हैं तथा जिनका यह संस्था सफलतापूर्वक सामना करते हुए निरन्तर प्रगति की ओर बढ़ती रही है उन पर भी विचार करना आवश्यक हो जाता है। यह एक ऐसा अवसर है जबकि यह संस्था जन-जन की आध्यात्मिक जागृति के लिये तथा विश्व में स्थाई सुख-शान्ति की स्थापना के कार्य में तीव्रगति लाने के लिये अनेकानेक कार्यक्रम बनायेगी और भविष्य में भी इस संघर्ष-ग्रस्त विश्व में पवित्रता, शान्ति, प्रेम, न्याय, एकता आदि मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिये उत्साह-पूर्वक कार्य करती रहेगी।

इसकी प्रगति के ६ चरण

इन ५० वर्षों में इस संस्था ने जो महान् प्रगति की है उन्हें ६ प्रमुख भागों में बाँटा जा सकता है।

प्रथम चरण एक पारिवारिक (घरेलू) आध्यात्मिक सत्संग (१९३६—३७)

यह संस्था आरम्भ में एक छोटे से सत्संग के रूप में शुरू हुई जो कि दादा लेखराज के घर पर होता था। दादा हीरे-जवाहरात के एक प्रसिद्ध व्यापारी थे। वे अपनी ईमानदारी और श्रेष्ठ व्यवहार के कारण देशी-विदेशी अनेक राज-घरानों में आते-जाते रहते थे। विशेष तौर से उनका नेपाल और उदयपुर के राजघरानों से घनिष्ठ सम्बन्ध था। दादा श्री नारायण के भी परम भक्त थे। बचपन से ही वे उदारचित्त और महादानी थे। जैसे वे बड़े होते गये उनकी रुचि श्रीमद्भगवत गीता और अन्य धार्मिक ग्रंथों में बढ़ती गई। वे अपने व्यवहारिक जीवन में धार्मिक शिक्षाओं को धारण करते हुए सात्विक भोजन का सेवन करते थे तथा आध्यात्मिक उन्नति पर विशेष ध्यान रखते थे। इन सभी नियमों का पालन करने से वे अन्तर्मुखी होते गये और स्वयं का आत्म-निरीक्षण करने लगे।

(आखिरकार वह समय भी आ गया जब उन्हें सत्यता का बोध हुआ। उन्हें सन् १९३६ में, जबकि उनकी ५० वर्ष की आयु थी, अनेक दिव्य साक्षात्कार हुए जिनमें उन्होंने देखा कि इस शताब्दी के अन्त तक स्वर्णिम युग की स्थापना होगी तथा इससे पहले इस तमोप्रधान कलियुगी सृष्टि का 'महाविनाश' होगा। दूसरे, वर्तमान समाज का समस्त ढाँचा ध्वस्त हो जाएगा जो कि अब पूरी तरीके से खोखला भ्रष्टाचारी बन गया है और इसकी जड़ों में दीमक लग चुकी है और अब इसका खड़ा रहना असम्भव हो गया है। दादा ने परमात्मा की 'दिव्य ज्योति' भी देखी और अन्तर्मन से ऐसे आभास हुआ कि जिस दिव्य ज्योति का साक्षात्कार हुआ है वह आनन्द के सागर 'ज्योति बिन्दु परमात्मा शिव हैं।' उन्हें अन्य भी अनेक साक्षात्कार हुए। वास्तव में उनके जीवन में मोड़ लाने वाली यह एक बहुत महत्वपूर्ण घटना थी। इनसे दादा के जीवन में महान् आध्यात्मिक परिवर्तन आया और उनके सम्पर्क या संबंध में आने वाले व्यक्तियों पर भी बहुत प्रभाव पड़ा क्योंकि उन्हें दादा के चेहरे पर ओज, आँखों में चमक और मस्तक पर पवित्रता का दिव्य प्रभा मण्डल स्पष्ट नजर आता था।

(६८)

M. सेवाकेन्द्र के बारे में

एक में तीन

ज्ञानामृत "थ्री-इन-वन" (Three-in-one) २६ अंक

□ बी.के. निर्मल शान्ता, कलकत्ता ६ जनवरी ९१

इस जगत् में एक ही माध्यम में लौकिक पिता (दादा लेखराज), अलौकिक पिता (ब्रह्मा बाबा) और पारलौकिक पिता (निराकार परमात्मा शिव) को पाने का परम सौभाग्य दादी निर्मल शान्ता जी को मिला है। आपको अति समीपता से भगवान की लीलाएं भी साकार ब्रह्मा द्वारा देखने को मिलीं। आपको ब्रह्मा बाप से रूप और अनेक दिव्य गुण विरासत में मिले हैं जिससे आप एकदम ब्रह्मा बाबा की फोटोस्टेट कॉपी लगती हैं। दादी जी के व्यक्तित्व में एक अवर्णनीय मनमोहकता और व्यवहार में विशेष मधुरता और मृदुता है। आपका हृदय एकदम निर्मल और शान्त है। आप वर्तमान समय इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के जो पूर्व भारत में सेवाकेंद्र हैं, उनका संचालन करती हैं। तो दादी जी के दिव्य अनुभव पाठकों के लाभार्थ उन्हीं के भावों में यहां प्रस्तुत हैं–

सम्पादक



मेरा लौकिक जन्म सन् १९१७ में सिंध के कृपलानी कुल में दादा, लेखराज जी के यहां हुआ था। मेरे लौकिक पिता एक प्रसिद्ध जौहरी थे, उन्हें हीरे-जवाहरों की अचूक परख थी। उनका भक्ति-भाव इतना परिपक्व था कि व्यापार या घर की कैसी भी परिस्थिति हो, वे एक दिन भी भक्ति और पाठ के नित्य-नियम से नहीं चूकते थे। पिताजी को एक बड़ी बहन थी, उसे कोई बच्चा नहीं था। जन्मते ही उसने मुझे गोद लेकर पालना दी। मुआ के पति का तथा बाबा (दादा लेखराज) का जवाहरों का बिजनैस कलकत्ता में था। जब मैं थोड़ी बड़ी हुई तो पता चला कि बाबा मेरे बाबा हैं और यशोदा उनकी धर्मपत्नी मेरी मां है। मैं दोनों के घर में आना-जाना करती थी। इस तरह मुझे दो माता-पिता थे। जब मैं बड़ी हुई तो बाबा के पास रहने लगी थी।

बाबा शुरू से ही सतोगुणी वृत्ति के थे। वे घूमने जाते समय मुझे साथ ले जाते थे। बाबा कहते थे कि कन्या सौ ब्राह्मण से भी उत्तम होती है, पवित्र होती है। इसलिए बिजनैस वाले भी उनको छुआ के व्यापार करते हैं ताकि सफलता मिले।

बाबा ने मुझे निर्मोही बनाया–बाबा अपनी ही सूझ से ज़ेवरों के नए-नए डिज़ाइन बनाते थे। वे इस कार्य में किसी की नकल न करते थे। बाबा मुझे फर्स्ट क्लास चूड़ी, कंगन, कुंडल, नैकलेस बनाकर पहनाते थे और व्यापारियों के पास जाते समय मुझे साथ ले जाते थे। ग्राहकों को सैंपल दिखाते थे तो वे मुझे पहनी हुई ज्वैलरी देखकर बाबा को कहते थे जैसे आपकी बच्ची ने पहनी है ऐसे ही हमें बनाकर दीजिए। मैं में आने के बाद सोते समय ज्वैलरी उतारकर सोती थी तो बाबा उसे उठाकर बेच देते थे।

एक बार बाबा ने बहुत अच्छा ट्यून वाला बकल बनाकर मुझे पहनाया था। तब लंदन की रानी एलिज़ाबेथ बाबा के पास ज्वैलरी खरीदने आई थी। बाबा ने उसे विभिन्न प्रकार के सैंपल दिखाए। अचानक उसकी नज़र मेरे पहने हुए बकल पर गई। तो कहा मुझे आपकी बेबी ने जैसा बकल पहना हुआ है, ऐसा ही चाहिए। बाबा ने कहा ठीक है बनाकर देंगे। रात को सोते समय लेकर अपने पास बकल रख दिया, बाद में रानी को दिया। तीन दिन के बाद बाबा को मैंने जिद्द से कहा कि मुझे वही बाजे वाला बकल चाहिए। तो बाबा ने भैया को बुलाया और कहा कि बच्ची को आज, कल की बासी पूरी खिलानी। मैंने चौंककर कहा–नहीं, मैं बासी पूरी नहीं खाऊंगी। तो बड़े प्यार से कहा कि बच्ची अगर बासी पूरी नहीं खाएगी तो कल के पुराने मॉडल का बकल कैसे पहनेगी? वो तो पुराने फैशन का हो गया। हम भोले-भाले बच्चे बाबा की मान लेते थे और बाबा का व्यापार चलता था। बाबा ने हमें कभी भी डांटा नहीं या मारा नहीं, लेकिन युक्ति से समझाकर खुश रखा।

बड़ी धूमधाम से मेरी शादी की–बाबा ने मेरा विवाह बहुत ही धूमधाम से सिंध के मुखिया के घर कराया। मेरे ससुराल में सांसारिक सुखों की कोई कमी नहीं थी। मैं उन्हीं सुखों में मस्त रहती थी। मैं वहां चार-पांच वर्ष रही। मैंने एक बेबी को जन्म दिया। बाबा तब कराची में गए थे, बाबा में शिवबाबा की प्रवेशता हुई थी। मैंने बाबा से मिलने जाना

"मुझे सच्चा साथी मिल गया"

□ बी.के. वेदान्ती, अफ्रीका

इस साकार दुनिया में गीता ज्ञान दाता निराकार परमात्मा शिव से प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों-शास्त्रों का सार सुनने का परम सौभाग्य वेदान्ती बहन जी को प्राप्त हुआ है। आप करुणा तथा दया की साक्षात् मूर्ति हैं। आपके खिले हुए चेहरे से, नयनों से प्यार छलकता रहता है। आपका त्यागी और योगी जीवन प्रेरणास्पद रहा है। आपने हज़ारों मनुष्यात्माओं का प्रभु से मिलन कराकर उनके जीवन को श्रेष्ठ बनाया है। वर्तमान समय आप ईश्वरीय विश्वविद्यालय के अफ्रीका खण्ड में स्थित शाखाओं का संचालन करती हैं। इस प्रकार सर्वोत्तम ईश्वरीय सेवा व तपस्या में रत वेदान्ती बहन जी के अनुभव उन्हीं के भावों में प्रस्तुत हैं—

—सम्पादक



मेरा जन्म सन् १९४५ में गुजरात के एक सम्पन्न ब्राह्मण-परिवार में हुआ। माता-पिता धार्मिक वृत्ति के होने के कारण, मेरी बचपन से ही रुचि धार्मिक पुस्तकें पढ़ने, सत्संग करने तथा मंदिरों में जाने और साधु-महात्माओं की संगत करने में अधिक थी। अनन्य भक्तों की जीवन-गाथा पढ़ने पर मन में तीव्र लालसा रहती थी कि मैं भी प्रभु-मिलन का अनुभव करूं और उनका साक्षात्कार करूं। उसके लिए मैं देवी-देवताओं की पूजा करना, ईश्वर-प्राप्ति के लिए आवश्यक समझती थी। सदा मन में प्रभु-मिलन की अभिलाषा बनी रहती थी और उसे पाने के लिए कठिन से कठिन त्याग-तपस्या करने को तैयार थी।

बस एक ही धुन थी। मुझे संसार की बातों में थोड़ी भी दिलचस्पी नहीं थी। स्कूल की पढ़ाई शुरू की। एम.ए. में मैंने फिलॉसफी (Philosophy) का विषय इसी लक्ष्य से लिया कि मुझे कुछ सत्य मिले। लेकिन आशा निराशा में ही बदलती गई। सदा एक ही धुन रहती थी कि एक बार मुझे भगवान के दर्शन हों। इसी चिंतन से मैं बीमार पड़ी। मुझे अस्पताल में दाखिल किया गया। डॉक्टर भी मेरी बीमारी परख न सके क्योंकि मेरी बीमारी का कारण था भगवान को पाने की चिंता। बीमारी से थककर वापस घर लौटी। घर में भी बिस्तर पर लेटे-लेटे भगवान को उलहने देती रही कि हे भगवान, आखिर तू है कहां? अब नहीं मिलोगे तो मैं मर जाऊंगी। कुछेक मास तक इस स्थिति में तड़पती रही।

साक्षात्कार से दिव्य जन्म—एक दिन मैंने अपनी छोटी बहन चंद्रिका से कहा कि अब मैं अपने जीवन से थक चुकी हूं। वो स्वयं भगवान की खोज में थी। हम दोनों ने सवेरे ३ बजे उठकर भगवान की आराधना शुरू की। अचानक एक दिन वह ध्यान (Trans) में चली गई और ध्यान में एक लाइट और एक अपरिचित बूढ़े बाबा को देखा। उतने में एक आवाज़ आई कि अब तुम्हें भगवान शीघ्र मिलेगा। जब वह ध्यान से वापस आई तो उसने मुझे धीरज दिया कि लगता है अब शीघ्र ही हमें भगवान दर्शन देंगे। फिर हम उस बूढ़े बाबा को ढूंढ़ते रहे। कुछ दिन के बाद हमारे पड़ोस में श्वेत वस्त्रधारी बहनें आईं। आमंत्रण के बाद हम उनसे मिलने गए। उन्होंने हमें चित्रों द्वारा ज्ञान सुनाया। तो उसमें हमने उस बूढ़े बाबा को देखा जिसे साक्षात्कार में देखा था। हमें पता चला कि भगवान एक निराकार परमात्मा शिव हैं, जो बूढ़े बाबा अर्थात् ब्रह्मा के साकार माध्यम से ब्रह्मा-वत्सों को पढाते हैं, आबू पर्वत पर उनका अवतरण हो चुका है।

आबू पर्वत की ओर—उस दिन से यही लग्न थी कि शीघ्रातिशीघ्र आबू जाकर परमात्मा से मिलें। उन दिनों में दादी जानकी जी अहमदाबाद सेवाकेंद्र की संचालिका थीं। दादी जी हमें आबू ले चलीं, जब पांडव भवन में पहुंचे तो वहां का शान्त और पवित्र वातावरण मन को भाने लगा। दो घंटे के बाद हम कमरे में बाबा से मिलने गये। पहली मुलाकात में बाबा ने शक्तिशाली दृष्टि दी और कहा कि "मीठी बच्ची, पहुंच गई हो न बाप के पास"। बाबा के इन स्नेह-भरे बोल ने मेरे जीवन पर एक दिव्य प्रकाश डाला। मेरी बीमारी गायब हो गई और मैं रूहानी शक्ति पाने से नए जीवन का अनुभव कर रही थी।

बाबा ने मेरी नाम वेदान्ती रखा—दूसरे दिन सबह विशाल क्लास में सभा के बीच बाबा से कहा—बच्ची ने लौकिक पढ़ाई में भी शास्त्र पढ़े, अभी वेदों का अंत अर्थात् वेदों का सार बाबा का ज्ञान मिल गया तो आज से बच्ची का नाम रंजन के बजाय वेदान्ती होगा।

जब पहली बार मैंने बहनों को सफेद ड्रैस में देखा तो मैंने सोचा कि मैं ज्ञान में चलूंगी लेकिन सफेद ड्रैस नहीं पहनूंगी। मेरे संकल्प को बाबा ने जान लिया और मुझे सौगात में पूरा सफेद ड्रैस का सैट ही दिया और कहा कि बच्ची जाओ, अभी-अभी पहनकर आओ। बाबा को मैं ना नहीं कह सकी। जब ड्रैस पहनकर बाबा के पास गई तो बाबा ने कहा कि—बच्ची, तुम तो मम्मा जैसी लग रही हो। अब इसी ड्रैस को पहनकर अपने घर जाओ। उस अनुभव ने ही मुझे सच्ची सेवाधारी बना दिया। मुझे ऐसा लगा कि बाबा से मुझे वस्त्र नहीं लेकिन वरदान मिल गया।

उसके बाद जब मैं एम.ए. की परीक्षा देकर बाबा से मिलने गई तो बाबा ने कहा कि बच्ची क्या तुमने अपनी परीक्षा में सच्ची बात लिखी कि गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं है लेकिन निराकार परमात्मा शिव है। वो कॉलेज वाले तो तुमको फ़ेल करेंगे लेकिन बाबा तुमको पास करते हैं। बच्ची, बाबा तुमको डिग्री दे रहा है। एक दिन आएगा कि दो लोग कहेंगे कि बच्ची ने तो सच्ची बात लिखी थी, लेकिन हमने नहीं समझा। बच्ची, निर्भय होकर सेवा करते आगे बढ़ती रहो।

मैं समर्पण हुई—सन् १९६७ में मेरे माता-पिता ने स्व-इच्छा से मुझे समर्पण होने के लिए स्वीकृति दी। तब से ही मैंने अहमदाबाद सेवाकेंद्र पर ईश्वरीय सेवार्थ रहना शुरू किया था। स्वयं के तथा अन्य आत्माओं के जीवन को श्रेष्ठ बनाने की सेवा में व्यस्त तथा मस्त रहने लगी।

दूसरी बार जब हम सभी लौकिक परिवार सहित बाबा से मिलने गए थे तो लौकिक पिता के आग्रह पर बाबा के साथ फोटो निकालना चाहा तो बाबा ने कहा बच्ची, क्या बाबा के साथ फोटो निकालना चाहते हो, लेकिन जिस बिंदु स्वरूप (शिव परमात्मा) बाप को याद करना है, उसका तो फोटो निकलेगा ही नहीं। जिसका फोटो निकलेगा, उस साकार ब्रह्मा को याद नहीं करना, समझा।

तीसरी बार मैं जब मधुबन में बाबा से मिली तो बाबा ने कहा कि बच्ची तुम मेरी फूल बच्ची हो। मीठी बच्ची, तुम बादल बनकर बरसोगी या ऐसे ही यहां से चली जाओगी। ज्ञान की बरसात अनेक आत्माओं पर करोगी न। एक बार खास बुलाकर मुझसे पूछे—कि बच्ची, तुम शास्त्र पढ़ी हुई हो, तुम बनारस जाकर विद्वानों को ज्ञान सुनाओ, उनकी सेवा करो। तब मैं छोटी थी इसलिए निर्णय नहीं कर सकी। फिर बाबा ने कहा, बच्ची कोई बात नहीं, जहां भी सेवा करना चाहो, करो।

मेरा ध्यान का पार्ट शुरू हुआ—बाबा की स्नेह-भरी दृष्टि ने मुझे ध्यान में जाने की सौगात दी। मैं कई बार ध्यान में जाती रही, सूक्ष्म वतन में संपूर्ण ब्रह्मा के माध्यम से निराकार

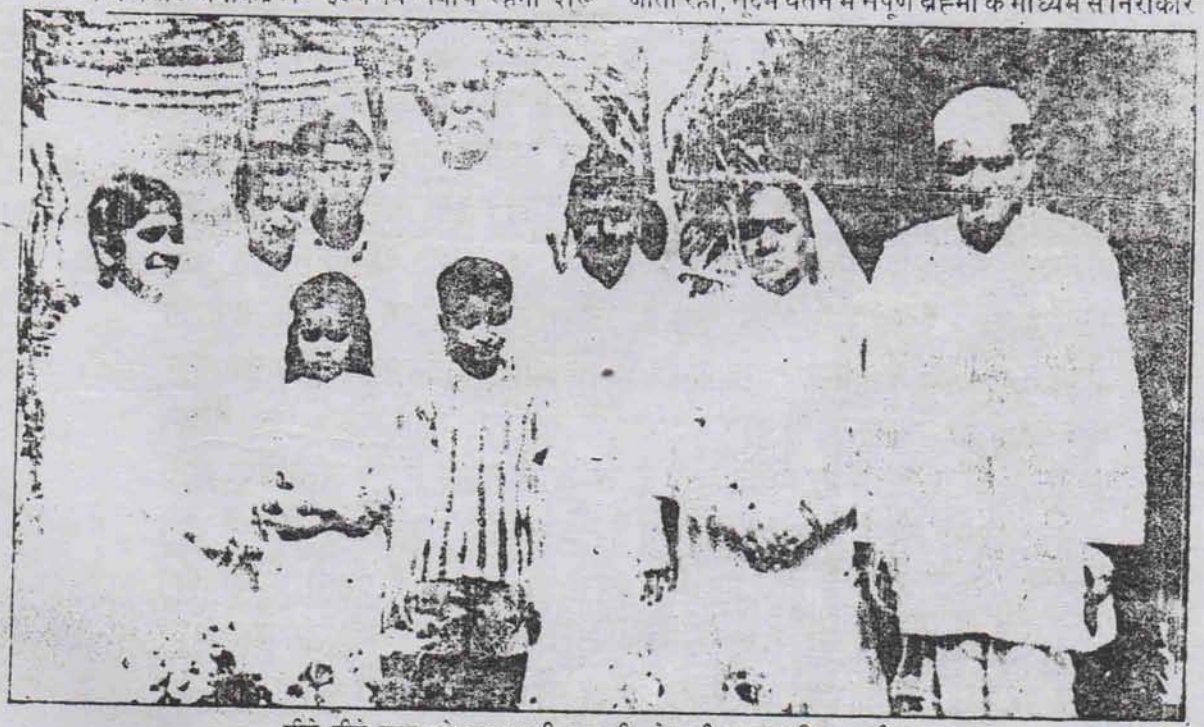

मीठे-मीठे बाबा के साथ दादी जानकी, वेदान्ती बहन परिवार सहित।

अ.वा.नं-(७०)

सम्पूर्ण विल करने से विल-पावर की प्राप्ति

18.1.70

आज किसलिए बुलाया है? आज बापदादा क्या देख रहे हैं? एक एक सितारे को किस रूप से देख रहे हैं? सितारों में भी क्या विशेषता देखते हैं? हरेक सितारे की सम्पूर्णता की समीपता देख रहे हैं। आप सभी अपने को जानते हो कि कितना सम्पूर्णता के समीप पहुँचे हो? सम्पूर्णता के समीप पहुंचने की परख क्या होती है? सम्पूर्णता की परख यही है कि वह सभी बातों को सभी रीति से, सभी रूपों से परख सकते हैं। आज सारे दिन में क्या-क्या स्मृति आई? चित्र स्मृति में आया वा चरित्र स्मृति में आया? चित्र के साथ और कुछ याद आया? (शिक्षा याद आई, ड्रामा याद आया)। चित्र के साथ विचित्र भी याद आया? कितना समय चित्र की याद में थे कितना समय विचित्र की याद में थे या दोनों की याद मिली हुई थी? विचित्र के साथ चित्र को याद करने से खुद भी चरित्रवान बन जायेंगे। अगर सिर्फ़ चित्र और चरित्र को याद करेंगे तो चरित्र की ही याद रहेगी। इसलिए विचित्र के साथ चित्र और चरित्र याद आये। आज के दिन और भी कोई विशेष कार्य किया? सिर्फ़ याद में ही मग्न थे कि याद के साथ और भी कुछ किया? (विकर्म विनाश) - यह तो याद का परिणाम है। और विशेष क्या कर्त्तव्य किया? पूरा एक वर्ष का अपना चार्ट देखो? इस अव्यक्ति पढ़ाई, इस अव्यक्त स्नेह और सहयोग की रिज़ल्ट चेक की? इस अव्यक्त स्नेह और सहयोग का १२ मास का पेपर क्या है, चेकिंग की? चेकिंग करने के बाद ही अपने ऊपर अधिक अटेन्शन रख सकते हैं। तो आज के दिन स्वयं ही अपना पेपर चेक करना है। व्यक्तभाव से अव्यक्त भाव में कहाँ तक आगे बढ़े — यह चेकिंग करनी है। अगर अव्यक्ति स्थिति बढ़ी है तो अपने चलन में भी अलौकिक होंगे। अव्यक्त स्थिति की प्रैक्टिकल परख क्या है? अलौकिक चलन। इस लोक में रहते अलौकिक कहाँ तक बने हो? यह चेक करना है। इस वर्ष में पहली परीक्षा कौन सी हुई? इस निश्चय की परीक्षा में हरेक ने कितने-कितने मार्क्स ली। वह अपने आप को जानते हैं। निश्चय की परीक्षा तो हो गई। अब कौन सी परीक्षा होनी है? परीक्षा का मालूम होते भी फ़ेल हो जाते हैं। कोई-कोई के लिए यह बड़ा पेपर है

लेकिन कोई-कोई का अब बड़ा पेपर होना है। जैसे इस पेपर में निश्चय की परीक्षा हुई वैसे ही अब कौन सा पेपर होना है? व्यक्त में भी अब भी सहारा है। जैसे पहले भी निमित्त बना हुआ साकार तन सहारा था वैसे ही अब भी ड्रामा में निमित्त बने हुए साकार में सहारा हैं। पहले भी निमित्त ही थे। अब भी निमित्त हैं। यह पूरे परिवार का साकार सहारा बहुत श्रेष्ठ है। अव्यक्त में तो साथ है ही। जितना स्नेह होता है उतना सहयोग भी मिलता है। स्नेह की कमी के कारण सहयोग भी कम मिलता है। साकार से स्नेह अर्थात् सारे सिजरे से स्नेह। साकार अकेला नहीं है। प्रजापिता ब्रह्मा तो उनके साथ परिवार है। माला के मणके हो ना। माला में अकेला मणका नहीं होता है। माला में एक ही याद के सूत्र में, स्नेह में परिवार समाया हुआ है। तो यह जैसे माला में स्नेह के सूत्र में पिरोये हुए हैं। दैवी कुल तो भविष्य में है, इस ब्राह्मण कुल का बहुत महत्व है। जितना-जितना ब्राह्मण कुल से स्नेह और समीपता होगी उतना ही दैवी राज्य में समीपता होगी। साकार में क्या सबूत देखा? बापदादा किसको आगे रखते हैं? बच्चों को। क्योंकि बच्चों के बिना माँ बाप का नाम बाला नहीं हो सकता। तो जैसे साकार में कर्म करके दिखाया वही फ़ालो करना है। यहाँ पेपर पहले ही सुनाया जाता है। निश्चय का पेपर तो हुआ। लेकिन अब पेपर होना है हरेक के स्नेह, सहयोग और शक्ति का। अब वह समय नज़दीक आ रहा है जिसमें आप का भी कल्प पहले वाला चित्र प्रत्यक्ष होना है। अनेक प्रकार की समस्याओं को परिवर्तन के लिए अंगुली देनी है। कलियुगी पहाड़ तो पार होना ही है। लेकिन इस वर्ष में मन की समस्यायें, तन की समस्यायें, वायुमण्डल की समस्यायें सर्व समस्याओं के पहाड़ को स्नेह और सहयोग की अंगुली देनी है। तन की समस्या भी आनी है। लौकिक सम्बन्ध में तो पास हो गये। लेकिन यह जो अलौकिक सम्बन्ध है, उस सम्बन्ध द्वारा भी छोटी-मोटी समस्यायें आयेंगी। लेकिन यह समस्यायें सभी पेपर समझना, यह प्रैक्टिकल बातें नहीं समझना। यह पेपर समझना। अगर पेपर समझकर उनको पास करेंगे तो पास हो जायेंगे। अभी देखना है पेपर आउट होते भी कितने पास होते हैं। फिर इस पेपर की रिज़ल्ट सुनायेंगे। इस समय अपने में विल पावर धारण करना है। अभी विल पावर नहीं आई है। यथा योग्य यथा शक्ति पावर है।

विल पावर कैसे आ सकेगी? विल पावर आने का साधन कौन सा है? विल

(७१)

बापदादा की सेवा का रिटर्न

आज स्मृति दिवस–अर्थात् समर्थी दिवस पर सब बच्चों ने अपनी-अपनी लगन अनुसार भिन्न-भिन्न रूप से याद किया। बापदादा के पास चारों ओर के स्नेही, सहयोगी, शक्ति स्वरूप सम्पर्क वाली आत्माओं के सब रूप की याद वतन तक पहुँची। बापदादा द्वारा हरेक बच्चे की जैसी याद वैसा रिटर्न उसी समय मिल जाता है। जिस रूप से जो याद करता है उसी रूप से बापदादा बच्चों के आगे प्रत्यक्ष हो ही जाता है जो योगी तू आत्मा है उसे योग की विधि मिल जाती है। कई बच्चे योगी तू आत्मा की बजाय वियोगी आत्मा बन जाते हैं, जिस कारण मिलन के बजाए जुदाई का अनुभव करते हैं। योगी तू आत्मा सदा बापदादा के दिल तख्तनशीन होती, कभी दूर नहीं होती। वियोगी आत्माएँ वियोग के द्वारा बापदादा को सामने लाने का प्रयत्न करती हैं। वर्तमान को भूल बीती को याद करती हैं। इस कारण बापदादा कभी प्रत्यक्ष दिखाई देते, कभी पर्दे के अन्दर छिपा हुआ दिखाई देते। लेकिन बापदादा सदा बच्चों के आगे प्रत्यक्ष हैं, बच्चों से छिप नहीं सकते। जबकि बाप है ही बच्चों के प्रति, जब तक बच्चों का स्थापना के कर्तव्य का पार्ट है तब तक बापदादा बच्चों के हर संकल्प और सेकण्ड में साथ-साथ हैं। बाप का वायदा है साथ चलेंगे। कब चलेंगे? जब कार्य समाप्त होगा तो पहले ही बाप को क्यों भेज देते हो? बाबा चला गया ... यह कह अविनाशी सम्बन्धों को विनाशी क्यों बनाते हो? सिर्फ पार्ट परिवर्तन हुआ है। जैसे आप लोग भी सेवा स्थान चेन्ज करते हो ना, तो ब्रह्मा बाप ने भी सेवा-स्थान चेन्ज किया है। रूप वही, सेवा वही है। हजार भुजा वाले ब्रह्मा के रूप का वर्तमान समय पार्ट चल रहा है तब तो साकार सृष्टि में इस रूप का गायन और यादगार है। भुजाएं बाप के बिना कर्तव्य नहीं कर सकती। भुजाएं बाप को प्रत्यक्ष करा रही हैं। कराने वाला है तब तो कर रहे हैं। जैसे आत्मा के बिना भुजा कुछ नहीं कर सकती वैसे बापदादा कम्बाइन्ड रूप का सोल के बिना भुजाएं रूपी बच्चे क्या कर सकते। हर कर्तव्य में अन्त तक पहले कार्य का हिस्सा ब्रह्मा का ही तो है। ब्रह्मा अर्थात् आदि देव। आदि देव अर्थात् हर शुभ कार्य की आदि करने वाला। बापदादा के आदि करने के बिना अर्थात् आरम्भ करने के बिना का कोई भी कार्य सफल कैसे हो सकता। हर कार्य में पहले बाप का सहयोग है। अनुभव भी करते हो, वर्णन भी करते हो फिर भी कभी-कभी भूल जाते हो। प्रेम के सागर में, प्रेम की लहरों में क्या बन जाते हो? लहरों से खेलना है, न कि लहरों के वशीभूत हो जाना है। गुणगान करो लेकिन घायल नहीं बनो। बाप देख रहे हैं कि बच्चे मेरे साथी हैं लेकिन बच्चे जुदाई का पर्दा डाल देखते रहते हैं। फिर ढूंढने में समय गँवाते हैं। हाजिर-हजूर को भी छिपा देते। अगर आंख मिचौनी का खेल अच्छा लगता है तो खेल समझकर भले खेलो लेकिन स्वरूप नहीं बनो। बहलाने की बातें नहीं सुना

रहे हैं। और ही सेवा की स्पीड को अति तीव्रगति देने के लिए सिर्फ स्थान परिवर्तन किया है। इसलिए बच्चों को भी बाप समान सेवा की गति को अति तीव्र बनाने में बिज़ी रहना चाहिए। यह है स्नेह का रिटर्न। बाप जानते हैं बच्चों को बाप से अति स्नेह है लेकिन बाप का बच्चों के साथ-साथ सेवा से भी स्नेह है। बाप से स्नेह का प्रत्यक्ष स्वरूप सेवा से स्नेह है। जैसे पल-पल बाबा-बाबा कहते हो वैसे हर पल बाप और सेवा हो तब ही सेवा का कार्य समाप्त होगा और साथ चलेंगे। अब बापदादा हरेक बच्चे को लाइट-माइट हाउस के रूप में देखते हैं। माइक पावरफुल हो गए हैं। लेकिन लाइट, माइट और माइक तीनों ही पावरफुल साथ-साथ चाहिए। आवाज़ में आना सहज लगता है ना। अब ऐसी पावरफुल स्टेज बनाओ जिस स्टेज से हर आत्मा को शान्ति, सुख और पवित्रता की तीनों ही लाइट्स अपनी माइट से दे सको। जैसे साकारी सृष्टि में जिस रंग की लाइट जलाते हो तो चारों ओर वही वातावरण हो जाता है। अगर हरी लाइट होती है तो चारों ओर वही प्रकाश छा जाता है। एक स्थान पर होते हुए भी एक लाइट वातावरण को बदल देती है, जैसे आप लोग भी जब साल लाइट करते हो तो ऑटोमेटिकली याद का वायुमण्डल बन जाता है। ऐसे जब स्थूल लाइट वायुमण्डल को परिवर्तन कर लेती है तो आप लाइट हाउस, पवित्रता की लाइट से व सुख की लाइट से वायुमण्डल नहीं बना सकते हो। स्थूल लाइट आंखों से देखते, रूहानी लाइट अनुभव से जानेंगे। वर्तमान समय इस रूहानी लाइट्स द्वारा वायुमण्डल परिवर्तन करने की सेवा है। सुना, अब सेवा का क्या रूप होना है। दोनों सेवा अब साथ-साथ हों। माइक और माइट तब सहज सफलतामूर्त बन जायेंगे।

पार्टियों के साथ बातचीत

1. बेहद बाप को भी हद के नम्बर लगाने पड़ते हैं। नहीं तो बाप और बच्चों का मिलना दिन-रात क्या है? आपकी दुनिया में यह सब बातें हैं। वहाँ तो सब बाप के समीप हैं। बिन्दु क्या जगह लेगी? यहाँ तो शरीर को जगह चाहिए, वहाँ समीप हो ही जायेंगे। यहाँ हरेक आत्मा समझती है - हम समीप आयें। जितना जो बाप के गुणों में, स्थिति में समीप उतना वहाँ स्थान में भी समीप, चाहे घर में, चाहे राज्य में। स्थिति स्थान के समीप लाती है। यही कमाल है जो हरेक समझता है मैं समीप और समीप का अनुभव भी करता है क्योंकि बेहद का बाप है अखुट है, अखण्ड है इसलिए सभी समीप हो सकते हैं। सन्तुष्ट रहना और करना। यही वर्तमान समय का स्लोगन है। असन्तुष्ट अर्थात् अप्राप्ति। सन्तुष्ट अर्थात् प्राप्ति। सर्व प्राप्ति वाले कभी भी असन्तुष्ट नहीं हो सकते।

2. सदा अपने को गॉडली स्टूडेण्ट समझते हो? गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ सबसे बेस्ट गाई जाती है। ऐसे सदा बेस्ट अर्थात् श्रेष्ठ जीवन का अनुभव करते हो। जैसे स्टूडेण्ट सदा हंसते, खेलते और पढ़ते रहते और कोई बात बुद्धि में विघ्न रूप नहीं बनती,

ॐ शान्ति

परमपिता परमात्मा शिवबाबा याद है।

सृष्टि चक्र

स्वदर्शन चक्र सन. २००० में फिर से घूमा.....।

१. सतयुगी शूटिंग की चार अवस्थायें :

a) सतो प्रधान (४ साल) १९६०-६१ से १९६४ तक
b) सतो सामान्य (४ साल) १९६५ से १९६८ तक
c) रजो प्रधान (४ साल) १९६९ से १९७२ तक
d) तमो प्रधान (४ साल) १९७३ से १९७६ तक

(१९७६ + १ साल रूँग = १९७७)

२. त्रेतायुगी शूटिंग की चार अवस्थायें :

a) सतो प्रधान (३ साल) १९७८ से १९८० तक
b) सतो सामान्य (३ साल) १९८१ से १९८३ तक
c) रजो प्रधान (३ साल) १९८४ से १९८६ तक
d) तमो प्रधान (३ साल) १९८७ से १९८९ तक

(१९८९ + १ साल रूँग = १९९०)

३. द्वापूर युगी शूटिंग की चार अवस्थायें :

a) सतो प्रधान (२ साल) १९९१ से १९९२ तक
b) सतो सामान्य (२ साल) १९९३ से १९९४ तक
c) रजो प्रधान (२ साल) १९९५ से १९९६ तक
d) तमो प्रधान (२ साल) १९९७ से १९९८ तक

(१९९८ + १ साल रूँग = १९९९)

४. कलियुगी शूटिंग की चार अवस्थायें :

a) सतो प्रधान (१ साल) २०००
b) सतो सामान्य (१ साल) २००१
c) रजो प्रधान (१ साल) २००२
d) तमो प्रधान (१ साल) २००३

(२००३ + १ साल रूँग = २००४)